
إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ - (القرآن)

“ निस्सन्देह यह कुर्आन उस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है जो बिल्कुल सीधा है ।”

Dawatul Quran Vol. II
in Hindi Language

दअ्वतुल कुर्आन

पवित्र कुर्आन का हिंदी अनुवाद और भाष्य

जिल्द (Vol. 2)

सूरह यूनुस से सूरह अन्कबूत
(पारा 11 से 20)

□□□□

भाष्य : शम्स पीरज़ादा (रह.)

○○○○○

हिंदी अनुवाद : मुहम्मद नसरुल्लाह (एम.ए.)

प्राकाशन :

इदारा दअ्वतुल कुर्आन

५९, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई ४००००३

Idara Dawatul Quran

59, Muhammad Ali Road Mumbai 400003

Phone: 23465005

.....3rd Edition, June. 2014

..... 1,000

Price Rs. 350/-

सूची

सूरह नंबर	नाम सूरह	पृष्ठ
१०.	यूनुस	१
११.	हूद	५४
१२.	यूसुफ़	९८
१३.	रअद	१५२
१४.	इब्राहीम	१८०
१५.	हिज़्र	२००
१६.	नहल	२२८
१७.	बनी इस्राईल	२८८
१८.	कहफ़	३३७
१९.	मरयम	३९०
२०.	ताहा	४२८
२१.	अम्बिया	४७२
२२.	हज्ज	५१५
२३.	मोमिनून	५५३
२४.	नूर	५८४
२५.	फ़ुरक़ान	६३३
२६.	शुअरा	६६५
२७.	नमल	७१६
२८.	क्रसस	७६१
२९.	अन्कबूत	८०४

तस्वीरें और नक्शे

बनी इस्राईल का निर्गमन मार्ग-----	४५
कौम यूनस की आबादी -----	५१
कनआन और मित्र (युसूफ़ के ज़माने में)-----	९९
कुर्आन अपने मूल रूप में सुरक्षित है-----	२०४
अरबों का व्यापारिक राजमार्ग-----	२२३
समूद के पुरातत्व -----	२२४
समूद के पुरातत्व -----	२२५
कहफ़ और अर्क़ीम -----	३४७
अर्क़ीम का स्थान -----	३५२
मज्मऊल बहरैन-----	३७३
साइरस का पश्चिमी अभियान -----	३८१
साइरस का पूर्वी अभियान -----	३८२
साइरस का तीसरा अभियान एवं लौह दीवार का निर्माण-----	३८७
येरुशलेम के हैकल का नक्शा -----	३९९
बेत लहम जहाँ हज़रत ईसा का जन्म हुआ-----	३९९
तुवा की घाटी-----	४३५
भ्रूण की अवस्था-----	५५९
समूद के कौम की वह जगह जहाँ अल्लाह की ऊँटनी चलती फिरती थी -----	६९८
समूद की संगतराशी का एक नमूना-----	६९९
क्रैसर रूम के नाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पत्र की छाया-----	७६०
मद्यन और तूर पर्वत-----	७७३
इंडेक्स (Index)	

भूमिका

अल्लाह का शुक्र है कि दअवतुल कुर्आन का दूसरा भाग प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। यह दूसरा भाग पारा नं ११ से २० पर आधारित है। अर्थात् दो तिहाई सफ़र अल्लाह की मेहरबानी और उस की तौफ़ीक़ से पूरा हो गया और जो बाकी रह गया है उस की पूर्ति भी उसी की तौफ़ीक़ पर निर्भर है। वह जिस से चाहता है अपनी किताब की ख़िदमात लेता है और उस के लिए कठिनतम कार्य को भी आसान कर देता है।

कुर्आन एक बहुत ही उच्च कोटि का महान एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न ग्रन्थ है जिस ने मनुष्य के विचारों की दिशा बदल दी, बुद्धि एवं विवेक को प्रकाश से तथा हृदय को ज्ञान एवं विश्वास से भर दिया। चरित्रों को संवारा और सूरतों में निखार पैदा कर दिया। फिर उस का प्रभाव क्षेत्र व्यक्तिगत जीवन तक ही नहीं रहा बल्कि सामाजिक जीवन में उस ने एक बड़ी क्रान्ति पैदा कर दी और दिलों को जीतने के साथ साथ राज दरबारों को भी विजय कर लिया। यह विशाल एवं विस्तृत क्रान्ति कुर्आन के द्वारा ही बरपा हुई थी जब कि लोगों ने उस का अनुपालन सच्चे मन से किया और उस की दअवत को चारों तरफ फैलाने के लिए उठ खड़े हुए। परन्तु बाद में जब कुर्आन के साथ इस उम्मत का लगाव कमज़ोर पड़ गया और लोगों को न तो उस का ज्ञान प्राप्त करने की अभिरूचि रही और न उस पर अमल करने से तो उम्मत (मुस्लिम समुदाय) का पतन शुरू हो गया और अब इस अति को पहुँच गया है कि मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या अपने जीवन लक्ष्य से ही अजनबी हो कर रह गई है। अक़ीदे (मौलिक धारणाओं) में नई नई बातें जुड़ गई हैं और सुन्नत अर्थात् रसूल के सुझाए तरीक़ों की जगह बिदअत और ख़ुराफ़ात ने ले ली है। फिर नैतिक एवं शिष्टाचार का बिगाड़ इस इन्तिहा को पहुँच गया है कि जायज़ और नाजायज़ तथा हलाल और हराम में कोई अन्तर बाक़ी नहीं रहा। नमाज़ को लोगों ने नष्ट कर दिया और खेल कूद एवं संसारिक मोह माया में लीन हो गए। इस सामूहिक बिगाड़ का परिणाम यह निकला कि इन की हवा उखड़ गई और दुश्मनों के हौसले बढ़ गए। एक मात्र अल्लाह को छोड़ कर अन्य लोगों एवं वस्तुओं को पूजने वाली शैतानी

शक्तियाँ उन पर मुसल्लत हो गई और उन की जान माल एवं आबरू के साथ उन का दीन भी ख़तरे में पड़ गया। इन सब बातों का मौलिक कारण यही है कि अल्लाह की किताब से मुसलमानों का रिश्ता कमज़ोर हो गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया था:

إِنَّ اللَّهَ يَرْفَعُ بِهَذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهِ الْآخَرِينَ

अर्थ: “ अल्लाह इस किताब के द्वारा कितनी ही क़ौमों को उठाएगा और कितनी ही क़ौमों को गिराएगा ”। (मुस्लिम किताब फ़जाइलुल कुर्आन)

इस वास्तविकता के अनुसार मुसलामानों के तमाम दुखों का इलाज यही है कि उन का लगाव अल्लाह की किताब के साथ मज़बूत किय जाए। कुर्आन ने تَمَسِّكُ بِالْكِتَابِ (किताबे इलाही को मज़बूत पकड़े रहने) की ताकीद की है और हदीस में इस की ताकीद आई है:

وَقَدْ تَرَكْتُ فِيكُمْ مَالَن تَضَلُّوا بَعْدَهُ إِنْ اغْتَضَمْتُمْ بِهِ - كِتَابُ اللَّهِ (مسلم کتاب الحج)

अर्थ: “ मैं ने तुम्हारे बीच में ऐसी किताब छोड़ दी है कि अगर तुम उसे पकड़े रहो तो कभी गुमराह न होगे, और वह है अल्लाह की किताब । ” (मुस्लिम किताबुल हज्ज)

किताब को मज़बूत पकड़े रहने का अर्थ यह है कि उस के साथ गहरा लगाव हो। उस को समझने तथा उस का ज्ञान प्राप्त करने के प्रयास किये जाएँ और उसी के मार्गदर्शन में ज़िन्दगी का सफ़र तय किया जाए। अतः आज अत्याधिक आवश्यकता इस बात की है कि लोगों के लिए कुर्आन को समझने समझाने का सामान किया जाए और उन्हें कुर्आन से लौ लगाने का निमंत्रण दिया जाए। इस निमंत्रण में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े (सुन्नत) के अनुपालन का निमंत्रण अनिवार्य रूप से शामिल है क्योंकि कुर्आन रसूल के अनुपालन का आह्वान करता है। और सुन्नत (अर्थात् रसूल के तरीक़े) से विमुख हो कर आदमी कुर्आन के आदेशों एवं

निर्देशों की तफ़सीलात को नहीं जान सकता तो आख़िर उन पर अमल किस तरह करेगा?

सारांश यह कि वर्तमान परिस्थिति इस बात का अत्याधिक तक्राज़ा करती है कि मुसलामानों में कुर्आन एवं सुन्नत (सही हदीसों) के ज्ञान का प्रसार किया जाए और लोगों को उन के अनुपालन की निमंत्रणा दी जाए। हम विश्वास रखते हैं कि इस उम्मत का सुधार उसी चीज़ से हो सकता है जिस चीज़ से उस के प्रथम संबोधियों का सुधार हुआ था। तफ़सीर दअवतुल कुर्आन जो उर्दू के अलावा अंग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, और हिन्दी में प्रकाशित की जा रही है, जो इसी सिलसिले की कोशिश है। अल्लाह तआला इसे इस्लाह एवं हिदायत का साधन बनाए।
आमीन

शम्स पीरज़ादा

इदारा दअवतुल कुर्आन

२५ रजब १४१० हिजरी

२२ फ़रवरी १९९० ई.

नोट: यह भूमिका उर्दू तफ़सीर दअवतुल कुर्आन की दूसरी जिल्द पर लिखी गई थी जिस का हिन्दी अनुवाद यहाँ पेश किया गया है। तफ़सीर के इस दूसरे भाग (जिल्द) का उर्दू से हिन्दी अनुवाद जनाब मुहम्मद नसरुल्लाह साहब एम. ए. ने किया है।



सूरह यूनुस

१०.सूरह यूनस

नाम: आयत ९८ में यूनस अलैहिस्सलाम का जिक्र हुआ है, इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम यूनस है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और सूरह के मज़मून से प्रतीत होता है कि मक्का के मध्यकाल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: वह्य और रिसालत का इन्कार करने वालों के संदेहों का निवारण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि कुर्आन और पैगम्बर की असल दअवत क्या है और वह क्यों सत्य है। यह सूरह डरावा और खुशखबरी दोनों पक्षों को समेटे हुए है।

कलाम की तरतीब: सूरह की शुरुआत आयत १ और २ इस बात से हुई कि कुर्आन एक हकीमाना (तत्त्वदर्शी) किताब है जो एक व्यक्ति पर इस लिए उतारी गई है ताकि वह लोगों को उन के कामों और रवैयों के बारे में इस बात से आगाह करे कि दूसरी ज़िन्दगी में किस तरह के परिणाम सामने आने वाले हैं।

आयत ३ से ७० में स्पष्टीकरण के साथ विस्तारपूर्वक कुर्आन की दअवत पेश की गई है इस तौर से कि अल्लाह के अकेले उपास्य (इलाह) और प्रभु एवं स्वामी (रब) होने पर उन निशानियों की ओर ध्यानआकर्षित किया गया है जो न केवल बुद्धि का सही मार्गदर्शन करने वाली हैं बल्कि दिलों को भी स्पर्श करती हैं और इन निशानियों पर गौर करने से आखिरत

का ख्याल भी दिल में उभरता है और कुर्आन के बयान और अल्लाह के वह्य की पुष्टि भी होती है।

दअवत के इस सकारात्मक पक्ष के साथ उस के नकारात्मक पक्ष अर्थात् शिर्क (बहुदेववाद) आखिरत के इन्कार और रिसालत के इन्कार का भी ज़ोरदार तरीके से खण्डन किया गया है।

आयत ७१ से ९३ में कुर्आन के निमंत्रण की सत्यता पर पिछली आयतों की तारीख को दलील में प्रस्तुत किया गया है और इन्कार करने वालों के भयावह परिणाम से इबरत (सीख) दिलाई गई है।

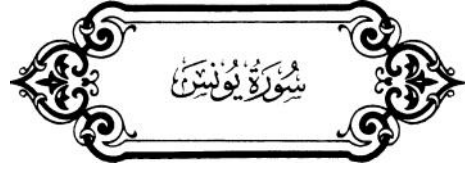
आयत ९४ से १०३ में इन घटनाओं एवं वास्तविकताओं की रौशनी में इन्कार करने वालों को सावधान किया गया है कि कुर्आन का अवतरण संदेहों से परे है। अतः इस से पहले कि कर्म का समय समाप्त हो ईमान ले आओ वरना उस के समाप्त होने और अज़ाब के सामने आ जाने पर कुछ भी लाभकारी न होगा।

आयत १०४ से १०९ उपसंहार है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने-मुबारक से दो टूक अन्दाज़ में यह एलान करा दिया गया है कि मेरा दीन एकेश्वरवाद का दीन है और सत्य एवं सच्चाई की राह यही है। जो इस राह को अपनाएंगे वे अपना ही भला करेंगे और जो मुँह मोड़ेंगे उन की गुमराही उन्हीं के लिए कष्ट एवं वबाल का कारण होगी।

१०. सूरह यूनुस

आयतें: 109

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, रा,¹ ये आयतें हैं हिकमत भरी (तत्वदर्शिता से परिपूर्ण) किताब की।²

الرَّسْمِ تِلْكَ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ①

2. क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि हम ने उन ही में से एक व्यक्ति पर वहय की³ (प्रकाशना भेजी), कि लोगों को ख़बरदार कर दे, और ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी दे दे कि उन के लिए उन के रब के पास सच्चाई का स्थान है। (इस बात पर) काफ़िरो ने कहा यह खुला जादूगर⁴ है।

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُبِينٌ ②

3. निस्संदेह तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया।⁵ फिर राज सिंहासन (अर्श) पर आसीन हुआ⁶ और तमाम मामलों का इन्तिजाम कर रहा है। (उस के समक्ष) कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की अनुमति के बाद⁷। यही अल्लाह तुम्हारा रब है,⁸ अतः उसी की इबादत (उपासना) करो⁹। फिर क्या तुम नसीहत कुबूल न करोगे।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأُمُورَ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ③

4. उसी के समक्ष तुम सब को लौट कर जाना है। यह अल्लाह का पक्का वादा है। निस्संदेह वही पैदाइश की शुरुआत करता है और वही दोबारा पैदा करेगा। ताकि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने ने नेक काम किए उन को इन्साफ़ के साथ बदला (इनाम) दे।¹⁰ रहे वे लोग जिन्होंने कुफ़्र किया¹¹ तो उन के पीने के लिए ख़ौलता हुआ पानी होगा और उन को दुखदायिनी यातना (अज़ाब) भुगतनी होगी उस कुफ़्र के प्रतिफल में, जो वे करते रहे।

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ④

तफ्सीर

1. ये हुरुफ़ मुक़तआत (विभक्त अक्षर) हैं और जैसा कि हम सूरह बक्रर: नोट १ में स्पष्ट कर चुके हैं, ये सूरह के खास विषयों की ओर संकेत करते हैं। इस सूरह में “अलिफ़” का इशारा अल्लाह की तरफ़ है दूसरे शब्दों में एकेश्वरवाद (तौहीद) के विषयों की ओर है जो विभिन्न आयतों में बयान हुए हैं। “लाम” का इशारा لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ “लाइलाहा इल्लल्लाहु” की तरफ़ अर्थात् उन विषयों की ओर है जिन में शिर्क का खण्डन किया गया अथवा उसे नकारा गया है। इसी प्रकार “र” का इशारा रबूबिय्यत की तरफ़ अर्थात् उन विषयों की ओर है जिन में अल्लाह की रबूबिय्यत (पालनहारी का जिक्र हुआ है। जैसे आयत ३ में फ़रमाया गया

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ

“यही अल्लाह तुम्हारा रब है।”

और आयत ३२ में इर्शाद हुआ

فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ

“ तो यही अल्लाह तुम्हारा वास्तविक रब (स्वामी) है”।

हुरुफ़ मुक़तआत (विभक्त अक्षरों) के बारे में हम ने यह बात जो कही है कि सूरह के खास विषयों की ओर इशारा करते हैं तो हम ने इन हुरुफ़ (अक्षरों) के कोई अर्थ निश्चित नहीं किये हैं बल्कि सिर्फ़ इशारे (संकेत) मुराद लिये हैं और वह भी सूरह के खास विषयों की तरफ़। हम समझते हैं कि विभक्त अक्षरों के बारे में यही राह सलामती की है क्योंकि इस सूरत में आदमी उन की ग़लत तावील (ग़लत स्पष्टीकरण) से बच जाता है और उन को मुअम्मा ठहराने से भी।

आधुनिक टेकनालाजी के दौर में कुछ लोगों ने जो इन अक्षरों को मुअम्मा बताते हैं अबजद अर्थात् अरबी अक्षरों की गिनती के लिहाज़ से इन की गिनती निश्चित कर के कम्प्यूटर के द्वारा गणित के भेद पैदा किये हैं। अतः उन्होंने ने १९ की गिनती को अत्यन्त महत्वपूर्ण ठहरा कर कुआन की आयत

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ

“जहन्नम पर १९ फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं.” (सूरह अलमुद्स्सिर) से तर्क प्रस्तुत किया है। लेकिन इस तर्क का भ्रम इस प्रकार खुल जाता है कि कुआन में १९ फ़रिश्तों का जिक्र जहन्नम के सम्बन्ध से हुआ है अतः सोचने की बात यह है कि गिनती भाग्यशाली है या दुर्भाग्यशाली? कुआन में दूसरी जगहों पर

भी यह इर्शाद हुआ है कि

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَّةٌ

“उस रोज़ तुम्हारे रब का सिंहासन (अर्श) आठ फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे।” (सूरह अल्हाक्क़:) फिर आठ की गिनती को ही क्यों न सब से अधिक महत्वपूर्ण मान लिया जाए। सत्य यह है कि १९ की संख्या को बहाई धर्म में विशेष महत्व प्राप्त है। अतः बहाइयों के यहाँ महीना १९ दिन का होता है और साल १९ माह का। इस लिए कुआन की आयतों को १९ के इर्द गिर्द घुमाना यह हुरुफ़ मुक़तआत (विभक्त अक्षरों) से १९ की संख्या के महत्व पर तर्क एवं युक्ति प्रस्तुत करना न केवल व्यर्थ है बल्कि बहाई फितने को प्रबल बनाने का सामान करना है। इस के अलावा यह भी इस गणितीय चक्कर ने गिनतियों के आधार पर क्रियामत (प्रलय) की तारीख़ भी निश्चित कर दी है। शुरुआत तो कम्प्यूटर के द्वारा कुआन को एक मोअजज़ा (चमत्कार) साबित करने से हुई थी लेकिन

बात पहुँची क्रियामत तक

जब कि कुआन में साफ़ साफ़ कहा गया है कि क्रियामत का समय किसी को मालूम नहीं और यह कि वह अचानक आएगी।

2. कुआन के हिक़मत भरी अर्थात् तत्त्वदर्शिता के परिपूर्ण किताब होने का मतलब यह है कि उस की दअवत, उस के प्रस्तुत किये हुए विचार, एवं धारणाएँ और ऐतिहासिक घटनाओं के औचित्य एवं उस की शिक्षाएँ सब की जड़ें मानव प्राकृति एवं स्वभाव के अन्दर बड़ी गहरी हैं और सदबुद्धि उन का अनुमोदन करती है।

कुआन की यह वास्तविकता खुदा से विमुख लोगों के इस दावे का खण्डन करती है कि विचारों एवं धारणाओं की बुनियाद बुद्धि की स्थिरता और अंधविश्वास पर है। यह बात दूसरी धार्मिक पुस्तकों के बारे में सही हो सकती है लेकिन कुआन के बारे में हरगिज़ सही नहीं। मगर अक़ल के ये अन्धे खरे और खोटे में कोई अन्तर नहीं करते।

3. उस ज़माने में लोगों को इस बात पर आश्चर्य होता था कि अल्लाह की तरफ़ से वह्य का अवतरण एक इन्सान पर कैसे हो सकता है और मौजूदा ज़माने के लोगों के लिए वह्य की कल्पना ही अस्वीकार्य बन गई है, मगर कुआन का ब्रह्माण्ड में निहित रहस्यों एवं मर्मों पर से पर्दा उठाना और जीवन की उन गुत्थियों को सुलझाना जिन को बड़े बड़े हकीम,

नीतिज्ञ एवं फ़िलासफ़र भी नहीं सुलझा सके। तथा मनुष्य का पूर्ण रूप से मार्गदर्शन करना और ऐसी शिक्षाओं को प्रस्तुत करना जो अति उचित एवं बुद्धि संगत तथा अत्यंत न्याय पर आधारित हो, इस के अल्लाह की वहय (प्रकाशना) होने का खुला सबूत है। इन्कार करने वालों ने वहय के इन्कार में बातें तो बहुत छाँटी हैं और फ़लसफ़ियाना बहसों भी खूब की हैं मगर वे न ब्राह्मण्ड के मर्मों एवं रहस्यों पर से परदा उठा सके हैं न जीवन की गुत्थियों को सुलझा सके हैं और न ही इन्सान के मार्गदर्शन अर्थात् रहनुमाई का सामान कर सके हैं। यही कारण है कि हर सिद्धान्त दूसरे सिद्धान्त का खण्डन करता है और हर फ़िलासफ़र दूसरे फ़िलासफ़र का। लेकिन अल्लाह की वहय का यह मामला ऐसा है कि वह अनन्त सत्यता पर आधारित है और इस को प्रस्तुत करने वाले (नबी) सदैव एक ही वास्तविकता को प्रस्तुत करते रहे हैं और कुर्आन को प्रस्तुत करने वाला इसी सिलसिले की अन्तिम कड़ी है।

4. इन्कार करने वाले जब देखते कि कुर्आन की सुवाणी एवं तत्वदर्शिता के सामने अरबी के प्रमुख साहित्यकारों का कलाम (साहित्य) भी मात खा रहा है और वह दिलों को जीतता चला जा रहा है तो इस का कोई जवाब न बता पाते इस लिए वे यह फुलझड़ी छोड़ते कि यह शब्दों की जादूगरी है और यह व्यक्ति कलाम (साहित्य) का कारनामा दिखा रहा है।

5. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ८२ में गुजर चुकी।

6. इस की व्याख्या भी सूरह आराफ़ नोट ८३ में गुजर चुकी।

7. अर्थात् कोई हस्ती ऐसी नहीं जो खुदा के फ़ैसलों में दखल देती हो या उस से किसी को निश्चित रूप से कुछ दिलवा कर रहे, या क्रियामत के दिन उस की अनुमति के बग़ैर किसी को क्षमा दिलाने के लिए उस के समक्ष सिफ़ारिश करे।

इस से मुसलमानों में फ़ैली हुई जिहालत एवं आज्ञानता का भी खण्डन होता है कि फ़लाँ वली या बुजुर्ग हमारे गुनाह क्षमा करा कर रहेंगे अतः “उन का दामन नहीं छोड़ेंगे” का नारा लगाया जाए।

8. अर्थात् जब अल्लाह ही ब्रह्माण्ड (कायनात) सृष्टा एवं उस का शासक है तो तुम्हारा रब (स्वामी) उस के सिवा कोई और कैसे हो सकता है। (रब शब्द की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट ४)

9. अर्थात् जब अल्लाह ही तुम्हारा रब (स्वामी) है तो तुम्हें इबादत (उपासना) भी उसी की करनी चाहिए क्यों कि वही इस के योग्य है। उसी को माबूद (उपास्य) मान कर उस की परस्तिश करो और उस के बन्दे बन कर रहो। (इबादत की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट ७)

10. मनुष्य को जिस उद्देश्य के लिए दूसरा जीवन प्रदान किया जायेगा उस का यह सकारात्मक पक्ष है और यही वास्तविक लक्ष्य है अर्थात् अल्लाह अपने वफ़ादार बन्दों को उन के कर्मों का ऐसा बदला दे कि वे निहाल (प्रसन्न) हो जाएँ।

11. अर्थात् अल्लाह को अकेला रब (स्वामी) मान कर उस की इबादत करने की जो दअवत कुर्आन प्रस्तुत कर रहा है उस को मानने से जिन्होंने ने इन्कार किया।



वही है जिस ने सूरज को तेज्वान बनाया और चाँद को रौशन और उस की (घटने बढ़नेकी) मन्जिलें निश्चित कर दीं ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको अल्लाह ने यह सब उद्देश्यसहित बनाया है। वह अपनी निशानियों को खोल कर बयान करता है उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (अल-कुर्आन)

5. वही है जिस ने सूरज को तेजवान बनाया और चाँद को रौशन ¹² और उस की (घटने बढ़नेकी) मन्जिलें निश्चित कर दीं, ¹³ ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको ¹⁴ अल्लाह ने यह सब उद्देश्यसहित बनाया है ¹⁵। वह अपनी निशानियों को खोल कर बयान करता है उन लोगों के लिए जो जानते हैं। ¹⁶

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ
لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ
يُقْصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑤

6. निस्संदेह रात और दिन के एक के बाद एक आने में और उन तमाम चीजों में, जो अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा की हैं, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हैं। ¹⁷

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ آيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ⑥

7. जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी ही पर राजी और संतुष्ट हो गए हैं ¹⁸ और जो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَاطْمَأْنَوْا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ⑦

8. उन का ठिकाना दोज़ख (नरक) होगा, उस कमाई के कारण जो वे करते रहे। ¹⁹

أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ النَّارُ بِهَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑧

9. जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये उन का रब उन के ईमान की बदौलत उन को सफलता की मन्जिल पर पहुँचाएगा ²⁰। उन के नीचे नहरें बह रही होंगी, नेमत भरी जन्नतों में।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيُهُمْ رَبُّهُمْ
بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ⑨

10. वहाँ उन की पुकार होगी “सुब्हानकल्लाहुम्मा” (पवित्र है तू ऐ अल्लाह) और वहाँ उन का (आपस में) दुआ का कलिमा होगा “सलाम” (सलामती हो) और उन की पुकार “अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन” (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे जगत का रब है) ²¹ पर समाप्त होगी।

دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَآخِرُ
دَعْوَاهُمْ أَنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑩

11. अगर अल्लाह लोगों को अज़ाब देने में जल्दी करता जिस तरह भलाई के मामले में वह उन के लिए जल्दी करता है, तो उन की मुहत्त कभी की समाप्त कर दी गई होती। मगर हम उन लोगों को जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। ²²

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَبَدَّلَ اللَّهُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي
طُعْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ⑪

12. मूल अरबी (Text) में सूरज के लिए “ज़िया” और चाँद के लिए “नूर” शब्द प्रयोग हुआ है जो इस अन्तर को स्पष्ट करता है कि सूरज को तेज़ रौशनीवाला बनाया है और चाँद को ठंडी रौशनी वाला।

13. चाँद की मन्जिलों से अभिप्रेत देखने में आने वाली मन्जिलें हैं। वह घूमता हुआ दिखाई देता है और उस के घटने और बढ़ने से विभिन्न शकलें पैदा हो जाती हैं जिस को चन्द्रकला कहते हैं गोया चाँद रोज़ाना एक मन्जिल तय करता हुआ अपना चक्कर पूरा करता है। कुर्आन का तर्क अनुभव एवं देखने में आने वाली इन शकलों एवं आकृतियों के लिए है।

14. चाँद की ये आकृतियाँ तारीखों के निर्धारण का काम देती हैं। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट २५८ और सूरह तौबा नोट ७०)

15. अर्थात् ब्रह्माण्ड की यह व्यवस्था इस बात की साक्षी है कि इस कारखाना को एक ऐसी हस्ती ने अस्तित्व प्रदान किया है जो बड़ी हिकमत वाला और तदबीर करने वाला (तत्त्वदर्शी एवं नीतिज्ञ) है क्योंकि उस के कोने कोने से उस की हिकमत और तदबीर का पता चल रहा है और यह बात इस ब्रह्माण्ड के उद्देशपूर्ण होने पर प्रमाण प्रस्तुत करती है और कुर्आन इस का जो उद्देश्य बयान करता है वह इस हिकमत से पूरी तरह मेल खाती है जो इस ब्रह्माण्ड में चारों ओर दिखाई पड़ती है। सारांश यह कि ब्रह्माण्ड की यह व्यवस्था इस बात पर प्रमाण प्रस्तुत करती है कि इस का स्वामी और शासक एक दिन अदालत आयोजित करेगा और अपने वफ़ादार बन्दों को इनाम देगा और उद्दण्डों (सरकशों) को दण्ड देगा।

इनाम और सज़ा अर्थात् बदला मिलने के दिन का यह अति स्पष्ट प्रमाण है और कुर्आन इन प्रमाणों को इस लिए प्रस्तुत करता है कि लोग सूझ बूझ से काम लें और सत्य तक पहुँचना उन के लिए आसान हो। इस के बावजूद आज कल के भौतिकवादी इस्लाम और दूसरे धर्मों में अन्तर नहीं करते और यह समझते हैं कि आखिरत की धारणा भी निरी “धारणा” मात्र है जो बौद्धिक तर्क से ख़ाली है। अगर ये लोग खुले मन से कुर्आन का अध्ययन करते तो उन्हें मालूम हो जाता कि कुर्आन जब बुनियादी अक़ीदों (धारणाओं) को पेश करता है तो उस का प्रमाण प्रस्तुत करने एवं तर्क वितर्क करने का अन्दाज़ दिल और दिमाग़ को अपील करने वाला होता है इस लिए उस की दिखाई हुई राह बुद्धि, अन्तरदृष्टि एवं ज्ञान की राह है।

16. अर्थात् इन निशानियों से फ़ायदा वही लोग उठाते हैं जो जाहिल बने नहीं रहते बल्कि इस ज्ञान की रौशनी में जिज्ञासा और खोज का सफ़र तय करते हैं जो अल्लाह ने उन की प्राकृति एवं स्वाभाव में डाल दिया है।

17. अर्थात् कायनात (ब्रह्माण्ड) में फैली हुई इन निशानियों से वही लोग रहनुमाई हासिल करते हैं जो अपने पैदा करने वाले (सृष्टा) से डरते हैं क्योंकि सृष्टा की पहचान हर व्यक्ति के स्वभाव को समर्पित की गई है और सृष्टा की कल्पना मात्र से ज़रूर उस का भय पैदा होता है लेकिन जो लोग अपने स्वभाव को इस हद तक विकृत कर चुके हों कि नहीं जानते उन का कोई पैदा करने वाला भी है, उन के अन्दर न उस का भय पैदा हो सकता है और न उन के अन्दर रहनुमाई (मार्गदर्शन) स्वीकार करने की क्षमता बाक़ी रहती है।

18. आजकल के लोग जो खुदा से विमुख हैं संसारिक जीवन से अति संतुष्ट नज़र आते हैं। वे आखिरत पर नहीं दौलत पर विश्वास रखते हैं। उन को नैतिक उन्नति से कोई सरोकार नहीं होता अलबत्ता भौतिक प्रगति से वे बहुत प्रसन्न होते हैं। उन का दिमाग़ दुनिया भर की जानकारीयों के लिए कम्प्यूटर होता है मगर उन का दिल आखिरत के मामले में एक ज़ंग पड़ी मशीन। ऐसे लोग अपने भ्रमों पर बड़े मग्न होते हैं मगर कब तक?

19. दुनिया में आदमी जो काम भी करता है उस का असर निश्चित रूप से पड़ा करता है। आदमी भलाई के काम करे या बुराई के उन के प्रभावों को वह अपने दामन में निश्चित रूप से समेटता रहता है। गोया यह उस के अपने हाथों की कमाई है। और यह कमाई क्रियामत के दिन परिणाम के रूप में उस के सामने आ धमकेगी।

20. यह ईमान का परिणाम बयान किया गया है न कि मात्र ईमान की धारणा का, क्योंकि धारणा (अक़ीदा) तो आदमी मुसलमान घराने में पैदा होने के कारण अपना लेता है। और इसी आधार पर मुस्लिम समाज का अंग बना रहता है, जब कि ईमान दिमाग़ और विवेक का फैसला होता है। जिस तरह एक बल्ब तभी रौशनी देता है जब कि उस में विद्युत प्रवाहित हो रही हो इसी तरह अक़ीदा तभी अपना असर दिखाता है जब कि उस में ईमान की रुह विद्यमान हो।

अक़ीदा परोक्ष की सत्यता को स्वीकारने का नाम है जब कि ईमान सही अक़ीदे को दिल से स्वीकारने और विश्वास की वह मनोदशा है जो इन्सान की आत्मा को संवारती और सोचने और फैसला करने की एक खास शक्ति उसे प्रदान करती है।

21. अर्थात् ईमान वाले जन्नत की नेमतों में ऐसे मग्न नहीं होंगे कि अपने रब को भूल जाएँ बल्कि उन की ज़बान पर पाकी और प्रशंसा (तस्बीह और हम्द) के कालिमें जारी होंगे और वे मिलेंगे तो न कोई किसी को बुरा भला कहेगा और न लड़ाई झगड़ा करेगा बल्कि सब एक दूसरे की सलामती चाहेंगे और सलाम की दुआ के साथ एक दूसरे का स्वागत करेंगे।

मतलब यह कि जन्नत का वातावरण अल्लाह की प्रशंसा और उस की पवित्रता के कालिमों (सदाओं) और दुआ के शब्दों में गूँज उठेगी। मन की शान्ति और रूहानी लज्जतों के लिए कितना बेहतरीन माहौल होगा वह।

22. यह उस सवाल का जवाब है जो जज़ा और सज़ा (अर्थात् प्रतिफल) का इन्कार करने वाले पेश करते हैं और यह कि यदि सत्य का इन्कार या गुनाहों के कर गुजरने पर अल्लाह की ओर से कोई सज़ा मिलनी है तो वह तुरन्त क्यों नहीं

मिलती? इस का जवाब यहाँ दिया गया है कि अल्लाह तआला इन्सान को फ़ायदा पहुँचाने में जो जल्दी करता है वह नुक्सान पहुँचाने में नहीं करता। क्यों कि वह चाहता है कि इन्सानों को संभलने और अपना सुधार करने का अवसर प्रदान किया जाए। अगर अल्लाह का नियम (सुन्नत) यह न होता तो लोगों की मोहलत कभी की समाप्त हो गई होती। मगर जो लोग इस मोहलत से अनुचित लाभ उठाते हैं। अल्लाह तआला उन को भटकने के लिए छोड़ देता है ताकि उन का पैमाना भर जाए।



और इन्सान (का हाल यह है कि जब उस) को तकलीफ़ पहुँचती है तो लेटे, बैठे, खड़े (जिस हाल में होता है) हम को पुकारने लगता है लेकिन जब हम उस की तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो इस तरह चल देता है कि गोया उस ने किसी तकलीफ़ में हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुज़रने वालों के लिए उन के काम सुन्दर बना दिए गये हैं । (अल-कुर्आन)

12. और इन्सान (का हाल यह है कि जब उस) को तकलीफ़ पहुँचती है तो लेटे, बैठे, खड़े (जिस हाल में होता है) हम को पुकारने लगता है लेकिन जब हम उस की तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो इस तरह चल देता है कि गोया उस ने किसी तकलीफ़ में हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुजरने वालों के लिए उन के काम सुन्दर बना दिए गये हैं।²³

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنَّةٍ أُوقَاعِدًا أَوْ قَاعِدًا
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ
مَّسَّهُ كَذَلِكَ زِينٌ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

13. तुम से पहले हम (कितने ही) क़ौमों को विनष्ट कर चुके हैं, जब कि उन्होंने ने ज़ुल्म किया।²⁴ उन के रसूल उन के पास खुली खुली निशानियाँ ले कर आए थे, मगर वे कदापि ईमान लाने वाले न थे। इस तरह हम मुजरिम क़ौम को बदला देते हैं।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا كَذَلِكَ نَجْزِي
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٨﴾

14. फिर उन के बाद हम ने तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा (सत्तावान) बनाया ताकि देखें तुम कैसे काम करते हो ²⁵।

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ
تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

15. और जब हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ कर उन्हें सुनाई जाती हैं तो वे लोग जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते कहते हैं कि इस कुर्आन के बजाय कोई और कुर्आन लाओ, या उस में संशोधन करो ²⁶ कहो मेरा यह काम नहीं कि इस में अपनी ओर से रद्दोबदल करूँ। मैं तो उस वह्य (प्रकाशना) का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है।²⁷ अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक भयंकर दिन के अज़ाब (यातना) का डर है।²⁸

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ
لِقَاءَنَا إِنَّا نَحْنُ الْغَائِبُونَ أَوْ يَدَّعُوا أَنَّهُمْ يُخْفُونَ
بَيْنَ يَدَيْهِمْ أَوْ يَدَّعُوا أَنَّهُمْ يُخْفُونَ بَيْنَ يَدَيْهِمْ
إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢٠﴾

16. कहो अगर अल्लाह चाहता तो न मैं तुम्हें कुर्आन सुना सकता था और न वह इस से तुम्हें सूचित करता। मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?²⁹

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْهِمْ وَلَا أَذْرَكُكُمْ بِهِ
فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٢١﴾

17. फिर उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो एक झूठी बात बना कर अल्लाह से जोड़े या उस की आयतों को झुठलाए ³⁰। निश्चय ही मुजरिम कभी कामयाब नहीं होंगे।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ
إِنَّهُ لَا يَفْعَلُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾

23. अर्थात् जो लोग अल्लाह की बाँधी सीमा का उल्लंघन करते हैं और चाहते हैं कि स्वच्छंद जीवन व्यतीत करें वे उन घटनाओं और वास्तविकताओं से कोई सबक नहीं लेते जो रोज़ाना की ज़िन्दगी में सामने आते रहते हैं और जिन में उन को ग़फ़लत से जगाने का सामान होता है। किन्तु वे अपनी करतूतों का ऐसा सुन्दर औचित्य गढ़ते हैं कि सुधार के लिए आमादगी उन के अन्दर पैदा हो ही नहीं पाती।

24. जुल्म से अभिप्रेत वह ग़लत कार्य पद्धति एवं वह कुकर्म है जो अल्लाह की निशानियों, उस के रसूल, और उस की हिदायत को झुठला कर इन्सान अपनाता है।

25. दुनिया से जब एक क्रौम विदा लेती है अथवा समाप्त होती है तो दूसरी क्रौम उस की जगह ले लेती है। इस तरह क्रमानुसार क्रौमों को कर्मक्षेत्र में लाने का यह उद्देश्य नहीं है कि वे एक से बढ़ कर एक भौतिक कारनामों दिखाएँ बल्कि उद्देश्य परीक्षा लेना है कि कौन ख़ुदा का बन्दा बन कर रहता है और कौन उस का सरकश बन कर, कौन सी क्रौम ख़ुदा से परिचित सभ्यता को जन्म देती है और कौन सी क्रौम ख़ुदा से अपरिचित एवं विमुख सभ्यता को। कौन सी क्रौम नेकियों को ऊपर उठाती है और कौन सी क्रौम बुराइयों को। कौन सी क्रौम भौतिक प्रगति में नैतिकता और शरीअत की सीमाओं की पाबन्दी करती और कौन सी क्रौम इन सीमाओं का उल्लंघन कर भौतिक प्रगति के लिए छलांग लगाती है।

26. बहुदेववादी चाहते थे, अगर कुआन पेश करना ही है तो ऐसा कुआन पेश करो जिस में बुत परस्ती के विरुद्ध कुछ कहा ही न गया हो, या फिर मौजूदा कुआन में ऐसा संशोधन करो कि बहुदेववादी सभ्यता के लिए भी गुन्जाइश निकल आए। आजकल के इन्कार करने वाले भी यह चाहते हैं कि अगर असल कुआन में नहीं तो कम से कम उस के भावार्थ में ही ऐसा परिवर्तन किया जाये कि वह ज़माने के रुझान के अनुकूल बन जाये और बहुदेववादी धर्मों को स्वीकार करने या कम से कम सहन करने की गुन्जाइश निकल आए।

27. लोग कुआन में संशोधन का सुझाव यह समझ कर देते हैं कि यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रचना है, हालाँकि यह आप की नहीं बल्कि ख़ुदा की रचना है और ख़ुदा की रचना में काट छाँट करने का हक़ किसी को नहीं हो सकता चाहे वह उस का पैगम्बर ही क्यों न हो।

28. अर्थात् क्रियामत के दिन के अज़ाब का।

29. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुआन के अवतरण का आरम्भ उस समय हुआ जब कि आप की आयु ४० वर्ष थी। उम्र का यह लम्बा हिस्सा आप मक्का वालों के बीच गुज़ार चुके थे।

इस अवधि में आप का जीवन चरित्र बिल्कुल बेदाग़ रहा और किसी ने भी आप की सच्चाई और अमानतदारी के खिलाफ़ शंका या संदेह व्यक्त नहीं किया बल्कि आप अमीन (अमानतदार) के लक़ब से पुकारे गए। फिर अगर इस तमाम मुद्दत में आप सच्चे और अमीन रहे तो ऐसे व्यक्ति से यह कैसे संभव है कि वह इक्तालीसवें वर्ष में प्रवेश करते ही झूठ बोलने लगे और वह भी ख़ुदा पर।

फिर यह भी एक सच्चाई है कि आप ने चालीस वर्ष की इस अवधि में कोई ऐसी बात नहीं की जिस से यह संदेह उत्पन्न होता कि आप धार्मिक सुधारक की हैसियत से उभरना चाहते हैं या क्रौम का नेतृत्व एवं सरदारी चाहते हैं या लोगों को महसूस कराना चाहते हैं कि आप एक असाधारण एवं प्रतिभा सम्पन्न (Genius) व्यक्ति हैं। ऐसा व्यक्ति चालीस साल गुज़ारने के बाद नुबुव्वत का झूठा दावा कैसे कर सकता है जब कि इस आयु में इन्सान का ज़ेहन एक ख़ास साँचे में ढल चुका होता है और एक मिज़ाज बन चुका होता है?

आपत्ति व्यक्त करने वाले इन सवालों का जवाब आज तक नहीं ला सके हैं।

30. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट ४० में गुज़र चुकी।



18. ये अल्लाह के बजाय ऐसी चीजों की पूजा करते हैं जो इन को न नुकसान पहुँचा सकती हैं और न फ़ायदा। और कहते हैं कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं ³¹। कहो क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की ख़बर देते हो जिसे वह नहीं जानता न आसमानों में और न ज़मीन में ³²। पाक और बुलन्द है वह उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ
وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَدْعُونَ
اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ
سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ⁽¹⁸⁾

19. सब लोग एक ही उम्मत थे। फिर उन्होंने मतभेद किया ³³। और अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले ही तय न हो चुकी होती तो जिन बातों में वे मतभेद कर रहे हैं उन का फैसला कर दिया जाता ³⁴।

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ فِي مَا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ⁽¹⁹⁾

20. और (ये लोग) कहते हैं कि इस पर इस के रब की तरफ़ से कोई निशानी ³⁵ क्यों न उतारी गई, तो कहो ग़ैब (परोक्ष) का मालिक और अधिकारी अल्लाह ही है ³⁶। अतः इन्तिज़ार करो ³⁷। मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ
فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ
مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ⁽²⁰⁾

21. और जब हम लोगों को तकलीफ़ के बाद रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे हमारी निशानियों के बारे में चालें चलने लगते हैं ³⁸। कहो अल्लाह अपनी तदबीर में बहुत तेज़ है ³⁹। उस के फ़रिश्ते तुम्हारी चालबाज़ियों को लिख रहे हैं। ⁴⁰

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّهُمْ إِذْ الْأُمُ تُكْرَهُ
فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مُكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ⁽²¹⁾

22. वही है जो तुम्हें थल और जल में चलाता है ⁴¹। यहाँ तक कि जब तुम नौकाओं में सवार होते हो और वे अनुकूल हवा पा कर चल रही होती हैं और सफ़र करने वाले ख़ुश हो रहे होते हैं अचानक तेज़ हवा चलने लगती है और हर तरफ़ से मौज़ें उठती हैं और वे ख़याल करने लगते हैं कि मुसीबत में घिर गए। उस समय वे अल्लाह को पुकारने लगते हैं, दीन (विनम्रता एवं दास्ता) को उस के लिए ख़ालिस करते हुए ⁴² कि अगर तूने इस (मुसीबत) से हमें मुक्ति दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ार बनेंगे।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِ وَ
جَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهُمْ عاصِفٌ
وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا
اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ هَٰلِكِينَ ابْجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ⁽²²⁾

31. “ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं” अर्थात् हमारी फ़रीयाद खुदा तक पहुँचाने और उस से “आजीविका” दौलत, औलाद आदि दिलवाने में हमारे लिए माध्यम और वसीला हैं। ये माध्यम और वसीले हमारी पुकार सुनते हैं और खुदा से हमारे लिए बहुत कुछ मनवा लेते हैं।

ये ख़याल मक्का के बहुदेववादियों का अपने बुतों के बारे में था और इसी कारण वे उन की पूजा करते और उन पर चढ़ावे चढ़ाते। कुछ ऐसा ही ख़याल और ऐसी ही सोच मुसलमानों के एक बहुत बड़े समूह में, जो बुजुर्गों के बारे में अतिशयोक्ति (गुलू) का शिकार हैं “पीरों और वलियों” के बारे में पैदा हो गया है अतः वे उन को खुदा के समक्ष माध्यम और वसीला करार दे कर उन से फ़रियाद करने लगते हैं, बड़े आदर और सम्मान के साथ उन की नज़्र और न्याज़ करते हैं और उन की क़ब्रों पर चढ़ावे चढ़ाते हैं और यह सब कुछ करने के बावजूद समझते हैं कि हम उन की पूजा थोड़े ही कर रहे हैं। हाली के कथनानुसार:

करे ग़ैर गर बुत की पूजा तो काफ़िर
जो ठहराए बेटा खुदा का तो काफ़िर
कहे आगको अपना क़िबला तो काफ़िर
कवाक़िब में माने करिश्मा तो काफ़िर
मगर मोमिनों पर कुशादा हैं राहें
परस्तिश करें शौक़ से जिस की चाहें

और अल्लामा राज़ी ने अपनी तफ़्सीर में बिलकुल सही लिखा है:-

“बहुदेववादियों ने ये बुत नबियों और बुजुर्गों की सूरतों पर बना लिए और इस भ्रम में मग्न हैं कि जब वे इन बुतों की पूजा अर्चना करेंगे तो ये बुजुर्ग अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी होंगे।

इस ज़माने में इस की मिसाल बहुत से लोगों का बुजुर्गों की क़ब्रों के आदर सम्मान में व्यस्त हो जाना है इस विश्वास के साथ कि इन की क़ब्रों का आदर करने की सूरत में वे अल्लाह के यहाँ उन के सिफ़ारिशी होंगे।”

(अतफ़्सीरुल कबीर जिल्द 17 पृष्ठ 60)

32. जिस चीज़ का खुदा को ज्ञान नहीं, इस का मतलब यह है कि वह चीज़ सिरे से अपना अस्तित्व ही नहीं रखती। और जब आसमान और ज़मीन में इन “सिफ़ारिशियों” के अस्तित्व का पता अल्लाह तआला को नहीं है तो उन की हकीक़त इस के सिवा क्या है कि वे बहुदेववादियों के अपने मन की पैदावार हैं।

और यह बात भी बहुत अजीब है कि अल्लाह तआला स्वयं कह रहा है कि उस के यहाँ कोई सिफ़ारिशी नहीं है बल्कि

अपने बन्दों के हिसाब सीधे वह स्वयं चुकाता है लेकिन जिन की घुट्टी में शर्क पड़ा हुआ है वे इस पर हट किये जा रहे हैं कि फ़लाँ और फ़लाँ अल्लाह के समक्ष हमारे सिफ़ारिशी हैं गोया उन का ज्ञान अल्लाह के ज्ञान से बढ़ कर है और वे उस को एक ऐसी बात की ख़बर देना चाहते हैं जिस को वह नहीं जानता ऐसी व्यर्थ की बातों से अल्लाह की पनाह। “नऊज़ुबिल्लाही मिन ज़ालिक”।

33. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रा नोट ३०८ और ३०९ एवं सूरह अन्आम नोट २९५

34. धर्मों की भिन्नता को देख कर यह सवाल मन में उत्पन्न होता है कि खुदा दुनिया ही में अदालत बरपा कर के इस मतभेद का फैसला क्यों नहीं फ़रमाता। इस का जवाब इस आयत में दिया गया है जिस का मतलब यह है कि इस फैसले के लिए अल्लाह तआला ने क्रियामत का दिन निश्चित कर रखा है। दुनिया में तो इन्सान की परीक्षा है कि वह धर्मों की भिन्नता एवं मतभेदों के रहते अपनी बुद्धि का सही उपयोग कर के और अपनी फ़ितरत (प्राकृति) की आवाज़ को सुन कर और निशानियों एवं प्रमाणों से रहनुमाई हासिल कर के जो अल्लाह तआला ने उतारी है, सत्य धर्म को स्वीकार करता है या नहीं। अगर धर्मों के मतभेदों का फैसला दुनिया ही में चुका दिया गया होता तो फिर इन्सान का इम्तिहान किस तरह हो सकता था और उस को इनाम या दण्ड उस के किस काम पर दिया जाता?

35. वे मोज़े (चमत्कार) अभिप्रेत हैं जो देखने में आएँ या महसूस किये जा सकें।

36. अर्थात् ग़ैब की जानकारी भी अल्लाह ही को है और ग़ैब से कोई चीज़ बरामद करना उसी के वश में है। मैं न ग़ैब की जानकारी रखता हूँ और न ग़ैब की कोई चीज़ मेरे वश में है कि उसे जनसाधारण के सामने लाऊँ और तुम्हारी माँग पूरी करूँ।

स्पष्ट हुआ कि एक नबी अपनी तरफ़ से एक मोज़े (चमत्कार) दिखाने पर सामर्थ्य नहीं रखता, तो एक वली अपनी तरफ़ से करामत (चमत्कार) दिखाने पर किस प्रकार समर्थ हो सकता है? वास्तव में अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई कुछ नहीं कर सकता।

37. इन्तिज़ार इस बात का कि तुम्हारे इस अनुचित हट का क्या परिणाम निकलता है।

38. सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर जो दुर्घटनाएँ और दुःख दर्द के जो मामले पेश आते हैं वे अपने अन्दर ऐसी तंबीह, सीख और ऐसे चिन्हों को लिए हुए होते हैं जो लोगों के ज़मीर को जगाने वाली, दुनिया की असल हकीक़त की ओर रहनुमाई करने वाली और खुदा की ओर ध्यानाकर्षित करने

वाली होती हैं। मगर जो लोग खुदा और उस की रहनुमाई को कुबूल न करने की क्रसम खा बैठते हैं वे इन घटनाओं और वास्तविकताओं को ऐसा अर्थ पहनाने लगते हैं कि जेहन खुदा की तरफ़ मुड़ने ही नहीं पाता। अगर बुरे हालात में खुदा याद आ गया था तो अच्छे हालात के आ जाने पर वे अपने उस एहसास को दबाने की कोशिश करते हैं ताकि उन पर खुदा और आखिरत से सम्बन्धित कोई ज़िम्मेदारी आयद न हो। यही उन की अपराधिक गतिविधियाँ हैं, जिन को चालें चलना कहा गया है।

39. अर्थात् तुम्हारी चालों का वह अच्छी तरह तोड़ कर रहा है। मगर उस की तदबीरें गुप्त होती हैं इस लिए लोग इस ख़ाम ख़याली में लिप्त हो जाते हैं कि खुदा उन की बातों का कोई नोटिस नहीं ले रहा है।

40. अर्थात् तुम्हारी ये हरकतें फ़रिश्ते लिख रहे हैं और इस लिए लिख रहे हैं ताकि क्रियामत के दिन अल्लाह की अदालत में तुम्हारे ख़िलाफ़ मुक़दमा चलाया जाए।

41. अर्थात् वह अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें इस क़ाबिल बनाया कि थल और जल का सफ़र कर सको। मौजूदा ज़माने में इन्सान जो हवाई सफ़र करता है वह भी उस की प्रदान की हुई क्षमता का परिणाम है।

42. अर्थात् इस हालत में वे पूरी विनम्रता के साथ सिर्फ़ अल्लाह से दुआ माँगने लगते हैं और अपने गढ़े हुए खुदाओं को भूल जाते हैं। मक्का के बहुदेववादियों का यही हाल था। और अत्यधिक मुसीबत में एक खुदा को पुकारना इस बात की दलील है कि मनुष्य की प्राकृति और उस का स्वभाव एक मात्र खुदा ही से भिन्न है।



और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है। जिन लोगों ने नेकी का रवैया अपनाया उन के लिए नेक बदला है और अतिरिक्त अनुग्रह (फ़ज़ल) उन के चेहरों पर न कालिख छायेगी और न रुस्वाई। यही जन्नत वाले हैं। हमेशा उस में रहने वाले। (अल-कुर्आन)

23. मगर जब वह उन को मुक्ति देता है तो वे नाहक ज़मीन में सरकशी करने लगते हैं⁴³। लोगो ! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे ही ख़िलाफ़ पड़ रही है। दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा उठा लो। फिर तुम्हें हमारी तरफ़ वापस आना है, तब हम बतायेंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे हो।

فَلَمَّا أَتَجَّهُمُ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَأْتِيهَا النَّاسُ
إِنْبَاءَكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ مَتَاءَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ
فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

24. दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से हम ने पानी बरसाया जिस से ज़मीन की वनस्पति, जिस को इन्सान और मवेशी खाते हैं ख़ूब उभर आई। यहाँ तक कि ज़मीन ने अपना सिंघार कर लिया और बन संवर कर खड़ी हो गई⁴⁴ और उस के मालिकों ने समझ लिया कि अब हम फ़ायदा उठा सकेंगे तो अचानक रात या दिन के समय हमारा हुक्म आ गया⁴⁵ और हम ने उस का ऐसा सफ़ाया कर दिया कि गोया कल वहाँ कुछ था ही नहीं⁴⁶ इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोल खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर और फ़िक्क करते हैं⁴⁷।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ
بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا
أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ
قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا
حَصِيدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَبْ بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٤﴾

25. और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है⁴⁸ और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है⁴⁹।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٥﴾

26. जिन लोगों ने नेकी का रवैया अपनाया उन के लिए नेक बदला है और अतिरिक्त अनुग्रह (फ़ज़ल)⁵⁰ उन के चेहरों पर न कालिख छायेगी और न रुस्वाई। यही जन्नत वाले हैं। हमेशा उस में रहने वाले।

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا
ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

27. और जिन लोगों ने बुराइयाँ कमाई तो बुराई का बदला वैसा ही मिलेगा जैसी बुराई की होगी। उन पर रुस्वाई छायेगी। उन को अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के चेहरों पर ऐसा अंधकार छाया होगा कि गोया अंधेरी रात के परदों से उन्हें ढाँक दिया गया हो⁵¹। ये दोज़ख़ (नरक) वाले हैं। सदैव इस में रहने वाले।

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ
مَّا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا
مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٧﴾

43. यह इस बात की मिसाल है कि इन्सान मुसीबत में खुदा को याद करता है लेकिन मुसीबत के टल जाने पर उस को भूल जाता है।

44. जब खेती हरी भरी हो कर लहलहाने लगती है और फ़सल पक कर तैयार हो जाती है तो बड़ा ही लुभावना दृश्य होता है और खेती का मालिक उसे बड़ी आशा भरी नज़रों से देखने लगता है।

45. मुराद आफ़त है जो खुदा के हुक्म से आती है।

46. अर्थात् आनन फ़ानन खेती इस तरह तहस नहस हो गई कि गोया उस का अस्तित्व था ही नहीं। इस तरह की दुर्घटनाएँ आए दिन सामने आती रहती हैं। कभी तूफ़ान के कारण तबाही आती है तो कभी सैलाब की वजह से और कभी किसी और कारणवश। इस उदाहरण से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जिस तरह एक लहलहाती खेती की रौनक क्षणिक अथवा अस्थायी होती है उसी तरह इस जगमगाती दुनिया की रौनक भी अस्थायी एवं क्षणिक है, और जिस तरह अल्लाह का हुक्म आते ही खेती का सफ़ाया हो जाता है उसी तरह इस का हुक्म आने पर एक दिन दुनिया का सफ़ाया हो जायेगा। और जब दुनिया का यह अन्जाम होने वाला है तो बुद्धिमानी का तक्राज़ा है कि आदमी आने वाली दुनिया (आख़िरत) को लक्ष्य बना कर जायज़ हद में रह कर जीवन व्यतीत करे ताकि वह हमेशा हमेशा रहने वाली नेमतों का हक़दार बन सके।

47. कुर्आन दुनिया की इस वास्तविकता को बताने के साथ इस पर चिन्तन मनन का न्योता भी देता है अर्थात् इस मामले में उस का प्रस्ताव (Approach) विवेक एवं बुद्धिसंगत (Rational) और तर्कसंगत एवं युक्तियुक्त (Argumentative) है न कि अक़ीदे को अविवेकी ढंग से मनवाने का। और यह वह बुनियादी बात है जो इसे दूसरे धर्मों से अलग एवं

प्रमुख करती है।

48. मुराद जन्नत है। इसे सलामती का घर इस लिए कहा गया है कि वहाँ इन्सान हर तरह की विपदाओं और हर प्रकार के दुख दर्द से सुरक्षित होगा एवं वहाँ आपस में न कोई झगड़ा होगा और न लड़ाई बल्कि वहाँ की सोसाइटी शान्ति प्रिय सोसाइटी होगी और वहाँ का वातावरण अत्यन्त शान्तिपूर्ण होगा।

49. अर्थात् जहाँ तक सलामती के घर (जन्नत) की ओर बुलाने की बात है यह निमंत्रण सभी के लिए है किन्तु उस राह पर चलना जो सीधी जन्नत को जाती है उन्हीं लोगों को नसीब होता है जिन को अल्लाह इस की तौफ़िक़ देता है।

50. अर्थात् उन को उन की नेकियों का अच्छा बदला तो मिलेगा ही, इस के अलावा अल्लाह तआला उन्हें अपने फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) से अतिरिक्त प्रदान करेगा। कुर्आन में दूसरी जगह फ़रमाया गया है:

لِيُؤْفِيَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ۔

(सू. फ़ाटर: ३०)

“ ताकि उन का अज़्र (बदला) उन को पूरा पूरा दे और अपने उदार अनुग्रह से अतिरिक्त प्रदान करे।” (फ़ातिर: ३०)

51. चेहरा इन्सान के कर्मों का दर्पण होता है। नेकी के असर से चेहरे पर रौनक आ जाती है जब कि बुराई चेहरे को बेरौनक बना देती है। इसी लिए गुनाहगारों और अपराधियों के चेहरों पर कालिख पुती होने के आसार झलकते हैं। दुनिया में तो भलाई और बुराई के आसार की एक झलक ही चेहरे पर देखी जा सकती है लेकिन क्रियामत के दिन चेहरा इन्सान की आत्मा और उस के कर्मों का दर्पण होगा जिस में सब कुछ साफ़ दिखाई पड़ेगा।



28. जिस दिन हम इन सब को इकट्ठा करेंगे फिर शिर्क करने वालों से कहेंगे ठहर जाओ तुम और तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार। फिर हम उन के बीच जुदाई डाल देंगे ⁵²। और उन के साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبِيْعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِيْنَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ
أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ
مَا كُنْتُمْ إِلَّا أَنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

29. अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है कि हम तुम्हारी इबादत से बिलकुल बेखबर थे ⁵³।

فَكَفَى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ
لَغَافِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

30. उस समय हर व्यक्ति को अपने किये का पता चलेगा और सब लोग अपने वास्तविक मालिक के समक्ष लौटाए जायेंगे ⁵⁴ और जो झूठ उन्होंने ने गढ़ रखा था वह सब गुम हो जायेगा।

هٰذَا لِكَيْ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا إِلَى اللّٰهِ مُوَلِّهُم
الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

31. इन से पूछो कौन है जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? या कौन है जिस के क़ब्जे में सुनने और देखने की शक्तियाँ हैं? और कौन है जो ज़िन्दा को मुर्दा से, और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है ⁵⁵। कौन है जो कायनात का इन्तिज़ाम कर रहा है? वे कहेंगे अल्लाह। कहो फिर तुम डरते नहीं? ⁵⁶

قُلْ مَنْ يَّرِزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَمَّنْ يَبْلِكُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللّٰهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

32. बस यही अल्लाह तुम्हारा वास्तविक रब (प्रभु एवं स्वामी) है ⁵⁷। फिर हज़रत के बाद गुमराही के सिवा क्या रह जाता है? ⁵⁸ किस तरह तुम्हें हज़रत से फेरा जा रहा है ⁵⁹।

فَذَلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلٰلَةُ فَأَنَّى
تُصْرَفُونَ ﴿٣٢﴾

33. इस तरह तुम्हारे रब की बात नाफ़रमानी करने वालों पर सच्ची उतरी कि वे ईमान लाने वाले नहीं ⁶⁰।

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوْا أَنَّهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

34. इन से पूछो तुम्हारे ठहराये हुए शरीकों (साझीदारों) में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो और फिर उसे दोहराए? ⁶¹ कहो वह अल्लाह ही है जो पहली बार पैदा करता है और फिर इसे दोहराएगा। फिर तुम्हें कहाँ भटकाया जा रहा है?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاءِكُمْ مَنْ يَّبْدِئُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللّٰهُ
يَبْدِئُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ﴿٣٤﴾

52. साझीदार ठहराने वाले बहुदेववादी अपने साझीदारों को अपना समर्थक एवं सहायक और खुदा के समक्ष अपना सिफारिशी समझते रहे हैं, लेकिन हश्र के मैदान में वे अपने पुजारियों एवं भक्तों से अप्रसन्नता एवं विमुखता प्रकट करेंगे। इस प्रकार आस्था एवं श्रद्धा का वह सम्बन्ध जो उन्होंने अपने साझीदार उपास्यों में बनाया था बिलकुल टूट जायेगा और वे अपने को इस हाल में पायेंगे कि बिलकुल अकेले एवं असहाय हैं।

53. इस जवाब से प्रतीत होता है कि यहाँ साझीदारों से मुराद वे व्यक्ति हैं जिन की आस्था एवं श्रद्धा में हृदय से आगे बढ़ कर के उन्हें खुदा का साझीदार ठहरा लिया गया था। वे दुनिया से विदा ले चुके थे मगर उन के श्रद्धालु उन्हें इस तरह पुकारते थे कि गोया वे उन की पुकार सुनते हैं और उन की मदद करते हैं। इसी विचारों के साथ वे उन की परस्तिश करते, मन्त्रों मानते और उन के नाम की नम्र और नियाज करते। मगर हश्र के मैदान में वे साझीदार अपने भक्तों एवं श्रद्धालुओं के समूह में इन तमाम बातों से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करेंगे जो इस बात का प्रमाण होगा कि पुकारने वाले उन को जो पुकारते थे तो वे उन की पुकार को सुनते न थे। उन का खुदा के कामों में कोई हाथ नहीं था, और उन तक न वह “परस्तिश” पहुँचती थी जो उन के परस्तार करते थे और न वह नम्र और नियाज जो उन के श्रद्धालु एवं भक्त उन के समक्ष प्रस्तुत करते थे। वे इन तमाम बातों से बिलकुल अनभिज्ञ थे। कुआन के कुछ टीकाकारों (मुफस्सिरिन ने यहाँ ठहराये हुए साझीदारों से मुराद बुत लिए हैं किन्तु यह भावार्थ कुछ कारणों से सही नहीं मालूम होता।

पहला कारण, क्रियामत के दिन “साझीदारों” का यह बयान कि “अल्लाह गवाह है कि हम तुम्हारी परस्तिश से अनभिज्ञ रहे” व्यक्ति ही का हो सकता है न कि बुतों का जो निर्जीव हैं।

दूसरा कारण मक्का के बहुदेववादियों के बारे में यह समझना सही नहीं कि वे केवल बुतों की पूजा करते थे बल्कि वे फ़रिश्तों, जिन्नों और गुजरे हुए व्यक्तियों (महापुरुषों) की भी परस्तिश करते थे। अतः ‘अस्याफ़’ एक पुरुष का बुत था और “नायला” एक स्त्री का।

तीसरा कारण आगे आयत ३५ में जो फ़रमाया गया है कि वे रहनुमाई कर नहीं सकते बल्कि खुद रहनुमाई के मुहताज हैं तो यह इस बात की दलील है कि यहाँ अभिप्रेत व्यक्ति हैं क्यों कि रहनुमाई की आवश्यकता व्यक्तियों को होती है न कि निर्जीव बुतों को।

चौथा कारण कुआन हर प्रकार के शिर्क (साझीदार ठहराने)

का खण्डन करता है और मौक्रे के लिहाज से कहीं बुत परस्ती पर चोट करता है तो कहीं फ़रिश्तों की परस्तिश पर, कहीं जिन्न परस्ती पर पकड़ करता है तो कहीं व्यक्ति पूजा पर। अतः कोई कारण नहीं कि हर जगह बुत परस्ती ही मुराद ली जाये और शिर्क को बुत परस्ती तक सीमित समझ लिया जाये।

आयत के इस विस्तृत भावार्थ के तहत मुसलमानों के जाहिल वर्ग की “बुजुर्ग परस्ती” उसी तरह शिर्क करार पाती है जिस तरह मक्का के बहुदेववादियों की व्यक्ति पूजा शिर्क थी।

54. अर्थात् सब की पेशी अल्लाह के समक्ष होगी जो अकेला इन सब का मालिक है।

55. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट १७७

56. अर्थात् जब रोज़ी देने वाला अल्लाह ही है, सुनने और देखने की शक्ति भी अल्लाह ही की देन है, जीवन मृत्यु के करिश्मे दिखाना भी उसी का काम है और कायनात का इन्तिजाम भी वही कर रहा है और मक्का के बहुदेववादी इसी के क़ायल थे तो फिर उस के अलावा किसी को उपास्य एवं माबूद मानने के लिए आधार ही क्या है। और उस की इबादत में दूसरों को शरीक करते (साझीदार बनाते) हुए तुम डरते नहीं कि वह इस की तुम्हें कड़ी सज़ा देगा।

57. अर्थात् जब अल्लाह ही तुम्हारी परवरिश कर रहा है और देख रेख एवं स्वामित्व की यह पूरी व्यवस्था उसी की स्थापित की हुई है तो फिर किसी और को अपनी क्रिस्मों का मालिक समझना और उस को फ़रियाद सुनने के लिए पुकारना किस तरह सही हो सकता है?

58. अर्थात् एक अल्लाह को रब मानना ही हक़ है बाक़ी सब गुमराही की बातें हैं।

59. अर्थात् तुम्हें इस बात का होश भी है कि स्पष्ट सत्य से तुम्हें कौन फेर रहा है और किधर ले जा रहा है याद रखो यह शैतान है जो तुम्हारी नकेल पकड़ कर तुम्हें ग़लत रास्ते पर डाल रहा है और तुम हो कि आँखें बन्द कर के उस के पीछे चले जा रहे हो।

60. अल्लाह की बात सच्ची आने से मुराद अल्लाह के उस नियम (सुन्नत) के घेरे में आ जाना है जो उस ने गुमराही के बारे में बनाया है और जिस के अनुसार उन लोगों को ईमान की दौलत नसीब नहीं होती जो अपने रब के आज्ञापालन को अपनी आज़ादी एवं स्वच्छंदता में बाधक समझते हैं और चाहते हैं कि जानवरों की तरह बेक़ैद एवं मन माने ढंग से जीवन गुज़ारें।

61. यह एक और बुद्धिसंगत प्रमाण है कि जिस से साबित होता है कि बहुदेववादियों के खुदा बिलकुल असत्य हैं, उन की कोई हकीकत नहीं। वे स्वीकार करते हैं कि उन को

अस्तित्व से अनस्तित्व में लाने में उन के उपास्यों का कोई हाथ नहीं। इस तरह उन के उपास्य यह सामर्थ्य भी नहीं रखते हैं कि उन को मौत के बाद दोबारा जीवन प्रदान करें। फिर उन में खुदा के गुण कहाँ से आ गए। और उपास्य, प्रभु एवं स्वामी किस तरह ठहरे ?

स्पष्ट रहे कि अरब के बहुदेववादी इस बात को मानते थे

कि उन का और पूरी कायनात का पैदा करने वाला सिर्फ अल्लाह है और अगर दुनिया के किसी बहुदेववादी धर्म में यह धारणा पाई जाती हो कि एक खुदा के सिवा किसी और ने इन्सान को या किसी चीज़ को पैदा किया है तो यह धारणा किसी बुद्धि संगत एवं तर्क संगत प्रमाण पर आधारित न होने के कारण सरासर ग़लत और असत्य है।



क्या वे कहते हैं कि इस (कुर्आन) को इस व्यक्ति ने गढ़ लिया है । कहो अगर तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरह ही बना कर लाओ, और अल्लाह के सिवा जिन को तुम बुला सकते हो बुला लो । (अल-कुर्आन)

35. इन से पूछो तुम्हारे ठहराये हुए शरीकों में कोई है जो हक़ (सत्य) की तरफ़ रहनुमाई करता हो ? कहो वह अल्लाह ही है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है।⁶² फिर जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है वह इस का हक़ रखता है कि उस का अनुपालन किया जाये या वह जो राह नहीं पाता जब तक कि उस की रहनुमाई न की जाये ⁶³। तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي
لِلْحَقِّ أَفَنْ يَهْدِيَ إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي
إِلَّا أَنْ يَهْدِيَ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ٣٥

36. इन लोगों में अधिकतर ऐसे हैं जो आज अटकल के पीछे चल रहे हैं ⁶⁴। और अटकल, सत्य (हक़) के मुकाबले में कुछ भी काम नहीं आ सकता।⁶⁵ ये जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ٣٦

37. और यह कुआन ऐसी चीज़ नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई गढ़ लाए⁶⁶, बल्कि यह पुष्टि है उस (शिक्षा) की जो पहले से मौजूद है ⁶⁷। और तफ़सील है अल-किताब (विशिष्ट किताब) की ⁶⁸। इस में कोई शक नहीं कि यह सारे जगत के रब की ओर से है।

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ
تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَارِيبَ فِيهِ
مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٣٧

38. क्या वे कहते हैं कि इस (कुआन) को इस व्यक्ति ने गढ़ लिया है। कहो अगर तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरह ही बना कर लाओ, और अल्लाह के सिवा जिन को तुम बुला सकते हो बुला लो ⁶⁹।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ
اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٣٨

39. वास्तविकता यह है कि लोग जिस बात को अपने ज्ञान की पकड़ में न ला सके और जिस की असल हक़ीक़त अभी ज़ाहिर नहीं हुई उस को इन्होंने झुठला दिया ⁷⁰। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो इन से पहले गुज़र चुके, तो देखो ज़ालिमों का क्या अन्जाम हुआ।

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ
كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ٣٩

40. इन में ऐसे भी हैं जो उस पर ईमान लाते हैं और ऐसे भी हैं जो ईमान नहीं लाते और तुम्हारा रब फ़सादियों को ख़ूब जानता है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ
بِالْمُفْسِدِينَ ٤٠

62. हक़ (सत्य) से मुराद विश्वव्यापी अथवा सर्वव्यापी सच्चाई (Universal Truth) है। अर्थात् वे मौलिक वास्तविकताएँ जो मनुष्य के जीवन और इस ब्रह्माण्ड की पृष्ठभूमि में निहित हैं और जिन को मालूम किये बग़ैर मनुष्य अपने आप को सही रख पर नहीं डाल सकता। ये वास्तविकताएँ स्पष्ट हैं अल्लाह ही जानता है इस लिए वही इन्सान की सही रहनुमाई (मार्गदर्शन) कर सकता है। और इस रहनुमाई के लिए उस ने वहय (ईश्वरीय प्रकाशना) का इन्तिज़ाम किया है। और यह वहय आज कुर्आन के रूप में मौजूद है। इस के विपरीत बहुदेववादियों अर्थात् शिर्क करने वालों के उपास्यों में कोई नहीं है जो हक़ की रहनुमाई का काम करता हो क्योंकि कि यह बात किसी के बस की नहीं है। फिर उन को खुदा का दर्जा देने का क्या अर्थ?

63. इशारा है उन गुजरे हुए व्यक्तियों की ओर जिन को बहुदेववादियों ने उपास्य (माबूद) बना लिया था। ये बुजुर्ग लोग इन्सान होने की हैसियत से खुद रहनुमाई के मुहताज थे। फिर वे खुदा के समकक्ष क्यों कर हो सकते हैं जो निश्चय ही सब को सच्ची दिहायत देने वाला है?

64. अर्थात् यह बहुदेववादियों का अंधविश्वास है जिस की बुनियाद पर इन्होंने अपने धर्म को पौराणिक कथाएँ (Mythology) बना दिया था।

65. मनुष्य ने अब तक जितने धर्मों का भी आविष्कार किया है उन सब की बुनियाद अनुमान एवं अंधविश्वास और अटकल पर है। यही कारण है कि इन के अन्दर बुनियादी बातों में विपरीत भाव एवं विरोधाभास पाया जाता है। जब कि इस्लाम वह एक मात्र दीन है जिस की बुनियाद अनुमान पर नहीं सच्चे ज्ञान पर है और यह बात इस को तमाम धर्मों से अलग एक प्रमुख स्थान दिलाती है। स्पष्ट है कि मज़हब के मामले में अटकल की बातें बिल्कुल बेकार हैं। वह कदापि सच्चे ज्ञान का स्थान नहीं ले सकती। इस अखण्डनीय वास्तविकता के बावजूद आज भी दुनिया के अधिकांश लोग धर्म के मामले में अटकल की बातों के पीछे पड़े हुए हैं।

66. अल्लाह के कलाम और इन्सानों के कलाम में बहुत बड़ा अन्तर है। यह ऐसा ही स्पष्ट अन्तर है जैसा ईश्वरीय रचना और इन्सानी रचना में पाया जाता है। और जिस प्रकार इन्सान खुदा की पैदा की हुई चीज़ (रचना) की तरह कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकता उसी तरह उस के कलाम (वाणी) की तरह कोई कलाम भी नहीं बना सकता। यह विशेषता खुदा के असल कलाम की है जो अरबी में है। रहा अनुवाद तो वह मात्र भावार्थ की आदयगी है और वह भी उतनी जितनी कि इन्सान के बस में है। इस लिए कुर्आन

के अनुवाद से अल्लाह के कलाम की खूबी का बस अन्दाज़ा ही हो सकता है।

67. अर्थात् कुर्आन कोई नया धर्म ले कर नहीं आया है बल्कि वही दीन और वही शिक्षा ले कर आया है जो पहले से आई हुई आसमानी किताबों (तौरात और इन्जिल) में संक्षिप्त रूप से मौजूद है। दोनों को तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study) बताएगा कि कुर्आन का स्रोत भी वहीं से उबल पड़ा है जहाँ से तौरात और इन्जिल का स्रोत निकला था।

68. अल-किताब (विशिष्ट किताब) से मुराद वे तमाम आसमानी किताबें हैं जो कुर्आन से पहले नाज़िल हुई थीं। कुर्आन ने उन तमाम किताबों की शिक्षाओं को न केवल अपने अन्दर समेट लिया है बल्कि पूरे स्पष्टीकरण के साथ उन को प्रस्तुत कर दिया है। गोया कुर्आन एक ही हिदायत के सिलसिले की आपूर्ति है और यह इस बात की दलील है कि वह मानव रचना नहीं है।

69. इस की व्याख्या सूरह बकर: नोट ३० में गुजर चुकी।

70. अर्थात् वे वहय (ईश्वरीय प्रकाशना) का इन्कार इस लिए कर रहे हैं कि यह माध्यम गुप्त होने के कारण उन के ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सका है। और इस का दूसरा कारण यह है कि अल्लाह की वहय जिन घटनाओं के घटित होने की सूचना दे रही है खास तौर से क्रियामत के घटित होने की ख़बर, वह अभी प्रकट नहीं हुई है। लेकिन अल्लाह की वहय के हमारे ज्ञान की पकड़ में न आने का यह मतलब कहाँ हुआ कि यह असत्य है और इस का इन्कार किया जाये जब कि इस बात के पीछे मज़बूत और अखण्डनीय प्रमाण हों। इस के अलावा अवतरित होने वाली वहय का मज़मून स्वयं इस बात की गवाही दे रहा है कि यह किसी इन्सान का कलाम नहीं हो सकता। इसी तरह यह वहय भविष्य में घटने वाली जिन घटनाओं की सूचना दे रही है उन का घटित होना बुद्धि एवं प्राकृति और न्याय एवं समानता का तक्राज़ा है। एक बच्चा उन बातों की तह को नहीं पहुँचता जिन की तह तक एक बड़ी उमर का आदमी पहुँच जाता है। और एक साधारण व्यक्ति के ज्ञान की पकड़ में वे बातें नहीं आती जो एक वैज्ञानिक (Scientist) खगोल शास्त्री (Astrologer) और चिन्तक के ज्ञान की पकड़ में आती हैं। फिर क्या मात्र इस कारण कि फ़लाँ बात किसी के ज्ञान एवं विवेक की पकड़ में नहीं आ सकी उस के लिए इन्कार का औचित्य प्रदान करती है। अगर इस का जवाब ना है तो नबियों को अल्लाह की वहय का जो तज़रबा होता रहा है और इसी आधार पर उन्होंने ने गुप्त वास्तविकताओं की जो

खबरें दी हैं उन को मात्र इस कारण रद करना कि वे साधारण व्यक्तियों के ज्ञान की पकड़ में नहीं आई, किस तरह सही हो सकता है? उन गुप्त वास्तविकताओं की खबर देने वाले महापुरुष नैतिकता एवं चरित्र की दृष्टि से इतने ऊँचे थे कि उन

की बुलन्दी आसमान को छू रही थी। और जिन गुप्त वास्तविकताओं को उन्होंने बयान किया है उन की पुष्टि उन अनगिनत निशानियों से होती है जो जगत के अन्दर एवं इन्सानों के अन्दर पाई जाती हैं।



अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो कहो मेरा अमल (कर्म) मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। मैं जो कुछ करता हूँ उस की ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं है और तुम जो कुछ करते हो उस की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं। (अल-कुर्आन)

41. अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो कहो मेरा अमल (कर्म) मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। मैं जो कुछ करता हूँ उस की ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं है और तुम जो कुछ करते हो उस की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं।

وَإِنْ كَذَّبُوا فَقُلْ لِي عَمَلٌ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ
أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٣١﴾

42. इन में ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाये हैं। मगर क्या तुम बहरों को सुनाओगे चाहे वे कुछ भी समझते न हों? ⁷¹

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

43. और इन में वे लोग भी हैं जो तुम्हारी तरफ़ देखते हैं मगर क्या तुम अन्धों को राह दिखाओगे? चाहे उन्हें कुछ सुझाई न देता हो ⁷²।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ﴿٣٣﴾

44. वास्तव में अल्लाह लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता बल्कि लोग खुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं। ⁷³

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٤﴾

45. और जिस दिन वह उन को इकट्ठा करेगा तो उन्हें ऐसा महसूस होगा कि गोया वे (दुनिया में) घड़ी भर रहे थे, आपस में जान पहचान करने के लिए ⁷⁴। (उस समय उन्हें मालूम होगा कि) घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह की मुलाकात को झुठलाया और हिदायत की राह नहीं अपनायी।

وَيَوْمَ يُخْشَرُهُمْ كَانُوا لَا يُبْشِرُونَ إِلَّا سَاعَةً
مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٣٥﴾

46. और हम ने जिस चीज़ का उन से वादा किया है उस का कोई हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या (इस से पहले) तुम्हारा समय पूरा कर दें ⁷⁵ बहर हाल उन को लौटना हमारी ही तरफ़ है और ये जो कुछ कर रहे हैं उस पर अल्लाह साक्षी है।

وَأَمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

47. हर उम्मत के लिए एक रसूल है ⁷⁶। फिर जब रसूल उस के पास आ जाता है तो उन के बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, और उन पर कदापि ज़ुल्म नहीं किया जाता ⁷⁷।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

48. कहते हैं अगर तुम सच्चे हो तो (बतलाओ) यह वादा ⁷⁸ कब पूरा होगा ?

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

71. अर्थात् वे पैगम्बर की बातों की तरफ़ कान लगाते हैं मगर इस लिए नहीं कि हक़ बात स्वीकार करें बल्कि इस लिए कि ऐब चीनी के लिए कोई भेद मिल जाये।

72. अर्थात् वे पैगम्बर को मन की आँखों से नहीं देखते और “जो शै की हक़ीक़त को न देखे वह नज़र क्या”

अगर वे अन्तर्दृष्टि से देखते तो उन्हें विश्वास होता कि आप वास्तव में सच्चे नबी हैं।

73. अर्थात् विवेक और अन्तरदृष्टि से उन की यह महरूमी का परिणाम है उन के अन्यायपूर्ण कार्य पद्धतियों एवं रवैयों का, वरना अल्लाह ने उन को सुनने और देखने की शक्ति इसी के लिए तो प्रदान की थी कि वे सूझ बूझ से काम लें।

74. अर्थात् इस समय तो इन्हें दुनिया की ज़िन्दगी लम्बी मालूम होती है लेकिन क्रियामत के दिन जब परलोक के जीवन का आरम्भ होगा तो उन्हें महसूस होगा कि इस के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी घड़ी भर की ज़िन्दगी थी। और लोगों से जो सामाजिक संबन्ध रहे वे अधिक समय के लिए नहीं बल्कि मात्र जान पहचान की हद तक थे। गोया अभी एक दूसरे से पहचान ही हो पाई थी कि मौत का फ़रिश्ता आ खड़ा हुआ। (देखिए सूरह नाज़िआत नोट ३२)

75. अर्थात् काफ़िरों से अज़ाब का जो वादा किया गया है उस से निश्चित रूप से उन्हें दोचार होना है। रहा इस का प्रकट होना, तो हो सकता है कि अज़ाब की कोई क्रिस्त पैगम्बर की ज़िन्दगी ही में काफ़िरों पर नाज़िल हो जाये। और अगर अल्लाह की हिक़मत का तकाज़ा हुआ तो पैगम्बर के दुनिया से कूच कर जाने के बाद आएगा। और आखिरत में तो उन्हें पूरा पूरा अज़ाब भुगतना ही है।

इस आयत से यह बात भी स्पष्ट हुई कि शुरु में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुपुर्द जो काम किया गया था वह दअवत पहुँचाने का था और यह दअवत क्या थी उस को विस्तार के साथ इस सूरह में पेश किया गया है। इस में न इस बात का ज़िक्र है कि आप इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था को स्थापित कर दिखाने पर नियुक्त हैं और न असल दअवत के साथ दीन की प्रभुत्व का पहलू ही उजागर किया गया है। बल्कि फ़रमाया गया कि हो सकता है काफ़िरों के अन्जाम से पहले ही अल्लाह तआला आप को दुनिया से उठा ले। गोया अल्लाह तआला ने कम से कम सूरह यूनूस के अवतरण तक अपनी

यह योजना कि वह इस नबी के हाथों इस्लाम को तमाम धर्मों पर ग़ालिब करेगा जैसा कि सूरह “सफ़” आयत ९ और सूरह तौबा आयत ३३ में फ़रमाया गया है, खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ज़ाहिर नहीं फ़रमाया था बल्कि हिज़रत के बाद जब कि इस्लाम और कुफ़र की कशमकश जिहाद के चरण में प्रविष्ट हुई तो यह एलान किया गया कि रसूल को अल्लाह तआला ने इस लिए भेजा है कि दीन इस्लाम को तमाम असत्य धर्मों पर ग़ालिब (विजयी) कर दे।

मालूम हुआ कि दीन के लिए प्रभुत्व एवं सत्ता अभीष्ट अवश्य है लेकिन इस का सम्बन्ध जिहाद के मरहले से है या उस मरहले से जब कि इस्लामी व्यवस्था को प्रयोगात्मक रूप से लागू और स्थापित किया जा सकता हो। रहा दअवत का मरहला तो उस में असल ज़ोर दअवत की बुनियादी बातों पर होना चाहिए न कि प्रभुत्व एवं सत्ता की प्रप्ति पर वरना सही दीनी सोच का निर्माण नहीं हो सकेगा और न ही दीन की प्रभुत्व का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

76. अर्थात् इस से पहले जो उम्मतें गुज़री हैं उन में कोई उम्मत ऐसी नहीं जिस में अल्लाह तआला ने अपना रसूल न भेजा हो। सूरह फ़ातिर आयत २४ में इशार्द हुआ है:-

وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ - (سورة فاطر: २४)

“कोई उम्मत ऐसी नहीं जिस में एक ख़बरदार करने वाला न गुज़रा हो।”

यह क्रम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने से निरंतर जारी रहा यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी रसूल की हैसियत से सारे जगत की क़ौमों की तरफ़ भेजा गया।

77. अर्थात् जब कभी किसी उम्मत की तरफ़ किसी रसूल को भेजा गया है उस उम्मत की क्रिस्मत का फ़ैसला दुनिया ही में चुका दिया गया है। और ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूल की लाई हुई हिदायत को लोगों ने रद्द कर दिया हो और उन पर अज़ाब (प्रकोप) का कोड़ा न बरसा हो। यह और बात है कि अल्लाह तआला किसी उम्मत को अधिक दिनों तक ढील दे

78. मुग़द अज़ाब का वादा है।



49. कहो मैं तो अपनी जान के लिए भी लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है ⁷⁹। हर उम्मत के लिए एक निश्चित अवधि है। और जब उन का समय आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न एक घड़ी आगे। ⁸⁰

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي فَتَرًا وَلَا لِنَفْعَالِ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ٧٩

50. कहो तुम ने यह भी सोचा कि अगर उस का अज़ाब (अकस्मात) रात को या दिन को आ जाये तो बचने की क्या सूरत है जिस के बल पर मुजरिम जल्दी मचा रहे हैं। ⁸¹

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَّاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ٨٠

51. क्या जब वह आ जाएगा उस समय तुम मानोगे ? अब मानते हो ⁸² और इस से पहले तुम इस के लिए जल्दी मचाया करते थे।

أَتُمِرُّ إِذَا مَا وَقَعَ مِنْكُمْ بِهِ الشَّنَّ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ٨١

52. फिर ज़ालिमों ⁸³ से कहा जायेगा कि हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो। तुम जो कुछ कमाते रहे हो उसी का बदला तुम को दिया जायेगा।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ٨٢

53. तुम से पूछते हैं, क्या वास्तव में यह सच है ? ⁸⁴ कहो हाँ, मेरे रब की क्रसम ⁸⁵ यह वास्तव में सच है। और तुम इस से बच कर निकल नहीं सकते।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قَوْلٌ أَمْ وَبِئْسَ الْوَعْدُ لَكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ٨٣

54. हर वह व्यक्ति जिस ने ज़ुल्म किया है, अगर उस के पास वह सब कुछ हो जो धरती के ऊपर है तो उस (अज़ाब) से बचने के लिए वह अवश्य उसे फ़िदयः (प्राणमूल्य) में दे ⁸⁶। जब वे अज़ाब को देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछताएंगे। और उन के बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा। और उन पर कोई ज़्यादाती नहीं होगी।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَبَارِئًا وَالْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ٨٤

55. सुनो आसमानों और ज़मीन की सारी वस्तुएँ अल्लाह ही की हैं। याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है। मगर अधिकतर लोग नहीं जानते।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْإِلَهَ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٨٥

56. वही जिलाता है और वही मारता है और उसी की ओर तुम को पलट कर जाना है।

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٨٦

79. अर्थात् मैं ने तुम से यह कब कहा कि मैं तुम पर अज़ाब ले आऊँगा बल्कि यह कहा कि अगर तुम सरकशी करते हो तो डर है एक न एक दिन अल्लाह का अज़ाब तुम पर अवश्य आएगा। इस की तारीख निर्धारित करना मेरा काम नहीं बल्कि यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) पर निर्भर है।

इस आयत में यह बात जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी कहलवाई गई है कि “मैं अपने आप के लिए लाभ और हानि का कोई अधिकार नहीं रखता” तो इस से बिद्अतियों की इस धारणा का खण्डन होता है कि आप अदृश्य रूप से (गैबी तौर पर) किसी को लाभ या हानि पहुँचा सकते हैं। और जब आप इस मामले में अधिकार रहित हैं तो औलिया कुछ और भी अधिकार रहीत हुए।

80. यहाँ मुराद वे उम्मतें हैं जिन की ओर सीधे रसूलों की नियुक्तियाँ हुईं।

इन में से हर उम्मत को अल्लाह तआला ने रसूल के लाए हुए पैग़ाम को समझने और अपने सुधार का अवसर दिया

लेकिन जब उस ने झुठलाया और सरकशी अपनाई तो जैसे ही उस की कर्म अवधि समाप्त हुई अल्लाह तआला ने दुनिया ही में उस का फ़ैसला चुका दिया।

81. अर्थात् क्या अज़ाब से बचाव का कोई सामान इन्होंने कर लिया है जिस के बल पर वे जल्दी मचा रहे हैं।

82. अर्थात् अज़ाब को देख लेने के बाद।

83. यहाँ ज़ालिम से मुराद वे लोग हैं जो रसूल के डरावे और उस की तंबीह को झुठलाते रहे और खुदा और आखिरत की बुनियाद पर दुनिया में काम करने से इन्कार करते रहे।

84. अर्थात् क्या यह मामला वास्तव में पेश (सामने) आने वाला है कि अल्लाह तआला इन्सान को उस के बुरे कर्मों की सज़ा देगा।

85. “क्रसम” इस बात को प्रकट करने के लिए है कि यह बात बिलकुल पक्की और निश्चित है।

86. व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट १२४.



57. लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत ⁸⁷ आ गई है और ऐसी चीज़ जो दिलों के रोगों के लिए रोगमुक्ति का उपचार (शिफ़ा) ⁸⁸ है। और ईमान वालों के लिए हिदायत ⁸⁹ और रहमत ⁹⁰।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تِلْكَ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

58. कहो यह (किताब) अल्लाह के फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) और उस की रहमत को ले कर नाज़िल हुई है तो चाहिए कि इस पर ख़ुशी मनाएँ। यह उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। ⁹¹

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

59. कहो तुम ने यह भी सोचा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो आजीविका उतारी थी उस में से तुम ने किसी चीज़ को हराम और किसी को हलाल ठहराया। पूछो क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी थी या तुम अल्लाह की तरफ़ झूठी बातें जोड़ते हो। ⁹²

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ عَلَى اللَّهِ تَقَرُّونَ ﴿٥٩﴾

60. जो लोग अल्लाह से झूठी बातें सम्बन्धित करते हैं उन्होंने ने क्या समझ रखा है क्रियामत के दिन के बारे में (कि उन्हें जवाबदेही करना नहीं होगी?) सत्य यह है कि अल्लाह लोगों के पक्ष में अति दयालु है ⁹³ किन्तु अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते (कृतज्ञ नहीं होते)।

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

61. (ऐ पैग़म्बर !) तुम जिस हाल में भी होते हो और कुर्आन का जो हिस्सा भी सुना रहे होते हो और तुम लोग जो काम भी करते हो उन सब व्यस्तताओं के दौरान हम तुम को देख रहे होते हैं। ज़मीन और आसमान की रत्ती भर चीज़ भी तुम्हारे रब से छिपी नहीं है और न उस से अधिक छोटी या बड़ी चीज़ ऐसी है जो एक स्पष्ट किताब में अंकित न हो। ⁹⁴

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِّثْقَالٍ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾

62. सुनो, जो अल्लाह के दोस्त हैं ⁹⁵ उन को न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे ⁹⁶।

إِلَّا إِنْ أَوْلِيَآءُ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

87. इस आयत में कुआन की चार विशेषताएँ बयान की गई पहली विशेषता यह है कि वह “मोइजत” है। मोइजत से मुराद नसीहत है। वह नसीहत जो दिल में चेतना, जागृति और करुणा पैदा करे।

88. यह कुआन की दूसरी विशेषता है कि वह दिल की बीमारियों और आन्तरिक रोगों के लिए शिफा अर्थात् रोग मुक्ति का उपचार है। जिस तरह मनुष्य को शारीरिक एवं बाह्य रोग लागू हो जाते हैं उसी तरह आत्मिक एवं आन्तरिक रोग भी लागू होते हैं। मिसाल के तौर पर कुफ्र आन्तरिक कैंसर है, गुनाह में लिप्त होना या उस की ओर झुकना टी.बी. है, माया का मोह मन का जुनून है और बेहयाई एवं काम इच्छा मन को अन्धा कर देने वाला रोग है।

इन्सान के अन्दर की अथवा आत्मा की इन तमाम बीमारियों के लिए कुआन का रोगमुक्ति का उपचार (शिफा) होना एक वास्तविक सच्चाई है। कुआन के नाज़िल होने के समय सिसकती हुई मानवता इस उपचार द्वारा रोगमुक्त हुई और इतिहास गवाह है कि हर युग में और ज़माने में इस की तरफ़ पलटने वाले स्वस्थ चरित्र के भारवाहक बने एवं मौजूदा ज़माने में भी जब कि नैतिक पतन अपने अति को पहुँच चुका है, कुआन की छत्र छाया में जीवन व्यतीत करने वाले ही नैतिक पवित्रता के गुणों से सुसज्जित हैं। इस तरह तजर्बे ने साबित कर दिया है कि इन्सान की तमाम हार्दिक आत्मिक और आन्तरिक रोगों का इलाज कुआन और मात्र कुआन में है।

89. कुआन की तीसरी विशेषता यह है कि वह खुदा की ओर से इन्सानों के लिए दिया गया मार्गदर्शन (रहनुमाई) है जिस से ईमान वाले जीवन के हर मोड़ पर सही चलने की दिशा मालूम कर लेते हैं।

90. कुआन की चौथी विशेषता यह है कि वह खुदा की ओर से रहमत है। ईमान वाले खुदा की रहनुमाई में चलते हुए क्रमदम पर अल्लाह की रहमत से लाभान्वित होते हैं।

91. अर्थात् इस रुहानी दौलत के मुक़ाबले में वह भौतिक माया अति तुच्छ है जिस को समेटने में लोग लीन हैं। और उन की यह तल्लीनता ही है जो उन्हें कुआन से निकट नहीं होने देती।

92. इस आयत में अल्लाह के रिज़क़ (आजीविका) से मुराद खाने पीने की वे तमाम पवित्र चीज़ें हैं जो अल्लाह ने अपने बन्दों के लाभ हेतु पैदा की हैं किन्तु बहुदेववादियों ने मात्र अंधविश्वास के आधार पर इन में से कितनी ही चीज़ों को हaram कर रखा है। जिन का खाना उन के नज़दीक़ पाप है। इन के पाप होने की धारणा बताती है कि वे समझते हैं कि खुदा ने ये चीज़ें उन के लिए हaram ठहराई हैं। कुआन ऐसे लोगों से

पूछता है तुम्हें यह बातें कैसे मालूम हो गई कि ये चीज़ें खुदा ने हaram ठहराई हैं। और अगर तुम्हारा दावा यह है कि खुदा ने तुम को इस बात की अनुमति दे रखी है कि अपनी मर्ज़ी से जिस चीज़ को चाहो हलाल और जिस चीज़ को चाहो हaram ठहराओ तो उस का सबूत पेश करो। और अगर कोई सबूत मौजूद नहीं है तो फिर तुम्हारा यह दावा खुदा से झूठी बातें सम्बन्धित करने के सिवा कुछ नहीं। अरब के बहुदेववादियों ने कुछ ख़ास क्रिस्म के ऊँट और ऊँटनियाँ और कुछ मवेशियों के बच्चे हaram ठहराये थे और भारत के बहुदेववादियों ने गाय को बल्कि सिर से माँस खाने को ही हaram ठहराया है। और अधिक व्याख्या के लिए देखिये सूरह अन्आम नोट २६२ और २६३.

93. मतलब यह कि अल्लाह चूँकि अपने बन्दों के लिए अति दयालु है इस लिए नहीं चाहता कि क्रियामत के दिन तुम अज़ाब की पकड़ में आओ और इसी लिए उस ने अपनी पसंद और नापसन्द से तुम्हें अवगत कर दिया है। लेकिन अगर तुम उस की पसन्द और ना पसन्द से विमुख हो कर अपनी मर्ज़ी से किसी चीज़ को हलाल और किसी चीज़ को हaram ठहराते रहे तो क्रियामत के दिन तुम को निश्चित रूप से इस की जवाबदेही करनी होगी। और अपने अस विद्रोहपूर्ण रवैये पर तुम उस की सज़ा से नहीं बच सकोगे।

94. किताबुम्मुबीन (स्पष्ट किताब) से मुराद अल्लाह की वह किताब है जिस में पूरे ब्रह्माण्ड (कायनात) का रिकार्ड सविस्तर मौजूद है। अल्लाह तआला ने यह सब कुछ अपने ज्ञान के आधार पर अंकित किया है। इस किताब का पारिभाषिक नाम लौहे-महफूज़ है और जिस की असल वास्तविकता अल्लाह को ही मालूम है। यहाँ यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि अल्लाह का ज्ञान पूरे ब्रह्माण्ड पर छाया हुआ है और तमाम तफ़सीलात छोटी बड़ी बातों सहित उस की जानकारी में हैं यहाँ तक कि एक कण के बराबर भी कोई चीज़ उस के ज्ञान से बाहर नहीं। और जब उस का ज्ञान इतना विशाल एवं विस्तृत है कि जिस की कोई सीमा नहीं तो वह अपने बन्दों के कर्मों से किस तरह बेख़बर हो सकता है? और जब उस के पास कण कण का रिकार्ड मौजूद है तो इन्सान जिस के सर पर ज़मीन की ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) का ताज रखा गया है, उस के कर्मों का रिकार्ड कैसे नहीं रखेगा? अतः इन्सान को चाहिए कि यह समझते हुए दुनिया में काम करे कि अल्लाह सब कुछ देख रहा है और उस के रिकार्ड से कोई चीज़ भी लुप्त नहीं हो सकती। यही ख़याल और यही धारणा इन्सान को खुदा की राह पर चलने के लिए उकसाती है।

95. मूल अरबी (Text) में औलिया शब्द का इस्तेमाल हुआ है जो वली का बहुवचन है और जिस का अर्थ दोस्त है।

औलिया अल्लाह अर्थात् अल्लाह के दोस्त से कौन लोग अभिप्रेत हैं इस की व्याख्या स्वयं कुर्आन ने ही की है अतः तुरन्त बाद की आयत में फ़रमाया ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और जिन्होंने तक्वा (ईश-भय और परहेजगारी) का रवैया अपनाया वही अल्लाह के वली (दोस्त) हैं। दूसरे शब्दों में हर परहेजगार मोमिन अल्लाह का दोस्त है।

कुर्आन की इस व्याख्या और स्पष्टीकरण के बाद इस का कोई और भावार्थ बयान करने का अधिकार किसी को नहीं है। लेकिन अफ़सोस है कि मुसलमानों के एक गिरोह ने इस का मतलब बिल्कुल बदल दिया है। उन की दृष्टि में वली (दोस्त) वह है जिस ने सूफ़ियों और ज़ाहिदों की तरह जीवन व्यतीत किया हो और वली के बारे में उस गिरोह की धारणा यह है कि

वह जगत की व्यवस्था में कुछ दखल रखता है। अतः इस अधिकार के लिहाज़ से उन्होंने वलियों की श्रेणी निर्धारित की है। और ग़ौस, कुतुब, अब्दाल जैसे लक़ब उन के लिए निश्चित किये हैं। फिर उन से ऐसी करामतों (चमत्कारों) को जोड़ दिया है जिन का सर है न पैर। वलियों के बारे में इस गुमराह करने वाली धारणाओं को जिस चीज़ने सुदृढ़ कर दिया वह उन की पक्की क़ब्रें और दरगाहें हैं। नतीजा यह कि मुसलमानों के अन्दर व्यक्ति पूजा एवं बुजुर्ग परस्ती, बुजुर्गों से श्रद्धा एवं आस्था के परदे में और शिर्क (साझीदार ठहराने) की वबा नज़्र एवं नियाज़ के ग़िलाफ़ में आ गई।

96. उस का महल जन्नत है जहाँ न भविष्य का कोई ख़तरा होगा और न भूत (Past) का कोई ग़म।



याद रखो ! जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है सब अल्लाह ही के ममलूक (अधिकृत) हैं और जो लोग अल्लाह के सिवा अपने ठहराए हुए साझीदारों को पुकारते हैं वे मात्र भ्रम और गुमान के अनुयायी हैं और निरी अटकल की बातें करते हैं । (अल-कुर्आन)

63. ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और जिन्होंने ने तक्रवा (ईश-परायणता) अपनाया।

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

64. इन के लिए खुशखबरी है दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आखिरत में भी---अल्लाह के फ़रमान बदल नहीं सकते ⁹⁷।-----यही सब से बड़ी कामयाबी है।

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾

65. (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों की बातें तुम्हें शोकाकुल न करें ⁹⁸। इज़्ज़त सब की सब अल्लाह ही के लिए है। ⁹⁹ वह सब कुछ सुनता और जानता है।

وَلَا يَخْزِيكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾

66. याद रखो ! जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है सब अल्लाह ही के ममलूक (अधिकृत) हैं ¹⁰⁰ और जो लोग अल्लाह के सिवा अपने ठहराए हुए साझीदारों को पुकारते हैं वे मात्र भ्रम और गुमान के अनुयायी हैं ¹⁰¹ और निरी अटकल की बातें करते हैं ¹⁰²।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنْ يَسْتَجِيبُوا إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾

67. वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उस में सुकून हासिल करो और दिन को रौशन बनाया। इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। ¹⁰³

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾

68. वे कहते हैं अल्लाह ने अपने लिए औलाद बना रखी है ¹⁰⁴। पाकी है उस के लिए। वह बेनियाज़ है। आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उस की मिल्क (संपत्ति) है। तुम्हारे पास इस की क्या दलील है? क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जिस से तुम स्वयं अनभिज्ञ हो ¹⁰⁵।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا أْتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

69. कहो जो लोग अल्लाह के बारे में झूठ बोल कर मिथ्यारोपण करते हैं वे हरगिज़ सफल नहीं होंगे। ¹⁰⁶

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

70. उन के लिए बस दुनिया में लाभ का सामान है। फिर उन को हमारी तरफ़ पलटना है ¹⁰⁷। उस समय हम उन्हें कुफ़्र के अपराध में कड़ी यातना का मज़ा चखाएंगे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نَذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

97. अर्थात् अल्लाह के सारे वादे बिलकुल अटल हैं। उन में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

98. अर्थात् विरोधीयों की कष्टदायक बातों पर तुम ध्यान न दो।

99. अरबी में इज़्जत का वास्तविक अर्थ शक्ति और प्रभुत्व के हैं एवं इस का दूसरा अर्थ सम्मान के भी हैं। इज़्जत सब की सब अल्लाह ही के वश में है। वह जिस को भी इन चीज़ों से सुशोभित करना चाहे उसे कोई रोक नहीं सकता। अतः विरोधी लोग पैगम्बर को नीचा दिखाने के लिए जो ज़ोर लगा रहे हैं उन की यह कोशिश कामयाब नहीं हो सकती।

100. अर्थात् आसमान और ज़मीन की तमाम जीवधारी सृष्टि चाहे फ़रिश्ते हों या जिन्न पैदाइशी तौर पर अल्लाह के दास, गुलाम और सृष्टि हैं। और जब किसी की भी यह हैसियत नहीं कि वह मालिक हो तो वह खुदा का साझीदार किस तरह हुआ?

101. अर्थात् शिर्क के समर्थन में कोई दलील मौजूद नहीं है बल्कि धर्म वालों ने मात्र भ्रम एवं गुमान के आधार पर खुदा का साझीदार ठहरा लिया है।

102. बहुदेववादी धर्मों के पण्डितों ने अपने अपने धर्म को सच्चा साबित कर दिखाने के लिए उस को फ़लसफ़ियाना रंग दिया है ताकि जो बातें सामान्य बुद्धि स्वीकार नहीं करती उन को फ़लसफ़े के रूप में प्रस्तुत कर के ज़ेहनों को रोब में लिया जा सके। इस की मिसाल हिन्दुओं के वेदान्त (Vedanta) का फ़लसफ़ा है जिस में ब्राह्मण्ड के सृष्टा (ख़ालिक) के बारे में कहा गया है कि आरम्भ में वह अकेला था फिर उस ने अनेक में परिवर्तित होना चाहा इस लिए उस ने स्वयं अपने आप से अनेक को पैदा किया।

“The Vedanta says that the Supreme Being was alone, one without a second. He desired to become the many. But as there was nothing beside Himself. He had to create Many out of Himself alone.” (Outline of Vedanta by R. Krishna Swamy Aiyar, page 71) कैसा शर्मनाक झूठ है जो खुदा से सम्बन्धित किया गया है। इसी प्रकार देवी देवताओं के अस्तित्व के बारे में दावा किया गया है कि दुनिया में जितने गुण पाये जाते हैं उतने ही देवी देवता हैं।

“There are as many Devas or Spiritual Entities as there are qualities in the world.” (Ibid p. 131).

साथ ही यह दावा भी कर लिया गया है कि देवताओं का

अस्तित्व कोई भ्रामक बात या सैद्धान्तिक कल्पना नहीं है बल्कि सच्ची वास्तविकता है।

“We must mention that these are not mythical entities or mere theoretical conceptions, but are actual facts.” (Ibid p. 139).

बहुदेववाद (शिर्क) और बहुदेववादी धर्मों की बुनियाद ऐसी ही अटकल बाज़ियों पर है जिन को फ़लसफ़े (दर्शन) का रूप दिया गया है। इन फ़लसफ़ों का पारस्परिक विरोध एक दूसरे का खण्डन करता है जो इस बात का प्रमाण है कि उस की बुनियाद वास्तविक ज्ञान पर नहीं बल्कि मात्र भ्रमों, गुमानों और अटकल की बातों पर है।

103. अर्थात् खुदा की पहचान एवं कुर्बत हासिल करने के लिए फ़लसफ़ों के चक्कर में पड़ने की ज़रूरत नहीं है। कुर्आन कायनात के जिस आसार को तौहीद (एकेश्वरवाद) के समर्थन में प्रस्तुत कर रहा है वह एक सादा सी हक़ीक़त है। और सुनने समझने वाले के लिए यह पर्याप्त दलील है। रात के शान्त होने और दिन के रौशन होने ही के कारण इन्सान के लिए यह संभव हो सका कि वह ज़मीन पर ज़िन्दगी गुज़ार सके। यह अल्लाह तआला की रबूबिय्यत (पालनहारी) की खुली निशानी है।

104. मूल अरबी (Text) में “वलद” शब्द का प्रयोग हुआ है जो अरबी में एक वचन, बहु वचन, पुलिंग और स्त्रीलिंग सब के लिए आता है। प्रसंग मक्का के बहुदेववादियों की धारणाओं एवं विचारों के खण्डन का चला आ रहा है इस लिए यहाँ भी उन की इस धारणा का खण्डन करना अभिप्रेत है कि फ़रिश्ते खुदा की बेटियाँ हैं।

105. यहाँ अल्लाह की औलाद होने के खण्डन में पाँच बातें कही गई हैं। पहली बात यह कि, अल्लाह के लिए पाकी (पवित्रता) है। अर्थात् अल्लाह के लिए औलाद की धारणा रखना सृष्टा को सृष्टि के समान समझना है और ज़ाहिर है यह बात उस की प्रतिष्ठा एवं उस की महीमा के अनुकूल कदापि नहीं हो सकती। वह इस तरह की तमाम घटिया बातों से पाक है और उस की हस्ती अति उच्च है। दूसरी बात यह कि वह निष्काम, अपेक्षा रहित अर्थात् बेनियाज़ है। उस को इस बात की क्या ज़रूरत कि वह किसी को बेटा बनाए। साधारणतया इन्सान किसी को बेटा इस लिए बनाता है कि वह अपने लिए मदद का मोहताज़ होता है या अपने बाद किसी को अपना वारिस बनाना चाहता है। मगर खुदा के बारे में तो इन में से कोई बात भी उचित नहीं हो सकती। तीसरी बात यह कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उस की संपत्ति है

अर्थात् कायनात की सारी सृष्टि उस की दास एवं उसी की अधिकृत हैं। फिर किसी का यह स्थान कैसे हो सकता है कि वह बेटे की हैसियत से खुदा का साझीदार हो। चौथी बात यह कि जो लोग खुदा के लिए औलाद होने के क्रायल हैं उन का यह दावा बगैर दलील का है। खुदा के कलाम में इस को कहीं भी दिखाया नहीं जा सकता कि खुदा की औलाद है या उस ने किसी को बेटा बना लिया है और पाँचवी बात यह कि ऐसा

दावा करना निरी मूर्खता और जिहालत है। क्यों कि खुदा के बारे में कोई बात जब तक कि सही माध्यम (स्रोत) से इन्सान की जानकारी में न आई हो, कहना बड़ा दुस्साहस है।

106. खुदा के बारे कोई बात कहते हुए मनुष्य को बहुत ही सावधान होना चाहिए। सत्य के विरुद्ध बात उस से सम्बन्धित करने से कामयाबी की राह बन्द हो जाती है।

107. अर्थात् अल्लाह के समक्ष उपस्थित होना है।



इन्हें नूह की घटना सुनाओ । जब उस ने अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अगर मेरा तुम्हारे बीच रहना और अल्लाह की आयतों द्वारा नसीहत करना तुम को अप्रिय है, तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है। तुम अपनी योजना बाँध लो और अपने ठहराए हुए साझीदारों को भी साथ ले लो। और तुम्हारी योजना तुम पर ओझल न रहे। फिर मेरे विरुद्ध जो कुछ करना चाहते हो कर डालो और मुझे हरगिज़ मुहलत न दो। (अल-कुर्आन)

71. इन्हें नूह की घटना सुनाओ ¹⁰⁸। जब उस ने अपनी क्रौम से कहा था कि ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! अगर मेरा तुम्हारे बीच रहना और अल्लाह की आयतों ¹⁰⁹ द्वारा नसीहत करना तुम को अप्रिय है, तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है। तुम अपनी योजना बाँध लो और अपने ठहराए हुए साझीदारों को भी साथ ले लो। और तुम्हारी योजना तुम पर ओझल न रहे। फिर मेरे विरुद्ध जो कुछ करना चाहते हो कर डालो और मुझे हरगिज़ मुहलत न दो ¹¹⁰।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَتَّبِعُونَ لَكُمْ فَإِنْ كُنْتُمْ تَهْتَكُونَ فَاغْمُؤْا
مَقَامِي وَتَذَكِّرُنِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا
أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ
وَلَا تُنْظِرُونِ ①

72. अगर तुम (मेरी नसीहत से) मुँह मोड़ते हो तो (अपना ही नुक्सान करोगे) मैं ने तुम से कोई अज़्र (बदला) तो माँगा नहीं है। मेरा अज़्र अल्लाह ही के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन कर रहूँ ¹¹¹।

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ
وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ②

73. मगर उन्होंने उसे झुठलाया, तो हम ने उस को और उन लोगों को जो उस के साथ नौका में थे बचा लिया ¹¹² और उन को इत्किदार वाला (सत्तावान) बनाया। और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया था उन को डुबो दिया ¹¹³। तो देखो जिन लोगों को ख़बरदार कर दिया गया था उन का क्या अन्जाम हुआ।

كَذَّبُوا فَجَعَلْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ
وَاعْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُنْذِرِينَ ③

74. फिर उस के बाद हम ने कितने ही रसूलों को उन की क्रौमों की तरफ़ भेजा ¹¹⁴। और वे उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आए। मगर जिस चीज़ को वे पहले झुठला चुके थे उसे मानने के लिए तैयार न हुए। ¹¹⁵ इस तरह हम सीमा उल्लंघन करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं ¹¹⁶।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى
قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ④

75. फिर उन के बाद हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फिरौन और उस के दरबारियों की तरफ़ भेजा, मगर उन्होंने घमण्ड किया और वे मुजरिम लोग थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ⑤

108. नूह अलैहिस्सलाम की घटना विस्तार के साथ सूरह हूद और सूरह नूह में बयान हुई है। यहाँ नूह की घटना के उन पक्षों को प्रस्तुत किया गया है जिन से हक़ की दअवत को पेश करने के मामले में हज़रत नूह की असाधारण जुअत एवं उत्तम श्रेणी के साहस तथा अल्लाह पर भरोसे की अभिव्यक्ति होती है और हक़ की दअवत को रद्द करने वालों के बुरे अन्जाम से भी आगाही होती है।

नूह अलैहिस्सलाम के युग एवं दूसरी तफ़सील के लिए देखिए सूरह “आराफ़” नोट ९५

109. मुराद वे निशानियाँ हैं जो पैग़म्बर की दअवत के हक़ होने पर प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

110. यह चैलेन्ज था जो नूह अलैहिस्सलाम ने क़ौम की विरोधी सरगर्मियों को देख कर किया था। जिस से अन्दाज़ा होता है कि एक पैग़म्बर को अपनी दअवत की सत्यता का कितना दृढ़ विश्वास होता है और उन का साहस कैसा फौलादी होता है।

111. यह आयत पुष्टि करती है कि नूह अलैहिस्सलाम जो सब से पहले इन्सानि आबादी की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे, मुस्लिम थे अर्थात् उन का दीन इस्लाम ही था और वह

एक अल्लाह के आज्ञाकारी थे।

112. नाव में उन ही लोगों ने पनाह ली थी जो नूह अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे।

113. नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ज़मीन में इक्तिदार (सत्ता) वाली थी। लेकिन जब कुफ़्र के अपराध में उसे डूबो दिया गया तो ईमान वाले गिरोह ने जिसे अल्लाह तआला ने बचा लिया था, ज़मीन का इक्तिदार (भार) संभाला। ज़मीन पर सत्य विजयी हुआ और ईमान वालों को काफ़िरों के मुकाबले में प्रभुत्व एवं सफलता मिली।

114. अर्थात् नूह के बाद कई क़ौमों की तरफ़ रसूल भेजे। उन रसूलों का वर्णन सूरह “आराफ़” में गुज़र चुका और आगे सूरह हूद में आ रहा है।

115. यह इन्सान की मनोवैज्ञानिक कमज़ोरी है कि एक बार जिस चीज़ को वह रद्द कर देता है उस पर दोबारा विचार करने के लिए आमादा नहीं होता। ग़लत क़दम उठाने के बाद वापसी उस के लिए मुश्किल होती है।

116. दिलों पर मुहर लगाने की व्याख्या सूरह बक्रा नोट १५ में गुज़र चुकी।



76. जब हमारी तरफ़ से हज़रत उन के सामने आया तो उन्होंने कहा यह तो खुला जादू है ¹¹⁷।
77. मूसा ने कहा क्या तुम हज़रत के बारे में जब कि वह तुम्हारे सामने आ गया यह कहते हो कि यह कहीं जादू तो नहीं ? हालाँकि जादूगर कभी सफल नहीं हो सकते ¹¹⁸।
78. उन्होंने ने जवाब दिया कि तुम इस लिए हमारे पास आये हो कि जिस तरीके पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है उस से हमें हटा दो और देश में तुम दोनों को बड़ाई हासिल हो जाए ¹¹⁹। हम तो तुम्हारी बात मानने वाले नहीं हैं।
79. और फ़िरऔन ने कहा तुम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ।
80. जब जादूगर आ गये तो मूसा ने उन से कहा, तुम्हें जो कुछ डालना है डाल दो।
81. फिर जब उन्होंने ने (अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ) डाल दीं तो मूसा ने कहा, ये जो कुछ तुम ने प्रस्तुत किया है जादू है। निश्चय ही अल्लाह इसे बातिल (ग़लत) कर देगा। अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों के काम को कारगर नहीं बनाता ¹²⁰।
82. और अल्लाह अपने वचनों से सत्य को सत्य कर दिखाता है, ¹²¹ यद्यपि मुजरिमों को अप्रिय हो।
83. मगर मूसा की बात उस की क़ौम के ¹²² कुछ नवजवानों के सिवा किसी ने नहीं मानी। फ़िरऔन और उन के सरदारों से डरते ¹²³ हुए कि कहीं वह किसी मुसीबत में न डाल दे ¹²⁴। वास्तविकता यह है कि फ़िरऔन ज़मीन में बड़ा ही सरकश था और उन लोगों में से था जो सीमा उल्लंघन करते हैं ¹²⁵।
84. और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो यदि वास्तव में तुम मुस्लिम हो। ¹²⁶
- فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا السِّحْرُ مُبِينٌ ١١٧
- قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرُ هَذَا وَلَا يُفْعَلُ السَّحَرُونَ ١١٨
- قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَكَ وَجَدْنَا عَلَيْنَا آبَاءَنَا وَتَكُونُ لَكُمُ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ١١٩
- وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتُؤْتُونِي بِكُلِّ سِحْرٍ عَلِيمٍ ١٢٠
- فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِمُوسَى الْقَوْمَ مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ١٢١
- فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ١٢٢
- وَيُخَيِّطُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ١٢٣
- فَبَأْأَمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّتَهُ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ١٢٤
- وَقَالَ مُوسَى يَقَوْمِ إِن كُنْتُمْ مِنْكُمْ إِلَّا جَهَنَّمَ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ١٢٥

117. इस घटना को बयान करने से अभिप्रेत विशेष रूप से इस बात की तरफ इशारा करना है कि जिस तरह मूसा (अलैहिस्सलाम) की हक की दअवत को फिरऔनियों ने जादू करार दिया था उसी तरह हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हक की दअवत को मक्का के काफ़िर जादू करार दे रहे हैं।

118. जब पैगम्बर के मोज़े (चमत्कार) और जादूगरों के बीच मुकाबला होता है तो जादूगरों को अपने मुँह की खानी पड़ती है और उन्हें कभी इज़्जत नसीब नहीं होती। यह तो है दुनिया में उनकी नाकामी। रही आखिरत की कामयाबी और सफलता तो जादूगर उस से निश्चित रूप से वंचित रहेंगे क्योंकि कि वे लोगों को गुमराह करने के लिए नज़र का फ़रेब देने का सामान करते रहे।

119. अर्थात् मिस्र की सत्ता तुम्हारे हाथ में आ जाए। यह फिरऔन की तरफ से मूसा और हारुन अलैहिस्सलाम पर ऐसा ही इल्जाम था जैसा कि उन पर मुल्क में फ़साद कराने का इल्जाम लगाया गया था (सूरह आराफ़ आयत १२७) वरना उन्होंने राजनितिक सत्ता को अभी छोड़ा ही नहीं था, क्योंकि यह दअवत का मरहला था न कि सक्रिय रूप से शासन व्यवस्था स्थापित करने का मरहला। नबियों की दअवत के अन्तर्गत राजनितिक सत्ता की बात भी शामिल होती है और व्याहारिक रूप से यह तब प्रकट होता है जब कि उन की क़ौम उन की दअवत पर ईमान ले आती है। मूसा और हारुन अलैहिस्सलाम फिरऔन और उस की क़ौम को ईमान लाने की दअवत दे रहे थे। उन्होंने फिरऔन को इत्तिदार (सत्ता) से हटाने के लिए कोई राजनीतिक योजना नहीं बनाई थी इस लिए उन पर सत्ता हथियाने का आरोप बिलकुल निराधार था।

120. किसी ग़लत काम को कर के अच्छे परिणाम की आशा बांधना ऐसे ही है जैसे आग जला कर उस से टंडक प्राप्त करने की आस रखना। अल्लाह का क़ानून यह है कि विध्वंसात्मक कामों से कभी निर्माण का काम नहीं हो सकता। फिर जादू से जो सरासर फ़रेब है, लाभदायक परिणाम क्यों कर सामने आ सकते हैं? एक पैगम्बर इन्सानों की जो रहनुमाई करता है उस के मुकाबले में जादूगर क्या रहनुमाई कर सकते हैं?

121. अतः उस के हुक्म से मूसा की लाठी वास्तव में साँप बन गई और जादूगरों के बनावटी साँपों को वह साँप निगल गया। इस तरह जादूगरों के मुकाबले में मूसा को

कामयाबी हुई और उन का पैगम्बर होना साबित हो गया। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १६७, १६८, १६९)

122. उस की क़ौम से मुराद फिरऔन की क़ौम है क्यों कि ऊपर से फिरऔन, उस के मंत्रियों और जादूगरों के बारे में प्रसंग चला आ रहा है।

123. अर्थात् मूसा ने जो हक़ पेश किया था उस को कुबूल करने वाले कुछ ही हिम्मतवाले नवजवान निकले। वे नवजवान मिस्र की क़िब्ती क़ौम से सम्बन्ध रखते थे। क्योंकि कि जहाँ तक बनी इस्राईल का मामला है वह पहले से मुसलमान थे और उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम की रिसालत पर ईमान ला कर उन्हें अपना रहनुमा स्वीकार कर लिया था अगर ऐसा न होता तो वे बनी इस्राईल की रिहाई की मांग किस तरह करते। इस लिए जिन टीकाकारों (मुफ़स्सिरों) ने यहाँ बनी इस्राईल के नवजवान मुराद लिए हैं उन के मत से सहमति नहीं की जा सकती।

124. इस से अन्दाज़ा होता है कि फिरऔन और मिस्री क़ौम के सरदारों एवं प्रतिष्ठित लोगों ने इस्लाम कुबूल करने वालों के विरुद्ध कैसी ज़ालिमाना पॉलीसी अपना रखी थी। फिरऔन अपनी क़ौम के लोगों को अक़ीदा और ज़मीर (विचारों और धारणाओं) की आज़ादी देने के लिए तैयार न था। इस लिए सत्य स्पष्ट हो जाने के बावजूद उस को स्वीकार करने के लिए लोग सामान रूप से आमादा नहीं हुए। सिवाय कुछ नवजवानों के जिस ने तमाम ख़तरों के बावजूद मूसा अलैहिस्सलाम की हक़ की दअवत को स्वीकार कर लिया।

125. फिरऔन सरकश (उद्दंड) भी था और हद से ज़्यादा ज़ालिम भी। खुदा से सरकशी के नतीजे में उस में ऐसा घमण्ड पैदा हो गया था कि नैतिकता और मानवता की सारी सीमाओं को तोड़ कर वह ख़िन्नता एवं बर्बरता पर उतर आया था।

126. अर्थात् तुम्हारे मोमिन होने और अपने को अल्लाह के हवाले करने का तक्राज़ा यह है कि तुम्हारा भरोसा अल्लाह ही पर हो। फिरऔन की अन्यायपूर्ण कार्रवाईयों की परवाह न करते हुए तुम्हें हक़ पर जम जाना चाहिए और विश्वास रखना चाहिए कि अन्ततः सफलता ईमान वालों ही के लिए है। अल्लाह पर पूरा भरोसा, जब आदमी का वास्तव में मन का फैसला हो तो उस के अन्दर मनोयोग (तसल्ली और इत्मीनान) की दशा पैदा हो जाती है जो ख़राब हालात में ईमान वालों का सब से बड़ा रक्षात्मक हथियार है।



85. उन्होंने ने कहा हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब ! हमें ज़ालिमों के जुल्म का निशाना न बना ¹²⁷।

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٨٥

86. और अपनी रहमत से हमें काफ़िर क़ौम से छुटकारा दे।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِّنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ٨٦

87. और हम ने मूसा और उस के भाई ¹²⁸ पर वह्य की कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुहैया करो ¹²⁹ और अपने घरों को क़िबला बना लो ¹³⁰ और नमाज़ क़ायम करो ¹³¹ और ईमान वालों को खुशख़बरी दे दो ¹³²।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوُّا لِقَوْمِكُمَا
بِمَصَرٍ يُّبَوُّونَ أَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ٨٧

88. और मूसा ने दुआ की ऐ हमारे रब ! तूने फ़िरऔन और उस के सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में वैभव, प्रतिष्ठा, एवं धन दौलत प्रदान की है, खुदाया ताकि वह तेरी राह से (लोगों को) भटकाएँ ¹³³। ऐ हमारे रब ! इन के धन दौलत तबाह कर दे और इन के दिलों को ऐसा कठोर कर दे कि वह ईमान न लाएँ यहाँ तक कि दुख दायिनी यातना (अज़ाब) देख लें ¹³⁴।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَكَ زِينَةً
وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوهُ عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا
اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ
يُرَوُّوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ٨٨

89. फ़रमाया तुम दोनों की दुआ कुबूल कर ली गई ¹³⁵। तुम साबित क़दम (जमे) रहो और उन लोगों की राह न चलो जो जानते नहीं हैं ¹³⁶।

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعِنَّ سَبِيلَ
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ٨٩

90. और हम ने बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया। ¹³⁷ फिर फ़िरऔन और उस के लश्कर ने जुल्म और शत्रुता के कारण उन का पीछा किया ¹³⁸। यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा। मैं ईमान लाया कि उस खुदा के सिवा जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए हैं कोई खुदा नहीं और मैं उन लोगों में शामिल हूँ जो मुस्लिम हैं ¹³⁹।

وَجُوزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا
وَعَدُوًّا حَتَّىٰ إِذَا دَرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ أَمْنْتُ أَنَّهُ لَإِلَهِ إِلَّا
الَّذِي أَمْنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ٩٠

91. अब ईमान लाता है ! ¹⁴⁰ हालाँकि इस से पहले तू अवज्ञाकारी करता रहा और फ़साद बरपा करने वाला बना रहा।

الْآن وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ٩١

92. तो आज हम तेरी लाश को बचाएंगे ताकि तू बाद वालों के लिए (इबरत का) निशान हो ¹⁴¹। और वास्तविकता यह है कि बहुत से लोग हमारी निशानियों की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَفَكَ آيَةً وَإِنَّ كَثِيرًا
مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا الْغَافِلُونَ ٩٢

127. मूसा अलैहिस्सलाम की क्रौम ने अल्लाह पर विश्वास व्यक्त करते हुए दुआ की कि खुदाया इन ज़ालिमों को ऐसा प्रभुत्व प्रदान न कर कि वह हम को अपनी अन्यायपूर्ण कार्रवाइयों के लिए निशाना बना लें।

128. अर्थात् हारुन (अलैहिस्सलाम) पर जो नबी थे।

129. अर्थात् कुछ घरों को मस्जिद के तौर पर ख़ास कर लो। संभवतः मिस्र में पहले से मस्जिदें मौजूद नहीं रही होंगी जिस का कारण हो सकता है यह रहा हो कि फ़िरऔन ने इस की अनुमति न दी हो और मूसा अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के बाद चूँकि बनी इस्राईल को मिस्र से हिज़रत (Migrate) कर जाना था इस लिए वहाँ स्थाई रूप से मस्जिदें बनाने की आवश्यकता नहीं थी। इस लिए घरों को ख़ास कर के उन को अस्थायी रूप से मस्जिद करार देने का हुक्म दिया गया ताकि जमाअत के साथ नमाज़ का आयोजन हो।

इस से यह रहनुमाई मिलती है कि अगर किसी जगह मस्जिद का निर्माण संभव न हो तो किसी मकान या मदरसा को स्थायी मस्जिद करार दिया जा सकता है ताकि जमाअत के साथ नमाज़ की कोई सूरत अपनाई जा सके।

130. सम्बोधन मूसा की क्रौम से है और क़िबला से मुराद इबादत का केन्द्र है। मतलब यह है---और अल्लाह के कलाम का मतलब अल्लाह ही बेहतर जानता है--कि उन घरों को इबादत का केन्द्र बनाओ और अस्थायी मस्जिद के तौर पर इस्तेमाल करो।

131. स्पष्ट हुआ कि नमाज़ को क़ायम करना मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत का महत्वपूर्ण स्तंभ था और इस के बावजूद कि बनी इस्राईल फ़िरऔन की गुलामी में जीवन व्यतीत कर रहे थे, उन्हें नमाज़ की पाबन्दी का हुक्म दिया गया था। मगर मौजूदा तौरात में स्पष्ट रूप से इस का वर्णन नहीं है अलबत्ता मिस्र में बनी इस्राईल के खुदा के समक्ष नतमस्तक (सज्दा रेज़) होने का ज़िक्र है। तौरात की किताब निर्गमन में है:-

“तब लोगों ने सिर झुका कर दण्डवत् की।” (निर्गमन 12:27)

132. सम्बोधन मूसा अलैहिस्सलाम से है। उन्हें हिदायत की गई कि ईमान वालों को जो अल्लाह पर भरोसा कर के फ़िरऔन के मुकाबले पर जम गए हैं और नमाज़ क़ायम कर रहे हैं, कामयाबी की खुशख़बरी दे दो ताकि उन की ढारस बंध जाए।

133. यह ऐसी ही बात है जैसे कोई व्यक्ति किसी आयोग्य चले के बारे में उस के गुरु से यह कहे कि आप ने इस को इसी लिए पढ़ाया था कि परीक्षा में फेल हो। ज़ाहिर है यह बात परिणाम को देख कर कही जाती है न कि उद्देश्य की

दृष्टि से। मूसा अलैहिस्सलाम के यह कहने का मतलब भी यही है कि खुदाया तूने यह सांस्कृतिक साधन फ़िरऔन और उस के सरदारों को इस लिए तो नहीं प्रदान किये थे कि वह लोगों को गुमराह करने के लिए उन को इस्तेमाल करे लेकिन तेरे उदार अनुग्रह से वे इस तरह अनुचित लाभ उठा रहे हैं कि गोया ये सामाग्रीयाँ इन को इसी उद्देश्य से दी गई थीं।

134. यह दुआ मूसा अलैहिस्सलाम ने उस समय की जब फ़िरऔन और उस के मंत्रियों पर सत्य धर्म के लिए तर्क (हक़ की हुज्जत) पूरी तरह स्पष्ट हो गया था और वे मात्र हठधर्मी के कारण उस को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए। जब कोई क्रौम उदंडता की अन्तिम सीमा को पहुँचती है तो उस की हैसियत एक सड़ी हुई लाश की हो जाती है जिस की सड़ांध से वातावरण सुरक्षित रखने के लिए ज़रूरी होता है कि उसे जहाँ तक संभव हो शीघ्र अतिशीघ्र धरती में गाड़ा जाए। और अल्लाह तआला की सुन्नत यही है कि वह ऐसी क्रौम पर अज़ाब नाज़िल कर के उस के अस्तित्व से ज़मीन को पाक कर देता है। मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ अल्लाह की इसी सुन्नत (नियम) को ज़ाहिर करने के लिए थी।

135. चूँकि यह दुआ अल्लाह की सुन्नत अर्थात् अल्लाह के नियम को लागू करने के लिए थी और उचित समय पर की गई थी इस लिए फ़ौरन कुबूल हुई। यह दुआ मूसा अलैहिस्सलाम ने की थी और हारुन अलैहिस्सलाम इस दुआ में शामिल थे।

136. अर्थात् वे नहीं जानते कि जिस राह को उन्होंने अपनाया है वह उन्हें जहन्नम की ओर ले जाने वाली है।

137. बनी इस्राईल के समुद्र पार करने का किस्सा बाइबिल में भी बयान हुआ है। सारांश यह है कि एक रात खुदा की तरफ़ से फ़िरऔनियों पर ऐसी आफ़त आई कि उन सब के पहलौटे (पहला बच्चा) मर गए और मिस्र में बड़ा कोहराम मच गया। फ़िरऔन ने घबरा कर मूसा और हारुन को बुलवाया और उन को इजाज़त दी कि बनी इस्राईल को ले कर निकल जाएँ। मूसा बनी इस्राईल को ले कर रामसेस से जहाँ उन की आबादियाँ थीं निकले और वहाँ से सुक्कोत तक पैदल सफ़र किया सुक्कोत से कूच कर के एताम पहुँचे और एताम से फ़ीहैरोत की तरफ़ जो बालसपोन के सामने है मुड़ गए और मिगदोल में ठहर कर फ़ीहैरोत के सामने से कूच किया और समुद्र के बीच से गुज़र कर (सै नाम के) जंगल में दाखिल हो गए। बाइबिल में यह पुष्टि भी है कि मिस्र से फ़िलस्तीन को जाने के लिए जो निकटतम मार्ग था उस मार्ग से खुदा उन को नहीं ले गया बल्कि उन को चक्कर खिला कर लाल सागर के जंगल के रास्ते से ले गया। अर्थात् नज़दीक का रास्ता छोड़ कर दूर का रास्ता मसलहत से अपनाया था।

यह किस्सा विस्तार से निर्गमन अध्याय १२, १३, १४, १५

और गिनती अध्याय ३३ में बयान हुआ है।

जिस समुद्र को बनी इस्राईल ने पार किया था उस का नाम बाइबिल के उर्दू अनुवाद में बहरे कुलजुम अंग्रेजी अनुवाद में (Red Sea) हिन्दी अनुवाद में लाल समुद्र और अरबी अनुवाद में बहरेसूफ़ बयान हुआ है। यह असल इब्रानी नाम यमसूफ़ का अनुवाद है। इब्रानी में यम समुद्र को कहते हैं। इस ज़माने में स्वेज़ की खाड़ी के उत्तर की ओर एक छोटा समुद्र कटु सरोवर (Bitter Lakes या बहरे-मुरी) था जो स्वेज़ की खाड़ी से मिला हुआ था। बनी इस्राईल संभवतः इसी समुद्र को पार कर के सैना के जंगलों में दाखिल हो गये थे। बाइबिल में विभिन्न स्थानों के जो नाम आए हैं वे नाम अब प्रचलित नहीं रहे। इस लिए बाइबिल के टीकाकार भी उस स्थान की सही सही निशानदेही नहीं कर पाये हैं जहाँ से बनी इस्राईल ने समुद्र पार किया था। ए डिकशनरी आफ़ दि बाइबिल का संकलनकर्ता लिखता है।

"The general opinion, however based on Constant Scripture representation, is that the sea crossed by the Israelites was the Gulf of Suez, probably at a point immediately north or just south of the Bitter Lakes." (A Dictionary of the Bible, by John D. Davis, London Edition, IV. p. 647-648)

बहर हाल बनी इस्राईल के समुद्र पार करने की घटना अल्लाह तआला की तरफ़ से एक खुला मोज़ा (चमतकार) था। और अतिरिक्त व्याख्या आगे सूरह शुअरा में आ रही है।

138. फिरऔन ने पहले तो बनी इस्राईल को अपने देश से जाने की अनुमति दे दी लेकिन बाद में जब यह खयाल आया कि इस तरह तो हम ने उन को अपनी दासता से मुक्ति दे दी तो अपने लाव लश्कर के साथ उन का पीछा किया। फिरऔन का यह अमल सरासर अन्याय और शत्रुता पर आधारित था।

139. फिरऔन के इस इक्रार का वर्णन बाइबिल में नहीं है लेकिन कुर्आन ने घटना के इस अहम पहलू को इस तरह पेश कर दिया है कि फिरऔन की बेबसी का चित्रण उभर कर सामने आ जाता है। फिरऔन का यह इक्रार प्राकृति की वह आवाज़ थी जिस को उस ने अपने ज़मीर पर जुल्म कर के दबाए रखा था लेकिन जब मौत को सामने देख लिया तो प्राकृति बोल उठी, और सच वह जो सर चढ़ कर बोले। फिरऔन जैसे उद्दंड और ज़ालिम बादशाह को भी आखिरकार तौहीद और इस्लाम की सत्यता को स्वीकार करना पड़ा।

140. अर्थात् फिरऔन से जब वह डूब रहा था कहा गया अब जब कि मौत सामने खड़ी है ईमान लाने का कोई लाभ नहीं क्योंकि परीक्षा की घड़ी अब समाप्त हो गई। अब तो

परिणाम को भोगना है। अल्लाह तआला ने अपनी यह सुन्नत (नियम) कुर्आन में बयान कर दी है कि अज़ाब को देख कर ईमान लाना कुछ भी लाभदायक नहीं होता।

فَلَمْ يَكْ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَاسًا. (سورة مؤمنون ८५)

“उन का ईमान लाना उन के कुछ भी काम न आया जब कि उन्होंने हमारे अज़ाब को देख लिया।” (अल्मोमिन-८५)

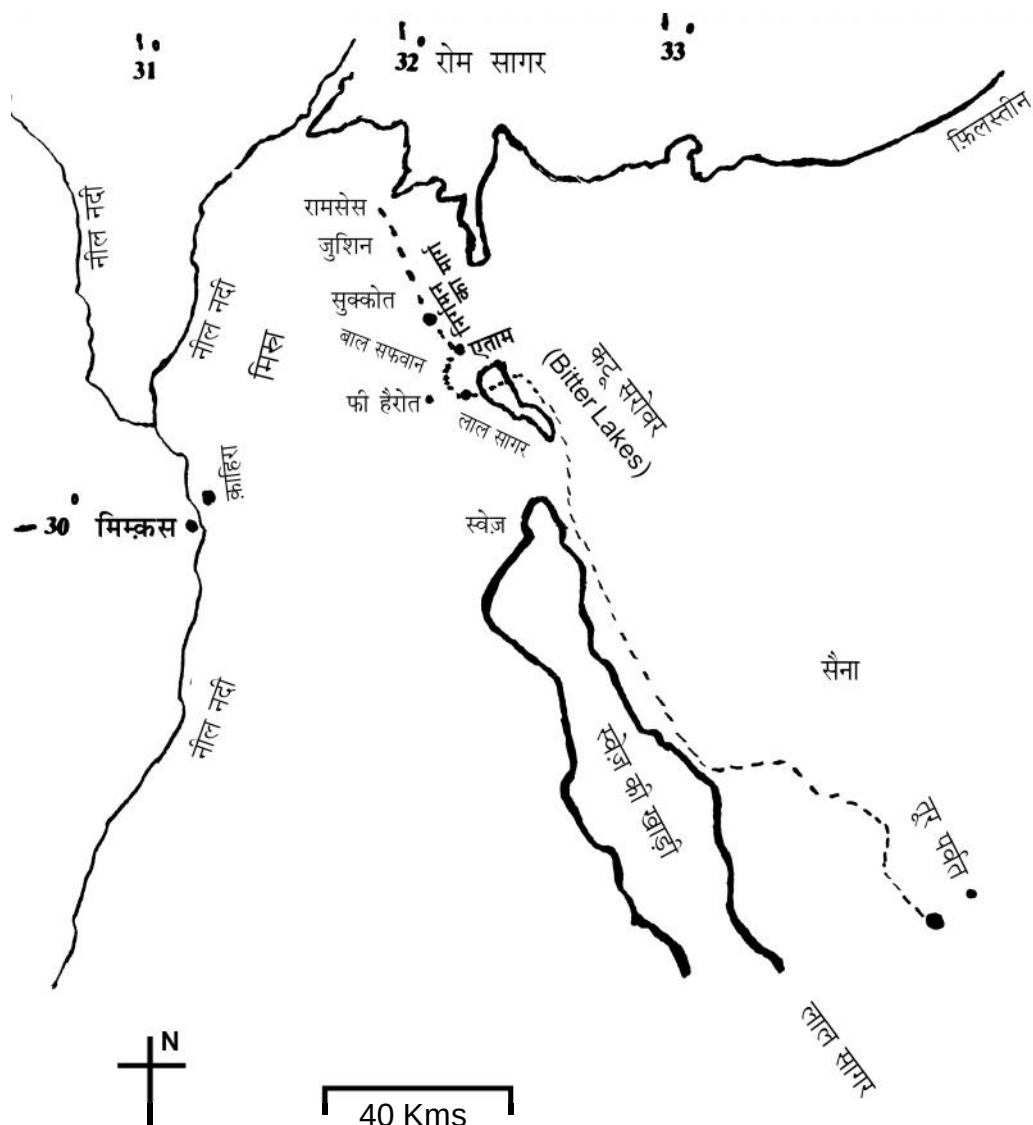
141. फिरऔन की लाश समुद्र के पानी में मिल नहीं गई बल्कि किनारे आ लगी ताकि लोग उस की लाश को देख कर इबरत हासिल करें कि ज़ालिमों पर अल्लाह का कोड़ा किस तरह बरसता है। और जो अपनी बड़ाई का घमण्ड करते हैं उन का क्या अन्जाम होता है। बाइबिल में इस घटना का वर्णन इस तरह हुआ है।

“ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्त्रियों और उन के रथों और सवारों पर फिर बहने लगे। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने अपने बल पर आ गया, और मिस्त्री उल्टे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उन को समुद्र के बीच ही झटक दिया। और जल के पलटने से जितने रथ और सवार इस्राईलियों के पीछे समुद्र में आए थे, सो सब, वरन् फिरऔन की सारी सेना डूब गई और उस में एक भी न बचा। परन्तु इस्राईली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर हो कर चले गए और जल उन के दाहिनी और बाई दोनों ओर दीवार का काम देता था। और यहोवा ने उस दिन इस्राईलियों को मिस्त्रियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया, और इस्राईलियों ने मिस्त्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा। और यहोवा ने मिस्त्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाया था उस को देख कर इस्राईलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की उस के दास मूसा की भी प्रीति की।” (निर्गमन १४: २६ से ३१)

बाइबिल के टीकाकार ने बनी इस्राईल के निकलने (निर्गमन) को तेरहवी सदी ई. पू. की घटना बतलाया है और लिखा है कि यह फिरऔन संभवतः रामसेस द्वितीय (Ramses II) था (Peake's Commentary on the Bible-Newyork p.115)

और राम सेस द्वितीय की मम्मी आज भी काहिरा (निर्गमन) के संग्रहालय अर्थात् म्यूज़ियम (Museum) में बिराजमान है और उन की दशा स्वयं पुकार कर कह रही है “देखो मुझे जो दीदा-ए इबरत निगाह हो ”

“His Mummy is now in the museum at Bulak.” (A Dictionary of the Bible, word pha'raoh Page 600)



बनी इस्राईल के निकलने (निर्गमन) का मार्ग

स्वेज की खाड़ी और कटु सरोवर (Bitter Lakes) उस ज़माने में मिले हुए थे। बाद के ज़माने में दोनों के बीच थल का हिस्सा उभर आया और मौजूदा ज़माने में नहरे-स्वेज की खाड़ी को रोम से जोड़ दिया गया। इस पूरी खाड़ी को लाल समुद्र (बहरे-कुलज़ुम) भी कहा जाता है और लाल सागर (बहरे-अहमर भी)

जिस स्थान से बनी इस्राईल ने समुद्र पार किया उस का नाम बाइबिल में फ़ीहैरोत (जो बालसपोन और मिगदोल के सामने है) आया है। मगर यह नाम अब प्रचलित नहीं है इस लिए इन का ठीक स्थान ज्ञात करना मुश्किल है। फिर भी अन्दाज़ा है कि (Bitter Lakes) (जो लाल सागर का एक हिस्सा है) को पार कर के वह सैना के जंगल में दाखिल हुए और फिराउन (Bitter Lakes) (बहरे मुरा) में डूबा होगा। वल्लाहु अअ्लम

93. हम ने बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना दिया ¹⁴² और पवित्र आजीविका प्रदान की ¹⁴³। फिर इस के बावजूद कि उन के पास ज्ञान आ चुका था वे विभेद (इख़िलाफ़) में पड़ गए ¹⁴⁴। निश्चय ही तुम्हारा रब क्रियामत के दिन उन के बीच उन बातों का फैसला कर देगा जिन में वे विभेद करते रहे हैं।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبَآئِدَ وَرَاقَتَهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ④३

94. और यदि तुम्हें उस (किताब) के बारे में संदेह हो जो हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो पहले से किताब पढ़ते आ रहे हैं ¹⁴⁵। निस्संदेह तुम्हारे पास हक़ (सत्य) आ गया है तुम्हारे रब की तरफ़ से अतः तुम हरगिज़ संदेह करने वालों में से न हो जाओ।

فَإِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَآبَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ④४

95. और न उन लोगों में से हो जाओ जिनमें ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वरना तुम तबाह होने वालों में से हो जाओगे।

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَنَّ الْخَاسِرِينَ ④५

96. निश्चय ही जिन लोगों पर तुम्हारे रब का फ़रमान सादिक़ आ गया (सिद्ध हो गया) है वे कदापि ईमान नहीं लाएंगे ¹⁴⁶।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ④६

97. चाहे उन के पास हर तरह की निशानियाँ आ जाए, जब तक कि वे दुखदायिनी यातना देख न लें।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ④७

98. फिर ऐसा क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती और उस का ईमान लाना उस के लिए लाभकारी होता सिवाय यूनस की क़ौम के कि जब वह ईमान लाई तो हम ने उस पर से दुनिया की ज़िन्दगी में अपमान की यातना को दूर कर दिया ¹⁴⁷। और एक अवधि तक उसे (जीवन सामाग्री से) लाभ उठाने का अवसर दिया।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخُرْزِيِّ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَنَتَّعْنَهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ④८

99. अगर तुम्हारा रब चाहता तो धरती के ऊपर जितने लोग हैं सब के सब ईमान ले आते, फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे ईमान वाले हो जाएँ ¹⁴⁸?

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرَهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ④९

142. अच्छे ठिकाने से मुराद सीरिया और फ़िलस्तीन की पावन धरती भी है और सम्मान का पद भी। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १९४ और १९७.

143. इशारा है उन नेमतों की तरफ़ जो उन्हें फ़िलस्तीन की पावन धरती में प्रदान हुई। बाइबिल में कई जगहों पर इस देश की यह प्रशंसा की गई है कि वहाँ दूध और शहद बहता है उदाहरणार्थ देखिए निर्गमन ३:८

144. ज्ञान से मुराद दीन और शरीअत का ज्ञान है। स्पष्ट करना यह अभिप्रेत है कि बनी इस्राईल के बीच जो विभेद दीन और शरीअत के मामले में पैदा हुए वे इस कारण नहीं हुए कि उन्हें उन बातों की सही जानकारी दी नहीं गई थी बल्कि तौरात और नबियों के द्वारा उन का सही मार्गदर्शन किया गया था और उन पर यह भी अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया गया था कि असल दीन क्या है, अल्लाह के आदेश क्या हैं और उन की सफलता एवं मुक्ति किस बात पर निर्भर है। मगर इन स्पष्ट शिक्षाओं के बावजूद उन्होंने ने विभेद (इख़िलाफ़) की राह अपनाई। (और अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इमरान नोट १३७^A और सूरह बय्यिन: नोट ७)

145. जिस समय यह सूरह उतरी है बहुत कम लोग कुर्आन पर ईमान लाए थे और काफ़ी संख्या उन लोगों की थी जो संकोच एवं दुविधा में पड़े थे। चूँकि वे एक ऐसी क्रौम से सम्बन्ध रखते थे जिस के पास अल्लाह की कोई किताब पहले से मौजूद नहीं थी इस लिए उन्हें इस बात को स्वीकार करने में संकोच था कि वास्तव में अल्लाह किताब अवतरित करता है और यह कि कुर्आन अल्लाह का कलाम है। उन के इस संकोच को दूर करने के लिए यहाँ फ़रमाया गया कि कुर्आन पहली किताब नहीं है जो अल्लाह की तरफ़ से अवतरित की गई हो बल्कि इस से पहले भी अल्लाह तआला किताबें अवतरित करता

रहा है और तुम्हारे बीच अहले-किताब तो मौजूद ही हैं जो तौरात पढ़ते रहते हैं। उन से इस बात की पुष्टि हो सकेगी कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की हिदायत के लिए किताबें अवतरीत करता रहा है और उन में जो लोग सत्य प्रिय हैं वे कुर्आन के अल्लाह की किताब होने की भी पुष्टि करेंगे। क्यों कि जो व्यक्ति अल्लाह की किताब से परिचित हो वह कुर्आन को सुनते ही पहचान लेगा कि यह खुदा का कलाम (वाणी) है।

146. मुराद अल्लाह तआला का वह फ़रमान है जो इस सूरह की आयत ३३ में बयान हुआ है और जिस की व्याख्या नोट ६० में गुज़र चुकी।

147. अर्थात् जिस आबादी में भी रसूल भेजा गया वह आबादी कुल मिलाकर उस समय तक ईमान नहीं लाई जब तक कि अज़ाब (यातना) आ न गया। और अज़ाब के आ जाने पर उस का ईमान लाना व्यर्थ था क्यों कि उस समय कर्म करने की मुहलत समाप्त हो गई थी। अलबत्ता पूरे इतिहास में एक उदाहरण हज़रत यूनस की क्रौम की मिलती है जो अज़ाब के सामने आ जाने से पहले ईमान ले आई इस लिए अल्लाह ने उसे अपमान भरे अज़ाब से बचा लिया।

यूनस का नाम बाइबिल में योना आया है। यह इस्राईली नबी थे और उन्हें नैनवा भेजा गया था जो इराक़ में दजला नदी की ओर मोसिल नगर के निकट स्थित था और जो आशोरियों का राजसिंहासन था। यह क्रौम बिगाड़ में लिप्त थी इस लिए उस के सामने हक़ की दअवत प्रस्तुत करने के लिए यूनस अलैहिस्सलाम को भेजा गया था। यह घटना लगभग आठवीं सदी ईसा पूर्व की है।

148. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २०० और २०१ एवं सूरह माइदा नोट १५९ और सूरह बक्रर: नोट ४१७.

100. और किसी व्यक्ति के लिए संभव नहीं कि वह अल्लाह के इज्ज (मंशा) के बगैर ईमान लाए, और वह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते ¹⁴⁹।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ⑩

101. (इन से) कहो, देखो आसमानों और ज़मीन में क्या कुछ है ¹⁵⁰। मगर जो लोग ईमान लाना ही नहीं चाहते उन के लिए निशानियाँ और चेतावनियाँ कुछ भी लाभकारी नहीं हो सकतीं।

قُلْ اَنْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا تُعْطٰی الْاٰیٰتِ وَالتَّذٰرِعٰنِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑪

102. ये लोग इस के सिवा और किस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जो दिन इन से पहले के लोगों पर गुज़र चुके उसी तरह के दिन इन पर भी आएँ ¹⁵¹। कहो तुम भी प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا رَبِّيْ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ⑫

103. फिर हम अपने रसूलों को और ईमान लाने वालों को बचा लिया करते हैं। ऐसा ही हम करते रहे हैं। हम पर यह हक़ है कि मोमिनों को बचा लें ¹⁵²।

ثُمَّ نَبْعَثُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نَحْمِ الْمُوْمِنِيْنَ ⑬

104. कहो, ऐ लोगों ! अगर तुम मेरे दीन के बारे में संदेह में हो तो (सुन लो) मैं उन की परिस्तिश नहीं करता जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो ¹⁵³। बल्कि मैं अल्लाह की परस्तिश करता हूँ जो तुम को मौत देता है ¹⁵⁴। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान लाने वालों में से हो जाऊँ ¹⁵⁵।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِنْ دِيْنِيْ فَلَا اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُوْمِنِيْنَ ⑭

105. और यह कि तुम अपना रुख ठीक ठीक उस दीन की तरफ़ कर लो ¹⁵⁶ और हरगिज़ मुश्रिकों में से न हो जाओ।

وَاَنْ اَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ⑮

106. और अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारो ¹⁵⁷ जो न तुम्हें लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि। यदि तुम ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में से हो जाओगा। ¹⁵⁸

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ⑯

149. अर्थात् ईमान का मामला अल्लाह की तौफ़ीक़ (दैवयोग) पर आश्रित है और यह तौफ़ीक़ उन्हीं लोगों को मिलती है जो बुद्धि से काम लेते हैं। लेकिन जो लोग बुद्धि से काम नहीं लेते उन के दिल और दिमाग़ पर अल्लाह गन्दगी डाल देता है। इस लिए बिगड़े और ख़राब विचार ही उन में पैदा होने लगते हैं। यही करण है कि ख़ुदा से घटिया बातें सम्बन्धित करने और मानव जीवन के बारे में घिनावने विचार प्रचारित करने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता। बहुदेववादी धर्मों की देवमालाई कल्पनाओं एवं धारणाओं, आधुनिकता का परचम उठाने वालों की अनैतिक सभ्यता, भौतिकवादियों का यह सिद्धान्त कि मनुष्य मात्र धन की भाषा बोलने समझने वाला जानवर है और कामाङ्छा के पुजारियों की यौन सिद्धान्त बिगड़े मास्तिष्क के स्पष्ट उदाहरण हैं।

150. कुर्आन हर व्यक्ति को इस बात का निमंत्रण देता है कि वह खुली आंखों से तारों से भरे आसमान और नेमतों से भरी ज़मीन का अवलोकन करे। यह अवलोकन मात्र जानकारी में वृद्धि करने के लिए नहीं बल्कि सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से होना चाहिए। अर्थात् मौलिक रूप से उस का उद्देश्य अपने पैदा करने वाले की पहचान एवं उस का सान्निध्य प्राप्त करना हो तथा यह मालूम करना हो कि आसमान और ज़मीन की सृष्टि का जो उद्देश्य कुर्आन बतलाता है और इन्सान को वह जिस बात का निमंत्रण देता है उस की पुष्टि ब्राह्मण्ड में फैली निशानियों से होती है या नहीं। इस वैज्ञानिक युग में खगोल शास्त्रियों एवं अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने अजीब अजीब खोज की हैं और मनुष्य के सामने जानकारी के ढेर लगा दिये हैं किन्तु वे सच्चे ज्ञान तथा सत्य के ज्ञान से बिल्कुल अज्ञान हैं क्यों कि ब्राह्मण्ड का अध्ययन वे सही एप्रोच (Approach) के साथ नहीं करते।

151. अर्थात् पिछली क़ौमों पर जब रसूलों के द्वारा सत्य (हक़) भली भाँति स्पष्ट हो गया और इस के बाद भी वे क़ौमों ईमान नहीं लाई तो उन्हें विनाश के दिन देखना पड़े। इसी प्रकार इन लोगों पर भी रसूल के द्वारा सत्य भली भाँति स्पष्ट हो चुका है। अब अगर ये ईमान नहीं लाते तो इस का परिणाम यही निकलता है कि वे विनाश का मुँह देखें।

152. निर्णीत प्रकोप (फ़ैसलाकुन अज़ाब) से बचा लेना मुराद है। अर्थात् जब किसी रसूल के द्वारा किसी क़ौम पर अल्लाह की हुज्जत पूरी तरह क़ायम हो जाती है अर्थात् सत्य को तर्क एवं प्रमाणों से पूरी तरह स्पष्ट एवं सिद्ध कर देता है तो इस दुनिया में अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) क़ौम को

अपनी लपेट में ले लेता है। ऐसे मौक़े पर अल्लाह अपने रसूल को और उन लोगों को जो उस पर ईमान लाए हों अज़ाब की लपेट में आने से बचा लेता है। पिछली क़ौमों पर जो अज़ाब आए तो उन के रसूलों को अल्लाह तआला ने उन बस्तियों से अज़ाब से पहले ही निकल जाने का आदेश दिया था। इस प्रकार हर निर्णीत प्रकोप के अवसर पर वह रसूल को और उस के साथी ईमान वालों को बचाता रहा है। चूँकि यह बचाना अल्लाह ने स्वयं अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है इस लिए अगर मक्का के मुश्रिकों (बहुदेववादियों) पर प्रकोप (अज़ाब) आया तो रसूल और ईमान वाले निश्चित रूप से बचा लिये जाएंगे।

ध्यान रहे कि अरब के बहुदेववादी धीरे धीरे ईमान लाते चले गए इस लिए आद की क़ौम और समूद की क़ौम की भाँति उन पर अज़ाब नहीं आया बल्कि उन में से जो लोग कुफ़्र पर अड़े रहे उन के विनाश का सामान ईमान वालों की तलवार के द्वारा बद्र और हुनैन के संग्राम में किया गया।

153. यहाँ पैग़म्बर को यह आदेश दिया गया है कि वह दीन के बारे में अपनी सोच एवं अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से खुल कर प्रस्तुत करें। यह आदेश जिस तरह पैग़म्बर के लिए है उसी प्रकार पैग़म्बर के अनुयायियों के लिए भी है। इस लिए एक मुसलमान को अपनी दीनी सोच की अभिव्यक्ति निर्भीकता पूर्वक बेलाग़ ढंग से करना चाहिए। दूसरे धर्मों के लोगों को ख़ुश करने के लिए दीन के मामले में लीपापोती करना ख़ालिस तौहीद को प्रस्तुत करने में संकोच करना कि कहीं बहुदेववादी नाक भाँ न चढ़ाएँ और बहुदेववादी तौर तरीक़ों के साथ उदारता बरतना उस हिदायत के विरुद्ध है जो आयत में दी गई है।

154. अर्थात् मैं केवल उस ख़ुदा की परस्तिश एवं उपासना करता हूँ जो तुम्हारे प्राण निकालता है। जब यह एक अखण्डनीय वास्तविकता है कि मौत अल्लाह के सिवा किसी के बस में नहीं है तो फिर अल्लाह के सिवा कोई और पूज्य एवं उपास्य कैसे हो सकता है!

155. यह बात पैग़म्बर की ज़बानी कहलवाने से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि पैग़म्बर का मोमिन होना और मामिनों की पंक्ति में शामिल होना अल्लाह के आदेश का पानल है। इस लिए यह समझना सरासर ग़लत और सत्य के विरुद्ध है कि आप ने अपनी तरफ़ से ईमान और कुफ़्र की बहस खड़ी कर दी है और इन्सानियत को मोमिन और काफ़िर दो वर्गों में बाँट दिया है !

156. अर्थात् दीन इस्लाम पर तुम अपने आप को एकाग्रचित रखो हर तरफ़ से कट कर उसी के हो कर रहो।

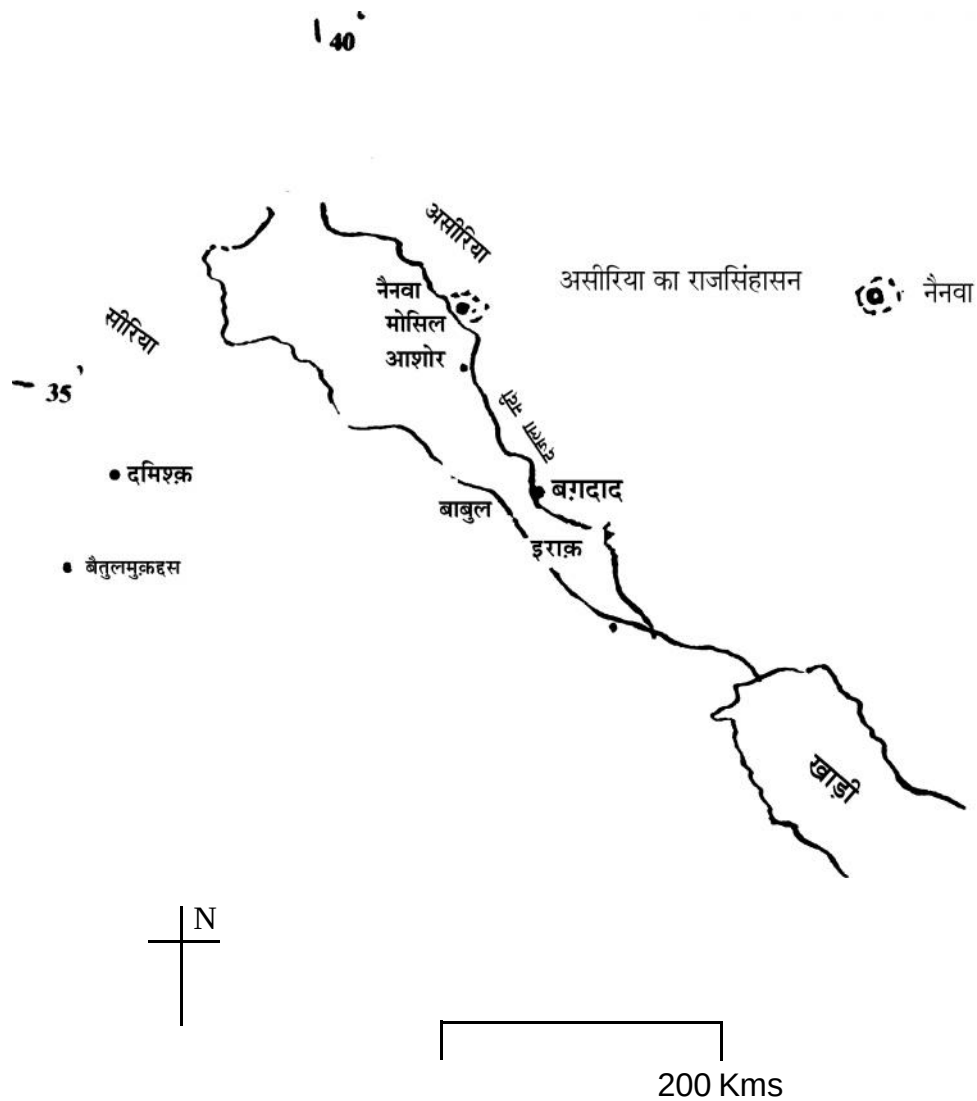
किसी और दीन या लादीनियत (अधर्म) की ओर तनिक भी झुकाव न हो और तुम्हारी धारणाओं, श्रद्धाओं, और कर्मों में शिर्क का गुज़र भी न होने पाए।

157. पुकारने से मुराद अवश्यकताओं की पूर्ति, फ़रियाद और समर्थन एवं सहायता के लिए पुकारना है। किसी के बारे में भी चाहे वह बुत हो या कब्र, फ़रिश्ता हो या जिन्न, नबी हो या वली, यह समझ कर के उस को हाजत पूरी करने के लिए पुकारना कि इस ब्राह्मण्ड की व्यवस्था एवं प्रबंध में, आजीविका उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में उस का भी कुछ दखल है। और वह ग़ैब में (अदृश्य) रह कर फ़रियाद को

सुनता और सहायता को पहुँचता है, परले दर्जे का शिर्क है चाहे यह मुश्रिक करें या मुसलमान।

158. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संबोधन कर के इतनी कड़ी बात इस लिए कही गई ताकि लोगों पर स्पष्ट हो जाए कि शिर्क के विरुद्ध पैग़म्बर ने जो कड़ा रवैया अपना रखा है वह अल्लाह की हिदायत के बिलकुल अनुकूल है और अल्लाह के क़ानून में शिर्क का हर अपराधी ज़ालिम है चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो !यहाँ पैग़म्बर को संबोधित कर के जो बात कही गई है उस का उद्देश्य इसी उसूली बात को स्पष्ट करना है।

हज़रत यूनस की क़ौम की आबादी



107. अगर अल्लाह तुम्हें किसी मुसीबत में डाल दे तो उस के सिवा कोई नहीं जो उस को दूर करे। और अगर वह तुम्हारे लिए भलाई चाहे तो उस के फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) को रोकने वाला भी कोई नहीं। वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस से नवाज़ता (अनुग्रहीत करता) है। वह क्षमा करने वाला और रहम करने वाला है ¹⁵⁹।

وَأَنْ يَّمْسَسَكَ اللَّهُ بَصْرًا فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ
بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٨﴾

108. कहो ऐ लोगो ! तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ (सत्य) आ गया है, तो जो हिदायत स्वीकार करेगा वह अपने ही फ़ायदे के लिए करेगा। और जो गुमराह होगा तो उस की गुमराही उसी के विरुद्ध पड़ेगी। और मैं तुम पर हवालादार नियुक्त नहीं हुआ हूँ ¹⁶⁰।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ
اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ
عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٩﴾

109. और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उस वह्य (ईश-प्रकाशना) की पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ की जाती है, और सब्र करो, यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे ¹⁶¹। और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ وَهُوَ خَيْرُ
الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

159. वह क्षमा करने वाला है इस लिए उस से क्षमा चाहो और वह रहम करने वाला है अतः उसी से रहम एवं दया की प्रार्थना करो।

160. अर्थात् मुझ पर यह ज़िम्मेदारी नहीं डाली गई है कि ज़बरदस्ती तुम को सत्य के मार्ग पर चलाऊँ ।

161. और इस के कुछ समय बाद अल्लाह का फैसला लागू हुआ अतः पैगम्बर के हाथों शिर्क (बहुदेववाद) की

जड़ कट गई और तौहीद का झंडा बुलन्द हुआ। बातिल (असत्य) मिट गया और हक़ (सत्य) का बोलबाला हुआ। इस ऐतिहासिक फैसले से भी जो रसूल की सत्यता का स्पष्ट प्रमाण है, यदि दुनिया की क़ौमों सबक़ हासिल करना नहीं चाहतीं तो फिर उन्हें ख़ुदा के उस फैसले की प्रतिक्षा करना चाहिए जिसे क्रियामत के दिन चुका दिया जाएगा ।



सूरह हूद

११.सूरह हूद

नाम: आयत ५० से ६० में हूद अलैहिस्सलाम और उन की क्रौम का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस का नाम सूरह हूद है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और मज़मून पर गौर करने से प्रतीत होता है कि सूरह यूनस से पहले नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: एक मात्र खुदा की इबादत और बन्दगी की जो दअवत अल्लाह का रसूल पेश कर रहा है उस को रद्द करने के भयावह अन्जाम से लोगों को खबरदार करना है। इस सूरह का मज़मून और सूरह यूनस का मज़मून बिल्कुल एक ही है अलबत्ता इस में डराने और चेतावनी का पक्ष इतनी अधिकता के साथ उभर कर सामने आ गया है कि मालूम होता है रसूल के विरोधियों पर अल्लाह का अज़ाब टूट पड़ने को है।

कलाम की तरतीब: आयत १ से ४ में वे आयतें हैं जो भूमिका के तौर पर होती हैं। इन में कुआनी दअवत का निचोड़ प्रस्तुत किया गया है।

आयत ५ से २४ में आपत्ति उठाने वालों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए समझाया गया है।

आयत २५ से ९९ में नबियों के इतिहास के कुछ पन्ने प्रस्तुत किये गये हैं ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबोधी इन पंक्तियों के दर्पण में अपना हाल भी पढ़ते जाएं।

आयत १०० स १०८ में इन घटनाओं और वास्तविकताओं से इबरत दिलाते हुए आखिरत के अन्जाम से खबरदार कर

दिया गया है और उन भाग्यवान लोगों को जिन्होंने ने ईमान ला कर अच्छे कामों का मार्ग अपनाया, सदैव बाक़ी रहने वाली जन्नत की खुशख़बरी दी गई है।

आयत १०९ से १२३ उपसंहार है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों को तसल्ली देते हुए ज़रूरी हिदायतें दी गई हैं।

सूरह की महत्वपूर्ण विशेषता: हदीस में आता है:

قَالَ أَبُو بَكْرٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ شَبَّتَ قَالَ شَبَّيْتَنِي هُوْدُ وَالْوَاقِعَةُ
وَالْمُرْسِلَةُ وَ عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ وَإِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ.

(ترمذی ابواب فضائل القرآن)

“हज़रत अबू बक्र ने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल आप पर बुढ़ापा छाया जा रहा है। आप ने फ़रमाया मुझे सूरह हूद, वाक्रिअः, मुर्सलात, अम्म यतासाअलून और इज़शशम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया।” (अत्तिर्मिज़ी अबवाब फ़ज़ाइलुल कुआन)

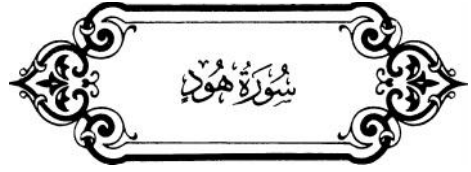
यह इस बात की ओर इशारा है कि सूरह हूद और इस जैसी सूरतों में अल्लाह के अज़ाब का चित्रण इस तरह से किया गया है कि इन को पढ़ते हुए आदमी का दिल दहल जाता है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस से प्रभावित होने का हाल यह था कि आप का शरीर भी भय की अधिकता से प्रभावित हो गया था।



११. सूरह हूद

आयतें: 123

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम रा ¹ यह एक ऐसी किताब है जिस की आयतों को सुदृढ़ बनाया गया है ²। फिर इन को खोल कर बयान कर दिया गया है ³। उस की तरफ़ से जो बेहद हिकमत वाला और ख़बर रखने वाला है ⁴।

الرَّكِيبُ أَحْكَمْتُ آيَاتِهِ ثُمَّ فَصَّلْتُ
مِنْ لَدُنِّ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۝

2. यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। ⁵ मैं उस की ओर से तुम्हें सावधान करने वाला ⁶ और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ ⁷।

أَلَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۝

3. और यह कि तुम अपने रब से माफ़ी चाहो और उस की तरफ़ पलटो ⁸। वह तुम को एक निश्चित अवधि तक अच्छी जीवन सामग्री देगा ⁹। और हर अनुग्रहित (साहबे-फ़ज़ल) को अपना उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) प्रदान करेगा। ¹⁰ लेकिन अगर तुम मुँह फेरते हो तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन ¹¹ के अज़ाब का भय है।

وَأَن اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

4. तुम सब को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है और उसे हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है।

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

5. देखो ये अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि उस से छिप जाएँ। ¹² याद रखो ! जब यह अपने को कपड़ों से ढाँक लेते हैं तो वह जानता है उस को भी जो वे छिपाते हैं और उस को भी जो वे ज़ाहिर करते हैं। वह तो सीनों के भेदों से भी अवगत है।

أَلَا إِنَّهُمْ يَمُشُّونَ صُدُورَهُمْ لَيَسْتَكْفُونَهُ الْكِتَابَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُونَ مَا يُسْرُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

6. ज़मीन पर कोई जानदार ऐसा नहीं जिस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो ¹³। वह उस के ठहरने की जगह भी जानता है और उस जगह को भी जहाँ वह सौंप दिया जाता है ¹⁴ सब कुछ एक स्पष्ट किताब में दर्ज (अंकित) है ¹⁵।

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

1. इन अक्षरों की व्याख्या सूरह यूनस नोट १ में गुजर चुकी ।

2. जिस तरह आसमान और ज़मीन की व्यवस्था सुदृढ़ आधार पर स्थापित की गई है। उसी तरह इस किताब में जो आयतें इशार्द हुई हैं वे अत्यंत सुदृढ़ प्रमाणों, ठोस वास्तविकताओं, उच्च शिक्षाओं, विश्वव्यापी सत्यताओं जीवन के संतुलित एवं न्यायपूर्ण क़ानूनों एवं नियमों पर हैं इस लिए उन में खराबी का कोई पहलू नहीं है और जिस तरह उस के मज़मून जचे तुले हैं उसी तरह इस के शब्द अति उचित (Most Appropriate) और इन का क्रम, इन का सम्बन्ध तथा इन की सम्बन्धता अर्थपूर्ण है। गोया हर शब्द अपनी जगह जड़ा हुआ हीरा है जिस की जगह कोई दूसरा शब्द हो ही नहीं सकता। इस का सही अन्दाज़ा वही लोग कर सकते हैं जो अरबी भाषा की अभिरुचि रखते हों ! उदाहरण स्वरूप **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** “कुल हुवल्लाहु अहद” (कहो अल्लाह एकता है) में अहद (यकता) का शब्द अत्यंत उचित शब्द है। इस की जगह यदि कोई व्यक्ति वाहिद (एक) का शब्द फ़िट करना चाहे तो इस से अर्थ में भी फ़र्क़ आयेगा और प्रवाह (Fluency) में भी। इसी प्रकार हम्द का शब्द प्रशंसा एवं कृतज्ञता दोनों अर्थों का संग्रह है किन्तु यदि कोई व्यक्ति अलहम्दुलिल्लाह (अल्लाह के लिए हम्द है) की जगह अशशुकुरल्लाह (अल्लाह के लिए शुक्र है) का प्रयोग करे तो व्यापकता बाक़ी नहीं रहेगी। मतलब यह कि यह कलाम ऐसा सुदृढ़ और परस्पर जुड़ा हुआ है कि कोई भी बुद्धि रखने वाला न तो इस के किसी शब्द पर उंगली रख सकता है और न उस की दी हुई शिक्षाओं में किसी त्रुटि की निशानदेही कर सकता है।

कुर्आन की यह प्रमुखता विशेषता है और दुनिया की कोई किताब भी दुनिया में पाये जाने वाले धर्मों के धार्मिक ग्रंथों समेत इन विशेषताओं से खाली है।

3. कुर्आन की शुरु की सूरतों में सारांश के साथ छोटे वाक्यों में रब की शिक्षाओं को प्रस्तुत किया गया है। लेकिन बाद की सूरतों में उन की व्याख्या एवं तफ़सील और उन के तक्राज़े बयान किये गए हैं। जैसे सूरह इख़लास में तौहीद (एकेश्वरवाद) का मज़मून बहुत ही संक्षिप्त रूप से बयान हुआ है। लेकिन सूरह अन्आम और सूरह यूनस में विस्तार पूर्वक। सूरह “फ़ात्र” में आद और समूद की क्रौम की घटनाओं की ओर संकेत किया गया है लेकिन सूरह “हूद” और सूरह “आराफ़” में ये घटनाएँ विस्तार से बयान हुई हैं। सूरह ग़ाशिया: में जन्नत और दोज़ख़ का संक्षिप्त परिचय कराया गया है किन्तु सूरह वाक़िअ: और सूरह रहमान में विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया गया है। सूरह “अअ्ला” में नमाज़ का हुक्म

संक्षिप्त रूप से दिया गया है लेकिन सूरह बनी इस्राईल, सूरह बक्रर: और सूरह निसा में इस के विस्तृत आदेश बयान हुए हैं। इस तरह कुर्आन अपनी व्याख्या स्वयं करता है।

4. कुर्आन की आयतों का सुदृढ़ एवं विस्तृत होना इस बात का प्रमाण है कि यह कलाम इन्सान का कलाम नहीं बल्कि ख़ुदा का कलाम है जिस की हर बात हिकमत से भरी (तत्त्वपूर्ण) होती है और जो तमाम हालात से भिन्न है।

5. यह है कुर्आन का इन्सान से पहला मुतालबा । अल्लाह को वाहिद माबूद (एकमात्र उपास्य) मान कर केवल उस की इबादत (उपासना) करना वह उच्च उद्देश्य है जिस के लिए इन्सान की रचना हुई है। इबादत की हक़ीक़त यह है कि आदमी अपने रब के समक्ष खुशू और खुजू (विनम्रता एवं भय) का इज़हार करे। इमाम राज़ी लिखते हैं:

“इबादत से मुराद ख़ुशू और ख़ुजू और अत्यंत तुच्छ एवं निम्न होने की अभिव्यक्ति है और यह बात सिवाय उस हस्ती के जो पैदा करने वाली, तदबीर करने वाली, रहम और एहसान करने वाली है किसी के लिए सुशोभित नहीं।”

(अतफ़्सीरुल कबीर जिल्द १७ पृष्ठ १८०)

मनुष्य यदि वास्तव में अल्लाह के समक्ष अपनी निम्नता एवं तुच्छता की अभिव्यक्ति करे और अपने को विनीत बन्दे की हैसियत से प्रस्तुत करे तो हो नहीं सकता कि वह कर्म एवं व्यवहार के क्षेत्र में उस का सरकश और बागी बन जाये। इबादत और सरकशी दो बिल्कुल विपरीत चीज़ें हैं। जो व्यक्ति वास्तव में अल्लाह की इबादत करने वाला होगा वह निश्चित रूप से उस की आज्ञापालन करेगा। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट ७ ।

6. अर्थात् कुफ़र और सरकशी एवं अवज्ञा और पापाचार के बुरे अन्जाम से सावधान करने वाला हूँ।

7. अर्थात् ईमान एवं विश्वास और आज्ञापालन एवं सदाचार के अच्छे अन्जाम की खुशख़बरी देने वाला हूँ।

8. अर्थात् जो शिर्क़ तुम करते रहे हो और गुनाह की जो ज़िन्दगी गुज़ारते रहे हो उस पर अल्लाह से माफ़ी माँगे और आगे के लिए अपना रवैया ठीक कर लो और वह इस तरह कि हर हाल में उस की ओर पलटने और उस का बन्दा बन कर ज़िन्दगी गुज़ारने का रवैया अपनाओ ।

9. अर्थात् इस सूरत में अल्लाह तुम्हें दुनिया की बेहतरीन नेमतों से नवाजेगा । और बाद की घटनाओं ने कुर्आन के इस वादे की पुष्टि कर दी अतः जो लोग शिर्क़ से तौबा कर के ईमान ले आए और नेक रास्ता अपनाया उन की दुनिया बिगड़ी नहीं बल्कि संवर गई और उन पर नेमतों की वह बारिश हुई जिस की इस से पहले कल्पना भी नहीं की जा

सकती थी।

10. अर्थात् एक मोमिन व्यवहारतः अपने को जितना योग्य सिद्ध कर दिखाएगा उस को अल्लाह तआला उतनी ही बुलन्दी एवं सम्मान प्रदान करेगा ।

11. मुराद क्रियामत का दिन है।

12. सीनों को मोड़ना अरबी भाषा का मुहावरा है जिस का अर्थ विमुखता के हैं। मतलब यह है कि अल्लाह उन की इन हरकतों से बेखबर है हालाँकि अल्लाह से कोई बात भी छिपी हुई नहीं है। अगर इन को इस की समझ होती तो वे अल्लाह के कलाम से विमुखता न अपनाते।

13. यह वह वास्तविकता है जो हर व्यक्ति के अनुभव और तजर्बे में आती है। ज़मीन का कोई प्राणी चाहे वह चरने वाला हो या उड़ने वाला, जल का हो या थल का इन्सान हो या जानवर सब अपने हिस्से की रोज़ी पाते हैं। यह रोज़ी या आजीविका

यद्यपि किसी माध्यम से मिलता है लेकिन इन माध्यमों, साधनों एवं कारणों को पैदा करने वाला और इन के द्वारा रोज़ी पहुँचाने की ऐसी व्यवस्था और प्रबन्ध करने वाला कि कोई भी जीवधारी जब तक कि उस के लिए जीना सुनिश्चित है आजीविका से महरूम न रहने पाए, एक अल्लाह के सिवा किस का काम है? क्या रोज़ी पहुँचाने का यह विशाल प्रबन्ध इस बात का प्रमाण नहीं है कि जिस ने जीवन प्रदान किया है वही जीवनयापन का साधन भी कर रहा है? और क्या इस स्पष्ट प्रमाण के बाद बहुदेववाद (शिक) और अनीश्वरवाद के खण्डन के लिए किसी और प्रमाण की ज़रूरत बाक़ी रह जाती है?

14. अर्थात् अल्लाह को तमाम छोटी बड़ी बातों का ज्ञान है। हर जानदार के रहने का ठिकाना भी उसे मालूम है और वह ठिकाना भी जहाँ वह मरने के बाद सौंप दिया जाता है।

15. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट १४।



और वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को ६ दिनों में पैदा किया --- और उस का अर्श (सिंहासन) पानी पर था --- ताकि तुम्हें आजमाए कि कौन कर्म में बेहतर है । और अगर तुम कहते हो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो काफ़िर बोल उठते हैं कि यह तो खुली जादूगरी है । (अल-कुर्आन)

7. और वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को ६ दिनों में पैदा किया ¹⁶ -- और उस का अर्श (सिंहासन) पानी पर था ¹⁷ -- ताकि तुम्हें आजमाए कि कौन कर्म में बेहतर है ¹⁸। और अगर तुम कहते हो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो काफ़िर बोल उठते हैं कि यह तो खुली जादूगरी है ¹⁹।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ④

8. और अगर हम एक निश्चित अवधि के लिए अज़ाब को पीछे कर देते हैं तो वे कहने लगते हैं कि क्या चीज़ है जो उसे रोक रही है? सुनो जिस दिन वह आयेगा तो फिर टाला न जा सकेगा और जिस चीज़ का वे मज़ाक उड़ा रहे हैं वही उन को आ घेरेगी ²⁰।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَى آتِيَةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولَنَّ مَا يَجِبُ سَاءَ الْيَوْمِ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑤

9. और अगर हम इन्सान को अपनी रहमत (दयालुता) से नवाज़ने के बाद उस से महरूम कर देते हैं। तो वह निराश और अकृतज्ञ हो जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْكُمْ كَفُورٌ ⑥

10. और अगर तकलीफ़ पहुँचने के बाद उसे हम राहत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है कि मेरे सारे कष्ट दूर हो गए, वह अकड़ने और डींगें मारने लगता है ²¹।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ⑦

11. अलबत्ता जो सब्र करने वाले और नेक अमल (सुकर्म) करने वाले हैं उन का हाल ऐसा नहीं है। उन के लिए क्षमा है और बहुत बड़ा अज़्र (प्रत्युपकार)।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑧

12. कहीं ऐसा न हो कि जो वहय तुम्हारी तरफ़ की जा रही है उस का एक हिस्सा तुम छोड़ दो ²² और इस बात पर दिल तंग हो कि वे कहेंगे, इस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया, या इस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया? वास्तव में तुम्हारा काम बस ख़बरदार करना है और निगराँ (निरीक्षक) तो हर चीज़ पर अल्लाह ही है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كُتُبٌ وَجَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ⑨

16. इस की व्यख्या सूरह अअ्राफ़ नोट ८२ में गुज़र चुकी।

17. अर्थात् आसमान और ज़मीन की सृष्टि से पहले पानी की सृष्टि की थी। तौरात में यह बात इस तरह बयान हुई है।

“ परमेश्वर का आत्मा जल के उपर मण्डलाता था।”
(उत्पत्ति १:२)

असल तौरात में वही बात इस तरह बयान हुई होगी जो कुर्आन में इर्शाद हुई है लेकिन तौरात के अनुवादकों ने बात को उलझा दिया।

अर्श का अर्थ राजसिंहासन के हैं जिस की दशा का हमें कोई ज्ञान नहीं। अलबत्ता इस से अल्लाह के शासन की धारणा सुदृढ़ होती है। मतलब यह है ----- और अल्लाह ही अपने कलाम के भेदों को बेहतर जानता है ----- कि ब्रह्माण्ड की रचना से पहले जब कि पानी ही पानी था अल्लाह की हुक्मत इस पर क़ायम थी। उसी के हुक्म से पानी ने विकास का रूप धार लिया फलतः थल की उत्पत्ति हुई और फिर क्रमशः भाँत भाँत की जिन्स अस्तित्व में आई। कुर्आन में दूसरी जगह फ़रमाया गया है:

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ (سورة الانبياء : ३०)

“और हम ने पानी से तमाम जानदार चीज़ें पैदा की”

(अम्बिया: ३०)

18. यह है वह उद्देश्य जो इस ब्रह्माण्ड की रचना के पीछे निहित है। अर्थात् इन्सान को परिक्षा स्थल पर खड़ा कर दिया गया है ताकि अल्लाह तआला ऐसे लोगों को चुन ले जो वयवहारतः अपने आप को बेहतर सिद्ध कर दिखाएँ और फिर उन को सदैव रहने वाली नेमतों से पुरस्कृत करे।

19. अर्थात् जब पैगम्बर इस बात को प्रबल प्रमाण के

साथ प्रस्तुत करता है कि तुम लोग मरने के बाद उठाए जाओगे तो न मानने वाले इस को शब्दों की जादूगरी बताने लगते हैं।

20. अर्थात् अल्लाह तआला अज़ाब को इस लिए पीछे कर रहा है अथवा टाल रहा है ताकि न मानने वालों को समझने और खुद को सुधार लेने का और अवसर मिले लेकिन ये लोग इस मुहलत से फ़ायदा उठाने के बजाय अज़ाब का मज़ाक उड़ाने लगते हैं। वे अच्छी तरह सुन लें कि जिस दिन अज़ाब सामने आ जायेगा तो फिर हरगिज़ टल न सकेगा और उस की गिरफ़्त से वे हरगिज़ बच न सकेगे।

21. जब ज़िन्दगी आजमाइश के लिए ठहरी तो न तकलीफ़ की हालत में निराश होना सही है और न राहत की हालत में फूला न समाना सही। बल्कि पहली हालत सन्न और धैर्य के गुण पैदा करने के लिए है और दूसरी हालत शुक्र और कृतज्ञता के गुण पैदा करने के लिए। मगर वास्तविक उद्देश्य को सामने न रखने के कारण मनुष्य का दृष्टिकोण भी ग़लत हो जाता है और कार्यपद्धति भी।

22. यह बात नबी की बशरी हैसियत (इन्सान होने की हैसियत) को ध्यान में रखते हुए कही गई है वरना नबी की शान से यह असंभव है कि वह अल्लाह की वहय के किसी हिस्से को छोड़ दे। इस इर्शाद से वास्तव में विरोध की तेज़ी को स्पष्ट करना अभिप्रेत है जिस का सामना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को करना पड़ रहा था। विरोधों के उस तूफ़ान का मुक़ाबला करने के लिए असाधारण साहस की आवश्यकता थी। ऐसे मौक़े पर यह इर्शाद कि कही अल्लाह की वहय की किसी हिदायत को तुम छोड़ न दो एक ताकीदी हुक्म है जिस से अभिप्रेत बाह्य संभावनाओं से नबी को आगाह करना है ताकि वह पूरी दृढ़ता और साहस के साथ रिसालत के दायित्व को निभाने में लग जाएँ।

13. क्या ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) ने इस को खुद गढ़ लिया है? कहो अगर तुम सच्चे हो तो इस जैसी दस सूरतें तुम भी बना कर लाओ और अल्लाह के सिवा जिन को तुम (सहायता के लिए) बुला सकते हो बुला लो।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيْنَ وَ
ادْعُوا مَنِ اسْتَعْظَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۳

14. लेकिन अगर वे तुम्हारी पुकार का जवाब न दें तो जान लो कि यह अल्लाह के ज्ञान से अवतरित हुआ है। और यह कि अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं है। फिर क्या तुम इस्लाम स्वीकार करते हो ²³?

فَاَلَمْ يَتَجَسَّوْا لَكُمْ فَاَعْلَمُوْا اَنَّمَا اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝۱۴

15. जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी और इस की शोभा के इच्छुक होते हैं हम उन के आमाल का पूरा पूरा बदला उन्हें यहीं चुका देते हैं और इस में उन के साथ कोई कमी नहीं की जाती ²⁴।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزَيْنٰهَا نُؤْتِ الْيَهُمُ اَعْمٰلَهُمْ
فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يَبْخُسُوْنَ ۝۱۵

16. लेकिन ऐसे लोगों के लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं। उन का किया कराया सब अकारथ जायेगा और उन के सारे कर्म बातिल (व्यर्थ) ठहरेंगे।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا
صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۱۶

17. क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से रौशन दलील रखता था फिर एक गवाह भी उस की तरफ़ से आ गया और इस से पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी (वह हक़ को कुबूल करने से इन्कार कर सकता है?) ऐसे लोग तो उस पर ईमान ही लाएंगे ²⁵। और जो गिरोह ²⁶ भी इस का इन्कार करेगा, तो दोज़ख़ वह ठिकाना है जिस का उस से वादा है। अतः तुम इस के बारे में किसी शक में न पड़ो ²⁷। यह हक़ (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ़ से लेकिन अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

اَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ وَيَتْلُوْهُ شٰهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ
قَبْلِهِ كِتٰبٌ مُّوسٰى اِمَامًا وَرَحْمَةً اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالْاَنَارُ مَوْعِدُهُ فَلَاتَكُ فِيْ مِرْيَةٍ
مِّنْهُ اِنَّهٗ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنْ اَكْثَرُ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝۱۷

18. और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो झूठ गढ़ कर अल्लाह से जोड़े ²⁸। ऐसे लोग अपने रब के समक्ष लाये जाएंगे और गवाह गवाही देंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने ने अपने रब पर झूठ बोला था। सुनो अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ
عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الشّٰهَادَةُ هٰؤُلَاءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى
رَبِّهِمْ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۸

23. जो लोग कुआन को अल्लाह की किताब स्वीकार नहीं करते थे बल्कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रचना बता रहे थे कुआन ने चैलेन्ज किया कि वे भी इस जैसा कलाम पेश करें। यह चैलेन्ज कुआन में कई जगहों पर किया गया है। इस आयत में दस सूरतें बना कर लाने का मुतालबा किया गया है और जब इस मुतालबा को वह पूरा न कर सके तो सूरह युनूस आयत ३८ में और फिर सूरह बकर: आयत २३ में एक सूरह पेश करने का मुतालबा किया गया साथ ही चैलेन्ज किया गया कि वे इस काम में सहायता के लिए अपने गढ़े हुए उपास्यों को बुलाएँ क्यों कि जब कुआन अल्लाह के सिवा सारे माबूदों और उपास्यों को ग़लत (बातिल) बताता है तो इन माबूदों और उपास्यों को--यदि वे वास्तव में खुदा हैं-- चाहिए कि इस मामले में अपने भक्तों की सहायता करें ताकि कुआन के अल्लाह का कलाम होने का दावा एवं उस की तौहीद की दअवत ग़लत साबित हो जाए। लेकिन जब पूरी क़ौम मिल कर भी कुआन का कोई उदाहरण प्रस्तुत न कर सकी और उन के उपास्य भी उन की मदद को न पहुँच सके तो साबित हो गया कि कुआन इन्सान का कलाम नहीं बल्कि अल्लाह का कलाम है वरना यह किस तरह संभव है कि एक आदमी के पेश किये गये कलाम का एक हिस्सा तक प्रस्तुत करने से पूरी क़ौम असमर्थ रह जाए? कोई व्यक्ति चाहे वह कितना ही बड़ा साहित्यकार हो कभी दावे के साथ यह बात नहीं कर सकता कि तमाम साहित्यकार मिल कर भी उस के जवाहर पारों में से कोई एक पारा भी नहीं लिख सकते। यह बात कुआन ही ने दावे के साथ कही है इस जैसा कलाम प्रस्तुत करने पर मनुष्य बिल्कुल असमर्थ है और इस दावे को अरब क़ौम ग़लत साबित न कर सकी। इस चैलेन्ज ने यह भी साबित कर दिखाया कि कुआन की तौहीद की दअवत बिल्कुल सत्य है क्योंकि यदि बहुत से खुदा होते जैसा कि बहुदेववादियों का दावा है तो वे अपने खुदा होने को सिद्ध करने के लिए अपने भक्तों की आवश्यक सहायता करते। और जब कुआन की यह दोनों बातें सच साबित हो गईं तो इस्लाम का सत्य धर्म होना भी सिद्ध हो गया है। इस के बाद इस्लाम को कुबूल करने में लोगों के लिए क्या चीज़ बाधक है?

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकर: नोट ३०)

24. अर्थात् जिन लोगों के सामने आखिरत नहीं बल्कि

केवल दुनिया होती है उन के कामों का फल उन्हें दुनिया ही में दिया जाता है। और ऐसा नहीं होता कि उन के कुफ़्र के कारण उन की भौतिक प्रगति रुक जाए। वे दुनिया के साधनों एवं माध्यमों के तहत जो काम भी करेंगे भौतिक नियमानुसार उस के परिणाम सामने आएंगे। किन्तु इनकी सारी भौतिक प्रगति, इन का धन दौलत, इन की दुनिया के ज्ञान विज्ञान एवं कला में निपुणता एवं दक्षता, इन के राजसी ठाठ और इन की प्रसिद्धि के डंके बस इस दुनिया ही में बजते रहेंगे और आखिरत में जहाँ हमेशा बाक़ी रहने वाला जीवन बिताना है, इन के कामों का फ़ल शून्य होगा। और नाकामी और ज़िल्लत (अनादर) के सिवा कोई चीज़ भी इन के हिस्सा में नहीं आएगी।

25. इस आयत में बैय्यिन: (रौशन दलील) से मुराद वह दलील है जो हर व्यक्ति की आत्मा में अपने रब (प्रभु) की पहचान, उस के समक्ष जवाबदेही की धारणा और अच्छाई और बुराई की परख के रूप में पाई जाती है। और “शाहिद” (गवाह) से मुराद कुआन है जिस ने इस फ़ितरी दलील का न केवल अनुमोदन एवं पुष्टि की बल्कि इस को पूरी तरह खोल कर बयान कर दिया। इस तरह जब हक़ खुल कर सामने आ गया तो इस का अनुमोदन इस बात से भी हुआ कि पहले से जो आसमानी किताब “तौरात” चली आ रही है वह बुनियादी तौर पर उन सच्चाइयों की ओर रहनुमाई करती है जिन सच्चाइयों को कुआन प्रस्तुत करता है। आयत का मतलब यह है कि जो व्यक्ति भी अपनी फ़ितरत (प्रकृति एवं स्वभाव) में पाई जाने वाली दलील पर जमा हो वह कुआन की दअवत में कोई अजनबियत और नयापन महसूस नहीं करेगा बल्कि उस को अपने स्वभावानुकूल पा कर स्वीकार करेगा। और इस से इन्कार का दुस्साहस वही करेगा जिस ने अपने मन एवं अपनी प्रकृति की आवाज़ को दबा दिया हो।

इस आयत से अपने आप यह बात स्पष्ट होती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी नियुक्त होने से पहले अपने सुस्वभाव एवं सुप्रकृति पर क़ायम थे। क्योंकि नबियों से बढ़ कर अपनी प्रकृति एवं स्वभाव पर दृढ़ रहने वाला और कौन हो सकता है।

26. चाहे वह धार्मिक गिरोह हो या अधर्मी।

27. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट १४५

28. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट १६९ में गुजर चुकी।



19. उन पर जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस को टेढ़ा करना चाहते हैं ²⁹। और जो आखिरत का बिलकुल इन्कार करते हैं।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ①

20. ये लोग ज़मीन में (अल्लाह के) क़ाबू से निकल जाने वाले न थे और न अल्लाह के सिवा कोई इन का सहायक था ³⁰। इन्हें दोहरा अज़ाब दिया जाएगा ³¹। ये न तो सुन सकते थे और न देख सकते थे। ³²

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ يُضَعِفُ لَهُمْ الْعَذَابَ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ②

21. यही लोग हैं जिन्होंने अपने को तबाही में डाला और जो कुछ इन्होंने गढ़ रखा था वो सब इन से खोया गया। ³³

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ③

22. निश्चित रूप से ये लोग आखिरत (परलोक) में सब से ज़्यादा तबाह हाल होंगे।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخِرُونَ ④

23. निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के आगे विनम्रता अपनाई ³⁴ वे जन्नत वाले हैं जिस में वे हमेशा रहेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑤

24. इन दोनों गिरोहों की मिसाल ऐसी है जैसे एक अन्धा बहरा ³⁵ और दूसरा देखने और सुनने वाला ³⁶। क्या दोनों का हाल एक जैसा हो सकता है ? फिर तुम लोग समझते क्यों नहीं ³⁷ ?

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرِ وَالسَّبْعِ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ ⑥

25. और हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा ³⁸। उस ने कहा, मैं तुम्हें साफ़ ख़बरदार करने वाला हूँ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِلَىٰ لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑦

26. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो ³⁹। मुझे तुम्हारे बारे में एक दर्दनाक दिन के अज़ाब की आशंका है ⁴⁰।

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ⑧

27. इस पर उस की क़ौम के बड़े लोगों ने जो काफ़िर थे कहा हम तो देखते हैं कि तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो। और यह भी देखते हैं कि तुम्हारे अनुयायी केवल वे लोग हो गए हैं जो हमारे अन्दर निम्न श्रेणी के थे और वह भी सतही सोच से ⁴¹। और हम अपने मुक़ाबले में तुम्हारे अन्दर कोई बड़ाई नहीं पाते बल्कि हम तो समझते हैं कि तुम झूठे हो।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرَكُ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا لَنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ⑨

29. इस की व्याख्या सूरह आले-इमरान नोट १२५ में गुजर चुकी ।

30. अर्थात् दुनिया में वे इस भुलावे में लिप्त रहे कि उन के ठहराए हुए अभिवाचक और सहायक उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सकते हैं। इस लिए उन्होंने ने नबियों की चेतावनियों का कोई असर कुबूल नहीं किया।

31. एक अज़ाब खुद गुमराह होने और दूसरा अज़ाब दूसरों को गुमराह करने का ।

32. अर्थात् अल्लाह का रसूल जो पैगाम प्रस्तुत कर रहा था उस को सुनने से उन्होंने अपने कान बन्द कर रखे थे और तौहीद और आखिरत की जो निशानियाँ कायनात में फैली हुई थीं उन को वे देख नहीं पाते थे क्योंकि उन्होंने ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध रखी थी।

33. अर्थात् जो उपास्य एवं पूज्य इन्होंने गढ़ रखे थे और जिन की मदद और सिफ़ारिश पर इन्हें भरोसा था वह सब ग़ायब हो गए और आज कोई नहीं जो अल्लाह के अज़ाब से इन को बचा सके।

34. अच्छे कर्मों के साथ विनम्रता का जो गुण बयान किया गया है वह इन कर्मों के वास्तविक अभिप्राय (Spirit) को स्पष्ट करता है। मतलब यह है कि अच्छे कर्म अथवा शिष्टाचार मात्र खानापूरी के लिए नहीं होने चाहिए बल्कि खुदा के समक्ष झुकाव, एवं विनम्र भाव के साथ होना चाहिए।

35. यह काफ़िर की मिसाल है जो अन्तरदृष्टि (बसीरत) से महरूम होता है।

36. यह मोमिन की मिसाल है जो बसीरत वाला होता है।

37. अर्थात् जब मोमिन और काफ़िर में बसीरत का अन्तर होता है तो दोनों को एक ही स्तर पर किस तरह रखा जा सकता है और फिर दोनों का अन्जाम एक जैसा किस तरह हो सकता है? इतनी मोटी बात भी तुम्हारी समझ में नहीं आती?

38. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ९५

39. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ९७ में गुजर चुकी।

40. दर्दनाक दिन के अज़ाब से मुराद क्रियामत के दिन का अज़ाब है और दिन को दर्दनाक (दुखद) कहना ऐसा ही है जैसे हम कहते हैं “मुसीबत का दिन” मतलब यह है कि क्रियामत का दिन काफ़िरों के लिए शोक, दुख और मुसिबत ही मुसीबत का दिन होगा।

41. नूह अलैहिस्सलाम पर जो लोग ईमान लाए थे वे उन काफ़िर सरदारों की दृष्टि में इस लिए तुच्छ एवं निम्न श्रेणी के थे कि वे उन की तरह न भौतिक साधन रखते थे और न समाज में प्रभाव, हालाँकि वे भलाई प्रिय होने के नाते समाज के बेहतरीन लोग थे। और चूँकि उन्होंने ने हक़ (सत्य) को सामने स्पष्टतः देख लेने के बाद उस को स्वीकार करने में संकोच नहीं किया इस लिए उन पर आपत्ति व्यक्त करने वाले उन के फैसले को सतही सोच का नतीजा बता रहे हैं हालाँकि यह ईमान वालों की बेलाग सत्यप्रियता थी। मगर उन की यह खूबियाँ उन घमण्डियों एवं अहंकारियों की नज़र में ऐब (दोष) बन गई थी। शायद ऐसे ही अवसर के लिए किसी शायर ने कहा है।

ऐबों में गिने जाते हैं मुफ़लिस के हुनर भी



28. उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम ने यह भी सोचा कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हूँ और उस ने अपनी ख़ास रहमत से मुझे नवाज़ा हो मगर वह तुम्हें दिखाई न दे रही हो तो क्या हम ज़बरदस्ती तुम पर चिपका दें जब कि वह तुम्हें अति अप्रिय है? ⁴²

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَأَنْشَأْتُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِي فَعَمِيَّتْ عَلَيْكُمْ أَنْزِلُكُمْ مَّوْهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كَرِهُونَ ﴿٢٨﴾

29. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं इस पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा अन्न (बदला) अल्लाह ही के ज़िम्मे है ⁴³। और मैं उन लोगों को धुत्कारने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं। वे अपने रब से मिलने वाले हैं। लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जिहालत में लिप्त हो। ⁴⁴

وَيَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَأَن أُجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُلْقَوَاءُ رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾

30. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अगर मैं इन को धुत्कार दूँ तो अल्लाह की पकड़ से कौन मुझे बचाएगा ⁴⁵? क्या यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती।

وَيَقَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾

31. मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न ही मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता हूँ और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ और न मैं यह कह सकता हूँ कि जो लोग तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं उन को अल्लाह ख़ैर (भलाई) से नहीं नवाज़ेगा। उन के दिलों का हाल अल्लाह ही बेहतर जानता है। अगर मैं ऐसी बात कहूँ तो ज़ालिम हूँगा ⁴⁶।

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِيَ خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

32. उन्होंने कहा ऐ नूह ! तुम ने हम से बहस की और बहुत बहस कर ली। अब वह चीज़ हम पर ले आओ जिस से हमें डराते हो ⁴⁷ अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوا يُونُسُ فَدَّ جَادِلْنَا فَكُفِّرَتْ بَدَلْنَا فَالْتَبَا بِمَا تَعِدُكَ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾

33. उस ने जवाब दिया वह तो अल्लाह ही तुम पर लाएगा अगर चाहेगा और तुम्हारे बस में नहीं है कि उस को रोक सको।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

34. और मेरी नसीहत तुम्हारे लिए कुछ लाभदायक नहीं हो सकती अगर मैं नसीहत करना चाहूँ जब कि अल्लाह तुम को गुमराह करना चाहता हो ⁴⁸। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ तुम को पलटना है।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

42. यह एतिराज करने वालों के पहले एतिराज का जवाब है। नूह अलैहिस्सलाम के इर्शाद का मतलब यह है कि मैं जो तौहीद की दअवत पेश कर रहा हूँ उस की गहरी जड़ें मानव स्वभाव में विद्यमान हैं। मैं इसी स्वभाविक दलील और मन की दृष्टि के साथ दृढ़ था। इस के बाद अल्लाह तआला ने मुझ पर यह मेहरबानी की कि नुबुव्वत के मंसब पर मुझको पदासीन किया जिस को हर वह व्यक्ति देख सकता है जिस के पास बसीरत की आँख हों। अब अगर तुम ने अपनी आँखे फोड़ डाली हों तो तुम इस का अनुभव किस तरह कर सकते हो। ऐसी सूरत में क्या हम हक़ (सत्य) तुम पर ज़बरदस्ती थोप दें?

43. नबी, अल्लाह का पैगाम लोगों तक पहुँचाने और उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाने की जो ख़िदमत अन्जाम देते हैं उस पर वे उन से कोई मुआवज़ा नहीं माँगते और न उन के सामने कोई अपना स्वार्थ होता है। बल्कि यह सेवा वे निःस्वार्थ हो कर अन्जाम देते हैं। उन का यह खुलूस यह निःस्वार्थता उन्हें ज्योतिषियों, कवियों और स्वार्थी लोगों से बिल्कुल अलग और प्रमुख कर देता है।

44. यह उन के दूसरे एतिराज का जवाब है। नूह अलैहिस्सलाम ने दो टूक अन्दाज़ में फ़रमाया कि मैं तुम्हारी खातिर अपने साथियों को जो ईमान लाए हैं छोड़ने वाला नहीं। यदि वे तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ और निम्न हैं तो यह तुम्हारी जिहालत का फैसला है वरना सच्चे ज्ञान का प्रकाश तो आदमी को उन लोगों के सम्मान एवं प्रतिष्ठा से परिचित करा देता है जो सत्य को स्वीकार कर लेते हैं। और इस बात का आख़िरी फैसला अल्लाह के यहाँ होना है कि कौन किस सम्मान का हक़दार है। इन ईमान वालों की सही प्रतिष्ठा अल्लाह के यहाँ ही सुनिश्चित होगी जब कि वे उस से मिलेंगे।

45. नूह अलैहिस्सलाम के इर्शाद से हमें यह रहनुमाई मिलती है कि एक सत्य की ओर निमंत्रण देने वाला ग़ैर

मुस्लिमों को खुश करने के लिए मुसलमानों से अलग नहीं हो सकता।

46. यह उन के तीसरे एतिराज का जवाब है अर्थात् उस एतिराज का कि हम अपने मुकाबले में तुम में कोई बड़ाई नहीं पाते। नूह अलैहिस्सलाम ने इस के जवाब में जो कुछ फ़रमाया उस का सार यह है कि मैं ने बशरिय्यत से (इन्सान होने से) उच्चतम होने का दावा ही कब किया है। मैं जिस बात का दावेदार हूँ वह सिर्फ़ यह है कि अल्लाह ने अपना पैगाम पहुँचाने के लिए मुझे रसूल नियुक्त किया है और यह निश्चय ही एक प्रमुख चीज़ है। रहे मेरे साथी ईमान वाले, तो इन के दिलों का हाल अल्लाह ही बेहतर जानता है अगर वे वास्तव में मोमिन हैं तो अल्लाह इन्हें ज़रूर भलाई से नवाज़ेगा। मैं कैसे कह सकता हूँ कि वे अल्लाह की दृष्टि में भाग्यवान नहीं ठहरेंगे और यदि वे भाग्यवान ठहरते हैं तो इस से बढ़ कर बड़ी एवं श्रेष्ठ बात और क्या हो सकती है। तुम दुनिया की दौलत को बड़ाई और श्रेष्ठता का आदर्श मानते हो हालाँकि वास्तव में बड़ाई का आदर्श ईमान की दौलत है।

नूह अलैहिस्सलाम के इस बयान से कि दिलों का हाल अल्लाह ही बेहतर जानता है यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि लोगों के दिलों का हाल एक नबी को भी मालूम नहीं होता तो यह तो और भी अजीब बात होगी कि वलियों और बुजुर्गों को मालूम हो। और जब एक नबी अपनी जिन्दगी में दिलों का हाल नहीं जानता तो अपनी वफ़ात (इन्तिक़ाल) के बाद किस तरह जान सकता है? यह बात बुजुर्ग परस्ती और कब्र परस्ती की जड़ काट देती है।

47. अर्थात् अल्लाह का अज़ाब।

48. अर्थात् अल्लाह के गुमराही में डाल देने वाले नियम के अनुसार अगर तुम पर हिदायत के दरवाज़े बन्द हो गए हों तो मेरे भला चाहने और नसीहत करने का तुम पर कोई असर नहीं हो सकता।



35. क्या ये कहते हैं कि इस ने इस को गढ़ लिया है ⁴⁹? कहो अगर मैं ने इस को गढ़ा है तो मेरे जुर्म की ज़िम्मेदारी मुझ पर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो उस से मैं बरी हूँ ⁵⁰।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي وَإِنَّا بِرَبِّي لَمَّا تَجْرُمُونَ ﴿٥٠﴾

36. और नूह पर वह्य की गई कि तुम्हारी क़ौम में से जो लोग ईमान ला चुके हैं। उन के सिवा अब कोई और ईमान लाने वाला नहीं। तो ये जो कुछ कर रहे हैं उस पर ग़म न खाओ।

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٥١﴾

37. और हमारी निगरानी में और हमारी वह्य के अनुसार नाव बनाओ ⁵¹ और इन ज़ालिमों के बारे में अब मुझ से कुछ न कहो। ये डूबने वाले हैं ⁵²।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿٥٢﴾

38. और वह नाव बनाने लगा। जब उस की क़ौम के धनवान उस के पास से गुज़रते तो उस का मज़ाक उड़ाते ⁵³। वह जवाब देता अगर तुम हम पर हँस रहे हो तो हम भी इसी तरह तुम पर हँसेंगे ⁵⁴।

وَيَصْنَعِ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٥٣﴾

39. अतिशीघ्र तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किन लोगों पर वह अज़ाब आता है जो उन्हें रूसवा (निन्दित) कर के रख देगा। और वह अज़ाब टूट पड़ता है जो क़ायम रहने वाला होगा ⁵⁵।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٥٤﴾

40. यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तनूर उबल पड़ा ⁵⁶ तो हम ने कहा हर क्रिस्म के नर और मादा का जोड़ा इस में सवार करा लो ⁵⁷ और अपने घर वालों को भी सिवाय उन के जिन के बारे में हमारा फ़रमान पहले ही आ चुका है ⁵⁸। एवं उन लोगों को भी सवार करा लो जो ईमान ला चुके हैं ⁵⁹। और उस के साथ ईमान लाने वाले थोड़े ही लोग थे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٥٥﴾

41. और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ। अल्लाह ही के नाम से है उस का चलना और उस का ठहरना ⁶⁰। मेरा रब बड़ा बख़्शने (क्षमा) वाला दया फ़रमाने वाला है।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ جَرِّهَا وَرُمْسَهَا إِنَّا رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٦﴾

49. यह जुमला-ए-मोतरिजा (व्यवहित वाक्य) है अर्थात् असल बात को रोक कर मौक़े के लिहाज़ से कुरैश के इस इल्जाम का जवाब दिया गया है जो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लगाते थे कि यह कुआन आप ने गढ़ा है और इस में जो क्रिस्से पेश किये जा रहे हैं वे मात्र आदिकालिक कथाएँ हैं।

50. अर्थात् अगर मैं ने इस कुआन को गढ़ा नहीं है-- और वास्तविकता यही है कि मैं ने गढ़ा नहीं है-- तो तुम्हारे इस जुर्म का ववाल तुम ही पर है कि खुदा की नाज़िल की हुई किताब को तुम ने मेरी मन गढ़त किताब क्रार दे कर झुठलाया।

51. अर्थात् हम इस बात की निगरानी करेंगे कि ये काफ़िर तुम्हें नाव बनाने से रोक न सकें। रही नाव की बनावट तो वह ठीक अल्लाह की आज्ञा के अनुकूल होनी चाहिए ताकि वह उस तूफ़ान में जो ज़बरदस्त सैलाब के रूप में आने वाला है तुम्हारी सुरक्षा का साधन बन सके।

बाईबिल में “उत्पत्ति” अध्याय ६ में इस नाव की साइज आदि की तफ़सील बयान हुई है कि वह एक असाधारण और जहाज़ जैसी नाव थी।

52. अर्थात् इन काफ़िरों के बारे में कोई सिफ़ारिश न करो। इन पर से अज़ाब टलने वाला नहीं। अल्लाह तआला यह फैसला फ़रमा चुका है कि वह इस सैलाब में डूब कर रहेंगे।

53. जब नूह अलैहिस्सलाम नाव बनाने लगे तो विरोध करने वाले यह देख कर कि एक बहुत बड़ी नाव थल पर बनाई जा रही है मज़ाक़ उड़ाने लगे। वे इस बात की कल्पना मात्र को तैयार न थे कि एक तूफ़ानी सैलाब आ सकता है जिस में नूह की नाव ही मुक्ति नौका बन सकती है। उन्होंने ने इस को मज़हबी जुनून बताते हुए यह फ़वती कसी होगी कि अब ये लोग थल में नाव चलाना चाहते हैं।

54. अर्थात् आज तुम हमें दीवाना समझ कर हँस रहे हो हम कल (आख़िरत में) तुम्हारी दीवानगी पर हँसेंगे। किसी मुजरिम की गिरफ़्तारी पर आदमी इल्मीनान की साँस लेता है उस के अपराधिक कुकृत्यों पर जिस ने उसे बुरे अन्जाम तक पहुँचाया, स्वाभाविक रूप से हँसी आती है। उसी तरह आख़िरत में खुदा के बाग़ियों और फ़सादियों की पकड़ पर ईमान लाने वालों का हँसना बिल्कुल स्वाभाविक है।

55. एक अज़ाब दुनिया में और दूसरा आख़िरत में।

56. हमारे नज़दीक़ इस का सही भावार्थ वही है जो इब्ने ज़रीर तबरी ने बयान फ़रमाया है। वह फ़रमाते हैं कि “तनूर से मुराद वही तनूर है जिस में रोटियाँ पकाई जाती हैं। क्यों कि

अरब के साहित्य में यही प्रचालित है और अल्लाह के कलाम के सही भावार्थ तक उसी सूरत में पहुँचा जा सकता है जब किसी शब्द का वह मतलब लिया जाए जो अरबों के यहाँ संभावित एवं प्रसिद्ध हैं।” (जामिउल-बयान जिल्द १२ पृष्ठ २५)

गोया एक तनूर चिन्ह के तौर पर निश्चित किया गया था कि जब यह उबल पड़ेगा तो समझ लेना कि तूफ़ान की शुरुआत हो गई और नाव में सवार हो जाना।

57. हर क्रिस्म के जानवरों से मुराद वे जानवर हैं जो इन्सान की किसी न किसी ज़रूरत को पूरा करते हैं। चूहे और साँप जैसी चीज़ें मुराद नहीं हैं।

हर जानवर का एक एक जोड़ा नाव में रख लेने का हुक्म इस लिए दिया गया ताकि तूफ़ान के बाद इन का वंश बाक़ी रह सके। अगर यह व्यवस्था न की जाती तो तूफ़ान के समाप्त हो जाने पर दूर दूर तक किसी जानवर के मौजूद न होने के कारण उन लोगों को जो नाव में बचा लिया गये थे, रोज़ाना की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता। नाव में जानवरों के रख लेने का वर्णन तौरात में भी है (देखिए उत्पत्ति अध्याय ६)

58. अर्थात् तुम्हारे खानदान के वे सदस्य नहीं जो काफ़िर हैं।

59. मालूम हुआ कि नाव में केवल नूह के घर वाले ही सवार नहीं हुए थे बल्कि उन के साथ दूसरे वे लोग भी सवार हुए थे जो नूह पर ईमान लाए थे। अलबत्ता उन सब की तादाद कम थी।

60. यह अल्लाह के फ़ज़ल अर्थात् उदार अनुग्रह और उस के सामर्थ्य पर दृढ़ विश्वास की अभिव्यक्ति है। अर्थात् यह नाव अल्लाह ही के चलाने के चलेगी और एक ऐसे तूफ़ान में जो इन्सानी बस्तियों के लिए मौत का पैग़ाम ले कर आया हो और एक ऐसे सैलाब में जो चारों तरफ़ विनाशकारी का सामान करते हुए उमड़ा चला आ रहा हो, उस नाव का चलना सरासर अल्लाह का फ़ज़ल होगा ! इसी तरह जब वह नाव ठहरेगी और हम सलामती के साथ उतरेंगे तो यह भी उस की कुदरत और उस के फ़ज़ल का नतीजा होगा।

इस आयत से एक यह बात भी स्पष्ट होती है कि बिस्मिल्लाह वह प्राचीनतम वाक्य (कलिमा) है जो नूह अलैहिस्सलाम की ज़बान से अदा हुआ था और बड़ा बरकत वाला साबित हुआ। कुआन ने इस कलिमे को ख़ैर और भलाई का स्रोत बताया है। अतः अल्लाह के कलाम की शुरुआत इसी बरकत के कलिमे (प्रवचन) से हुई है।



42. और नाव पहाड़ों की तरह उठने वाली मौजों के बीच उन को ले कर चल रही थी ⁶¹ और नूह ने अपने बेटे को जो इस से अलग था पुकार कर कहा ऐ मेरे बेटे हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न रह ⁶²।

وَهُى تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ تَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ
وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبْنَىٰ اِرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٢﴾

43. उस ने कहा मैं किसी पहाड़ पर पनाह ले लूँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा आज अल्लाह के हुक्म से कोई चीज़ बचाने वाली नहीं सिवाय इस के कि वही किसी पर दया करे। इतने में एक मौज दोनों के बीच आ गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया ⁶³।

قَالَ سَأُوۡدِيٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعَصِمُنِي مِنَ الْمَآءِ ۚ قَالَ لَقَدْ اَمَرَ
الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَآ اٰمَنُ رَّحِمًا ۚ وَحَالٌ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ
مِنَ الْمُغْرَقِيۡنَ ﴿٦٣﴾

44. और हुक्म हुआ कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। अतः पानी उतर गया और फ़ैसला चुका दिया गया ⁶⁴ और नाव जूदी पर जा लगी ⁶⁵ और कहा गया दूर हुई ज़ालिम क्रौम ⁶⁶।

وَقِيلَ يَا اَرْضُ ابْلَعِي مَآءَكَ وَيسٰٓءِلُ اَقْلَامُۢمُ الْغَيْۡصِ الْمَآءِ
وَقُصِيَ الْاَمْرُ وَاَسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعۡدُ لِلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٦٤﴾

45. और नूह ने अपने रब को पुकारा। कहा ऐ मेरे रब ! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों में से है और तेरा वादा सच्चा है और तू तमाम हाकिमों से बढ़कर हाकिम है।

وَتَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيۡ مِنْ اَهْلِيۡ وَاِنَّ
وَعَدَكَ الْحَقُّ ۖ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحَكَمِيۡنَ ﴿٦٥﴾

46. फ़रमाया ऐ नूह वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं है। वह कुचरित्र है ⁶⁷ अतः जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान नहीं उस के लिए मुझ से प्रार्थना न करो। मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि जाहिलों में से न हो जाओ ⁶⁸।

قَالَ يٰۤنُوحُ اِنَّهُ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيۡرُ صَالِحٍ فَلَا
تَسۡئَلُنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ ۚ عَلٰمُۢمُ اٰنِيۡ اَعْطٰكَ اَنْ تَكُوۡنَ مِنَ
الْجٰهِلِيۡنَ ﴿٦٦﴾

47. उस ने निवेदन किया ऐ मेरे रब ! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस से कि तुझ से किसी ऐसी चीज़ की प्रार्थना करूँ जिस का मुझे ज्ञान नहीं। अगर तूने मुझे क्षमा न किया और मुझ पर दया न की तो मैं तबाह हो जाऊँगा ⁶⁹।

قَالَ رَبِّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِكَ اَنْۢ اَسۡئَلَكَ مَا لَيْسَ لِیۡ بِهٖ ۚ عَلٰمُۢمُ الْاِ
تَغۡفِرۡ لِیۡ وَتَرْحَمۡنِیۡ ۚ اَکُنۡ مِنَ الْخٰسِرِيۡنَ ﴿٦٧﴾

48. हुक्म हुआ ऐ नूह उतर जाओ। हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ ⁷⁰। तुम पर भी और उन उम्मतों (गिरोहों) पर भी जो तुम्हारे साथ हैं। और कुछ उम्मतें ऐसी भी होंगी जिन को हम लाभ पहुँचाएँगे फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा ⁷¹।

قِيلَ یٰۤنُوحُ اهْبِطۡ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَکٰتِ عَلَیۡكَ وَعَلٰی اُمَمٍ
مِّنۢ مَّعٰکَ ۚ وَاُمَمٌ سَبَّخۡتَهُمۡ ثُمَّ یَسۡتَعِیۡذِبُہُمۡ مِّنَّا عَذَابَ اَلِیۡمٍ ﴿٧١﴾

61. पहाड़ की तरह मौजें समुद्री तूफान ही में उठ सकती हैं। इस से अन्दाज़ा होता है कि उस इलाके में जहाँ नूह की क़ौम आबाद थी कितना भयंकर तूफान आया होगा। नूह की क़ौम दजला नदी के किनारे आबाद थी (देखिए पहली जिल्द पर नक्शा पृष्ठ ५३१) और यह भूभाग दजला और फ़रात नदी के मध्य स्थित है। यह दोनों नदियाँ अरारात पर्वत से निकलती हैं और दक्षिण की तरफ़ एक दूसरे से जा मिलती हैं और आगे जा कर समुद्र में जा गिरी हैं। गोया उस इलाके ने एक द्वीप का रूप धार लिया है। इस लिए यह असंभव नहीं कि एक असाधारण सैलाब के उमड़ आने से यह पूरा क्षेत्र समुद्र बन गया हो और तूफानी हवाओं के चलने से उस में विद्वेग की ऐसी दशा उत्पन्न हो गई हो कि पहाड़ों जैसी मौजें उठने लगी हों।

62. नूह का एक बेटा काफ़िरों में शामिल था इस लिए वह नाव में सवार नहीं हुआ था। नूह ने उस को उस समय भी नसीहत की जब कि वह तूफान में घिर गया था और उस के और मौत के बीच कुछ मिनटों का फ़ासला रह गया था।

63. अल्लाह के न्याय का नियम जब हरकत में आया तो उस ने एक पैग़म्बर के बेटे को भी नहीं बख़्शा क्योंकि कि बेटा काफ़िर था और काफ़िरों के लिए अज़ाब सुनिश्चित था। नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी आँखों से अपने बेटे का अन्जाम देख लिया। अगर वह ईमान लाता तो उस का यह अन्जाम न होता।

64. अर्थात् हक़ और बातिल का फ़ैसला ज़मीन पर ही चुका दिया गया। सत्य पर दृढ़ रहने वाले बचा लिये गए और असत्य की गंदगी से ज़मीन पाक कर दी गई।

यह तूफान साधारण रूप की घटना नहीं थी बल्कि एक असाधारण घटना एवं एक ऐसा भयंकर तूफान था जो सिवाय उन लोगों के जो एक खुदा पर ईमान ला कर नूह अलैहिस्सलाम के साथ नाव में सवार हुए थे, सारी इन्सानी आबादी को बहा ले गया। एक ऐसा सैलाब जिस ने पहाड़ों को जा लिया और जिस में पहाड़ के बराबर मौजें उठ रही थी, एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। और चूँकि नूह अलैहिस्सलाम ने इस की पूर्व सूचना दी थी और जिस तरह सूचना दी थी ठीक ठीक उसी के अनुकूल वह घटना घटी। इस लिए साबित हुआ कि यह अल्लाह का प्रकोप था जो काफ़िरों पर उतरा था और यह कि नूह सच्चे रसूल थे और उन्होंने तौहीद की जो दअवत पेश की थी वह सत्य की दअवत थी।

65. जूदी एक पर्वत का नाम है जो कुर्दिस्तान में स्थित है (देखिए पहली जिल्द पर नक्शा पृष्ठ ५३१) यह अरारात पर्वत का ही एक हिस्सा है जो अर्मीनिया से कुर्दिस्तान तक फैला हुआ है। नूह की नाव जहाँ टिक गई थी उस का नाम बाइबिल में अरारात आया है (देखिए उत्पत्ति ८:४) मगर कुर्आन ने साफ़

साफ़ बताया है कि वह स्थान जूदी था। तूफान के बाद निवास के लिए जूदी का क्षेत्र ही उचित रहा होगा।

स्पष्ट रहे कि इस तूफान के बारे में कुर्आन ने यह कहीं नहीं कहा है कि यह पूरी धरती पर आया था। बल्कि कुर्आन जिस बात की पुष्टि करता है वह यह है कि जो लोग नाव में बचा लिए गए थे उन ही से इन्सानी नस्ल का सिलसिला चलता रहा। इस का मतलब यह है कि उस समय इन्सानी आबादी एक विशेष भूभाग से आगे नहीं बढ़ सकी थी। इस लिए उस भूभाग पर जो तूफान आया उस ने पूरी इन्सानी आबादी को डूबो दिया सिवाय उस मोमिन गिरोह के जिस को नाव में पनाह मिल गई थी।

66. अर्थात् अल्लाह की रहमत उस की दया से दूर हो गई और उस की लानत के योग्य ठहरी।

67. इस का यह मतलब नहीं कि वंशावली की दृष्टि से वह तुम्हारा (नूह का) बेटा नहीं है बल्कि मतलब यह है कि वह बिगड़े कर्म का व्यक्ति है इस लिए वह तुम्हारा बेटा कहलाए जाने के योग्य नहीं है। यह ऐसी ही बात है जैसे कोई बाप अपने नालायक बेटे से कहे, तू मेरा बेटा नहीं है। ज़ाहिर है ऐसे मौके पर शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं होते।

68. इस आयत से स्पष्ट हुआ कि नूह अलैहिस्सलाम को मालूम नहीं था कि उन का बेटा बिगड़े हुए चरित्र का और काफ़िरों से मिला हुआ है। इस लिए अपने बेटे को डूबते हुए देख कर अल्लाह तआला से फ़रियाद की।

मालूम होता है कि बेटा खुला काफ़िर नहीं था बल्कि अपने कुफ़्र को छिपाये हुए था। यही कारण है कि नूह अलैहिस्सलाम ने उस को नाव में सवार होने का निमंत्रण दिया। और उस अवसर पर उस से संबोधित हो कर यह नहीं फ़रमाया कि “काफ़िरों में न हो जा” बल्कि फ़रमाया “काफ़िरों के साथ न रहा” और चूँकि अल्लाह तआला का वादा था कि वह उन के घर वालों को बचा लेगा इस लिए वह अपने बेटे के बारे में अल्लाह तआला से फ़रियाद कर बैठे। मगर अल्लाह तआला ने इन्हें सावधान किया कि तुम्हें वास्तविकता का ज्ञान नहीं है और ऐसी सूरत में मात्र भावुकता से प्रेरित हो कर फ़रियाद करना सही नहीं जब कि तुम्हारे घर वालों के सिलसिले में पहले ही यह अपवाद कर दिया गया था “सिवाय उन के जिन के बारे में हमारा फ़रमान पहले ही आ चुका है” अर्थात् तुम्हारे घर वालों में से भी वे सदस्य नहीं बचा लिए जाएंगे जो ईमान नहीं रखते।

यही भूल थी जो नूह अलैहिस्सलाम से हुई। वरना यह जानते हुए कि उन का बेटा वास्तव में काफ़िर है वह अल्लाह तआला से किस तरह फ़रियाद करते। मगर चूँकि उस अवसर पर जब कि अल्लाह तआला के न्याय का नियम बेलागू लागू हुआ, नूह अलैहिस्सलाम का न जानने के कारण अपने बेटे के पक्ष में

फ़रियाद करना एक नबी की शान के अनुकूल न था। इस लिए अल्लाह तआला ने इस पर उन्हें सचेत किया।

69. अल्लाह तआला के सचेत करने पर जब नूह अलैहिस्सलाम को यह एहसास हुआ कि उन का सवाल मुनासिब नहीं था तो उन्होंने ने तुरन्त क्षमा और दया की प्रार्थना की और जिस अन्दाज़ से की वह उन के खुलूस और उन की सत्यता का स्पष्ट प्रमाण है।

70. सलामती अर्थात् सुकून, शान्ति और बरकत अर्थात् वह भलाई जो जारी रहे।

71. नूह अलैहिस्सलाम के साथ जो लोग नाव में सवार हुए

थे वे तादाद में यद्यपि थोड़े थे मगर पूरे इन्सानी सोसाइटी का यह मख़्खन था जो छट कर आ गया था और दुनिया की नस्लें और क़ौमों इन ही से अस्तित्व में आने वाली थी। गोया नौका के यह सवार जिन के अन्दर वह अदृश्य शक्ति विद्यमान थी जो क़ौमों और मिल्लतों को अपने अन्दर लिये हुए थी इसी वास्तविकता की ओर इशारा करते हुए फ़रमाया गया है जो उम्मतें तुम्हारे साथ हैं उन पर भी सलामती और बरकतें हों लेकिन कितनी ही उम्मतें ऐसी भी होंगी जो सलामती की हक़दार नहीं ठहरेंगी। उन्हें दुनिया की धन सामाग्री तो दी जाएगी लेकिन आख़िरकार उन्हें अपने कर्मों के बदले में अज़ाब भुगतना होगा।



और आद की तरफ़ हम ने उन के भाई हूद को भेजा। उस ने कहा ऐ मेरी क्रौम के लोगो। अल्लाह की इबादत करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं। निरा झूठ है जो तुम ने गढ़ रखा है। लोगो ! इस (ख़िदमत) पर मैं तुम से कोई अज़्र (मज़दूरी) नहीं माँगता। मेरा अज़्र तो उस के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया है। फिर क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते । (अल-कुर्आन)

49. यह ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वही कर रहे हैं। इस से पहले न तुम इन को जानते थे और न तुम्हारी क़ौम ⁷²। तो सब करो, अन्तिम परिणाम भय रखने वालों (मुत्तकियों) ही के लिए है ⁷³।

تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٧٩﴾

50. और आद की तरफ़ हम ने उन के भाई हूद को भेजा। ⁷⁴ उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं। निरा झूठ है जो तुम ने गढ़ रखा है ⁷⁵।

وَإِلَى عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

51. लोगो ! इस (ख़िदमत) पर मैं तुम से कोई अज़्र (मज़दूरी) नहीं माँगता। मेरा अज़्र तो उस के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया है। फिर क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते ⁷⁶।

يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

52. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अपने रब से क्षमा माँगो फिर उस की तरफ़ पलटो ⁷⁷ वह तुम पर ख़ूब बरसने वाले बादल भेजेगा और तुम्हारी शक्ति में अतिरिक्त शक्ति की वृद्धि करेगा ⁷⁸। और (देखो) अपराधी बन कर मुँह न फेरो।

وَلْيَقُومُوا اسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ ثُمَّ نُوثُوا إِلَيْهِ يَرُسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

53. उन्होंने कहा “तुम कोई खुली निशानी तो ले कर हमारे पास आए नहीं ⁷⁹ और तुम्हारे कहने से हम अपने उपास्यों को छोड़ने वाले नहीं और हम किसी तरह तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

54. हम तो कहते हैं कि हमारे उपास्यों में से किसी की मार तुम पर पड़ गई है ⁸⁰। उस ने कहा मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम गवाह रहो कि मैं उन से बिलकुल बेज़ार हूँ। जिन को तुम ने साझीदार ठहरा रखा है।

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرِكَ بِعُضِّ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدْ وَأَنَا رَبِّي مِمَّا شِرْكُكُمْ ﴿٥٤﴾

55. सिवाय उस (एक ख़ुदा) के। अतः तुम मेरे विरुद्ध कार्रवाई कर के देखो और मुझे तनिक मुहलत न दो।

مِنْ دُونِهِ فَيَكِيدُونَنِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا يَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾

56. मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिस की चोटी वह पकड़े हुए न हो ⁸¹। निस्संदेह मेरा रब सीधे मार्ग पर है ⁸²।

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ اخَذَ بِهَا صَبِيبًا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

72. नूह अलैहिस्सलाम का जो वृत्तांत कुर्आन में बयान हुआ है, उस का ज्ञान इस से पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं था। अतः कुर्आन के अवतरण से पहले आप ने यह क्रिस्सा कभी किसी को नहीं सुनाया और आप की क्रौम भी अनभिज्ञ थी। रहे अहले-किताब तो बाइबिल की किताब उत्पत्ति अध्याय (८, ९, १०) में इस वृत्तांत के कुछ अंश बयान हुए हैं मगर वह भी विकृत हालत में। और इस क्रिस्से के महत्वपूर्ण पहलूओं का तो उस में कोई वर्णन ही नहीं है। मिसाल के तौर पर यह बात कि नूह अलैहिस्सलाम की दअवत क्या थी? विरोधियों के एतिराज क्या क्या थे? नूह अलैहिस्सलाम ने उन का क्या जवाब दिया? अज़ाब आने से पहले उन्होंने अपनी क्रौम को उस से किस तरह आगाह किया था? नूह के बेटे के डूबने का क्रिस्सा, नूह अलैहिस्सलाम की फ़रियाद पर अल्लाह तआला की तम्बिह और नूह अलैहिस्सलाम का तौबा करना, अगली नस्लों के साथ अल्लाह तआला जो मामला फ़रमाएगा उस से आगाही। इन तमाम पहलूओं से बाइबिल का क्रिस्सा खाली है। अलबत्ता इस में नाव की लम्बाई चौड़ाई विस्तार से बयान हुई है एवं बाइबिल में जहाँ नूह को खुदा की नज़र में खरा और धर्मी पुरुष कहा गया है (उत्पत्ति अध्याय ६, ८, ९) वहाँ ऐसी बातें भी उन से सम्बन्धित बताई गई हैं जो उन के चरित्र को कलंकित करने वाली हैं। (उत्पत्ति अध्याय ९, २०, से २५) लेकिन कुर्आन ने छोटी छोटी बातों से अलग वे वास्तविकताएँ प्रस्तुत कर दीं जो इस वृत्तांत की जान थी। इन वास्तविकताओं को इस दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया गया है कि दिलों में विश्वास का भाव पैदा हो जाता है। क्या इस इतिहासिक घटना का इन लुप्त वास्तविकताओं के साथ एक उम्मी (अन्यढ़) की ज़बान से अदा हो जाना उस के पैगम्बर होने और कुर्आन के अल्लाह का कलाम होने का स्पष्ट प्रमाण नहीं है?

73. अर्थात् इस स्पष्ट दलील के बाद भी अगर तुम्हारी क्रौम तुम को झुठलाती है तो सब्र करो। अन्जाम उन ही लोगों का अच्छा होगा जो अल्लाह से डरने वाले हैं। और कुर्आन की यह बात दुनिया में भी शब्द शब्द पूरी हुई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों को सच्ची इज़्ज़त और बुलन्दी नसीब हुई और जिन लोगों ने आप को झुठलाया था वे अपमान की मौत मरे और उन का नाम व निशान तक बाक़ी नहीं रहा। रसूल और उस के साथियों की कामयाबी का यह दृश्य तो लोगों ने दुनिया में देख लिया और अभी आख़िरत बाक़ी है।

74. आद क्रौम का वृत्तांत सूरह आराफ़ ६८ से ७२ तक

की आयतों में गुज़र चुका। इस मौक़े पर ये आयतें और इन की व्याख्या के नोट १०५ से ११४ एवं सूरह फ़ज्र की ६ से ८ तक की आयतें और उन की व्याख्या के नोट ८ से ११ सामने रहें।

75. अर्थात् अल्लाह के सिवा जिन को तुम ने उपास्य बना रखा है वे तुम्हारे मन गढ़न्त खुदा हैं।

76. बुद्धि से काम लेने और इच्छाओं के पीछे चलने में बड़ा अन्तर है। पहली चीज़ बसीरत है और दूसरी चीज़ जिहालत।

77. इस की व्याख्या नोट ८ में गुज़र चुकी।

78. अर्थात् तौहीद को कुबूल करने और अल्लाह की ओर पलटने की सूरत में वह तुम्हें अतिरिक्त नेमतों से पुरस्कृत करेगा। रोज़ी भी ख़ूब मिलेगी और सामाजिक सम्मान एवं शक्ति में भी वृद्धि होगी। मतलब यह है कि क्रौमी और समाजिक स्तर पर इस के अच्छे परिणाम निकलेंगे।

स्पष्ट रहे कि तौहीद की दअवत को प्रस्तुत करते हुए उस के सांसारिक परिणामों का वर्णन मात्र सांकेतिक है न कि वास्तविक सफलता की हैसियत से, क्योंकि वास्तविक सफलता जिस को सारे नबी जीवन का लक्ष्य बनाने का न्योता देते रहे हैं वह आख़िरत (परलोक) की सफलता है।

79. हूद अलैहिस्सलाम के अन्दर नुबुव्वत की खुली निशानियाँ विद्यमान थीं जिन को देख कर विश्वास किया जा सकता था कि वह अल्लाह के भेजे हुए हैं। लेकिन उन की क्रौम अक्ल की अन्धी थी इस लिए उन को ये निशानियाँ दिखाई नहीं दे रही थीं।

80. इस से अन्दाज़ा होता है कि वे कितने अन्धविश्वासी थे लेकिन उन के अन्धविश्वासों की क़लई उस समय खुल गई जब अल्लाह का प्रकोप उन पर टूट पड़ा और उन के संकल्पित देवी देवता उन की सहायता को पहुँच न सके और न हूद अलैहिस्सलाम ही का कुछ बिगाड़ सके।

81. अर्थात् इन्सान समेत तमाम जीवधारी सृष्टि पूरी तरह अल्लाह के नियंत्रण एवं उस के वश में है। उस की पकड़ से कोई भी बाहर नहीं।

82. सीधे मार्ग से अभिप्रेत न्याय और सत्यता का मार्ग है और अल्लाह के सीधे मार्ग पर होने का मतलब यह है कि उस के सारे काम सही और उस के सारे निर्णय न्याय और सत्यता पर आधारित होते हैं। उस के हाथ में यद्यपि हर जानदार की चोटी है मगर वह किसी पर अन्याय और अत्याचार नहीं करता।

57. अगर तुम मुँह फेरते हो तो जो संदेश दे कर मैं भेजा गया था वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका। और मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरे गिरोह को लाएगा और तुम उस का कुछ बिगाड़ न सकोगे। निश्चय ही मेरा रब हर चीज़ पर निगराँ है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَعَدَّ الْبَلْعُكُمْ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ ﴿٥٧﴾

58. फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने अपनी दया से हूद को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए थे बचा लिया और हम ने उन्हें एक ऐसे अज़ाब से मुक्ति दी जो बहुत ही सख्त था ⁸³।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا بَنَيْنَاهُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ رَحْمَةً مِنَّا وَبَيَضْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

59. ये हैं आद । इन्होंने अपने रब की आयतों से इन्कार किया और उस के रसूलों की अवज्ञा की ⁸⁴ और हर उद्दंड सत्य द्रोहियों के कहने पर चले ⁸⁵।

وَتِلْكَ عَادٌ جَدُّو إِبْرَاهِيمَ وَعَصَوُا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾

60. इन के पीछे इस लोक (दुनिया) में भी लानत लगा दी गई और क्रियामत के दिन भी । सुनो ! आद ने अपने रब से कुफ़्र किया। सुनो ! महरूम कर दिए गये आद, हूद की क्रौम !

وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ الْآلَانِ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ أَلَا بُعْدُ الْعَادِ قَوْمُ هُودٍ ﴿٦٠﴾

61. और समूद की तरफ़ हम ने उन के भाई स्वालेह को भेजा। ⁸⁶ उस ने कहा ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! अल्लाह की इबादत (उपासना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं। उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया ⁸⁷ और इस में तुम को आबाद किया। अतः उस से क्षमा माँगो और उस की तरफ़ पलटो। निश्चय ही मेरा रब निकट है और दुआओं का कुबूल करने वाला है। ⁸⁸

وَالِى شُعُودًا أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ تَتَوَلَّوْا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ ﴿٦١﴾

62. उन्होंने ने कहा स्वालेह ! इस से पहले तो हम तुम से बड़ी आशाएँ बाँधे हुए थे। ⁸⁹ क्या तुम हमें उन माबूदों (उपास्यों) की परस्तिश से मना करते हो जिन की परस्तिश हमारे बाप दादा करते आए हैं ⁹⁰। हमें तो इस बात में बड़ा संदेह है जिस की ओर तुम दअवत देते हो और इस ने हमें बड़ी उलझन में डाल दिया है।

قَالُوا ايُّ صِلَةٍ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ الْفِئْشَةَ لَمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٦٢﴾

83. आद की क्रौम पर हवा के तूफान और भयंकर आँधी की शक्त में अज़ाब आया था। (देखिए सूरह अहकाफ़ आयत २४ और २५ और सूरह ज़ारियात आयत ४१ और ४२)

84. तमाम रसूल एक ही संदेश पेश करते रहे हैं अतः किसी एक रसूल की अवज्ञा वास्तव में सारे रसूलों की अवज्ञा है। इस लिए यहाँ हूद अलैहिस्सलाम की अवज्ञा को सारे रसूलों की अवज्ञा बताया गया है।

85. रसूल अल्लाह तआला की तरफ़ से इस बात के अधिकारी (Authority) होते हैं कि उन की आज्ञा का पालन किया जाए लेकिन जो लोग अल्लाह के वफ़ादार बन कर रहना नहीं चाहते वे उस के रसूल के आज्ञापालन के लिए तैयार नहीं होते। बल्कि रसूल के मुकाबले में ऐसे पेशवाओं, लीडरों, और शासनाधिकारियों अथवा सत्ताधिकारियों के आदेशों का अनुपालन करने और उन की बातों पर अमल करने लगते हैं जो खुदा के विद्रोही और हक़ के दुश्मन होते हैं। उन का यह ख़ुदा के प्रकोप को निमंत्रण देता है।

86. समूद की क्रौम का वृत्तांत सूरह “आराफ़” आयत ७३ से ७९ में गुज़र चुका। इस मौक़े पर उल्लिखित आयतें और उन के नोट ११६ से १२६ एवं सूरह फ़ज्र आयत ९ और इस के नोट १२, १३, १४ सामने रहें।

87. पृथ्वी लोक पर मानव जाति का आरम्भ इस प्रकार

हुआ कि अल्लाह तआला ने पहले इन्सान अर्थात् आदम अलैहिस्सलाम को मिट्टी से पैदा किया। इस लिए यह हकीक़त है कि इन्सान को ज़मीन से पैदा किया गया है। और यह भी सत्य है कि इन्सान की ज़िन्दगी का दारोमदार जिन आहार और गिज़ाओं पर है वह ज़मीन से ही प्राप्त होती हैं। यहाँ तक कि जिन जानवरों का गोश्त वह खाता है वे भी ज़मीन ही से अपना आहार प्राप्त करते हैं।

88. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रा नोट २४७ और २४८

89. इस से स्पष्ट होता है कि स्वालेह अलैहिस्सलाम का जीवन नुबुव्वत से पहले बिल्कुल साफ़ और स्वच्छ रहा है और उन की असाधारण योग्यता एवं प्रतिभा तथा सम्मानजनक व्यक्तित्व को देख कर लोगों ने उन से ये आशाएँ बाँध रखी थीं कि वे क्रौम का नाम रौशन करेंगे। लेकिन जब उन्होंने ने शिर्क के विरुद्ध आवाज़ उठाई और तौहीद की दअवत पेश की तो उन की आशाओं पर पानी फिर गया।

90. समूद की क्रौम के पास बुत परस्ती के वैध एवं औचित्यपूर्ण होने का कोई तर्क एवं प्रमाण नहीं था बल्कि वे समझते थे कि इस विधि का अनुपालन इस लिए किया जाना चाहिए कि यह इस सभ्यता एवं संस्कृति का एक अंग है जो बाप दादा से चला आ रहा है।



63. (स्वालेह) उस ने कहा मेरी क़ौम के लोगो ! तुम ने ज़रा सोचा अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर क़ायम हूँ और उस ने मुझे अपनी रहमत से नवाज़ा हो तो कौन है जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचाएगा अगर मैं उस की अवज़ा करूँ ? तुम इस के सिवा और क्या कर सकते हो कि मेरी तबाही में वृद्धि कर दो ⁹¹।

قَالَ يَقَوْمِ اَرَأَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَآتَنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ اِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُوْنِي غَيْرَ تَحْسِيْرٍ ۙ ﴿٧٣﴾

64. और ऐ मेरी क़ौम ! यह ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। ⁹² इसे छोड़ दो कि अल्लाह कि ज़मीन में चरती रहे और इस को किसी प्रकार की तकलीफ़ न दो वरना जल्द ही अज़ाब तुम्हें आ लेगा।

وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذُرُوهَا كُلَّ فِئٍ اَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۙ ﴿٧٤﴾

65. मगर उन्होंने उस की कूँचें काट डाली ⁹³। तब उस ने कहा अपने घरों में तीन दिन और बसर कर लो यह वादा है जो झूठा साबित न होगा।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِىْ دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدِىْ غَيْرُ مَكْنُوْبٍ ۙ ﴿٧٥﴾

66. फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हम ने स्वालेह को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया और उस दिन की रूस्वाई से मुक्ति दे दी। निस्संदेह तुम्हारा रब ही शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है।

فَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمٍ مِّدٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۙ ﴿٧٦﴾

67. और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन को एक भयंकर चिंघाड़ ने पकड़ लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए ⁹⁴।

وَآخِذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جِثَمِيْنَ ۙ ﴿٧٧﴾

68. गोया उन में कभी बसे ही न थे ⁹⁵। सुनो ! समूद ने अपने रब से कुफ़्र किया। सुनो ! महरुमी हुई समूद के लिए।

كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اَلَا اِنَّ تَشُوْدَ اَكْفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّشُوْدٍ ۙ ﴿٧٨﴾

69. और हमारे संदेश वाहक (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लिये हुए पहुँचे ⁹⁶। उन्होंने ने कहा सलाम हो तुम पर। उस ने जवाब दिया तुम पर भी सलाम हो ⁹⁷। फिर अविलंब एक भुना हुआ बछड़ा ले आया ⁹⁸।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا اِبْرٰهِيْمَ بِالْبَشْرِىْ قَالُوْا سَلِمًا قَالَ سَلٰمٌ ۙ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيْدٍ ۙ ﴿٧٩﴾

91. अर्थात् अगर मैं तुम्हारी बातों में आ कर अल्लाह की अवज्ञा करूँ जब कि मुझ पर बसीरत की राह खुल चुकी है तो अल्लाह की पकड़ से बचाने से तो तुम रहे। अलबत्ता तुम्हारे कारण मैं गुनाह पर गुनाह का अपराधी हो सकता हूँ और यह बात मेरे विनाश और मेरी तबाही ही का कारण बन सकती है।

92. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ११९

93. व्याख्या के लिए देखिए सूरह शम्स आराफ़ नोट १५

94. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १२३, १२४

95. यह बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना है जिस में सत्य का बोल बाला हुआ। अतः स्वालेह और उन के ईमान वाले साथी तो बचा लिये गये और तमाम बहुदेववादि और काफ़िर अज़ाब की लपेट में आ गए। और यह सब कुछ उसी तरह हुआ जिस तरह कि स्वालेह अलैहिस्सलाम ने उन्हें पहले से ख़बरदार कर दिया था। इस लिए इस को यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह सामान्य रूप से घटित होने वाली घटनाओं में से कोई घटना थी। अगर ऐसा होता तो न स्वालेह अलैहिस्सलाम को इस की पूर्व सूचना मिल सकती थी और न इस की ज़द से ईमान वाले बच सकते थे।

96. ये फ़रिश्ते थे जो मनुष्य के रूप में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास पहुँचे थे। यह घटना उस समय की है जब कि वह अपने देश से हिज़रत करने (देश त्यागने) के

बाद फ़िलस्तीन में आबाद हो गए थे।

97. सलाम का मतलब है अल्लाह तुम्हें सलामत रखे। दुआ का यह वाक्य (कलिमा) फ़रिश्तों के आदाब और नबियों की तहज़ीब का एक अंग है। इस लिए इस्लाम ने इस को चिन्ह अथवा प्रतीक की हैसियत दी है कि जब मुसलमान आपस में मिलें तो सब से पहले एक दूसरे को सलाम करें। यह सलाम रस्मी नहीं बल्कि वास्तव में खुदा से दुआ है और अपने भाई से सहानुभूति की अभिव्यक्ति भी।

98. चूँकि फ़रिश्ते मनुष्य के रूप में थे इस लिए अज़नबी मर्दों को देख कर इब्राहीम अलैहिस्सलाम समझ गए कि ये मेहमान हैं जो सफ़र कर के आए हैं। इस लिए उन्होंने तुरन्त उन के सत्कार का सामान किया। एक बछड़ा भून कर लाए और उस का गोश्त मेहमानों के सामने प्रस्तुत किया।

इस क्रिस्से से जहाँ इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दानशीलता और मेहमान नवाज़ी का सबूत मिलता है वहाँ यह इशारा भी मिलता है कि मेहमान की आमद पर उन के खाने का तुरन्त प्रबन्ध करे। क्यों कि यात्रा की दशा में आदमी को अधिकतर खाना मयस्सर नहीं आता।

इस के अलावा यह बात भी स्पष्ट होती है कि गाय अल्लाह की शरीअत में प्राचीन समय से हलाल (वैध) चली आ रही है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शरीअत प्राचीनतम शरीअत है जिस में गाय हलाल थी। इस लिए उन्होंने ने बछड़े को ज़बह (वध किया और उस का गोश्त भून कर मेहमानों के सामने प्रस्तुत किया।



70. मगर जब देखा कि उन के हाथ उस की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो उन को अजनबी समझा और उन की ओर से भय महसूस किया ⁹⁹। उन्होंने कहा भय न करो हम लूत की क्रौम की तरफ़ भेजे गए हैं ¹⁰⁰।

فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً
قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ٤٠

71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी भी खड़ी थी। वह हँस पड़ी। तो हम ने उस को इस्हाक़ की और इस्हाक़ के बाद याक़ूब की खुशख़बरी दी ¹⁰¹।

وَأَمْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَلَبَسَ نَهْأً يَاسِقًا وَمِنْ وَرَاءِ
إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ٤١

72. वह बोली हाय ! ¹⁰² मेरे संतान होगी जब कि मैं बुढ़िया हो गई हूँ और मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं। यह तो बड़ी अजीब बात है ! ¹⁰³

قَالَتْ يَوِیْلَتِي أَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا إِنَّ هَذَا
لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ٤٢

73. उन्होंने ने (संदेशवाहकों ने) कहा तुम अल्लाह के हुक्म पर आश्चर्य करती हो। अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें हों तुम पर ऐ अहले बैत ! (इब्राही के घर वालो !) निस्संदेह वह प्रशंसा के योग्य और बड़ी शान (गौरव) वाला है ! ¹⁰⁴

قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمْتُ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ
الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ٤٣

74. फिर जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उसे खुशख़बरी मिली तो लूत की क्रौम के बारे में हम से हुज्जत करने लगा ¹⁰⁵।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُحَادِّثُنَا
فِي قَوْمِ لُوطٍ ٤٤

75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदय और (अल्लाह की ओर) पलटने वाला था ¹⁰⁶।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ٤٥

76. ऐ इब्राहीम ! यह बात छोड़ दो। तुम्हारे रब का हुक्म हो चुका है और उन लोगों पर ऐसा अज़ाब आने को है जो किसी तरह टल नहीं सकता ।

يَا إِبْرَاهِيمُ اعْرُضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَإِنَّهُمْ
إِلَيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مُرْدُودٍ ٤٦

77. और जब हमारे संदेशवाहक लूत ¹⁰⁷ के पास पहुँचे तो वह उन के आने से घबराया और दिल तंग हुआ और कहने लगा कि आज तो बड़ी मुसीबत का दिन है ! ¹⁰⁸

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَىٰ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ
هَذَا يَوْمُ عَصِيبٍ ٤٧

99. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं तो वह भाँप गए कि वे आदमी नहीं बल्कि फ़रिश्ते हैं और इन के मानव रूप में आने का कारण सम्भव है कोई परीक्षा हो। और परीक्षा का विचार ही उन के लिए आशंका एवं भय उत्पन्न करने वाला था कि मालूम नहीं अल्लाह तआला ने उन को किस की परीक्षा के लिए भेजा है और वह किस प्रकार की है।

100. अर्थात् हम लूत की क़ौम की परीक्षा के लिए भेजे गए हैं ताकि उन्हें रंगे हाथ पकड़ लें और उन पर वह अज़ाब ले आएँ जिस का फ़ैसला अल्लाह तआला कर चुका है।

101. इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पत्नी मेहमानों की खिदमत के लिए निकट ही खड़ी थीं। उन्होंने जब सुना कि ये फ़रिश्ते हैं और इब्राहीम को बेटे की शुभ सूचना दे रहे हैं तो उन्हें आप से आप हँसी आई। क्योंकि बुढ़ापे में बच्चे की पैदाइश की ख़बर अचरज में डालने वाली थी। स्पष्ट रहे कि खुशख़बरी देने का यह किस्सा यहाँ संक्षेप में बयान हुआ है। सूरह ज़ारियात में है कि फ़रिश्तों ने बेटे की पैदाइश की खुशख़बरी इब्राहीम को सुनाई थी और इस पर उन की पत्नी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा था कि मैं बुढ़िया बाँझ हूँ। इस लिए इस आयत में उन की पत्नी के हँसने का जो ज़िक्र है उस का सम्बन्ध उसी खुशख़बरी से है जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दी गई थी। और जब वह अचरज से हँस पड़ी थी तो उन्हें यह भी खुशख़बरी दी गई कि तुम्हारे घर न केवल बेटा पैदा होगा बल्कि उस के बाद पोता भी पैदा होगा।

इब्राहीम की पत्नी का नाम सारह था। और उस समय तक उन के कोई औलाद नहीं थी। यह किस्सा बाइबिल की किताब 'उत्पत्ति' अध्याय १८ में भी बयान हुआ है। मगर लीपा पोती के साथ।

102. यह बात अश्चर्य की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने नारीत्व के ढंग में कही। ऐसे मौक़े पर शाब्दिक अर्थ मुराद नहीं होते।

103. बाइबिल में है कि उस समय इब्राहीम की आयु सौ साल और सारह की नब्बे साल थी। (उत्पत्ति १७:१७) बुढ़ापे की इस आयु में बेटे की पैदाइश की खुशख़बरी मिलने पर हज़रत सारह ने आश्चर्य प्रकट करते हुए यह बात कही थी ताकि फ़रिश्ते और स्पष्टीकरण करें और बात साफ़ हो जाए। उन्होंने ने शक के तौर पर यह बात नहीं कही थी।

104. फ़रिश्तों ने हज़रत सारह के आश्चर्य को दूर करने के लिए एक बात तो यह फ़रमाई कि अल्लाह के किसी भी आदेश पर आश्चर्य नहीं किया जाना चाहिए। दूसरी बात यह फ़रमाई कि तुम नबी के घर वाले हो जिन पर अल्लाह की विशेष कृपा

है इस लिए अगर उस ने तुम्हारे बुढ़ापे के बावजूद तुम्हें सन्तान प्रदान करने का निर्णय किया है तो इस को उस का उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) समझना चाहिए और तीसरी बात यह फ़रमाई कि वह ख़ूबियों एवं गुणों वाला है। उस का हर काम ख़ूबी का काम होता है और वह बड़ी शान वाला है इस लिए उस के काम ऐसे होते हैं कि हर फ़ैसले से उस के खुदा होने की शान का पता चलता है।

इसी के अन्तर्गत यह बात भी स्पष्ट हुई कि अहले बैत में पत्नी भी शामिल है क्योंकि यहाँ इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सम्बोधित कर के फ़रिश्तों ने अहले-बैत (घरवालों) कहा है। अहले बैत के इस स्पष्ट भावार्थ के बावजूद मुसलमानों का एक वर्ग ऐसा है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहले-बैत में आप की पवित्र पत्नियों को शामिल नहीं समझता। स्पष्ट है यह उस के सही अर्थ से खुली विमुखता है।

105. यह हुज्जत अल्लाह तआला से अपनी बात मनवाने के भावार्थ में नहीं थी। बल्कि एक कोमल हृदय की प्रार्थना थी। अज़ाब की ख़बर सुन कर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह घबराहट हुई कि उस क़ौम के बीच अल्लाह का पैग़म्बर लूत मौजूद है। अतः सूरह अन्कबूत आयत ३२ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह क़ौल (कथन) नज़ल हुआ है

إِنْ فِيهَا لُوطٌ

(उस में लूत मौजूद है) दूसरे वह यह ख़याल कर रहे थे कि उस क़ौम में से कुछ लोग तो ज़रूर ईमान लाए होंगे। और अगर अल्लाह तआला इस क़ौम को कुछ और मुहलत दे तो संभव है और लोग भी ईमान ले आएँ, चूँकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हालात की पूरी तरह जानकारी नहीं थी इस लिए वह संभावित आशंकाओं के चलते फ़रिश्तों से हुज्जत करते रहे जिस से उन की इन्सानी हमदर्दी और कोमल हृदयता का पता चलता है। लेकिन जैसा कि आगे आयत ७६ में बयान हुआ है, फ़रिश्तों ने उन्हें बताया कि इस मसले पर हुज्जत करना बेफ़ायदा है। इस लिए कि अल्लाह तआला लूत की क़ौम पर अज़ाब का फ़ैसला उतार चुका है। ज़ाहिर है अल्लाह तआला किसी क़ौम पर अज़ाब का फ़ैसला उसी समय उतारता है जब कि उस के अन्दर से ऐसे लोगों के निकलने की संभावना बाक़ी न रहे जो ईमान ले आएँ।

फ़रिश्तों से इब्राहीम की इस हुज्जत का ज़िक्र बाइबिल में सविस्तार हुआ है। (देखिए उत्पत्ति अध्याय १८)

106. अर्थात् इब्राहीम में चूँकि ये गुण थे इस लिए उस ने लूत की क़ौम के सिलसिले में कोमल हृदयता का परिचय दिया और अज़ाब टालने के लिए अल्लाह तआला से विनती की।

107. लूत का संक्षिप्त वृत्तांत सूरह आराफ़ आयत ८० से ८४ में गुजर चुका। इस मौके पर उस की व्याख्या के नोट १२७ से १३३ सामने रहें।

108. अर्थात् जब फ़रिश्ते इब्राहीम के पास से विदा ले कर लूत के पास पहुँचे तो उन्हें बड़ी घबराहट हुई और वह दुखी हुए। वास्तविकता यह है कि फ़रिश्ते लूत के पास मनुष्य के रूप में पहुँचे थे और संभवतः खूबसूरत लड़कों की शक्ल में, ताकि लूत की क़ौम जिस व्यभिचार एवं कुकर्म में लिप्त थी उस के लिए आजमाइश हो और अपराधियों को रंगे हाथों पकड़ा जाये। इस उद्देश्य की खातिर उन्होंने लूत अलैहिस्सलाम पर भी अपना

फ़रिश्ता होना प्रकट नहीं किया। इस लिए उन्होंने ने समझा कि ये मुसाफ़िर हैं और मेरे घर मेहमान के तौर पर आए हैं और मेहमान का आदर सत्कार तो ईमान का तक्काज़ा है। लेकिन क़ौम ऐसी बदचलन और कुकर्मों है कि मुसाफ़िरों का अपहरण कर ले जाती है। वह इन नवजवानों पर भी हाथ छोड़ेगी और घिनावनी इच्छाओं को पूरा करना चाहेगी इस ख़याल ने उन को इतना प्रभावित कर दिया कि वह अत्यधिक दुखी हुए। वरना मेहमानों की आमद से तो एक नबी को जो नैतिकता एवं आचरण के उच्च शिखर पर होता है प्रसन्नता ही हो सकती थी।



तब फ़रिश्तों ने कहा ऐ लूत ! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं । ये हरगिज़ तुम तक पहुँच न सकेंगे । तुम रात के अन्धकार में अपने घर वालों को ले कर निकल जाओ। और तुम में से कोई पलट कर भी न देखे । मगर तुम्हारी पत्नी, कि उस पर भी वही कुछ गुज़रना है जो उन पर गुज़रेगा । उन के अज़ाब के लिए सुबह का समय निश्चित है। क्या सुबह करीब नहीं ! फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर लगातार बरसाए । (अल-कुर्आन)

78. और उस की क्रौम के लोग दौड़ते हुए उस के पास आए। वे पहले से कुकर्मों में लिप्त थे !¹⁰⁹ उस ने कहा लोगो ! ये मेरी बेटियाँ हैं। ये तुम्हारे लिए अत्यंत पवित्र हैं तो अल्लाह से डरो और मेरे मेहमानों के मामले में मुझे रुस्वा न करो¹¹⁰! क्या तुम में कोई आदमी भी समझदार नहीं ?

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ
السَّيِّئَاتِ قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ
وَلَا تَخْزُونِ فِي ضَيْفِي أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ④

79. उन्होंने ने कहा तुम्हें मालूम ही है कि तुम्हारी बेटियों से हमें कोई मतलब नहीं¹¹¹ और तुम यह भी जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।¹¹²

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ
لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ⑤

80. उस ने कहा काश तुम्हारे मुकाबले की मुझे शक्ति होती या कोई मजबूत सहारा होता जिस की मैं पनाह लेता¹¹³!

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ إِيَّايَ إِلَى دُكُنٍ شَدِيدٍ ⑥

81. तब फ़रिश्तों ने कहा ऐ लूत ! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं¹¹⁴। ये हरगिज़ तुम तक पहुँच न सकेंगे¹¹⁵। तुम रात के अन्धकार में अपने घर वालों को ले कर निकल जाओ। और तुम में से कोई पलट कर भी न देखे¹¹⁶। मगर तुम्हारी पत्नी, कि उस पर भी वही कुछ गुज़रना है जो उन पर गुज़रेगा।¹¹⁷ उन (के अज़ाब) के लिए सुबह का समय निश्चित है। क्या सुबह क़रीब नहीं !¹¹⁸

قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسِرْ
بَاهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ الْبَيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا
أَمْرَاتِكَ إِنَّهُ مُصِيبُهُمَا مَا أَصَابَهُمْ إِنَّ
مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ⑦

82. फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर लगातार बरसाए¹¹⁹।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَلَىٰ هَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا
حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ⑧

83. जो तुम्हारे रब के यहाँ निशान किये हुए थे¹²⁰। और यह ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं¹²¹।

مُسَوَّمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ وَمَاهِي مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ⑨

84. और मद्यन की तरफ़ हम ने उन के भाई शूऐब को भेजा।¹²² उस ने कहा ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं, और नाप तौल में कमी न करो¹²³। मैं देख रहा हूँ कि तुम अच्छे हाल में हो मगर मुझे भय है कि तुम पर अज़ाब का ऐसा दिन न आ जाए जो सब को घेर लेगा।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِنَ إِلَهِ غَيْرُهُ وَلَا تَنْقُضُوا إِلَيْكُمُ
وَالْعَيْثَ إِنِّي أَرَىٰكُمْ تَخْتَرُونَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ⑩

109. अर्थात् वे समलैंगिकता (Homo Sexuality) जैसे संक्रामक रोग में पहले से लिप्त एवं उस में अभ्यस्त थे। और नये आए हुए सुन्दर नवयुवकों के लूत के घर पहुँचने की खबर पा कर उन का अपहरण करने के उद्देश्य से उन के घर पहुँचे।

110. संदर्भ इस बात पर तर्क प्रस्तुत करता है और यही प्रतीत भी होता है कि लूत अलैहिस्सलाम ने क्रौम की बेटियों को अपनी बेटियाँ कहा था और यह ऐसी ही बात थी जैसे कोई बुजुर्ग आदमी दूसरों की बेटियों को स्नेह के कारण अपनी बेटियाँ कहता है। ज़ाहिर है ऐसे मौके पर शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं होते इस लिए यह समझना किसी तरह सही नहीं कि लूत अलैहिस्सलाम ने अपनी बेटियों की पेशकश की थी। पहली बात तो उन की बेटियाँ जैसा कि बाइबिल में बयान हुआ है केवल दो थीं जब कि कुआन ने इन के लिए द्विवचन (बिन्तैन) नहीं बल्कि बहुवचन (बनात) का प्रयोग किया है। दूसरे यह कि जब एक भीड़ ने लूत अलैहिस्सलाम के घर को घेर लिया था तो दो या चन्द बेटियों का निकाह तो दो या चन्द लोगों से ही हो सकता था। भीड़ या सारे लोगों का निकाह तो इस सूत्र में संभव नहीं था। तीसरे यह कि क्या सब अविवाहित थे जो इन को ब्याह करने के लिए कहा गया हो? हकीकत यह है कि उन्होंने अपनी पत्नियों को छोड़ रखा था और समलैंगिकता में लिप्त हो गए थे। अतः सूरह “शुअरा” में फ़रमाया गया है:

اتَّاتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَلَمِينَ . وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ
رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ . (سورة الشعراء: १२५-१२६)

“क्या तुम दुनिया की सृष्टि से निराले हो कर यह हरकत करते हो कि लड़कों पर रीझते हो और अपनी पत्नियों को जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा किया है छोड़ देते हो।” (शुअरा: १२५, १२६)

इस लिए लूत अलैहिस्सलाम ने उन लोगों की पत्नियों को स्नेह और आदर के प्रति अपनी बेटियाँ कहते हुए यह फ़रमाया कि जब स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति के लिए पवित्र साधन मौजूद है तो तुम अपवित्र साधन क्यों खोजते हो।

هُوْلَاءُ بَنَاتِي

“ये मेरी बेटियाँ हैं” की यह टीका (तफ़सीर) सईद बिन जुबैर से उद्धृत है। वे फ़रमाते हैं:

“अर्थात् क्रौम के नबी होने की हैसियत से उन की औरतें लूत की बेटियाँ थी। (तफ़सीर तबरी जिल्द ११ पृष्ठ ५१)

और मुजाहिद वगैरह से भी क़रीब क़रीब यही बात उद्धृत है। एवं इब्ने ज़रीर तबरी और इमाम राज़ी जैसे टीकाकारों ने भी इस

से क्रौम की औरतें ही मुराद ली हैं। और लूत अलैहिस्सलाम का यह फ़रमान कि “ये तुम्हारे लिए अत्यन्त पवित्र हैं, तो अल्लाह से डरो।” किसी ऐसे भावार्थ के लिए कोई गुन्जाइश नहीं छोड़ता जो अवैध रूप से कामइच्छा की पूर्ति के समानार्थ हो।

111. अर्थात् औरतों से जिन को तुम अपनी बेटियाँ कहते हो हमें कोई मतलब नहीं। उन के इस जवाब से अन्दाज़ा होता है कि वे कैसे दुष्कर्मों स्वभाव के लोग थे। और बेहयाई में कितने ढिंढो थे। उन का लूत से यह कहना कि “तुम्हें मालूम ही है” इस बात का अतिरिक्त प्रमाण है कि बेटियों की जो बात लूत ने कही थी वह साधारण स्त्रियों के अर्थ में थी न कि उन की ख़ास बेटियों के बारे में। वरना उन की क्रौम के लोग यह न कहते कि तुम्हें यह बात मालूम ही है। ये शब्द बताते हैं कि बात सामान्य औरतों से सम्बन्धित थी जिस के बारे में लूत को मालूम था कि उन की क्रौम को उन से कोई लगाव नहीं है।

112. अर्थात् यह बात कि हम पुरुषों से यौन सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं।

113. लूत अलैहिस्सलाम की यह फ़रियाद बताती है कि वह अपने मेहमानों को बेइज़्जती से बचाने के लिए कितना परेशान थे और ज़ालिमों ने उन को कैसी मुसीबत में डाल दिया था। इस मौक़े पर जो शब्द उन की ज़बान से निकले उन का मतलब यह है कि काश मेरे पास वह शक्ति होती जिस को इस्तेमाल कर के तुम को इस ज़बरदस्ती एवं कुकृत्य से रोकता और तुम्हारे दिमाग़ दुरुस्त कर देता। और अगर यह शक्ति मयस्सर नहीं तो कम से कम ऐसा मज़बूत सहारा ही होता जहाँ पनाह ले कर मैं अपने मेहमानों को बेइज़्जती से बचाता।

हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लूत अलैहिस्सलाम की इस फ़रियाद के सिलसिले में फ़रमाया:

يَغْفِرُ اللَّهُ لِلْوَطِ إِنْ كَانَ لِيَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ -
(بخاری کتاب احادیث الانبیاء)

“अल्लाह लूत को माफ़ करे, वह एक मज़बूत सहारे की पनाह में थे। (बुख़ारी किताब अहादीसुल अम्बिया)

अर्थात् यद्यपि लूत के लिए कोई भौतिक सहारा नहीं था लेकिन उन के लिए सब से बड़ा सहारा ख़ुदा का था। और ख़ुदा ने उन की सुरक्षा का ऐसा सामान किया कि काफ़िर उन का बाल भी बाँका न कर सके और न मेहमानों से सम्बन्धित अपने धिनावने मन्सूबे में कामयाब हो सके।

114. जब बात इन्तिहा को पहुँच गई और क्रौम ने अपने अपराधी होने का अख़िरी सबूत भी दे दिया तो उन मेहमानों ने अपना असली परिचय लूत से कराया कि हम फ़रिश्ते हैं और ख़ुदा ने हमें एक ख़ास मक़सद के लिए भेजा है।

115. अर्थात् तुम पर क़ाबू न पा सकेंगे।

116. अर्थात् रात के अन्धकार में इस प्रकार निकल जाओ कि क़ौम को ख़बर भी न हो। और इस निकलने (हिजरत) में तुम्हें सीधे अपनी मन्जिल का रुख़ करना चाहिए। धन सामाग्री के छूट जाने पर कोई व्यक्ति वापस जा कर लाने का संकल्प न करे और न बस्ती वालों पर क्या गुज़रती है इस को देखने के लिए खड़ा हो जाए। यहाँ तक कि पीछे मुड़ कर भी न देखे। बाइबिल में है:

“ पीछे की ओर न ताकना और तराई भर में न ठहरना, उस पहाड़ पर भाग जाना नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा।” (उत्पत्ति १९:१७)

117. अर्थात् तुम्हारी पत्नी अज़ाब की ज़द में आएगी। लूत की पत्नी ऐसी तो लूत के साथ थी किन्तु वास्तव में वह काफ़िरों के साथ थी। इस लिए वह भी अज़ाब की हक़दार हुई। नूह के बेटे की मिसाल ऊपर गुज़र चुकी। अब यह दूसरी मिसाल लूत की पत्नी की प्रस्तुत की गई है जिस से स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला का इन्साफ़ बेलाग़ है। जो भी कुफ़्र करेगा अज़ाब का भागीदार ठहरेगा चाहे वह किसी नबी का बेटा हो या किसी नबी की पत्नी हो।

118. इस से लूत अलैहिस्सलाम को तसल्ली देना अभिप्रेत था कि सूबह का सूरज इस दुष्कर्मों क़ौम के विनाश का संदेश ले कर आएगा एवं यह ताकीद करना भी कि सुबह से पहले पहले तुम्हें अपने घर वालों को ले कर उस क्षेत्र से निकल जाना चाहिए जो अज़ाब के लिए निश्चित हो चुका है।

119. इस से स्पष्ट होता है कि अज़ाब भूकम्प के रूप में आया जिस ने इमारतों को ज़मीन की धूल चटाई और बस्ती को तलपट कर दिया। साथ ही ज्वालामुखी के फट जाने से पकी हुई मिट्टी के पत्थरों की बारिश हुई जिस के साथ असंभव नहीं कि लावा भी रहा हो अतः बाइबिल के बयान से प्रतीत होता है कि लावा फट पड़ा था।

“ तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई और उन नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को और नगरों के सब निवासियों को भूमि की सारी उपज समेत नाश कर दिया। लूत की पत्नी ने जो उस के पीछे थी दृष्टि फेर के पीछे की ओर देखा और वह नमक का खम्बा बन गई। भोर को इब्राहीम उठ कर उस स्थान को गया

जहाँ वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था। और सदोम और अमोरा और उस तराई के सारे देश की ओर आँख उठा कर क्या देखा कि उस देश में से धधकती हुई भट्टी का सा धुवाँ उठ रहा है। (उत्पत्ति १९: २४ ता २८)

क़ौम लूत कुफ़्र के साथ बेहयाई की भी दोषी हुई थी। इस लिए उस के अपराध के मुताबिक़ ठीक ठीक उस को अपमान का दण्ड मिला। अर्थात् पत्थरों की वर्षा के द्वारा उसे संगसार कर दिया गया।

120. अर्थात् यह विशेष प्रकार के पत्थर थे और उन को विनाश के लिए नामज़द कर दिया गया था।

121. अर्थात् यह क्षेत्र जिस पर अज़ाब आया, मक्का के बहुदेववादियों से कुछ दूर नहीं है। सदोम और अमोरा की बस्तियाँ मृत सागर के किनारे थीं और सीरिया को जाते हुए रास्ते में यह विनष्ट क्षेत्र पड़ता था इस लिए इशारा किया गया कि मक्का के इन ज़ालिमों के लिए इब्रत का स्थल उन के निकट ही मौजूद है। दूसरे इस बात की तरफ़ भी इशारा है कि इस प्रकार का अज़ाब इन ज़ालिमों पर भी आ सकता है।

यद्यपि रसूलों के तर्क स्थापित (हुज्जत क़ायम) कर देने के बाद उन की क़ौमों पर कुफ़्र के बदले में जो अज़ाब आता है उस की दशा एक निर्णायक अज़ाब की होती है। इस के द्वारा बातिल (असत्य) को मिटा दिया जाता है और सत्य (हक़) को विजयी किया जाता है। लेकिन जहाँ तक उद्दंड, उल्लंघनकारी, एवं पापाचारी क़ौमों को इस दुनिया में सज़ा देने का मामला है अल्लाह तआला की दण्ड संहिता विभिन्न तरीक़ों से इन पर लागू होती रहती है। इस की ताज़ा मिसाल मैक्सिको (Mexico) की १९८५ ई. की घटना है जहाँ ज्वालामुखी के फट जाने से लगभग २० हजार लोग मौत के घाट उतर गए। और अधुनिक सभ्यता की सारी जगमगाहट धूल में मिल गई। टेली विज़न पर इस विनाश के दृश्य भी दिखाए गए। मगर इब्रत की निगाह से देखने वाली आंखें कहाँ।

122. मद्यन वालों का वृत्तांत सूरह “आराफ़” आयात ८५ से ९३ में गुज़र चुका। इस अवसर पर ये आयतें और उन की व्याख्या के नोट १३४ से १४९ सामने रहें।

123. नाप तौल में कमी करना एक बहुत बड़ा गुनाह है और यह उन लोगों का काम है जो खुदा के समक्ष जवाबदेही की धारणा नहीं रखते। देखिए सूरह मुतफ़िफ़ीन नोट. १



और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! नाप तौल को इन्साफ़ के साथ पूरा किया करो और लोगों को उन की चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फ़िरो। अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमान लाओ। और मैं तुम पर निगराँ नहीं हूँ। (अल-कुर्आन)

85. और ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! नाप तौल को इन्साफ़ के साथ पूरा किया करो और लोगों को उन की चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फ़िरो।

وَلْيَقُومُوا أَثْقَالَهُمُ الْيُسْوَ وَالْبِزَانِ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخُسُوا
النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

86. अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमान लाओ ¹²⁴। और मैं तुम पर निगराँ नहीं हूँ ¹²⁵।

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ
بِخَفِيضٍ ۝

87. उन्होंने कहा ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि हम अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ दें जिन को हमारे बाप दादा पूजते रहे हैं। या हमें इस बात का अधिकार नहीं कि अपने माल जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें ¹²⁶। बस तुम ही एक बुद्धिमान और सत्यनिष्ठ रह गए हो ¹²⁷।

قَالُوا يَشْعِبُ أَصْلُكَ تَأْمُرُ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ
آبَاؤُنَا وَأَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ
لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝

88. उस ने कहा ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! तुम ने यह भी सोचा कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक रौशन दलील पर हूँ और उस ने अपनी तरफ़ से मुझे अच्छी रोज़ी भी प्रदान की ¹²⁸। (तो क्या मैं सत्यमार्ग न अपनाऊँ) और मैं यह नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ उस के विरुद्ध चलूँ ¹²⁹। मैं तो इस्लाह (सुधार) चाहता हूँ जहाँ तक मेरे बस में है और मेरे लिए (इस काम में) अनुकूलता (साज़गारी) अल्लाह ही की सहायता से संभव है ¹³⁰। उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मैं पलटता हूँ।

قَالَ يَقُومُ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقَنِي
مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَخْلِفَ لَكُمْ إِلَىٰ مَا
أَنْهَكُم عَنْهُ إِن أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ
وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ
أُنِيبُ ۝

89. और ऐ मेरी क्रौम के लोगो ! मेरा विरोध तुम्हारे लिए कहीं इस बात का कारण न बने कि तुम पर भी वैसा ही अज़ाब आ जाए जैसा कि नूह की क्रौम या हूद की क्रौम या खालेह की क्रौम पर आया और लूट की क्रौम तो तुम से कुछ दूर भी नहीं है ¹³¹।

وَلْيَقُومُوا لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ
قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُمْ
بَبَعِيدٍ ۝

90. और (देखो) अपने रब से क्षमा माँगो और उस की तरफ़ पलटो ¹³²। निश्चय ही मेरा रब बड़ा दयालु और (अपने बन्दों से) मुहब्बत रखने वाला है ¹³³।

وَأَسْتَغْفِرُكُمْ وَأَرْبِكُمْ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝

124. अर्थात् अगर तुम ईमान लाओ जायज़ लाभ पर संतोष कर लो तो दुनिया में भी यह बरकत और भलाई का कारण होगा और आखिरत की सफलता भी मिलेगी।

कारोबार में लोगों को धोखा देने से दिखता है कि माल बढ़ रहा है मगर ऐसा माल भलाई (ख़ैर) से ख़ाली होता है और आखिरत में विनाश का कारण बनता है।

125. अर्थात् मेरा काम केवल अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा देना है। जासूस (Detective) बन कर तुम्हारे सारे कर्मों की निगरानी करते रहना नहीं है और न खुदा के यहाँ तुम्हारे कर्मों के बारे में मुझे जवाबदेही करना है।

126. उन का यह प्रश्न उन की इस मानसिकता को दर्शाता है कि जो व्यक्ति नमाज़ पढ़ना चाहता है वह नमाज़ पढ़े लेकिन उस को क्या हक़ है किसी ऐसे धर्म को जिस में कल्चर एवं संस्कृति के रूप में बुत परस्ती चली आ रही हो ग़लत और बातिल ठहराने लगे? इसी तरह कारोबार एवं व्यापार में वैध और अवैध, न्याय और अधिकार हनन की बहस छेड़ कर हमारी आर्थिक स्वतन्त्रता को सीमित करने का उसे क्या अधिकार ?

वर्तमान दौर के सेक्यूलरिस्ट (Secularist) इसी मानसिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। उन के नज़दीक धर्म की सीमा व्यक्तिगत आस्था और पूजा तक सीमित है। सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण स्तम्भों, आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था आदि में उसे दखल देने का कोई हक़ नहीं है। इसी बिना पर वे मुसलमानों से कहते हैं कि नमाज़ रोज़े की हद तक इस्लाम पर अमल करो लेकिन सामाजिक मामलों में इस्लाम को दाखिल न करो। यह मानसिकता अब इतनी तेज़ एवं कठोर हो गई है कि निकाह, तलाक़ और विरासत जैसी घरेलू समस्याओं में भी इन्हें मुसलमानों के

इलाही क़ानून (Divine Law) के अनुपालन पर आपत्ति होती है।

127. यह व्यंग्य था जो उन्होंने पैग़म्बर शुऐब पर किया।

128. रिज़्के हसन (अच्छी रोज़ी) से मुराद रूहानी रिज़्क अर्थात् अल्लाह की वहय भी है और भौतिक रोज़ी भी। मतलब यह है कि अल्लाह ने मुझे नुबुव्वत भी प्रदान की है और हलाल रोज़ी भी। इस के बाद भी क्या मैं उस की नाशुक्री (कृतघ्नता) करूँ और जो राह उस ने मुझ पर खोली है उसे मैं न अपनाऊँ?

129. अर्थात् मैं शिर्क से भी अपना दामन बचाए हुए हूँ और हराम की कमाई से भी। और ये बातें मेरी सत्यता पर दलील हैं।

130. शुऐब अलैहिस्सलाम के इस इर्शाद में उन लोगों के लिए जो जन सामान्य के सुधार के लिए उठें यह मार्गदर्शन है कि उन का काम जहाँ तक उन के बस में है सुधार के प्रयास करना है लेकिन भरोसा अपने प्रयासों पर नहीं बल्कि अल्लाह की तौफ़ीक़ पर होना चाहिए ।

131. लूत की क़ौम के विनाश की घटना मद्यन वालों के लिए कुछ पुरानी न थी। बल्कि क़रीबी दौर में ही घटी थी। एवं लूत की क़ौम का इलाक़ा भी मद्यन से क़रीब ही था।

132. इस की व्याख्या नोट ८ में गुज़र चुकी।

133. अर्थात् उस को अपने बन्दों से नफ़रत नहीं बल्कि मुहब्बत है इस लिए वह ख़्वाहमख़्वाह अपने बन्दों को आग में झोंकना नहीं चाहता बल्कि भलाई और नेमतों की राह उन पर खोलना चाहता है। अलबत्ता बन्दे उस से नफ़रत करने लगे और उदंडता का रवैया अपना लें तो फिर वे उस के प्रकोप ही के हक़दार हो सकते हैं।



91. उन्होंने कहा शुऐब ! तुम्हारी बहुत सी बातें तो हमारी समझ ही में नहीं आतीं ¹³⁴। और हम देख रहे हैं कि तुम हमारे बीच एक कमजोर आदमी हो ¹³⁵। और अगर तुम्हारी बिरादरी के आदमी न होते तो हम तुम्हें संगसार कर देते ¹³⁶। तुम हमारे मुकाबले में कुछ बल बूते वाले तो हो नहीं।

قَالُوا شُعَيْبٌ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا نَقُولُ
وَإِنَّا لَنَرِيكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ
لَرَجَّصْنَاكَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ④१

92. उस ने कहा मेरी क़ौम के लोगो ! क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज़्यादा भारी है कि अल्लाह को तुम ने पीठ पीछे डाल दिया ¹³⁷। तुम जो कुछ कर रहे हो वह मेरे रब की पकड़ में है।

قَالَ يَقَوْمِ ارْهَطِيْ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَاتَّخَذْتُكُمْ
وَرَاءَكُمْ ظَهْرًا اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ④२

93. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह काम किए जाओ मैं भी अपनी जगह काम करता हूँ। बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह अज़ाब आता है जो उसे अपमानित कर के रख देगा और कौन है जो झूठा है। इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।

وَيَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ
مَنْ يَّاتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا اِنِّيْ
مَعَكُمْ رَقِيبٌ ④३

94. फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हम ने शुऐब और उस के साथी ईमान वालों को अपनी रहमत से बचा लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन को एक हैबतनाक आवाज़ ने ऐसा पकड़ लिया कि वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए ¹³⁸।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالدِّينَ اٰمِنُوۡا مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ
مِّنَّا وَاَخَذَتِ الدِّينَ الظّٰلِمُوۡا الصَّيْحَةَ فَاصْبَحُوۡا
دِيَارِهِمْ جُثَمِيۡنٌ ④४

95. गोया वे वहाँ कभी बसे ही न थे। सुनो ! मद्यन वालों के लिए भी महरुमी हुई ¹³⁹ जिस तरह समूद के लिए महरुमी हुई थी ¹⁴⁰।

كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا اَلَا بُعْدَ اِلَـٰلِدَيْنِ كَمَا بَعْدَتْ ثُبُودُ ④५

96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा था। ¹⁴¹

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوسٰٓى بِآيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ④६

97. फिरऔन और उस के (राज्य के) प्रमुखों की तरफ़। मगर वे फिरऔन के हुक्म पर चले हालाँकि फिरऔन का हुक्म दुरुस्त न था ¹⁴²।

اِلٰى فِرْعَوۡنَ وَمَلٰٓئِهٖ فَاتَّبَعُوۡا اَمْرَ فِرْعَوۡنَ وَمَا
اَمْرُ فِرْعَوۡنَ بِرَشِيۡدٍ ④७

98. क्रियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे आगे होगा और उन्हें दोज़ख में ले जायेगा ¹⁴³। कैसी बुरी जगह है जहाँ वे पहुँच कर रहे।

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوَرْدُ
الْمُورُوۡدُ ④८

134. शुऐब की बातें न फ़लसफ़ियाना थीं और न उलझी हुई बल्कि सीधी सादी और मन एवं मास्तिष्क में उतर जाने वाली थी। लेकिन चूँकि वे स्वच्छ मास्तिष्क और खुले मन से सोचने के लिए आमादा नहीं थे। इस लिए वह बातें उन की समझ में नहीं आ रही थीं। इन्सान जब अपने मास्तिष्क को एक ख़ास सांचे में ढाल लेता है तो उस से अलग कोई बात भी उस की समझ से परे होती है चाहे वह कितनी ही रौशन हकीक़त क्यों न हो।

क्रौम ने संगसार (अर्थात् पत्थर मारना) करने की जो धमकी दी उस से उन की ज़ालिमाना ज़हनियत का अन्दाज़ा होता है। अथवा इस बात का कि इस समाज में लोगो को एकेश्वरवाद की निमंत्रणा देना और बुराईयों को मिटाने का प्रयास करना भी जुर्म ख़्याल (तसव्वुर) किया जाता था ।

135. अर्थात् जल्ये और शक्ति के लिहाज़ से ।

136. क़बीलाई व्यवस्था में बिरादरी और ख़ानदानों का बड़ा लिहाज़ करना पड़ता था। वरना किसी के क़त्ल पर प्रतिशोध और इन्तिक़ाम का सिलसिला चलता। शुऐब को संगसार करने में यही रुकावट थी।

137. अर्थात् तुम मात्र मेरी बिरादरी के भय से मेरे विरुद्ध कार्रवाई करने से रुक गए। और अल्लाह का भय तुम्हें नहीं आया। तो क्या मेरी बिरादरी तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से अधिक प्रकोप और प्रभुत्व वाली है?

138. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १४७

139. मुराद अल्लाह की रहमत से महरूमी है।

140. इस से अन्दाज़ा होता है कि समूद पर जो अज़ाब आया था उस से मिलता जुलता अज़ाब मद्यन वालों पर आया था।

141. अर्थात् मूसा की रिसालत पर तर्क एवं प्रमाण रखने वाली जो निशानियाँ थी उन में कुछ निशानियाँ तो बिल्कुल ठोस एवं प्रबल एवं प्रमाण की हैसियत रखती थीं। अतः उन की लाठी का सांप बन जाना और जादूगरों के मुकाबले में उन का विजयी होना इस का स्पष्ट उदाहरण है। और इस ठोस एवं प्रबल प्रमाण के बाद उन की रिसालत के मामले में संदेह करने का कोई औचित्य नहीं हो सकता।

142. अर्थात् फ़िरऔन की बातें सूझ बूझ की बातें नहीं थीं। और न उस का नेतृत्व, सत्य, न्याय और समानता से परिचित था। मगर लोग थे कि उसी के पीछे चलते रहे । और अल्लाह के रसूल की आज्ञा का पालन करने के लिए आमादा नहीं हुए।

143. दुनिया में फ़िरऔन को उस की क्रौम ने नेता एवं मार्ग दर्शक बनाया था। अतः क्रियामत के दिन भी वह अपनी क्रौम का नेतृत्व करेगा। यह और बात है कि उस के नेतृत्व में निकलने वाला यह जुलूस सीधा ज़हन्नम की तरफ़ ख़ाना होगा और विनाश के ऐसे गढ़े में गिरेगा कि फिर उस से निकलना संभव न होगा ।



99. और उन के पीछे इस दुनिया में भी लानत लगा दी गई और क़ियामत के दिन भी। क्या ही बुरा सिला है जो इन को मिला ! 144

وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكُونُ الرَّقْدُ
الْمَرْفُودُ ⑩

100. ये इन आबादियों के वृत्तांत हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इन में से कुछ तो क़ायम हैं और कुछ उजड़ गईं 145।

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرْآنِ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ⑪

101. हम ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने स्वयं अपने उपर ज़ुल्म किया। और जब तुम्हारे रब का हुक्म आ गया तो उन के वे ख़ुदा जिन को वे अल्लाह को छोड़ कर पुकारा करते थे उन के कुछ काम न आए और उन्होंने उन के विनाश ही में वृद्धि की 146।

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ
الِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَمَّا جَاءَ أَمْرُ
رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ⑫

102. और तुम्हारे रब की पकड़ ऐसी ही होती है जब वह आबादियों को उन के ज़ालिम होने के कारण पकड़ता है। निश्चय ही उस की पकड़ बड़ी दर्दनाक और बड़ी ही सख्त होती है 147।

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرْآنَ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ
أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ⑬

103. इस में बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो आखिरत के अज़ाब से डरें 148 वह ऐसा दिन होगा जिस में तमाम लोगों को जमा किया जाएगा और वह दिन हाज़िरी का होगा 149।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ذَلِكَ يَوْمٌ
مُجْمَعٌ لَهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَشْهُودٌ ⑭

104. और हम इस के लाने में विलम्ब नहीं कर रहे हैं मगर केवल थोड़ी अवधि के लिए।

وَمَا تَوْخِيشُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَعْدُودٍ ⑮

105. जब वह (दिन) आएगा तो कोई नफ़्स (व्यक्ति) उस की अनुमति के बग़ैर बोल न सकेगा 150। फिर कुछ लोग दुर्भाग्य वाले होंगे और कुछ लोग सौभाग्यशाली 151।

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلُمُ نَفْسٌ إِلَّا
بِإِذْنِهِ فَمِنْهُمْ سُقِيُّ وَسَعِيدٌ ⑯

106. तो जो दुर्भाग्य वाले होंगे वे दोज़ख (नर्क) में जाएंगे जहाँ उन के लिए चीखना चिल्लाना होगा 152।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا
زَفِيرٌ وَسْهِيقٌ ⑰

107. उस में वे सदैव रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं 153। मगर जो तुम्हारा रब चाहे। निस्संदेह तुम्हारा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है 154।

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ
رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ ⑱

144. सरकशों एवं उद्दों के अन्जाम का यह चित्रण जो कुआन ने प्रस्तुत किया है पढ़ने और अवलोकन करने वालों को क्रियामत के हालात का आँखों देखा अनुभव इस दुनिया ही में कराता है ताकि वह सबक ले। मगर जिन लोगों ने सबक हासिल न करने की क्रसम खा ली है वे तो जहन्नम में पहुँच कर ही सबक हासिल करेंगे।

145. अर्थात् कुछ बस्तियों के आसार (चिन्ह) तो अब भी (कुआन के नाज़िल होने के ज़माने में) बाक़ी हैं। जैसे समुद्र के आसार और कुछ बस्तियों के आसार बिलकुल मिट चुके हैं जैसे नूह की क़ौम और लूत की क़ौम आदि। मगर आसार के मिट जाने से उन की तारीख़ मिट नहीं गई बल्कि कुआन के अन्दर सुरक्षित है। ताकि रहती दुनिया तक लोग इन ऐतिहासिक घटनाओं से इबरत हासिल करते रहें।

146. अर्थात् ये क़ौमों अपने देवताओं और बुतों की पूजा इस लिए करती थीं कि वे उन को लाभ पहुँचाएँगे। मगर जब अल्लाह का अज़ाब आया तो ये अपने पुजारियों एवं भक्तों की कोई सहायता न कर सके। बल्कि उन की पूजा उन के भक्तों के लिए अज़ाब में वृद्धि ही का कारण बनी। इस से सिद्ध हुआ कि उन के देवता और बुतपरस्त मात्र ढकोसला थे।

147. यह इन्सानी आबादियों के लिए चेतावनी है कि वे यह न समझें कि ये पुराने गुज़रे हुए क्रिस्से हैं और उन पर कोई अज़ाब आ नहीं सकता। बल्कि वे भी अज़ाब की ज़द में उसी तरह आ सकती हैं जिस तरह गुज़री हुई क़ौमों आ गई। और वास्तविकता यह है कि नाना प्रकार के अज़ाबों का क्रम दुनिया में ज़ालिम क़ौमों के लिए जारी ही है।

148. अर्थात् इन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं में आख़िरत और उस में कर्मानुसार मिलने वाले फल का प्रमाण एवं तर्क मौजूद है। जब अल्लाह तआला क़ौमों को उन की उद्दता और उस के रसूलों की नाफ़रमानी पर दण्ड देता रहा है तो यह इस बात का प्रमाण है कि वह अपने बन्दों से विरक्त नहीं है बल्कि उन के कर्मों के अनुसार उन के साथ मामला करता है। अतः दुनिया की सारी क़ौमों और तमाम इन्सानों को उन के कर्मानुसार इनाम या सज़ा देने के लिए क्रियामत के दिन उस का अदालत बरपा करना अति उचित और तर्क संगत बात है। एवं इन घटनाओं में इबरत का यह पहलू है कि जब वह उद्द क़ौमों को दुनिया में ऐसा कड़ा दण्ड देता रहा है तो आख़िरत की सज़ा जहाँ की ज़िन्दगी हमेशा की ज़िन्दगी होगा इस से कहीं अधिक कड़ी

और दुखदायिनी होगी।

149. अर्थात् वह दिन अल्लाह के समक्ष पेशी का दिन होगा। व्यक्तिगत रूप से हर व्यक्ति को उस के समक्ष उपस्थित हो कर जो कुछ वह दुनिया में कहता और करता रहा है उस की जवाबदेही करना होगी। न कोई व्यक्ति छूटेगा और न कोई क़ौम और न राजा और न रंक।

150. अर्थात् दुनिया में बोलने की जो स्वतंत्रता मनुष्य को प्राप्त है, क्रियामत के दिन उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा। उस दिन इन्सान को विभिन्न चरणों से गुज़रना होगा और जिस चरण और जिस अवसर पर उसे बोलने की अनुमति दी जाएगी उसी समय वह बोल सकेगा। वरना मजाल न होगी कि वह अपनी ज़बान खोल सके।

151. अर्थात् लोग श्रेणी के अन्तर के साथ दो गिरोहों में बटे होंगे। एक वह जिस ने भलाई और नेकी की राह अपनाई थी और अल्लाह की कृपा से वह भाग्यशाली हुआ। और दूसरा वह जिस ने बुराई और दुर्भाग्य का मार्ग अपनाया था और वह बुरे अन्जाम को पहुँच गया।

स्पष्ट रहे कि लोगों का यह विभाजन और उन का अन्जाम ईमान और कुफ़्र के लिहाज़ से है क्योंकि प्रसंग और संदर्भ के अनुसार यही बात उचित है। रहा उन लोगों का मामला जो ईमान ला कर गुनाहों के भागीदार हुए होंगे तो इस सिलसिले में कुआन की दूसरी आयतों की तरफ़ भी देखना चाहिए।

152. अर्थात् दोज़ख़ (नर्क) में उन को ऐसी तकलीफ़ होगी कि वे दहाड़ें मारेंगे।

153. मुराद आख़िरत (परलोक) के आसमान और ज़मीन हैं। क्यों कि क्रियामत के दिन जैसा कि कुआन में दूसरी जगहों पर बयान हुआ है ज़मीन और आसमान बदल जाएंगे और कुआन की पुष्टि के अनुसार परलोक जगत हमेशा रहने वाला है इस लिए उस के आसमान और ज़मीन भी सदैव के लिए होंगे।

154. यह ऐसी ही बात है जैसे कुआन में यह इर्शाद कि “वह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे चाहता है गुमराह करता है।” (अन् नहल १३) ज़ाहिर है इस से उस के सामर्थ्य को स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि अल्लाह की मर्ज़ी में कोई हस्तक्षेप करने वाला नहीं है। वह स्वाधीन और सामर्थ्यवान है। अगर वह उन दोज़ख़ियों के बारे में कोई और फ़ैसला करना चाहे तो उस के लिए कोई रुकावट नहीं है। किसी फ़ैसले को लागू करने के लिए उस की मर्ज़ी काफ़ी है।



108. और जो सौभाग्यशाली होंगे वे जन्नत (स्वर्ग) में जाएंगे जिस में वे सदैव रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं। मगर जो तुम्हारा रब चाहे। यह ऐसी बख़्शिष होगी जिस का सिलसिला कभी समाप्त न होगा ¹⁵⁵।

وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فَمَنَ فِيهَا مَادَامَتِ السَّمَوَاتُ
وَالْأَرْضُ أَلَمْ يَشَاءَ رَبُّكَ غَيْرُ مَجْدُوذٍ ⑩

109. तो तुम इन माबूदों (पूज्यों) के बारे में किसी संदेह में न पड़ो जिन की ये पूजा कर रहे हैं। ये उसी तरह पूजा कर रहे हैं जिस तरह इन से पहले इन के बाप दादा करते थे। और हम इन का हिस्सा इन को पूरा पूरा देंगे। किसी कमी के बग़ैर ¹⁵⁶।

فَلَا تَكُ فِي مَرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا
يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِن قَبْلُ وَإِنَّا لَمَوْفُوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ
مَنْقُوصٍ ⑪

110. हम ने मूसा को किताब दी थी, मगर उस में विभेद किया गया। और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात पहले से तय न कर दी गई होती तो उन के बीच फैसला चुका दिया गया होता। और ये लोग इस (क़ुर्आन) के बारे में शक में पड़े हुए हैं जिस ने इन्हें उलझन में डाल दिया है ¹⁵⁷।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ
مُّرِيبٍ ⑫

111. और निश्चय ही तुम्हारा रब हर एक को उस के कर्मों का पूरा पूरा बदला देगा। वह उन के कर्मों की पूरी तरह ख़बर रखता है।

وَإِنَّ كُلَّ لَئِيْلٍ يُؤَيِّدُ هَمَّ رَبِّكَ أَعْمَالُهُمْ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ⑬

112. अतः तुम सीधे मार्ग पर जमे रहो जैसे कि तुम्हें आदेश दिया गया है एवं वे लोग भी जो तौबा कर के तुम्हारे साथ हो गए हैं, और हद से आगे न बढ़ो ¹⁵⁸। तुम जो कुछ करते हो उसे वह देख रहा है।

فَاسْتَقِمُّ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑭

113. और ज़ालिमों की ओर तनिक न झुकना वरना जहन्नम की आग तुम्हें अपनी लपेट में ले लेगी ¹⁵⁹। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त न होगा और न तुम्हारी मदद ही की जाएगी ¹⁶⁰।

وَلَا تَرْكُؤْا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ
دُونِ اللَّهِ مِن أَوْلِيَاءٍ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ⑮

114. और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात की घड़ियों में ¹⁶¹। निस्संदेह नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं ¹⁶²। यह याद देहानी (स्मरण कराना) है याद देहानी हासिल करने वालों के लिए।

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُكْعَاتِ الْيَلِّ إِنَّ الْحَسَنَاتِ
يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلَّذِينَ كَانُوا
يُنْسَوْنَ ⑯

115. और सब करो ¹⁶³। कि अल्लाह उन लोगों का अज़्र (परिश्रमिक) अकारथ नहीं करता जो अच्छी तरह से काम करते हैं।

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑰

155. अर्थात् सुकर्म लोग हमेशा जन्नत में रहेंगे जब तक कि परलोक जगत के आसमान और ज़मीन कायम हैं और उन का अनन्त रूप से जन्नत में रहना इस लिए है कि अल्लाह की मर्ज़ी यही है वरना इस फ़ैसले के लिए उस को किसी ने मजबूर नहीं किया है। वह अगर चाहे तो कोई और फ़ैसला कर सकता है मगर उस की मर्ज़ी यह है कि इन को ऐसे बख़्शिशों से पुरस्कृत किया जाए कि यह सिलसिला कभी समाप्त न हो और नेमतों की बारिश उन पर हमेशा होती रहे। रहमत के जो स्रोत उन के लिए जारी होंगे वह कभी सूखने वाले नहीं।

156. अर्थात् दुनिया के लोगों में उनका जो हिस्सा है वह भी उन्हें मिलेगा और साथ ही अपने कर्मों का फल भी उन्हें भुगतना होगा। हम न उन्हें भौतिक लाभ पहुँचाने में काट कसर करेंगे और न उस अज़ाब में कोई कमी करेंगे जिस के वे अधिकारी हैं।

157. यहाँ मक्का के बहुदेववादियों के इस संदेह का निवारण करना अभिप्रेत है जो उन्हें कुर्आन के अल्लाह की किताब होने के बारे में था। उन पर स्पष्ट किया जा रहा है कि कुर्आन कोई पहली किताब नहीं है जो लोगों के मार्गदर्शन के लिए भेजी गई हो बल्कि इस से पहले भी किताबें भेजी जाती रही हैं। अतः मूसा को भी किताब दी गई थी। यह और बात है कि उस के अनुयायियों ने उस में मतभेद कर के उस को अपने वास्तविक रूप में बाक़ी रहने नहीं दिया। इस परिस्थिति का यही तक्राज़ा था कि अल्लाह तआला लोगों की हिदायत के लिए एक और किताब भेजे। इसी तक्राज़े को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने रसूल को यह किताब दे कर भेजा। इस लिए इस का अवतरण तुम्हारे लिए संतोषप्रद होना चाहिए न कि दुविधाजनक।

इस वास्तविकता के बावजूद अगर लोग शक ही में लिप्त रहना चाहते हैं तो रहें ऐसे लोगों की क्रिस्मों का फ़ैसला कभी का चुका दिया गया होता। मगर ऐसा इस लिए नहीं किया जा रहा है कि अल्लाह तआला पहले ही यह तय कर चुका है कि हर क्रौम को कर्म करने की मुहलत दी जाएगी। उस के इसी फ़रमान के अनुसार इन लोगों को भी एक निश्चित समय तक ढील दी जा रही है।

158. अर्थात् दास्ता एवं आज्ञापालन की सीमा में रहो और इस का उल्लंघन कर के अल्लाह की अवज्ञा न करो।

159. यहाँ ज़ालिमों से मुराद जैसा कि ऊपर से वर्णन चला आ रहा है, मुश्रिक, काफ़िर और उद्दंड लोग हैं और उन की तरफ़ झुकने से मुराद शिर्क, कुफ़्र और गुनाहों के कामों में उन का समर्थन, ज़बान से हो या अमल से।

इस मनाही के अनुसार मुसलमानों को चाहिए कि वे मुश्रिकों काफ़िरों और ख़ुदा से विमुख लोगों के प्रति अधिक आशान्वित न हों और न उन को ख़ुश करने के लिए उन के शिर्क से लिप्त

कामों एवं रितियों अथवा उन की उन सभाओं में जो इन्सान को ख़ुदा की हिदायत से विरक्त होने और उसे अधर्म पर आमादा करने के लिए हों, सम्मिलित हों। वरना कुफ़्र और शिर्क से याराना पैदा करने का यह परिणाम निकल सकता है कि वे अपना ईमान ही खो बैठें।

160. अर्थात् ख़ूब याद रखो कि ये ज़ालिम जिन की तरफ़ अगर तुम झुक गए तो वे क्रियामत के दिन तुम्हारे कुछ काम आने वाले नहीं। उस दिन तो जो भी ख़ुदा की पकड़ में आएगा वे अकेले और असहाय हो कर रह जाएंगे।

161. दिन के दोनों सिरों पर नमाज़ कायम करने से मुराद फ़ज़्र और मग़रिब की नमाज़ें हैं। किसी चीज़ का सिरा या किनारा उस की हद होती है। दिन की हद की शुरुआत वहाँ से होती है जहाँ रात ख़त्म हो जाती है। यह फ़ज़्र का समय है। और दिन की हद जहाँ ख़त्म होती है वह मग़रिब का समय है।

और रात की घड़ियों में नमाज़ कायम करने से मुराद इशा की नमाज़ है। जुलफ़ (घड़ियाँ) बहुवचन का शब्द इशा के समय की लम्बाई की ओर संकेत करता है।

ये तीन समय की नमाज़ें हुईं जिन की ताकीद मक्का के इस दौर में की गई जिस में यह सूरह नाज़िल हुई थी। इस के बाद पाँच वक्त की नमाज़ों का आदेश आया।

162. यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि नमाज़ वह इबादत है जिस को अगर तुम पूरी तैयारी एवं आयोजन के साथ अदा करो तो नेकियों का वह स्रोत तुम्हारे अन्दर फूट पड़ेगा जो उन बुराइयों को धो डालेगा जो तुम्हारे अन्दर पाई जाती हैं। और उन गुनाहों से पवित्र कर देगा जो तुम से हुए होंगे। इस से नमाज़ के लाभों एवं प्रभाव का और इस इबादत के असाधारण महत्व का बहुत अच्छी तरह अन्दाज़ा होता है। हदीस में आता है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْرًا بَابَ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيهِ كُلُّ يَوْمٍ

خَمْسًا هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ؟ قَالُوا: لَا يَبْقَى مِنْ

دَرَنِهِ شَيْءٌ، قَالَ: فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ

يَمْحُو اللَّهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا. (مشکوٰۃ بحوالہ بخاری و مسلم)

“अगर तुम में से किसी व्यक्ति के दरवाज़े के पास एक नहर हो जिस में वह रोज़ाना नहाता हो तो उस के शरीर पर कुछ भी मैल कुचैल रहेगा? सहाबा ने अर्ज़ किया कोई मैल नहीं रहेगा आप ने फ़रमाया तो पाँचों नमाज़ों का यही हाल है कि इन के द्वारा अल्लाह गुनाहों को मिटाता है।”

(मिशकात, बुखारी और मुस्लिम के हवाले से)

163. अर्थात् विरोधियों द्वारा पहुँचाए जाने वाले कष्टों पर सब्र करो।

116. फिर क्यों न ऐसा हुआ कि जो क्रौमें तुम से पहले गुज़र चुकीं उन में से भलाई वाले निकलते जो ज़मीन में बिगाड़ (फ़ैलाने) से रोकते सिवाय उन थोड़े से लोगों के जिन को हम ने उन क्रौमों में से बचा लिया ¹⁶⁴। वरना अत्याचार का रवैया अपनाने वाले तो ऐश (भोग विलास) के सामानों के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया था और वे अपराधी बन कर रहे ¹⁶⁵।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ
يَسْهُونَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا
أَجَبْنَا مِنْهُمْ وَأَتَّبَعْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَوْا
فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۝

117. और तुम्हारा रब ऐसा नहीं है कि वह आबादियों को अकारण विनष्ट कर दे जब कि उन के बाशिन्दे सुधार करने वाले हों।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلِهَا
مُصْلِحُونَ ۝

118. अगर तुम्हारा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत (गिरोह) बना देता मगर वे विभेद करते रहेंगे ¹⁶⁶।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ
مُخْتَلِفِينَ ۝

119. इस से बचेंगे वही लोग जिन पर तुम्हारा रब दया करे ¹⁶⁷। और इसी लिए तो उस ने उन्हें पैदा किया है ¹⁶⁸। और तुम्हारे रब की बात पूरी हो कर रही कि मैं जहन्नम को जिन्न और इन्सान सब से भर दूँगा ¹⁶⁹।

إِلَّا مَنْ تَحِمَّ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَدَّتْ كَلِمَةُ
رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

120. और हम रसूलों का जो वृत्तांत तुम्हें सुनाते हैं तो इन के द्वारा तुम्हारे दिल को दृढ़ता प्रदान करते हैं। इन के अन्दर तुम्हें हक़ मिल गया और मोमिनों को नसीहत और याददेहानी हुई।

وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ
وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

121. जो लोग ईमान नहीं लाते उन से कहो कि तुम अपनी जगह अमल करो हम अपनी जगह अमल करते रहेंगे।

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا
عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَمِلُونَ ۝

122. और तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं।

وَأَنْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝

123. आसमानों और ज़मीन का ग़ैब (अदृष्ट) अल्लाह ही के लिए है और सारे मामले उसी की तरफ़ लौटाए जाते हैं, तो उसी की तुम इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो। तुम जो कुछ कर रहे हो उस से तुम्हारा रब बेख़बर नहीं।

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْيُحْيِ وَالْمُتَّحِ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

164. अर्थात् ये क्रौमों जो विनाश से दोचार हुई उन के विनाश का बड़ा कारण यह था कि उन के अन्दर से भलाई वाले एवं सुधार प्रिय लोग नहीं निकल सके। फ़लस्वरूप बिगाड़ फैल गया और बुराइयों की जड़ें मज़बूत हो गईं। अगर कुछ लोग निकले भी तो वे गिनती में बहुत थोड़े थे इस लिए बिगाड़े हुए लोगों ने उन का कोई असर स्वीकार नहीं किया, अलबत्ता अल्लाह तआला ने उन को उस समय बचा लिया जब कि उन कि क्रौमों पर अज़ाब आया।

अल्लाह तआला के इस इर्शाद से स्पष्ट होता है कि बिगाड़ ---- चाहे धारणा एवं आस्था का हो या कर्मों का ---- जब किसी क्रौम में पैदा हो जाए तो उन लोगों को जो भलाई प्रिय हों सुधार के लिए उठ खड़े होना चाहिए और हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को कड़ी ताकीद की है कि वे सुधार से सम्बन्धित अपने दायित्व को निभाने का पूर्ण प्रयास करें। फ़रमाया:

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ أُولَئِكَ شَكَنَ اللَّهُ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عِقَابًا مِنْهُ فَتَدْعُوهُ فَلَا يَسْتَجِيبُ لَكُمْ - (الترمذی ابواب الفتن)

“क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है, तुम्हें भलाई का हुक्म करना होगा और बुराई से रोकना होगा वरना असम्भव नहीं कि अल्लाह तुम पर अपनी तरफ़ से अज़ाब भेज दे, फिर तुम उस से दुआ करने लगो और तुम्हारी दुआ वह कुबूल न करे”। (अर्त्तिमिज़ी अब्बाबुलफ़ितन)

165. अर्थात् सामान्य रूप से लोगों ने ग़लत रवैया एवं ग़लत मार्ग अपनाया और ऐश (भोग विलास) का जो सामान बाहुल्यता के साथ परीक्षा के तौर पर दिया गया था उस को उन्होंने ने ऐश का साधन बना लिया और आखिरत के बजाय दुनिया को सब कुछ समझ लिया। इस मानसिकता ने उन को गुनाह और अपराध के मार्ग पर डाल दिया। फिर उन्हें भलाई और सुधार के कामों से कोई रुचि नहीं रही।

166. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट ३०८ और ३०९

167. अर्थात् जो व्यक्ति धर्मों के मतभेदों के चक्कर में

नहीं पड़ा बल्कि उस सीधे मार्ग को उस ने अपना लिया जिस की ओर कुर्आन रहनुमाई करता है। और जो वास्तव में हर मनुष्य की अन्तरात्मा की पुकार है और जिस की सत्यता पर कायनात की पूरी व्यवस्था गवाह है, तो निश्चय ही उस पर अल्लाह की बड़ी कृपा हुई और वह उस की असीमित एवं अनन्त दया का पात्र ठहरा।

विश्व में पाये जाने वाले धर्मों के मतभेदों को देख कर निश्चित रूप से आदमी परेशान हो जाता है और बड़ी उलझन महसूस करने लगता है। इस उलझन से निकलना अल्लाह की तौफ़िक़ (दैवयोग) के बिना संभव नहीं। और जो व्यक्ति भी सत्य का इच्छुक होता है अल्लाह तआला उस की सहायता करता है और उस पर सीधी राह खोल देता है।

168. अर्थात् इसी इम्तिहान के लिए तो उन्हें पैदा किया है कि कौन अपने को अल्लाह की दया का पात्र बनाता है और कौन उस के प्रकोप का। अगर यह परीक्षा अभिप्रेत न होती तो वह तमाम इन्सानों को एक ही गिरोह बना देता। और सारे लोग सत्य मार्ग पर चलने को विवश होते। लेकिन चूँकि परीक्षा अभिप्रेत है इस लिए उस ने इन्सान को सही या ग़लत राय बनाने, सत्य या असत्य को चुनने और इन में से किसी भी मार्ग पर चलने की स्वतंत्रता प्रदान की है। इस लिए इन्सानों की बहुत बड़ी तादाद का सत्यमार्ग से अलग हो कर अपने लिए दूसरे मार्ग को चुनना और सत्य धर्म (इस्लाम) से मतभेद कर के दूसरे धर्मों को अस्तित्व में लाना या उन्हें स्वीकार करना यद्यपि अल्लाह की प्रदान की हुई स्वतंत्रता का दुरुपयोग है मगर यह परिस्थिति उस स्कीम से बाहर नहीं है जो अल्लाह तआला ने इन्सान को पैदा करते समय निश्चित की थी। अतः धर्मों का मतभेद तो दुनिया में चलता ही रहेगा और उस के कुपरिणाम से भी उन्हें दोचार होना होगा किन्तु जो व्यक्ति भी अपना अन्जाम अच्छा चाहता हो उस के लिए ज़रूरी है कि इन तमाम धर्मों और हर प्रकार की वैचारिक एवं व्यवहारिक गुमराहियों को छोड़ कर केवल इस मार्ग को अपनाए जो कुर्आन दिखाता है और जो वास्तव में सारे नबियों का मार्ग है और जिस का नाम दीन इस्लाम है।

169. वे सारे जिन्नात और इन्सान अभिप्रेत हैं जिन्होंने गुमराही अपना कर के अल्लाह के प्रकोप को निमंत्रण दिया।

१२.सूरह यूसुफ़

नाम: यह सूरह अल्लाह के पैगम्बर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वृत्तांत पर आधारित है और इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम सूरह यूसुफ़ है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह हूद के बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बेदाग़ चरित्र को स्पष्ट करते हुए उन की दअवत को पेश किया गया है हक़ (सत्य) के दुश्मनों पर यह स्पष्ट किया गया है कि उन की विरोधी गतिविधियों और साज़िशों का तोड़ अल्लाह तआला की ख़ामोश तदबीरें किस तरह करती हैं।

कलाम की तरतीब: आयत १ और २भूमिका है।

आयत ३ से १०१ में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क्रिस्सा (वृत्तांत) बयान हुआ है।

आयत १०२ से १११ उपसंहार है जिस में इस वृत्तांत के लिहाज़ से याददेहानी (तज़्कीर) के पहलू पेश किए गए हैं।

पिछली सूरह से सम्बन्ध: सूरह हूद से काफ़ी जुड़ी हुई प्रतीत होती है। एक तो इस पहलू से कि सूरह हूद में कई नबियों के वृत्तांत बयान हुए हैं और इस सूरह में विस्तार के साथ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का। दूसरे इस पहलू से कि सूरह हूद की आखिरी आयतों में जो बातें कही गई हैं उन से यह सूरह पूरी तरह मेल खाती हुई एवं बिलकुल जुड़ी हुई है। जैसे वहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर के फ़रमाया गया था कि ये नबियों के वृत्तांत तुम्हारे दिल को दृढ़ता प्रदान करने वाले और बिलकुल सत्य पर आधारित हैं और ईमान वालों के लिए नसीहत और याददेहानी हैं। ये बातें

सूरह यूसुफ़ में भी प्रचुरता के साथ विद्यमान हैं। वहाँ विरोधियों से कहा गया था कि आखिरी फ़ैसले का तुम इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार करते हैं। और इस के बाद सूरह यूसुफ़ ने गोया इस बात की निशानदेही कर दी कि हालात किस दिशा को जा रहे हैं और कठिन मरहलों से गुज़रने के बाद किस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीन में सत्ता एवं प्रभुत्व प्राप्त होने वाला है और आप की बिरादरी के उन लोगों को जो यूसुफ़ के भाइयों के पदचिन्हों पर चल रहे हैं, किस तरह शर्मिन्दगी उठाना पड़ेगी। सूरह हूद की आखिरी आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह पर भरोसा करने का निर्देश दिया गया था। इस सूरह ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भरोसे का उत्तम उदाहरण सामने रख दिया जो इस बात का सबूत है कि जो व्यक्ति सही मार्ग अपनाकर परिणाम को अल्लाह के ऊपर छोड़ देता है अल्लाह तआला उस का काम बनाता है और कामयाबी उस के क़दम चूम लेती है।

वंश और निवास स्थल: इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने एक बेटे इस्हाक़ को फ़िलस्तीन (कनान) देश में आबाद किया था। इस्हाक़ अलैहिस्सलाम पैगम्बर थे। उन के बेटे याक़ूब को भी जिन का दूसरा नाम इस्राईल है अल्लाह तआला ने नुबुव्वत से अलंकृत किया। उन के, जैसा कि बाइबिल का बयान है बारह बेटे थे जिन से बनी इस्राईल का सिलसिला चला। यूसुफ़ और बनियमीन छोटे थे और एक पत्नी से थे और दूसरे बेटे दूसरी पत्नियों से। यह वंश फ़िलस्तीन के हब्रोन क्षेत्र में रहता था और इन का ज़माना लगभग अठारह सौ साल ईसा पूर्व का है।

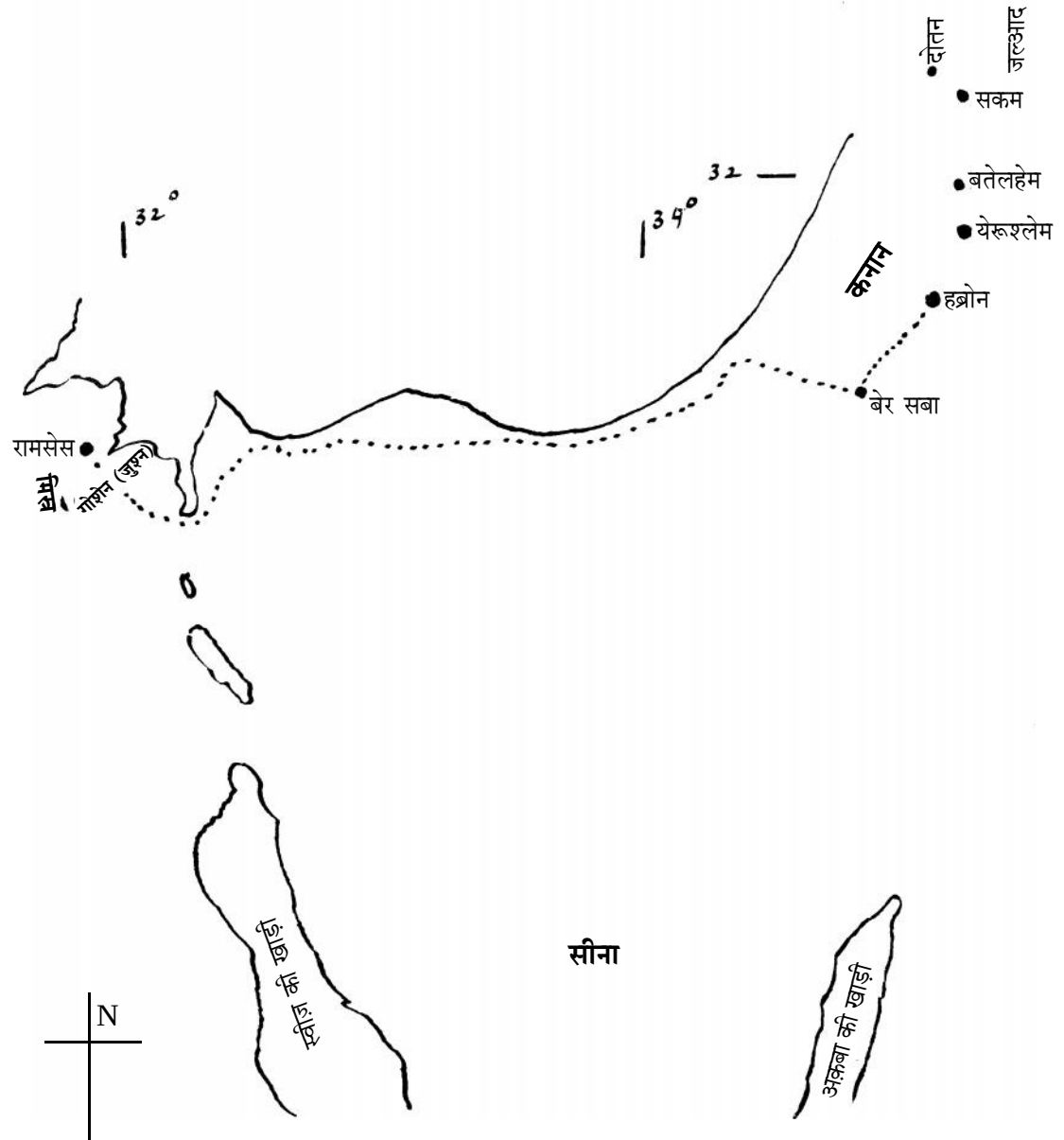
कनान और मिस्र

(यूसुफ़ के ज़माने में)

हब्रोन :- हज़रत इब्राहीम और हज़रत याक़ूब यहीं रहते थे। इस का दूसरा नाम अलखलील है।

रामसेस:- मिस्र की प्राचीन राजधानी।

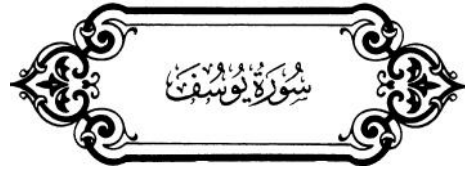
गोशेन (जुश्न):- मिस्र का वह इलाका जहाँ हज़रत यूसुफ़ ने बनी इस्राईल को आबाद किया।



१२. सूरह यूसुफ़

आयतें: 111

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّتِّ تَلَكْ اَيْتُ الْكِتَابِ الْبَيِّنِ ①

1. अलिफ़ लाम रा ¹ ये आयतें हैं रौशन किताब की ²।

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ②

2. हम ने इस को अरबी कुर्आन के रूप में नाज़िल किया है ताकि तुम समझो ³।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ ③ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ الْغَافِلِينَ ④

3. हम तुम्हें बेहतरीन वृत्तांत सुनाते हैं ⁴ इस कुर्आन के द्वारा जिस की वही हम ने तुम्हारी तरफ़ की है। वरना इस से पहले तुम इस से बिलकुल बेखबर थे ⁵।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ⑤

4. जब ऐसा हुआ कि यूसुफ़ ⁶ ने अपने पिता से कहा “अब्बा जान ! मैं ने (सपने में) देखा है कि ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद हैं और क्या देखता हूँ कि ये मेरे आगे झुक गए हैं ⁷।

قَالَ يَبْنَىٰ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ⑥

5. उस ने कहा “ऐ मेरे बेटे !” अपना यह सपना अपने भाइयों को न सुनाना वरना वे तुम्हारे विरुद्ध कोई साज़िश करेंगे ⁸। निश्चय ही शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है।

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُمِيقُ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑦

6. और इसी तरह तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा ⁹ और तुम्हें सिखाएगा बातों कि असल हक़ीक़त मालूम करना ¹⁰ और वह अपनी नेमत तुम पर और याक़ूब की सन्तान पर उसी तरह पूरी करेगा जिस तरह इस से पहले वह तुम्हारे दादा इब्राहीम और इस्हाक़ पर कर चुका है ¹¹। निस्संदेह तुम्हारा रब इल्म वाला, (सर्वज्ञ) हिकमत वाला (तत्त्वदर्शी) है ¹²।

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ الْآيَاتِ لِلْسَّائِلِينَ ⑧

7. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाइयों के क्रिस्से में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं ¹³।

1. इन (विभक्त) अक्षरों की व्याख्या सूरह यूनुस नोट १ में गुजर चुकी। इस सूरह में “अलिफ़” का इशारा अल्लाह (तौहीद के मज़मून) की तरफ़ “लाम” का इशारा “ला ताबुदू इल्ला इय्याहु” لَا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ (अर्थात् उस के सिवा किसी की इबादत न करो। आयत -४०) की तरफ़, दूसरे शब्दों में शिर्क के खण्डन की तरफ़ और “र” का इशारा रब (अल्लाह की रुबूबिय्यत) की तरफ़ है जिस का जिक्र कई आयतों में हुआ है। एवं उन रूया-ए-सादिक़: अर्थात् सच्चे ख़्वाब की तरफ़ भी जिस का जिक्र इस सूरह में विशेष रूप से हुआ है और जो रब की निशानियों में से एक निशानी है।

2. कुर्आन “किताब मुबीन” (रौशन किताब) है क्यों कि उस की बातें और शिक्षाएँ अतिस्पष्ट हैं। उस की दअवत, उस की पेश की हुई वास्तविकताएँ, धारणाएँ और आदेश, उस का मार्गदर्शन और उस का उद्देश्य एवं लक्ष्य, कुल मिला कर तमाम बातें साफ़ साफ़ बयान हुई हैं। एक तरफ़ कुर्आन की यह विशेषता है जिस के कारण उस की बातें मन मस्तिष्क में उतरती चली जाती हैं और दूसरी तरफ़ विभिन्न धर्मों के वे विशिष्ट ग्रंथ हैं जो उलझी हुई बातों से अटे पड़े हैं और जिन का अध्ययन उलझाव बढ़ाने में सहायक हैं न कि घटाने में।

3. सम्बोधन सीधे सीधे अरब क्रौम से है। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति प्रत्यक्षतः अरब क्रौम की तरफ़ हुई थी इस लिए कुर्आन का अवतरण भी उन की अपनी भाषा अरबी में हुआ। ग़ैर अरब क्रौमों की तरफ़ आप की नियुक्ति अप्रत्यक्ष है। इसी तरह कुर्आन भी तमाम ग़ैर अरब क्रौमों और ग़ैर अरबी भाषी लोगों के लिए अप्रत्यक्ष हुज्जत (सत्यतर्क) है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्रैसर और किसरा (रोमी और ईरानी शासकों) अर्थात् अपने समय की महा शक्तियों को जो दअवती ख़त लिखे थे वे अरबी में थे और उन में कुर्आन की आयतें भी लिखी थीं हालाँकि उन शासकों की भाषा अरबी नहीं थी। इसी लिए उन को अनुवादकों की सहायता उपलब्ध करानी पड़ी थी। इस से स्पष्ट हुआ कि कुर्आन का पैग़ाम या उस का अनुवाद स्वस्थ रूप में विश्वसनीय माध्यमों द्वारा किसी व्यक्ति या क्रौम तक पहुँच जाए तो उस पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो जाती है। अब वह अल्लाह के समक्ष अपने बचाव में कोई तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकेगा।

और यह जो फ़रमाया कि “ताकि तुम समझो” तो इस से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि कुर्आन की तिलावत (पाठ) करना काफ़ी नहीं है बल्कि उस को समझना और उस के भाव तक पहुँचना आवश्यक है एवं यह कि इस को समझ कर पढ़ने की दअवत मुसलमानों के लिए ख़ास नहीं है बल्कि सारे लोगों के लिए समान है। चाहे कोई व्यक्ति किसी धर्म से

सम्बन्ध रखता हो और चाहे वह ज्ञानी हो या साधारण मनुष्य हो। और यह विचार बिल्कुल ग़लत है कि कुर्आन को केवल उलमा समझ सकते हैं या यह कि वह केवल मुसलमानों के पढ़ने के लिए है।

4. यूसुफ़ के वृत्तांत का बेहतरीन वृत्तांत होना कई कारणों से है।

प्रथम :- इस वृत्तांत में बयान हुआ है कि यूसुफ़ के जीवन में उन के होश संभालने से ले कर बड़ी आयु को पहुँचने तक किस तरह के मोड़ आए और हर मोड़ पर अल्लाह ने उन की किस तरह रहनुमाई की और उन्होंने किस प्रकार उच्च आचरण का सबूत पेश किया।

द्वितीय:- नवजवानी में उन की पवित्रता का ऐसा इम्तिहान होता है जिस का उदाहरण इतिहास में मिलना मुश्किल है। इस इम्तिहान में वे इस तरह पूरे उतरते हैं कि उन के विरोधियों को उन के फ़रिश्ता होने का संदेह होने लगता है।

तृतीय:- उन के वृत्तांत में इब्रत और नसीहत के थोड़े नहीं बल्कि बहुत से पहलू हैं।

चतुर्थ :- यह वृत्तांत यूसुफ़ की जीवनी का ऐसा चित्रण प्रस्तुत करती है जो बड़ा ही विचित्र और बड़ा ही आकर्षक है और फ़िर सत्यता से रती भर इधर उधर नहीं।

पंचम:- यह एक व्यापक वृत्तांत जिस के लिए एक सूरह का अवतरण हुआ जो एक सौ से अधिक आयतों पर आधारित है और इसी वृत्तांत से सम्बन्धित है।

षष्ठ:- इस वृत्तांत में कई चरित्र सामने आते हैं मगर यूसुफ़ का चरित्र अपनी हैसियत और अपना मूल्य इस तरह मनवा लेता है कि जिस को मूर्खों ने तुच्छ पत्थर समझ कर फ़ेंक दिया था वह वास्तव में बड़ा कीमती हीरा था। और आख़िर कार वह ताज बन कर चमका।

5. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वृत्तांत यद्यपि बाइबिल में बयान हुआ है (उत्पत्ति अध्याय ३७ से ५०) किन्तु पहली बात तो यह कि यह वृत्तांत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानकारी में नहीं था क्यों कि आप उम्मी (अनपढ़) थे इस लिए न तौरात को आप पढ़ सकते थे और न किसी अन्य किताब को। इस के अतिरिक्त यह कि कुर्आन में यह वृत्तांत जिस तरह बयान हुआ है वह बाइबिल के बयान से बहुत भिन्न है। अगर आप ने अहले-किताब से सुन कर यह वृत्तांत बयान किया होता तो यह अन्तर न होता और न ही यह प्रमुखता होती और वे पक्ष भी सामने न आते जो बाइबिल में सिरे से बयान ही नहीं हुए हैं।

6. यूसुफ़ की वंशावली अति उत्तम एवं श्रेष्ठ है। उन के पिता याक़ूब नबी थे उन के दादा इस्हाक़ भी नबी थे और उन

के परदादा इब्राहीम भी नबी थे (सलातुल्लाहि अलैहिम् अज्मईन) यूसुफ अलैहिस्सलाम इस नबी परिवार के दीप थे बल्कि आगे जा कर नबी के पद से भी अलंकृत हुए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की शान में फ़रमाया:-

الكریم ابن الکریم ابن الکریم یوسف
بن یعقوب بن اسحاق بن ابراهیم - (بخاری کتاب التفسیر)

“वह स्वयं शरीफ़ बाप के बेटे थे उन के दादा भी शरीफ़ थे और परदादा भी शरीफ़। यूसुफ़ पुत्र याक़ूब पुत्र इस्हाक़ पुत्र इब्राहीम।” (बुखारी किताबुतफ़सीर)

7. मूल अरबी (Text) में साजिदीन (झुके हुए) का शब्द इस्तेमाल हुआ है। यह माथे को ज़मीन पर टेक देने पर भी लागू होता है और मात्र झुकने पर भी अरबी में ख़जूर के झुके हुए पेड़ “نخلة الساجدة” अर्थात् झुके हुए वृक्ष कहते हैं (देखिए लिसानुलअरब जिल्द ३ पृष्ठ २०६) आयत में सितारों और सूरज और चाँद का झुका होना ज़ाहिर है ज़मीन पर माथे को टेक देने के भावार्थ में नहीं हो सकता बल्कि अपने वास्तविक शाब्दिक अर्थ में ही हो सकता है। अर्थात् उन का झुकते हुए नीचे उतर आना। (और वास्तविक सूरत का ज्ञान अल्लाह ही को है।)

8. यूसुफ़ के पिता याक़ूब (अलैहिस्सलाम) नबी थे वह सपने का अर्थ समझ गए कि ग्यारह सितारों से मुराद यूसुफ़ के ग्यारह भाई हैं और सूरज और चाँद से उन के माता पिता तात्पर्य हैं। वह यह भी समझ गए कि इस सपने का इशारा इस बात की तरफ़ है कि यूसुफ़ का भविष्य अति उज्ज्वल है। वे सत्ता के पद पर आसीन होंगे और यह पूरा परिवार उन के आधीन होगा।

चूँकि यूसुफ़ के दस भाई सौतेले थे और उन से ईर्ष्या रखते थे इस लिए याक़ूब अलैहिस्सलाम ने इस आशंका के चलते कि उन के अन्दर ईर्ष्या की आग भड़क न उठे और वे यूसुफ़ के विरुद्ध कोई साजिश न कर डालें सपने को बयान करने से मना कर दिया।

कुआन के कुछ टीकाकारों ने इस आधार पर कि यूसुफ़ ने सपने में अपने भाइयों को तारों के रूप में देखा था, यह राय क़ायम की है कि ये सब बाद में नबी हो गए। लेकिन यह मात्र भोलापन है क्यों कि एक नबी की जीवनी नबी नियुक्त होने से पूर्व भी बड़ी पवित्र होती है और वह नैतिकता एवं आचरण के उच्च आदर्श पर होता है जब कि यूसुफ़ के इन सौतेले भाइयों के बारे में मालूम है कि वे किस नैतिकता एवं किस अचरण के लोग थे और कैसे कैसे अपराध के भागीदार हुए। रहा उन का

सितारों के रूप में दिखाई देना तो इस से उन का नबी होना ज़रूरी नहीं ठहरता। यूसुफ़ ने अपनी माता को चाँद के रूप में देखा था तो क्या वह भी नबी हो गई? अल्लामा इब्ने तीमिया ने इस विचार का खण्डन कड़े शब्दों में किया जिस का सार यह है:

“जिस बात पर कुआन, शब्दकोष एवं काल्पनिक अर्थ अथवा भावार्थ तर्क प्रस्तुत करते हैं वह यह है कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई नबी नहीं थे। न कुआन में कहीं है कि अल्लाह तआला ने उन्हें नबी बनाया था। और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह नक्ल है और न ही किसी सहाबी का कोई कथन इस के समर्थन में पाया जाता है.....रहा “अस्बात” (सन्तानों) से तर्क करना तो इस से मुराद याक़ूब की अपनी औलाद नहीं बल्कि उन की नस्ल है....और सही बात यह है कि अस्बात का लक़ब मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में दिया गया और उस समय से उन में (अर्थात् बनी इस्राईल में) नुबुव्वत का सिलसिला चला करना इन से पहले सिवाय यूसुफ़ के उन में किसी नबी का ज़िक्र नहीं मिलता।..... अल्लाह पाक ने यूसुफ़ के भाइयों के जिन बड़े बड़े गुनाहों का ज़िक्र किया है उस प्रकार के गुनाह का ज़िक्र किसी भी नबी के बारे में नहीं किया कि वह नबी होने से पूर्व इस का अपराधी हुआ था।” (रुहुलमआनी लिलआलूसी जिल्द ४ पृष्ठ १८४)

9. अर्थात् नुबुव्वत के पद से अलंकृत करेगा।

10. मूल अरबी (Text) में “तावीलुलअहादीस” का शब्द प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है बातों की तह में जाना और उन की वास्तविकता मालूम करना। तात्पर्य मामले की समझ, दूर दृष्टि और सही फल निकालना है जिस में स्वप्न फल का ज्ञान विशेष रूप से शामिल है।

11. मुराद नेतृत्व की नेमत और दुनिया एवं आखिरत की नेकियां और भलाइयाँ हैं। आले-याक़ूब से मुराद याक़ूब की नस्ल है जो आगे चल कर बनी इस्राईल और जिस को अल्लाह तआला ने विश्व की क़ौमों में एक प्रमुख क़ौम बना कर उठाया और लोगों की रहनुमाई का माध्यम बनाया।

12. वह इल्म वाला (सर्वज्ञ) है इस लिए उसे भविष्य की पूरी जानकारी है और वह हकीम (तत्त्वदर्शी) है इस लिए उस के फ़ैसले बेहद हकीमाना (अति तत्त्वपूर्ण) होते हैं।

13. इस से स्पष्ट हुआ कि सूरह यूसुफ़ मक्का के बहुदेववादियों के सवालियों के जवाब में नाज़िल हुई। सवाल सम्भव है कि यहूदियों के इशारे पर किया गया हो ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इम्तिहान लिया जाये कि आप यूसुफ़ का क़िस्सा किस तरह बयान फ़रमाते हैं जब कि आप ने तौरात पढ़ी नहीं है।

उन के इस सवाल के जवाब में अल्लाह तआला ने यूसुफ़ का वृत्तांत बहुत ही शिक्षाप्रद तरीके पर बयान कर दिया और सवाल करने वालों को विचार करने का निमंत्रण दिया कि यूसुफ़ और उस के भाइयों के बीच जो मामला पेश आया उस में अल्लाह की कुदरत और हिकमत की अद्भुत निशानियाँ हैं कि किस तरह उस की तद्बीर ग़ालिब आ जाती है और उस की योजना पूरी हो कर रहती हैं।

मुद्ई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है
वही होता है जो मन्जूर ख़ुदा होता है

यूसुफ़ को उन की सत्यनिष्ठा के कारण अल्लाह का समर्थन एवं सहायता प्राप्त थी इस लिए न उन के भाई उन का कुछ बिगाड़ सके और न मिस्त्र की वे औरतें जिन्होंने यूसुफ़ के खिलाफ़ साज़िश की, और उन्हें जेल भिजवाया। आज नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कुरैश जो व्यवहार कर रहे हैं वह उस व्यवहार से तनिक भी भिन्न नहीं है जो यूसुफ़ के भाइयों ने यूसुफ़ के साथ किया था। इस तरह वे अपने को एक ऐसे अन्जाम की ओर ढकेल रहे हैं जिस में उन के लिए शर्मिन्दगी और पछताने के सिवा कुछ नहीं है।



8. जब ऐसा हुआ कि वे (अर्थात् यूसुफ़ के भाई) कहने लगे यूसुफ़ और उस का भाई ¹⁴ हमारे पिता को हम सब से अधिक प्रिय हैं हालाँकि हम एक जत्था हैं ¹⁵। निश्चय ही हमारे पिता खुली गलती पर हैं।

إِذْ قَالُوا لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ آبَائِنَا مِنَّا
وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ آبَاءَنَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑧

9. यूसुफ़ को क़त्ल करो या उस को किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान तुम्हारी ही तरफ़ हो जाए। इस के बाद तुम नेक बन जाओगे ¹⁶।

لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَوْطَارْحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهَ أَبِيكُمْ
وَتَكُونُوا مِن بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ⑨

10. उन में से एक कहने वाले ने कहा यूसुफ़ को क़त्ल न करो बल्कि अगर तुम्हें कुछ करना ही है तो किसी अन्ये कुँए में डाल दो। कोई गुजरने वाला क़ाफ़िला उसे निकाल लेगा।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقَوْهُ فِي غِيَبَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ⑩

11. उन्होंने कहा अब्बा जान ! आप यूसुफ़ के मामले में हम पर भरोसा क्यों नहीं करते हालाँकि हम उस के बड़े हितैषी हैं।

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ
وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ⑪

12. कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि खाए पिये और खेले कूदे ¹⁷। हम उस की सुरक्षा के ज़िम्मेदार हैं। ¹⁸

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَزِرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ⑫

13. उस ने कहा तुम्हारा उस को अपने साथ ले जाना मेरे लिए दुःखद है और मुझे डर है कि कहीं भेड़िया उसे खा न जाए और तुम उस से ग़ाफ़िल हो ¹⁹।

قَالَ إِنِّي لَيَحْزَنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ
أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ⑬

14. उन्होंने कहा हमारे पूरे जत्थे के मौजूद होते हुए भेड़िये ने उसे खा लिया तो हम बिलकुल नाकारा होंगे।

قَالُوا لَيْنَ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ
إِنَّا إِذَا الْخِيسْرُونَ ⑭

15. फिर जब वे यूसुफ़ को ले गए ²⁰ और तय कर लिया कि उन को अन्ये कुँए में डाल देंगे तो हम ने उस की ओर वहाँ की कि (एक समय आयेगा जब) तुम उन्हें उन का यह मामला जता दोगे और उन्हें इस का ख़्याल भी नहीं होगा ²¹।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْتَمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي
غِيَبَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ بِأَمْرِهِمْ
هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑮

16. और वे रात गए अपने बाप के पास रोते हुए आए ²²।

وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ⑯

14. मुराद बिनयामीन है जो यूसुफ़ का सगा भाई था।

15. यूसुफ़ और बिनयामीन सब से छोटे थे इस लिए कुदरती बात है कि याक़ूब अलैहिस्सलाम को अधिक प्रिय हों। और यूसुफ़ तो अपनी सच्चाई, बुद्धिमानी और उच्च क्षमताओं के कारण याक़ूब की आँख का तारा था मगर उन्होंने ने अपने दूसरे बेटों के साथ कोई अन्याय नहीं किया था वरना इस अवसर पर वे अपने पिता की ज़रूर शिकायत करते। बाइबिल में है।

“सो जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है तब वे उस से बैर करने लगे। और उन के साथ ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे।” (उत्पत्ति ३७:४)

“हालाँकि हम एक जत्था हैं” से उन की मुराद यह थी कि खानदान की सुरक्षा के पहलू से असली महत्व जत्थे की है न कि किसी एक व्यक्ति की। क्योंकि उस ज़माने में कनान में लोग स्वतंत्र कबीलाई जीवन व्यतीत करते थे और कोई संगठित शासन नहीं था। उन का कहना था कि इन परिस्थितियों में हम दस भाई जो एक जत्था हैं अपने बाप के लिए अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं इस लिए पिता के प्यार पर ज़्यादा हक़ हमारा है न कि यूसुफ़ और बिनयामीन का। मगर याक़ूब की नज़र में असल मूल्य नैतिकता और आचरण का था इस लिए उन्हें यूसुफ़ से स्वभाविक रूप से अधिक स्नेह था।

16. यद्यपि इस षडयंत्र का प्रेरक उन की यह इच्छा थी कि उन के पिता का स्नेह उन के लिए ख़ास हो कर रह जाए मगर उन की आत्मा अन्दर से कह रही थी कि इस सूरत में वे गुनाह कर बैठेंगे। लेकिन शैतान ने उन्हें यह पट्टी पढ़ा दी कि अपनी राह के कांटे को दूर करने के लिए गुनाह करना आवश्यक ठहरे तो कर लेने में आपत्ति नहीं है। क्यों कि इस के बाद जब बाप की मुहब्बत और उन का ध्यान उन के लिए विशिष्ट हो कर रह जाएगा तो वे भी एकाग्रता के साथ नेकी की तरफ़ बढ़ सकेंगे और उन के लिए नेक बन कर रहना आसान होगा।

इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि शैतान इन्सान को किस ख़ूबसूरती के साथ गुनाह पर आमदा करता है और किस तरह ग़लत राह पर डाल देता है।

17. खेलकूद से तात्पर्य दौड़ और तीरअन्दाज़ी जैसे खेल हैं जो उस समय की देहाती ज़िन्दगी की दृष्टि से

आवश्यक था।

18. उन्होंने ने इस सुझाव से सहमति व्यक्त की कि यूसुफ़ को कुँए में डाल दिया जाए और चाल यह चली कि यूसुफ़ को तफ़रीह के बहाने जंगल में ले जाने की अनुमति अपने पिता से प्राप्त कर लें और उन्हें इत्मीनान दिलाएँ कि वे पूरी तरह यूसुफ़ की रक्षा करेंगे।

इस से ज़ाहिर हुआ कि जब इन्सान झूठ को वैध कर लेता है तो उसे न बातें बनाने में संकोच होता है और न ख़तरनाक योजनाएँ बनाने में।

19. याक़ूब अलैहिस्सलाम के लिए यह बात इस लिए दुखदायिनी थी कि उन्हें यूसुफ़ के बारे में यह डर था कि उन के सौतेले भाई उन को परेशान न करें। एवं वे यह ख़तरा भी महसूस कर रहे थे कि उन की बेपरवाही के नतीजे में यूसुफ़ किसी दुर्घटना का शिकार न हो जाएँ। मालूम होता है उस ज़माने में कनान के जंगलों में भेड़िये अधिक थे और उन के हमलों से बचना मुश्किल था इस लिए याक़ूब अलैहिस्सलाम ने एक मौजूद संभावित ख़तरे का ज़िक्र किया।

20. अर्थात् अपने बाप से ज़िद कर के वे यूसुफ़ को अपने साथ ले गए।

21. अर्थात् हम ने वहय भेजकर यूसुफ़ को इत्मीनान दिलाया कि ये तुम्हारे साथ जो कुछ कर रहे हैं उस से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। बल्कि एक समय आएगा जब ये अपने किये पर पछताएँगे। तुम ज़िन्दा सलामत रह कर इन्हें जताओगे कि इन्होंने तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया था। और उस समय तुम जताओगे जब कि उन के ख़याल में भी यह बात नहीं होगी कि जो व्यक्ति उन्हें यह किस्सा याद दिला रहा है उन का भाई यूसुफ़ है। आगे चल कर वह घटना जिस तरह घटी उस का वर्णन आयत ८९ और ९० में हुआ है।

ध्यान रहे कि यह वहय यूसुफ़ के नबी बनाए जाने से पहले उन की तरफ़ भेजी गई थी। उस समय उन की आयु जैसा कि बाइबिल का बयान है केवल १७ साल थी।

22. अर्थात् यूसुफ़ को कुँए में छोड़ कर वे रात को घर वापस आ गए। इस से मालूम हुआ कि वे क़रीब ही के इलाके में गए थे। वरना रात तक घर नहीं पहुँच सकते थे।

वे टसुए बहाते हुए अपने पिता के पास पहुँचे थे ताकि यूसुफ़ से सहानुभूति का प्रदर्शन हो और उन के पिता उन की बातों का विश्वास करें।

17. उन्होंने कहा अब्बा जान ! हम दौड़ में एक दूसरे का मुकाबला कर रहे थे और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था कि भेड़िये ने उस को खा लिया ²³। और आप हमारी बात मानने वाले नहीं हैं चाहे हम सच बोल रहे हों ²⁴।

18. और वे उस के कुर्ते पर झूठ-मूट का खून लगा लाए थे। उस ने (बाप ने) कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ने एक बात गढ़ ली है ²⁵। अब मेरे लिए सब्र जमील (अच्छा धैर्य) है ²⁶ और जो कुछ तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह ही से मदद माँगता हूँ ²⁷।

19. और (इधर) एक क्राफ़िला आया तो उस ने अपना सक्का (पानी भरने वाला) भेजा। उस ने डोल डाला तो पुकार उठा बड़ी खुशी की बात है यह तो एक लड़का है ²⁸। और उस को तिजारत का माल समझ कर छिपा लिया ²⁹। वे जो कुछ कर रहे थे अल्लाह उस से अभिज्ञ था।

20. और उन्होंने ने उस को थोड़ी क़ीमत पर कि गिनती के चन्द दिरहम थे, बेच दिया ³⁰। और इस मामले में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी ³¹।

21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा था उस ने अपनी पत्नी से कहा इसे आदर सम्मान से रखो ³²। असंभव नहीं यह हमारे लिए लाभदायक सिद्ध हो या हम इसे बेटा बना लें ³³। इस तरह हम ने यूसुफ के क़दम उस सरज़मीन में जमा दिये ³⁴ और (इस परीक्षा से इस लिए गुज़ारा) ताकि उसे बातों की हकीक़त मालूम करना सिखाएँ ³⁵। अल्लाह अपना हुक्म लागू कर के रहता है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं हैं ³⁶।

22. और जब वह अपनी प्रौढ़ता को पहुँच गया ³⁷ तो हम ने उसे हुक्म (निर्णय शक्ति) और इल्म (ज्ञान) प्रदान किया। सुकर्म का रवैया अपनाने वालों को हम इसी तरह बदला देते हैं ³⁸।

قَالُوا يَا أَبَانَا أَذَهَبْنَا سَتِيقٌ
وَتَرَكْنَا يَوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ
وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ①

وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ
قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ②

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَةً
قَالَ يَبْنَؤُا هَذَا غُلٌّ
وَاسْرُوءُ بَضَاعَةٍ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ③

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخِيسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ
وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الرَّاهِبِينَ ④

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ
عَسَى أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ
فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ
عَلَى أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑤

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ⑥

23. याकूब अलैहिस्सलाम की ज़बान से एक संभावित खतरे के तहत जो शब्द निकल गए थे यूसुफ़ के भाईयों ने उन को ही ले कर यूसुफ़ के मारे जाने का क्रिस्सा गढ़ लिया।

24. उन्होंने ने क्रिस्सा गढ़ तो लिया लेकिन उन्हें खुद यक्रीन नहीं आ रहा था कि उन के पिता उन की बातों को मानेंगे।

25. उन के झूठ का पोल तो इस बात से ही खुल रहा था कि कुर्ता फटा हुआ न था। यह किस तरह संभव था कि भेड़िया हमला करे और कुर्ता न फटे। इस खुले झूठ को याकूब अलैहिस्सलाम किस तरह सच्ची घटना स्वीकार कर सकते थे। उन्होंने ने अविलंब कहा कि यह मनगढ़ंत क्रिस्सा है।

इस से यह उसूली बात स्पष्ट होती है कि जब किसी खबर की पुष्टि अनुमानों एवं चिन्हों से न होती हो और खबर देने वाले संदिग्ध अथवा अविश्वसनीय हों तो ऐसी खबर अमान्य होगी।

26. सब्रे-जमील (अच्छा धैर्य) का मतलब है मुसीबत को खूबी के साथ सहन करना और तकलीफ़ पहुँचने पर उच्च साहस एवं महानता का परिचय देना। कष्ट या दुखों पर दुख की अभिव्यक्ति तो सब्र के विपरीत है।

कुआन याकूब अलैहिस्सलाम के चरित्र को इस तरह प्रस्तुत करता है जो एक नबी की शान के अनुकूल है लेकिन बाइबिल का अन्दाज़ इस से बिल्कुल भिन्न है। अतः बाइबिल में है कि यूसुफ़ के बारे में खबर सुन कर याकूब ने अपने कपड़े फाड़ डाले और बहुत दिनों तक मातम करते रहे (देखिए उत्पत्ति ३७:३४) और ऐसी कितनी ही जगहों पर बाइबिल के संकलन कर्ताओं ने अपने नबियों के चरित्र को बिगाड़ कर के प्रस्तुत किया है।

27. यह अल्लाह पर पूर्ण विश्वास की अभिव्यक्ति है।

28. बाइबिल के बयान से मालूम होता है कि यह इस्माईलियों का क्राफ़िला था जो तिजारत का सामान ले कर मिस्त्र जा रहा था। इस से अन्दाज़ा होता है कि वह कुआँ जिस में यूसुफ़ को डाल दिया गया था उस राजमार्ग पर स्थित था जो कनान से मिस्त्र को जाता था। यूसुफ़ को उस के भाई जंगल में नहीं ले गए थे बल्कि राजमार्ग पर आ कर एक ऐसे कुँए में जिस के चारों ओर पत्थरों की मुँडेर बनी हुई नहीं थी (जुब्ब ऐसे ही कुँए को कहते हैं) डाल दिया था।

क्राफ़िला जब उस के निकट रुका तो उस ने अपने एक आदमी को पानी लाने के लिए कुँए पर भेज दिया। उस ने जब डोल डाला तो यूसुफ़ ने उस डोल का सहारा लिया और जब ये ऊपर आ गए तो सक्क्रा को यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि यह एक लड़का है जो कुँए में फँस गया था और जिस के लिए डोल बचाव का साधन बना। अतिरिक्त प्रसन्नता इस बात की कि

एक गुलाम उन के हाथ लगा जिस की क्रीमत उन्हें वसूल होगी।

29. उस ज़माने में जब किसी को खोया हुआ लड़का रास्ते में पड़ा हुआ मिल जाता-----जिस को, धर्मशास्त्र (फ़िक्ह) की परिभाषा में लक्रीत----कहा जाता है तो वह उसे गुलाम बना लेता और फिर चाहता तो किसी के हाथ बेच देता। क्राफ़िला वालों ने भी यूसुफ़ के साथ यही मामला किया। उन्हें सौदागरी का माल समझकर उस समय छिपा लिया ताकि लड़के का कोई दावेदार निकल न आए। उस के बाद उन्हें मिस्त्र ले जा कर बेच दिया जैसा कि आगे ज़िक्र आ रहा है।

30. बेचने वाले यही क्राफ़िला वाले थे और मिस्त्र ले जा कर उन्हें बेच दिया था। उन्हें कुछ पता न था कि कैसी मूल्यवान हस्ती उन के हाथ लगी है इस लिए उन्होंने चाँदी के कुछ सिक्कों के बदले यूसुफ़ को बेच दिया।

बाइबिल का बयान उलझा हुआ है। उस में बताया गया है कि यूसुफ़ को कुँए से निकाला तो था क्राफ़िला वालों ने लेकिन वहाँ यूसुफ़ के भाई मौजूद थे और उन्होंने २० दिरहम क्रीमत वसूल की थी लेकिन यह बात न कुआन के बयान के अनुकूल है और न ही अनुमान से निकटतम।

31. क्राफ़िला वालों को इस बात से कोई दिलचस्पी नहीं थी कि उस गुलाम की सही क्रीमत उन्हें वसूल हो। क्यों कि यह गुलाम मुफ्त उन के हाथ लगा था।

32. क्राफ़िला मिस्त्र जा रहा था इस लिए वे अपने साथ यूसुफ़ को मिस्त्र ले गए और वहाँ उन्हें गुलाम के तौर पर बेच दिया। मिस्त्र में जिस व्यक्ति ने यूसुफ़ को खरीदा वह हुकूमत का उच्च पदाधिकारी था बाइबिल में उस का नाम फ़ोतीफ़ार आया है और उसे मिस्त्री फ़िराऊन (अर्थात् मिस्त्र के शासक) का हाकिम और जल्लादों का प्रधान कहा गया है। कुआन ने जैसा कि आगे चल कर मालूम होगा उस के लिए अज़ीज़ का लक़ब (उपनाम) प्रयोग किया है।

वह यूसुफ़ को देखते ही समझ गया कि यह किसी शरीफ़ घराने का लड़का है जो मुसीबत में गिरफ़्तार हो कर यहाँ पहुँच गया है। लड़का अति सुशील, चरित्रवान, और विश्वासपात्र है इस लिए उस ने अपनी पत्नी से कहा कि इस के साथ गुलामों का व्यवहार न करना बल्कि आदर के साथ रखना।

33. हाकिम आदमी की पहचान रखता था इस लिए यूसुफ़ की क़द्र उसने पहचान ली और संभवतः वे निःसंतान था इस लिए उस ने यह विचार किया कि संभव है हम इसे अपना बेटा बना लें।

34. अल्लाह तआला की योजना यह थी कि यूसुफ़ को मिस्त्र का शासक बनाया जाए। इस उद्देश्य के लिए आवश्यक था कि उन्हें मिस्त्र के सभ्य जीवन का अनुभव हो। अल्लाह

तआला ने ऐसे साधन किये कि मिस्र में उन के पाँव जम गए। और एक हाकिम के घर में रह कर उन्हें इस अनुभव का बेहतरीन अवसर मिला।

35. अर्थात् यूसुफ़ को परीक्षाओं से गुज़ारने में अल्लाह तआला की मसलहत यह थी कि उन में वह क्षमता एवं वह शक्ति पैदा हो जो बातों की तह तक पहुँचने और उन की असल वास्तविकता मालूम करने के लिए आवश्यक है। हालात के थपेड़े इन्सान को गहराई में जाने के लिए विवश करते हैं और जब वह गहराई में जाता है तो उस का दामन मोतियों से भर जाता है।

36. यह एक अखण्डनीय वास्तविकता है और इस को यहाँ बयान करने से अभिप्रेत एक तरफ़ तो यह स्पष्ट करना है कि यूसुफ़ के लिए उन ईर्ष्या रखने वालों के बिलकुल विपरीत दुनिया और आखिरत की भलाइयों की राहें खुलती चली गईं और दूसरी ओर यह इशारा करना है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला की यह जो योजना है वह लागू हो कर रहेगी और उसे लागू होने से न कुरैश रोक सकते हैं और न कोई अन्य शक्ति।

37. प्रौढ़ता (اشد) को पहुँचने से मुराद जवानी

को पहुँचना है। यह अठराह बीस साल की आयु का ज़माना है। जब अशुद अर्थात् अच्छी तरह सूझ बूझ पैदा हो जाती है। सूरह अन्आम आयत १५२ में अशुद اشد शब्द का इस्तेमाल इसी अर्थ में हुआ है।

38. हुक्म से मुराद निर्णय शक्ति है और इल्म से मुराद अन्तर्दृष्टि की ज्योति है। ये चीज़ें यूसुफ़ को नुबुव्वत से पहले जवानी की आयु को पहुँचने पर हासिल हुई थीं और अल्लाह तआला की तरफ़ से उन के अच्छे कामों का इनाम था जो तुरन्त उन्हें मिला।

इसी मौक़े पर अल्लाह तआला ने अपने इस नियम (सुन्नत) का भी ज़िक्र फ़रमाया है कि जो लोग अच्छे और नेक कामों का रवैया अपनाते हैं अर्थात् खुदा का बन्दा होने की हैसियत से अपनी ज़िम्मेदारियों को भली भाँत अदा करते हैं और अपने अन्दर अच्छे गुणों की परवरिश करते हैं उन को अल्लाह सही फैसला करने की शक्ति प्रदान करता है, और इस काम के लिए जिस अन्तर्दृष्टि की आवश्यकता है उस से सुशोभित करता है। नेक और अच्छे कामों का यह इनाम इन्सान को उस के पद और दर्जे के अनुसार दुनिया ही में मिल जाता है।



यूसुफ़ याक़ूब की आँखों का तारा और नयन ज्योति थे
क्यों कि वे जानते थे कि यूसुफ़ जैसी हस्ती
दुनिया में मुश्किल ही से पैदा होती है ।

हज़ारो साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

23. और जिस औरत के घर में वह था, वह उस को अपनी ओर आकृष्ट करने लगी ³⁹। उस ने दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आ जाओ। उस ने कहा अल्लाह की पनाह ! वह मेरा रब है उस ने मुझे अच्छा मक़ाम प्रदान किया है। अत्याचारी लोग कभी सफलता नहीं पाते ⁴⁰।

وَرَأَوْنَهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَقَتِ الْبَابَ
وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ
إِنَّهُ لَا يَفْلَحُ الظَّالِمُونَ ٣٩

24. औरत ने तो इस का संकल्प कर ही लिया था और वह भी इस का संकल्प करता अगर उस ने अपने रब का प्रमाण न देख लिया होता ⁴¹। ऐसा इस लिए हुआ ताकि हम उस से बुराई और बेहयाई को दूर रखें ⁴²। निस्संदेह वह हमारे खास बन्दों में से था ⁴³।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْبُهَا رَبِّهَا
كَذَلِكَ لِنَصْرَفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ٤٠

25. और दोनो दरवाज़े की ओर दौड़े और औरत ने यूसुफ़ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया और दोनों ने दरवाज़े पर औरत के पति को उपस्थित पाया। कहने लगी क्या सज़ा है उस व्यक्ति की जो आप की पत्नी के साथ बुराई का इरादा करे सिवाय इस के कि उस को कैद किया जाय या कोई दुःखदायी दण्ड दिया जाए ⁴⁴।

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا
سَيِّدَهَا كَلَّا الْبَابُ طُقِيَ مَا حَزَّ مِنْ آرَادَ
بِأَهْلِكَ سُوءٍ إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٤١

26. यूसुफ़ ने कहा इसी ने मुझे रिझाने की कोशिश की ⁴⁵ और औरत के परिवार वालों में से एक गवाह ने गवाही दी कि अगर इस का कुर्ता आगे से फटा है तो औरत सच्ची है और वह झूठा है।

قَالَ هِيَ رَأَوْنَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا
إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
وَهُوَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ٤٢

27. और अगर उस का कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी है और वह सच्चा है ⁴⁶।

وَلِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَّابَتْ وَهُوَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ٤٣

28. जब उस ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फटा है तो कहा यह तुम औरतों की चाल है और तुम्हारी चालें बड़ी ख़तरनाक होती हैं ⁴⁷।

فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ
كِبْدِ كُنَّ إِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيمٌ ٤٤

29. यूसुफ़ ! इस से दरगुजर कर और ऐ औरत ! तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग। वास्तव में तूही ख़तावार है ⁴⁸।

يُوسُفُ اعْرِضْ عَنْ هَذَا
وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَاطِئِينَ ٤٥

39. बाइबिल में है कि यूसुफ सुन्दर और रूपवान था (उत्पत्ति ३९:६) गोया अल्लाह तआला ने उन्हें सूरत और सीरत दोनों की सुन्दरता से अलंकृत किया था।

यूसुफ को मिस्री अजीज ने अपने घर में रखा था और अपने घर का मुख्तार बना कर अपना सब कुछ उसे सौंप दिया था। (उत्पत्ति ३९:२, ३, ४) अजीज की पत्नी यूसुफ पर मुग्ध हो गई और एक दिन अवसर पा कर उन्हें अपने प्रेम जाल में फाँसना चाहा।

ध्यान रहे यूसुफ की सुन्दरता के जो क्रिस्से सामान्य रूप से प्रसिद्ध हैं वह बड़े ही अतिशयोक्ति (मुबालगे) पर आधारित हैं और कहानी मात्र हैं। अगर यह ऐसी सुन्दरता होती जो दुनिया में किसी को कभी प्रदान ही नहीं हुई तो कुआन इस का जिक्र करता। मगर कुआन में सिरे से यूसुफ की सुन्दरता का जिक्र ही नहीं है। उस ने यूसुफ के चरित्र की सुन्दरता को उजागर किया है जो कि इस वृत्तांत का वास्तविक उद्देश्य है। जब कि कहानी प्रिय मानसिकता इस को कहानी के रंग में देखना चाहती हैं। अतः उन्होंने ने यूसुफ के उस वृत्तांत को जिसे कुआन ने अत्याधिक जंचे तुले अन्दाज में पेश कर दिया था, यूसुफ एवं जुलैखा का क्रिस्सा बना कर रख दिया है।

40. अजीज की पत्नी ने एक दिन मौक़ा पाकर कमरे के दरवाज़े बन्द कर दिये और यूसुफ को खुले तौर पर बेहयाई की दअवत दी। मगर यूसुफ शराफ़त की आकृति थे वे किस प्रकार अपने दामन को गन्दा कर सकते थे। उन्होंने ने तुरन्त जवाब दिया “अल्लाह की पनाह” मैं यह काम कैसे कर सकता हूँ जब कि मेरे रब ने मुझे अच्छा मक़ाम और अच्छा दर्जा प्रदान किया है इस से यूसुफ की मुराद यह थी कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) से नवाज़ा है। उन को नबी का पुत्र होने का श्रेय प्रदान किया। उन की क़दम क़दम पर मार्ग दर्शन और सहायता की। मिस्र में उन को सम्मान बख़्शा। ज्ञान और अन्तरदृष्टि की रौशनी प्रदान की। नैतिकता के उच्च शिखर पर आसीन किया और इज़्जत एवं पवित्रता और शर्म एवं हया के लिए ऐसा अनुभूतिशील स्वभाव प्रदान किया कि भाव की सुन्दरता को किसी श्रृंगार की आवश्यकता बाक़ी नहीं रही।

यूसुफ के कहने का मंशा यह था कि जिस हस्ती ने मुझे उच्च स्थान प्रदान किया है मैं उस की अवज्ञा एवं कृतघ्नता कर के अपने को आयोय्य साबित कर दूँ? अगर मैं तुम्हारी बातों में आ कर बेहयाई में लिप्त हुआ तो कुकर्मों और अत्याचारी ठहरूँगा और ज़ालिमों के बारे में मालूम है कि वे कभी कामयाब नहीं हो सकते। दुनिया में उन के लिए रुस्वाई है और आखिरत में उन्हें कड़ी सज़ा भुगतनी होगी।

गौर कीजिए यूसुफ का जवाब कितना छोटा मगर कितना

युक्तिपूर्ण एवं तर्क संगत था और उस के एक एक शब्द से किस तरह ईश-भय और आखिरत के एहसास की अभिव्यक्ति हो रही थी !

स्पष्ट रहे कि आम तौर से कुआन के भाष्यकारों ने इस आयत में **وَرَبِّیْ** “वह मेरा रब है” का अर्थ यह बयान किया है कि यह बात यूसुफ अलैहिस्सलाम ने मिस्री अजीज के बारे में कही थी लेकिन जुजाज (शब्दकोष विशेषज्ञ) कहते हैं इस में “**هُوَ**” अर्थात् वह की ज़मीर (Personal Pronoun) अल्लाह की तरफ़ है (फ़तुलक़दीर जिल्द ३ पृष्ठ १७) अर्थात् यह बात यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के बारे में फ़रमाई थी कि वह मेरा रब है उस ने मुझे अच्छा मक़ाम प्रदान किया है। हम जुजाज के मत से सहमत हैं क्योंकि प्रथम यह कि ‘इन्नुहू’ **هُوَ** में ‘हू’ **هُوَ** (वह) की ज़मीर को अपने निकटतम शब्द अल्लाह की तरफ़ लौटाने के बजाय मिस्री अजीज की तरफ़ लौटाने का कोई औचित्य नहीं जब कि मिस्री अजीज का कोई जिक्र आयत में मौजूद नहीं है। द्वितीय यह कि आगे आयत २५ में मिस्री अजीज के लिए उस की पत्नी के बारे में **سَيِّدَهَا** “सैयदहा” (उस का आक्रा अर्थात् पति) का शब्द इस्तेमाल किया गया है। वहाँ भी कुआन ने मिस्री अजीज के लिए रब का शब्द इस्तेमाल नहीं किया हालांकि शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से “रब्बहा” **رَبُّهَا** (उस का मालिक) इस्तेमाल किया जा सकता था। तृतीय यह कि कुआन में कोई ऐसी मिसाल मौजूद नहीं है कि किसी पैग़म्बर ने किसी इन्सान को काल्पनिक अर्थों ही में सही “रब्बी **رَبِّي** (मेरा रब) कहा हो। चतुर्थ यह कि इस वाक्य के तीन हिस्से हैं और तीनों परस्पर सम्बन्धित हैं। पहला हिस्सा “अल्लाह की पनाह” है जिस में खुदा के ख़ौफ़ की अभिव्यक्ति है। दूसरा हिस्सा “वह मेरा रब है, उस ने मुझे आदर सम्मान प्रदान किया है” में अल्लाह की कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है और “अत्याचारी लोग कभी सफलता नहीं पाएँगे” में आखिरत में इनाम और सज़ा पर विश्वास की अभिव्यक्ति है। लेकिन रब से मिस्री अजीज मुराद लेने की सूरत में इस वाक्य के हिस्से बिल्कुल तितर बितर एवं असम्बन्धित हो जाते हैं। पंचम अवसर खुदा के एहसानों के जिक्र का था न कि मिस्री अजीज के एहसानों के जिक्र का।

इन कारणों से जम्हूर मुफ़स्सिरीन के मतों से सहमति नहीं की जा सकती।

41. अर्थात् औरत तो पहल कर बैठी और यूसुफ भी बढ़ जाता अगर उस ने अपने रब का प्रमाण न देख लिया होता। मतलब यह है कि औरत की तरफ़ से पहल होने के बावजूद यूसुफ को बुराई के इरादे से बाज़ रखने वाली चीज़ अल्लाह का प्रमाण था। प्रमाण से मुराद अल्लाह की वह हुज्जत अथवा

वह तर्क एवं युक्ति है जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के उस बयान में जिस का ऊपर वर्णन हुआ है निहित है। अर्थात् यह बात कि इन्सान गुनाह कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकता। और प्रमाण को देख लेने का मतलब उस को मन की आँख से देख लेना है। यूसुफ़ को यह अन्तरदृष्टि प्राप्त हुई थी इस लिए वह इस नाज़ुक मौक़े पर भी अपने दामन को गन्दगी में लिप्त होने से बचाने में सफल हो गया।

आयत के इस सीधे साधे भावार्थ को छोड़ कर कुआन के टीकाकारों के एक गिरोह ने बे सिर पैर की रिवायतों पर विश्वास कर के बड़ी विचित्र बातें लिखी हैं। जैसे यह कि यूसुफ़ ने याक़ूब या फ़रिश्ते की सूरत देखी थी जो सरासर तकल्लुफ़ है और कुआन की साफ़ बातों को संदिग्ध बना कर उस में नुक्ते पैदा करने के सिवा कुछ नहीं हैं। ऐसी रिवायतों एवं उल्लेखों ने कुआन के वास्तविक भावार्थ एवं उद्देश्य पर परदे डाल दिये हैं। इस लिए कड़ाई के साथ इन का खण्डन ज़रूरी है। इसी तरह:

وَهُمْ بِهِ لَوْلَا أَنْ رَأَى بُرْهَانَ رَبِّهِ

(वह भी उस का संकल्प कर लेता अगर अपने ख़ब का प्रमाण उस ने देख न लिया होता) को कुछ टीकाकारों ने ऐसी रिवायतों के सहारे जो रद्द कर देने के लायक़ हैं यूसुफ़ की तरफ़ ग़लत इरादा और कुछ ऐसी बातों को जोड़ दिया जिन का ज़िक्र भी उचित नहीं है। मगर इमाम राज़ी ने प्रबल अन्दाज़ में इस का खण्डन किया है जिस का सार यह है कि हम यह बात स्वीकार नहीं करते कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने औरत का संकल्प किया था और उस पर तर्क अल्लाह तआला का यह इर्शाद है:-

وَهُمْ بِهِ لَوْلَا أَنْ رَأَى بُرْهَانَ رَبِّهِ

(वह उस का संकल्प कर लेता अगर उस ने अपने ख़ब का प्रमाण देख न लिया होता) यहाँ 'لَوْلَا' (अगर न) का जवाब प्रमुख है अर्थात् पहले ही बयान हुआ है। इस पर ज़ुजाज़ का यह एतिराज़ कि 'لَوْلَا' का जवाब अरबी ग्रामर के अनुसार प्रमुख नहीं हो सकता सही नहीं है क्योंकि कुछ मौक़ों पर किसी बात के महत्व के कारण 'لَوْلَا' (अगर न) के जवाब को प्रमुख रखते हैं। कुआन में इस की मिसाल मौजूद है।

إِنْ كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَبَّنَا عَلَي قَلْبِهَا-

(القصص: १०)

“करीब था कि वह (मूसा की माँ) इस बात को ज़ाहिर कर देती अगर हम उस के दिल को मज़बूत न कर देते।” (अलक़सस-१०)

इस आयत में भी 'لَوْلَا' “लौला” का जवाब प्रमुख है अर्थात्

पहले ही बयान हुआ है। रह गई रिवायतें तो इस की क्या ज़मानत कि जिन लोगों ने इन मुफ़स्सिरीन (अर्थात् सहाबा और ताबिअिन) से यह तफ़सीर नक़ल (उद्धृत) की है वे सच्चे थे।

42. यूसुफ़ के चरित्र का दामन बातिल से پاک है और वह अवैध संकल्प से बिल्कुल बरी हैं। अन्वेषक टीकाकारों और ब्रह्मवेत्तागणों (मुतकल्लिमीन) का यही कहना है और हम भी यही कहते हैं। (देखिये अतफ़्सीरुल कबीर जिल्द १८ पृष्ठ ११५ से १३०) वास्तविकता यह है कि कुआन ने इस नाज़ुक मौक़े का ज़िक्र जिस तरीक़े से किया है उस में यूसुफ़ की किसी अदना ग़लती की तरफ़ भी इशारा नहीं है। अगर उन से कोई ऐसी बात हो गई होती तो उन की तौबा का भी ज़िक्र हुआ होता। लेकिन जब ऐसी कोई बात कुआन में बयान नहीं हुई तो आप से आप उन तफ़सीरी बातों का खण्डन हो जाता है जो कुआन के बयान से मेल नहीं खातीं।

यूसुफ़ ने तो अपनी पवित्रता की यह उत्तम मिसाल क़ायम की जिस का ज़िक्र नबी की हदीस में इस तरह हुआ है:-

“सात व्यक्ति हैं जिन पर अल्लाह तआला क़ियामत के रोज़ अपनी रहमत का साया करेगा उन में एक व्यक्ति वह होगा जिस को किसी सुन्दर और आकर्षक औरत ने बुराई की दअवत दी मगर उस ने जवाब दिया मैं अल्लाह से डरता हूँ। (बुखारी किताबुल अज़ान)

43. अर्थात् वह हमारे मक़बूल बन्दों में से था।

44. यूसुफ़ दरवाज़े की तरफ़ इस लिए दौड़े कि वे अपने को इस फ़ितने से बचाएँ किन्तु अज़ीज़ की पत्नी इस लिए दौड़ी कि उन को दरवाज़ा खोलने न दे और बुराई के लिए मजबूर करे। अतः उस ने यूसुफ़ का लिबास पीछे से इस तरह घसीटा कि फट गया। मगर यूसुफ़ दरवाज़ा खोलने में सफल हो गए। इतिफ़ाक़ की बात यह कि उस समय अज़ीज़ दरवाज़े के पास ही मौजूद था। उस को देख कर पत्नी सटपटाई और अपने बुरे संकल्प पर परदा डालने के लिए झट यूसुफ़ के सर इल्जाम धरा।

45. यूसुफ़ ने बेहद शरीफ़ाना अन्दाज़ से संक्षिप्त जवाब दिया जो उन की बेगुनाही को ज़ाहिर करने के लिए काफी था। और यह मिसाल थी इस बात की कि:-

पाक दामानी हरीफ़े चाक दामानी नहीं

46. दोनों के बयान अलग अलग थे। और घटना का कोई साक्ष्य न था। इस लिए औरत के रिस्तेदारों में से एक व्यक्ति ने जो समझदार था तथ्य की गवाही (Circumstantial Evidence) प्रस्तुत की कि अगर यूसुफ़ का कुर्ता आगे से फटा है तो यह इस बात का प्रमाण है कि पहल

यूसुफ की तरफ से हुई थी और औरत अपने को बचाने की कोशिश कर रही थी लेकिन अगर कुर्ता पीछे से फटा है तो यह इस बात का प्रमाण है कि औरत यूसुफ के पीछे पड़ी थी और जब वह अपना दामन बचाने के लिए भागने लगा तो औरत ने पीछे से उस का कुर्ता घसीट लिया। इस बात को जो तथ्य और प्रमाण की बुनियाद पर कही गई थी कुआन ने गवाही (शहादत) कहा है जिस से यह रहनुमाई मिलती है कि मुकदमों के मामले में हालात की गवाही (Circumstantial Evidence) अर्थात् तथ्यपूर्ण प्रमाणों से पता चलने वाली बातों का भी एक स्थान है।

47. कुर्ते का पीछे से फटा होना इस बात का सबूत था कि पहल यूसुफ की तरफ से नहीं हुई थी इस लिए अजीज ने अपनी पत्नी ही को अपराधी ठहराया। और उस ने यूसुफ के सर जो इल्जाम थोप दिया था उस को नारी का त्रिया चरित्र और फरेब

बताया। इस मौके पर अजीज ने सामान्यतः यह जो बात कही कि तुम औरतों की चालें बड़ी खतरनाक होती हैं तो इस का मतलब यह है कि औरतें जब किसी पुरुष का अपने प्रेम जाल में फंसाना चाहती हैं तो बड़े खतरनाक खेल खेलती हैं। वह एक गलत काम कर के इल्जाम दूसरे के सर थोप देती हैं क्यों कि उन्हें अपने दामन के दाग दिखाई नहीं देते। और न उन में इतना साहस होता है कि अपने अपराध को स्वीकार करें। इस का यह मतलब नहीं है कि हर औरत ऐसी ही होती है बल्कि अभिप्रेत केवल वे औरतें हैं जिनकी मानसिकता ही विकृत होती है क्यों कि ऐसी हरकतें उन्हीं से होती हैं।

48. अजीज ने अपनी पत्नी को अपराधी तो ठहराया लेकिन उस में इतना साहस नहीं था कि उस के विरुद्ध कार्रवाई करता। फिर उसे अपनी पत्नी की बदनामी का भी डर था इस लिए उस ने यूसुफ से कहा कि वह दरगुजर से काम ले।



30. और शहर की कुछ औरतें कहने लगीं अजीज की पत्नी अपने गुलाम को रिझाने में लगी हुई है। उस की मुहब्बत उस के दिल में घर कर गई है। हमारे ख्याल में तो वह खुली हुई गलत राह पर पड़ गई है ⁴⁹।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا
عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرَاهَا
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ③

31. उस (औरत) ने जब उन की यह मक्कारी की बातें सुनीं तो उन्हें बुला भेजा ⁵⁰ और उन के लिए तकिया वाली मजलिस सजायी और हर एक को एक एक छुरी दे दी ⁵¹। और यूसुफ से कहा इन के सामने निकल आओ। जब उन औरतों ने उसे देखा तो उस की अज़मत (महानता) से प्रभावित हुई और अपने हाथ काट बैठीं और पुकार उठीं “हाशालिल्लाह”!(पाकी है अल्लाह के लिए) यह इन्सान नहीं। यह तो बुजुर्ग फ़रिश्ता है ⁵²।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَكًا
وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا
رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا
إِن هَذَا إِلَّا الْمَلِكُ كَرِيمٌ ④

32. वह बोली यह है वह व्यक्ति जिस के बारे में तुम ने मेरी भर्त्सना की थी ⁵³। मैं ने इस को अपनी ओर आकृष्ट करने की चेष्टा की मगर यह बच रहा ⁵⁴। और अगर यह मेरा कहना न मानेगा तो कैद किया जायेगा और अपमानित होगा ⁵⁵।

قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ وَلَقَدْ رَاودْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ
فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا امْرَأَةٌ
لَّيْسَ جَنَّتْ وَلَكِنَّهُنَّ أَهْلُ الْغِيظِ ⑤

33. यूसुफ ने दुआ की ऐ मेरे रब ! कैद मुझे पसन्द है इस की अपेक्षा जिस की तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं ⁵⁶। और अगर तूने इन की चाल से मुझे न बचाया तो मैं इन की ओर आकृष्ट हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा ⁵⁷।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ
وَإِلَّا نَصْرَفُ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ
إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ⑥

34. उस के रब ने उस की दुआ कुबूल फ़रमाई और उन की चालों से उसे बचाया ⁵⁸। निस्संदेह वह सुनने वाला और जानने वाला है।

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑦

35. फिर बावजूद इस के कि वे निशानियाँ देख चुके थे, उन की राय यही हुई कि उसे कुछ अवधि के लिए कैद कर दें ⁵⁹।

ثُمَّ بَدَأَ هُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَأَوْا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّى حِينٍ ⑧

36. और उस के साथ दो और नवजवान भी कैदखाने में दाखिल हुए ⁶⁰। एक ने कहा मैं क्या देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ ⁶¹। दूसरे ने कहा मैं ने देखा है कि मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ और परिन्दे उन को खा रहे हैं ⁶²। हमें इस स्वप्न का अर्थ बताइए। हम देखते हैं कि आप बड़े नेक आदमी हैं ⁶³।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنٌ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا
وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُطْلَى فَوْقَ رَأْسِ خُبْرَاتٍ تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ
نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ⑨

49. जब शहर में इस घटना की चर्चा होने लगी तो कुछ औरतों ने उस पर आश्चर्य करते हुए कहा कि कहाँ यह मिस्री औरत जो उच्च पदाधिकारी की पत्नी है और कहाँ एक कनानी गुलाम जिस पर वह मुग्ध हो गई। उन के कहने का मतलब यह था कि उस गुलाम में आखिर क्या चार चाँद लगे हैं जो उसे अपनी हवस का निशाना बनने के लिए मजबूर कर रही है। क्या वह अपनी हवस को पूरा करने के लिए दूसरी राहें नहीं अपना सकती जब कि वह मान-मर्यादा सब रखती है।

50. अर्थात् अजीज की पत्नी ने जब यह सुना कि औरतें उस के विरुद्ध यह बातें बना रही हैं तो उस ने उस के जवाब में यह चाल चली कि उन को अपने घर आमंत्रित किया।

51. यह दअवत बड़े आयोजन से और बड़ी शान से की गई थी। उस समय मिस्र एक सभ्य देश था इस लिए रीति के अनुसार तकियेदार मजलिस सजायी गई और सत्कार में जो चीजें रखी गई उन के साथ छुरियाँ भी रख दी गई ताकि वे फल अपने हाथ से काट कर खाएँ। (आज भी अरबों में यह प्रचलित है कि वे मेहमानों के सामने पूरे पूरे फल रख देते हैं और साथ में छुरी भी ताकि मेहमान आवश्यकतानुसार अपने हाथ से फल काट का खाएँ)

52. यूसुफ गुलाम की हैसियत में थे इस लिए औरतों की इस मजलिस में उन्हें निकल आने का जो हुक्म दिया गया उस के पालन के बगैर तो कोई चारा नहीं था। मगर इस मौके पर भी उन्होंने तकवा का दामन हाथ से जाने नहीं दिया। इस मजलिस में शरीक होने वाली औरतें ज़ाहिर है अमीरों और रईसों के घर की औरतें रही होंगी। मगर यूसुफ उन के सामने इस शरीफ़ाना अन्दाज़ से आए कि उन की तरफ़ ग़लत निगाह उठा कर भी नहीं देखा। फिर उन की बाह्य सुन्दरता उन की आत्मा की सुन्दरता का और उन का ख़ूबसूरत चेहरा उन के ख़ूबसूरत चरित्र का दर्पण था। गोया यूसुफ़ के सौन्दर्य ने उन के तेज एवं प्रताप का रूप धार लिया था। इस लिए जब उन औरतों ने उन्हें देखा तो एक तेजस्वी व्यक्तित्व की झलक उन के चेहरे पर दिखाई दी और वे ऐसी प्रभावित हुई कि पुकार उठीं कि यह आदमी नहीं बल्कि बुजुर्ग सिफ़त फ़रिश्ता है। यह बात उन के ज़मीर की आवाज़ थी इस लिए अपने आप उन की ज़बान से निकल गई और वे यूसुफ़ का रोबदार सुन्दर रूप देख कर ऐसी दंग रह गई कि बजाय फल काटने के अपने हाथ ज़ख्मी कर बैठीं। यह वास्तव में उन की बुरी इच्छाओं की कुदरती सज़ा थी जो उन को तुरन्त मिल गई।

यह मजलिस किसी अच्छे इरादे से आयोजित नहीं की गई थी। बल्कि इस के पीछे एक साज़िश थी जो यूसुफ़ के विरुद्ध की गई थी। यह बात आयतों के भावार्थ से भी स्पष्ट है और

आगे जैसा कि आयत ३३ में बयान हुआ है यूसुफ़ ने स्पष्ट रूप से इस घटना को साज़िश कहा है। यह साज़िश अजीज की पत्नी ने की थी और उस में ये औरतें भी शरीक थीं। इस मजलिस का आयोजन अजीज की पत्नी ने इस उद्देश्य से किया था कि उन औरतों को जो मुझे बुरा भला कह रही हैं इस बात का अच्छी तरह अन्दाज़ा हो जाये कि मैं किसी ऐसे वैसे गुलाम पर मोहित नहीं हुई हूँ बल्कि एक ऐसे नवजवान से मुहब्बत की पेगें बढ़ा रही हूँ जो अपने युग में अद्वितीय है इस लिए मैं ने कोई ग़लती नहीं की। साथ ही वह चाहती थी कि जो गुनाह वह करना चाहती है उस में उन औरतों को भी शामिल कर ले ताकि वे फिर उसे बुरा भला न कह सकें एवं सब औरतें मिल कर यूसुफ़ को अपनी सुन्दरता से ऐसा लुभाएँ कि वह दिल हार जाए।

इस से यह भी अन्दाज़ा होता है कि उस समय मिस्र का क्या माहौल था। महलों में रहनेवाली नारियाँ अपनी हवस को बुझाने के लिए गुलामों को इस्तेमाल करती थीं क्यों कि उस समय घर घर गुलाम हुआ करते थे और अय्याशी का यह अति सरल एवं सुरक्षित माध्यम था। इस कारण अजीज की पत्नी की और मजलिस की औरतों का यूसुफ़ को रिझाने का प्रयास करना कोई अनोखी बात नहीं थी। लेकिन यूसुफ़ वास्तव में किसी इन्सान के नहीं बल्कि खुदा के गुलाम थे इस लिए उन्होंने उन सब की आशाओं पर पानी फेर दिया।

53. अर्थात् अब तुम्हें पता चल गया कि वह अन्य गुलामों की तरह गुलाम नहीं है बल्कि यह जहाँ सुन्दरता के गगन का चमकता सितारा है वहाँ वह एक प्रमुख व्यक्तित्व का भी मालिक है। इस लिए मैं ने इस को अपनी ओर आकृष्ट कर के कोई ग़लती नहीं की।

54. इस तरह अजीज की पत्नी ने औरतों की भरी मजलिस में वह बात उगल दी जिस को वह अब तक छिपाये हुई थी। यह अपने अपराध को स्वीकार करना नहीं था बल्कि ढिटाई, सीना ज़ोरी, और निर्लज्जता थी और जिन औरतों के सामने इस की अभिव्यक्ति की उन के लक्षण भी वैसे ही थे जैसे किसी कवी की यह पंक्ति :-

“ई गुना हेस्त के दर शहर शुमा नीज़ कुनन्द”

55. जब वह इन नाज़ और अदा वाली स्त्रियों के द्वारा भी यूसुफ़ को रिझाने में असफल रही तो ताक़त का दबाव डालना शुरू किया और जेल भेजने की धमकी दी।

56. अर्थात् क़ैद की तकलीफ़ ग़वारा है मगर बेहयाई और गुनाह में लिप्त होना मुझे ग़वारा नहीं।

57. अरबी में जाहिल का शब्द आक़िल (बुद्धिमान) के विपरीत इस्तेमाल होता है (लिसानुलअरब जिल्द १२ पृष्ठ १३०) और यहाँ यह इसी अर्थ में इस्तेमाल हुआ है। अर्थात् जो

इच्छाओं एवं भावनाओं से पराजित हो जाए और बुद्धि से काम न ले।

यूसुफ को अपनी पवित्रता का अहं नहीं था बल्कि वे इस को अल्लाह का फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) समझते थे इस लिए इस नाज़ुक मौक़े पर अल्लाह से मदद के अभिलाषी हुए।

58. चूँकि यह दुआ दिल की गहराइयों से निकली थी और पवित्र भावनाओं के साथ थी इस लिए बादलों को चीरती हुई आसमान पर पहुँच गई और अल्लाह के दरबार में स्वीकृति पा गई। अतः उन औरतों ने यूसुफ को फाँसने के लिए जो जाल बिछाया था उस से वे सुरक्षित रहे।

59. अर्थात् यूसुफ की निर्दोषता के सारे चिन्ह देख लेने के बावजूद उन लोगों ने मसलहत इसी में देखी कि यूसुफ को एक अवधि तक के लिए जेल भेज दिया जाये ताकि लोग समझ लें कि अपराध यूसुफ ही से हुआ था और मिस्र के अज़ीज़ की जो बदनामी हो रही है उस से वह बच जाए।

60. बाइबिल के बयान के अनुसार एक मिस्र के बादशाह का साकी सरदार था और दूसरा नानबाई सरदार और इन दोनों को मिस्र के राजा ने किसी अपराध में जेल भेज दिया था।

61. दोनों ने अपने सपने बताए। एक ने (जो साकी था) कहा मैं ने अपने को शराब निचोड़ते हुए देखा अर्थात् शराब के

उद्देश्य से अंगूर को निचोड़ते हुए देखा।

62. दूसरा व्यक्ति जिस ने यह स्वप्न देखा था, नानबाइयों का सरदार था। (बाइबिल की कीताब उत्पत्ति अध्याय ४० में यह घटना बयान हुई है मगर उस सत्यता के साथ नहीं जिस सत्यता के साथ कुर्आन ने बयान किया है।)

63. उन के इस बयान से स्पष्ट हुआ कि यूसुफ का चरित्र जेल में भी बुलन्द रहा और वे नेक व्यक्ति की हैसियत से वहाँ प्रसिद्ध हुए। बाइबिल में है:-

“ पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा, और उस पर करुणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई। सो बन्दीगृह के दारोगा ने उन सब बन्धुओं को जो कारागार में थे यूसुफ के हाथ में सौंप दिया और जो जो काम वे वहाँ करते थे वह उसी की आज्ञा से होता था। बन्दीगृह के दारोगा के वश में जो कुछ था क्यों कि उस में से उस को कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती थी, इस लिए कि यहोवा यूसुफ के साथ था और जो कुछ वह करता था, यहोवा उस में उस को सफलता देता था।” (उत्पत्ति ३९:२१, २२, २३)

स्वप्न का अर्थ बताने के योग्य वही हो सकता है जो नेक हो। इस का एहसास एक स्वभाविक बात है इस लिए सपना देखने वालों ने स्वप्नार्थ के लिए यूसुफ से सम्पर्क किया।

उस ने कहा जो खाना तुम्हें मिलता है उस के आने से पहले ही मैं तुम्हें इस का स्वप्नार्थ बता दूँगा । यह उस ज्ञान में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है । मैं ने उन लोगों के धर्मों को रद्द कर दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आखिरत का भी इन्कार करते हैं। (अल-कुआन)

37. उस ने कहा जो खाना तुम्हें मिलता है उस के आने से पहले ही मैं तुम्हें इस का स्वप्नार्थ बता दूंगा ⁶⁴। यह उस ज्ञान में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है ⁶⁵। मैं ने उन लोगों के धर्मों को रद्द कर दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आखिरत का भी इन्कार करते हैं। ⁶⁶

قَالَ لَا يَأْتِيَكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقِينَ إِلَّا نَبَأْتُكُمَا
بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ
مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾

38. और अपने बाप दादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याकूब के दीन को अपनाया ⁶⁷। हमारा यह काम नहीं कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक ठहराएँ। यह अल्लाह का फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) है हम पर और लोगों पर ⁶⁸ लेकिन अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते ⁶⁹।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ
لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

39. ऐ जेल के साथियो ! बहुत से अलग अलग रब बेहतर हैं या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब है ⁷⁰?

يُصَاحِبِي السَّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ
خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

40. उस को छोड़ कर तुम जिन की परस्तिश करते हो वे मात्र कुछ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं ⁷¹। अल्लाह ने उन के लिए कोई हुज्जत (प्रमाण) अवतरित नहीं की। शासन की सत्ता अल्लाह के सिवा किसी के लिए नहीं ⁷²। उस ने हुक्म दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो ⁷³। यही सत्य धर्म है ⁷⁴। लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते ⁷⁵।

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ
وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ
أَمْرًا لَا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

41. ऐ जेल के साथियो ! तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलायेगा और दूसरा सूली पर चढ़ाया जायेगा और परिन्दे उस का सर नोच नोच कर खाएँगे। इस बात का फैसला हो चुका जिस के बारे में तुम पूछ रहे थे ⁷⁶।

يُصَاحِبِي السَّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا
فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ﴿٤١﴾

42. और जिस के बारे में उस ने समझा था कि रिहा हो जाने वाला है उस से कहा कि अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना। ⁷⁷ मगर शैतान ने उस को अपने आका से ज़िक्र करना भुला दिया और वह कई साल जेल में पड़ा रहा ⁷⁸।

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا
اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ
الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السَّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾

64. यूसुफ़ चूँकि उस अवसर पर तौहीद की दअवत प्रस्तुत करना चाहते थे इस लिए उन्होंने उन के संतोष के लिए यह बात कही ताकि वे यह न समझें कि यह बात लम्बी होगी और इस बीच अगर खाने का समय हो गया तो उन्हें उठ जाना पड़ेगा और उन के असल सवाल का जवाब रह जायेगा।

65. अर्थात् स्वप्नार्थ बताने का ज्ञान अल्लाह का प्रदान किया हुआ है। यूसुफ़ ने इस को अपना कमाल या कारनामा नहीं बताया बल्कि अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) बताया।

66. इशारा है मिस्र के शासक क्रौम के धर्म की तरफ़ जो न अल्लाह के एकेश्वर होने पर विश्वास रखती थी और न आखिरत के इनाम और सज़ा की क़ायल थी। उन का धर्म शिर्क और दुनिया परस्ती का धर्म था।

यूसुफ़ यद्यपि गुलाम की हैसियत में थे और मिस्र का माहौल उन के लिए बिल्कुल नया था मगर वे माहौल से कदापि प्रभावित नहीं हुए थे बल्कि अपनी बसीरत एवं ज्ञान के कारण अल्लाह के सच्चे दीन (इस्लाम) पर दृढ़ रहे।

67. यूसुफ़ के इस इशारा का मतलब यह था कि जिस दीन को मैं ने अपनाया है वह कोई “क्रौमी संपत्ति” नहीं बल्कि नबियों की सम्पत्ति है। यह उन इतिहास रचने वाले बुजुर्गों का दीन है जो अपनी सच्चाई, पाकिज़गी और परहेज़गारी के लिए प्रसिद्ध हुए। साथ ही यूसुफ़ ने अपना परिचय भी प्रस्तुत किया कि वे उसी सोने की ज़न्जीर की कड़ी हैं।

68. अर्थात् यह अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने इन नबियों के द्वारा एकेश्वरवादी धर्म की ओर मार्ग दर्शन किया जो प्राकृतिक धर्म है। उस का यह एहसान न केवल नबियों के खानदानों पर है बल्कि तमाम इन्सानों पर है। क्योंकि ये हस्तियाँ भटकी हुई इन्सानियत के लिए रौशनी का मीनार थीं।

69. कृज़ता का भावार्थ यहाँ बिल्कुल स्पष्ट है अर्थात् तौहीद और नबियों के दीन को अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) समझ कर स्वीकार करना।

70. अर्थात् लोगों ने इस कायनात (ब्रह्माण्ड) को कई ख़ुदाओं में जो बांट रखा है और हर शक्ति के लिए एक ख़ुदा गढ़ कर के उन की पूजा कर रहे हैं। यह परिस्थिति न केवल सत्यता के विरुद्ध है बल्कि मनुष्य के लिए कष्टदायक भी कि वह किस किस ख़ुदा का वफ़ादार बन कर रहे और किस किस को ख़ुश करता रहे। इस के विपरीत उस के लिए अल्लाह को एक मात्र ख़ुदा मानने की सूरत में सारी मानसिक उलझनें दूर हो जाती हैं और दिल को सुकून नसीब होता है क्योंकि एक ख़ुदा को मान लेना वास्तविक सच्चाई को स्वीकार कर लेना है। ऐसा ख़ुदा जिस के सामने कायनात की हर चीज़ बेबस है। जिसे सब पर प्रभुत्व प्राप्त है और अकेले सब पर कन्ट्रोल कर

रहा है।

कई ख़ुदाओं को मानने की सूरत में इन्सान की वफ़ादारियाँ बट जाती हैं। जब कि एक ख़ुदा की धारणा उस की वफ़ादारियों एवं भक्ति को एक ख़ुदा के लिए विशिष्ट कर देता है। एक दास बहुत से मालिकों की दासता को कदापि पसंद नहीं करता बल्कि एक मालिक की गुलामी ही को पसंद करता है। मगर इतनी उचित बात भी मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की समझ में नहीं आती और वे कई एवं भाँत भाँत के ख़ुदाओं के क़ायल हो जाते हैं। अगर मिस्र में कई ख़ुदाओं की परस्तिश होती थी तो भारत में अनगिनत ख़ुदा बना लिये गये हैं। दूसरे शब्दों में भारत का बहुदेववादी धर्म प्राचीन मिस्र के बहुदेववादी धर्म से बहुत आगे है।

71. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ११२ में गुजर चुकी ।

72. अर्थात् हुक्म चाहे प्राकृतिक (भौतिक Physical) हो संवैधानिक (शरअी क़ानून Shariat Law) एवं तमाम मामलों में फ़ैसला करने का अधिकार अल्लाह ही को है। जहाँ तक भौतिक जगत का सम्बन्ध है उस में अल्लाह ही का हुक्म और उसी के फ़ैसले लागू होते हैं। उस में किसी का भी रती बराबर अमल दखल नहीं है। रहा दीन और शरीअत का मामला तो इस मामले में भी अल्लाह ही को हुक्म देने, क़ानून बनाने और फ़ैसला करने का अधिकार है कि वही वास्तविक अर्थों में शास्त्र नियामक (Law giver, शारेअ) है और इस बात का हक़दार है कि जीवन के सारे मामलों में उस को हाकिम (शासक) स्वीकार कर लिया जाए।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ - (سورة الشورى: १०)

“जिस बात में तुम विभेद करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह ही की तरफ़ है।” (सूरह शूरा-१०)

73. अल्लाह ने हुक्म दिया है ---- और हुक्म देने का अधिकार उसी को है ---- कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो । मगर लोग हुक्म देते हैं--- और उन्हें हुक्म देने का कोई अधिकार नहीं है--- कि बुतों को पूजो और अल्लाह के सिवा औरों की इबादत करो। अल्लाह का हुक्म सरासर हक़ (सत्य) है और लोगों का हुक्म सरासर बातिल अर्थात् असत्य है।

74. अर्थात् सही और सच्चा दीन केवल एकेश्वरवादी दीन है। इस के सिवा जितने दीन भी हैं न सही हैं और न सच्चे।

75. यह बात यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उस समय फ़रमाई थी जब कि दुनिया पर अंधकार के बादल छाए हुए थे, मगर आज की दुनिया पर भी जब कि शिक्षा की रौशनी चारों ओर

फैल चुकी है यह बात पूरी तरह लागू होती है। क्यों कि दुनिया की अधिकतर आबादी तौहीद के दीन से अनभिज्ञ है।

यूसुफ की यह दअवत जो उन्होंने ने अपने क़ैद ख़ाने के साथियों के सामने पेश की, इस बात की दलील है कि उन्हें क़ैद ख़ाने में नुबुव्वत प्रदान हुई थी और उन्होंने प्रचार का प्रारंभ क़ैद ख़ाने ही में कर दिया था।

76. उन के स्वप्न के अर्थ यूसुफ ने इस दृढ़ता के साथ इस लिए बताए कि उन को अल्लाह तआला ने विशेष रूप से इस का ज्ञान प्रदान किया था एवं वे नुबुव्वत से भी अलंकृत किये गये थे। स्वप्न का अर्थ यह था कि साक़ी सरदार रिहाई पा कर पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाने की ख़िदमत अन्जाम देगा और नानबाई सरदार को फाँसी दी जाएगी और परिन्दे उस का सर नोच कर खाएँगे। यह स्वप्नफल बिलकुल सत्य सिद्ध हुआ।

77. ज़िक्र से मुराद यूसुफ का यह परिचय है जो उस रिहा हो जाने वाले व्यक्ति को क़ैदख़ाने में प्राप्त हुआ था। इस परिचय में जैसा कि ऊपर की आयत से स्पष्ट है तीन बातें शामिल थीं। एक यूसुफ का सदाचारी एवं चरित्रवान होना दूसरे उन की तरफ से प्रस्तुत की जाने वाली तौहीद की दअवत और तीसरे स्वप्न के अर्थ का वह ज्ञान जो अल्लाह तआला ने विशेष रूप से उन को प्रदान किया था और जिस के अनुसार उन का बताया हुआ स्वप्नार्थ सही निकला। इस से यूसुफ का मंशा यह था कि एक नबी का परिचय सम्राट से एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा हो जाए जिस को उस की संगत में रहने और उस के बारे में सही विचार बनाने का अवसर मिला था ताकि अकारण मिलने वाली क़ैद का सिलसिला समाप्त हो जाए और नुबुव्वत के दायित्व (दअवत और तब्लीग) के लिए राहें खुल जाए। यह अत्यंत पवित्र उद्देश्य था इस लिए इस पर कोई एतिराज़ नहीं हो सकता था। उन्होंने ने अपनी मज़लूमी की दास्तान सम्राट को सुनाने के लिए कहा था

और न इस बिना पर किसी बेचैनी को प्रकट किया था। किन्तु अगर मान लो कि उन्होंने अपनी मज़लूमी की दास्तान सम्राट को सुनाने के लिए कहा था तो इस में आपत्ति की कौन सी बात है? क्या मज़लूम को यह हक़ नहीं पहुँचता कि वह इन्साफ़ की माँग (Demand) करे? किसी काफ़िर हुकूमत से भी इन्साफ़ की माँग करने में शरअी एतिबार से कोई हर्ज नहीं है। और यूसुफ को सम्राट ने जेल नहीं भिजवाया था बल्कि अज़ीज़ ने भिजवाया था और संभवतः सम्राट इस से अनभिज्ञ ही रहा होगा, इस लिए यूसुफ का यह कहना कि बादशाह से मेरा ज़िक्र करना सिफ़ारिश कराने के अर्थ में नहीं था बल्कि वास्तविकता से अवगत कराने के अर्थ में था। और इस को देखते हुए यह आपत्ति नहीं व्यक्त की जा सकती कि यूसुफ ने कोई ऐसी बात कही थी जो उन के मक़ाम अथवा पद से निम्न स्तर की थी !

फिर भी जिन टीकाकारों ने कुछ रिवायतों का सहारा ले कर यूसुफ की इस बात को उन की ख़ता समझा है वे स्वयं ख़ता पर हैं और वे रिवायतें विश्वस्नीय नहीं हैं।

78. अर्थात् शैतान ने उस को ऐसा गाफ़िल कर दिया कि इतनी महत्वपूर्ण बात सम्राट को न बता सका। परिणाम यह कि यूसुफ की रिहाई की सूरत निकल न सकी और उन्हें कुछ साल और जेल में रहना पड़ा।

मालूम हुआ कि किसी महत्वपूर्ण बात को भुला देने में शैतान को ख़ास दख़ल है और शैतान यह काम वस्वसों एवं भ्रमों के द्वारा करता है। इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि यूसुफ ने बादशाह से ज़िक्र करने की जो बात कही थी वह एक अच्छी बात थी इस लिए शैतान ने उस को पसन्द नहीं किया और रिहा होने वाले व्यक्ति को भुलावे में डाल दिया। अगर यूसुफ की यह बात एक चूक होती तो उस व्यक्ति का भूल जाना अच्छा ही था। ऐसी सूरत में इस भुलावे को शैतान से न जोड़ा जाता।



और बादशाह ने कहा मैं क्या देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं और (अनाज की) सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी। ऐ दरबार वालो ! मेरे स्वप्न का अर्थ बताओ अगर तुम स्वप्नार्थ बताना जानते हो। उन्होंने कहा ये परेशान ख्वाब है और हम परेशान ख्वाबों की ताबीर (स्वप्नार्थ) नहीं जानते । (अल-कुर्आन)

43. और बादशाह ने कहा मैं क्या देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं और (अनाज की) सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी। ऐ दरबार वालो ! मेरे स्वप्न का अर्थ बताओ अगर तुम स्वप्नार्थ बताना जानते हो।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَى يُسَبِّتُ يَآئِهَا الْمَلَائِكَةُ فِي رُؤْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٣٣﴾

44. उन्होंने कहा ये परेशान ख्वाब हैं और हम परेशान ख्वाबों की ताबीर (स्वप्नार्थ) नहीं जानते।⁷⁹

قَالُوا أَضْغَاتٌ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعِلْمِينَ ﴿٣٤﴾

45. और उन दोनों में से जो रिहा हो गया था उसे एक मुद्दत बाद बात याद आ गई⁸⁰ और वह बोल उठा मैं आप लोगों को इस का स्वप्नार्थ बता देता हूँ। मुझे (यूसुफ़ के पास) भेज दीजिए।

وَقَالَ الَّذِي نَجَّاهُمَا إِذْ كُنتُمْ فِي الْعُجَّةِ أَنَا نُبَيِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٣٥﴾

46. यूसुफ़ ! ऐ सत्यनिष्ठ⁸¹ ! हमें इस (स्वप्न) का अर्थ बताइये कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी। ताकि मैं लोगों के पास वापस जाऊँ और वे (इस स्वप्न का अर्थ) जान लें⁸²।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَى يُبَسِّتُ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

47. उस ने कहा सात वर्ष तक तुम लगातार खेती करोगे। इस बीच जो फ़सलें तुम काटो उन्हें उन की बालों में हि रहने दो सिवाय उस थोड़ी मात्रा के जो तुम्हारे खाने के काम आए⁸³।

قَالَ زَرْعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٣٧﴾

48. फिर उस के बाद सात कड़े वर्ष आएंगे जो इस (जमा पूँजी) को खा जाएंगे जो तुम ने एकत्र कर रखी होगी सिवाय उस थोड़ी मात्रा के जो तुम सुरक्षित कर रखो⁸⁴।

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٍ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَحْصُونَ ﴿٣٨﴾

49. फिर उस के बाद एक साल ऐसा आएगा जिस में लोगों पर रहमत की वर्षा भेजी जाएगी और वे रस निचोड़ेंगे⁸⁵।

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصَرُونَ ﴿٣٩﴾

50. और सम्राट ने कहा उस को मेरे पास लाओ⁸⁶। जब (सम्राट का) दूत उस के पास पहुँचा तो उस ने कहा अपने स्वामी के पास वापस जाओ⁸⁷। और उस से पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे⁸⁸। मेरा रब उन की चाल से ख़ूब परिचित है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٤٠﴾

79. सम्राट के स्वप्न का अर्थ बताने के लिए जिस ज्ञान की आवश्यकता थी वह दरबारियों में से किसी को प्राप्त न था। इस लिए जब यह स्वप्न उन की समझ में नहीं आया तो उन्होंने ने कहा यह परेशान ख्वाब है जिस की कोई ताबीर नहीं होती।

स्पष्ट रहे कि स्वप्न तीन प्रकार के होते हैं। एक वह जिन में अचेतन मन (ला शऊर Subconscious) काम कर रहा होता है और दबी हुई इच्छाएँ किसी रूप में प्रकट हो जाती हैं, या फिर अमाशय की खराबी के कारण आदमी डरावने सपने देख लेता है ऐसे ख्वाब “परेशान ख्वाब” कहलाते हैं और इन की कोई ताबीर (स्वप्नार्थ) नहीं होती।

दूसरे वे स्वप्न हैं जो शैतानी वस्वसों का परिणाम होते हैं। ऐसे स्वप्न का भी कोई अर्थ नहीं होता मगर वे फितने का कारण होते हैं। शैतान स्वप्न में गलत बातों को बाबर करा के सही और उचित धारण को डगमगाने, शिर्क और क़ब्र परस्ती की ओर आकृष्ट करने, आपस में बदगुमानी पैदा करने और पति पत्नी में झगड़ा उत्पन्न करने की कोशिश करता है। इस लिए आदमी को होशियार रहना चाहिए और ऐसे स्वप्न से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

तीसरे स्वप्न जो सच्चे स्वप्न (रूया-ए-सादिक़ः) कहलाते हैं। सच्चे स्वप्न का चिन्ह यह है कि आदमी दिल में उस को महसूस करता है। यह स्वप्न कभी तो इस तरह पूरे होते हैं कि उन के अर्थ की आवश्यकता ही नहीं पड़ती आदमी स्वप्न में जो कुछ देखता है घटनाओं की सूरत में वही कुछ उस के सामने आ जाता है। मगर अधिकतर सच्चे स्वप्न संकेतों के तौर पर होते हैं। ऐसे स्वप्न अपने गहरे अर्थ रखते हैं इस लिए इन के स्वप्नार्थ वही व्यक्ति बता सकता है जो इस ज्ञान एवं विद्या में निपुणता एवं बसीरत रखता हो। कुर्आन के अलावा सही हदीसों में रूया-ए-सादिक़ः (सच्चे स्वप्न) की जो घटनाएँ प्रस्तुत की गई हैं और उन के जो अर्थ बताए गए हैं वह बड़े शिक्षा प्रद हैं।

(अधिक व्याख्या के लिए आगे देखिए नोट ८५)

80. अर्थात् साक़ी जो यूसुफ़ के बारे में सम्राट से बताना भूल गया था, उस मौक़े पर जब कि सम्राट के स्वप्न पर बहस हो रही थी यूसुफ़ की उस को याद आ गई।

बाइबिल में भी सम्राट के स्वप्न का वर्णन हुआ है और यह पुष्टि है कि सम्राट ने मिस्र के तमाम जादूगरों और विद्वानों को बुलाकर उन से उस स्वप्न का अर्थ पूछा मगर वे स्वप्नार्थ बता न सके। इस समय साक़ी सरदार ने सम्राट से कहा:-

“मेरे अपराध आज मुझे स्मरण आए..... और वहाँ हमारे साथ एक इब्री जवान था जो जल्लादों के प्रधान का दास था, सो हम ने उसे अपना अपना स्वप्न सुनाया और उस ने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा ।..... और जैसा जैसा फल उस

ने हम से कहा था वैसा ही हुआ भी।” (उत्पत्ति ४१:९ सो १३)

81. साक़ी (पिलाने वाला) सम्राट की अनुमति से कारागार गया और यूसुफ़ को सिद्दीक (सत्यनिष्ठ) कह कर पुकारा जिस से अन्दाज़ा होता है कि वह जेल में यूसुफ़ के साथ रह कर उन के अचारण से कितना प्रभावित हुआ था।

82. अर्थात् लोगों को सम्राट के स्वप्न का फल जानने की तीव्र प्रतीक्षा है अतः आप मुझे इस का अर्थ बता दीजिए ताकि मैं जा कर उन्हें इस से अवगत कराऊँ।

83. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने स्वप्नफल इस तरह बताया कि उस के साथ तदबीर का पहलू भी स्पष्ट हुआ अर्थात् यह बात कि उस अवसर पर कैसी तदबीर एवं सावधानी अपनानी चाहिए।

अनाज को बालों में रहने देने का निर्देश इस लिए दिया ताकि वह कीटाणुओं से सुरक्षित रहे। स्वप्न का अर्थ यह था कि सात मोटी गायों से मुराद खुशहाली के सात साल हैं और सात हरी बालों से मुराद सात वर्ष की अच्छी फ़सलें हैं।

84. सात दुबली गायों का अर्थ यह था कि सात साल बढहाली के आएँगे और सात सूखे बालों का मतलब सूखा था जो सात साल तक रहेगा। और सात दुबली गायों के सात मोटी गायों को खा लेने का मतलब यह था कि खुशहाली के दौरान जो गल्ला सुरक्षित कर के रखा जाएगा वह सूखे (अकाल) के दौरान खाने के काम आएगा और केवल उतना ही अनाज बच जाएगा जिस को बीज बोने के उद्देश्य से सुरक्षित रखा जाएगा।

85. यह स्वप्नफल पर एक ख़बर की वृद्धि थी जिस की भविष्यवाणी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने की जाहिर है यह बात वह्य के द्वारा उन्हें मालूम हुई होगी।

रस निचोड़ने में अंगूर आदि का रस निचोड़ना भी शामिल है और ज़ैतून आदि से तेल प्राप्त करना भी। मतलब यह कि सूखे का दौर गुज़र जाने के बाद जो साल आयेगा उस में अच्छी बारिश होगी और बारिश अच्छी हो जाने के कारण ख़ूब पैदावार होगी और फलों का रस लोग ख़ूब बाहुल्यता से प्राप्त कर सकेंगे।

स्वप्न का यह अर्थ जैसा कि आगे चल कर मालूम होगा कि शत प्रतिशत सत्य सिद्ध हुई। सम्राट यद्यपि मुसलमान नहीं था मगर उस का स्वप्न सच्चा था।

सच्चा सपना वास्तव में अल्लाह की ओर से एक निशानी है जो कभी कभी काफ़िरों को भी दिखाया जाता है ताकि उन पर तर्क एवं युक्ति स्थापित हो। यह सपना भविष्य में घटने वाली किसी घटना की ओर संकेत करता है। और जब वह घटना उसी तरह घटित होती है तो यह इस बात का प्रमाण होता है कि दुनिया में जो घटनाएँ घटती रहती हैं वे मात्र आकस्मिक घटनाएँ नहीं

होती हैं बल्कि योजनाबद्ध तरीके से घटित होती हैं। और इस कायनात (ब्रह्माण्ड) पर एक तदबीर करने वाले का शासन है जो अपनी नीति और योजना (तक्रदीर) को लागू करता रहता है। अगर दुनिया की (आकस्मात अथवा योजनाबद्ध) घटनाएँ बिना किसी योजना के घटित होतीं तो किसी घटना की पूर्व सूचना किसी को नहीं हो सकती थी। जब कि सच्चे सपने जो मनुष्य के अनुभव में आते रहते हैं किसी घटना के घटित होने से पूर्व उस के घटने की सूचना देते हैं। जो स्पष्ट प्रमाण है इस बात का कि इस ब्राह्माण्ड का एक खुदा है और वहाँ जो कुछ होता है उस की नियोजित की हुई पूर्व योजना (तक्रदीर Pre-Planning) के तहत होता है। इस लिए जो व्यक्ति भी सच्चा ख्वाब देख लेता है चाहे वह ईमान वाला हो या काफ़िर वह मात्र स्वप्न नहीं देखता बल्कि अल्लाह की हुज्जत (तर्क एवं युक्ति) को देख लेता है।

86. जब साक़ी ने जा कर यूसुफ़ के बताए हुए स्वप्नार्थ से सूचित किया तो उसे संतोष हुआ और आश्चर्य भी हुआ कि ऐसा योग्य आदमी कारागार में पड़ा हुआ है। इस लिए उस ने यूसुफ़ को बुला भेजा।

87. मूल अरबी (Text) में “रब” शब्द इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ उर्दू में आक्रा, (स्वामी) के होते हैं और उस ज़माने में गुलाम अपने आक्रा के लिए यह शब्द इस्तेमाल करता

था। यहाँ इसी शाब्दिक अर्थ में सम्राट के लिए यह शब्द इस्तेमाल हुआ है क्योंकि साक़ी जो सम्राट का दूत बन कर आया था सम्राट का दास (गुलाम) था लेकिन चूँकि रब वास्तविक अर्थ में अल्लाह ही है और आक्रा (मालिक) के लिए यह शब्द इस्तेमाल करने से संदेह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों का इतिहास हमें बताता है इस लिए पूरी शरीअत में इस का इस्तेमाल अल्लाह के लिए ख़ास कर दिया गया है।

88. यूसुफ़ के इस बयान से स्पष्ट हुआ कि उन्हें अपनी रिहाई के लिए कोई बेचैनी नहीं थी बल्कि रिहा होने से पहले उन्होंने ने अपने मामले की जाँच पड़ताल ज़रूरी समझा ताकि जिस आरोप में उन्हें जेल भेज दिया गया था उस की वास्तविकता स्पष्ट हो जाए। इस से इस ख़याल अथवा विचार का खंडन होता है कि यूसुफ़ ने “أَذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ” “अपने आक्रा (मालिक) के पास मेरा ज़िक्र करना” कह कर कोई ग़लती की थी। (देखिए नोट ७७)

यह यूसुफ़ की शराफ़त थी कि उन्होंने अज़ीज़ की पत्नी का नाम नहीं लिया बल्कि उन औरतों का ज़िक्र किया जो अज़ीज़ की पत्नी की साज़िश के तहत एकत्र हुई थीं। इस मामले की जाँच से अज़ीज़ की पतनी मुक्त नहीं हो सकती थी इस लिए उन का नाम लेना अनावश्यक था।



उस ने पूछा तुम्हारा क्या मामला है जब कि तुम ने यूसुफ़ को रिझाने की चेष्टा की थी? उन्होंने कहा हाशा लिल्लाह (अल्लाह के लिए पवित्रता है) हम ने उस में बुराई की कोई बात नहीं पाई। अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी अब सत्य बिल्कुल स्पष्ट हो गया। मैं ने ही उस को रिझाने की चेष्टा की थी और निस्संदेह वह सच्चा है। (अल-कुर्आन)

51. उस ने पूछा तुम्हारा क्या मामला है जब कि तुम ने यूसुफ को रिझाने की चेष्टा की थी ⁸⁹? उन्होंने ने कहा “हाशा लिल्लाह” (अल्लाह के लिए पवित्रता है) हम ने उस में बुराई की कोई बात नहीं पाई। अजीज की पत्नी बोल उठी अब सत्य बिल्कुल स्पष्ट हो गया। मैं ने ही उस को रिझाने की चेष्टा की थी और निस्संदेह वह सच्चा है ⁹⁰।

قَالَ مَا خَطْبُكَ إِذْ رَأَوْتَنِي يَوْسُفَ عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ إِنَّنِي خَصَصْتُ الْحَقَّ أَنَا وَرَأَوْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ①

52. यह इस लिए कि उसे मालूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे उस की ख़ियानत (विश्वासघात) नहीं की और यह कि अल्लाह ख़ियानत करने वालों की चालों को राह पर नहीं लगाता ⁹¹।

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ
وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ②

53. और मैं अपने नफ़्स (जी) को बरी नहीं ठहरा रहा हूँ। नफ़्स (जी) तो बुराई पर बड़ा उकसाने वाला है। मगर जिस पर मेरा रब रहम करे। निस्संदेह मेरा रब क्षमा करने वाला, रहम करने वाला है ⁹²।

وَمَا أBRِي نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَARحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ③

54. सम्राट ने कहा उस को मेरे पास लाओ ताकि उसे मैं अपने लिए ख़ास कर लूँ ⁹³। फिर जब उस ने बात चीत की तो सम्राट ने कहा आज के दिन आप हमारे यहाँ प्रतिष्ठित एवं विश्वासपात्र हैं ⁹⁴।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصُهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ④

55. उस ने कहा देश के ख़ज़ानों पर मुझे मुख्तार बना दीजिए। मैं रक्षा करने वाला हूँ और ज्ञान भी रखता हूँ ⁹⁵।

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكُمْ ⑤

56. इस तरह हम ने देश में यूसुफ को सत्ता प्रदान की ⁹⁶। वह जहाँ चाहे रह सकता था ⁹⁷। हम जिसे चाहते हैं अपनी रहमत से नवाज़ते हैं और नेक लोगों का अज़्र (भलाई) कभी नष्ट नहीं करते ⁹⁸।

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوا مِنْهُ حَيْثُ يَشَاءُ نُنْصِبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑥

57. और आख़िरत का अज़्र (भलाई) कहीं बेहतर है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाई ⁹⁹।

وَلَا جُزْءُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ⑦

58. फिर ऐसा हुआ कि यूसुफ के भाई (मिस्र) आए और उस के पास हाज़िर हुए ¹⁰⁰। उस ने उन्हें पहचान लिया मगर वे उसे पहचान न सके ¹⁰¹।

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ
فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ⑧

89. सम्राट ने उन औरतों को और अजीज की पत्नी को बुला भेजा और उस ने उन से जो सवाल किया उस से स्पष्ट होता है कि सम्राट को व्यक्तिगत रूप से सन्तुष्टि हो गई थी कि यूसुफ निदोष है और रिझाने की चेष्टा औरतों ही ने की थी।

90. हाथ ज़ख्मी कर लेने वाली औरतों ने भी यूसुफ की बेगुनाही की गवाही दी और अजीज की पत्नी ने भी मान लिया कि दोषी वही थी। यूसुफ बिलकुल निदोष और सच्चा है।

इस तरह चाँद के ग्रहण से निकल आने पर सब ने उस का बेदाग रूप देख लिया और लोगों को अन्दाज़ा हो गया कि यह तो नूर ही नूर है जिस की कोई मिसाल नहीं दी जा सकती।

91. अजीज की पत्नी का बयान ऊपर आयत ५१ में “निस्संदेह वह बिलकुल सच्चा है” पर समाप्त हो गया। यह बयान यूसुफ का है जब कारागार में उन्हें यह सूचना मिली कि जाँच से यह साबित हो गया कि वे निदोष हैं तो उन्होंने ने बताया कि मैं ने यहाँ इस जाँच को इस लिए आवश्यक समझा ताकि स्पष्ट हो जाए कि मैं ने अजीज के घर में उस के पीठ पीछे कोई विश्वासघात (खियानत) नहीं किया। यहाँ विश्वासघात से मुराद अजीज की पत्नी से अवैध सम्बन्ध स्थापित कर लेना है। यूसुफ ने अलग से यह उसूल बात भी स्पष्ट की कि खियानत (विश्वासघात) करने वाले लोग अपने विश्वासघात पर परदा डालने के लिए किसी निदोष के विरुद्ध जो चालें चलते हैं उन की यह चालें क्षणिक रूप से चाहे कितनी ही बड़ी गलतफ़हमी का कारण बनें लेकिन अन्तिम परिणाम की दृष्टि से ऐसे लोग कभी मुराद को नहीं पहुँचते और उन के चलाए हुए तीर असल निशाने से चूक जाते हैं जिस का उदाहरण अजीज की पत्नी का यह क्रिस्सा है कि उस ने खियानत (बेईमानी) कर के आरोप यूसुफ के सर डालयना चाहा, उन के विरुद्ध साज़िश की और उन को बदनाम करने में कोई कसर उठा न रखी लेकिन इस से यूसुफ का कुछ नहीं बिगड़ा उन का दर्जा बुलन्द हुआ और अजीज की पत्नी के हिस्से में रूसवाई आई।

स्पष्ट रहे कि अजीज की पत्नी का अपने को दोषी मान लेना तो कुर्आन से साबित है लेकिन अल्लाह से उस का प्रायश्चित्त (तौबा) करना और ईमान लाना साबित नहीं। और यह जो प्रचलित है कि यूसुफ ने बाद में अजीज की पत्नी (ज़ुलैखा) से विवाह कर लिया तो यह मात्र मन गदंत अफ़साना है जिस की कोई वास्तविकता नहीं और न तो वह संभावित है कि एक पैगम्बर ऐसी औरत को निकाह में लाना पसन्द करेगा जो नैतिक पतन का शिकार हो चुकी हो। और जिस के हिस्से में रूसवाई आई हो। वह अजीज की पत्नी थी और यह भी साबित नहीं कि उस समय अजीज का इन्तिक़ाल हो गया था या उस ने उस को छोड़ दिया था, फिर उस का सम्बन्ध यूसुफ

से जोड़ने में क्या तुक है? यही नहीं बल्कि अजीज की पत्नी का नाम “ज़ुलैखा” था यह बात भी न कुर्आन से साबित है और न हदीस से और न बाइबिल ही में इस का कुछ स्पष्टीकरण है। अफ़सोस की कुर्आन ने इब्रत और नसीहत के लिए जो वृत्तांत प्रस्तुत किया था कहानी की कला अथवा उस की मानसिकता ने उसे कुछ से कुछ कर के रख दिया।

92. यूसुफ ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा अब जब कि मेरा निदोष होना साबित हो गया है मैं इस का क्रेडिट (Credit) अपने जी (नफ़्स) को नहीं देता बल्कि इसे अल्लाह का फ़ज़ल समझता हूँ क्योंकि इन्सान का नफ़्स तो उसे बुराई पर उकसाता रहता है मगर जिन को अल्लाह तौफ़ीक़ देता है वे अपने मन की इच्छाओं को दबाते हैं और इस के हाथ में अपनी बागडोर देने के बजाय उसे पराजित कर लेते हैं। नफ़्स पर विजय पाने का यह काम खुदा की मेहरबानी और उस की तौफ़ीक़ के बग़ैर संभव नहीं।

चूँकि मनुष्य की परीक्षा भलाई और बुराई में अभीष्ट है इस लिए इन्सानी नफ़्स के अन्दर इच्छाएँ रख दी गई हैं। ये इच्छाएँ बुराई और गुनाह की लज़्जत को हासिल करने के लिए अन्दर से ज़ोर लगाती हैं लेकिन जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है उस पर अल्लाह की कृपा दृष्टि होती है और वह उस की तौफ़ीक़ से अपनी इच्छाओं को दबाने में सफल हो जाता है।

स्पष्ट रहे कि कुछ टीकाकारों ने इस बयान को जो **ذَلِكَ لِيَعْلَمَ** “यह इस लिए ताकि वह जान ले”..... से शुरू होता है, अजीज की पत्नी का बयान ठहराया है मगर इस से सहमति नहीं की जा सकती है क्योंकि बयान का मज़मून प्रमाण है कि वह यूसुफ ही का बयान है। मज़मून का रूह, भाव की सुन्दरता और दृढ़ शैली एक नबी ही की शान के अनुकूल है। अजीज की पत्नी की ज़बान से यह बातें ज़चती नहीं हैं।

93. जाँच का परिणाम सामने आ जाने के बाद सम्राट ने दोबारा यूसुफ को बुला भेजा, इस एलान के साथ कि वह किसी का गुलाम नहीं रहेगा बल्कि वह मेरे राज्य के कामों के लिए विशिष्ट होगा।

94. ज़ाहिर है यूसुफ की बातचीत से, बुद्धिमानी, हिकमत, सत्यप्रियता और दूर दृष्टि जैसे गुणों की अभिव्यक्ति हुई होगी इस लिए बादशाह उन से बहुत प्रभावित हुआ और उन का आदर सम्मान करते हुए उन पर अपने पूरे विश्वास को प्रकट किया। यह इशारा था इस बात की तरफ़ कि यूसुफ बड़े से बड़े पद के योग्य हैं। अब वह बताएँ कि सूखे की स्थिति में देश को जिन समस्याओं का सामना करना होगा उस को ध्यान में रखते हुए उन्हें अपनी तदबीरों से काम लेने के लिए किस तरह के अधिकार चाहिए होंगे।

95. ज़मीन के ख़जानों से मुराद ज़मीन से हासिल होने वाली दौलत अर्थात् खेती की पैदावार है और उस पर मुख्तार बना देने से मुराद उस के उठाव धर, लेन देन और इस की व्यवस्था एवं प्रबंध आदि से सम्बन्धित संपूर्ण अधिकार समर्पित कर देना है। चूँ कि मामला सीधे सीधे गल्ला की पैदावार और उस की वितरण से सम्बन्धित था इस लिए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इस मामले में संपूर्ण अधिकार समर्पित कर देने का मुतालबा किया और सम्राट के इत्मीनान के लिए इस बात को ज़ाहिर किया कि इस काम के लिए जो क्षमता, योगता, रक्षा, और ज्ञान दरकार है वह मेरे अन्दर मौजूद है।

मुतालबा तो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने मौक़े के हिसाब से इतना ही किया था मगर आगे जा कर राहें खुलती चली गई यहाँ तक कि मिस्र की कुल सत्ता उन के हाथ आ गई और वह राजसिंहासन के मालिक बन गए। अतः आयत १०० में यह स्पष्टीकरण मौजूद है कि जब उन के माता पिता मिस्र पहुँच गए तो उन को उन्होंने ने सिंहासन पर बिठा दिया।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो मुतालबा किया था उस से यह गलतफ़हमी न हो कि यह एक ग़ैर इस्लामी शासन व्यवस्था के चलाने के लिए था। यह बात न तो नुबुव्वत के मन्सब के अनुकूल है और न इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण मौजूद है कि एक नबी ने किसी ग़ैर इस्लामी या काफ़िराना प्रशासन को चलाने में कोई हिस्सा लिया हो। यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने जिस चीज़ का मुतालबा किया था वह यह था कि पैदावार की पूरी व्यवस्था उन के कन्ट्रोल में हो और प्रशासन उस में हस्तक्षेप करने के बजाय उन के समर्थक और सहायक बने। गोया उन्होंने ने अपने लिए ऐसा कार्यक्षेत्र सुनिश्चित किया था जो अपने आप में स्वयं एक अच्छी चीज़ थी और यह सेवा लोगों को सूखे के कष्ट एवं कठिनाइयों से बचाने के लिए आवश्यक थी तथा इस से समाज को ख़ुदा से भिन्न करने एवं ईशभक्त बनाने में बड़ी सहायता मिल सकती थी। अतः अल्लामा ज़महश्री लिखते हैं।

“यूसुफ़ ने यह बात इस लिए कही ताकि इस के द्वारा वह अल्लाह के आदेश को लागू कर सकें, इन्साफ़ का प्रचलन हो और प्रभुत्व प्राप्त कर सकें। ये सारे काम उन उद्देश्यों में से हैं जिन के लिए नबियों की नियुक्ति बन्दों की ओर होती रही है। और यूसुफ़ को यह मालूम था कि उन के सिवा कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो उन की जगह इस दायित्व को निभा सकता हो अतः उन्होंने ने सत्ता (अधिकार) का मुतालबा मात्र अल्लाह की प्रसन्नता की खातिर किया था न कि सांसारिक मोह और शासन की ख़ातिर।” (तफ़सीर कश्शाफ़ जिल्द २ पृष्ठ ३३८)

इस लिए यह काफ़िराना शासन को चलाना नहीं था बल्कि

समय के शासन को एक वैद्य सामान्य जनों की आवश्यकता के पक्ष में तैयार करना था और क्रमानुसार शासन को इस्लाम की ओर मोड़ने अथवा परिवर्तित कराने और समाज को इस्लाम से निकट करने का प्रयास था। उस दौर की शासन व्यवस्था को मौजूदा दौर की शासन व्यवस्था जैसा समझना सही नहीं जहाँ इस प्रकार के अधिकार अथवा आधिपत्य समर्पित कर देने की कल्पना नहीं की जा सकती और जिस का कोई विभाग देश के संवैधानिक जकड़बन्दियों से मुक्त नहीं होता। फिर भी अगर किसी ग़ैर इस्लामी व्यवस्था में अच्छे कामों के क्षेत्र में अर्थात् जहाँ शरीअत के क़ानून और आदेशों से टकराव न होता हो और ईमान वाले इसे दीनी मसलहतों का तक्राज़ा समझते हों तो इस से लाभ उठाने में शरीअत के दृष्टिकोण से कोई चीज़ बाधक नहीं है। इस पर यह आपत्ति व्यक्त करना कि यह गलत व्यवस्था की सहायता है या उस के साथ गठजोड़ है, एक गलतफ़हमी के सिवा कुछ नहीं। नबियों की कार्य पद्धति में हर तरह की रहनुमाई मौजूद है और यूसुफ़ का तरीक़ा भी हमारे लिए आदर्श ही है।

इस आयत के अन्तर्गत यह बात भी स्पष्ट हुई कि सत्ता का पद किसी ऐसे मौक़े पर जब कि एक मोमिन अपने अन्दर उस की योग्यता पाता हो और परिस्थिति इस बात का तक्राज़ा कर रही हो कि वह इस सेवा के लिए स्वयं को प्रस्तुत करे तो ऐसा किया जा सकता है। जिस हदीस में पद या मन्सब तलब करने की मनाही आई है वह सांसारिक मान एवं वैभव प्राप्ति के अर्थ में है और जो सूरत ऊपर बयान हुई है वह इस से भिन्न है।

96. अर्थात् यूसुफ़ को यद्यपि तरह तरह के मरहलों से गुज़रना पड़ा। मगर अल्लाह तआला ने सत्ता का मार्ग इस तरह प्रशस्त किया कि हर मरहला उन के लिए तरक्की की सीढ़ी साबित हुआ और

“तलातुम हा-ए-दरया ही से है ग़ौहर की सैराबी”

बाह्य रूप से ऐसी परिस्थिति बनी कि सम्राट ने वे सारे अधिकार सुपुर्द कर दिए जो उन के प्रस्तुत किए गए चौदह वर्षीय योजना को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक थे और इतना ही नहीं बल्कि उन्हें मिस्र का शसक बना दिया। अतः आगे आयत ७८ में यूसुफ़ के लिए अज़ीज़ (अर्थात् अधिकार प्राप्त शासक) का शब्द इस्तेमाल हुआ है। बाइबिल में है:-

“फिर फ़िराँन (अर्थात् सम्राट) ने यूसुफ़ से कहा, परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं। इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय में मैं तुझ से बड़ा ठहरूँगा। फिर फ़िराँन ने यूसुफ़ से कहा सुन, मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर तुझ को अधिकारी ठहरा देता हूँ।” (उत्पत्ति ४१:३९, ४०, ४१)

97. कहाँ यह बात कि यूसुफ को जेल की सकरी कोठरी में दिन गुजारना पड़ रहे थे और कहाँ यह सूरत कि मिस्र की सर ज़मीन में जहाँ चाहे वह अपने लिए ठिकाना बना सकते थे। बाइबिल में है:-

“सो वह फिरऔन के सम्मुख से निकल कर मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा। सुकाल के सातों वर्षों में भूमि बहुतायत से अन्न उपजाती रही। और यूसुफ उन सातों वर्षों में सब प्रकार की भोजन वस्तुएँ जो मिस्र देश में होती थीं, जमा कर के नगरों में रखता गया और हर एक नगर के चारों ओर के खेतों की भोजन वस्तुओं को वह उसी नगर में इकट्ठा करता गया सो यूसुफ ने अन्न को समुद्र की बालू के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि कर के रखा।” (उत्पत्ति ४:४६से ४९)

98. और यह सत्य है कि नेक रवैया अपनाने के परिणाम दुनिया में अच्छे ही निकलते हैं। अलबत्ता इस के लिए समय लगता है ठीक उसी तरह जिस तरह कि एक बीज के बोने और उस के प्रस्फुटित होने के बीच समय का फासला होता है।

यहाँ यह बात भी समझ लेना चाहिए कि सत्ता और सत्ता में बड़ा अन्तर है। जो सत्ता ज़ालिमों को प्राप्त होती है वह मात्र परिक्षा के लिए होती है और भलाई की पक्षधर नहीं होती किन्तु जो सत्ता नेक लोगों को प्राप्त होती है उस के साथ सच्ची इज़्जत भी होती है और वह भलाईयों का स्रोत एवं उस की पक्षधर होती है। यूसुफ को जो सत्ता प्राप्त हुई उस की स्थिति यही थी इस लिए इस को अल्लाह तआला ने अपनी रहमत कहा।

99. अर्थात् ईमान ला कर तक्रवा का रवैया अपनाने वालों को जो बदला दुनिया में दिया जाता है वह उस इनाम और सम्मान की तुलना में बहुत थोड़ा है जिस से वे आखिरत में नवाज़े जाएंगे। दुनिया का बदला यदि शबनम है तो आखिरत का बदला संपूर्ण वर्षा।

100. जब सूखा का ज़माना आया तो मिस्र के साथ निकट के देशों फ़िलस्तीन आदि भी इस की लपेट में आ गए। उस समय यूसुफ की सुव्यवस्था एवं अच्छे प्रबन्ध की बदौलत मिस्र में ग़ल्ले का भण्डार था। इस लिए उन्हें मिस्र के शासक यूसुफ के पास उपस्थित होना पड़ा होगा। बाइबिल में है:-

“और यूसुफ के कहने के अनुसार सात वर्षों के लिए अकाल आरम्भ हो गया और सब देशों में अकाल पड़ने लगा परन्तु सारे मिस्र देश में अन्न था।” (उत्पत्ति ४१:५४)

“जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने पुत्रों से कहा.... तुम लोग वहाँ जा कर हमारे लिए अन्न मोल ले आओ ताकि हम जीवित रहें और हम मरे नहीं। सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिए मिस्र को गए।..... यूसुफ तो मिस्र देश का अधिकारी था, और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था।....यूसुफ ने तो अपने भाईयों को पहचान लिया था, परन्तु उन्होंने ने उस को न पहचाना।” (उत्पत्ति ४१:१ से ८)

101. वे यूसुफ को इस लिए पहचान नहीं सके कि उन की कल्पना में भी नहीं था कि जिस भाई को उन्होंने ने कुएँ में फेंक दिया था वह मिस्र का शासक हो सकता है। और चूँकि यूसुफ को उन से जुदा हुए एक लम्बी मुद्दत गुज़र चुकी थी इस लिए उन में जो बाह्य परिवर्तन हुए होंगे उस के चलते भी उन के लिए पहचानना मुश्किल था।

यूसुफ सजीले थे लेकिन यूसुफ की सुन्दरता की दशा यदि वासत्व में एक चमत्कार की होती तो उन के भाई उन को देखते ही पहचान लेते। लेकिन उन का न पहचानना ज़ाहिर करता है कि यूसुफ की सुन्दरता का जो क्रिस्सा बयान किया जाता है वह अतिशयोक्ति पर आधारित है।



59. और जब उस ने उन का सामान तैयार करवाया तो कहा अब के अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास लाना। देखते नहीं कि मैं माप पूरा भर कर देता हूँ और बेहतर मेहमान नवाज़ (अतिथि सत्कार करने वाला) हूँ ¹⁰²।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخِي لَكُمْ مِنْ أَبِيكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أَوْفِي الْكَيْلِ وَأَنّ أَخَيْرُ الْمُزْنِينَ ⑤٩

60. अगर तुम उसे मेरे पास नहीं लाओगे तो मेरे पास तुम्हारे लिए कोई गल्ला नहीं है और न तुम मेरे पास आना।

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُون ⑥٠

61. उन्होंने ने कहा हम इस के लिए उस के पिता को आमदा करने का प्रयास करेंगे, और हम ज़रूर ऐसा करेंगे !

قَالُوا سَرَوْهُ وَدُعْنَهُ آبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ⑥١

62. उस ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि उन का दिया हुआ माल इन के सामान में रख दो (उस ने यह इस लिए किया) ताकि जब यह लोग अपने घर लौटें तो इस को पहचान लें और ताकि वे वापस आएँ ¹⁰³।

وَقَالَ لِفَتَيْنِهِ اجْعَلُوا بَصَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَى أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ⑥٢

63. जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा अब्बा जान ! आइन्दा हम को गल्ला देने से रोक दिया गया है । अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए कि हम गल्ला लाएँ और हम ज़रूर उस की रक्षा करेंगे।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَى أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانَ نَكْتُلْ وَإِنَّا لَهُ لَحَفَظُونَ ⑥٣

64. उस ने कहा क्या मैं इस के मामले में उसी तरह तुम पर भरोसा करूँ जिस तरह इस से पहले इस के भाई के मामले में कर चुका हूँ ? ¹⁰⁴ अल्लाह ही बेहतरीन रक्षक है और सब से बढ़ कर दया करने वाला है।

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنْتُكُمْ عَلَى أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَفِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ⑥٤

65. और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला तो देखा कि उन का माल भी उन को लौटा दिया गया है। कहने लगे अब्बा जान ! हमें और क्या चाहिए। यह हमारा माल हमें लौटा दिया गया है। अब हम अपने घर वालों के लिए रसद (खाद्य वस्तु) ले आएंगे और अपने भाई की रक्षा भी करेंगे एवं एक ऊँट गल्ला अतिरिक्त प्राप्त कर लेंगे ¹⁰⁵ इतना गल्ला तो आसानी से मिल जाएगा।

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِصَاعَتِهِمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِصَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَبِيرُ أَهْلِنَا وَنَحْفَظُ أَخَانًا وَنَزِدَادُ كَيْلٍ بَعِيرٌ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ⑥٥

102. मिस्र में चूँकि राशनिंग सिस्टम था इस लिए यूसुफ ने उन से पूछा कि तुम्हारे घर में कितने लोग हैं और जब उन्होंने ने अपने सौतेले भाई बिनयमीन का वर्णन किया होगा तो यूसुफ ने कहा होगा कि अब अगर आओ तो उस को अपने साथ लाओ ताकि तुम्हारे बयान की पुष्टि हो जाए। यह उचित बात थी और दरअसल यूसुफ अपने भाई से मिलना चाहते थे, मगर अभी भेद खोलना उचित न था इस लिए उन्होंने नियम की बात कही। साथ ही अपने अतिथि सत्कार आदि का वर्णन किया ताकि लगाव बढ़े और वे प्रसन्नता पूर्वक दोबारा आएँ।

103. उन्होंने ने गल्ले की जो क्रीमत अदा की थी वह यूसुफ के हुक्म से उन के सामान में रख दी गई। यूसुफ चाहते थे कि वे दोबारा उन के पास आएँ और धन की परेशानी उन के लिए रुकावट न बने।

104. याकूब (अलैहिस्सलाम) को यूसुफ के मामले में कटु अनुभव हो चुका था इस लिए उन्होंने ने कहा कि क्या मैं उसी प्रकार तुम पर भरोसा कर के तुम्हारे साथ बिनयमीन को भेजूँ।

बिनयमीन यद्यपि बड़ा हो गया था किन्तु उन का सौतेला भाई था जिस को वे पसन्द न करते थे। और उस समय के हालात में उन के साथ विदेश भेजना बड़ी आशंका एवं डर की बात थी कि मालूम नहीं यह दस का जत्था इस के साथ क्या कर बैठे।

105. यूसुफ ने जो राशन व्यवस्था लागू किया था उस के अनुसार विदेश के लोगों को प्रति आदमी एक ऊँट के बोझ के बराबर गल्ला दिया जाता था। इस लिए उन्होंने ने कहा कि बिनयामीन को साथ ले जाने की सूरत में हम एक ऊँट का अतिरिक्त गल्ला प्राप्त कर लेंगे।



66. उस ने कहा मैं इस को हरगिज़ तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक कि तुम अल्लाह के नाम पर मुझ से यह प्रतिज्ञा न करो कि तुम ज़रूर इसे मेरे पास वापस लाओगे यह और बात है कि तुम किसी घेरे में आ जाओ ¹⁰⁶। जब उन्होंने उस को अपना पक्का वचन दे दिया तो उस ने कहा हमारे इस वचन पर अल्लाह निगेहबान है।

قَالَ لَنْ أَرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ فَلَبَّأْنَا أَنُوهُ مَوْثِقَهُمْ
قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ①

67. और उस ने कहा बेटो ! एक ही दरवाज़े से दाखिल न होना ¹⁰⁷। मैं अल्लाह के मुकाबले तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता। फैसला अल्लाह ही का लागू होता है। उसी पर मैं ने भरोसा किया और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए ¹⁰⁸।

وَقَالَ يَبْنَئِي لَأَتَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ
أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ
إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ②

68. फिर जब वे दाखिल हुए, जिस तरह उन के बाप ने उन को हिदायत की थी तो यह (तदबीर) अल्लाह (की तदबीर) के मुकाबले में उन के कुछ काम न आ सकी। हाँ याकूब ने अपने दिल में एक ज़रूरत महसूस की थी, जिसे उस ने पूरा कर दिया। निस्संदेह वह हमारी दी हुई शिक्षा के आधार पर ज्ञानवान था ¹⁰⁹। लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं हैं ¹¹⁰।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا
كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ
يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ③

69. और जब ये लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी और बताया कि मैं तुम्हारा भाई हूँ तो ये लोग जो कुछ करते रहे हैं उस पर ग़म न करो ¹¹¹।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي
أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ④

70. फिर जब उस ने (यूसुफ़ ने) उन का सामान तैयार कराया तो अपने भाई के सामान में प्याला रख दिया ¹¹²। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालों तुम चोर हो ¹¹³।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ
أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَتَتْهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسِرْقُونَ ⑤

71. उन्होंने उन की तरफ़ पलट कर पूछा तुम्हारी कौन सी चीज़ खो गई है ¹¹⁴।

قَالُوا وَقَبِلُوا عَلَيْهِمْ مَا ذَاتَفَقِدُوا ⑥

72. उन्होंने ने कहा हमे शाही पैमाना नहीं मिल रहा है। और जो व्यक्ति उस को ला दे उस के लिए एक ऊँट ग़ल्ला है और मैं इस का ज़िम्मेदार हूँ ¹¹⁵।

قَالُوا انْفِقْ صَوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ
حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ⑦

106. अर्थात् कोई ऐसी परिस्थिति आ जाये कि उस की रक्षा करना तुम्हारे बस में न हो।

107. इस से अन्दाज़ा होता है कि मिस्र के बाहर एक नगर प्राचीर (रक्षा के लिए नगर के चारों ओर बनाई गई ऊँची दीवार) रही होगी और उस के कई दरवाज़े होंगे। याक़ूब अलैहिस्सलाम ने यह हिदायत उन्हें इस लिए की ताकि एक जत्थे की सूरत में मिस्र में प्रवेश करने पर उन को शक की निगाह से न देखा जाए कि मालूम नहीं यह जत्था किस उद्देश्य से देश में प्रविष्ट हुआ है। उस समय की परिस्थितियों के लिहाज़ से तो लूट मार का भी संदेह किया जा सकता था और जासूसी का भी।

108. याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने सावधानी बरतने की तदबीर तो बता दी लेकिन साथ ही स्पष्ट कर दिया कि कोई तदबीर चाहे वह कितनी ही सही हो अल्लाह की तक्रदीर के मुकाबले में हरगिज़ निर्णायक नहीं हो सकती बल्कि कुछ भी काम नहीं आ सकती। अल्लाह का फ़ैसला ही लागू हो कर रहता है और सारी तदबीरें धरी की धरी रह जाती हैं। इस लिए इन्सान के बस में जो बेहतर से बेहतर तदबीर है वह करे मगर तदबीर को सब कुछ न समझे। बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी और उस के निर्णय पर भरोसा करे, कि होगा वही जो अल्लाह को मन्ज़ूर होगा।

109. याक़ूब अलैहिस्सलाम नबी थे इस लिए अल्लाह तआला ने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्रदान किया था। इस मौक़े पर अल्लाह तआला ने याक़ूब अलैहिस्सलाम की प्रशंसा की यद्यपि उन की तदबीर अपनी जगह उचित ही थी और वह उस ज्ञान के आधार पर जो उन्हें प्रदान किया गया था, तदबीर और तक्रदीर का फ़र्क जानते थे।

110. अर्थात् अधिकतर लोग नहीं जानते कि इन्सानी तदबीरों के आगे निर्णायक चीज़ अल्लाह का फ़ैसला ही है। लोग अपनी तदबीरों ही को सब कुछ समझते हैं इस लिए उन का सारा भरोसा अपनी तदबीरों ही पर होता है और जब उस में

असफलता मिलती है तो निराश हो जाते हैं। यह वास्तविकता से अनभिज्ञ होने का परिणाम है।

111. अर्थात् यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को अपने पास बुला कर चुपके से बताया कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ। अब तुम उस व्यवहार पर अफ़सोस ने करो जो ये लोग हमारे साथ करते रहे हैं।

112. यह शाही प्याला था जो निश्चय ही क़ीमती रहा होगा और संभवतः यूसुफ़ ने अल्लाह की वहय से इशारा पा कर यह तदबीर अपनाई होगी कि उस को अपने भाई बिनयामीन के सामान के साथ ख़ामोशी से रख दिया। संभवतः वे यह बात बिनयमीन की जानकारी में लाए होंगे।

113. पुकारने वाला सरकारी अफ़सर था और उस की जानकारी में यह बात नहीं थी कि यूसुफ़ ने स्वयं यह प्याला बिनयामीन के सामान में रखा है। इस लिए जब क़ाफ़िला के ख़ाना हो जाने पर प्याला नहीं मिला तो सरकारी अफ़सर ने यह समझा कि जिस क़ाफ़िले ने यहाँ पड़ाव किया था उन ही में से किसी ने उसे चुरा लिया है। इस लिए वह क़ाफ़िले को तलाश करता हुआ गया और जब रास्ते में उसे पा लिया तो अपने अनुमान के आधार पर उन लोगों पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया।

114. अर्थात् क़ाफ़िला वालों ने सरकारी कर्मचारियों (पुलिस) से जो अफ़सर के साथ आए थे पूछा कि तुम्हारी क्या चीज़ खोई गई है।

115. सरकारी कर्मचारियों (पुलिस) ने जब बताया कि शाही पैमाना ग़ायब हो गया है तो उन के अफ़सर ने इस बात का एलान किया कि जो व्यक्ति उस को लाकर उपस्थित करेगा उस को एक ऊँट ग़ल्ला इनाम दिया जायेगा और इनाम दिलवाने का ज़िम्मेदार मैं हूँ। इस से अन्दाज़ा होता है कि पैमाना बड़ा क़ीमती था।



73. उन्होंने ने कहा ¹¹⁶ अल्लाह की क्रसम तुम लोग भली भाँति जानते हो कि हम इस देश में फ़साद करने नहीं आए हैं न हम चोरी करने वाले लोग हैं।

قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ﴿٣٥﴾

74. उन्होंने ने कहा ¹¹⁷ अगर तुम झूठे साबित हुए तो (बताओ) इस की क्या सज़ा है?

قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٣٦﴾

75. उन्होंने ने जवाब दिया इस की सज़ा यही है कि जिस के सामान में चीज़ निकले वह (स्वयं) उस का बदल ठहरे ¹¹⁸। हम ऐसे ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं ¹¹⁹।

قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وَجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٣٧﴾

76. फिर उस ने (अर्थात् यूसुफ़ ने) अपने भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों की तलाशी लेनी शुरू की, फिर अपने भाई की बोरी से उस (प्याले) को बरामद कर लिया ¹²⁰। इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए तदबीर कि ¹²¹। वह सम्राट के क़ानून के अनुसार उसे रख नहीं सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे ¹²²। हम जिस के लिए चाहते हैं उस के दर्जे बुलन्द कर देते हैं ¹²³। और हर ज्ञान वाले के ऊपर एक ऐसी हस्ती मौजूद है जो ज़बरदस्त ज्ञानवान है ¹²⁴।

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وَعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وَعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ نَّشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٣٨﴾

77. उन्होंने कहा अगर इस ने चोरी की है तो इस से पहले इस का भाई भी चोरी कर चुका है ¹²⁵। यूसुफ़ ने बात अपने दिल में रख ली और उस को उन पर ज़ाहिर नहीं होने दिया। (अर्थात् उस ने दिल ही दिल में) कहा तुम बहुत बुरे लोग हो ¹²⁶ और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उस की वास्तविकता ख़ूब जानता है।

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَكَانٍ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٣٩﴾

78. कहने लगे ऐ अज़ीज़ ¹²⁷ ! इस के पिता बहुत बूढ़े हो गए हैं ¹²⁸ अतः इस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए, हम देखते हैं (कि) आप बड़े नेक हैं।

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٠﴾

79. उस ने कहा अल्लाह की पनाह इस बात से कि हम उस को छोड़ कर जिस के पास हमारी चीज़ निकली है किसी और को पकड़ लें ¹²⁹। अगर हम ऐसा करें तो ज़ालिम होंगे।

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا ظَالِمُونَ ﴿٤١﴾

116. अर्थात् यूसुफ के भाईयों ने कहा ।

117. अर्थात् सरकारी कर्मचारियों ने कहा ।

118. अर्थात् जिस के सामान में चोरी की चीज़ निकल आए उस को धर लिया जाये और उस की स्वतंत्रता छीन ली जाए।

119. अर्थात् हमारे यहाँ चोरी की सज़ा के लिए यही क़ानून है। प्रबल सम्भावना है कि यह क़ानून इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शरीअत का होगा।

120. सरकारी अफ़सर उन को यूसुफ के पास ले आया और जब यूसुफ के निर्देशानुसार उन के सामान की तलाशी ली गई तो प्याला बिनयमीन की बोरी में निकल आया यह भी संभव है कि तलाशी स्वयं यूसुफ ने ली हो ।

121. यूसुफ वास्तव में बिनयमीन को अपने पास रखना चाहते थे । स्पष्ट है कारण यही रहा हो कि वे अपने उस काम में जो उन के सुपुर्द हुआ था अपने भाई को अपना सहायक बनाना चाहते होंगे ताकि मिस्र की सोसाइटी को इस्लाम से निकट करने में सहायता मिले । बिनयमीन उन के बिगड़े हुए भाईयों में से नहीं थे बल्कि नेक आचरण के थे और उन्होंने ने एक नबी (उन के पिता हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम) के घर में तरबियत पाई थी इस लिए मिस्र में उन का ठहरना अभीष्ट उद्देश्य के लिए काफ़ी लाभदायक सिद्ध हो सकता था। अतः यूसुफ की तीव्र इच्छा थी कि वह उन के पास रह जाएँ। लेकिन यूसुफ अपने आप को भी मसलहत के तहत अपने भाईयों पर ज़ाहिर करना नहीं चाहते थे। इस लिए उन्होंने ने क़ाफ़िले के साथ जाने दिया लेकिन अल्लाह ने ऐसी गुप्त तदबीर की कि बिनयमीन यूसुफ के पास पहुँच गए और उन्हें मौक़ा मिला कि भेद खोलें बग़ैर उन को अपने पास रख लें।

122. मूल अरबी (Text) में **فِي دِينِ الْمَلِكِ** “फ़ी दीनिल् मलिक” (बादशाह के दीन में) शब्द इस्तेमाल हुआ है अतः इबने जरीर तबरी ने इस के अर्थ

فِي حُكْمِ مَلِكٍ مِصْرٍ وَقَضَائِهِ وَطَاعَتِهِ مِنْهُمْ -

(मिस्र के बादशाह के हुक्म, उस के फैसले और उस के अज्ञापालन में) किये हैं (देखिए ज़ामिउलबयान जिल्द १३ पृष्ठ १७) जिस समय बिनयमीन की गिरफ़्तारी का मामला पेश आया मिस्र में सम्राट का क़ानून प्रचलित था और मुल्की क़ानून के अनुसार चोरी की सज़ा नज़रबन्दी या गुलामी नहीं थी बल्कि कोई और सज़ा थी। हो सकता है मार पीट या जुर्माना की सज़ा रही हो। अगर उस सज़ा को लागू किया जाता तो उस से वह लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता था जो बिनयमीन को रोक लेने की सूत्र में प्राप्त होता । एवं उस सूत्र में बिनयमीन को व्यर्थ की तकलीफ़ भी पहुँचती । ज़ाहिर है यह बात इन्साफ़ के

विरुद्ध थी । अलबत्ता नज़र बन्दी या गुलामी की सज़ा पता तो चलती थी किन्तु वास्तव में वह सज़ा थी नहीं क्योंकि यूसुफ ने उन को बस अपने पास रोक लिया था और स्वयं बिनयमीन यह समझ रहे थे कि यह कोई सज़ा नहीं है बल्कि मुझे रोक लेने का एक ख़ूबसूरत तरीक़ा है। यही कारण है कि उन्होंने ने अपनी गिरफ़्तारी के ख़िलाफ़ कोई आपत्ति एवं रोश प्रकट नहीं किया और न अपनी सफ़ाई में कुछ कहने की ज़रूरत महसूस की । मतलब यह कि बादशाह का जो क़ानून मिस्र में प्रचलित था उस के अनुसार यूसुफ, बिनयमीन को सज़ा तो दे सकते थे लेकिन अपने पास रोक कर नहीं रख सकते थे। अलबत्ता अल्लाह की कुदरत ऐसी सूत्र पैदा कर सकती थी कि वह उन को रोक लें इस लिए अल्लाह तआला ने ऐसी सूत्र पैदा कर दी और यूसुफ के लिए बिनयमीन को रोक लेना आसान हो गया, चूँकि बिनयमीन का सम्बन्ध कनान देश से था इस लिए संभव है कि अंतर्राष्ट्रीय नियम यह रहा हो कि अपराधी जिस देश का निवासी रहा हो उस पर उसी देश के क़ानून को लागू किया जाए। इस तरह बिनयमीन पर इब्राहीमी शरीअत का क़ानून लागू हो गया जो हर तरह से उचित था।

इस आयत के बारे में कुछ प्रश्न मन में उठते हैं मगर तूल के भय से हम विस्तार में न जाते हुए कुछ स्पष्टीकरण पर संतोष करते हैं।

(A) आयत के शब्द “मा काना लि” कुर्आन में “उस की शान के अनुकूल नहीं” या “उस का यह काम नहीं” के अर्थ में भी इस्तेमाल हुए हैं और सार्मथ्य न रखने या कर न सकने के अर्थ में भी । पहले अर्थ का उदाहरण

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ - (مریم- ३५)

“अल्लाह की शान के अनुकूल नहीं (या अल्लाह का यह काम नहीं) कि किसी को बेटा बनाए।” और दूसरे अर्थ का उदाहरण

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ - (آل عمران- १४५)

“कोई नफ़्स (प्राणी) अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर मर नहीं सकता” है। जिस आयत की तफ़्सीर चल रही है उस में चूँकि “इल्ला” व्याकरण की परिभाषा में सावधि अपवाद है अर्थात् “मगर” या “अलबत्ता” के अर्थ में है इस लिए व्याकरण के अनुसार यहाँ सार्मथ्य न रखने या अधिकार न रखने का अर्थ उचित बैठ रहा है। अर्थात् यूसुफ़ बादशाह के क़ानून के अनुसार अपने भाई को रख नहीं सकते थे। दूसरे शब्दों में उन को अधिकार नहीं था कि वे अपने भाई को रोक रखें।

(B) इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जो शरीअत दी गई थी वह संक्षिप्त आदेशों पर आधारित थी। विस्तृत आदेश बाद में

मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात के रूप में उतरे। इस लिए यूसुफ अलैहिस्सलाम के मिस्त्र में हुकूमत की बागडोर संभालने पर ऐसी परिस्थितियाँ बहुत कम सामने आई होंगी कि शरीअत के क़ानून को निभाना उन के लिए मुश्किल हुआ होगा। ज़ाहिर है उस समय वैधता की सीमाएँ अधिक विस्तृत थीं और जहाँ शरीअत ख़ामोश होगी वहाँ यूसुफ के लिए मौक़ा होगा कि न्याय और समानता की सामान्य धारणा के अनुसार आदेश और क़ानून जारी करें। और जिस हद तक देश में प्रचलित क़ानून न्याय पर आधारित होंगे उन्हें लागू करने में कोई शरअी प्रतिबन्ध भी नहीं रहा होगा। एक ऐसे देश में जहाँ का समाज इस्लाम से अनभिज्ञ था लेकिन जिस ने यूसुफ को राज्य का संचालक स्वीकार कर लिया था देश के सामाजिक जीवन में धीरे धीरे ही परिवर्तन लाया जा सकता था।

अल्लामा इब्ने तीमिया लिखते हैं :-

“और इस अध्याय से (अर्थात् राज्याधिकार के किसी व्यक्ति विशेष के पक्ष में वाजिब होने के सम्बन्ध से) सत्यनिष्ठ यूसुफ का मिस्त्र के सम्राट के लिए देश की संपत्तियों पर शासक होना है जब कि सम्राट और उस की क्रौम काफ़िर थी। जैसा कि आयत

وَلَقَدْ جَاءَ كُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ الْبَيِّنَاتِ
فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَ كُمْ بِهِ -

(इस से पहले यूसुफ तुम्हारे पास रौशन दलीलों के साथ आए थे मगर जो हिदायत ले कर वह आए थे उस के बारे में तुम शक ही में मुब्तिला रहे। (सूरह मोमिन : ३४) एवं आयत
أَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ..... आ अरबाबुन मुताफ़र्रिकून..... अलख (क्या अलग अलग ख़ुदा बेहतर हैं या एक अल्लाह..... सूरह यूसुफ ३९) इसी सूरह यूसुफ की आयत ३९ से स्पष्ट है कि कुफ़्र के साथ माल वसूल करने और उस को बादशाह के चहेतों, परिवारजनो, सैनिकों और प्रजा पर खर्च करने के सिलसिले में उन के विशिष्ट तौर तरीक़े ज़रूर रहे हों। और यह तौर तरीक़े नबियों के तरीक़े और उन के न्याय और इन्साफ़ से मेल नहीं खाते होंगे। लेकिन यूसुफ के लिए यह संभव नहीं था कि जो चाहते अर्थात् जो बात भी उन की दृष्टि में अल्लाह के दीन से सम्बन्धित होती, कर गुज़रते, क्यों कि क्रौम ने उन की दअवत स्वीकार नहीं की थी। फिर भी यूसुफ ने जहाँ तक संभव था न्याय और समानता को अमल में ले आए और सत्ताधिकार पा कर अपने घर के मोमिन लोगों को वह सम्मान दिया जो सत्ता के बिना संभव नहीं था। और यह सब बातें इशार्द इलाही

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ

(अल्लाह से डरो जितना तुम्हारे बस में हो। सूरह तगाबुन १६) में शामिल हैं। अतः जब दो वाजिब बातों में टकराव हो जाए और दोनों का जमा करना संभव न हो तो जिस बात की अधिक ताकीद की गई हो उस को सर्वोपरि रखा जाए। ऐसी सूरत में दूसरी बात वाजिब नहीं रहेगी और न उस को छोड़ देने वाला अधिक ताकीद की गई बात को व्यवहार में लाने के कारण वास्तव में किसी वाजिब को छोड़ने (का दोषी) ठहरेगा (मजमुआ फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द २० पृष्ठ ५६)।

(C) यूसुफ मिस्त्र के शासक थे इस लिए अगर वे चाहते तो अपने पिता से संपर्क बना सकते थे लेकिन चूँकि वे नबी भी थे इस लिए अल्लाह की हिदायत (वह्य) के अनुसार ही कोई क़दम उठा सकते थे। और ख़ुदा की योजना यह थी कि अभी बात छिपी रहे और यूसुफ अपने असली रूप को उस समय अपने भाईयों पर ज़ाहिर करें जब उन के दिल संकट एवं विपदाओं में घिर जाने के कारण पसीज गए हों ताकि वे अपने आप को सुधारने पर आमादा कर लें। और यह सही है कि जो लोग नसीहत सुनने के लिए आमादा नहीं होते वे तभी सबक सीखते हैं जब कि उन्हें ठोकरें लगती हैं और जो लोग ग़फलत की नींद सोते रहते हैं उन्हें हालात के थपड़े ही जगा देते हैं। अगर यूसुफ के भाई होशमन्द होते तो वे अपने पिता की छत्रछाया में रह कर बेहतरीन इन्सान बन सकते थे। मगर जब उन्होंने ने बाप की रहनुमाई के बावजूद ग़लत रवैया अपनाया तो अब उन के सुधार के लिए ज़रूरी था कि वे ठोकर खाएँ ताकि उन में अपने ग़लत रवैये का एहसास पैदा हो। ख़ुदा की यही मसलहत थी जिस ने उन के मामले को एक ख़ास दिशा दी और यूसुफ ने उन के साथ व्यवहार करने में ऐसी कूटनीति अपनायी कि उन के दृष्टिकोण बदल गए और जब उन के दृष्टिकोण बदल गए तो जैसा कि आगे चल कर मालूम होगा उन की दुनिया ही बदल गई।

(D) यूसुफ ने अपने भाईयों के सिलसिले में जो तदबीर या कूटनीति अपनायी उस का सम्बन्ध हालात के सुधार से है। उन्होंने ने जो कुछ किया उस में न झूठ की मिलावट थी और न अन्याय एवं अत्यचार की बात थी। बल्कि नियत की पाकीज़गी के साथ और एक अहम मक़सद की ख़ातिर कुछ ऐसी तदबीरें अपनायी गई जो वाह्य रूप से थोड़ी देर के लिए ग़लत प्रभाव डालने वाली थीं लेकिन परिणाम की दृष्टि से वे ठीक थीं। इस लिए यूसुफ की इस कूटनीति को “शरअी हीले बहाने” का नाम देना, और नाजायज़ कामों को जायज़ करने के लिए “किताबुल हियल” खोल कर बैठ जाना अपने आप को मुग़ालते में डालने के सिवा कुछ नहीं। शरीअत का मार्ग सीधा और सत्य का मार्ग है जिस में इस बात की तो गुन्ज़ाईश है कि

आवश्यकतानुसार कूटनीति अपनायी जाये लेकिन हीले बहाने कर के हलाल को हराम करने की कतई गुन्जाइश नहीं है।

123. इशारा है इस बात की तरफ कि जब यूसुफ ने अल्लाह के प्रदान किये हुए ज्ञान के आधार पर अच्छी तदबीर और कूटनीति का तरीका अपनाया और हुकूमत एवं सियासत के मामले में न्याय और समानता को बुनियाद बनाया तो अल्लाह तआला ने उन के दर्जे बुलन्द कर दिये।

124. यह एक बिलकुल उचित और समय पर की गई तंबीह है हर ज्ञानवान के लिए कि उस को अपने ज्ञान का घमण्ड न हो बल्कि यह अच्छी तरह समझ ले कि उस के ऊपर एक सर्वोच्च हस्ती ऐसी है जिस के ज्ञान की कोई सीमा नहीं। कोई व्यक्ति कितना ही बड़ा विद्वान क्यों न हो उस का ज्ञान अल्लाह के ज्ञान के आगे कुछ भी नहीं।

125. जब बिनयमीन की बोरी से प्याला बरामद हुआ और यूसुफ के भाईयों से कोई जवाब बन न पड़ा तो फ़ौरन बिनयमीन के सगे भाई यूसुफ पर यह आरोप लगा दिया कि इस से पहले वह भी यही हरकत कर चुका है और अब अगर बिनयमीन ने यह हरकत की है तो अश्चर्य की बात नहीं यह यूसुफ ही का भाई है। उन को मालूम नहीं था कि वे जिस व्यक्ति के सामने इतना

बड़ा झूठ बोल रहे हैं वह खुद यूसुफ है। इस से अन्दाज़ा होता है कि वे यूसुफ के बारे में अब तक कैसी ग़लत भावना अपने दिलों में छिपाये हुए थे।

126. जो व्यक्ति एक बेगुनाह पर झूठा इल्जाम लगाता है वह अपने आप को गिराता और अपने गिरे होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

127. उन्होंने ने यूसुफ को अज़ीज़ कह कर सम्बोधित किया। अज़ीज़ का अर्थ सत्ताधिकारी के हैं। यह लक़ब मिस्र के शासक के लिए खासा था। इस से यह ज़ाहिर होता है कि जिस समय यूसुफ के भाईयों की यह घटना घटी, यूसुफ मिस्र पर शासन कर रहे थे अलबत्ता अभी उन्हें सम्राट (मलिक) की पोजीशन हासिल नहीं हुई थी।

128. अर्थात् याकूब अलैहिस्सलाम बूढ़े हो गए हैं और बिनयमीन को रोक लेने से उन को बड़ा दुःख होगा।

129. यूसुफ ने बहुत नपे तुले शब्द इस्तेमाल किए। उन्होंने ने यह नहीं कहा कि “जिस ने चोरी की है” बल्कि यह कहा “जिस के पास हमारी चीज़ निकल आई” अर्थात् साफ़ तरीके से उन्होंने ने चोरी का आरोप नहीं लगाया क्यों कि वे जानते थे कि वास्तव में बिनयमीन ने चोरी नहीं की है।



80. जब वे उस से निराश हो गए तो अलग हो कर परामर्श करने लगे। उन में जो बड़ा था उस ने कहा क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता तुम से अल्लाह के नाम पर वचन ले चुके हैं और इस से पहले यूसुफ़ के मामले में भी तुम से कुसूर हो चुका है। मैं तो अब इस देश से जाने वाला नहीं जब तक कि मेरे पिता मुझे आदेश न दें या अल्लाह मेरे हक़ में कोई फ़ैसला न कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है ¹³⁰।

فَلَمَّا اسْتَيْسَوْا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا
قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِيَ ابْنِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ①

81. तुम लोग अपने पिता के पास जाओ और कहो ! अब्बाजान आप के बेटे ने चोरी की ¹³¹ और हम ने वही बात बयान की जो हमारी जानकारी में आई। ग़ैब के निगेहबान तो हम थे नहीं।

ارْجِعُوا إِلَى آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ①

82. आप उस बस्ती के लोगों से पूछ लीजिए जहाँ हम ठहरे थे। और उस काफ़िले वालों से पूछ लीजिए जिस के साथ हम आए हैं ¹³²। हम (अपने बयान में) बिलकुल सच्चे हैं।

وَسَلِّ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ②

83. उस ने कहा नहीं बल्कि तुम्हारे जी (नफ़्स) ने एक बात गढ़ ली है ¹³³। तो मुझे अब बख़ूबी (उत्तमता के साथ) सब्र से काम लेना होगा। असंभव नहीं की अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए ¹³⁴। निस्संदेह वह सब कुछ जानने वाला और हिकमत वाला है ¹³⁵।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَبِيلٌ
عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَبِيلٌ
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ③

84. और उस ने उन की तरफ़ से मुँह फेर लिया और पुकार उठा हाथ यूसुफ़ ! ग़म से उस की आँखें सफ़ेद पड़ गईं और वह घुटा घुटा रहने लगा ¹³⁶।

وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَعْفَى عَلَى يُوسُفَ وَأَبِصْرَتْ
عَيْنُهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ④

85. वे कहने लगे, अल्लाह की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ ही की याद में रहेंगे यहाँ तक कि अपने आप को घुला देंगे या हलाक हो जाएंगे।

قَالُوا تَاللَّهِ تَقْتَوُونَ دُرِّيُّوسُفَ حَتَّى تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ⑤

86. उस ने कहा मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म की फ़रियाद (शिकवा) अल्लाह ही से करता हूँ ¹³⁷ और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ¹³⁸।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑥

130. यूसुफ़ के भाइयों में सब से बड़ा रूबेन था (उत्पत्ति ४६:९) उस के बयान से ज़ाहिर होता है कि यह सब भाई अल्लाह पर ईमान रखते थे अलबत्ता उन में नैतिक और व्यवहारिक खराबियाँ पैदा हो गई थी।

131. उन्होंने अपने पिता से यह नहीं कहा कि हमारे भाई ने चोरी की बल्कि कहा कि आप के बेटे ने चोरी की, उन का यह अन्दाज़ दिल को चोट पहुँचाने वाला था।

132. अर्थात् यह बहुचर्चित घटना है अतः आप मिस्र वालों से या उन क्राफ़िला वालों से जो हमारे साथ कनान आया, पूछ कर मालूम कर सकते हैं !

133. अर्थात् यह बात कि बिनयमीन ने चोरी की तुम मान सकते हो मगर मैं नहीं मान सकता क्यों कि मैं उस के चरित्र से भली भाँत परिचित हूँ और सच्चाई भी यही थी कि बिनयमीन ने न चोरी की थी और न यूसुफ़ ने उन पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया था। बल्कि मामला कुछ इस ढंग से हुआ कि उन लोगों ने गुमान कर लिया कि उस ने चोरी की है।

134. याक़ूब अलैहिस्सलाम इस स्वप्न के कारण जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा था, आशा रखी थी कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़िन्दा होंगे और एक दिन उन का स्वप्न पूरा हो कर रहेगा ।

135. याक़ूब अलैहिस्सलाम ने इस अवसर पर अल्लाह तआला के इन दो गुणों अथवा विशेषताओं का जो ज़िक्र किया तो उस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत था कि यूसुफ़ और बिनयमीन की घटनाएँ मात्र घटनाएँ नहीं हैं बल्कि इन के पीछे अल्लाह तआला की कोई महान योजना निहित है और वह ज्ञान

एवं तत्वदर्शिता (हिकमत) पर आधारित है।

136. इस से अन्दाज़ा होता है कि याक़ूब अलैहिस्सलाम को यूसुफ़ की जुदाई का कितना बड़ा सदमा पहुँचा था। उन के सीने में भी इन्सान का दिल था फिर क्यों न दर्द से भर आता। मगर जिस सब्र और धैर्य के साथ वे उस को सहन कर रहे थे उस में उन लोगों के लिए नमूना है जिन्हें दुनिया में इस प्रकार के सदमे अथवा दुख पहुँचते हैं।

137. अल्लाह का शिकवा करने और अल्लाह से शिकवा करने में बहुत अन्तर है। अल्लाह का शिकवा आदमी अपने ही जैसे (तुच्छ) आदमी के सामने करता है। यह अल्लाह से बदगुमानी भी है और बेसब्री का प्रदर्शन भी लेकिन अल्लाह से शिकवा तो उसी के सामने किया जाता है जो एक पीड़ित एवं दुखी दिल की फ़रियाद भी है और उस से आशा की अभिव्यक्ति भी।

138. याक़ूब अलैहिस्सलाम नबी थे। उन के इस बयान से पता चलता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें वह्य के द्वारा बता दिया था कि यूसुफ़ मर नहीं गए बल्कि जीवित हैं और एक दिन उन से मुलाक़ात होना है। इस चीज़ ने उन के दिल में एक उत्साह पैदा कर दिया था। फिर यह भी हकीकत है कि अगर किसी का चहेता बेटा मर जाता है तो उसे दुख ज़रूर होता है। लेकिन यह दुख सामायिक होता है। इस के विपरीत अगर उस का चहेता बेटा गुम होता है तो उस को जो दुख होता है वह न केवल असहनीय होता है बल्कि इस खयाल से कि मालूम नहीं बेटा किस हाल में कहाँ होगा वह बहुत परेशान और बेचैनी महसूस करने लगता है। याक़ूब अलैहिस्सलाम के दुख की मनोदशा यही थी।



87. बेटो ! जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई का सुराग लगाओ और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। उस की रहमत से तो काफ़िर ही मायूस होते हैं !

يٰٓبَنِيٓ اٰدٰهْبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوسُفَ وَ اَخِيْهِ وَلَا تَأْسُوْا
مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يَأْسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْكٰفِرُوْنَ ۝۸۷

88. जब वे उस के पास पहुँचे तो कहा ऐ अजीज़¹³⁹ हम और हमारे घर के लोग बड़ी तकलीफ़ में मुब्तिला हैं और हम थोड़ी सी पूँजी ले कर आए हैं तो आप हमें ग़ल्ला पूरा दीजिए और सदका भी प्रदान कीजिए अल्लाह सदका करने वालों को जज़ा (इनाम) देता है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يَا اَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا
وَاَهْلُنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِضَاعَةٍ مُّرْجُئَةٍ قَاوِفٍ لَّنَا الْكَيْلُ
وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝۸۸

89. उस ने कहा तुम्हें मालूम है कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया जब कि तुम जिहालत में मुब्तिला थे?

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ يُّوسُفَ وَ اَخِيْهِ
اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ۝۸۹

90. उन्होंने ने कहा क्या वास्तव में आप यूसुफ़ हैं ? उस ने कहा हाँ मैं यूसुफ़ हूँ ¹⁴⁰ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया। और वास्तविकता यह है कि जो कोई तक्रवा अपनाता है और सब्र से काम लेता है तो अल्लाह ऐसे नेक लोगों का बदला (अज़्र) नष्ट नहीं करता ¹⁴¹।

قَالُوْۤا اِنَّكَ لَآنتَ يُّوسُفُ قَالَ اَنَا يُّوسُفُ وَهٰذَا اَخِيْ
قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا اِنَّهٗ مِنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۹०

91. उन्होंने ने कहा ख़ुदा की क़सम अल्लाह ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की और वास्तव में हम कुसूरवार थे ¹⁴²।

قَالُوْۤا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰشْرَكْنَا
اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِيْنَ ۝۹१

92. उस ने कहा आज के दिन तुम से कोई पूछ गछ नहीं ¹⁴³। अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब से बढ़कर रहम करने वाला है।

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ
الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّحِيْمِيْنَ ۝۹२

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ मेरे पिता के चेहरे पर डाल दो । उन की आँखों की रौशनी लौट आएगी ¹⁴⁴। और अपने तमाम घरवालों को ले कर मेरे पास आ जाओ ¹⁴⁵।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَالْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اٰبِيْ يَآتٍ
بَصِيْرًا وَاَنْتَوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اٰجْمَعِيْنَ ۝۹३

94. फिर जब क़ाफ़िला रवाना हुआ तो उन के पिता कहने लगे । अगर तुम लोग यह न कहो कि मैं सठिया गया हूँ तो मैं कहूँगा कि मुझे यूसुफ़ की महक आ रही है ¹⁴⁶।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَجِدْرِ يَح
يُّوسُفَ لَوْلَا اَنْ تَفْنُوْۤا ۝۹४

139. यूसुफ़ के भाई कनान से मिश्र आए और यूसुफ़ के पास पहुँचे और उन्हें अजीज़ कह कर सम्बोधित किया।

140. यूसुफ़ ने जब अपने भाइयों की इस परेशानी को देखा कि वे सूखा ग्रस्त होने के कष्ट और निर्धनता के कारण सदका माँगने पर मजबूर हो गए हैं तो उन से रहा न गया और उचित अवसर देख कर अपना असली नाम उन को बता दिया जो अब तक राज में था। नाम छिपा होने का कारण यह था कि यूसुफ़ को मिश्र के शासक होने के कारण अजीज़ का लक़ब (उपनाम) दिया गया था एवं जैसा कि बाइबिल का बयान है सम्राट ने उन का दूसरा नाम रखा था। (उत्पत्ति ४१:४५) इस लिए हुकूमत की बागडोर संभालने के बाद वे मिश्र में नये नाम से मशहूर हुए होंगे।

यूसुफ़ को जब कुएँ में फेंक दिया गया था तो अल्लाह तआला ने उन्हें इस बात की पेशगी ख़बर दी थी कि एक समय आएगा जब तुम उन को इस मामले की याद दिलाओगे जो आज वे तुम्हारे साथ कर रहे हैं जब कि उन्हें इस का एहसास भी नहीं होगा। (आयत १५) अल्लाह तआला की यह बात पूरी हो कर रही। अतः यूसुफ़ ने अपने भाइयों को इस मौक़े पर वह सब याद दिलाया जब कि वे इस बात से अनजान थे कि वे जिस से बोलचाल रहे हैं वह यूसुफ़ हैं।

141. अर्थात् नेकी और परहेज़गारी (तक़्वा) का रवैया अपनाने वालों को अल्लाह तआला दुनिया में भी अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) प्रदान करता है।

142. हालात ने उन्हें बहुत झंझोड़ दिया था लेकिन जब उन्होंने ने अल्लाह की कुदरत का यह करिश्मा देखा कि जिस व्यक्ति को उन्होंने कुएँ में फेंक दिया था वह आज पूरे मिश्र पर शासन कर रहा है तो उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ और उसी समय अपने कुसूर को स्वीकार कर लिया। इस से पता चला कि हालात की सख़्ती इन्सान के सुधार और उस की तरबियत का सामान करती है। और कुदरत के करिश्मे उस को चौकाने का कारण बनते हैं।

143. नैतिकता और शराफ़त की कितनी ऊँची मिसाल है जो यूसुफ़ ने क़ायम की, कि ऐसे समय जब कि वे अपने

भाइयों से इन्तिक़ाम (प्रतिशोध) लेने पर पूरी तरह समर्थ थे उन्होंने ने कोई बदला नहीं लिया बल्कि उन को माफ़ कर दिया और उन के साथ एहसान का सुलूक किया। चरित्र की यही महानता है जो दिलों को मोह लेती है। और दुश्मनों को भी दोस्त बना देती है।

इस सूरह के अवतरण के समय मक्का में कुरैश के दो गिरोहों के बीच जो तनाव और विवाद उत्पन्न हो गया था उस की पृष्ठ भूमि में यूसुफ़ और उस के भाइयों का यह वृत्तांत सही समय पर दिया गया मार्गदर्शन था और मक्का विजय के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम माफ़ी का एलान करते हुए यही शब्द दोहराए थे

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ

(आज के दिन तुम पर कोई प्रताड़ना नहीं)

144. इस की व्याख्या आगे नोट १४८ में आ रही है।

145. यूसुफ़ ने अपने पिता याक़ूब के पूरे परिवार को मिश्र बुलाया। एक नबी का किसी दूसरी जगह स्थानांतरण अल्लाह के निर्देश के अनुसार ही होता है। इस लिए यूसुफ़ ने अल्लाह की वही से इशारा पाकर ही यह बात कही होगी।

146. यूसुफ़ मिश्र में एक मुद्दत से मौजूद थे लेकिन याक़ूब अलैहिस्सलाम को उन की महक नहीं आई मगर अब जब कि क़ाफ़िला मिश्र से चला है तो उन्होंने ने यूसुफ़ की महक महसूस की। इस से प्रतीत होता है कि यह अल्लाह की तरफ़ से इल्हाम (ईश्वरीय संकेत) था जो याक़ूब अलैहिस्सलाम के दिल में हुआ।

प्रसंग से यही प्रमाणित होता है कि यहाँ यूसुफ़ की महक से मुराद यूसुफ़ का सुराग लगने की ख़ुशख़बरी है। यह ख़ुशख़बरी याक़ूब अलैहिस्सलाम को इल्हाम (ईश्वरीय संकेत) के द्वारा उसी समय मिल गई जब कि क़ाफ़िला यूसुफ़ का कुर्ता ले कर मिश्र से कनान के लिए रवाना हुआ। किन्तु यह ख़ुशख़बरी अप्रत्यक्ष थी। प्रत्यक्ष रूप से उन्हें ख़ुशख़बरी तब मिली जब क़ाफ़िला उन की सेवा में पहुँच गया।



95. उन्होंने ने कहा अल्लाह की क़सम, आप अपनी पुरानी ख़ाम ख़याली ही में मुब्तिला हैं ¹⁴⁷।

قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِي ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝۹۵

96. फिर जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया तो उस ने कुर्ता उस के चेहरे पर डाल दिया और उस की आँखों की रौशनी लौट आई ¹⁴⁸। उस ने कहा मैं ने तुम से कहा न था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ¹⁴⁹।

فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيْرُ الْفُتٰهُ عَلٰى وَجْهِهِ فَاَرْتَدَّ بِصِيْرًا ۝۹۶
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۹۷

97. वे कहने लगे पिता जी हमारे गुनाहों की क्षमा के लिए प्रार्थना कीजिए। वास्तव में हम ख़ताकार थे ¹⁵⁰।

قَالُوْا يَا اٰبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا اِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ۝۹۸

98. उस ने कहा मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा ¹⁵¹। निस्संदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला रहम करने वाला है।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّهُ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۹۹

99. फिर जब यह लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता पिता को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में दाखिल हो जाओ इन्शा अल्लाह अमन और चैन के साथ ¹⁵²।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰى اِلَيْهِ اَبُوْهُ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرًا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ اٰمِيْنِ ۝۱۰۰

100. और अपने माता पिता को सिंहासन पर ऊँचा बिठाया और वे उस के आगे झुक गए। ¹⁵³ उस ने कहा पिता जी ! यह है अर्थ मेरे उस स्वप्न का जो मैं ने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिखाया। यह उसी का एहसान है कि मुझे कारागार से निकाला और आप लोगों को वीराने से (मेरे पास) लाया बाद इस के कि शैतान मेरे और मेरे भाईयों के बीच फ़ितना डाल चुका था। निस्संदेह मेरा रब जो कुछ चाहता है उस के लिए लतीफ़ तदबीरें (सूक्ष्म उपाय) करता है। वह इल्म वाला भी है और हिकमत वाला भी ¹⁵⁴।

وَرَفَعَ اَبُوْهُ عَلٰى الْعَرْشِ
وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۝۱۰۱ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَوَلٰٓى وُجُوْهُنَّ
مِنْ السَّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدُوِّ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ تَزْعُمَ
الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَآيَشَآءِ
اِنَّهُ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝۱۰۲

101. ऐ मेरे रब ! तूने मुझे हुकूमत प्रदान की और बातों की ताबीर करना (अर्थ पकड़ना) सिखाया। आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले ! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा कारसाज़ (संरक्षक) है। मुझे इस हालत में मौत दे कि मैं मुस्लिम हूँ, और मुझे नेक लोगों के साथ शामिल कर ¹⁵⁵।

رَبِّ قَدْ اَتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ
الرَّحَادِيْثِ ۝۱۰۳ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وِلٰى فِى الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۝۱۰۴ تَوَقَّئِىْ مُسْلِمًا ۝۱۰۵ وَالْحَقُّنِيْ بِالصَّلٰحِيْنَ ۝۱۰۶

147. यह बात उन के घर के लोगों ने कही होगी और इस आधार पर कही होगी कि वे देख रहे थे कि याकूब अलैहिस्सलाम यूसुफ की याद में खोए खोए से रहते हैं इस लिए उन्होंने ने समझा कि अब जो यूसुफ की खुशबू के महसूस करने का जिक्र कर रहे हैं वह मात्र खयाली बात है। मालूम होता है वे न पैगम्बर की महानता को सही तौर से मसझ सके थे और न उन्हें इस बात का अन्दाज़ा था कि यूसुफ की खुशबू का सम्बन्ध इल्हाम से हैं।

148. यह असाधारण घटना अल्लाह की कुदरत का करिश्मा थी। और इस प्रकार के करिश्मे अल्लाह तआला नबियों के हाथों सामने लाता रहा है और इन के द्वारा उन का समर्थन एवं सहायता करता रहा है। मात्र इस कारण कि आम तौर से हमारे तज्जिबे और अनुभव में इस तरह की बातें नहीं आतीं, इन का इन्कार करना सही नहीं जब कि इस की सूचना हमें एक ऐसे माध्यम से मिल रही है जिस की सत्यता संदेह से ऊपर है।

कुर्आन के पन्नों में इतिहास की कितनी ही असाधारण घटनाएँ अंकित हुई हैं ताकि मनुष्य अपने सीमित ज्ञान और अनुभव ही को सब कुछ समझ न बैठे। बल्कि उस की नज़र इस वास्तविकता पर हो कि इस क्रायनात का एक खुदा है जो इसे चला रहा है और वह अपनी कुदरत के करिश्मे जिस तरह चाहता है दिखाता है।

149. याकूब अलैहिस्सलाम के इस बयान से ज़ाहिर है कि उन्हें यूसुफ के बारे में वहय द्वारा यह मालूम हो गया था कि वे जीवित हैं इस लिए अपने जिगर के टुकड़े से मिलने का शौक उन के दिल में करवटें ले रहा था। मगर इस अवसर पर अल्लाह तआला याकूब के धैर्य का भी इम्तिहान लेना चाहता था इस लिए यूसुफ का पूरा हाल उन पर प्रकट नहीं किया था।

150. इस तरह बेटों ने अपने खताकार होने को अपने पिता के सामने भी स्वीकार कर लिया और उन से विनती की वे उन के लिए अल्लाह तआला से क्षमा की प्रार्थना करें ! यह है इन्सान का हाल कि वह भी बनता भी है, और बिगड़ता भी है, और बिगड़ कर सँवरता भी है। इस लिए इस की सुधार का प्रयास करते रहना चाहिए मालूम नहीं कि किस वक्त उस की अंतरात्मा जाग उठे।

151. प्रार्थना को विलंबित करने का एक कारण तो यह हो सकता है कि याकूब अलैहिस्सलाम अपने बेटों के रवैये को देखना चाहते होंगे कि वास्तव में उन्होंने ने अपना सुधार कर लिया है या नहीं और दूसरी बात यह कि मामला चूँकि यूसुफ से सम्बन्धित था इस लिए वे उस घड़ी को दुआ कुबूल होने के लिए अधिक उचित समझ रहे होंगे जब कि यूसुफ के पास सब

जमा हो जाएँगे।

152. यूसुफ अपने माता पिता के स्वागत के लिए मिस्त्र की सीमा पर तशरीफ ले गए और वहाँ अपने परिवार का अभिनन्दन करते हुए अपने माता पिता को आदर के साथ विशेष रूप से अपने पास बिठाया और उन से कहा कि अब मिस्त्र में दाखिल हो जाइए अल्लाह ने चाहा तो आप को हर तरह का अमन और चैन नसीब होगा।

153. अर्थात् जब मिस्त्र की राजधानी में सब पहुँच गए और यूसुफ का दरबार लगा तो यूसुफ ने प्रचालित रीतियों का खयाल न करते हुए अपने माता पिता के आदर का अत्याधिक ख्याल रखा और उन को सिंहासन पर बिठाया।

यूसुफ के हाथ में उस समय संपूर्ण सत्ता आ गई थी और वे सिंहासन के अधिकारी बन गये थे। इस लिए वे इस योग्य हो सके कि अपने माता पिता को सिंहासन पर जगह दें। इस अवसर पर यूसुफ के दरबार में एक नई शान पैदा हो गई थी। पुरानी यादें ताज़ा हो रही थीं और यूसुफ के दरगुज़र और उन के उच्च चरित्र ने उन के भाईयों को अत्यन्त प्रभावित कर दिया था। उन्होंने जब देखा कि यह व्यक्ति बादशाह हो कर भी इतना विनम्र स्वभाव एवं स्नेही है कि अपने माता पिता को राजसिंहासन पर बिठाता है तो निःसंकोच उस के आगे झुक गए। यह आन्तरिक भावना थी जिस ने उन्हें झुका दिया। यूसुफ ने उन्हें झुकने का हुक्म नहीं दिया था और न यह कोई पूजा हेतु झुकना था। बल्कि एक भावविभोर कर देने वाले माहौल से प्रभावित हो कर अपने आप झुक पड़े थे और यूसुफ ने इस को बस इस लिए सहन किया कि उन्होंने ने जो स्वप्न अपनी अल्पायु में देखा था उस का यह स्वप्नार्थ था। इस तरह अल्लाह की योजना सफल हो कर रही और वे सब यूसुफ की सत्ता के आधीन आ गए।

अब बहस के कुछ हिस्से रह जाते हैं:-

(1) मूल अरबी (Text) में **خَرُوءَ لَهُ سَجْدًا** के शब्द इस्तेमाल हुए हैं। इस का एक अनुवाद तो “वे उस के आगे सजदे में गिर गए” होता है। और दूसरा अनुवाद यह हो सकता है “वे उस के आगे झुक गए” प्रसंग एवं संदर्भ की दृष्टि से यह दूसरा अनुवाद ही सही है। सजदे का शब्द जैसा कि हम नोट ७ में स्पष्ट कर चुके हैं, केवल झुकने के अर्थ में भी इस्तेमाल होता है और यूसुफ के भाईयों का झुकना उस स्वप्न का अर्थ था जिस में यूसुफ ने सितारों को अपने आगे झुकते हुए देखा था इस लिए यहाँ उस विशेष परिभाषिक सजदे का सवाल ही पैदा नहीं होता। क्या सितारों का सर होता है जो वे अपना माथा ज़मीन पर टेकें? सितारों के सजदा करने का अर्थ यही हो सकता है कि बुलन्दी से उतर कर यूसुफ की तरफ झुक गए थे इस लिए यूसुफ के आगे जब उन के भाई झुक गए तो सपना

पूरा हो गया। “خَرُّوا” का शाब्दिक अर्थ है “वे गिर गए।” यह शब्द इस बात को ज़ाहिर करता है कि यूसुफ़ के भाई बिना किसी दबाव के अपने आप तुरन्त झुक गए थे। अर्थात् वातावरण ऐसा बन गया था कि वे बिलकुल भावविभोर हो कर यूसुफ़ के आगे झुक गए। दूसरे शब्दों में वाह्य रूप से किसी ने उन को झुकने पर बाध्य नहीं किया था। यह उन की ऐसी क्रिया थी जिस से वे अपने आप को रोक नहीं सके। और कुर्आन का इस को बयान करने से अभिप्रेत वास्तव में यह स्पष्ट करना है कि यूसुफ़ के भाईयों को आखिरकार यूसुफ़ के आगे झुकना पड़ा और उन की सत्ता के आधीन उन्हें आना पड़ा।

(2) इस सजदे के “इबादत के लिए किया गया सजदा” होने का तो कोई सवाल पैदा ही नहीं होता क्यों कि कोई नबी अपने लिए इबादत के सजदे को गवारा कर ही नहीं सकता। रहा उस का आदर सम्मान के लिए किया गया सज्दा होना तो यह बात भी सही नहीं क्यों कि न यूसुफ़ ने इस का आदेश दिया था और न उन्होंने ने अपने लिए ऐसे कोई आदाब अथवा नियम प्रचलित किये थे कि लोग उन के लिए आदर एवं सम्मान हेतु सजदा करें। कुर्आन में इस के लिए कोई दलील नहीं है। आयत में जो कुछ कहा गया है वह केवल इतनी बात है कि यूसुफ़ के भाई बे इख्तियार यूसुफ़ के आगे झुक गए थे।

आयत का सही भावार्थ स्पष्ट हो जाने के बाद उन लोगों के विचारों का आप से आप खण्डन हो जाता है जिन्होंने आदर एवं सम्मान हेतु सजदे को जायज़ ठहराने के लिए इस आयत का सहारा लिया है। और फिर पीरों, बुजुर्गों, दरगाहों और बादशाहों के लिए उन के सम्मान हेतु सजदा को सही समझने और बरतने से सहमत हो गए। मुगल बादशाहों ने भी अपने लिए आदर एवं सम्मान के सज्दे की रीति जारी की थी लेकिन शैख अहमद सर हिन्दी ने शरिअत विरोधी इस प्रथा के विरुद्ध ज़बरदस्त जिहाद किया।

(3) यूसुफ़ ने अपने माता पिता को पहले ही सिंहासन पर बिठाया था इस लिए वे उन के आगे झुकने में शामिल नहीं थे। रहा यह सवाल कि उन के आगे झुके बगैर स्वप्नार्थ किस तरह पूरा हुआ तो इस का जवाब यह है कि यूसुफ़ ने अपना जो स्वप्न

बयान किया था (आयत ५) वह दो भागों पर आधारित था। एक भाग यह था कि “मैं ने ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को देखा है” और दूसरा भाग था कि “मैं ने देखा कि वे मेरे आगे झुक गए हैं।” इस दूसरे भाग में उन्होंने ने सामूहिक रूप से उन के झुकने की बात कही थी अलग अलग हर एक के झुकने का जिक्र नहीं किया था इस लिए कुल मिला कर यहाँ भी झुकने की बात सही साबित हुई यद्यपि कि उन के माता पिता झुकने में शामिल नहीं थे। सपने का वास्तविक भाव यह था कि सब यूसुफ़ के आधीन होंगे और यह बात इस तरह पूरी हुई कि उन के मता पिता और भाई सब अपने वतन को छोड़ कर यूसुफ़ के पास आ गए और उन के आधीन रहना सब ने स्वीकार कर लिया।

(4) यूसुफ़ जिस समय मिस्र के शासक नियुक्त हुए थे उस समय वे सिंहासन के मालिक नहीं बन गए थे। बल्कि नियमानुसार सम्राट ही सिंहासन का मालिक। रहा मगर बाद में यूसुफ़ की पोजीशन मज़बूत होती चली गई और उन के भाई जिस समय गल्ला लेने के लिए आए तो वे मिस्र के अज़ीम (सत्ताधारी व्यक्ति) थे। और अब जब कि उन्होंने अपने माता पिता को सिंहासन पर बिठाया है वे राजसिंहासन के मालिक बन गए थे। कुर्आन के बयान से यही चित्र सामने आता है इस लिए बाइबिल के उलझे हुए बयान पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

154. इस अवसर पर यूसुफ़ का यह बयान उन के चारित्र का उत्तम उदाहरण है। बावजूद इस के कि वे मिस्र के शासक थे उन के इस बयान में गर्व और घमंड की हल्की झलक भी नहीं पायी जाती बल्कि इस के एक एक शब्द से नेमतों के पाने की स्वीकृति, कृतज्ञता तथा विनम्रता प्रकट हो रही है।

155. इस अवसर पर यूसुफ़ ने दुआ भी की। इस दुआ में उन्होंने ने पहले अल्लाह के एहसानों का जिक्र करते हुए उस की हम्द और प्रशंसा की फिर अपने सुखद अंत और आखिरत में अच्छे लोगों में शामिल करने की प्रार्थना की। यह बात दुआ के आदाब (तरीकों) में से है कि पहले अल्लाह की प्रशंसा की जाए फिर अपनी प्रार्थना उस के समक्ष प्रस्तुत की जाए!



और हम ने तुम से पहले भी आदमियों को ही रसूल बना कर भेजा था जो बस्तियों के रहने वाले थे और हम ने उन पर वह्य की थी। क्या यह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देखते उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो इन से पहले गुज़र चुके हैं। और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्होंने तक्रवा (ईशभय) अपनाया ! फिर क्या तुम बुद्धि से काम न लोगे ? (अल-कुर्आन)

102. यह परोक्ष (ग़ैब) की ख़बरों में से है जिस की हम तुम पर वह्य (प्रकाशना) कर रहे हैं। वरना तुम उस समय उन के पास मौजूद न थे जब उन्होंने आपस में एक बात तय कर के साज़िश की थी ¹⁵⁶।

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ﴿١٠٢﴾

103. और अधिकतर लोगों का हाल यह है कि चाहे तुम कितना ही चाहो वे ईमान लाने वाले नहीं हैं ¹⁵⁷।

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

104. हालांकि तुम इस पर उन से कोई मुआविज़ा नहीं माँग रहे हो ¹⁵⁸। यह तो एक याद देहानी है तमाम दुनिया वालों के लिए ¹⁵⁹।

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

105. और आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियाँ हैं जिन पर से ये लोग गुजरते हैं मगर कोई ध्यान नहीं देते ¹⁶⁰।

وَكَايْنٍ مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ
عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾

106. और अधिकतर लोगों का हाल यह है कि वे अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि उस के साथ साझी ठहरा लेते हैं ¹⁶¹।

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾

107. क्या ये लोग इस बात से निश्चित हैं कि अल्लाह के अज़ाब की आफ़त उन पर छा न जाएगी या बे ख़बरी में क्रियामत की घड़ी उन पर अचानक आ न जाएगी?

أَفَأَمُؤْمِنُونَ تَأْتِيهِمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ
أَوْ تَأْتِيهِمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾

108. (ऐ पैग़म्बर !)कहो यह है मेरी राह ¹⁶² में अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ बसीरत के साथ ¹⁶³ में भी और वे लोग भी जो मेरी पैरवी कर रहे हैं ¹⁶⁴। और अल्लाह के लिए पाकी है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ
اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾

109. और हम ने तुम से पहले भी आदमियों ही को रसूल बना कर भेजा था जो बस्तियों के रहने वाले थे और हम ने उन पर वह्य की थी ¹⁶⁵। क्या यह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देखते उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो इन से पहले गुज़र चुके हैं ¹⁶⁶। और आख़िरत का घर ¹⁶⁷ उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्होंने तक्रवा (ईशभय) अपनाया ! फिर क्या तुम बुद्धि से काम न लोगे ?

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَكَ أُورِثُ الْأَرْضَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾

156. यह घटना कुर्आन उतरने से लग भग दो हजार चार सौ साल पहले की है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस की कोई जानकारी न थी। और न आप की क्रौम इस से भिन्न थी। रहे अहले किताब, तो बाइबिल की किताब उत्पत्ति में यह वृत्तांत ज़रूर बयान हुआ है किन्तु पहली बात तो यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस का अवलोकन कर के बयान करने का मौक़ा हासिल न था क्योंकि आप पढ़े न थे और अहले-किताब के आलिमों से भी कोई संपर्क नहीं बना था। अतिरिक्त यह कि यह वृत्तांत जिस सत्यता के साथ कुर्आन ने सुनाया उस सत्यता के साथ बाइबिल में बयान नहीं हुआ है। कुर्आन का बयान उचित और तर्क संगत है एवं विश्वास भी पैदा करता है जब कि बाइबिल के बयान की यह विशेषता नहीं है। दूसरा अन्तर यह है कि इस घटना की सारी कड़ियाँ बाइबिल में बयान नहीं हुई हैं, जब कि कुर्आन ने इस को एक ऐसी घटना के रूप में प्रस्तुत कर दिया जिस की कड़ियाँ एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और उन महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डाला है जो लुप्त हो गए हैं। मिसाल के तौर पर यूसुफ़ के स्वप्न का वह अर्थ जो याक़ूब अलैहिस्सलाम ने बताया था। यूसुफ़ के भाईयों का एक साज़िश के तहत यूसुफ़ को ले जाना और अपने बाप को झूठा विश्वास दिलाना कि वे उस की रक्षा करेंगे। यूसुफ़ के कुएँ में फेंक दिए जाने पर उन के मन की शान्ति के लिए उन की तरफ़ वह्य का भेजा जाना। यूसुफ़ को स्वप्नार्थ बताने का ज्ञान प्राप्त होना, यूसुफ़ का कुर्ता पीछे से फट जाने और तथ्यों की गवाही की वह घटना जिस से उन की बेगुनाही का सबूत मिला, मिस्त्र के अज़ीज़ का यह स्वीकार कर लेना कि उस की पत्नी ही ख़ताकार है, अज़ीज़ की पत्नी का एक साज़िश के तहत मिस्त्र की प्रतिष्ठित औरतों की दअवत करना, उन औरतों का एक भरी मजलिस में बोल उठना कि यूसुफ़ इन्सान नहीं बल्कि फ़रिश्ता है। अज़ीज़ की पत्नी की ओर से यूसुफ़ को जेल भेज देने की धमकी, यूसुफ़ की सत्य पर जमें रहने की दुआ, कैद ख़ाने में यूसुफ़ की तब्लीग़, सम्राट के स्वप्न का अर्थ मालूम करने के लिए साक़ी का सम्राट की अनुमति से कारागार जाना और यूसुफ़ से स्वप्नार्थ पूछना। सम्राट के बुलाने पर यूसुफ़ का रिहा होने से इन्कार और मिस्त्री औरतों की साज़िश की तहक़ीक़ात कराने की मांग, सम्राट का पता लगाना और यूसुफ़ का बेगुनाह साबित होना, बिनयमीन के रोक लिये जाने पर याक़ूब को सदमा, याक़ूब का अपने बेटों को यह हिदायत देना कि वे यूसुफ़ की खोज लगाएँ, यूसुफ़ का अपने भाईयों को क्षमा करना, क़ाफ़िले का यूसुफ़ के कुर्ते को ले कर मिस्त्र से रवाना

होने पर याक़ूब का यूसुफ़ की महक महसूस करना, यूसुफ़ के कुर्ते का याक़ूब के चेहरे पर डाल देने से उन की आँख की रौशनी का लौट आना, यूसुफ़ के भाईयों का माफ़ी माँगना, यूसुफ़ का अपने माता पिता को सिंहासन पर बिठाना और उन का पूरा पूरा आदर सम्मान करना, यूसुफ़ के भाईयों का यूसुफ़ के आगे झुक जाना यूसुफ़ का अल्लाह के समक्ष उस की प्रशंसा एवं पाकी बयान करना और उस का शुक्र अदा करते हुए अपने सुखद अंत की प्रार्थना करना, ये और इस प्रकार की दूसरी महत्वपूर्ण बातों से बाइबिल के पृष्ठ खाली हैं। फिर एक बे पढ़े व्यक्ति ने यह वृत्तांत किस तरह जूँ की तूँ बयान कर दिया और इतिहास के लुप्त पन्नों को किस प्रकार सामने लाया? इस का सही जवाब इस के सिवा कुछ हो ही नहीं सकता कि अल्लाह की वह्य (प्रकाशना) ने यह वृत्तांत बयान किया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी तरफ़ से बाइबिल से नक़ल कर के बयान नहीं किया है। और आज भी जो व्यक्ति सच की तह तक पहुँचने के उद्देश्य से कुर्आन और बाइबिल का तुलनात्मक अध्ययन करेगा वह इस वास्तविकता को महसूस किये बिना नहीं रहेगा।

157. अर्थात् अधिकतर लोगों का हाल यह है कि वे दलील से बात समझना नहीं चाहते बल्कि अपने ग़लत विचारों पर अटल रहना चाहते हैं वरना कुर्आन पर ईमान लाने के लिए यह एक दलील ही काफ़ी है जो उस के अल्लाह की वह्य होने के सबूत में ऊपर बयान हुई।

158. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाने की सेवा निःस्वार्थ हो कर और किसी प्रकार का मुआवज़ा माँगे बिना अन्जाम दे रहे थे इस लिए यह शक करने की कोई गुन्जाइश नहीं थी कि आप अपने स्वार्थ की ख़ातिर यह काम अन्जाम दे रहे हैं।

159. अर्थात् नबियों के द्वारा तौहीद का जो सबक लोगों को सिखाया गया था और जिस को लोग भूल चुके हैं कुर्आन उसी सबक की याददेहानी है और यह याददेहानी किसी एक क्रौम के लिए नहीं बल्कि सारी क्रौम और सारे इन्सानों के लिए है।

160. यह असली कारण है उस सत्य को न पाने का जिस की तरफ़ कुर्आन दअवत दे रहा है। तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद की निशानियाँ दुनिया में क्रदम क्रदम पर मौजूद हैं, मगर लोगों ने इस कायनात का ऐसा ग़लत औचित्य बयान किया है और उसे मान भी लिया है तथा अपने जीवन के बारे में ऐसे ग़लत सिद्धान्त गढ़ लिये हैं और उन पर ऐसे जम गए हैं कि इन निशानियों को नज़र उठा कर देखने के लिए भी आमामा नहीं हैं।

161. अर्थात् खुदा का मानना वही विश्वस्नीय एवं स्वीकृत है जो तौहीद के साथ हो। क्योंकि शिर्क अर्थात् खुदा का साझी ठहराना खुदा की विशेषताओं एवं गुणों का इन्कार है और बन्दे का खुदा से सही सम्बन्ध उसी समय स्थापित हो जाता जब कि वह खुदा को उसी तरह मानता हो जैसा कि उस की विशेषताएँ एवं गुण हैं।

आज भी दुनिया के अधिकांश लोग खुदा में आस्था एवं विश्वास रखते हैं मगर न तो हिदायत प्राप्ति के सिलसिले में उस की तरफ़ पलटने की ज़रूरत महसूस करते हैं और न उस की आज्ञा पालन तथा उस की बन्दगी एवं दास्ता से उन्हें कोई सरोकार है। वे एक खुदा पर कदापि संतुष्ट नहीं हैं बल्कि अपने संतोष के लिए बहुत से खुदा गढ़ लिये हैं। ऐसी परिस्थिति में उन का खुदा पर विश्वास एवं आस्था बिल्कुल निरर्थक हो कर रह जाता है। किन्तु अधिकतर लोग फ़रेब में मुब्तिला हैं।

162. अर्थात् यह है मेरा तरीका और मेरा दीन ।

163. अर्थात् मेरी दाअवत न प्रमाण एवं तर्क रहित है और बुद्धि में न समाने वाली भी नहीं है। तथा न ही किसी ऐसे धर्म को स्वीकार करने की दाअवत है जिस के साथ ज्ञान

एवं प्राकृति का प्रकाश नहीं है। बल्कि मेरी दाअवत सरासर बुद्धि में समाने वाली, तर्क संगत, अन्तरात्मा की आवाज़ और ज्ञान की पूरी रौशनी लिये हुए हैं।

164. स्पष्ट हुआ कि मक्का में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आप के अनुयायी भी दाअवत देने के काम में सक्रिय थे। गोया मुस्लिम उम्मत को पहले रोज़ से ही दाअवती काम के लिए तैयार किया गया ।

165. मालूम हुआ कि जितने रसूल भी दुनिया में आये वे सब इन्सानों में से थे और मर्द थे एवं वे शहरों के रहने वाले थे क्योंकि रिसालत का मन्सब अत्यंत प्रतिष्ठित मंसब (पद) है जिस के लिए मर्द ही उचित हो सकते हैं और रिसालत के दायित्व को अदा करने के लिए उच्च मानसिक क्षमताओं के साथ साथ समय के फ़िराओं (खलनायकों) को सम्बोधित करने के अवसर का प्राप्त होना भी आवश्यक है। और यह बातें शहरों ही में उपलब्ध हो सकती हैं इस लिए पैगम्बर बड़े बड़े शहरों ही में नियुक्त किया गए।

166. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २०

167. आखिरत के घर से मुराद जन्नत है।



निश्चय ही इन के वृत्तांतों में बुद्धि और चेतना वालों के लिए बड़ी इबरत (शिक्षा) है। यह गढ़ा हुआ कलाम नहीं है बल्कि पुष्टि है उस (किताब) की जो पहले आ चुकी है और तफ़सील है हर चीज़ की और हिदायत और रहमत है ईमान लाने वालों के लिए। (अल-कुर्आन)

110. (उन गुजरी हुई क्रौमों को भी ढील दी गई थी) यहाँ तक कि जब रसूल (अपनी क्रौमों से) मायूस हो गए और लोगों ने समझा कि इन को झूठी खबरें सुनाई गई थीं, तो हमारी मदद उन (रसूलों) के पास आ पहुँची ¹⁶⁸ और वे लोग बचा लिए गए जिन को हम ने बचाना चाहा। और मुजरिमों से तो हमारा अज़ाब टाला नहीं जा सकता।

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَرَ الرُّسُلُ وَظَنُوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ
نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَشَاءُ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا
عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝

111. निश्चय ही इन के वृत्तांतों में बुद्धि और चेतना वालों के लिए बड़ी इबरेत (शिक्षा) है ¹⁶⁹। यह गढ़ा हुआ कलाम नहीं है बल्कि पुष्टि है उस (किताब) की जो पहले आ चुकी है ¹⁷⁰ और तफ़सील है हर चीज़ की ¹⁷¹ और हिदायत और रहमत है ईमान लाने वालों के लिए ¹⁷²।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ مَا كَانَ
حَدِيثًا يُنْفِرُ وَلَكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَ
تَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

168. अर्थात् हमारी मदद रसूलों के पास ठीक उस समय पहुँच गई जब कि वे अपनी क़ौमों के ईमान लाने से निराश हो गये और लोगों को जो ढील मिल गई थी उस के आधार पर उन्होंने ने समझा कि अज़ाब का जो डरावा सुनाया गया था वह झूठा था, ईमान न लाने के आधार पर कोई अज़ाब आने वाला नहीं।

यहाँ इस बात को बयान करने का उद्देश्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों को तसल्ली देना है कि काफ़िरों को जो ढील दी जा रही है वह अल्लाह की हिकमत का तक्राज़ा है। यह ढील उस समय तक है जब तक कि रसूल उन के ईमान लाने की तरफ़ से बिलकुल निराश नहीं हो जाता। अगर बात निराश की सीमा तक पहुँच गई तो वे अज़ाब की लपेट में आ जाएँगे और ईमान वालों के पक्ष में अल्लाह की मदद नाज़िल होगी और उन्हें उन काफ़िरों से भी मुक्ति मिल जाएगी और अज़ाब से भी सुरक्षित रहेंगे।

169. कुर्आन में पैग़म्बरों और उन की क़ौमों के जो वृत्तांत बयान किये गये हैं उन का असल उद्देश्य यही है कि लोग उन से इबरत हासिल करें और मात्र प्राचीन एवं पूर्वजों के

क्रिस्से समझ कर न पढ़ें।

170. इशारा है तौरात की तरफ़ कि उस में जो रहनुमाई दी गई थी कुर्आन उस की पुष्टि करता है। तौरात की मौजूदा किताब उत्पत्ति में यूसुफ़ का जो क्रिस्सा बयान हुआ है वह यद्यपि कुर्आन के बयान से भिन्न है किन्तु जहाँ तक असल घटना का सम्बन्ध है दोनों में समानता पाई जाती है और यह समानता इस बात की दलील है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह क्रिस्सा अपनी ओर से गढ़ कर पेश नहीं किया है और तौरात के पन्नों से जो वास्तविकताएँ लुप्त हो गई थीं कुर्आन में उन को अंकित कर दिया गया है।

171. तफ़सील का वास्तविक अर्थ खोल कर बयान करने के हैं। मतलब यह है कि कुर्आन में सारी ज़रूरी बातें खोल कर बयान की गई हैं, ताकि यह मालूम करने में किसी को कोई कठिनाई न हो कि, अल्लाह का रास्ता क़ौन सा है वह किन बातों को पसंद और किन बातों को नापसन्द करता है और उस की शिक्षाएँ क्या है आदि।

172. अर्थात् कुर्आन हिदायत की जो राह खोलता है उस पर चल कर ईमान वाले अल्लाह की दया के पात्र बन सकते हैं।



सूरह अर-रअद

१३.सूरह अर-रअद

नाम: आयत १३ में रअद अर्थात् बादल की गरज का वर्णन हुआ है कि वह अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) के साथ पाकी बयान करती है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अर-रअद करार दिया गया है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह यूसुफ़ के बाद नाज़िल हुई होगी। सूरह यूसुफ़ के अन्त में यह जो फ़रमाया था

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي

“कुल हाज़िही सबीली”.....(ऐ पैग़म्बर!) कहो यह है मेरी राह। मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, बसीरत के साथ, मैं भी और वे लोग भी जो मेरी पैरवी कर रहे हैं।” तो यह सूरह उसी का स्पष्टीकरण है।

केन्द्रीय विषय: यह किताब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आसमान से नाज़िल हुई है और इस में जो दअवत पेश की गई है वह बिल्कुल हक़ है। कायनात में फैली हुई निशानियों पर अगर गौर करो तो वही पुकार तुम्हें सुनाई देगी जो पैग़म्बर की और इस किताब की पुकार है।

कलाम की तरतीब: आयत १ भूमिका है। जिस में फ़रमाया गया है कि इस किताब का खुदा की तरफ़ से नाज़िल होना एक जीवित सत्य है।

आयत २ से ४ में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से आख़िरत का यक़ीन पैदा होता है।

आयत ५ से ७ में इन्कार करने वालों के भ्रमों एवं संदेहों पर उन्हें समझाया गया है।

आयत ८ से १६ में तौहीद (एकेश्वरवाद) का मज़मून है। आयत १७ में सत्य और असत्य के अलग अलग परिणामों पर सच्ची घटनाओं की शहादत पेश की गई है।

आयत १८ से २५ में कुर्आन की दअवत को भी प्रस्तुत किया गया है।

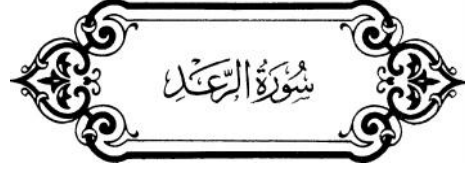
आयत २६ से २९ में इन्कार करने वालों को तंबीह और ईमान वालों को खुशख़बरी सुनाई गई है।

आयत ३० से सूरह के अन्त तक रिसालत का इन्कार करने वालों को सचेत किया गया है साथ ही मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के अच्छे अन्जाम को भी पेश किया गया है। ताकि इन्कार करने वालों को खुदा का ख़ौफ़ रखने की प्रेरणा मिले।

१३. सूरह अर-रअद

आयतें: 43

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम रा ¹ ये आयतें हैं ² अलकिताब की ³ और जो चीज़ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई है वह बिलकुल हक़ है मगर अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते ⁴।

الْهُدَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ①

2. अल्लाह वह है जिस ने आसमानों को जैसा कि तुम देखते हो बिना सुतूनों (सहारों) के बुलन्द किया ⁵ फिर वह अर्श (राजसिंहासन) पर बुलन्द हुआ ⁶। और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया ⁷। हर एक एक निश्चित समय तक के लिए चल रहा है ⁸। वही तमाम कामों का इन्तिज़ाम कर रहा है। वह निशानियाँ खोल खोल कर बयान करता है ताकि तुम अपने रब की मुलाकात का यक़ीन करो ⁹।

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ②

3. और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया ¹⁰ और उस में पहाड़ ¹¹ और दरया बनाए ¹² और हर तरह के फलों की दो दो किस्में पैदा कीं ¹³, वह रात को दिन पर ढाँप देता है। निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं।

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشَى اللَّيْلُ النَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ③

4. और (देखो) ज़मीन में एक दूसरे से मिले हुए भू भाग हैं ¹⁴, अंगूर के बाग़ हैं, खेतियाँ हैं और खजूर के पेड़ हैं, एकहरे भी और जड़ से मिले हुए भी ¹⁵। सब एक ही पानी से सिंचित होते हैं मगर स्वाद में हम एक को दूसरे से बेहतर बनाते हैं। निश्चय ही इस बात में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं ¹⁶।

وَفِي الْأَرْضِ قَطْعٌ مُّتَبَعٍ وَجُدَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفِضَ لِبَعْضٍهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ④

5. अगर तुम विचित्र बात सुनना चाहते हो तो उन लोगों का यह कथन विचित्र है कि क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो हमें नये सिरों से पैदा किया जायेगा ¹⁷। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया और यही हैं जिन की गर्दन में तौक़ पड़े होंगे ¹⁸। और यही लोग जहन्नम वाले हैं हमेशा उस में रहने वाले !

وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا انْشَارُوا عَنْ آبَائِنَا لِفَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑤

1. हुरूफे मुक़तआत (विभक्त अक्षरों) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १ और सूरह यूनुस नोट १

इस सूरह में “अलिफ़” का इशारा अल्लाह (तौहीद) की तारीफ़, “लाम” का इशारा “लाइलाहा इल्लल्लाह” (शिरक़ को नकारने) की तरफ़ और मीम का इशारा “मुतआल” (अत्यन्त बुलन्द पद) की तरफ़ है। अल्लाह की यह विशेषता आयत ९ में बयान हुई है। अब रह गई बात “र” की तो इस का इशारा रब (अल्लाह की रूबूबियत) की तरफ़ भी और “रअद” (गरज) की तरफ़ भी जिस का ज़िक्र आयत १३ में विशेष रूप से हुआ है और जिस में इस हक़ीक़त पर से पर्दा उठाया गया कि बादलों की गरज के पीछे अल्लाह की तस्बीह अर्थात् उस की पाकी बयान करने की भी घन गरज है। और अल्लाह के कलाम का मतलब तो अल्लाह ही बेहतर जानता है।

2. अरबी में आयत का शाब्दिक अर्थ चिन्ह और निशानी है। कुरआन की सूरतें जिन छोटे छोटे वाक्यों से सुसज्जित हैं उन को आयतें कहते हैं। आयत कभी एक पूरा वाक्य कभी वाक्य का अंश और कभी कुछ वाक्यों पर आधारित होती हैं। आयतों का निर्धारण और उन का संकलन अल्लाह की वहुय के द्वारा हुआ है चूँकि हर आयत इस बात की निशानी है कि यह अल्लाह का कलाम है इस लिए इस को आयत कहा गया है।

3. अल-किताब से मुराद अल्लाह की किताब अर्थात् कुर्आन है।

4. मतलब यह है कि सूरह रअद की ये आयतें एवं वे तमाम आयतें जो पैग़म्बर पर नाज़िल हुई हैं उन का अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होना एक सच्ची बात और बिल्कुल हक़ीक़त है। यह और बात है कि अधिकतर लोग इस हक़ीक़त को उस के सच्चे होने के बावजूद स्वीकार नहीं करते। लेकिन हक़ीक़त अपनी जगह हक़ीक़त है। किसी के मानने या न मानने से उस में कोई फ़र्क़ नहीं आता।

5. विशाल आकाश में तारे और नक्षत्र दूर दूर तक फैले हुए हैं। वैज्ञानिक खोजों एवं अविष्कारों के हिसाब से कुछ तारे तो लाखों प्राकाश वर्ष (Light year) की दूरी पर स्थित हैं। इस से आसमान की बुलन्दी एवं विशालता का अन्दाज़ा होता है, ऐसी विशालता तथा ऐसी बुलन्दी कि जिस को किसी पैमाने से नापा नहीं जा सकता। आसमान का एक छत की भाँति बिना किसी खम्भों एवं सहारों के स्थापित रहना उस के रचयिता के अथाह सामर्थ्य का स्पष्ट प्रमाण है।

ध्यान रहे कि आसमानों का खम्भों के बग़ैर स्थापित रहना सामान्य रूप से समझ में आने वाली बात है। इस से इस बात का खण्डन नहीं होता कि तारे और नक्षत्र अपनी आकर्षण

शक्ति के नियम के चलते अपनी जगह बने हुए हैं। यह आकर्षण शक्ति भी अल्लाह की ही कुदरत का करिश्मा है।

रहा यह सवाल कि आकाश का कोई भौतिक अस्तित्व है तो हम ने इस पर सूरह इन्शिकाक़ फ़ुट नोट नं. १ में बहस की है, यहाँ पर उसे ध्यान में रखा जाए।

6. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ८३ में गुज़र चुकी है।

7. अर्थात् सूरज और चाँद का अपना कोई बलबूता नहीं। वह अल्लाह के क़ानून में जकड़े हुए हैं और जो काम उन के सुपुर्द किया गया है वह उसे कर देते हैं।

8. चलते रहने (यज़ी يَجْرِي) से अभिप्रेत गतिशील रहना है, यह अलग बात है कि उन की गति किस प्रकार की है। यह आयत स्पष्ट करती है कि चाँद ही नहीं सूरज भी गतिशील है और आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान (Astronomy) भी सूरज को गतिशील मानती है।

“The sun rotates on its axis in a period of about 25 1/3 days” (The Marvels and Mysteries of Science p. 15).

अर्थात् सूरज अपनी धुरी पर २५ १/३ दिन में चक्कर पूरा कर लेता है। और विज्ञान के अनुसार तो सूरज केवल अपनी धुरी पर ही नहीं घूम रहा है बल्कि अपने नक्षत्रों समेत दो सौ मील प्रति सेकेन्ड की रफ़्तार से अपने आकर्षण केन्द्र के चारों ओर चक्कर लगा रहा है।

“Our own star, the sun, is no exception to the general rule, for with its attendant planets it is moving through space at a speed of 200 miles a second, travelling around the center of gravity of its cosmic system. At this speed it requires 250,000,000 years to complete a revolution in its gigantic orbit.” -(do-p.82)

कुर्आन इस बात की भी पुष्टि करता है कि सूरज और चाँद का यह चक्कर काटना ऐसा नहीं कि बिना अवधि निर्धारण के हो, बल्कि एक सुनिश्चित समय तक के लिए है, और यह समय क्रियामत का दिन है जब इस जगत को सिरे से उखेड़ दिया जाएगा और एक नए जगत को अस्तित्व में लाया जाएगा।

9. अर्थात् आसमान में फैली हुई इन निशानियों पर ग़ौर करने से वह तर्क एवं नीतिपूर्ण उद्देश्य बहुत आसानी से समझ में आ जाता है जो इस कायनात को अस्तित्व में लाने के पीछे निहित हैं और जिस को कुर्आन बहुत साफ़ तरीक़े से खोल कर प्रस्तुत कर रहा है। और यह बातें न केवल यह कि आसानी से समझ में आ जाती हैं बल्कि इस बात का दृढ़ विश्वास हो जाता है कि एक दिन हमें अपने रब से मिलना है और अपने किये का फल पाना है।

10. अर्थात् ज़मीन को खुदा ने इस तरह फैला दिया कि वह अरबों इन्सानों के बसने योग्य हो गई है। उस की महान कुदरत की इस निशानी को देखते हुए, इन्सान को चाहिए तो यह था की उस की बड़ाई को स्वीकार कर लेता और उस के सामने सर झुका देता तथा उस के एक मात्र खुदा होने का सत्य समझता, मगर इन्सानों की बड़ी संख्या इस से मुँह फेरे हुए है और उन में ऐसे लोग भी हैं जो धरती बनाने वाले के बजाय बनाई गई धरती ही को पूजने में गर्व महसूस करते हैं। अतः उन्होंने ने भूमि पूजा को अपना धार्मिक कृत्य बना रखा है। उन की समझ में इतनी बात भी नहीं आती कि जिस चीज़ को आदमी रौंदता है उस की पूजा का क्या मतलब? ये नादान पहले तो अपने खुदा को खुद गढ़ लेते अथवा बना लेते हैं और इस के बाद उस को अपने ही पाँव से रौंद डालते हैं। उन का “खुदा” भी अजीब है और उन की पूजा भी अजीब।

11. पहाड़ क्या हैं, खुदा की कुदरत की निशानियाँ जो जहाँ तहाँ खड़ी कर दी गई हैं ताकि मनुष्य इन को देख कर अपने पैदा करने वाले सृष्टा की बड़ाई का क्रायल हो जाए। मगर इन्सान में यह तड़प कहाँ कि वह वास्तविकता को ढूँढे। यदि इस से पूर्व के समयों में उस ने पहाड़ों की बुलन्दी को देख कर उन को देवता बना लिया था तो आज वह पहाड़ों के प्रकार उन की परतें उन के रचना तत्व और उन में पाये जाने वाले जीवावशेष (Fossil) आदि मालूम करने में ऐसा लीन हैं कि इन्हें अस्तित्व प्रदान करने वाले सृष्टा की ओर ध्यान करने के लिए आमादा ही नहीं। परिणाम यह कि इन सारे सत्य की ओर रहनुमाई करने वाली जानकारीयों के बावजूद वह अपनी भौतिकता में मस्त है।

12. अल्लाह तआला ने ज़मीन पर दरया बहाए ताकि उन के प्रवाह अथवा बहाव को देख कर मनुष्य की ज़ुबान पर आप से आप उस का नाम जारी हो जाए, वह उस का गुणगान करने लगे मगर वह दरियाओं तथा नदियों को पवित्र मान कर उन्हें ही पूजने लगा और उन के समक्ष भेंट अर्पित करने लगा। या फिर इन्सान ने तरक्की की तो यह किया कि उन पर बड़े बड़े बाँध लगा दिए ताकि वह उन के पानी से पूरा पूरा लाभ उठाए। इस से आगे वह कुछ सोचने को तैयार नहीं हैं।

13. “समरात” ثمرات का शब्द फलों के लिए भी बोला जाता है और पैदावार के लिए भी। इस लिए इस में मेवे, अनाज और सब्जियाँ सब शामिल हैं। मतलब यह है कि खुदा ने ज़मीन में पेड़ पौधे और वनस्पति इस तरह उगाए कि उन के जोड़े बन गए नर और मादा ताकि पैदावार का सिलसिला चलता रहे। वनस्पति एवं पेड़ पौधों में नर और मादा का पाया जाना एक सामान्य सी बात है जिसे सभी जानते हैं किन्तु

आधुनिक वनस्पति विज्ञान (Botany) ने इन को जिस विस्तार के साथ प्रस्तुत कर दिया है उस के अध्ययन से इस की चकित कर देने वाली व्यवस्था सामने आती है उदाहरण के तौर पर यह बात कि पौधों में कोशिकाएँ (Cell) पायी जाती हैं जिन में क्रोमोज़ोम्स (Chromosomes) होते हैं जिन में आनुवंशिक गुण विद्यमान होते हैं और जिन्हें सूक्ष्म दर्शी (Microscope) से देखा जा सकता है। या यह कि फूल में पुंकेसर (Stamens) होते हैं उन में नर और मादा की जातियाँ पाई जाती हैं। फूल जब खिलते हैं तो उन की महक से मधुमक्खियाँ और पतंगें उन की ओर आकर्षित होते हैं और उस के ज़ीरे को एक फूल से दूसरे फूल में डालते हैं, इस से से उर्वरण (Fertilization) होता है और फूल का अण्डाशय फल का रूप धार लेता है।

क्या कुदरत की यह आश्चर्यजनक व्यवस्था, एक मात्र सर्वशक्तिमान एवं सामर्थ्यवान के अस्तित्व पर साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करता ?

14. अर्थात् ज़मीन के सब हिस्से अर्थात् सारे भू-भाग एक जैसे नहीं हैं बल्कि उस में भाँत भाँत के भू-भाग पाये जाते हैं और जो एक दूसरे से निकट एवं मिले हुए होने के बावजूद अपनी विशेषताओं में भिन्न हैं। कोई सुर्ख हैं तो कोई स्याह, कोई उपजाऊ हैं तो कोई बन्जर, कोई एक तरह की पैदावार के लिए उचित एवं अनुकूल है तो कोई दूसरी तरह की पैदावार के लिए। कोई तेल उगलती है तो कोई सोना। आदमी की परवरिश के लिए आजीविका के कैसे भण्डार हैं जो ज़मीन में रख दिए गए हैं। क्या देख रेख और परवरिश (रूबूबिय्यत) का यह सारा प्रबन्ध आप से आप हो गया है, ऐसी सुव्यवस्थित व्यवस्था अपने आप विकास पा गई है, या इस को अस्तित्व में लाने वाला रब (परवरदिगार) है?

15. खजूर के वृक्ष दो प्रकार के हैं, एक वह जिन की जड़ से एक ही तना निकलता है और दूसरे वह जिनकी जड़ से दो या अधिक तने निकलते हैं जब कि एक ही पानी से उन्हें सींचा जाता है। यह रंगा रंगी एवं विविधता क्या इस विचार एवं धारणा का खण्डन करने के लिए काफ़ी नहीं है कि यह कायनात आकस्मिक घटना के फलस्वरूप अस्तित्व में आई है और किसी चलाने वाले व्यवस्थापक के बग़ैर चल रही है? इस परिस्थिति में तो यह रंगा रंगी, यह विविधता एवं भिन्नता कदापि नहीं हो सकती थी।

16. एक ही पानी से पेड़ों को सींचा जाता है, मगर उन के फल स्वाद में भिन्न होते हैं, कोई मीठा तो कोई खट्टा और कोई फीका तो कोई कड़ुवा। हर चीज़ में विविधता देख कर शायर ने उचित ही कहा है :-

ऐ जौक्र इस जहाँ को है ज़ेब इज़ितलाफ़ से

ये इज़ितलाफ़ अथवा भिन्नताएँ एवं विविधताएँ आदमी को सोचने पर उभारता है। अगर वह बुद्धि से काम लें तो वह उन वास्तविकताओं को पा सकता है जिन को मान लेने और स्वीकार करने का निमंत्रण कुआन दे रहा है।

17. अर्थात् इन विद्रोहियों तथा खुदा का इन्कार करने वालों को आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि इन्सान को मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा जिस की खबर कुआन दे रहा है किन्तु वास्तव में यदि देखा जाए तो आश्चर्य के योग्य तो उन का यह कहना है कि मिट्टी में मिल जाने के बाद किस प्रकार दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा। मतलब यह कि उन की नज़र में कायनात की यह सारी चलत फिरत बस इसी लिए है कि इन्सान मर कर मिट्टी हो जाए और ज़िन्दगी का सिलसिला आँख बन्द होते ही सदा सर्वदा के लिए समाप्त हो जाए। न खुदा

के समक्ष उपस्थित होने का सवाल, न हिसाब के दिन का और न कर्मानुसार दण्ड और इनाम का। यह है जीवन के बारे में उन की धारणा जिस का अर्थ है लक्ष्य रहित जीवन और निरुद्देश्य कायनात। यह निर्णय बुद्धि का नहीं है बल्कि अंधविश्वासों एवं इच्छाओं का है इस लिए हर बुद्धिमान व्यक्ति विद्रोहियों तथा खुदा का इन्कार करने वालों की जीवन धारणा अथवा उन के जीवन सिद्धान्त पर आश्चर्य करेगा न कि कुआन द्वारा प्रस्तुत की गई जीवन धारणा पर।

18. आखिरत अर्थात् हिसाब किताब के दिन का इन्कार करने वालों ने दुनिया में, जिहालत, सत्य के विरुद्ध घृणा एवं वैमनस्यपूर्ण पक्षपात और असत्य के पुजारियों की अन्धी भक्ति का फंदा अपनी गर्दनों में डाल रखा था, इस लिए क्रियामत के दिन यह फन्दा आग के फन्दे के रूप में इन की गर्दनों को जकड़ लेगा।



6. और यह लोग भलाई से पहले बुराई के लिए तुम्हारे पास जल्दी मचा रहे हैं¹⁹। हालांकि इन से पहले कितनी इबरतनाक (शिक्षाप्रद) मिसालें गुजर चुकी हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब लोगों से उन की ज्यादातियों के बावजूद दरगुजर करता रहता है और इस में भी संदेह नहीं कि तुम्हारा रब सज़ा देने में बड़ा सख्त है²⁰।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ⑤

7. काफिर कहते हैं, इस व्यक्ति पर इस के रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी? ²¹ (ऐ पैगम्बर!) तुम तो बस खबरदार करने वाले हो और हर क्रौम के लिए एक रहनुमा हुआ है²²।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ⑥

8. अल्लाह हर औरत के गर्भ को जानता है और जो कुछ गर्भाशयों में घटता और बढ़ता है उस को भी²³। हर चीज़ के लिए उस के यहाँ एक अन्दाज़ा निर्धारित है²⁴।

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِقَدَارٍ ⑦

9. वह ग़ैब (परोक्ष) और हाज़िर सब का जानने वाला है, सब से बड़ा, अत्यंत बुलन्द मरतबा (सर्वोच्च)।²⁵

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ⑧

10. तुम में से कोई व्यक्ति चुपके से बात करे या पुकार कर कहे, रात (के अन्धकार) में छिपा हो या दिन (के उजाले) में चल फिर रहा हो उस के लिए सब एक जैसा है।

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسَرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ⑨

11. एक के बाद एक आने वाले उस के आगे और पीछे हैं जो अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं²⁶। अल्लाह किसी क्रौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह अपने रवैये को नहीं बदलती²⁷। और जब अल्लाह किसी क्रौम पर मुसीबत लाना चाहे तो फिर वह टल नहीं सकती। और कोई नहीं जो उस के सामने उन का सहायक हो।

لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَّالٍ ⑩

12. वही है जो तुम्हें बिजलियाँ दिखाता है, जो भय भी पैदा करती है और आशा भी²⁸। और वही बोझिल बादलो को उठाता है²⁹।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑪

19. अर्थात् पैगम्बर को अल्लाह तआला ने इस लिए भेजा है कि लोग उस के निमंत्रण को स्वीकार कर के उस के अनुपालक बन जाएं और भलाई की ओर लपकें। दूसरे शब्दों में अल्लाह तआला ने इन्सानों की भलाई के लिए ही पैगम्बर को भेजा है। मगर इन विद्रोहियों का हाल यह है कि वह खैर और भलाई समेटने के बजाए बुराई को न्योता दे रहे हैं। वे कहते थे कि जिस अज़ाब की तुम धमकी दे रहे हो वह आ क्यों नहीं जाता। इस प्रकार वे शान्ति एवं भलाई से खुद को वंचित रख कर प्रकोप (अज़ाब) के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यहाँ उन की इसी ग़लत मानसिकता पर पकड़ की गई है।

20. अर्थात् अल्लाह तआला लोगों के ग़लत राह का चुनाव करने, उन पर चलने तथा उन की ज़्यादतियों के बावजूद दुनिया में उन को तुरन्त सज़ा नहीं देता बल्कि दरगुज़र से काम लेता रहता है ताकि उन्हें अपना सुधार कर लेने का अवसर मिल जाए और वे संभल जाए। लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि अगर वे अपना सुधार न करें तब भी वह उन को सज़ा न देगा। अल्लाह तआला जहाँ दरगुज़र और क्षमा करने वाला है वहाँ कठोर दण्ड देने वाला भी है।

21. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ६४ और ६५

22. अर्थात् जिस तरह पिछली कौमों की तरफ़ उन को राह दिखाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूल आते रहे उसी तरह तुम को भी ऐ पैगम्बर इन की रहनुमाई तथा मार्ग दर्शन के लिए भेजा गया है अतः तुम्हारा काम भूले हुए तथा ग़फ़लत में पड़े हुए लोगों को चौंका देना और उन को खुदा की राह दिखा देना है। उन की मांगों (Demands) को पूरा करना तुम्हारा दायित्व नहीं है अतः प्रत्यक्ष चमत्कार की जो वे माँग कर रहे हैं उस पर तुम ध्यान न दो।

स्पष्ट रहे कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल अरब वालों के लिए रसूल नहीं थे बल्कि जैसा कि कुर्आन में पूरे स्पष्टीकरण के साथ बयान हुआ है, सारी क़ौमों के लिए रसूल थे। इस लिए आप के बाद किसी क़ौम के लिए किसी नए नबी या रसूल का प्रश्न पैदा नहीं होता।

23. अर्थात् अल्लाह ही जानता है कि स्त्री के गर्भ में बच्चा किस तरह का और किन गुणों का परवरिश पा रहा है और वह नौ माह से पहले बच्चा जनेगी या उस से अधिक मुद्त में। इसी प्रकार जानवरों की मादाओं के गर्भाशयों की संपूर्ण जानकारी अल्लाह ही को है।

24. अर्थात् प्रसव या बच्चा पैदा होने की बात हो या कोई और, उस ने दुनिया के तमाम कामों की समय निर्धारण के साथ योजना बनाई है और उस का ज्ञान हर छोटी से छोटी

बातों पर हावी है। उस की इस योजना में यह बात भी निश्चित रूप से शामिल है कि किसी क़ौम पर किस समय अज़ाब लाया जाए। अतः अगर तुम पर रसूल की दअवत रद्द करने के बावजूद अज़ाब अथवा प्रकोप नहीं आ रहा है तो इस का यह मतलब नहीं कि अज़ाब आएगा ही नहीं। अज़ाब रसूल को झुठलाने के अपराध में आवश्य आएगा, मगर अपने निर्धारित समय पर जिस की जानकारी अल्लाह ही को है।

25. इस आयत में अल्लाह की तीन विशेषताएँ अथवा तीन गुण बताए गए हैं। एक यह कि वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, महसूस और ग़ैर महसूस सब चीज़ों का जानने वाला है। दूसरी यह कि वह कबीर (सब से बड़ा) है। अर्थात् अपने सामर्थ्य, शक्ति और दूसरे गुणों में पूर्ण एवं उच्चतम हस्ती है। तीसरी यह कि वह मुतआल (अर्थात् सर्वोच्च) है अर्थात् उस को कोई सृष्टि या पैदा की गई चीज़ों जैसा समझना सही नहीं। वह इस से बहुत बुलन्द है।

इन गुणों एवं विशेषताओं का वर्णन करने से अभिप्रेत यहाँ अल्लाह की महानता की सही धारणा प्रस्तुत करना है जिस के फलस्वरूप मनुष्य के अन्दर उस की भक्ति उस की उपासना का भाव और उस के समक्ष जवाब देने का आभास पैदा होता है, और उस की सज़ा को सोच भर लेने से वह काँप उठता है।

26. वे फ़रिश्ते मुराद हैं जो हर व्यक्ति के साथ उस की सुरक्षा में लगे रहते हैं। उन की ड्यूटी इस तरह लगी है कि एक के बाद एक के आने जाने का क्रम बना रहता है। इन्सान की ज़िन्दगी तो तरह तरह के ख़तरों से घिरी हुई है और वह हर समय एक न एक ख़तरे की जद में रहता है, लेकिन अल्लाह तआला ने इन्सान को ख़तरों और आफ़तों से सुरक्षित रखने का यह सामान किया है कि उस के आगे और पीछे फ़रिश्ते लगा दिये गये हैं जो उस का बचाव करते रहते हैं और केवल उसी समय उस को कोई हानि या क्षति पहुँच जाती है जब कि अल्लाह की तरफ़ से लिखा होता है।

27. अर्थात् अल्लाह ने जहाँ एक एक व्यक्ति की सुरक्षा का सामान कर रखा है वहाँ क़ौमों की भी शान्ति का सामान कर रखा है। अतः देखिए जब अल्लाह तआला किसी क़ौम को सुकून और शान्ति की दौलत प्रदान करता है तो उस समय उस से यह मुल्वान दौलत छीन ली जाती है जब कि वह खुद उस दौलत का निरादर करते हुए उदंडता पर उतर आती है। वरना अल्लाह तआला का नियम यह है ही नहीं कि एक नेमत (दौलत) प्रदान करने के बाद अकारण उस को छीन ले। यहाँ विशेष रूप से इस ओर इशारा करना अभिप्रेत है कि ये विद्रोही तथा इन्कार करने वाले इस समय तो सुकून और शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं मगर यह देर तक बाकी रहने वाला

नहीं है। क्यों कि उन्होंने अपने को इस के लिए अयोग्य सिद्ध कर दिया। अब यह नेमत निश्चय ही इन से छीन ली जाएगी। अतः यही कुछ हुआ, कुछ साल भी गुजरने नहीं पाये थे कि काफ़िरों के लिए अरब की ज़मीन में सर छिपाना दूभर हो गया। और अल्लाह का नियम उन पर लागू हो कर रहा।

28. बिजलियों से यदि एक ओर भय उत्पन्न होता है कि किसी पर गिर न जाए तो दूसरी तरफ़ बारिश की उम्मीद बंधती है। मतलब यह कि बिजली एक ही समय में दो बातों की

नसीहत करती है, एक यह कि लोग चौकन्ना हो जाएँ कि अल्लाह का प्रकोप उन पर टूट सकता है। दूसरी यह कि लोग अल्लाह से ही रहमत एवं उस की दया के उम्मीदवार बनें।

29. अर्थात् पानी से भरे हुए बादलों को अल्लाह ही उठाता है। दूसरे शब्दों में यह अल्लाह ही की बनाई हुई व्यवस्था अथवा नियम है जिस के अनुसार पानी से भरे बादल उठते हैं और आसमान में दूर दूर तर फैल कर बारिश बरसाने का काम करते हैं।



और बादलों की गरज उस की प्रशंसा के साथ पाकी बयान (पवित्रता का जिक्र) करती है। और फ़रिश्ते भी उस के भय से काँपते हुए। वह कड़कती हुई बिजलियों को भेजता है और उन की ज़द में जिन को चाहता है लाता है। मगर लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते रहते हैं। और (वास्तविकता यह है कि) वह ज़बरदस्त ताक़त वाला है । (अल-कुर्आन)

13. और बादलों की गरज उस की प्रशंसा के साथ पाकी बयान (पवित्रता का ज़िक्र) करती है।³⁰ और फ़रिश्ते भी उस के भय से काँपते हुए³¹ वह कड़कती हुई बिजलियों को भेजता है और उन की ज़द में जिन को चाहता है लाता है³²। मगर लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते रहते हैं। और (वास्तविकता यह है कि) वह ज़बरदस्त ताक़त वाला है³³।

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ
الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ
فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحَالِ ۝۱۳

14. उसी को पुकारना सत्य है³⁴। जो लोग उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वे उन की पुकार का कोई जवाब नहीं दे सकते³⁵। (उन का पुकारना) ऐसा ही है जैसे कोई व्यक्ति अपने हाथ पानी के आगे फैलाए हुए हो, ताकि पानी उस के मुँह तक पहुँच जाए, हालांकि वह कभी उस तक पहुँचने वाला नहीं³⁶। और काफ़िरो की पुकार तो बिलकुल लाभ हीन है³⁷।

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ
لَهُمْ شَيْئًا إِلَّا كِبَاسٌ مَّكْفِيٌّ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَهُ فَاهُ وَمَا هُوَ
بِالْعَاجِزِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝۱۴

15. और आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब खुशी से या मजबूरी से अल्लाह ही को सज्दा करते हैं और उन के साए भी सुबह और शाम³⁸।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا
وَظِلُّهُمْ بِالْعُدُوِّ وَالْأَصَالِ ۝۱۵

16. इन से पूछो आसमानों और ज़मीन का रब कौन है? कहो अल्लाह। इन से पूछो, फिर क्या तुम ने उस को छोड़ कर दूसरों को अपना कार्यसाधक ठहरा लिया है जो खुद अपने लिए भी न किसी लाभ का अधिकार रखते हैं और न हानि का?³⁹ कहो क्या अन्धा और देखने वाला दोनों बराबर हैं? ⁴⁰ या अंधेरा और प्रकाश एक समान हैं? ⁴¹ या इन के ठहराए हुए साझीदारों ने उसी प्रकार पैदा किया है जिस तरह उस (अल्लाह) ने पैदा किया है, जिस के कारण पैदा करने का मामला उन पर संदिग्ध हो गया? ⁴² कहो अल्लाह ही हर चीज़ का (पैदा करने वाला) सृष्टा है। और वह यकता है सब को अपने क़ाबू में रखने वाला है।⁴³

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ قُلْ
أَفَاتُخَذَ لَكُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ لَا يَمْلِكُونَ لِنَفْسِهِمْ نَفْعًا
وَلَظَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ
تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا
كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلْ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۱۶

30. जहाँ तक विज्ञान का सम्बन्ध है बादलों की गरज इलेक्ट्रिकल चार्ज (Electrical Charge) के खारिज होन से उत्पन्न होती है। पानी में छिपे एटमों की पारस्परिक प्रक्रियाओं से बादलों के ऊपरी भाग में धनात्मक चार्ज (Positive Charge) और मध्यम भाग में ऋणात्मक चार्ज (Negative Charge) पैदा होता है। जब इलेक्ट्रिकल चार्ज की मात्रा काफी बढ़ जाती है तो बिजली खारिज होती है और बिजली की धारा (Current) अत्यधिक ताप के साथ हवा में फैलाव पैदा करती है और बिजली की लहर में आवाज़ उत्पन्न हो जाती है जिसे गरज कहा जाता है, यह है गर्जन की भौतिक सच्चाई जो मालूमाती अन्दाज़ की है, किन्तु कुर्आन इस की आन्तरिक वास्तविकता की ओर मनुष्य ता ध्यानाकर्षित करता है जो वास्तव में महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि बादलों की गरज इस बात का ऐलान करती है कि इस कायनात का एक खुदा है जो इस को पैदा कर के इस से अलग नहीं हो गया है बल्कि इस का प्रबन्ध संभाले हुए है। और अपनी कुदरत के करिशमे दिखाता रहता है। और वह इस पर पूरी सामर्थ्य रखता है कि सरकश बन्दों पर अज़ाब का कोड़ा बरसाए। सार यह कि जिन के कानों पर पर्दे नहीं पड़े हैं वे बादलों की गरज में अल्लाह की बड़ाई का ऐलान सुनते हैं।

31. अर्थात् वह ऐसी महान हस्ती है कि फ़रिश्ते भी उस के प्रताप तथा उस के भय से काँपने लगते हैं। फिर इन्सान को बादलों की घन गरज सुन कर क्या असर कुबूल करना चाहिए ?

32. कड़कती हुई बिजली जिस पर गिरती है उस को नष्ट कर के रख देती है। यह तो सामान्य रूप से देखने में आता है और कहा नहीं जा सकता कि कौन कब उस की ज़द में आए।

33. अर्थात् इस कड़कती हुई बिजलियों और गरजते हुए बादलों से इस बात का ऐलान और इज़हार हो रहा है कि इस कायनात का रब अथाह शक्ति का मालिक है। इन्सान को चाहिए था कि वह इस ऐलान को सुनकर काँप उठता मगर लोगों का हाल यह है कि वह खुदा के बारे में बहस करने का दुस्साहस करते हैं। कोई कहता है कि यह खुदा का नहीं बल्कि देवताओं का चमत्कार है। तो कोई कहता है, खुदा में यह शक्ति कहाँ कि मुर्दों को ज़िन्दा करे और आधुनिक युग के वैज्ञानिक एवं बुद्धिजीवी तो बेखुदा कायनात का सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं ताकि उन्हें खुदा से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाए।

34. पुकारने से मुराद आवश्यकताएँ पूरी करने और फ़रियाद सुनने के लिए पुकारना है। यह अल्लाह ही की

विशेषता है कि वह पुकारने वाले की पुकार सुनता है और उस की आवश्यकताओं को पूरी करता है और उस की फ़रियाद को पहुँचता है। इस लिए उस को पुकारना बिल्कुल सही और सत्यानुकूल है। और चूँकि अल्लाह के सिवा किसी को पुकारना चाहे वह बुत हो, जिन्न हो, फ़रिश्ता हो, वली हो या पैग़म्बर, सरासर ग़लत और वास्तविकता के विरुद्ध है।

35. कितने मुसलमान भी जिहालत की वजह से अपनी हाजतों और आवश्यकताओं के लिए दरगाहों और मज़ारों से आशाएँ बाँधते हैं। वे समझते हैं कि जो बुजुर्ग क्रब्रों में दफ़न हैं वे उन की दुआओं को सुनते हैं और उन की बिगड़ी बनाते हैं मगर यह सोचना उतना ही ग़लत एवं असत्य है जितना कि बहुदेववादियों का अपने उपास्यों के प्रति है।

आयत में बिल्कुल स्पष्ट रूप से फ़रमाया गया है कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो किसी की दुआ या पुकार का कोई जवाब दे सके।

36. अर्थात् जिस तरह कोई व्यक्ति हाथ फैला कर पानी से यह विनती करे कि उस के मुँह तक पहुँच जाए तो उस की यह विनती न तो पानी सुनेगा और न ही उस की प्यास बुझाने के लिए पहुँचेगा। इसी प्रकार बहुदेववादी अल्लाह को छोड़ कर जिस जिस के आगे दुआ के लिए हाथ फैलाते हैं और उन से फ़रियाद करते हैं वे न उन की दुआ और फ़रियाद सुनते हैं और न उस की हाजतें एवं आवश्यकताएँ पूरी करते हैं।

ध्यान रहे कि पानी के आगे हाथ फैलाना ताकि वह मुँह तक पहुँच जाए अरबी का एक मुहावरा है जिस का मतलब अप्राप्त लक्ष्य के हैं और आयत का भावार्थ भी यही है।

37. अर्थात् काफ़िर अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते हैं उन को पुकारना बिल्कुल व्यर्थ है।

38. अर्थात् आसमान और ज़मीन की सारी सृष्टियाँ चाहे वे फ़रिश्ते हों, इन्सान हो, या कोई अन्य, सब अल्लाह को किसी न किसी तरह सज्दा करते तथा उस के आगे शीष झुकाते हैं। कोई तो अपना सर खुशी से उस के आगे झुका देता है और कोई इरादे के साथ न सही मगर कुदरत का क़ानून तो उसे अपने पैदा करने वाले सृष्टा के आगे झुकने के लिए विवश कर ही देता है। एक काफ़िर का ज़िन्दा रहने के लिए साँस लेना या खाना खाना या चलने के लिए पाँव का हरकत में लाना खुदा के क़ानून की पाबन्दी करना है और उस के क़ानून की यह पाबन्दी उस के आगे झुकना ही है। यह और बात है कि यह झुकना विवशता पर आधारित है इसी लिए इस झुकने पर आदमी मोमिन नहीं माना जाता। हर चीज़ का खुदा के आगे सज्दा करने तथा झुकने का स्पष्ट

चिन्ह उस का साया है कि अल्लाह के बनाए क़ानून के अनुसार घटता बढ़ता रहता है। खुदा का कोई विद्रोही तथा इन्कारी इतना बल बूता भी नहीं रखता कि अपना साया ज़मीन पर गिरने न दे। वह जीवन के उसी सीमित क्षेत्र में अल्लाह के अनुपालन से इन्कार करता है जिस में कि वह स्वाधीन एवं स्वच्छंद रखा गया है। परन्तु वह हिस्सा जिस में कि वह स्वाधीन एवं स्वच्छंद नहीं है, तो वहाँ उस का वजूद उसी के आगे झुका हुआ है। काश कि वह इस पर गौर करता। यह सज़्दा की आयत है इस लिए इस की तिलावत पर फ़ौरन सज़्दा करना चाहिए।

39. यहाँ जिस शिर्क का खण्डन किया गया है वह है अल्लाह के सिवा किसी को “वली” अर्थात् कार्य साधक अथवा काम बनाने वाला ठहराना। अर्थात् किसी के बारे में यह विश्वास और यह अक़ीदा रखना कि चाहे वह हमारी नज़रो से ओझल है मगर लाभ या हानि पहुँचाना उस के अधिकार एवं वश में है और ग़ैब अथवा गुप्त रूप से वह हमारी मदद कर सकता है। यह विश्वास और यह धारणा सरासर ग़लत और यह अक़ीदा बिल्कुल मुश्रिकाना है क्योंकि कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो वास्तव में लाभ या हानि पहुँचाने वाला हो। यह विश्वास एवं यह अक़ीदा जिस के बारे में भी रखा जाए शिर्क ही है चाहे वह बुत हो या वृक्ष,

आत्मा हो या फ़रिश्ता और नबी हो या वली, और यह भी ज़रूरी नहीं कि उस को खुदा या रब कह कर पुकारा जाए। बल्कि उस को इस अर्थ में वली (कार्यसाधक) ठहराना ही उस को खुदा बना लेना है। अतः जो व्यक्ति किसी के साथ वह मामला करता है जो सिर्फ़ खुदा के साथ करना चाहिए वह शिर्क का अपराध करता है।

कुर्आन ऐसे लोगों से पूछता है कि जब कायनात का रब अल्लाह ही है तो ये कार्यसाधक (वली) किस प्रकार बने?

40. अन्धे से मुराद अक़ल का अन्धा है और देखने वाले से मुराद बुद्धि और मन की आँख से देखने वाला है।

41. अंधेरे से तात्पर्य जिहालत का अंधकार है और प्रकाश से अभिप्रेत सत्य ज्ञान का प्रकाश है।

42. अर्थात् जब एक खुदा के सिवा किसी का कुछ भी पैदा करना सिद्ध नहीं है तो फिर एक से अधिक खुदा कैसे हुए? उस के सिवा जो कुछ भी है वह सृष्टि है, फिर सृष्टि को सृष्टा का स्थान देना क्या अर्थ रखता है? खुदा होने के गुण सृष्टि में कैसे आ सकते हैं?

43. अर्थात् पैदा करने के बाद कोई चीज़ अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं हो गई है बल्कि हर चीज़ पूर्ण रूप से उस के वशीभूत तथा उस के क़ाबू में है। फिर जिस चीज़ पर अल्लाह का कन्ट्रोल हो वह स्वयं खुदा कैसे हो सकती है?



और जिन्हों ने अपने रब की प्रसन्नता (रज़ा) प्राप्त करने के लिए सब्र किया, नमाज़ क़ायम की और हमारे दिए हुए रिज़क में से खुले और छिपे खर्च किया । और बुराई को भलाई से दूर करते रहे तो यही लोग हैं जिन के लिए परलोक का घर है । (अल-कुर्आन)

17. उस ने आसमान से पानी बरसाया तो वादियाँ अपनी समाई के अनुसार बह निकलीं। फिर सैलाब, उभरते झाग को सतह पर लाया। और इसी प्रकार का झाग उन चीज़ों के अन्दर से भी उभरता है जिन को लोग जेवर या कोई और चीज़ बनाने के लिए आग में तपाते हैं। इस तरह अल्लाह सत्य और असत्य को स्पष्ट करता है, तो जो झाग है वह व्यर्थ जाता है और जो चीज़ लोगों के लिए लाभ दायक है वह ज़मीन में ठहर जाती है। इस तरह अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है ⁴⁴।

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا
فَأَحْتَمَلَ السَّبِيلُ زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ
عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلَهُ
كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا
الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ
فَيَبْقَىٰ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ⁽¹⁴⁾

18. जिन लोगों ने अपने रब की दअवत स्वीकार कर ली उन के लिए अन्जाम की भलाई है और जिन्होंने उस की दअवत स्वीकार नहीं की, अगर उन्हें ज़मीन की सारी दौलत मिल जाए और उसी के बराबर और, तो वे फ़िदयः (अर्थदण्ड) में देना चाहेंगे ⁴⁵। ऐसे लोगों को बुरे हिसाब से सामना होगा ⁴⁶ और उन का ठिकाना जहन्नम होगा। बहुत बुरा ठिकाना ।

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْحُسْنَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ
لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ
سُوءُ الْحِسَابِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْبِهَادُ ⁽¹⁵⁾

19. क्या वह व्यक्ति जो जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से नाज़िल हुआ है, सत्य है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अन्धा है? होश में तो बुद्धिमान लोग ही आते हैं ⁴⁷।

أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ
إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ⁽¹⁶⁾

20. जो अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और अपने वचन को तोड़ते नहीं हैं ⁴⁸।

الَّذِينَ يُوفُونَ بَعْدَ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْبَيْثَاقَ ⁽¹⁷⁾

21. और जिन रिश्तों को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उन्हें वे जोड़ते हैं ⁴⁹ अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का भय रखते हैं ⁵⁰।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ
وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ⁽¹⁸⁾

22. और जिन्होंने ने अपने रब की प्रसन्नता (रज़ा) प्राप्त करने के लिए सब्र किया, ⁵¹ नमाज़ क़ायम की और हमारे दिए हुए रिज़क में से खुले और छिपे खर्च किया ⁵²। और बुराई को भलाई से दूर करते रहे ⁵³ तो यही लोग हैं जिन के लिए परलोक का घर है। ⁵⁴

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ⁽¹⁹⁾

44. यह हक़ और बातिल अर्थात् सत्य और असत्य की मिसाल है। आसमान से पानी बरसाने से अभिप्रेत अल्लाह की ओर से उतरने वाले ज्ञान वह्य है। वादियों को अपनी समाई के अनुसार बह निकलने का मतलब सत्य को स्वीकारने की शक्ति एवं क्षमता रखने वालों का अपने अपने स्वभाव के अनुसार उस से लाभ उठाना है। सैलाब से मुग़द सत्य का सैलाब है और ज्ञाग से अभिप्रेत असत्य का ज्ञाग है जो सत्य और असत्य के संघर्ष में उभर आता है। दूसरी मिसाल में सोने चाँदी के आभूषणों से अभिप्रेत प्रथम श्रेणी के सच्चे मोमिन हैं और दूसरी चीज़ों से अभिप्रेत साधारण सुधारक हैं और उन को तपाने से मुग़द आजमाईश की भट्टी से गुज़रना है। मतलब यह है कि जब सत्य और असत्य में संघर्ष छिड़ता है तो असत्य उभर कर सामने आ जाता है किन्तु इस की वास्तविकता ज्ञाग से अधिक कुछ नहीं होती। वह थोड़ी देर ही में समाप्त हो जाता है। अलबत्ता सत्य इस प्रकार बाक़ी रहता है जिस तरह कि पानी ज़मीन में रह जाता है। दूसरे शब्दों में यह समझिए कि कुदरत का क़ानून यह है कि जो चीज़ लोगों के लिए वास्तव में हितकारी एवं लाभदायक है वह बाक़ी रहे और जो हानिकारक है वह नष्ट हो जाए। कुर्आन के नाज़िल होने के बाद सत्य और असत्य के बीच जो संघर्ष छिड़ा था उस में असत्य (बातिल) थोड़ी देर के लिए ज्ञाग की तरह उभर आया था लेकिन नतीजा यह निकला कि सत्य थमा रहा और असत्य नष्ट हो गया।

45. व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट १२४

46. अर्थात् हिसाब के लिए जब उन की पेशी होगी तो बहुत ही सख़्खी के साथ उन से पूछ ताछ होगी और उन्हें रत्ती रत्ती का हिसाब देना होगा।

47. अर्थात् ये बातें जो कही गई हैं मनुष्य को सत्य से भिन्न एवं जानकार बनाने के लिए हैं। इसी लिए हैं कि वह सत्य से परिचित हो जाए तथा उस का आदी हो जाए। लेकिन अपनी होशमन्दी का सबूत वही लोग देते हैं जो बुद्धिमान एवं समझदार होते हैं। बुद्धि और मन के अन्धों पर कोई नसीहत कारगर नहीं होती।

48. आदमी जब अपनी बुद्धि का सही उपयोग करता है तो वह खुदा को भी जान जाता है और खुद को भी, और यह चीज़ उस के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा करती है जिस के फलस्वरूप उस के अन्दर उत्तम गुण पैदा होने लगते हैं। इन गुणों में जो गुण उच्च कोटि का है वह अल्लाह से बाँधी गई प्रतिज्ञा एवं वचन का है। प्रतिज्ञा अथवा वचन से अभिप्रेत अल्लाह को अपना रब स्वीकार करने की वह प्रतिज्ञा भी है जो मानव जाति से उन के दुनिया में आने से पूर्व ही लिया गया था

और जो मनुष्य के स्वभाव में इस प्रकार रची बसी है कि वह अपने रब को आसानी से पहचान लेता है।

(देखिए सूरह आराफ़ नोट २६४ और २६५) और वह प्रतिज्ञा भी जो आदमी अल्लाह पर ईमान ला कर उस के साथ बाँधता है।

49. इस से ख़ानदानी रिश्ते और नाते अभिप्रेत हैं और जिन को जोड़ने का मतलब उन के साथ अच्छा सुलूक और उन के हुकूक एवं अधिकारों को अदा करना है। इन्सान का इस मामले में बड़ा इम्तिहान होता है कि वह अपने रिश्तेदारों के साथ क्या सुलूक करता है। रिश्तों को जोड़ना यह बहुत बड़ी नैतिक भलाई है जबकि रिश्तों को तोड़ना बहुत बड़ी नैतिक बुराई।

50. अर्थात् नेकी की राह पर चलने के बावजूद यह भय रखते हैं कि क्रियामत के दिन कहीं हम से कड़ी पूछ ताछ न की जाए। यह भय ही उन के जीवन को फ़ूँक फ़ूँक कर व्यतीत करने वाला बना देता है तथा नेकी की राहें उन पर खुल जाती हैं।

51. मालूम हुआ कि अल्लाह के नज़्दीक उस सब्र और धैर्य का कुछ वज़न एवं मूल्य है जो उस की रज़ा अथवा प्रसन्नता प्राप्ति के लिए किया जाए। अगर सामने यह उद्देश्य न हो तो सब्र और धैर्य पर किसी इनाम की आशा नहीं बाँधी जा सकती।

सब्र यह है कि आदमी हक़ (सत्य) पर डटा रहे, अल्लाह की उपासना एवं अनुपालन के लिए कष्ट और मुसीबतें सहन करे, ग़रीबी और बीमारी को झेले आफ़तों और मुसीबतों का सामना करे और लोगों के सुधार और अल्लाह की राह में अधिक जद्दोज़हद के सिलसिले में दृढ़ता एवं साहस से काम ले। इस प्रकार मोमिन की पूरी ज़िन्दगी सब्र और धैर्य की ज़िन्दगी होती है।

52. मुग़द अल्लाह की रज़ा एवं प्रसन्नता के लिए ख़र्च करना और भलाई के कामों पर ख़र्च करना है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट ४५२)

53. गंदगी को गंदगी से नहीं दूर किया जा सकता बल्कि उस को धोने के लिए पानी की ज़रूरत होती है इसी प्रकार बुराई को जवाबी बुराई के द्वारा नहीं बल्कि नेकी और अच्छे सुलूक के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। अतः एक बिगड़े हुए माहौल में सुधार का काम करने वालों का असल हथियार नेकी होता है।

54. अर्थात् आखिरत का घर जिस की नेमतें ऐसे ही लोगों के हिस्से में आएंगी।

23. सदा रहने वाले बाग़ जिन में वे प्रविष्ट होंगे और वे भी जो उन के माता पिता, उन की पत्नियों और उन की औलाद में से नेक होंगे ⁵⁵। और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उन के पास आएंगे।

جَبَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمُ الْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝۳۳

24. (और कहेंगे) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया, ⁵⁶ तो क्या ही अच्छा है परलोक का घर !

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝۳۴

25. और जो लोग अल्लाह की प्रतिज्ञा को मज़बूत बाँध लेने के बाद तोड़ देते हैं और उन रिश्तों को काट डालते हैं जिन को जोड़ने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है और ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं ⁵⁷ उन के लिए लानत है और उन के लिए बहुत बुरा ठिकाना ।

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝۳۵

26. अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़क़ (रोजी) कुशादा कर देता है और जिस के लिए चाहता है नषा तुला कर देता है ⁵⁸। लोग दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा रहे हैं हालांकि दुनिया की ज़िन्दगी आखिरत के मुकाबले में कुछ भी नहीं सिवाय इस के कि थोड़े से लाभ का सामान है ⁵⁹।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝۳۶

27. यह लोग जिन्होंने ने कुफ़्र किया है कहते हैं कि इस व्यक्ति पर इस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों न उतरी ⁶⁰? कहो अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है। और अपनी तरफ़ बढ़ने की राह उसे दिखाता है, जो उस की तरफ़ रुजू करता (पलटता) है ⁶¹।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يَضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَرَادَ ۝۳۷

28. जो ईमान लाते हैं और जिन के दिल अल्लाह की याद से परितुष्ट होते हैं। सुनों ! अल्लाह के ज़िक्र (अर्थात् अल्लाह की याद) ही से दिलों को परितोष प्राप्त होता है ⁶²।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝۳۸

29. जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए उन के लिए मुबारकबाद है, ⁶³ और बेहतरीन अन्जाम।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَى لَهُمْ وَحَسُنَ مَا يَبْرَأُ ۝۳۹

55. ईमान वालों को यह अतिरिक्त खुशखबरी सुना दी गई है कि उन के माँ बाप तथा बीवी और बच्चों में से जो जो नेक होंगे उन के साथ जन्नत में जमा होंगे ताकि उन के लिए और भी खुशी का कारण बनें। यह खुशखबरी ईमान वालों को इस बात के लिए आमादा करती है कि वे अपने घर के माहौल को ईमान वाला और नेक बनाने की अत्याधिक कोशिश करें ताकि घर के सभी लोग जन्नत के योग्य अधिकारी बनें।

56. अर्थात् जो धैर्यवान जीवन तुम ने संसार में व्यतीत किया उस की बदौलत तुम जन्नत के योग्य अधिकारी ठहरे जहाँ तुम्हारे लिए हर प्रकार की सलामती ही सलामती है। इस कल्पना ही में ईमान वालों के लिए मन की शान्ति का बड़ा सामान है कि जन्नत में फ़रिश्ते उन से मिलने के लिए आएंगे और उन्हें इस सफलता पर मुबारकबाद देंगे।

57. यह उन लोगों का हाल है जो एक मात्र खुदा के बन्दे बन कर रहना नहीं चाहते। वे बन्दगी की उस प्रतिज्ञा को जो प्राकृतिक प्रतिज्ञा है तोड़ देते हैं एवं किसी मुसीबत में घिर आने पर खुदा की बन्दगी का पूरे विवेक से जो प्रण करते हैं उस को भी मुसीबतों से मुक्ति मिलने के बाद तोड़ डालते हैं। तथा कुफ़्र और शिर्क की राह पर चल कर दुनिया में हर तरह का बिगाड़ पैदा करते हैं।

58. मुश्रिकों और काफ़िरों के यहाँ दौलत की रेल पेल और उन की आर्थिक “उन्नति” को देख कर लोग इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि अगर ये लोग घृणा एवं तिरस्कार के पात्र होते तो दुनिया इन पर कुशादा कैसे होती। इसी भ्रम को दूर करने के लिए फ़रमाया कि रोज़ी की कुशादगी और तंगी अल्लाह की मर्जी पर निर्भर है और इन्सान की इस मामले में आजमाइश होती है कि वह दुनिया को लक्ष्य बनाता है या आखिरत को। अतः किसी के लिए रोज़ी की संपन्नता इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह अल्लाह के प्रिय हैं।

59. लोगों का आखिरत की ज़िन्दगी को नज़रअन्दाज़ कर के दुनिया की ज़िन्दगी को सब कुछ समझ लेना और सांसारिक उन्नतियों पर इतराना वह बुनियादी ग़लती है जिस ने इन को बिलकुल ग़लत दिशा में फेंक दिया है। इस समय तो वे अपना सांसारिक जीवन बनाने में मग्न हैं, मगर उन की आँखें तब खुलेंगी जब आखिरत बरपा होगी। उस समय उन्हें एहसास

होगा कि न सांसारिक दौलत वास्तविक दौलत थी और न सांसारिक उन्नति वास्तविक उन्नति। उन्होंने ने अपने जीवन को ग़लत दिशा में फेंक कर आखिरत (परलोक) की सदा सर्वदा बाक़ी रहने वाली दौलत और नेमत से अपने को वंचित कर लिया।

60. मुराद वह निशानी जिसे देखा और महसूस किया जा सके अर्थात् जीवित चमत्कार, अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ६४ और ६५

61. मतलब यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यक्तित्व में आप के नबी होने की निशानियाँ इतनी जमा हो गई हैं कि किसी अनुभूत चमत्कार की आवश्यकता ही नहीं रही। इन सारी निशानियों को देख लेने के बाद भी जो लोग आप की रिसालत अर्थात् रसूल होने को स्वीकार नहीं कर रहे हैं और निरन्तर इन्कार किये जा रहे हैं उन को यह तौफ़ीक़ कहाँ हो सकती है कि सत्य मार्ग को पा लें। सत्यमार्ग की ओर बढ़ने की तौफ़ीक़ और इस का सौभाग्य अल्लाह तआला उस को देता है जो अल्लाह की ओर पलटता है उस से विनती करता है कि ऐ खुदा मुझे सीधा मार्ग दिखा।

62. अर्थात् अल्लाह की ओर पलटने वाले लोग ही ईमान लाते हैं और जब ईमान लाते हैं तो उस की याद उन के मन में परितोष एवं हृदय को शान्ति पहुँचाने का सामान बन जाती है, क्योंकि ईमान लाना अल्लाह को पा लेना है और जब एक मोमिन अल्लाह को पा लेता है तो उसे तमाम मानसिक उलझनों से मुक्ति मिल जाती है। और उस की भावनाएँ अल्लाह से जुड़ जाती हैं जिस से दिल में सुकून संतोष और शान्ति भाव उत्पन्न हो जाता है।

यह आयत ईमान वालों को रुहानी दौलत से मालामाल कर देती है। एक मोमिन अल्लाह को जितना याद करेगा उतना ही उसे रुहानी और दिली सुकून नसीब होगा और यह दौलत ऐसी है जिस के मुकाबले में सारी दौलतें कुछ भी नहीं।

63. इस मुबारकबाद में ईमान वालों के लिए खुशियों और उम्मीदों की एक दुनिया आबाद है क्योंकि यह मुबारकबाद अल्लाह की तरफ़ से है और जब इस का एहसास एक मोमिन को हो जाता है तो वह मौत से पहले ही उड़ने के लिए पर तौलने लगता है !



30. इस तरह हम ने तुम को एक ऐसी उम्मत में रसूल बना कर भेजा है जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुजर चुकी हैं ताकि तुम उन्हें वह बात सुनाओं जो हम ने तुम पर उतारी है ⁶⁴। इस हाल में कि वे रहमान का इन्कार कर रहे हैं, ⁶⁵ कहो, वही मेरा रब है, उस के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजू करता (पलटता) हूँ।

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ^(३०)

31. और अगर कोई ऐसा कुर्आन नाज़िल होता जिस से पहाड़ चलने लगते, या ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाती, या मुँदें बोलने लगते ⁶⁶ (तब भी ये ईमान न लाते और न तुम्हारे बस में है कि ऐसा कर दिखाओ) बल्कि सारा अधिकार अल्लाह ही को है ⁶⁷। फिर क्या ईमान वाले यह जानकर कि अगर अल्लाह चाहता तो तमाम लोगों को हिदायत दे देता (इन हठ् धर्मों के ईमान न लाने से) निराश नहीं हुए? ⁶⁸ और काफ़िरों पर इन की करतूतों के कारण कोई न कोई आफ़त आती ही रहेगी या उन की आबादियों के क़रीब नाज़िल होती रहेगी। यहाँ तक कि अल्लाह का वादा सामने आए, ⁶⁹ अल्लाह कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ خُيِّلَ بِهِ الْمُوتَىٰ بِلَيْلَةٍ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُمْ لَا يَشَاءُونَ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ^(३१)

32. तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक उड़ाया जा चुका है, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर उन को पकड़ लिया, तो देखो मेरी सज़ा कैसी रही।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحِيًّا مِنْ قَبْلِكَ فَأَتَيْنَا الْكَافِرِينَ كَذِبًا وَأَذْنًا كَأَنَّمْ تَكْفُرُ كَذِبًا ^(३२)

33. फिर क्या वह जो हर व्यक्ति पर निगाह रखता है कि उस ने क्या कमाई की (वह उस को यूँ ही छोड़ देगा ? इस वास्तविकता को उन्होंने ने झुठलाया) और उन्होंने ने अल्लाह के साझीदार ठहरा दिए ⁷⁰। इन से कहो, ज़रा उन के नाम तो लो ⁷¹। क्या तुम उसे ऐसी बात की ख़बर दे रहे हो जिस को वह नहीं जानता कि ज़मीन में उस का कोई अस्तित्व है ? ⁷² या फिर मात्र तुम सतही बातें करते हो ? ⁷³ सच्चाई यह है कि काफ़िरों के लिए उन की मक्कारियाँ शोभायमान बना दी गई हैं ⁷⁴ और उन्हें सीधे मार्ग से रोक दिया गया है ⁷⁵ और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं। ⁷⁶

أَفَمَن هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ يَبْطَأُ هَرِمٌ مِنَ الْقَوْلِ بَلْ زَيْنٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ^(३३)

64. इस आयत में मुश्रिकों अर्थात् बहुदेववादियों को कुआन सुनाने का हुक्म दिया गया है जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि कुआन मुस्लिम और गैर मुस्लिम सब के समझने की चीज है। यदि वे अरबी न जानते हो तो अनुवाद की सहायता से उन को कुआन समझाया जाना चाहिए।

65. रिसालत और वहय (अर्थात् ऊपर से उतरने वाले अल्लाह के कलाम) का इन्कार करने वाले वास्तव में दयावान खुदा ही के इन्कारी होते हैं क्यों कि अगर वे अल्लाह को रहमान (दयावान) मानते तो उन्हें रसूल की नियुक्ति और कुआन के अवतरण पर आश्चर्य नहीं होता बल्कि वे समझते कि मेहरबान एवं दयावान खुदा अपने बन्दों पर मेहरबान होना चाहता है इस लिए उस ने यह दया बरसाई है।

66. इस शर्तिया वाक्य का उत्तर नहीं दिया गया है क्यों कि इस का उत्तर स्पष्ट है। अरबी की खास शैली यह है कि ऐसे अवसर पर उत्तर गायब कर देते हैं और पढ़नेवाला उस का भावार्थ समझ लेता है। हम ने उस को ब्रेकेट में खोल दिया है।

67. मतलब यह है कि अगर इन पर कुआन नाज़िल किया जाता जिस के द्वारा पहाड़ों के चलने या ज़मीन के टुकड़े टुकड़े होने या मुर्दों के बोलने लग जाने जैसे चमत्कार प्रकट होते तो भी जो लोग हठधर्मी में लिप्त हैं वे ईमान न लाते बल्कि इस को जादू आदि कहते। दूसरी बात यह कि चमत्कार दिखाना रसूल के बस की चीज नहीं बल्कि इस का अधिकार और इस की पूर्ण क्षमता अल्लाह ही को है, वह चाहेगा तो चमत्कार दिखाएगा नहीं चाहेगा तो नहीं दिखाएगा।

68. काफ़िरों की तरफ से चमत्कार की बढ़ती माँगों को देखते हुए कुछ मुसलमान यह सोच रहे थे कि अगर अल्लाह तआला कोई प्रत्यक्ष चमत्कार दिखाता तो शायद ये लोग ईमान ले आते। उन की इसी सोच और विचार का खण्डन यहाँ किया गया है कि ईमान का सम्बन्ध बुद्धि और विवेक से है, और बुद्धि एवं विवेक से काम लेने वालों के लिए कुआन स्वयं बहुत बड़ा चमत्कार है। किन्तु जो लोग बुद्धि एवं विवेक से काम लेना नहीं चाहते उन को यदि मुँह माँगा चमत्कार दिखा दिया जाए तब भी वे ईमान लाने वाले नहीं हैं। हाँ अगर अल्लाह चाहता तो सब को हिदायत की राह पर चलने के लिए विवश कर देता। किन्तु जब उस ने ऐसा नहीं किया बल्कि मनुष्य को यह अधिकार प्रदान किया कि वह अपनी मर्ज़ी से हिदायत या गुमराही का चुनाव करे तो जिन लोगों ने गुमराही को पसन्द कर के हठधर्मी की राह अपनाई है उन से यह आशा किस प्रकार की जा सकती है कि वे चमत्कार देख कर सीधी राह पर आ जाएंगे?

69. अर्थात् क्रियामत तक काफ़िरों पर एक न एक आफ़त नाज़िल होती रहेगी, कभी एक क्रौम पर कभी दूसरी क्रौम पर, कभी एक आबादी पर और कभी दूसरी आबादी पर, कभी एक देश में तो कभी दूसरे देश में, ताकि वे अपनी करतूतों का दुनिया में भी मज़ा चखें, और ताकि उन्हें तंबीह हो। ये आफ़तें कुदरती भी हो सकती हैं और इन्सानों के हाथों भी। जैसा कि जंग आदि के रूप में होता है। आज कल के ज़माने में तो ये आफ़तें इस तेज़ी से आ रही हैं कि कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि किसी न किसी जगह से छोटी या बड़ी आफ़त की ख़बर न मिलती हो। तूफ़ान, सैलाब, अकाल और भूकंप जैसी कुदरती आफ़तों के अलावा बड़ी बड़ी दुर्घटनाएँ, दंगे और जंगी कारवाइयों ने बड़ी दयनीय एवं भयावह स्थिति पैदा कर दी है।

70. अर्थात् जो खुदा एक एक व्यक्ति के एक एक काम की देख रेख कर रहा है वह इन से पूछ ताछ कैसे नहीं करेगा मगर इन लोगों ने खुदा का साज़ीदार ठहरा कर पूछ ताछ की कल्पना से ही छुटकारा हासिल कर लिया है क्यों कि वे समझते हैं कि हमारे ये हिमायती और सिफ़ारिशी हर जगह हमारी मदद के लिए काफ़ी हैं। अगर मरने के बाद कोई मामला सामने आया है तो वहाँ भी हमारे यही पूज्य हमारे लिए मुक्ति का वसीला (साधन) बनेंगे।

71. यह कटाक्ष है उन के ठहराये हुए साज़ीदारों के भ्रम होने पर। उन से कहा जा रहा है कि अल्लाह तो वह महाविराट हस्ती है जो एक एक व्यक्ति, एक एक जीवों की देख रेख कर रहा है इस लिए उस को पूज्य बनाना भी सही है और उस की पूछताछ से डरना भी सही। लेकिन तुम ने जिन को पूज्य बना रखा है उन में कौन है जो खुदा की यह शान रखता हो? क्या तुम नामों के साथ यह बता सकते हो कि यह और यह हस्तियाँ अल्लाह के जैसी विशेषताएँ तथा गुण रखती हैं?

72. अगर तुम यह दावा करते हो तो इस का मतलब यह है कि तुम अल्लाह को असंख्य खुदाओं के होने की ख़बर दे रहे हो जब कि अल्लाह को नहीं मालूम कि कहीं किसी खुदा का अस्तित्व है और जो बात अल्लाह के ज्ञान में नहीं वह निश्चित रूप से अपना वजूद नहीं रखती।

73. अर्थात् जिस चिज़ की कोई वास्तविकता नहीं उस का दावा एक सोची समझी और बुद्धि में न समाने वाली बात ही हो सकती है मगर तुम लोगों को इस का कोई एहसास नहीं कि कैसी बे सिर पैर की बातें हैं जो तुम करते हो।

खुदा के बारे में मनुष्य को सर्वाधिक गंभीर होना चाहिए।

मगर सही बात यह है अधिकतर लोग खुदा के बारे में गम्भीर नहीं बल्कि हँसी करते दिखते हैं। वे बिना तर्क एवं दलील के खुदा के बारे में जो मुँह में आया कह देते हैं।

74. अर्थात् शिर्क (बहुदेववाद) का बुद्धि से परे होना एवं उस की नामाकूलियत स्पष्ट हो जाने के बाद भी लोग उसे इस लिए छोड़ने को आमादा नहीं होते कि इस सूरत में उन के स्वार्थ एवं लाभ प्रभावित होंगे। उन को समाज में जो स्थान मिला हुआ है वह बाक़ी नहीं रहेगा और उन की सत्ता अथवा नाम मात्र की संप्रभुता ख़तरे में पड़ेगी। वे अपनी उन

अवैध इच्छाओं एवं उद्देश्यों पर परदा डालने के लिए शिर्क और बहुदेववादी धर्म को सही साबित करने की कोशिश करते हैं। ये सब उन की चालबाज़ियाँ हैं।

75. अर्थात् उन पर अल्लाह का गुमराह कर देने वाला नियम लागू हो गया।

76. कुदरत का क़ानून यह है कि जो व्यक्ति आँखें बन्द किये रहता है उस को हिदायत का सूरज दिखाई नहीं देता और न किसी के बस में है कि रौशनी दिखाए।

“आँख ही खोले न जब कोई उजाला क्या करे”



और यह सच है कि हम ने तुम से पहले भी रसूल भेजे थे और उन को पत्नियों तथा औलाद वाला बनाया था और किसी पैगम्बर के बस में न था कि अल्लाह की अनुज्ञा (इज़्ज) के बग़ैर कोई निशानी ला दिखाता। हर दौर के लिए एक नविश्ता (किताब) है। अल्लाह जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है और जिस चीज़ को चाहता है क़ायम रखता है। उम्मुल किताब (मूल किताब) उसी के पास है। (अल-कुर्आन)

34. उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब है ⁷⁷ और आख़िरत का अज़ाब तो कहीं अधिक कठोर होगा। कोई नहीं जो इन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचा सके।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ③

35. परहेज़गारों से जिस जन्नत का वादा किया गया है उस की विशेषता यह है कि उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल स्थायी हैं और उस की छाया भी स्थायी ⁷⁸। यह अन्जाम है उन लोगों का जिन्होंने ने तक्रवा (परहेज़गारी) अपनाया ⁷⁹। और काफ़िरोں का अन्जाम आग है।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلُّهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ④

36. जिन लोगों को हम ने किताब दी थी वे इस (किताब) से खुश हैं जो तुम पर उतारी गई है ⁸⁰। और इन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उस की कुछ बातों से इन्कार कर रहे हैं ⁸¹। कहो मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत करूँ और उस का शरीक (साझीदार) न ठहराऊँ। उसी की तरफ़ में बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ लौटना है।

وَالَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَخْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَالْيَئِسُّوا ⑤

37. इस तरह हम ने इसे अरबी फ़रमान के रूप में नाज़िल किया है। ⁸² और अगर तुम ने इस ज्ञान के ⁸³ आ जाने के बाद इन की इच्छाओं की ⁸⁴ पैरवी की, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तुम्हारा कोई सहायक होगा और न कोई बचाने वाला।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ دَلِيلٍ وَلَا وَاقٍ ⑥

38. और यह सच है कि हम ने तुम से पहले भी रसूल भेजे थे और उन को पत्नियों तथा औलाद वाला बनाया था ⁸⁵ और किसी पैग़म्बर के बस में न था कि अल्लाह की अनुज्ञा (इज़्ज़) के बग़ैर कोई निशानी ला कर दिखाता। हर दौर के लिए एक नविशता (किताब) है ⁸⁶।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ⑦

39. अल्लाह जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है और जिस चीज़ को चाहता है क़ायम रखता है ⁸⁷। उम्मुल किताब (मूल किताब) उसी के पास है ⁸⁸।

يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ مَا يُعِزُّ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ⑧

77. दुनिया में जो अज़ाब (प्रकोप) काफ़िरों, बहुदेववादियों और अनीश्वरवादियों पर आता है वह विभिन्न रूपों में प्रकट होता है और अपनी श्रेणी के लिहाज़ से भी वह भिन्न होता है। रसूल के द्वारा हुज्जत क़ायम हो जाने के बाद अर्थात् हर तरह समझ चुकने तथा तर्क प्रस्तुत कर चुकने के बाद जो अज़ाब (प्रकोप) आता है वह तो एक निर्णायक अज़ाब होता है। लेकिन इस के अलावा भी छोटे बड़े अज़ाबों का क्रम दुनिया में जारी रहता है और सच्चाई यह है कि एक काफ़िर पर ख़ुदा की ऐसी मार पड़ती रहती है कि उस को सख़्त दिली तकलीफ़ और रूहानी कष्ट महसूस होने लगता है चाहे वह कितना ही ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिता रहा हो। इस के विपरीत एक सच्चे मोमिन को दुनिया में जो तकलीफ़ पहुँचती है वह चूँकि आजमाइश के तौर पर होती है इस लिए उस के रूहानी सुकून में कोई कमी नहीं होती बल्कि वृद्धि ही होती है। इस लिए ये कष्ट और तकलीफ़ें मोमिन के लिए अज़ाब नहीं बल्कि उस को सुकून, शान्ति एवं परितोष पहुँचाने वाली होती हैं।

78. अर्थात् वह सदा बहार जन्नत है जिस के फल मौसमी नहीं बल्कि चिरस्थायी अर्थात् हमेशा रहने वाले और जिस की छाँव भी सदैव बाक़ी रहने वाली है।

इस से अन्दाज़ा होता है कि जन्नत की दुनिया हमारी इस दुनिया से कितनी भिन्न होगी और वहाँ की हर चीज़ कितनी मेयारी और उत्तम होगी।

79. यहाँ तक्रवा का शब्द शिर्क और कुफ़्र की तुलना में इस्तेमाल हुआ है जिस से स्पष्ट होता है कि तक्रवा का मौलिक एवं प्राथमिक भावार्थ यह है कि आदमी शिर्क और कुफ़्र से बचे। जब कि उस के विस्तृत भावार्थ में हर तरह की बुराईयों एवं पापों से बचना शामिल है।

80. मुराद अहले-किताब में से वे लोग हैं जो अल्लाह पर सच्चे मन से ईमान रखते थे और किसी ग़िरोह बन्दी और धार्मिक वैमनस्य का शिकार न थे। जब कुर्आन उन के सामने आया तो उन्हें ख़ुशी हुई कि हमारे रब की तरफ़ से हमारी हिदायत का सामान हुआ। संकेत संभवतः हब्शा के ईसाइयों की ओर है जहाँ मुसलमान हिजरत कर के गए थे और जहाँ के बादशाह ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

81. संकेत है अहले-किताब के उन फिरकों एवं सम्प्रदायों की ओर जिन्हें कुर्आन की कुछ बातों और ख़ास तौर से ख़ालिस तौहीद से इन्कार था।

82. अर्थात् जिस प्रकार हम ने तुम्हें अरब क़ौम की तरफ़ रसूल बना कर भेजा है----- जिस का वर्णन ऊपर आयत ३० में हुआ ----- उसी तरह हम ने उन की भाषा में जो अरबी कुर्आन को एक फ़रमान के रूप में नाज़िल किया ताकि वे इसे

समझे। और रसूल की नियुक्ति चूँकि सीधे उस क़ौम की तरफ़ है इस लिए उस पर अल्लाह की हुज्जत (युक्ति) पूरी तरह क़ायम हो जाए।

83. ज्ञान से तात्पर्य दीन का सही ज्ञान है जो कुर्आन के रूप में नाज़िल हुआ है।

84. इच्छाओं से तात्पर्य वे धारणाएँ एवं आस्थाएँ तथा तौर तरीक़े हैं जो वास्तविक ज्ञान पर नहीं बल्कि लोगों की अपनी इच्छाओं पर आधारित हैं।

यह उसूलों की बात उन बिद्अतों तथा दीन के नाम पर नए एवं मन माने प्रचलनों पर भी लागू होती है जो मुसलमानों ने अपना रखी हैं और जिस ने दीन का हुलिया ही बिगाड़ कर रख दिया है।

85. यह इन्कार करने वालों के उस आपत्ति का उत्तर है कि यह व्यक्ति यदि पैग़म्बर है तो बीवी बच्चे कैसे रखता है और वे समझते थे कि पैग़म्बर को बशरियत अर्थात् आदमी होने से कुछ ऊपर होना चाहिए। इस का जवाब यह दिया गया कि इस से पहले जो रसूल भेजे गए थे वे भी बशर (आदमी) ही थे और वे बशरियत के तक्राज़ों को पूरा करते थे। ऐसा होना रसूल की शान के खिलाफ़ नहीं है।

86. अर्थात् जिस दौर में अल्लाह तआला ने जिस रसूल को भेजा उस दौर के लिहाज़ से उस को निशानियाँ प्रदान कीं जो उस के रसूल होने पर तर्क एवं साक्ष्य प्रस्तुत करती थीं। ये निशानियाँ अल्लाह तआला के उस नीतिपूर्ण एवं हकीमाना फैसले के अनुसार प्रकट हुई थीं जो उस दौर के लिए उस ने तय किया था। और हर दौर के लिए उस के फैसले एक नविशते (किताब) की हैसियत रखते हैं।

मतलब यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दौर गुज़रे हुए दौरों (युगों) से भिन्न है। इस लिए इस से पूर्व जिस प्रकार के अनुभूत चमत्कार रसूलों को दिए गए थे इस प्रकार के किसी चमत्कार का मुतालबा एवं माँग इस दौर में करना सही नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में जादू का ज़ोर था इस लिए उन्हें लाठी के साँप बन जाने का चमत्कार (मोज़ाज़ा) दिया गया ताकि वह जादू पर हावी हो जाएँ और उन के रसूल होने की दलील बने।

इसी प्रकार ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में चिकित्सा शास्त्र अपने शिखर पर था। इस लिए उन्हें अन्धे और कोढ़ियों को अच्छा कर देने का चमत्कार दिया गया। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना तत्वपूर्ण गंभीर एवं मीठी भाषा एवं साहित्य के शिखर का दौर है इस लिए आप को ऐसी तत्वपूर्ण, सारगर्भित एवं गंभीर किताब प्रदान की गई जिस की शैली अत्यन्त प्रभावकारी तथा मनमोह लेने वाली है।

इस के कलाम (साहित्य) के आगे इस फन के बड़े बड़े अभ्यस्त एवं दिग्गज विशेषज्ञों को भी हथियार डालने पड़े। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दौर क्रियामत तक के लिए है इस लिए कोई ऐसा मोज़ा (चमत्कार) ही आप के लिए उचित हो सकता था जो स्थायी हो और जिस को बाद के लोग भी देख सकें। अतः कुर्आन क्रियामत तक के लिए एक जीवित चमत्कार है। इस दौर के लिए अल्लाह का फ़ैसला यही है जो एक नविशते (किताब) की हैसियत रखता है।

87. ऊपर की आयत में निशानी (मोज़ा) के बारे में जो बात कही गई है उस को देखते हुए इस आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह तआला जिस निशानी (मोज़े) को चाहता है सामयिक बना देता है और जिस को चाहता है स्थायी बना देता है। पिछले पैगम्बरों को जो मोज़े दिये गए थे वे सामायिक थे, लेकिन कुर्आन के रूप में जो मोज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को दिया जा रहा है वह रहती दुनिया तक बाक़ी और ज़िन्दा रहने वाला मोज़ा (चमत्कारीक निशानी) है।

88. अर्थात् उस के पास वह किताब मौजूद है जिस में अल्लाह तआला के सारे फैसले अंकित हैं। किस रसूल को किस दौर में कौन सा मोज़ा (निशानी) दे कर भेजा जाए यह एक सुनिश्चित एवं तय शुदा बात है जो उम्मुल किताब (मूल किताब) में दर्ज है। मतलब यह है कि रसूलों की नियुक्ति और उन के हाथों अनेकों प्रकार के मोज़ो के प्रकट होने के लिए अल्लाह तआला की तयशुदा एवं नियमित स्कीम है जो व्यवस्थित रूप से उस के पास मौजूद है और उसी के अनुसार घटनाएँ घटित होती हैं। अतः तुम उलटी सीधी मांग (Demand) करने के बजाए उस स्कीम और उस नीति को समझने की चेष्टा करो जिस के अनुसार रसूल की नियुक्ति हुई है।



और हम ने जिस चिज़ का इन से वादा कर रखा है उस का कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या (इस से पहले ही) तुम्हें वफ़ात दे दें (अर्थात् उठालें) बहरहाल तुम पर ज़िम्मेदारी केवल संदेश पहुँचा देने की है, और हिसाब लेना हमारा काम है। (अल-कुर्आन)

40. और हम ने जिस चिज़ का इन से वादा कर रखा है उस का कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या (इस से पहले ही) तुम्हें वफ़ात दे दें ⁸⁹ (अर्थात् उठालें) बहरहाल तुम पर ज़िम्मेदारी केवल संदेश पहुँचा देने की है, और हिसाब लेना हमारा काम है।

وَإِنْ مَّا نَرِيكَ بِعَضِّ الذِّئْيِ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَقَّيْكَ
فَأَنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ^(८९)

41. क्या ये लोग देखते नहीं कि हम इस भू-भाग की तरफ़ इस की सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं ⁹⁰। अल्लाह हुक्म चलाता है, कोई नहीं जो उस के हुक्म को टाल सके और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا
وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ^(९०)

42. और जो लोग इन से पहले गुज़र चुके हैं उन्होंने ने भी चालें चली थीं मगर तमाम तदबीरें अल्लाह ही के अधिकार में है। वह हर आदमी की कमाई को जानता है। और बहुत जल्द इन काफ़िरों को मालूम हो जाएगा कि किस के लिए आक्रिबत (परलोक) का घर है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا يَعْلَمُ
مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ^(९१)

43. काफ़िर कहते हैं कि तुम उस के भेजे हुए नहीं हो। कहो मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है। एवं वे लोग जो अल्लाह की किताब का ज्ञान रखते हैं ⁹¹।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَلَسَتْ مُرْسَلًا قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ^(९२)

89. इस की व्याख्या सूरह यूनुस नो ७५ में गुजर चुकी है।

90. अर्थात् मक्का के चारों ओर जैसे मदीना आदि में इस्लाम का असर बढ़ता जा रहा है और विभिन्न क़बीलों में इस्लाम कुबूल करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह इस बात का द्योतक है कि इस्लाम का प्रभाव बढ़ रहा है और मुश्रिकों एवं काफ़िरों पर मक्का की ज़मीन रोज़ बरोज़ तंग होती जा रही है। कुर्आन की यह बात बिल्कुल सच साबित हुई और कुछ ही साल के अन्दर अन्दर न केवल मदीना में इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित हुआ बल्कि इस्लाम मक्के पर विजय फ़हराता हुआ पूरे अरब पर छा गया।

91. अहले-किताब के वे लोग मुराद हैं जो अल्लाह की किताब का ज्ञान रखते थे और सत्यप्रिय थे। उन की गवाही

को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने के समर्थन में इस लिए, प्रस्तुत किया गया है कि पिछली किताबों में एक रसूल को नियुक्त किये जाने के सिलसिले में जो भविष्य वाणियाँ मौजूद थीं वह पूर्ण रूप से आप पर फिट बैठ रही थीं और आप की दअवत ठीक ठीक वही दअवत थी जिस की तरफ़ सारे नबी बुलाते रहें हैं। इस लिए ईसाईयों में से नजाशी (हब्शा का बादशाह) जैसे लोगों का आप पर ईमान लाना गवाही की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण बात है। चूँकि मक्का के बहुदेववादी रिसालत से अनभिज्ञ थे और अहले-किताब रिसालत से भली भाँत परिचित थे इस लिए मक्का के बहुदेववादियों से कहा गया कि इन से मालूम करो कि रसूल इस से पहले भी आते रहे हैं या नहीं। और वे इन्सान थे या कुछ और ?





१४.सूरह इब्राहीम

नाम: आयत ३५ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ बयान हुई है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम “इब्राहीम” है।

नाज़िल होने का समय: यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई जब ईमान लाने वालों को अत्यधिक तकलीफ़ें एवं कड़ी यातनाएँ पहुँचाई जा रही थीं।

यह ज़माना हबश की ओर हिजरत और उस के बाद का है और अति संभावित है कि सूरह रअद के बाद यह नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: यह स्पष्ट करना है कि रसूल को भेजने का मक़सद क्या है और इस के माध्यम से मानवता पर खुदा की राह किस प्रकार स्पष्ट एवं प्रकाशमान हो रही है। जो लोग इस महान उद्देश्य की ओर से आँखें मूँदे हुए हैं वे रसूल के विरोध पर कमर कस चुके हैं और उस के अनुयायियों को कष्ट एवं यातनाएँ पहुँचाने पर तुले हुए हैं। ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप ही टूट सकता है और वे बहुत बुरे दण्ड के भागीदार हो सकते हैं।

कलाम की तरतीब: आयत १ से ४ में रसूल और कुर्आन के भेजने का मक़सद स्पष्ट किया गया है।

आयत ५ से १७ में नबियों के इतिहास के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं जिन से यह सबक़ मिलता है कि रसूल

का विरोध करने वालों और उन की राह में काँटे बिछाने वालों का क्या अन्जाम होता है। ऐसे लोगों को आख़िरत में जो सज़ा भुगतनी होगी उस की भी एक झलक़ प्रस्तुत की गई है जो रौंगटे खड़े कर देने वाली है।

आयत १८ से २३ में उन की नामुरादी का कुछ और हाल प्रस्तुत करते हुए बताया गया है कि ईमान वाले किस तरह अपनी मुराद को पहुँचेंगे।

आयत २४ से ३४ में ईमान और कुफ़्र के अलग अलग परिणामों को उदाहरण दे कर स्पष्ट किया गया है। काफ़ि़रों को अल्लाह की नेमत की नाशुक़ी पर सावधान किया गया है और ईमान वालों को कृतज्ञता एवं शुक्रगुज़ारी का तरीक़ा बताया गया है।

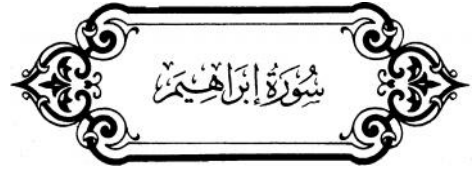
आयत ३५ से ४१ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वह दुआ पेश की गई है जो अपने अन्दर एक ऐतिहासिक महत्व रखती है। वह अपने वंश को शिर्क (बहुदेववाद) से सुरक्षित रखने तथा तौहीद पर क़ायम रखने के लिए बेताब दिल रखते थे। मगर उन की औलाद (बनी इस्माईल) उन को अपना पेशवा मानते हुए आज जो कुछ कर रही है वह उन की आरजू उन की दुआ और उन के तरीक़ों के बिल्कुल विरुद्ध है।

आयत ४२ से ५२ अन्तिम शब्द हैं जिस में क्रियामत और उस के अज़ाब का भयावह नक़शा खींचा गया है।

१४. सूरह इब्राहीम

आयतें: 52

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम रा ¹ यह किताब है जो हम ने (ऐ पैगम्बर !) तुम पर नाज़िल की है ताकि तुम लोगों को उन के रब के हुक्म से अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में ले आओ ²। उस की राह पर जो प्रभुत्वशाली भी है और ख़ूबियों वाला भी ³।

الرَّسُوبُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى
النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

2. अल्लाह, कि मालिक है उन चीज़ों का जो आसमानों में हैं और उन चीज़ों का जो ज़मीन में हैं। और तबाही है काफ़िरों के लिए कि उन्हें कठोर दण्ड भुगतना होगा।

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَبِهِ لُكُفْرِينَ
مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ②

3. जो अख़िरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं ⁴ और अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उस में टेढ़ पैदा करना चाहते हैं ⁵ ये लोग परले दर्जे की गुमराही में लिप्त हैं।

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ③

4. हम ने जो रसूल भी भेजा, उस की क़ौम की ज़बान ही में (संदेश दे कर) भेजा ताकि वह (इस संदेश को) लोगों पर अच्छी तरह स्पष्ट कर दे ⁶। फिर अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है ⁷। वह प्रभुत्वशाली एवं तत्वदर्शी है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رُسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ
لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلَّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④

5. हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि अपनी क़ौम को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाओ, और उन्हें अल्लाह के यादगार दिन ⁸ याद दिलाओ। इस में हर उस व्यक्ति के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला है बड़ी निशानियाँ हैं ⁹।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ⑤

1. विभक्त अक्षरों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनस नोट १ और सूरह बक्रः नोट १

2. यह वह एक अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है जिस के लिए कुआन को अल्लाह तआला ने उतारा है अर्थात् लोगों को अंधविश्वास एवं कुरीतियों के अन्धकार से निकाल कर ईमान और सुकर्मों के प्रकाश में ले आना। पैगम्बर की ज़िम्मेदारी यह है कि वह लोगों को बुलाने, बताने, समझाने, नसीहत करने और डराने का दायित्व निभाए तथा इसी के द्वारा लोगों को रौशनी में लाने की कोशिश करे। और इस रौशनी को कुबूल करने की तौफ़ीक़ देना अल्लाह ही का काम है। दूसरे शब्दों में, जो लोग रौशनी में आए अल्लाह की तौफ़ीक़ ही से आए, मगर माध्यम कुआन और पैगम्बर बने।

3. रौशनी में लाने का मतलब अल्लाह की राह पर लाना है। यहाँ अल्लाह की दो विशेषताएँ वर्णित हुई हैं। एक यह कि वह अज़ीज़ अर्थात् प्रभुत्वशाली है दूसरी यह कि वह हमीद अर्थात् ख़ुबियों वाला है। अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि यह जो ख़ुदा तक पहुँचने का एक मात्र साधन है, इन्सान इस को स्वीकार कर के एक ऐसी हस्ती से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेता है जिस के नियंत्रण में पूरी कायनात है और जो अति गुणवान तथा बेहद ख़ुबियों वाला है, इस लिए उस से सम्बन्ध बना कर के इन्सान निहाल ही हो सकता है और उस की कोई आशाएँ एवं अभिलाषाएँ ऐसी नहीं हो सकतीं जो कि पूर्ण न हो।

4. मनुष्य जिस चीज़ को सर्वधिक प्रिय रखता है उस के लिए दूसरी चीज़ों को त्यागने के लिए तैयार हो जाता है। जो लोग दुनिया को प्रिय रखते हैं वे सांसारिक स्वार्थ को किसी प्रकार भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते चाहे आख़िरत के लाभों को उन्हें कुर्बान क्यों न करना पड़े। संसार एवं संसारिक जीवन से असीम लगाव ही उन्हें आख़िरत के इन्कार पर आमादा करता है। अगर वे खुल कर आख़िरत का इन्कार नहीं करते तो इस का यह मतलब नहीं कि वास्तव में उन्होंने आख़िरत को अपना अन्तिम लक्ष्य बना लिया है, क्यों कि

उन्होंने यदि वास्तव में आख़िरत को अन्तिम लक्ष्य बना लिया होता तो जो क़दम भी वे उठाते आख़िरत के लाभों, तथा इनामों को ध्यान में रख कर ही उठाते।

5. इस की व्याख्या सूरह आलि-इमरान नोट १२५ में गुज़र चुकी।

6. अर्थात् रसूल को भेजने का अभिप्रेत चमत्कार दिखाना नहीं बल्कि लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा देना है। यही वह बात है कि जिस के तहत अल्लाह तआला की सुन्नत (नियम) यह रही है कि जिस क़ौम में भी उस ने रसूल भेजा उस की भाषा को वह जानने वाला था। ताकि अल्लाह के संदेश को भली भाँत समझा सके। इसी अल्लाह के नियम (सुन्नत) के अनुसार नबी-ए-अरबी की नियुक्ति हुई और कुआन अरबी में नाज़िल किया गया है ताकि वह अरब क़ौम को जिस से कि उस का व्यवहार है और जो उस का प्रथम संबोधी है पूरे स्पष्टीकरण के साथ हुज्जत (युक्ति) पूरी तरह क़ायम हो।

7. हुज्जत क़ायम होने अर्थात् हर तरह से समझा चुकने तथा हर प्रकार के तर्क प्रस्तुत कर देने के बाद हिदायत को कुबूल कर लेने की तौफ़ीक़ उन ही लोगों को नसीब होगी जो अल्लाह की अनुज्ञानुसार इस के योग्य ठहरेंगे।

8. मुराद वे ऐतिहासिक दिन हैं जिन में अल्लाह की तरफ़ से इबरतनाक घटनाएँ घटी। किसी क़ौम पर अल्लाह का प्रकोप टूटा और किसी समूह को इनाम से अलंकृत किया गया।

9. अर्थात् इन घटनाओं में क़ौमों के उत्थान एवं पतन सम्बन्धि मार्गदर्शन का काफ़ी सामान मौजूद है मगर इस रहनुमाई से वही फ़ायदा उठाते हैं जिन के अन्दर सब्र और शुक्र के तत्व होते हैं। सब्र यह कि अल्लाह से प्रतिफल लेने की आशा में उस की राह में पहुँचने वाली तकलीफ़ों को आदमी सहन करे और शुक्र एवं कृतज्ञता यह कि उस ने दीन की जो नेमत प्रदान की है और उस के रूहानी सुकून तथा मन की शान्ति का जो सामान किया है उस का वह पूरी तरह आदर सम्मान करे।



6. और जब मूसा ने अपनी क्रौम से कहा,¹⁰ अल्लाह ने जो फ़ज़ल (उपकार) तुम पर किया है उसे याद रखो, जब उस ने तुम्हें फिरऔन वालों से मुक्ति दी जो तुम्हें बुरी तरह यातनाएँ देते थे, और तुम्हारे बेटों को वध कर डालते थे और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रहने देते थे¹¹। इस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आजमाइश थी।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ
اَنْجَاكُمْ مِنْ اِلٍ فِرْعَوْنَ يَسُومُكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ
وَيَذِخُّكُمْ اَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيِيُونَ نِسَاءَكُمْ
وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ⑥

7. और जब तुम्हारे रब ने ख़बरदार किया था कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और दूँगा¹² और अगर नाशुक्री (कृतघ्नता) करोगे तो (याद रखो) मेरी सज़ा बड़ी सख़्त है¹³।

وَإِذْ تَاَذَنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَاَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ⑦

8. और मूसा ने कहा अगर तुम और वे सब जो ज़मीन के ऊपर हैं, नाशुक्री करें तो अल्लाह (को कुछ परवाह नहीं। वह) बेनियाज़ और ख़ुबियों वाला है¹⁴।

وَ قَالَ مُوسٰى اِنْ تَكْفُرُوْا اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ
جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑧

9. क्या तुम्हें¹⁵ उन लोगों की ख़बरें नहीं पहुँचीं जो तुम से पहले गुजर चुके हैं? नूह की क्रौम, आद और समूद और वह क्रौमें जो इन के बाद हुईं जिन को अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता¹⁶। इन के पास इन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर आए थे किन्तु उन्होंने अपने मुँह में अपने हाथ दूँस लिए¹⁷ और कहा जिस पैग़ाम के साथ तुम भेजे गए हो उस से हमें इन्कार है और जिस बात की तरफ़ तुम बुलाते हो उस में हमें संदेह है जिस ने हमें उलझन में डाल दिया है।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٍ
وَتٰمُوْدُ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ اَلَا يَعْلَمُهُمْ
اِلَّا اللّٰهُ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوا
اَيْدِيَهُمْ فِىْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْا اِنَّا كٰفِرٰنَ اِيْمًا اَنْسَلَتْۢ بِهٖ
وَ اِنَّا لَفِى شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهٖ مُّرِيْبٍ ⑨

10. उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें अल्लाह के बारे में संदेह है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है¹⁸? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे गुनाह बख़्शा दे और एक निश्चित समय तक मोहलत दे,¹⁹ उन्होंने ने कहा तुम तो हमारे ही जैसे आदमी हो। तुम चाहते हो कि हमें इन से रोक दो जिन की पूजा हमारे बाप दादा करते आये हैं। अच्छा तो लाओ कोई ख़ुला मोज़ज़ा (अर्थात् जीवित चमत्कार)।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اِنِّى اللّٰهُ شَكُّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ
وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوْا اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا اَنْتَرُكُمْ مِّثْلًا تَرٰىوْنَ اَنْ تَصُدُّوْا
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اَبَاؤُنَا فَاتُّوْا
بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ⑩

10. अर्थात् बनी इस्राईल से कहा।

11. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट २०५ में गुजर चुकी बाइबिल में है कि मिस्र के राजा ने इस भय के चलते कि इस्राईली संख्या में अधिक न हो जाएं दाइयों को आदेश दिया था कि इब्राईनी औरतों के प्रसव में जब बुलाई जाएं तो :-

“कि जब तुम इब्री स्त्रियों को बच्चा उत्पन्न के समय जन्मने के पत्थर पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो तो उसे मार डालना और बेटी हो तो जीवित रहने देना.....तब फिरऔन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभी को तुम नील नदी में डाल देना और सब बेटियों को जीवित रख छोड़ना।”

(निर्गमन १:१६, २२)

12. शुक्र अर्थात् कृतज्ञता में तीन बातें अनिवार्य रूप से शामिल हैं। एक यह कि बन्दा हर उस नेमत को जो उसे मिली अल्लाह की दया तथा उस की देन समझे, किसी और की नहीं। दूसरी यह कि उस के दिल में कृतज्ञता का भाव पैदा हो और तीसरी बात यह कि वह अनदेखे वास्तविक परोपकारी परवरदिगार के साथ वफ़ादारी और इबादत एवं अज्ञा पालन का रवैया अपनाए।

बन्दा जब कृतज्ञता अथवा शुक्रगुजारी का तरीका अपनाता है तो वह अतिरिक्त ईनाम का अधिकारी ठहरता है।

13. तौरात में यह बात इस तरह मौजूद है :-

“परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने और उस की सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे। अर्थात् शापित हो तू नगर में शापित हो तू खेत में।” (व्यवस्था विवरण २८: १५, १६)

14. हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

“ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम्हारे अगले पिछले सारे इन्सान और जिन्नत सर्वाधिक पापी व्यक्ति के बराबर हो जाएं तो इस से मेरे राजसिंहासन में कोई कमी न आएगी।” (सही मुस्लिम किताबुल बिर)

15. ऊपर मूसा अलैहिस्सलाम का बयान खत्म हुआ। यहाँ कुर्आन के सम्बोधियों से सीधा सम्बोधन है।

16. संकेत है क्रौमों के इतिहास के उस हिस्से की तरफ़ जिस पर पर्दा पड़ चुका है और वह छिप सा गया है। समूद की क्रौम का ज़माना लगभग ढाई हजार वर्ष ईसा पूर्व का है। इस

के बाद मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने तक कितनी ही क्रौमों ऐसी हुईं जिन में रसूल नियुक्त हुए। और क्रौमों के इन्कार एवं उद्वेगता पर उतर आने के फ़लस्वरूप उन पर अल्लाह का अज़ाब टूट पड़ा। ये तमाम घटनाएँ इतिहास के पन्नों में आज सुरक्षित नहीं हैं किन्तु अल्लाह के ज्ञान में अवश्य हैं।

जहाँ तक भारत देश की बात है यहाँ भी ऐसे आसार पाये जाते हैं जिन से क्रौमों की तबाही का पता चलता है, जैसे हड़प्पा (Harappa) जो पंजाब में है और मोहनजोदोड़ो (Mohanjodoro) जो सिंध में है तथा लोथल (Lothal) जो गुजरात में है। ये सब प्रचीन बस्तियाँ हैं जो अपनी पूरी सभ्यता एवं संस्कृति के साथ ज़मीन में दफ़न हुई थीं और जिन का पता इस दौर में चला है। इन पुरातत्वों से यह भी पता चलता है कि उन की सभ्यता बहुदेववादी थी। इस लिए संभव है कि इन क्रौमों की तरफ़ भी रसूल भेजे गए हों और उन के एकेश्वरवाद के निमंत्रण को रद्द कर देने के अपराध में अल्लाह का प्रकोप भूकंप के रूप में आया हो और उस ने इन क्रौमों को ज़मीन में दफ़न कर दिया हो। यह ज़माना समूद की क्रौमों के बाद और इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले के अर्थात् दो हजार वर्ष ईसा पूर्व से भी पहले का रहा होगा। इतिहास ने न इन क्रौमों के नाम सुरक्षित रखे हैं और न उन के रसूलों के। इन का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। अलबत्ता ये आसार इस बात की गवाही अवश्य देते हैं कि प्राचीन भारत में भी शिर्क और कुफ़्र के चलते अल्लाह का प्रकोप टूट चुका है।

17. हाथ मुँह में ढूँसना एक मुहावरा है जिस का मतलब भय और अचम्भे की अभिव्यक्ति है।

18. अर्थात् हम जो दअवत तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहे हैं वह ख़ालिस तौहीद की दअवत है जिस के सही होने में कोई संदेह नहीं। इस में संदेह वही व्यक्ति कर सकता है जिस को इस मौलिक वास्तविकता के बारे में कोई संदेह हो कि इस कायनात को एक ख़ुदा ने पैदा किया है। अगर तुम्हें विश्वास है कि इस कायनात का सृष्टा अल्लाह ही है तो फिर उस के एकमात्र पूज्य एवं उपास्य होने में संदेह के लिए कहाँ गुन्जाइश है?

19. अर्थात् तौहीद की जो दअवत तुम्हारे सामने प्रस्तुत की जा रही है उस को अगर तुम कुबूल करो तो शिर्क और गुनाह के जो काम तुम अब तक कर चुके हो उन को अल्लाह तआला क्षमा करेगा और तुम पर अज़ाब उतारने के बजाए तुम को निश्चित समय तक जीवन गुज़ारने की मोहलत देगा।



11. उन के रसूलों ने कहा, सचमुच हम तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं, किन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है अपने फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) से नवाज़ता है ²⁰। और यह बात हमारे अधिकार में नहीं है कि तुम्हें कोई मोज़ज़ा ला दिखाएँ। हाँ अल्लाह के हुक्म से यह बात हो सकती है। और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑪

12. और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें, जब कि उस ने हमारी राहें हम पर स्पष्ट कर दी ²¹। हम उन यातनाओं पर सब्र करेंगे जो तुम हमें दे रहे हो। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

وَمَا لَنَا إِلَّا تَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدانا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَى مَا آذَيْتُمُونَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ⑫

13. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें अपने देश से निकाल बाहर करेंगे, या फिर तुम्हें हमारे मज़हब में लौट आना होगा ²²। तो उन के रब ने उन पर वहय (प्रकाशना) भेजी कि हम इन अत्याचारियों को विनष्ट करेंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ⑬

14. और इन के बाद हम तुम्हें ज़मीन में बसाएंगे। यह (सिला) उस के लिए है जो डरा मेरे समक्ष खड़े होने से और डरा मेरी चेतावनी से।

وَلَنُسَلِّتَنَّكُمْ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ⑭

15. और उन्होंने ने फैसला चाहा और (फैसला इस प्रकार हुआ कि) कि हर उहंड ज़िद्दी नामुराद हुआ ²³।

وَأَسْفَعْنَا كُلَّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ⑮

16. इस के आगे जहन्नम है ²⁴ और उसे पीप लहू पिलाया जायेगा ²⁵।

مِنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَى مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ ⑯

17. जिसे वह घूँट घूँट कर के पियेगा मगर हलक से आसानी के साथ उतार न सकेगा। मौत हर तरफ़ से उस पर आयेगी, मगर वह मर न सकेगा। और आगे एक सख्त अज़ाब का उसे सामना करना होगा ।

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ⑰

20. अर्थात् हम ने यह कब दावा किया कि हम इन्सान नहीं हैं बल्कि कोई और सृष्टि हैं? हम हैं तो तुम जैसे इन्सान ही लेकिन हमें अल्लाह तआला ने अपनी उदार अनुकम्पा से रिसालत के पद पर नियुक्त किया। पता चला कि रिसालत का पद ऐसा नहीं है कि मनुष्य अपने प्रयासों से उस को प्राप्त कर सके बल्कि वह अल्लाह की ओर से उपहार एवं विशिष्ट अनुकम्पा है, जिसे चाहे उसे प्रदान करे।

21. मनुष्य जब पूरे विवेक एवं आत्माबोध के साथ अल्लाह पर ईमान लाता है तो खुदा और मजहब के बारे में उस की सारी उलझनें समाप्त हो जाती हैं और उस के लिए जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने और सफलता की मन्जिल तर पहुँचने के मार्ग स्पष्ट हो जाते हैं।

22. यह काफ़िरों का कहना है। इस से यह नतीजा निकालना सही नहीं होगा कि नबी हज़रात नुबुव्वत से पहले उन के मजहब पर हो गये थे। वास्तविकता यह है कि नबी नुबुव्वत से पहले भी प्राकृतिक दीन अर्थात् तौहीद (एकेश्वरवाद ही पर क़ायम रहे हैं लेकिन चूँकि वे सिरालत के दावे के साथ तौहीद का प्रचार करते नज़र न आते थे। इस लिए धारणाओं एवं विचारों की भिन्नता के बावजूद सहजातीय होने के कारण काफ़िर उन को अपने ही धर्म का स्वीकार करते थे। उन्होंने ने जो धमकी दी उस का मतलब यह है कि तुम तौहीद और रिसालत का यह प्रचार छोड़ दो और अपनी पिछली दशा पर वापस आ

जाओ हम तुम को परेशान नहीं करेंगे।

23. अर्थात् दुनिया ही में उन का फैसला चुका दिया गया और इस की सूरत यह हुई कि अल्लाह के अज़ाब ने रसूलों के विरोधियों को विनष्ट कर दिया और उन की निमंत्रणा को स्वीकार करने वालों को बचा लिया गया।

24. अर्थात् दुनिया में अज़ाब भुगतने के बाद इन्हें आखिरत में जहन्नम से वास्ता है।

25. अज़ाब की इस कल्पना ही से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अगर इन्सान इस पर ग़ौर करे तो उस के दिल में रोदन पैदा हो जाए। और जहन्नम के अज़ाब से बचने की चिन्ता उसे लग जाए।

उचित अवसर देखते हुए यह डर उन लोगों को सुनाया गया जो रसूल के विरोध में आगे आगे थे और उन का अनुकरण करने पर अत्याधिक अत्याचार तोड़ रहे थे। गोया उन से कहा गया कि तुम उदंडता और अत्याचार की जैसी चाहो मिसालें क़ायम करो आगे तुम्हारे लिए भाँत भाँत के अज़ाब एवं यातनाएँ तैयार हैं। स्पष्ट रहे कि दण्ड कर्म से जुड़ा है। उन की धारणाएँ ख़बीस (गन्दी) थीं उन के कर्म ख़बीस (दृष्ट) थे और वे ख़बीस (अपवित्र) आजीविका एवं धन खाते रहे, इस लिए वे इस दण्ड के भागीदार ठहरे कि पीप जैसी मैली, गन्दी और अपवित्र चीज़ उन को पीने के लिए दी जाए।



18. जिन लोगों ने अपने रब से कुफ्र किया उन के कर्मों की मिसाल ऐसी है जैसी राख, कि आँधी के दिन उसे हवा तेज़ी के साथ ले उड़े ²⁶। जो कुछ उन्होंने कमाया उस से कुछ भी उन को प्राप्त न हो सकेगा। यही है परले दर्जे की गुमराही ।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَى شَيْءٍ ذَلِكَ هُوَ الصَّلَاةُ الْبَعِيدُ ⁽¹⁸⁾

19. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम को मिटा दे और एक नई सृष्टि ले आए ²⁷।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ يَاشِئُكُمْ هِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ⁽¹⁹⁾

20. ऐसा करना अल्लाह के लिए कुछ भी दुश्वार नहीं।

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ⁽²⁰⁾

21. और (ऐसा होगा कि) अल्लाह के समक्ष सब उपस्थित होंगे। उस समय कमज़ोर लोग उन लोगों से जो बड़े बन कर रहे थे, कहेंगे हम तो तुम्हारे आज्ञाकारी थे। अब क्या तुम हम को अल्लाह के अज़ाब से बचाने के लिए कुछ कर सकते हो ? वे कहेंगे, अगर अल्लाह ने हम को राह दिखाई होती तो हम तुम को ज़रूर दिखाते। अब हमारे लिए एक सा है, चाहे चीख़ पुकार करें चाहे झेल लें। हमारे लिए बचने की कोई सूरत नहीं है ²⁸।

وَرَزَوُا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعْفُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّعْتَوُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ قَالُوا لَوْ هَدَنَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرٌ عَنَّا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَنِّهِ ⁽²¹⁾

22. और जब फैसला चुका दिया जाएगा तो शैतान बोलेगा, अल्लाह ने तुम से वादा किया था, सच्चा वादा, और मैं ने तुम से वादा किया था तो वादा ख़िलाफ़ी की ²⁹। मेरा तुम पर कोई ज़ोर न था, अलबत्ता मैं ने तुम को बुलाया, और तुम ने मेरा बुलावा कुबूल कर लिया ³⁰। हिलाज़ा मुझे मलामत न करो, अपने आप ही को मलामत करो, न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुँच सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँच सकते हो। इस से पहले तुम ने जो मुझे (ईश्वरत्व में) साज़ीदार ठहराया था तो मैं उस से बेज़ारी ज़ाहिर करता हूँ, ³¹ ज़ालिमों के तो लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَكُونُونَ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَوْ مَوْأً أَنْفُسُكُمْ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي إِنْ كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⁽²²⁾

26. अर्थात् कुफ्र सारे कर्मों को निराधार एवं मूल्यहीन बना देता है चाहे वे कर्म धार्मिक कर्मकाण्ड हों, दिखावटी नेकियाँ हों या कल्याण एवं लोक हित के काम। जिन लोगों ने कुफ्र की बुनियाद पर नेकी के काम अन्जाम दिये होंगे उन को कुफ्र की आग जलाकर राख कर देगी। इस लिए उन के सारे धार्मिक कारनामे क्रियामत के दिन राख का ढेर साबित होंगे जिस को क्रियामत की आँधी ले उड़ेगी।

27. अर्थात् जो व्यक्ति भी खुली आँखों से इस कायनात का निरीक्षण करेगा उसे साफ़ दिखाई देगा कि उस की सृष्टि और उस की व्यवस्था में उत्तम श्रेणी की नीति निहित पाई जाती है। कोई चीज़ भी औचित्यरहित नहीं है फिर मनुष्य की रचना निरुद्देश्य एवं औचित्यरहित कैसे हो सकती है जब कि वह इस महफ़िल का एक मेम्बर है। वास्तविकता यह है कि इन्सान को उस के सृष्टा ने एक ऊँचे मक़सद के तहत पैदा किया अतः उस को चाहिए कि वह अपने जीवन उद्देश्य को समझे और उस के अनुसार जीवन बिताए। अगर वह ऐसा नहीं करता। तो अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता। वह अपने ही को असफलता के हवाले करता है। अल्लाह तो इस बात पर पूर्ण रूप से समर्थ है कि पूरी इन्सानियत को धरती से मिटा दे और इस की जगह कोई नई सृष्टि ले आए। इन्सान को तो उस का कृतज्ञ होना चाहिए कि उस ने उसे यह अवसर प्रदान किया है कि दुनिया के परीक्षा स्थल से सलामती के साथ गुजर कर उस की अनन्त रहमत और कभी न मिटने वाली नेमतों का योग्य अधिकारी बन जाए।

28. यह उन लीडरों और पेशवाओं की बेबसी का चित्रण है जिन के पीछे सामान्य जन आँखें बन्द कर के चलते रहे और यह समझते रहे कि वे उन की सही रहनुमाई कर रहे हैं। क्रियामत के दिन दोनों को अपने अपने अपराध में यातनाओं की ओर धकेला जाएगा तो उन लीडरों और पेशवाओं से उन के पीछे चलने वाले अनुयायी यह विन्ती करेंगे कि हमारे लिए अज़ाब (यातनाओं) से छुटकारे की भी कोई सूरत निकाली जाए। मगर वे अपनी बेबसी को खुले तौर पर स्वीकार करेंगे। उस समय उन के अनुयायियों को इस बात का एहसास होगा कि दुनिया में उन के पीछे चल कर उन्होंने कैसी बड़ी ग़लती की है।

कुर्आन, इस से पहले कि लोग इस अन्जाम से दो चार हों उन्हें सावधान कर रहा है कि वे होश में आ जाएँ और गुमराह लीडरों और पेशवाओं की बातों में न आएं। रसूल की रहनुमाई को स्वीकार करें और अपने आप को उस राह पर डाल दें जो कुरआन ने खोली है।

29. अल्लाह की अदालत जब यह फैसला चुका देगी कि कौन इनाम का भागीदार है और कौन दण्ड का तो शैतान अपने तमाम अनुयायियों के सामने स्वीकार करेगा कि अल्लाह तआला ने आखिरत का तुम से जो वादा किया था वह बिलकुल सच्चा था और उसी के अनुसार आज सब कुछ सामने आ गया किन्तु मैं ने तुम्हें जिन जिन बातों का यक़ीन दिलाया था वे सब ग़लत और झूठ सिद्ध हुई। शैतान का यह मान लेना और सब के सामने स्वीकार कर लेना उस के अनुयायियों के लिए एक क्ररारा तमाचा होगा जिस से उन की निराशा तथा उन के अपमान में बृद्धि ही होगी।

ध्यान रहे कि शैतान के वादे वे विचार एवं खयालात हैं जो इन्सान के दिलों में वह डालता है, जैसे यह कि फ़लों और फ़लों को पुकारो तो वे तुम्हारी सहायता को पहुँचेंगे। ये और ये हस्तियाँ ख़ुदा के समक्ष तुम्हारी सिफ़ारिश करा लेंगी। जिन्दगी बस दुनिया की जिन्दगी है, मरने के बाद कोई जीवन नहीं अतः दुनिया में ख़ूब मज़े उड़ा लो। ये और इसी प्रकार की दूसरी बातें शैतान मन में डालता है। और जब कोई व्यक्ति इन बातों को स्वीकार कर लेता है तो वही उस की सोच उस की धारणा यहाँ तक कि जीवन सिद्धान्त बन जाता है। आज कल के दौर में शैतान ने मानव मस्तिष्क को प्रभावित करने के लिए आधुनिक तरीक़ा और नई शैली अपनायी है। वह कहता है “ख़ुदा को इन्सान ने पैदा किया है अन्यथा उस का कहीं कोई अस्तित्व नहीं।” धर्म एक स्नायविक रोग की मानसिकता की देन है। “जो हम नहीं जानते उस का क़ायल होना ग़लत है।” “मादा बिज़्जात है और जीवन एक जदलियाती मादीयत है” आदि।

30. शैतान को अल्लाह तआला ने यह शक्ति नहीं प्रदान की है कि वह मनुष्य को गुमराही स्वीकार करने और बुरी बातों पर अमल करने के लिए विवश कर दे। वह जो कुछ कर सकता है वह केवल यह है कि इन्सान को गुमराही की तरफ़ बुलाए और बुरी बातों के लिए प्रेरित करे, लालच उभारे आदि। इस लिए मनुष्य शैतान को इल्ज़ाम दे कर बरी नहीं हो सकता वह स्वयं अपने कर्मों का उत्तरदायी है।

31. शैतान के यह कहने का मतलब कि “तुम ने इस से पहले मुझे ईश्वरत्व में साझी ठहराया था” यह है कि दुनिया में तुम मेरा अनुपालन इस प्रकार करते रहे जिस तरह कि अल्लाह का अनुपालन किया जाता है। मेरे कहने से तुम ने तौहीद का इन्कार किया, ग़ैरुल्लाह (अर्थात् अल्लाह को छोड़ कर अन्य) को पूज्य ठहराया, रसूलों को झुठलाया, आखिरत को न माना, शरीअत का इन्कार करते रहे और अपने जीवन की बाग़ डोर मेरे हाथ में दे दी कि मैं अपनी इच्छानुसार तुम्हें चलाऊँ। इस तरह तुम ने मुझे ख़ुदा के पद पर आसीन कर दिया।

23. और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने ने नेक अमल किए वे ऐसे बागों में दाखिल किए जाएंगे जिन के निचे नहरें बह रही होंगी। उस में वे अपने रब के हुक्म से हमेशा रहेंगे, वहाँ उन की मुलाकात की दुआ सलाम (सलामती की बधाई) होगी ³²।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ يُحَيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۖ (۲۳)

24. क्या तुम ने ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ने किस प्रकार कलिमा तय्यिबा की मिसाल बयान फ़रमाई है। उस की मिसाल ऐसी है जैसे एक अच्छा वृक्ष जिस की जड़ जमी हुई और शाखाएँ आसमान में फैली हुई।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۚ (۲۴)

25. वह हर समय अपने रब के हुक्म से फल लाता है ³³ और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है ताकि वे होश में आएँ।

تَوَاتَىٰ أَكْطَاهَا كُلَّ جَنٍّ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۖ (۲۵)

26. और कलिमा ख़बीसा की मिसाल एक निकम्मे वृक्ष की सी है जो ज़मीन की सतह ही से उखाड़ फेंका जाता है। उस के लिए कोई जमाव नहीं ³⁴।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۖ (۲۶)

27. अल्लाह ईमान वालों को पक्की बात के द्वारा दुनिया की ज़िन्दगी में भी दृढ़ता प्रदान करता है और आखिरत में भी ³⁵। और ज़ालिम लोगों को अल्लाह गुमराह कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है करता है ³⁶।

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۖ (۲۷)

28. तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ने अल्लाह की नेमत को कुफ़र से बदल डाला और अपनी क़ौम को विनाश के घर में जा उतारा ³⁷?

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۖ (۲۸)

29. (अर्थात्) जहन्नम जिस में से वे प्रविष्ट होंगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَيَبْسُ الْقَرَارِ ۖ (۲۹)

30. और उन्होंने ने अल्लाह के प्रतिद्वन्द्वी ठहराए ³⁸ ताकि लोगों को उस के रास्ते से भटकाएँ। कहो मज़े कर लो। आखिर तुम्हें जाना दोज़ख ही में है।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۖ قُلْ تَسْعَوْنَ فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۖ (۳۰)

32. अर्थात् जन्नत में ईमान वालों का स्वागत सलामती की बधाई से होगा और हर ओर से उन के लिए सलामती की गूँज सुनाई देगी। वहाँ जब वे एक दूसरे से भेंट करेंगे तो उन के मिलने के आचार (आदाब) में सलाम का कलिमा शामिल होगा। इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जन्नत में ईमान वालों को कैसा सम्मानजनक जीवन प्राप्त होगा और वहाँ का माहौल कितना शान्तिमय होगा। इस के विपरीत दोज़खी लोग एक दूसरे को मलामत करेंगे और उन पर हर तरफ़ से फिटकार पड़ेगी।

33. कलिमा तय्यिबा का अर्थ अच्छी और पाकीजा बात के हैं। इस से अभिप्रेत तौहीद का कलिमा है जो इस्लामी अक्रीदे की बुनियाद और ईमान की आधार शिला है। इस की मिसाल एक अच्छे वृक्ष से दी गई है जिस की जड़ ज़मीन में जमी हुई और शाखाएँ आसमान में फैली हुई हैं। यही विशेषता कलिमा तौहीद की है कि उस की जड़ मानव स्वभाव के अन्दर जमी हुई हैं और उस की शाखाएँ आसमान में फैली हुई हैं। अर्थात् तौहीद के कलिमे की बुनियाद पर कर्मों का एक तनावर वृक्ष अस्तित्व में आता है और अच्छे कर्म होने के कारण बुलन्दी की तरफ़ चढ़ता है और ख़ूब फ़लता फूलता है। फिर यह मिसाली वृक्ष जिस तरह हर समय फल देता है उसी तरह कलिमा तौहीद का लाभ एवं प्रभाव हर समय जारी रहता है और आखिरत में उस के फल एवं बरकतें हमेशा हमेशा की नेमतों के रूप में सामने आएँगी।

34. कलिमा ख़बीसा का अर्थ गन्दी, बुरी और अपवित्र बात के हैं। मुराद बातिल (असत्य) का कलिमा है, चाहे वह शिर्क (बहुदेववाद) हो, अनीश्वरवाद हो या कुफ़्र। इस की मिसाल ऐसी है, जैसा निकम्मा वृक्ष अर्थात् झाड़ झंकाड़, जिस की जड़ें ज़मीन में जमी हुई नहीं होती। इसी प्रकार असत्य के कलिमे की जड़ मानव स्वभाव में जमी हुई नहीं

होती इस लिए इस को आसानी से उखाड़ फेंका जा सकता है। यह एक लाभहीन बल्कि हानिकारक कलिमा है जो मनुष्य को अच्छे कर्मों से वन्धित कर देता है और आखिरत में नामुरादी के सिवा कुछ हासिल न होगा।

35. पक्की बात से मुराद कलिमा तौहीद है और आयत का मतलब यह है कि जो लोग कलिमा तौहीद को स्वीकार कर लेते हैं अर्थात् ईमान लाते हैं उन को एक दृढ़ एवं मज़बूत आधारशिला मिल जाती है। इस आधारशिला के चलते उनकी धारण एवं आस्था में मज़बूती उन के विचारों और उन के कर्मों में सुदृढ़ता एवं स्थायित्व पैदा हो जाता है। इस प्रकार संघर्षमय जीवन में अल्लाह तआला उन्हें सुदृढ़ता एवं स्थायित्व प्रदान करता है और जब वे क़ब्र में पहुँचते हैं तो वहाँ भी उन्हें ढारस होती है।

हदीस में आता है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुसलमान से जब क़ब्र में सवाल किया जाता है तो वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। यही बात है जिस के बारे में इर्शाद हुआ है **يُشَبِّهُ اللَّهُ... إلخ** “अल्लाह ईमान वालों को पक्की बात द्वारा दुनिया की जिन्दगी में भी दृढ़ता प्रदान करता है और आखिरत में भी।” (बुख़ारी किताबुत्तप्सीर)

इसी प्रकार क्रियामत के दिन उन्हें विचारों की मज़बूती प्राप्त होगी जिस की बदौलत वे सदा सर्वदा की कामयाबी से हमकिनार होंगे।

36. स्पष्ट रहे कि अल्लाह का चाहना उस की नीति के अनुसार और उस के तमाम फैसले तत्वपूर्ण होते हैं।

37. इशारा कुरैश की तरफ़ है जिन्हें अरब क्रौम का नेतृत्व प्राप्त था और जिन्होंने बहुदेववादी तौर तरीक़े प्रचलित कर के क्रौम को तबाही के गढ़े में ढकेल दिया।

38. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रः नोट २९ और २००



31. मेरे बन्दों में से जो ईमान लाए हैं, कह दो नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से खुले और छिपे खर्च करें³⁹ इस से पहले कि वह दिन आए जिस में न ख़ारीदो-फ़रोख्त (क्रय-विक्रय) होगी और न दोस्ती काम आएगी।

قُلْ لِّلْعِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَاسَ فِيهِ وَلَا خِلَافٌ ۝۳۱

32. अल्लाह ही ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और ऊपर से पानी बरसाया और इस के द्वारा तुम्हारी आजीविका के लिए फल पैदा किए और तुम्हारे लिए नौका को वशीभूत किया ताकि उस के हुक्म से समुद्र में चले और तुम्हारे लिए दरया वशीभूत कर दिया⁴⁰।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۝۳۲

33. और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को वशीभूत कर दिया कि एक नियम पर चल रहे हैं तथा रात और दिन को भी वशवर्ती कर दिया⁴¹।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآبِّينَ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝۳۳

34. उस ने तुम्हारी हर माँग पूरी कर दी⁴²। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते⁴³। वास्तविकता यह है कि मनुष्य बड़ा ही नाइन्साफ़ और नाशुक्रा है।⁴⁴

وَاللَّكُمْ مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۝۳۴

35. और (याद करो) जब इब्राहीम ने दुआ की थी कि ऐ मेरे रब ! इस शहर को अमन वाला बना।⁴⁵ और मुझे और मेरी औलाद को इस बात से बचा कि बुतों की पूजा करने लगें⁴⁶।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ أَمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ۝۳۵

36. ऐ मेरे रब ! इन बुतों ने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है⁴⁷ तो जो मेरी पैरवी (अनुसरण) करे वह मेरा है और जो मेरी नाफ़रमानी करे तो तू क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है⁴⁸।

رَبِّ إِنَّهُمْ أَضَلُّنَا كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّيْ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝۳۶

37. ऐ हमारे रब ! मैं ने अपनी औलाद में से कुछ को⁴⁹ एक ऐसी घाटी में जहाँ खेती नहीं होती⁵⁰ तेरे प्रतिष्ठित घर के पास ला बसाया है⁵¹। ऐ हमारे रब ! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें⁵² अतः तू लोगों के दिलों को इन की ओर आकृष्ट करदे⁵³। और फ़लों से इन को रिज़क़ (आजीविका) पहुँचा⁵⁴ ताकि वे कृतज्ञ बनें ।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۝۳۷

39. मक्का में जब कि शरीअत के प्रारंभिक आदेश ही नाज़िल हुए थे, नमाज़ का आयोजन करने और अल्लाह की खातिर खर्च करने का आदेश ताकीद के साथ दिया गया जिस से इन दोनों चीज़ों का महत्व स्पष्ट होता है। एवं इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि एक मुसलमान पर ज़कात आयद होती हो या न होती हो उसे अल्लाह की खातिर खर्च करते रहना चाहिए। और यह खर्च दोनों तरह से अभीष्ट है, छिपे तौर से भी और खुले तौर से भी। छिपा कर जो खर्च अल्लाह की खातिर किया जाता है वह दिखावा और नुमाइश से پاک होता है। और खुले तौर पर खर्च करने का लाभ यह है कि इस से दूसरों को अल्लाह की खातिर खर्च करने का प्रोत्साहन मिलता है। लेकिन इस सूरत में भी इस को दिखावे और नुमाइश से पाक रखना आवश्यक है।

40. यह अल्लाह की रूबूबियत (परवरदिगारी) पर तर्क है कि तुम्हारी परवरिश का यह सारा काम उसी ने कर रखा है तो तुम ने दूसरों को खुदा किस तरह बना लिया। परवरिश की इस पूरी व्यवस्था में क्या किसी का कोई हिस्सा है। अगर नहीं और सच्चाई यह है कि किसी का कोई हिस्सा नहीं है तो फिर वे खुदा कहाँ से हुए? और पूजा एवं उपासना जो सरासर अल्लाह का अधिकार है उस में दूसरों को साझीदार बनाने का क्या अर्थ है?

41. वशीभूत करने का मतलब यह नहीं है कि ये चीज़ें मनुष्य की अनुपालक बना दी गई हैं, जैसा कि लोग आम तौर से समझते हैं क्योंकि दिन और रात इन्सान के अनुपालक में तो किसी भी हाल में नहीं हैं। बल्कि वशीभूत करने का अर्थ यह है कि ये चीज़ें इन्सान की सेवा में लगा दी गई हैं। और इन के द्वारा मनुष्य के लाभ और हित का सामान कर दिया गया है।

42. अर्थात् मनुष्य को जो भौतिक आवश्यकताएँ थीं वह सब पूरी कर दीं। मिसाल के तौर पर साँस लेने के लिए हवा, प्यास बुझाने के लिए पानी, भूख मिटाने के लिए आहार और काम इच्छा की पूर्ति के लिए जोड़े की आवश्यकता थी। इन तमाम आवश्यकताओं को जो मनुष्य की प्राकृतिक एवं स्वाभाविक माँगें हैं पूरा करने का प्रबन्ध उस के प्रभु ने कर दिया। इसी प्रकार उस की प्रकृति तथा स्वभाव की एक महत्वपूर्ण माँग हिदायत है। और इस को पूरा करने का प्रबन्ध भी उस के पैदा करने वाले स्वामी ने कर दिया है।

43. मनुष्य अगर ग़ौर करे तो वह इस वास्तविकता को स्वीकार किए बिना नहीं रहेगा कि उस के पैदा करने वाले ने उस को अनगिनत नेमतों से अलंकृत किया है। और उस प्रभु के उस पर अथाह उपकार है। यदि वह खाने के एक निवाले ही पर ग़ौर करे तो कृतज्ञता का भाव उस के अन्दर उभरने लगे कि

उस के प्रभु ने इस निवाले को तैयार करने के लिए कैसे कैसे साधन किये। आसमान और ज़मीन, बारिश, हवाओं और सूरज की गर्मी आदि को उस ने किस प्रकार अनुकूल बनाया कि बीज कई चरणों से गुजर कर ग़ल्ला बना और ग़ल्ला विभिन्न चरणों से गुजर कर निवाला बन गया, जिस को अब वह मज़े के साथ खा रहा है। मनुष्य के लिए जब अपने बालों को या आसमान के तारों को गिनना संभव नहीं है तो वह अल्लाह की नेमतों को क्यों और कैसे गिन सकता है।

44. यह साधारण मनुष्य का हाल बयान हुआ है कि वह न अपने रब का हक़ अदा करने के लिए तैयार होता है न उस की नेमतों का शुक्र अदा करने के लिए।

45. इस शहर से मुराद मक्का है और इस को शान्ति, निश्चिन्तिता अर्थात् अमन वाला शहर बनाने की दुआ इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस लिए की थी ताकि इस की यह विशिष्ट प्रमुखता लोगों के ध्यान को इस बात की ओर आकृष्ट करती रहे कि इस की यह विशेषता उस के एकेश्वरवाद का केन्द्र होने के कारण है और इस का तक्राज़ा यह है कि इस को शिर्क और बुत परस्ती से बिलकुल पाक रखा जाए। इस दुआ को अल्लाह तआला ने कुबूल फ़रमाया और मक्का को हरम (पवित्र एवं प्रतिष्ठित स्थल) ठहरा कर वहाँ लड़ाई की हमेशा के लिए मनाही कर दी।

46. उस ज़माने में बुत परस्ती की बुराई आम थी और माहौल के दबाव के तहत लोग इस तरह की बुराईयों को सरलता पूर्वक शिकार हो जाते। इस लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने लिए और अपनी औलाद के लिए इस से बचने की दुआ की क्योंकि अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर आदमी इस फ़ितने एवं इस बुराई से सुरक्षित नहीं रह सकता।

47. अर्थात् यह बुत अधिकांश लोगों की गुमराही का कारण बने हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह बयान एक ऐतिहासिक सच्चाई है। अतः देखिए तो दुनिया की बड़ी बड़ी क्रौमें बुत परस्ती में लिप्त रही हैं और नूह की क्रौम से ले कर आज तक यह क्रम निरंतर जारी है। आधुनिक युग के मानव ने यद्यपि ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधिक उन्नति की है। परन्तु बड़ी बड़ी सभ्य क्रौमें बुत परस्ती के मामले में उस जिहालत एवं अज्ञानता में लिप्त हैं जिस में इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने की क्रौमें लिप्त थीं। बुत परस्ती का सरासर बुद्धि एवं स्वभाव के विरुद्ध होना बिलकुल स्पष्ट है। किन्तु उस का जादू क्रौमों पर ऐसा चला कि वे इस से चिमट कर रह गई और हमारे देश में तो ऐसे दृश्य भी देखने में आते हैं कि बुत परस्त पहले अपने हाथ से अपने खुदाओं का ढाँचा बनाते हैं फिर उन की बारात निकाल कर अपने हाथों उन को दरया में बहा देते हैं।

यह बुद्धि का दीवालिआपन और गुमराही नहीं तो और क्या है?

48. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी नाफरमानी करने वालों के मामले को अल्लाह के सुपुर्द करते हुए उस की उन दो विशेषताओं एवं गुणों का हवाला दिया जिस से अभिप्रेत इस बात का इजहार है कि तेरी तरफ से क्षमा, दरगुजर और दया भाव में कमी नहीं हो सकती अलबत्ता अगर बन्दे इस के योग्य न निकलें तो और बात है।

49. अर्थात् इस्माईल को।

50. मुराद मक्का की सूखी ज़मीन है जो पहाड़ों के अंचल में स्थित है। बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के लिए किसी हरे भरे भू-भाग के बजाय इस वीरान और रेगिस्तानी ज़मीन का चुनाव इस लिए किया गया ताकि लोगों के लिए आकर्षण का कारण सांसारिक ऐश्वर्य एवं वैभव नहीं बल्कि दीन की दौलत बने और एक भावपूर्ण माहौल उन्हें मयस्सर आ जाए जहाँ ईमान की परवरिश और रूह (आत्मा) के फलने फूलने का भरपूर सामान हो।

51. प्रतिष्ठित घर से मुराद खाना-ए-काबा है जो अति पावन तथा अत्याधिक आदर एवं सम्मान योग्य है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद में से इस्माईल अलैहिस्सलाम को मक्का में बसाया और इस्हाक़ अलैहिस्सलाम को फ़िलस्तीन में। इस्माईल अलैहिस्सलाम से जो नस्ल चली, वह बनी इस्माईल कहलाई। कुरैश उन्हीं की नस्ल से हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिस् वसल्लम उन ही में आए। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस दुआ से एक बात तो यह स्पष्ट हुई कि यह दुआ उन्होंने ने खाना-ए-काबा के निर्माण के बाद की थी और दूसरे यह कि उन्होंने ने अपने बेटे इस्माईल को उस समय मक्के में बसाया जब कि खाना-ए-काबा का निर्माण पूरा हो चुका था। कुर्आन ने दूसरी जगह स्पष्ट किया है कि खाना-ए-काबा के निर्माण में इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ इस्माईल अलैहिस्सलाम भी शरीक थे। रह गए वे उल्लेख और रिवायतें जिन में जब कि वह अभी दूध पीते बच्चे थे उन की माँ हाजरा के साथ मक्का के रेगिस्तान में तन्हा छोड़ कर जाने का बड़ा विचित्र क्रिस्सा बयान हुआ है तो ये उल्लेख एवं रिवायतें न कुर्आन के इस बयान से मेल खाती हैं और न ऐसा होना समझ में आता है। इन उल्लेखों अथवा रिवायतों को नबी सल्लल्लाहु अलैहिस् वसल्लम से सम्बन्ध बताना सही नहीं जैसा कि अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी ने अर्जुलकुर्आन

में लिखा है:-

“ इस से (अर्थात् सूरह इब्राहीम की आयत ३९ से) सिद्ध होता है कि इस्माईल के मक्का आने के समय इस्हाक़ पैदा हो चुके थे। तौरात से सिद्ध होता है कि इस्माईल इस्हाक़ से तेरह बरस बड़े थे। बुखारी की किताबुररूया और किताबुल अम्बिया में हज़रत इब्ने अब्बास की जो हदीस इस्माईल के दूध पीते समय से सम्बन्धित है वह मरफूअ नहीं है। अर्थात् उन हदीसों में से नहीं है जिस का सिलसिला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक मिलता है (सिवाय कुछ ख़ास शब्दों के) इस लिए वह हज़रत इब्ने अब्बास की इस्त्राईलियात में से है और इस का सबूत आज भी मौजूद है। बुखारी में इस से सम्बन्धित जो तवील हदीस है वह सिवाय जरहम और मक्का के वर्णन के मदराश और तालमूद में जूँ की तूँ शब्द शब्द दर्ज है।” (अर्जुलकुर्आन जिल्द २ पृष्ठ ४४०)

और अल्लामा इब्ने कसीर ने इस लंबी हदीस को जिस में इस्माईल को नन्ही उमर में मक्का में छोड़ने का वर्णन है नक़ल कर के लिखा है:-

“यह हदीस इब्ने अब्बास का कलाम है। अलबत्ता इस का एक हिस्सा मरफूअ है (अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उद्धृत है।) और इस के एक हिस्से में ग़राबत (विचित्र बातें) हैं और ऐसा मालूम होता है कि इब्ने अब्बास ने इस को इस्त्राईलियात से लिया है और उस में यह भी बयान हुआ है कि उस समय इस्माईल दूध पीते बच्चे थे।” (अलबिदाय: वन्निहाय: जिल्द २ पृष्ठ १५६)

52. नमाज़ अल्लाह के घर के निर्माण का सर्वप्रथम उद्देश्य है और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे इस्माईल को यहाँ इस लिए बसाया था कि इन से जो नस्ल चले वह अल्लाह के घर की छत्र छाया में रह कर नमाज़ क़ायम करें। लेकिन कुरैश ने जो उन की नस्ल से हैं, नमाज़ की जगह बुत परस्ती अपना ली। इब्राहीम के तरीक़े से यह कितनी बड़ी विमुखता है जो कुरैश ने की।

53. और अल्लाह तआला ने लोगों के दिलों को उन की तरफ़ इस तरह आकृष्ट कर दिया कि बनी इस्माईल पूरे अरब का केन्द्र बन गए थे।

54. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट १४६ में गुजर चुकी।

ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी औलाद को भी। ऐ हमारे रब ! मेरी दुआ कुबूल फ़रमा । ऐ हमारे रब ! मुझे और मेरे पिता को और ईमान वालों को उस दिन क्षमा कर दे जिस दिन हिसाब क़ायम होगा। (अल-कुर्आन)

38. ऐ हमारे रब ! तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज़ भी छिपी हुई नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में ⁵⁵।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ③

39. शुक्र है अल्लाह का जिस ने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ जैसी सन्तान प्रदान की ⁵⁶ निश्चय ही मेरा रब दुआएँ सुनने वाला है।

أَحْمَدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ④

40. ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी औलाद को भी। ऐ हमारे रब ! मेरी दुआ कुबूल फ़रमा ⁵⁷।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ⑤
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ⑥

41. ऐ हमारे रब ! मुझे और मेरे पिता को और ईमान वालों को उस दिन क्षमा कर दे जिस दिन हिसाब क़ायम होगा। ⁵⁸

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ⑦

42. ये ज़ालिम जो कुछ कर रहे हैं उस से तुम अल्लाह को ग़ाफ़िल न समझो ⁵⁹। वह तो उन को उस दिन तक के लिए मोहलत दे रहा है जब आँखें फटी की फटी रह जाएंगी ⁶⁰।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ⑧
إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ⑨

43. सर उठाए हुए भाग रहे होंगे, ⁶¹ निगाहें हैं कि लौट कर आने वाली नहीं ⁶² और दिल है कि उड़े जाते हैं ⁶³।

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ
لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفِدتْهُمْ هَوَاءُ ⑩

44. लोगों को उस दिन से ख़बरदार कर दो जब कि अज़ाब उन को आ लेगा ⁶⁴। उस समय ज़ालिम कहेंगे, ऐ हमारे रब ! हमें थोड़ी सी मुह्त के लिए मोहलत दे दे, हम तेरी दअवत स्वीकार करेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे। क्या तुम इस से पहले क़समें खा खा कर नहीं कहते थे कि हमें (दुनिया से) मुन्तक़िल होना नहीं है ⁶⁵।

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ تَحْبُبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِنْ قَبْلِ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ⑪

45. और तुम उन लोगों की बस्तियों में बस गए थे जिन्होंने ने अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया था ⁶⁶। और तुम पर स्पष्ट हुआ था कि हम ने उन के साथ क्या मामला किया था। और तुम्हारे लिए हम ने मिसालें भी बयान कर दी थीं ⁶⁷।

وَسَأَلْتُمْ فِي مَسْكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمْ الْأَمْثَالَ ⑫

55. अर्थात् अल्लाह को हमारे दिल का हाल भी मालूम है और उस से ज़मीन और आसमान की कोई वस्तु भी छिपी नहीं है।

56. स्पष्ट हुआ कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह दुआ की थी तो उस समय उन के दूसरे बेटे हज़रत इस्हाक़ की पैदाइश हो चुकी थी। बाइबिल का बयान है कि हज़रत इस्माईल की पैदाइश के समय इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आयु ८६ वर्ष और हज़रत इस्हाक़ की पैदाइश के समय १०० वर्ष थी। अर्थात् हज़रत इस्हाक़ हज़रत इस्माईल के १४ वर्ष बाद पैदा हुए और दोनों की पैदाइश कनान (फ़िलिस्तीन) में हुई थी।

“और जब हाज़रा ने अब्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राम छियासी वर्ष का था।” (उत्पत्ति १६:१६)

“और अब्राम का पुत्र इस्हाक़ उत्पन्न हुआ तब अब्राम १०० वर्ष का था।” (उत्पत्ति २१:५)

मतलब यह है कि ख़ाना-ए-काबा का निर्माण और इस्माईल को मक्का में बसाने की घटना तब की है जब कि इस्माईल की आयु १४ वर्ष से अधिक थी।

57. इस से मालूम हुआ कि इब्राहीम की शरीअत में भी नमाज़ को प्राथमिकता एवं प्रमुखता प्राप्त थी और यह दीन का वह स्तंभ है जिस को क़ायम करने के लिए एक मोमिन अल्लाह से तौफ़िक़ की कामना करे तथा अपनी औलाद के लिए भी प्रार्थना करे कि वह नमाज़ क़ायम करने वाले बन जाएं

58. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप के लिए जो क़ामा की प्रार्थना की थी उस की व्याख्या सूरह तौबा नोट २१० और २११ में गुज़र चुकी। इस अवसर पर उस नोट को ध्यान में रखें।

“जिस दिन हिसाब क़ायम होगा” से मुराद क़ियामत का दिन है जब हर व्यक्ति की अल्लाह के समक्ष पेशी होगी और उसे अपने व्यवहारिक जीवन का हिसाब देना होगा। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस महत्वपूर्ण दुआ से बाइबिल के पृष्ठ खाली हैं मगर कुर्आन ने इस को सुरक्षित कर लिया है। इस से आपत्ति करने वालों के इस आरोप का आप से आप खण्डन होता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बाइबिल से बातें लेकर कहीं।

59. संबोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है परन्तु अभिप्रेत जनसाधारण को सावधान करना है कि हक़ की मज़लूमियत, सत्य का तिरस्कार तथा असत्य की लोक प्रियता एवं संप्रभुत्व देख कर कोई व्यक्ति इस भ्रम में न पड़े कि यह दुनिया अंधेर नगरी है और खुदा इस बात से बेख़बर है कि इस दुनिया में क्या हो रहा है। सच्चाई यह है कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है उस से खुदा भली भाँत परिचित है किन्तु चूँकि उस ने हिसाब और कर्मानुसार ईनाम और दण्ड के लिए क़ियामत का

दिन सुनिश्चित कर रखा है इस लिए वह लोगों को मोहलत दे रहा है कि वे अच्छा या बुरा जैसा रवैया चाहें अपनाएँ। यह अंधेर नगरी नहीं बल्कि तत्त्वपूर्ण योजना है।

60. अर्थात् क़ियामत के दिन ऐसे भयावह दृश्य सामने आएँगे कि असत्य प्रिय एवं बुरे लोगों की आँखें फटी की फटी रह जाएँगी। वे क़ियामत पर विश्वास नहीं रखते थे इस लिए ये दृश्य देख कर अचंभित होंगे कि हम किस दुनिया में पहुँच गए।

61. क़ब्र से उठने के बाद वे अपने स्थान (जहाँ उन की पेशी होनी है) की तरफ़ भागेंगे और खुदा ही बेहतर जानता है कि इस के लिए उन को कितनी लंबी दूरी तय करनी पड़ेगी।

62. अर्थात् आतंक और भय के कारण वे टकटकी बाँध कर देखेंगे।

63. दुःख और भय से उन का बुरा हाल हो रहा होगा और उन के दिलों की मनोदशा यह होगी कि गोया उड़े जा रहे हैं। सच पूछिए तो दिलों को दृढ़ता प्रदान करने वाली चीज़ ईमान है और जब उन के दिल ईमान से खाली रहे तो क़ियामत के दिन उन का चुधियाना इस का स्वाभाविक परिणाम होगा।

64. क़ियामत के प्रकोप से लोगों को सचेत करने का यह ताकीदी आदेश इस बात का द्योतक है कि कुर्आनी दअवत का यह अति महत्वपूर्ण मर्म है जिसे पूरी तरह खोल कर और अत्यंत प्रभावशाली ढंग से लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

वर्तमान बेपरवाह दुनिया को झंझोड़ना और क़ियामत के अज़ाब से उन्हें सावधान करना कुर्आन के अनुपालकों का अति महत्वपूर्ण दायित्व भी है और समय की सर्वाधिक बड़ी माँग भी।

65. अर्थात् पूरे विश्वास एवं दृढ़ता के साथ तुम यह कहते थे कि दुनिया से निकल कर तुम को कहीं जाना ही नहीं है। ज़िन्दगी बस इस दुनिया ही की ज़िन्दगी है और आखिरत का कहीं कोई अस्तित्व ही नहीं है। अब तुम्हें अपनी ख़ाम खयाली का एहसास हो गया, जब कि परीक्षा का समय गुज़र चुका है यह समय तो परिणामों के सामने आने का है।

66. मुराद अरब देश है जिस के विभिन्न क्षेत्रों में विनष्ट हुई क़ौमों के आसार एवं चिन्ह पाए जाते हैं, जैसे हिज़ की घाटी में समूद की क़ौम के चिन्ह आदि।

67. अर्थात् तुम्हारी इब्रत और नसीहत के लिए ऐतिहासिक घटनाएँ भी प्रस्तुत की गई थीं और तरह तरह के उदाहरण भी प्रस्तुत किये गए थे। अतः इस सूरह में कलिमा तय्यिबा और कलिमा खबीसा के उदाहरण गुज़र चुके किन्तु तुम ने किसी बात से भी कोई सबक न लिया।

46. और उन्होंने ने तरह तरह की चालें चलीं। और अल्लाह के पास उन की हर चाल का जवाब था, यद्यपि उन की चालें ऐसी थीं कि पहाड़ टल जाएं⁶⁸।

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ
وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٣٩﴾

47. अतः तुम यह न समझो कि अल्लाह ने अपने रसूलों से जो वादा किया है उस के विरुद्ध करेगा⁶⁹ अल्लाह प्रभुत्वशाली है और दण्ड देने वाला है।⁷⁰

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ خَائِفًا
وَعْدِهِ رَسُولَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٤٠﴾

48. वह दिन कि जब यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी⁷¹ और सब अल्लाह वाहिदो-क्रहहार (ज़बरदस्त) के समक्ष उपस्थित होंगे⁷²।

يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ
وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤١﴾

49. और तुम उस दिन अपराधियों को देखोगे कि जंजीरों में जकड़े हुए हैं।

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٢﴾

50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे और चेहरों पर आग छाई हुई होगी।

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرَانٍ وَتَغْشَى وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٤٣﴾

51. यह इस लिए होगा कि अल्लाह हर व्यक्ति को उस की कमाई का बदला दे। निस्संदेह वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤٤﴾

52. यह एक संदेश है तमाम इंसानों के लिए⁷³ और इस लिए भेजा गया है ताकि इस के द्वारा लोगों को खबरदार कर दिया जाए और वे जान लें कि वही बस एक खुदा है और जो सूझ बूझ रखते हैं वे याददेहानी (नसीहत) हासिल करें।⁷⁴

هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ الْوَاحِدُ
وَلِيَدَّكُرُوا الْأَلْبَابَ ﴿٤٥﴾

68. अर्थात् उन क्रौमों ने रसूलों के विरुद्ध बहुत सी चालें चली थीं किन्तु अल्लाह ने उन की हर चाल को नाकाम बना दिया था। तो क्या अब तुम (ऐ कुरैश) यह आशा रखते हो कि हमारे रसूल के खिलाफ़ तुम्हारी चालें और साजिशें कामयाब होंगी ?

69. संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और अभिप्रेत आप को और आप के अनुयायियों को संतोष एवं ढारस दिलाना है कि वे विरोधियों की चालों से चिन्तित एवं भयभीत न हों। जिस तरह अल्लाह इस से पहले अपने रसूलों की सहायता करता रहा है उसी तरह वह अपने इस रसूल की भी सहायता करेगा। संभव नहीं है कि अल्लाह का वादा पूरा न हो।

70. अल्लाह ग़ालिब अर्थात् प्रभुत्वशाली है इस लिए सब उस के नियंत्रण में हैं और वह दण्ड देने वाला है। इस लिए वह उन ज़ालिमों को जो उस के रसूल का विरोध करते और उस के विरुद्ध चालें चलते हैं, निश्चित रूप से दण्ड देगा।

71. क्रियामत के दिन ज़मीन और आसमान में अल्लाह ऐसे परिवर्तन करेगा कि वह एक नई आकृति और नई व्यवस्था के साथ अस्तित्व में आ जाएंगे।

हदीस में हश्र की ज़मीन की आकृति इस तरह बयान की गई है:-

يحشر الناس يوم القيامة على ارض بيضاء عفراء
كقرصه النقي ليس فيهما معلم لاحد - (بخارى كتاب الرقاق)

“क्रियामत के दिन लोगों को सफ़ेद सुखीमाइल ज़मीन पर जमा किया जाएगा जो मैदे की रोटी की टिकिया की तरह होगी। उस पर किसी मकान आदि का निशान न होगा।” (बुखारी किताबुर्रिकाक़)

पहले जब भौतिक तत्वों में बहुत से परिवर्तन प्रकट होते रहे, यहाँ तक कि उस ने वर्तमान धरातल का रूप धार लिया तो आगे इस की बनावट में परिवर्तन का होना कदापि असंभव नहीं है। और इस का सृष्टा निश्चय ही इस पर समर्थ है कि इस के रचना तत्वों और इस के भौतिक नियम को बदल दे।

अर्थात् यह कि क्रियामत के दिन आज की दुनिया एक नई दुनिया से बदल जाएगी जिस के समय वा स्थान बिलकुल भिन्न होंगे और उस समय लोगों को अल्लाह की कुदरत का सही अन्दाज़ा हो जाएगा और वे जान लेंगे कि अल्लाह उन की दुनिया को नई दुनिया से बदल देने पर पूरी तरह समर्थ थी।

72. क्रियामत के दिन मनुष्य, मनुष्य की ही हैसियत से उठेगा अर्थात् शरीर और आत्मा के साथ। और सारे मनुष्य चाहे वह राजा हों या रंक, पुरुष हों या स्त्री, साधारण आदमी हों या प्रमुख व्यक्ति सब की अल्लाह के समक्ष पेशी होगी ताकि वे दुनिया में जो कुछ करते रहे हैं उस की जवाब देही करें और अपने कर्म के अनुसार फल (ईनाम का दण्ड) पायें।

यह है कुर्आन द्वारा प्रस्तुत की गई आखिरत की धारणा जो बुद्धि और न्याय के तराजू में पूरी उतरती है और इस के विपरीत भारतीय बहुदेववादी आवागमन के सिद्धान्त में आस्था जताते हैं जिस में आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में, कभी इन्सान में और कभी जानवरों में परिवर्तित होती रहती है और अपने स्वामी, अपने सृष्टा एवं प्रभु के समक्ष उपस्थिति की नौबत आती ही नहीं है। खुदा के समक्ष उपस्थिति न होने की यह धारणा बुद्धि एवं न्याय के सरासर विरुद्ध और कुर्आन के अनुसार बिलकुल ग़लत है।

73. अर्थात् कुर्आन अल्लाह का पैग़ाम है और यह पैग़ाम अरबवासियों के लिए विशिष्ट नहीं बल्कि दुनिया की तमाम क्रौमों और तमाम इन्सानों के लिए है।

74. यह है कुर्आन का असल मिशन, पहली बात खुदा और आखिरत से बेपरवाह लोगों को जगाना और उन्हें इस के परिणाम से आगाह करना।

दूसरी बात तौहीद अर्थात् इस वास्तविकता से लोगों को परिचित कराना कि अल्लाह के सिवा न किसी खुदा एवं पूज्य का अस्तित्व है और न उस के सिवा कोई इबादत के लायक है।

तीसरी बात जो बुद्धि से काम लेने वाले हैं उन के लिए याददेहानी तथा नसीहत ताकि वे दुनिया में एक दायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करें।



सूरह अल हिज्र

१५.सूरह अल हिज्र

नाम: आयत ८० से ८४ में हिज्र वालों का वर्णन हुआ है जो रसूलों को झुठलाने के कारण विनष्ट कर दिये गए थे। यह समूह की क्रौम थी जिस का केन्द्रिय स्थल हिज्र था जो मदीना और तबूक के मध्य स्थित है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल हिज्र है।

नाज़िल होने का समय: यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के दरम्यानी दौर में नाज़िल हुई होगी यह सूरह इब्राहीम और सूरह हूद से पहले का अवतरण है।

केन्द्रीय विषय: रिसालत और वह्य से सम्बन्धित आशंकाओं एवं संदेहों को दूर करना तथा झुठलाने वालों को उस के अन्जाम से सचेत करना।

कलाम की तरतीब: आयत १ में भूमिका के तौर पर कुआन की खास शान बयान हुई है।

आयत २ से १५ रिसालत का इन्कार करने वालों की आशंकाओं, संदेहों एवं आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

आयत १६ से २५ में कुदरत के अजायब एवं चमत्कारों की और ध्यानाकर्षित कराया गया है जिस पर गौर करने से वह्य रिसालत और हश्र के बारे में गिनाये जाने वाले सारे संदेहों की समाप्ति हो जाती है।

आयत २६ से ४४ में इब्लीस की गुमराही की वह घटना प्रस्तुत की गई है जो आदम की पैदाइश के फौरन

बाद घटी थी। इस से यस स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि वह शैतान है जो मनुष्यों को गुमराह करने पर तुला है और बहुतेरे लोग उस के चक्कर में फँसते जा रहे हैं। वह वह्य और रिसालत के बारे में लोगों के दिलों में संदेह एवं आशंकाएँ उत्पन्न कर के उन को सत्य मार्ग से दूर रखना चाहता है। परिणाम यह कि वह और उस के इशारों पर चलने वाले सब जहन्नम में पहुँच कर रहेंगे।

आयत ४५ से ४८ में उन लोगों के बेहतरीन अन्जाम का वर्णन हुआ है जो शैतान की बातों में नहीं आए बल्कि अपने रब से डरते रहे और शिर्क और उस की नाफरमानी से दामन बचाए रखा।

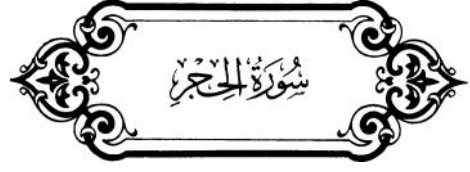
आयत ४९ से ८४ में नबियों के इतिहास की कुछ घटनाएँ प्रस्तुत की गई हैं जो इस बात पर तर्क एवं साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं कि अल्लाह के नेक बन्दों पर तो उस की रहमतें नाज़िल होती हैं किन्तु उस के विद्रोही बन्दों पर उस के अज़ाब का कोड़ा बरसता है।

आयत ८५ से ९९ उपसंहार है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सत्य के अनुयायियों के लिए तसल्ली का सामान भी है और यह हिदायत भी कि जो लोग दुनियापरस्ती में लीन हैं उन की भौतिक पूँजी को ईर्ष्या की दृष्टि से न देखें बल्कि उस महान दौलत की क़द्र करें जो कुआन के रूप में उन्हें मिली हुई है।



१५. सूरह अल् हिज्र

आयतें: 99



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम रा ¹ ये आयतें हैं अल-किताब ² और रौशन कुर्आन की। ³ ① اَلرَّحْمٰنُ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ
2. वह समय आएगा जब ये काफ़िर तमन्ना करेंगे कि काश वे मुस्लिम होते ⁴ ! ② رَبِّمَا يَوْدُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ
3. इन्हें छोड़ दो, कि खाएँ पियें, मज़े कर लें और (झूठी) आशाएँ इन्हें ग़फ़लत में डाले रखे। बहुत जल्द इन्हें मालूम हो जाएगा ⁵। ③ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَسْبَتُوْا وَيُلْهِهُمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
4. हम ने जिस बस्ती को भी विनष्ट किया है उस के लिए निश्चित नविश्ता रहा है ⁶। ④ وَمَا اَهْلَكْنٰ مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتٰبٌ مَّعْلُوْمٌ
5. कोई क़ौम न अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकती है और न पीछे रह सकती है ⁷। ⑤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
6. यह लोग कहते हैं ऐ वह व्यक्ति जिस पर नसीहत उतारी गई है, तुम निश्चय ही दीवाने हो ⁸। ⑥ وَقَالُوْا يٰٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نَزَّلَ عَلَيْهِ الدِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ
7. अगर तुम सच्चे हो तो फ़रिश्तों को हमारे सामने ले क्यों नहीं आते। ⑦ لَوْ مَا تَاْتَيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
8. हम फ़रिश्तों को यूँ ही नहीं उतारते बल्कि फ़ैसले के साथ उतारते हैं और उस समय लोगों को मोहलत नहीं दी जाती ⁹। ⑧ مَا نَنْزِلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْا اِلَّا مُنْظَرِيْنَ
9. निस्संदेह यह याददेहानी हम ही ने उतारी है और हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं ¹⁰। ⑨ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الدِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ
10. और यह सत्य है कि हम ने तुम से पहले गुज़री हुई उम्मतों में रसूल भेजे थे। ⑩ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شُعَيْبٍ الْاَوَّلِيْنَ

1. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट १ और सूरह बकरः नोट १

2. मुराद अल्लाह की किताब है। कुर्आन के किताब होने के भावार्थ में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

पहली यह कि यह एक संपूर्ण पुस्तक (Complete Book) है जिस की आयतों और सूरों की तरतीब अल्लाह की तरफ़ से है क्योंकि किसी भी किताब की तरतीब उस का रचयिता ही देता है और उस की मन्शा के विरुद्ध तरतीब देने का अधिकार किसी को नहीं होता।

दूसरी यह कि यह लिखित रूप में आने वाली किताब है क्योंकि अरबी में किताब का अर्थ लिखी हुई चीज़ के हैं।

तीसरी यह कि यह एक गठी हुई किताब है क्योंकि कोई भी महत्वपूर्ण किताब ऐसी नहीं हो सकती जिस के अन्श सम्बन्धयुक्त एवं गटे हुए न हों।

3. अरबी में कुर्आन का शाब्दिक अर्थ पढ़ने के हैं। अल्लाह की किताब का यह नाम अपने उस गुण को स्पष्ट करता है कि यह किताब बार बार पढ़ने के लायक और बहुत अधिक पढ़ी जाने वाली किताब है। वह्य के नाज़िल होने की शुरुआत इकरा (पढ़) से हुई थी, इस मुनासिबत से भी इस किताब का नाम कुर्आन उचित ठहरा।

अब रह गई बात उस के रौशन अर्थात् प्रकाशमान होने के गुण की तो इस की व्याख्या सूरह यूसुफ़ नोट २ में गुज़र चुकी है।

4. मुराद मौत की घड़ी भी है और क्रियामत की घड़ी भी। जब काफ़िर सत्य धर्म से अपनी महरूम पर पछताएंगे और तमन्ना करेंगे कि काश वह इस्लाम को कुबूल कर के मुसलमान हो गए होते।

कुर्आन ने यह बात दो टूक अन्दाज़ में लोगों के सामने रख दी है ताकि वे बहुत सारे धर्मों के चक्कर से निकल आएँ और सीधे इस्लाम में दाखिल हो जाएँ क्योंकि आखिरत (परलोक) में सफलता एवं मुक्ति की अकेली राह यही है।

5. अर्थात् कुर्आन जिस सत्य को प्रस्तुत कर रहा है उस को सुनने और मानने के लिए जो लोग तैयार नहीं हैं, उन को उन के हाल पर छोड़ दो, कुछ दिन ये दुनिया की उछल कूद में मग्न रहेंगे किन्तु आँख बन्द होते ही उन्हें मालूम हो जाएगा कि वास्तविकता क्या थी।

6. अर्थात् अल्लाह तआला की ओर से यह बात सुनिश्चित थी कि उस को किस समय तक मोहलत दी जाएगी। मतलब यह कि अल्लाह के काम ठीक ठीक योजनानुसार होते हैं।

7. अर्थात् कोई क़ौम अल्लाह के निश्चित समय से पूर्व न

विनष्ट हो सकती है और न इस के बाद ज़िन्दा रह सकती है।

8. इन्कारी लोग पैगम्बर से कहते हैं कि तुम्हारा यह दावा कि ख़ुदा की तरफ़ से तुम पर नसीहत नाज़िल हुई है सरासर दीवानगी और वहय की जो मनोदशा तुम पर छाई हुई है वह इस के सिवा कुछ नहीं कि एक जुनूनी हालत है जिस में तुम मुब्तिला हो गए है।

इन्कार करने वालों के इस आरोप को इतिहास ने ग़लत सिद्ध कर दिखाया, क्योंकि आप न केवल ऐतिहासिक एवं क्रान्तिकारी व्यक्तित्व के रूप में उभरे बल्कि एक बेहतरीन शिक्षक और बेहतरीन आचरण एवं चरित्र का निर्माण करने वाले व्यक्ति की हैसियत से आप ने वे चिन्ह छोड़े कि रहती दुनिया तक के लिए आप का व्यक्तित्व एक मिसाली व्यक्तित्व बन गया और वह कलाम जिस को दीवानगी करार दिया गया था उच्च कोटि के तत्वपूर्ण कलाम की हैसियत से हमारे सामने मौजूद है। क्या ये कारनामे किसी दिवाने व्यक्ति के हो सकते हैं?

9. यह उन के एतिराज़ का जवाब है। मतलब यह है कि अगर फ़रिश्तों को तुम्हारे मुतालबे पर उतारा जाए तो तुम्हारी आजमाइश कहाँ बाक़ी रहेगी। फ़रिश्तों को उसी समय उतारा जाता है जब कि किसी क़ौम की मोहलत समाप्त हो गई हो और उस की क्रिसमत का फ़ैसला चुका देना हो।

10. अर्थात् कुर्आन जो शुरू से अन्त तक याददेहानी और नसीहत हैं, हम ही ने नाज़िल किया है। यह न मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रचना है और न इस में शैतान का या किसी और का हाथ है।

और यह जो फ़रमाया कि “ निश्चय ही हम इस की सुरक्षा करने वाले हैं” तो उस ने आगे के लिए ज़मानत दे दी, कि न कुर्आन का कोई अन्श ग़ायब हो सकेगा और न इस में किसी प्रकार की अदला बदली हो सकेगी बल्कि यह अपने मूल शब्दों में जूँ का तूँ बाक़ी रहेगा ताकि इस पवित्र एवं स्वच्छ स्रोत से पूरी मानवता लाभान्वित होती रहे।

और कुर्आन की सत्यता का यह स्पष्ट प्रमाण है कि आज कुर्आन शब्द शब्द अपने मूल रूप में हमारे सामने मौजूद है। न केवल उम्मत के हाफ़िज़ हज़रात वंश पर वंश एक दूसरे तक स्थानांतरित करते रहे बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से यह लिखित रूप में भी चलता चला आया है। इस की प्राचीनतम प्रति जो तीसरे ख़लीफ़ा हज़रात उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ का लिखा हुआ है और जो “मस्हफ़े-उस्मानी” कहलाता है, आज भी दुनिया में मौजूद है। (मस्हफ़े-उस्मानी के लिए देखिए पृष्ठ नं. २०४)

कुआन अपने असली रूप में सुरक्षित है

मुसहफ़े-उस्मानी जो समरकंद में सुरक्षित है

ऊपर की इबारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

■ صفحه من
مصحف سيدنا
عثمان رضي الله عنه
(نسخه)
■ سمرقند

اَلْقُدُّسُ اَفْكَلَّمَا جَاءَ كُرَّ رَسُوْلٌ بِمَا لَا تَهْوٰى اَنْفُسُكُمْ
اَسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِّقَا كَذِبْتُمْ وَفَرِّقَا تَقْتُلُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا
غُلْفٌ ۚ بَلْ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٨﴾

(सूरह बकरा आयत ८७ - ८८)

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ
سُوْرَةُ النِّجْمِ

“निस्संदेह यह याददेहानी हम ही ने नाज़िल की है और हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं।”

और ज़मीन को हम ने फैलाया, उस में पहाड़ गाड़ दिए और उस में हर प्रकार की वस्तुएँ उचित मात्रा में उगाईं । और उस में तुम्हारी गुज़र बसर का सामान मुहैया कर दिया तथा उन की गुज़र बसर का भी जिन को तुम रोज़ी नहीं देते। कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों मगर हम उस को एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं । (अल-कुर्आन)

11. लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि कोई रसूल उन के पास आया हो और उन्होंने उस का मज़ाक़ न उड़ाया हो।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١١﴾

12. इसी प्रकार हम मुजरिमों के दिलों में यह बात दाख़िल करते हैं ¹¹।

كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

13. वे इस पर ईमान नहीं लाते। और पिछली क़ौमों की घटनाएँ गुज़र चुकीं ¹²।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

14. अगर हम इन पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल देते जिस पर ये चढ़ने लगते।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

15. तब भी यही कहते कि हमारी नज़रें मार दी गई हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है ¹³।

لَقَالُوا إِنَّمَا سَكِرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ عَنْهُمْ مُسْحُورُونَ ﴿١٥﴾

16. और हम ने आसमान में बुर्ज बनाए, और देखने वालों के लिए उन को ख़ुशनुमा बना दिया ¹⁴।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

17. और प्रत्येक फिटकारे हुए शैतान से इस को सुरक्षित कर दिया ¹⁵।

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿١٧﴾

18. और जो चोरी छिपे सुन गुन लेना चाहे तो एक रौशन शहाब (प्रदीप्त अग्निशिखा) उस का पीछा करता है ¹⁶।

إِلَّا مِنْ أَسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٨﴾

19. और ज़मीन को हम ने फ़ैलाया, उस में पहाड़ गाड़ दिये और उस में हर प्रकार की वस्तुएँ उचित मात्रा में उगाई ¹⁷।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْزُونٍ ﴿١٩﴾

20. और उस में तुम्हारी गुज़र बसर का सामान मुहैया कर दिया तथा उन की गुज़र बसर का भी जिन को तुम रोज़ी नहीं देते ¹⁸।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرِزْقَيْنَ ﴿٢٠﴾

21. कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों मगर हम उस को एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं ¹⁹।

وَأَنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خِزْيَانُهُ وَمَا نُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ﴿٢١﴾

22. और हम हवाओं को उर्वर बना कर चलाते हैं। फिर आसमान (ऊपर) से पानी बरसाते हैं और उस से तुम्हें सिंचित करते हैं। वरना तुम इस का भण्डार एकत्र कर के नहीं रख सकते थे ²⁰।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاحِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

11. अर्थात् जब वे हिदायत स्वीकार नहीं करते तो अल्लाह तआला गुमराही की बात उन के दिलों में दाखिल कर देता है।

12. अर्थात् काफ़िर क़ौमों के विनाश की घटनाएँ तथा उन के वृत्तांत गुजर चुके जिन से स्पष्ट होता है कि अल्लाह का दस्तूर क्या है।

13. अर्थात् अगर अल्लाह तआला कोई चमत्कार ऐसा दिखाता कि आसमान का दरवाज़ा खुल जाता और ये उस में चढ़ने लगते तब भी ये ईमान न लाते बल्कि इस खुले चमत्कार का अर्थ यह बताते कि इस व्यक्ति ने हमारी नज़रें जादू से मार दी हैं इस लिए आसमान में जो दरवाज़ा हमें दिखाई दे रहा है वह मात्र एक मायाजाल है और इतना ही नहीं बल्कि इस व्यक्ति ने हमारी इन्द्रियों को इस तरह से प्रभावित कर दिया है कि हम आसमान में अपने को चढ़ता हुआ देख रहे हैं हालाँकि यह सब धोखा है।

इस से अभिप्रेत उन काफ़िरों की हठधर्मी को उजागर करना है कि इन को यदि कोई बड़े से बड़ा चमत्कार दिखा दिया जाए तब भी यह ईमान लाने वाले नहीं हैं।

14. बुर्ज से मुराद चमकते सितारों के झुमट (Constellation) हैं जिन की शोभा हर देखने वाले को अपनी ओर आकर्षित करती है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बुरूज नोट २

15. अर्थात् शैतानों की पहुँच आसमानों तक नहीं हैं। वे आसमान की सीमा में प्रविष्ट नहीं हो सकते इस लिए इन के लिए न वहाँ कोई फ़ितना फैलाने का अवसर है और न वहाँ की ख़बरें लाने का।

16. ज़िन्न और शैतान अत्यंत सूक्ष्म अस्तित्व रखने वाली सृष्टि है और उन्हें यह शक्ति मिली हुई है कि आसमान की तरफ़ उड़ान भर सकें मगर आसमान की सीमाओं में प्रविष्ट होने से इन्हें रोक दिया गया है। कुर्आन उतरने से पूर्व वे आसमान के क़रीब फटकने की कोशिश करते थे ताकि आकाश लोक की ख़बरें मालूम कर सकें मगर इस में उन्हें सफलता नहीं होती थी। फिर भी उन्होंने ज्योतिषियों पर यह असर जमा दिया था कि वे ग़ैब परोक्ष की ख़बरें लाने में सक्षम हैं और इसी कारण कुर्आन नाज़िल होने से पहले ज्योतिष का सिलसिला बड़े पैमाने पर चल रहा था और ज्योतिषी लोग शैतानों के प्रभाव में जन साधारण को बुद्धू बना कर ख़ूब दूकानदारी करते और उन की गुमराही का पूरा सामान करते। इस ज्योतिषी की बुनियाद यद्यपि झूठ पर थी किन्तु चूँकि ये ग़ैब अर्थात् परोक्ष की ख़बरें देने के दावेदार थे इस लिए इन का कारोबार ख़ूब चलता था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की वहीय की बुनियाद पर ग़ैब की बातें बताना शुरू कीं तो काफ़िरों ने

आप पर ज्योतिषी का आरोप लगाया हालाँकि नुबुव्वत और ज्योतिषी में सही और ग़लत का बिलकुल स्पष्ट अन्तर है। कुर्आन के अवतरण के सिलसिले में अतिरिक्त आयोजन यह किया गया कि अगर कोई ज़िन्न या शैतान टोह लगाने की चेष्टा करता तो एक दमकता शोला सितारों से निकल कर उस का पीछा करता। इस आयोजन ने ज्योतिषी के ताम झाम को जो नुबुव्वत के समांतर था हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। अतः अब दुनिया में उस प्रकार के ज्योतिष विद्या अथवा दैवयोग का अस्तित्व नहीं रहा जिस प्रकार की ज्योतिष का अस्तित्व कुर्आन अवतरण तथा अन्तिम नबी की आमद से पहले था। अब अगर ज्योतिष विद्या बाक़ी है तो Pasmistry और Astrology वाले ज्योतिष जैसी विद्याएँ हैं और ये ज्योतिष भविष्य अथवा भाग्य का हाल बताने के दावेदार होते हैं।

सूरह ज़िन्न में ज़िन्नो का अपना बयान इस प्रकार आया है:-

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَهَا مِلْثَ حَرِّ سَدِيدٍ
أَوَّاهٍ مُّشْتَبِهٍ. وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَسْمَعُ
إِلَّا يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا. (سورة زین: ۷-۹)

“अर्थ: हम ने आकाश को टटोला तो देखा कि वह कड़े पहेरेदारों और शहाबों (अग्निशिखाओं) से भर दिया गया है और यह कि कुछ सुन गुन लेने के लिए हम उस के कुछ ठिकानों में बैठ जाया करते थे मगर अब जो सुनने की कोशिश करता है वह एक शहाब को अपनी घात में पाता है।” (सूरह ज़िन्न आयत ७ से ९)

ज़िन्नो की यह उड़ान जब आसमान के क़रीब के हिस्से तक होती है तो ज़ाहिर है उन पर शहाब भी वहीं छोड़े जाते होंगे और कुर्आन के बयान से स्पष्ट होता है कि ये शहाब सितारों से छोड़े जाते हैं:-

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ
وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ. (سورة الملک: ۵)

“अर्थ: “हम ने दुनिया के आसमान को चिरागों से सुशोभित किया और इन को शैतान के लिए मार का साधन बनाया।” (अलमुल्क: ५)

इस का मतलब यह हुआ कि वह शहाबों अथवा अग्निशिखाओं की मार जो ज़िन्नो और शैतानों की आसमानों की ओर उड़ान को रोक देती है काफ़ी बुलन्दी पर सितारों के क्षेत्र में होती है। इस लिए कुरआन के बयान किए गए शहाब से उल्का (Me-

teor) मुराद लेना सही न होगा जो ज़मीन से पचास साठ मील की बुलन्दी पर रोज़ाना बड़ी संख्या में गिरते रहते हैं। क्यों कि ये शहाब (उल्का या Meteor) जब मनुष्य की चाँद की ओर उड़ान में रूकावट न बने तो जिन्नो की उड़ान में किस प्रकार बाधक अथवा रूकावट हो सकते हैं। और जब मनुष्य की उड़ान चाँद तक हो सकती है तो जिन्नो की उड़ान उस से आगे कैसे नहीं होगी।

17. इस बयान से यहाँ स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जिस प्रकार अल्लाह की कुदरत, उस की हिकमत और उस की रूबूबियत की निशानियाँ आसमान में फैली हुई हैं उसी प्रकार उस की ये निशानियाँ ज़मीन में भी फैली हुई हैं।

ज़मीन से भाँत भाँत की चीज़े पैदा होती हैं मगर बिलकुल उचित मात्रा में, अगर ग़ल्ला ही ग़ल्ला पैदा होता तो इन्सान फलों से वंचित रहता और अगर फल ही फल पैदा होते तो मनुष्य अनाज के लिए तरस्ता। लेकिन यह मनुष्य के रचयिता ही का कारनामा है कि उस ने मनुष्य को जो अभिरूची प्रदान की है उसी से मेल खाती हुई वस्तुएँ भी पैदा कर दीं और इस मात्रा में पैदा कर दीं जो उस के स्वभाव की माँग थी।

18. ज़मीन में चलने वाले असंख्य प्राणी और हवा में उड़ने वाले अनगिनत परिन्दे ऐसे हैं जिन की रोज़ी का मनुष्य

कोई प्रबन्ध नहीं करता। बल्कि उन का ख़ब सीधे उन को रोज़ी पहुँचाता है। आजीविका उपलब्ध कराने की इस व्यापक व्यवस्था को देखते हुए अल्लाह की रूबूबियत में कय मामूली संदेह की भी गुन्जाइश रहती है।

19. जिस समय ज़मीन पर इन्सानी आबादी बिलकुल सीमित थी उस समय ज़मीन की पैदावार भी अत्यन्त सीमित थी। किन्तु आज जब कि आबादी अरबों इन्सानों तक पहुँच गई है, ज़मीन की पैदावार में भी तेज़ी से और अधिकता के साथ वृद्धि हुई है। यह इस बात की स्पष्ट दलील है कि अल्लाह के पास हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं और वह सुनियोजित ढंग से उस को उपलब्ध करता रहता है। मनुष्यों की इतनी बड़ी आबादी पानी ग़ल्ला और फल आदि जिस मात्रा में उपयोग में ला रही है वह अथाह और बे हिसाब है किन्तु इस से अल्लाह के ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं आई है।

20. अल्लाह तआला हवाओं को चलाता है जो बादलों से उर्वरक होती है। फिर इन बादलों से पानी बरसता है जिस से लोग सिंचित एवं तृप्त होते हैं। बारिश के द्वारा इन्सान के लिए पानी की उपलब्धि एवं प्राप्ति कितनी सरल और सहज हो गई है वरना आदमी के बस में न था कि पानी के ऐसे भण्डार जमा कर के रखे, जो उम्र भर उस के काम आ सके।



और यह हम ही हैं कि जीवन और मौत देते हैं और हम ही सब के वारिस हैं। हम उन को भी जानते हैं जो तुम से पहले हो गुजरे और उन को भी जो बाद में आने वाले हैं। और बेशक तुम्हारा रब उन सब को इकट्ठा करेगा, वह हिकमत वाला, इल्म वाला है। और यह सत्य है कि हम ने इन्सान को सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया। और इस से पहले हम जिन को आग की लौ से पैदा कर चुके थे। और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से एक बशर (आदमी) पैदा करने वाला हूँ। तो जब मैं उस को ठीक ठीक बना लूँ और उस में अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उस के आगे सज्दे में गिर जाना। अतः सब के सब फ़रिश्ते सज्दे में गिर गए। (अल-कुर्आन)

23. और यह हम ही हैं कि जीवन और मौत देते हैं और हम ही सब के वारिस हैं ²¹।

24. हम उन को भी जानते हैं जो तुम से पहले हो गुजरे और उन को भी जो बाद में आने वाले हैं ²²।

25. और बेशक तुम्हारा रब उन सब को इकट्ठा करेगा, वह हिकमत वाला, इल्म वाला है ²³।

26. और यह सत्य है कि हम ने इन्सान को सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया ²⁴।

27. और इस से पहले हम जिन्न को आग की लौ से पैदा कर चुके थे ²⁵।

28. और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से एक बशर (आदमी) पैदा करने वाला हूँ।

29. तो जब मैं उस को ठीक ठीक बना लूँ ²⁶ और उस में अपनी रूह फूँक दूँ ²⁷ तो तुम उस के आगे सज्दे में गिर जाना।

30. अतः सब के सब फ़रिश्ते सज्दे में गिर गए ²⁸।

31. सिवाय इब्लीस के, ²⁹ उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार किया।

32. पूछा ऐ इब्लीस ! तुझे क्या हुआ कि तू ने सज्दा करने वालों का साथ न दिया।

33. उस ने कहा मुझ से यह नहीं हो सकता कि एक ऐसे आदमी को सज्दा करूँ जिसे तूने सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया। ³⁰

34. हुक्म हुआ, निकल जा यहाँ से कि तू मरदूद (फिटकारा हुआ) है ³¹।

35. और हिसाब के दिन तक तुझ पर लानत है ³²।

وَإِنَّا لَنَحْنُ مُجِيٌّ وَنُهِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢١﴾

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٢﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ

مِّنْ حَمِئٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٤﴾

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٥﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقُ بَشَرٍ مِّنْ

صَلْصَالٍ مِّنْ حَمِئٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي

فَقَعَّوْا لَهُ سُجُودِينَ ﴿٢٧﴾

فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٢٨﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٠﴾

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ

مِّنْ حَمِئٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣١﴾

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٢﴾

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٣﴾

21. मनुष्य जब दुनिया से बिदा लेता है तो अपना माल दुनिया ही में छोड़ कर चला जाता है। यद्यपि कि उस के उत्तराधिकारी उस के निकट सम्बन्धि होते हैं किन्तु क्षणिक एवं अस्थायी रूप से क्यों कि उस का उत्तराधिकारी होना अल्लाह की मर्जी पर निर्भर होता है और यह भी कि उस का उत्तराधिकारी होना मात्र प्रबन्ध के लिए है इस लिए वास्तव में अल्लाह ही उस का वारिस (उत्तराधिकारी) होता है। और इस से अधिक स्पष्ट वास्तविकता यह है कि जब क्रियामत का बिगुल बजेगा और तमाम इन्सान इस दुनिया से चले जाएंगे तो मानव जाति की सारी संपत्ति और जायदाद अल्लाह ही के कब्जे में जाएगी। अतः अल्लाह ही सब का वारिस अर्थात् मालिक है।

22. अर्थात् अल्लाह के लिए यह कुछ मुश्किल नहीं है कि क्रियामत तक पैदा होने वाले इन्सानों का हिसाब चुकाए, इस लिए कि जो लोग मर चुके वे भी अल्लाह के इल्म (ज्ञान) में हैं और बाद में आने वालों को भी वह जानता है। कोई व्यक्ति चाहे गुजरे दिनों का हो, आज का, या आने वाले दिनों का हो, उस का इल्म और ज्ञान इतना व्यापक है कि सब पर हावी है और उस से कदापि कोई भूल चूक नहीं होती।

23. अर्थात् उस की तत्त्वदर्शिता तथा निति (हिकमत) का तक्राजा है कि एक दिन सब को अपने समक्ष जमा करे, और जब वह अलीम अर्थात् सब कुछ जानने वाला है तो कैसे संभव है कि वह लोगों के कर्मों से बे खबर हो।

24. मनुष्य का प्रारंभ इस ज़मीन पर किस प्रकार हुआ? यह बात ही महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस का सम्बन्ध न केवल ऐतिहासिक घटना से है बल्कि उस के अपने अस्तित्व की हक़ीक़त से भी है। और मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने अस्तित्व की हक़ीक़त से भिन्न हो ताकि वह पूरी रौशनी में ज़िन्दगी का सफ़र तय कर सके। कुर्आन ने इस सवाल का यहाँ और दूसरी जगहों पर बहुत ही स्पष्ट जवाब दिया है। इस आयत में मनुष्य की संरचना के बारे में जो बात बताई गई है उस से निम्न लिखित वास्तविकताएँ उजागर होती हैं।

प्रथम यह कि मनुष्य आकस्मिक घटना के फलस्वरूप आप ही आप अस्तित्व में नहीं आया बल्कि कायनात के सृष्टा ने अपनी नीतिपूर्ण योजना के अनुसार इस को पैदा किया है।

द्वितीय यह कि इन्सान की पैदाइश मिट्टी से हुई है और उस की तफ़सील यह है कि सड़ी हुई मिट्टी से मनुष्य का ढाँचा बनाया गया है फिर जब यह सूख कर खनखनाती मिट्टी का पुतला बन गया तो उस में जान डाल दी गई।

तृतीय यह कि सड़ी हुई मिट्टी से एक उत्तम सृष्टि की रचना सृष्टा के अति सामर्थ्यवान एवं अति शक्तिमान होने की

निशानी और उस के कारनामों की दलील है वह चाहे तो ज़र्रे को आफ़ताब और मिट्टी को सोना बनाए।

चतुर्थ यह कि मनुष्य की पैदाइश जब सड़ी हुई मिट्टी जैसी तुच्छ चीज़ से हुई है तो उस को घमंड और अहं शोभा नहीं देता। उस का मक़ाम खुदा के सामने बन्दगी, दासता और झुक कर रहने का है, इस लिए कि वह सृष्टि है न कि सृष्टा, रचना है न कि रचयिता और दास है न कि स्वामी, बन्दा है न कि खुदा।

ये तथ्य एवं वास्तविकताएँ डारविन के उस सिद्धान्त का खण्डन करते हैं कि इन्सान बन्दर से बना है। सच्चाई यह है कि इस सिद्धान्त के पक्ष एवं समर्थन में कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण एवं तर्क है ही नहीं, बल्कि यह मात्र काल्पनिक बात है और सृष्टा के बयान के रहते सृष्टि का चाहे वह कितना ही बड़ा चिन्तक एवं दार्शनिक क्यों न हो कोरी कल्पना से काम लेना ग़लत और परले दर्जे की गुमराही है। जब मनुष्य के रचयिता ने स्पष्ट रूप से बता दिया कि मनुष्य को उस ने मिट्टी से पैदा किया है तो इस बात को महत्व न देना और एक तथाकथित दार्शनिक की इस राय से कि मनुष्य की रचना बन्दर से हुई है सही समझ लेना खुली मूर्खता है जो बन्दर ही को शोभा देती है मनुष्य को नहीं।

स्पष्ट रहे कि तौरात में भी यह वास्तविकता बयान हुई है कि मनुष्य की पैदाइश मिट्टी से हुई है।

“और यहोवा परमेशवर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा और उस के नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया, और मनुष्य जीवत प्राणी बन गया।” (उत्पत्ति २:७)

गोया मनुष्य की पैदाइश के बारे में तौरात का बयान कुर्आन के बयान से मेल खाता है। अलबत्ता कुर्आन ने और स्पष्ट कर दिया कि मिट्टी किस प्रकार की थी और उस को किस प्रकार मानव रूप में ढाला गया।

25. जिस प्रकार ऊपर की आयत में “अल-इन्सान” से मुराद पहला इन्सान है जिस को मिट्टी से पैदा किया उस से इन्सानों का सिलसिला चला उसी प्रकार इस आयत में “अल जान्न” से मुराद पहला जिन्न है जिस को आग की लौ से पैदा किया गया और फिर उस से जिन्नात का सिलसिला चला। जिन्न का शाब्दिक अर्थ है छिपा हुआ अर्थात् वह सृष्टि जो दिखाई न दे। चूँकि जिन्न सूक्ष्म तत्व से पैदा किये गए हैं इस लिए वे दिखाई नहीं देते। मगर अल्लाह तआला ने अपनी इस सृष्टि की ख़बर हमें दे कर न केवल यह कि हमारे ज्ञान में वृद्धि की है बल्कि हमें अपने छिपे दुश्मन - इब्लीस से भी आगाह कर दिया है जिस का सम्बन्ध जिन्नों के समूह से है।

जिन्नों का इन्कार मात्र इस लिए कि वे हमें दिखाई नहीं

देते, सही नहीं, जब कि हमें उन के होने की खबर उन का और हमारा पैदा करने वाला दे रहा है। दुनिया में कितनी चीज़ें ऐसी हैं जिन की मनुष्य को सूक्ष्मदर्शी (Microscope) और दूरबीन के आविष्कार से पहले खबर न थी। जैसे वह नहीं जानता थी कि कीटाणु भी कोई प्राणी (सृष्टि) है जो मनुष्य के शरीर में जा कर उस के रोग का कारण बनते हैं।

स्पष्ट रहे कि जिनों की रचना के बारे में तौरात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है बल्कि कुर्आन ने इस का स्पष्टीकरण कर के मानव ज्ञान में वृद्धि की है। इस से विरोधियों के इस आरोप का भी खण्डन होता है कि कुर्आन तौरात से उद्धृत है।

26. अर्थात् इस को मानव रूप में ढाल लूँ और इस की संरचना पूरी कर लूँ।

27. इस आयत में मनुष्य के अस्तित्व से सम्बन्धित अत्यंत महत्वपूर्ण वास्तविकता बयान हुई है। और वह यह कि मनुष्य का अस्तित्व मात्र भौतिक अस्तित्व नहीं है बल्कि भौतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों का सम्मिश्रण है। यह रूह अथवा आध्यात्मिक तत्व एक अति सूक्ष्म तत्व है जो ज्ञान, बुद्धि, अभिव्यक्ति एवं परख (बोलने, भले-बुरे को पहचानने) की शक्ति जैसे गुणों से सुसज्जित है और इसी विशेषता के बल पर वह एक बेहतरीन तथा श्रेष्ठतम सृष्टि क्रार पाया। यह गोया अन्दर का इन्सान है जो देखता, सुनता, बोलता और समझ बूझ तथा अनुभूति की शक्ति रखता है। आँख, कान, ज़बान और दिमाग की हैसियत मात्र साधन तथा उपकरण की है और जब तक मनुष्य अपनी इस वास्तविकता से आगाह नहीं होता अपने जन्म लक्ष्य को पा नहीं सकता। भौतिकवादी, जिन की दृष्टि में मनुष्य गोश्त पोस्त से अधिक कोई अस्तित्व नहीं रखता, इन्सान को उस की मर्यादा से गिरा देते हैं, फिर वह मात्र पेट की चिन्ता में मस्त रहने वाला

जानवर बन कर रह जाता है।

ध्यान रहे आयत में यह जो फ़रमाया गया कि “इस में रूह फूँक दूँ” तो इस में रूह का संकेत अल्लाह तआला की ओर उस की मर्यादा एवं प्रतिष्ठा को स्पष्ट करने के लिए है। इस का यह अर्थ बिलकुल नहीं है कि ईश्वरत्व का कोई भाग मनुष्य के अन्दर समाविष्ट हो गया है। अल्लाह इस से पाक और बुलन्द है कि कोई चीज़ उस से ख़ारिज़ हो या उस का कोई भाग किसी में स्थानांतरित हो। वह यकता है जिस का न कोई अंग हो सकता है और न कोई चीज़ उस के सादृश हो सकती है। (व्याख्या के लिए देखिए सूरह इख़लास) कुर्आन में जिस प्रकार ख़ाना-ए-काबा (बैतुल्लाह) की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ उस की मर्यादा एवं प्रतिष्ठा के कारण की गई है और उस का यह मतलब नहीं है कि उसी प्रकार यहाँ रूह की निस्बत अल्लाह की तरफ़ उस की मर्यादा एवं श्रेष्ठता के आधार पर की गई है। किसी आयत का सही मतलब समझने के लिए संदर्भ को भी दृष्टि में रखना आवश्यक है और उन मौलिक तथ्यों, वास्तविकताओं, एवं शिक्षाओं को भी जिन को कुर्आन ने बहुत ही खोल कर प्रस्तुत किया है।

28. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट ४७ में गुज़र चुकी।

29. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट ४८ में गुज़र चुकी।

30. इस अवसर पर सूरह आराफ़ नोट १६ ध्यान में रहे।

31. देखिए सूरह आराफ़ नोट १७

32. अर्थात् क्रियामत तक तो ख़ैर (भलाई) और रहमत से वंचित है और क्रियामत का दिन तो फ़ैसले और बदले का दिन होगा।



उस ने कहा मेरे रब ! चूँकि तू ने मुझे बहकाया है, इस लिए मैं ज़मीन में इन के लिए दिलफ़रेबियाँ पैदा करूँगा और इन सब को बहकाऊँगा। सिवाय तेरे उन बन्दों के जिन को तूने उन में से ख़ास कर लिया हो। फ़रमाया यह सीधी राह है जो मुझ तक पहुँचती है। वास्तव में जो मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा। केवल उन बहके हुए लोगों ही पर चलेगा जो तेरी पैरवी करें। और उन सब के लिए जहन्नम का वादा है। (अल-कुआन)

36. उस ने कहा, तू मुझे उस दिन तक मोहलत दे दे जब लोग उठाए जाएंगे।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

37. फ़रमाया तुझे मोहलत दी गई।³³

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾

38. उस दिन तक जिस का समय निर्धारित है ³⁴।

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

39. उस ने कहा मेरे रब ! चूँकि तू ने मुझे बहकाया है,³⁵ इस लिए मैं ज़मीन में इन के लिए दिलफ़रेबियाँ पैदा करूँगा और इन सब को बहकाऊँगा ³⁶।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

40. सिवाय तेरे उन बन्दों के जिन को तूने उन में से ख़ास कर लिया हो ³⁷।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

41. फ़रमाया यह सीधी राह है जो मुझ तक पहुँचती है ³⁸।

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

42. वास्तव में जो मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा ³⁹। केवल उन बहके हुए लोगों ही पर चलेगा जो तेरी पैरवी करें ⁴⁰।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

43. और उन सब के लिए जहन्नम का वादा है ⁴¹।

وَأِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

44. उस के सात दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े के लिए उन का एक हिस्सा सुनिश्चित होगा ⁴²।

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

45. निस्संदेह मुत्तक़ी (परहेज़गार) लोग ⁴³ बागों और ख़ोतों में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

46. दाखिल हो जाओ इन में सलामती के साथ निर्भयतापूर्वक ⁴⁴।

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾

47. उन के सीनों (दिलों) में जो नफ़रत होगी वह हम निकाल देंगे ⁴⁵। वे भाई भाई बन कर एक दूसरे के सामने तख़्तों पर बैठे होंगे।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

48. वहाँ न तो उन्हें कोई थकान महसूस होगी ⁴⁶ और न वे वहाँ से निकाले ही जाएंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

49. मेरे बन्दों को आगाह कर दो ⁴⁷ कि मैं क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला हूँ।

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

33. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट १८ में गुज़र चुकी ।

34. अर्थात् क्रियामत तक !

35. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट १९ में गुज़र चुकी।

36. अर्थात् दुनिया को इन की नज़र में ऐसी लुभावनी बना कर पेश करूँगा कि वे खुदा और आखिरत को भूल जाएँगे और उन्हें ऐसे प्रलोभन दिखाऊँगा कि वे मेरे पीछे चल पड़ेंगे ।

37. अर्थात् मेरा जादू तेरे उन बन्दों पर नहीं चल सकेगा जिन को तूने अपने लिए ख़ालिस कर लिया हो । अल्लाह के किसी बन्दे को ख़ालिस करने का मतलब यह है कि उस की तौफ़ीक़ से वह केवल अल्लाह का बन्दा बन कर रहा हो और अल्लाह की तौफ़ीक़ उन्हीं को नसीब होती है जो अपने को इस के योग्य बनाते हैं।

38. सीधी राह से तात्पर्य अल्लाह के ख़ास और पसन्दीदा बन्दों की राह है जैसा कि इस से पहली और इस के बाद वाली आयत से स्पष्ट है और सूरह फ़तिहा में इसी को

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

अर्थ: “उन की राह जिन पर तूने इनाम फ़रमाया” कहा गया है। यह तौहीद और अल्लाह की इबादत और इताअत की राह है जिस का नाम इस्लाम है।

इस राह के अल्लाह तक पहुँचने का मतलब यह है कि इस पर चलकर आदमी अल्लाह को पा लेता है और दूसरी कोई राह नहीं है जिस पर चल कर आदमी अल्लाह को पा सके।

39. अर्थात् जो मेरे बन्दे बन कर रहेंगे उन को तू ज़बरदस्ती अपनी राह पर नहीं चला सकता ।

स्पष्ट हुआ कि शैतान का काम बुराई का प्रलोभन देना भर है । अगर आदमी नेक बनना चाहता हो तो शैतान उसे जबरन बुराई की राह पर डाल नहीं सकता ।

40. अर्थात् तेरे फ़रेब का शिकार वही लोग होंगे जो बहक गए हैं, मतलब यह कि जिन्होंने अपने आप को पूर्ण रूप से इच्छाओं के हवाले कर दिया हो और तेरे पीछे चल पड़ें हो। “ग़वा” غوى (बहकना) का मतलब इच्छाओं के पीछे चलना और जिहालत में लिप्त होना जिस का दूसरा नाम गुमराही है।

41. चाहे उन की संख्या कितनी ही अपार क्यों न हो।

42. गुमराहियाँ, बुराइयाँ और पाप अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे अनीश्वरवाद नास्तिकता, बहुदेववाद, कपट, पाखण्ड, विश्वासघात, हत्या, व्याभिचार आदि इस लिए दण्ड भी अनेक प्रकार के होंगे। आयत का इशारा इस बात की तरफ़ है कि

जहन्नम के सात दरवाज़े दण्ड के अनुसार हैं। क्रियामत के दिन अपराधियों एवं पापियों को देखते हुए उन के अलग अलग समूह बनाए जाएँगे और जो समूह जिस प्रकार के दण्ड का भागीदार होगा वह उसी के अनुसार निश्चित किये गए दरवाज़े से जहन्नम में झोंका जाएगा।

43. ऊपर की आयत से स्पष्ट है कि वहाँ मुत्तकियों एवं परहेज़गारों से अभिप्रेत वे लोग हैं जो अल्लाह से डरते हुए शैतान के बहकावे में न आएँगे तथा उस का अनुसरण न करेंगे और अल्लाह की बन्दगी एवं अनुपालन की राह अपनाएँगे।

44. अर्थात् क्रियामत के दिन मुत्तकियों और परहेज़गारों से कहा जाएगा कि जन्नत के बाग़ों में जिन में स्रोत फूट कर बह रहे होंगे, दाख़िल हो जाओ, सलामती के साथ “अर्थात् हर प्रकार की विपदाओं से सुरक्षित और “निर्भय हो कर” अर्थात् भविष्य की तरफ़ से पूर्ण रूप से संतुष्ट हो कर कि ये नेमतें तुम से कभी छीन ली जाने वाली नहीं हैं, बल्कि सदा सर्वदा तुम शान्ति और आनन्दपूर्वक रहोगे।

45. अर्थात् उन के दिलों को स्वच्छ एवं पवित्र कर दिया गया होगा । जन्नत के माहौल में किसी के विरुद्ध खोट, कपट, ईर्ष्या जैसी कोई चीज़ उन के दिलों में नहीं होगी। दुनिया में आपस के जो मन मुटाव रहे होंगे उन से उन के दिल बिलकुल पाक कर दिए गए होंगे इस लिए वे स्नेह एवं सच्ची भावना के साथ एक दूसरे से इस प्रकार मिलेंगे कि जैसे घुल मिल गए हो।

46. अर्थात् जन्नत का जीवन संसार के जीवन से बिलकुल भिन्न होगा । यहाँ न किसी परिश्रम से पाला पड़ेगा और न थकान और न ही उकताहट महसूस होगी।

हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يُنَادِي مُنَادٍ إِنَّ لَكُمْ أَنْ تَصِحُّوا فَلَا تَسْتَقِمُّوا
أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيُوا فَلَا تَمُوتُوا أَبَدًا وَإِنَّ
لَكُمْ أَنْ تَشَبُّوْا فَلَا تَهْرَمُوا أَبَدًا وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ
تَنَعِمُوا فَلَا تَبَاسُوا أَبَدًا. (مسلم کتاب احوال القیامة)

अर्थ:- “एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अब तुम स्वस्थ रहोगे, कभी बीमार न पड़ोगे, कभी तुम्हें मौत न आएगी, और जवान रहोगे, कभी तुम्हें बुढ़ापा न आएगा, और आनन्द से रहोगे कभी तुम्हें तकलीफ़ न होगी।”

(मुस्लिम किताब अहवालुल क्रियामत)

47. संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

50. और यह भी कि मेरा अज़ाब बड़ा दुखदायी अज़ाब है ⁴⁸।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ⑤०

51. और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों का वृत्तांत सुनाओ ⁴⁹।

وَنَبِّئُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ⑤१

52. जब वे ⁵⁰ इस के पास आए तो कहा सलाम हो आप पर ⁵¹। उस ने कहा हम आप लोगों से भय (अंदेशा) महसूस करते हैं ⁵²।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ⑤२

53. उन्होंने ने कहा आप डरें नहीं। हम आप को एक ज्ञानी लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं ⁵³।

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ⑤३

54. उस ने कहा क्या आप मुझे इस बुढ़ापे में यह ख़ुशख़बरी दे रहे हैं। तो यह कैसी ख़ुशख़बरी है ⁵⁴?

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمِ تَبَشِّرُونَ ⑤४

55. उन्होंने ने कहा, हम ने आप को सच्चाई के साथ ख़ुशख़बरी दी है, तो आप निराश न हों।

قَالُوا بَشَّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَنِطِينَ ⑤५

56. उस ने कहा अपने रब की रहमत से तो गुमराहों के सिवा कौन निराश हो सकता है ⁵⁵।

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ⑤६

57. उस ने पूछा, ऐ अल्लाह के भेजे हुआ, आप लोग किस मुहिम पर आए हैं ⁵⁶।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ⑤७

58. उन्होंने ने कहा हम एक मुजरिम क्रौम की तरफ़ भेजे गए हैं ⁵⁷।

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ⑤८

59. मगर लूत के घर वाले, हम उन सब को बचा लेंगे ⁵⁸।

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَنَنجُوهُمْ أَجْمَعِينَ ⑤९

60. सिवाय उस की पत्नी के, ⁵⁹ हम ने ठहरा दिया है कि ⁶⁰ वह पीछे रह जाने वालों में से होगी ⁶¹।

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا إِنَّمَا لَيْسَ الْغَابِرُونَ ⑥०

61. फिर जब ये अल्लाह के भेजे हुए (दूत) लूत के घर वालों के पास पहुँचे।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ⑥१

62. तो उस ने कहा आप लोग अजनबी मालूम होते हैं ⁶²।

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ⑥२

48. अर्थात् मेरे बन्दे जहाँ क्षमा और दया को याद रखें वहाँ यह बात भी न भूलें कि मेरी यातना मेरा अज़ाब बड़ा दुख दायिनी होता है। इन दोनों बातों को याद रखने ही के नतीजे में आशा और भय के साथ जीवन व्यतीत किया जा सकता है। इस के विपरीत जो लोग अल्लाह के अज़ाब को नज़रंदाज़ कर देते हैं वे गुनाह पर गुनाह किए चले जाते हैं और बचे रहने की भ्रमात्मक अभिलाषाओं पर आश्रित रहते हैं।

49. यह घटना सूरह हूद आयत ६९ से ७६ में बयान हुई है। यहाँ पर उक्त आयतों और उन की व्याख्या ध्यान में रहे।

50. ये फ़रिश्ते थे जो मानव रूप में इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आए थे।

51. इस की व्याख्या सूरह हूद नोट ९७ में गुजर चुकी।

52. इस की व्याख्या सूरह हूद नोट ९९ में गुजर चुकी।

53. यह हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के पैदा होने की खुशख़बरी थी और दोहरी खुशख़बरी यह थी कि लड़का बुद्धिमान और ज्ञानी होगा। यह गोया इस बात की ओर संकेत था कि यह लड़का नुबुव्वत के ज्ञान से सुशोभित किया जाएगा। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट १०१।

54. चूँकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस समय बुढ़ापे की आयु को पहुँच चुके थे, उन्हें बच्चे की खुशख़बरी सुन कर आश्चर्य हुआ।

55. स्पष्ट हुआ कि अल्लाह की कृपा तथा उस की रहमत से निराश, पथभ्रष्टता एवं गुमराही है। एक मोमिन अल्लाह से हमेशा रहमत का उम्मीदवार होता है और उस की दया एवं मेहरबानियों से कभी निराश नहीं होता।

56. फ़रिश्तों का इस प्रकार मानव रूप में आना किसी आजमाइश और किसी असाधारण उद्देश्य के लिए ही हो सकता था, इस लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह सवाल किया कि यह ख़ास काम क्या है जिस के लिए आप भेजे गए हैं।

57. अर्थात् हम लूत की क्रौम की तरफ़ भेजे गए हैं जो एक मुजरिम क्रौम है। उस का ख़ास जुर्म मर्दों का मर्दों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना अथवा समलैंगिकता था। सूरह आराफ़ आयत ८० से ८४ में लूत का वृत्तांत संक्षिप्त रूप से बयान हुआ है, और सूरह हूद आयत ७७ से ८३ में भी यह वृत्तांत आया है। इस अवसर पर उक्त आयतों और उन की व्याख्या ध्यान में ताज़ा रहे।

58. अर्थात् लूत के घर वाले ईमान लाए हैं और वे मुजरिम नहीं हैं इस लिए उन को उस अज़ाब से बचा लिया जायेगा जो लूत की क्रौम पर नाज़िल होने वाला है।

59. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १३२ तथा सूरह हूद नोट ११७

60. यह फ़रिश्तों का अपना मत नहीं बल्कि वास्तव में अल्लाह तआला का मत है जो फ़रिश्तों द्वारा व्यक्त हुआ है, अतः सूरह नम्ल आयत ५७ में यही बात अल्लाह तआला के इरशाद के तौर पर बयान हुई है:-

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ-

अर्थ:- “हम ने उस को और उस के घर वालों को बचाया सिवाय उस की पत्नी के कि हम ने ठहरा दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी”

61. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११७

62. फ़रिश्ते लूत के पास मानव रूप में आए थे और कुर्आन के संकेतों से प्रतीत होता है कि वे ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में थे, इस लिए लूत अलैहिस्सलाम ने महसूस किया कि ये अजनबी लोग हैं जो किसी दूसरे इलाके से यहाँ आए हैं, और मेरे घर मेहमान रहना चाहते हैं। चूँकि क्रौम की आजमाइश करानी थी इस लिए अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को इस रूप में भेजा था और इस नीति के चलते फ़रिश्तों ने अपना फ़रिश्ता होना लूत पर स्पष्ट नहीं किया था अलबत्ता बाद में उचित अवसर पर उन्होंने अपना फ़रिश्ता होना लूत पर स्पष्ट कर दिया।



63. उन्होंने ने कहा नहीं, बल्कि हम लोग आप के पास वही चीज़ लेकर आए हैं जिस के बारे में ये लोग शक कर रहे थे ⁶³।

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَتَسَوَّوْنَ ۝۶۳

64. हम आप के पास हक़ (सत्य) लेकर आए हैं और हम अपने बयान में बिलकुल सच्चे हैं।

وَ اتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝۶۴

65. अतः आप कुछ रात रहे अपने घर वालों को ले कर निकल जाएँ और आप उन के पीछे पीछे चलें ⁶⁴। और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर भी न देखेगा ⁶⁵। और चले जाओ जिधर जाने का तुम्हें आदेश दिया गया है।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ۝۶۵

66. और हम ने इस निर्णय से उस को सूचित किया कि सुबह होते ही इन लोगों की जड़ काट दी जाएगी ⁶⁶।

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَهُمْ لَمَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ۝۶۶

67. और शहर के लोग खुश खुश आ पहुँचे ⁶⁷।

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۝۶۷

68. उस ने कहा ये मेरे मेहमान हैं, ⁶⁸ तुम लोग मेरी फ़ज़ीहत न करो ⁶⁹।

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُون ۝۶۸

69. अल्लाह से डरो और मुझे रूस्वा न करो।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُون ۝۶۹

70. उन्होंने ने कहा, क्या हम ने आप को दूसरी क़ौमों के लोगों (को ठहराने) से मना नहीं किया था? ⁷⁰

قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝۷۰

71. उस ने कहा ये मेरी बेटियाँ मौजूद हैं, अगर तुम्हें (जायज़ तरीक़ा) अपनाना है ⁷¹।

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝۷۱

72. तुम्हारी ज़िन्दगी की कसम यह लोग अपनी बदमस्तियों में अन्धे हो गए हैं ⁷²।

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝۷۲

73. आख़िरकार सुबह होते ही एक हौलनाक आवाज़ ने उन्हें आ लिया।

فَاخَذَ نَوْمُ الصَّيْحَةِ مُشْرِقِينَ ۝۷۳

74. और हम ने उस बस्ती को तिलपट कर के रख दिया, और उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाए ⁷³।

فَجَعَلْنَا عَلَيْهِمْ سَافِلَهَاوَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ۝۷۴

63. अर्थात् अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब ले कर आए हैं जिस के आने के बारे में ये लोग शक कर रहे थे। यह बात फ़रिश्तों ने लूत को उस समय बताई जब की शहर के लोगों ने उन के घर को घेर लिया था जैसा कि दूसरी जगह पर बयान हुआ है।

64. पीछे पीछे चलने का हुक्म इस लिए दिया गया कि पीछे से निगरानी रहे कि कोई व्यक्ति अपने घर की तरफ़ लौटने न पाए और न पीछे मुड़ कर देखे, साथ ही इस में ईमान वालों के लिए उन के अनुपालन एवं फ़रमाबरदारी और विश्वास का इम्तिहान था कि वे अपने पैगम्बर को अपने सामने देखते हुए भी उस राह पर चलते हैं या नहीं जिस पर चलने का उन्हें आदेश दिया गया था।

65. इस की व्याख्या सूरह हूद नोट ११६ में गुज़र चुकी।

66. अर्थात् उन को बिलकुल विनष्ट कर दिया जाएगा।

67. अर्थात् शहर के जो लोग ख़ुबसूरत मेहमानों को देख कर बुरे इरादे से लूत के घर पहुँच गए उन्हें इस बात की ख़ुशी थी कि शिकार हाथ आने वाला है।

68. अब तक फ़रिश्तों ने लूत अलैहिस्सलाम पर यह स्पष्ट नहीं किया था कि वे फ़रिश्ते हैं। ऊपर आयत ६३ से ६५ में फ़रिश्तों का जो बयान नक़ल हुआ है वह उस समय की बात है जब कि शहर के लोगों ने लूत अलैहिस्सलाम के घर को घेर लिया था और वह अपने मेहमानों की मर्यादा को ख़तरे में पा कर अत्याधिक विक्षुब्ध एवं परेशान हो रहे थे।

69. अर्थात् मेरे मेहमानों का अगर तुम ने अपहरण कर लिया तो मेरे लिए यह बड़ी शर्म की बात होगी।

70. मतलब यह कि हम ने बाहर के किसी आदमी को पनाह देने से आप को मना किया था, फिर इन मुसाफ़िरों

को आप ने अपने घर क्यों ठहराया ? इस से लूत की क्रौम की ढिटाई, निर्लज्जता तथा गुण्डा गरदी का अन्दाज़ा होता है। ये लोग इस बात को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे कि किसी शरीफ़ आदमी को, जो बाहर से उन के देश में आया हो, कोई मानवता प्रेमी उसे अपना मेहमान बना ले।

71. अर्थात् यदि अपनी काम इच्छा को वैध रूप से पूरा करना चाहते हो तो तुम्हारे घरों में तुम्हारी पत्नियाँ मौजूद हैं फिर एक प्राकृतिक, उचित एवं वैध तरीके को छोड़कर, अप्राकृतिक, अनुचित एवं अवैध ढंग को अपनाने का क्या अर्थ ? इसी बात की तरफ़ लूत अलैहिस्सलाम ने बहुत ही भले, गंभीर शान्तिपूर्ण एवं सहिष्णुकता के अन्दाज़ में लोगों को बताया। यही कारण है कि उन्होंने ने क्रौम की औरतों के बारे में कहा कि ये मेरी बेटियाँ हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११०

72. इस अवसर पर जब कि लूत अलैहिस्सलाम की आख़िरी नसीहत भी उन की क्रौम पर असरअंदाज़ न हो सकी तो अल्लाह तआला ने उन को ढारस बँधाते हुए फ़रमाया, कि तुम्हारी ज़िन्दगी इस बात पर साक्ष्य है कि तुम ने अपनी क्रौम के सुधार में कोई कसर उठा न रखी। लेकिन यह क्रौम ऐसी दृष्ट, एवं दुराचारी है कि कोई नसीहत मानने को तैयार नहीं। और इन लोगों पर काम वासना का ऐसा नशा चढ़ गया है कि उन की अक्रल मारी गई है और वे बिलकुल अन्धे बन कर रह गए हैं। अब इन के लिए अज़ाब सुनिश्चित है।

स्पष्ट रहे कि ऐसे अवसर पर क्रसम, अरबी में साक्ष्य के अर्थ में होती है और यह तत्वपूर्ण बात कहने की एक शैली है।

73. इस की व्याख्या सूरह हूद ११९ में गुज़र चुकी।



75. निस्संदेह इस (वृत्तांत) में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो बुद्धिमता से काम लेते हैं ⁷⁴।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمُتَوَسِّعِينَ ۝

76. और ये (उजड़ी हुई) बस्ती जनसामान्य के मार्ग पर स्थित है ⁷⁵।

وَأَنَّهَا لِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ۝

77. निश्चय ही इस में ईमान रखने वालों के लिए बड़ी निशानी है ⁷⁶।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

78. और (देखो) “ऐका वाले” बड़े ज़ालिम थे ⁷⁷।

وَأَنَّكَ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لظَّالِمِينَ ۝

79. तो हम ने उन को भी सज़ा दी, और ये दोनों ही बस्तियाँ खुले राजमार्ग पर स्थित हैं ⁷⁸।

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمُ وَإِنَّهُمْ لِلْأَمَامِ مُبِينٌ ۝

80. और “हिज्र” वालों ⁷⁹ ने भी रसूलों को झुठलाया ⁸⁰।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسِلِينَ ۝

81. हम ने उन को अपनी निशानियाँ दिखलाई मगर वे मुँह फेरते ही रहे ⁸¹।

وَإَتَيْنَاهُمُ الْيَتِيمَ أَفْكَانُوا عَنْهُمْ مُعْرِضِينَ ۝

82. वे पहाड़ों को काट काट कर अमन और चैन के साथ घर बनाते थे ⁸²।

وَكَانُوا يَنْجُتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ۝

83. फिर ऐसा हुआ कि (एक दिन) उन को सुबह होते ही हौलनाक आवाज़ ने आ लिया ⁸³।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ۝

84. और जो कुछ उन्होंने ने कमाया था वह उन के कुछ काम न आया ⁸⁴।

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

85. हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन के बीच है, सत्य के आधार पर पैदा किया है ⁸⁵। और क्रियामत की घड़ी निश्चित रूप से आने वाली है अतः ख़ूबसूरती के साथ दरगुजर करो ⁸⁶।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۝ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْفِرِ الصَّفَرَ الْجَيْدَ ۝

86. निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा ही पैदा करने वाला ज्ञान वाला है। ⁸⁷

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝

87. हम ने तुम्हें सात दोहराई जाने वाली आयतों और महान कुर्आन प्रदान किया है ⁸⁸।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝

74. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट १४७ और १४८

75. सदूम और अमूरा का क्षेत्र जहाँ लूत की क्रौम आबाद थी हिजाज़ और सीरिया के बीच स्थित है और उस राजमार्ग पर पड़ता था जिस पर से तिजारती काफ़िले गुज़रते थे।

76. निशानी इस बात की कि आखिरकार अल्लाह की रहमत ईमान वालों ही के हिस्से में आती है और वास्तविक मान मर्यादा एवं इज़्ज़त उन्हीं को नसीब होती है।

77. ऐका, घने वृक्षों को कहते हैं। मदन के समीप का क्षेत्र घने वृक्षों से अटा था जिस में हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क्रौम आबाद थी इस लिए क्रौम को “ऐका वाले” कहा गया है। शुऐब की क्रौम का वृत्तांत सूरह आराफ़ नोट १३४ से १४९ और सूरह हूद नोट १२२ से १४० में गुज़र चुका है।

78. अर्थात् जो राजमार्ग हिजाज़ (अरब का सूबा) से सीरिया और फ़िलस्तीन को जाता है उस पर ऐका वालों और लूत की क्रौम की उजड़ी हुई बस्तियाँ पड़ती हैं। उन के पुरातत्व इस राजमार्ग से गुज़रने वालों को इब्रत हासिल करने का न्योता देते हैं।

जहाँ तक शुऐब की क्रौम का सम्बन्ध है, उस के चिन्ह अर्थात् पुरातत्व तो अब भी मौजूद हैं किन्तु लूत की बस्तियाँ, सदूम और अमूरा, जिस क्षेत्र में थीं वहाँ समुद्र परिवर्तित हो चुका है जिसे मृत सागर (Dead Sea) कहते हैं। ये समुद्र की सतह से चार सौ मीटर नीचे है जो वास्तव में भूचाल ही का परिणाम प्रतीत होता है। इस के किनारे पर कुछ साल पहले कुछ पुरातत्वों का रहस्योद्घाटन हुआ था (देखिए किससुल अम्बिया-अब्दुल वहाब नज्ज़ार पृष्ठ ११३)

79. “हिज़्” एक घाटी का नाम है जो मदीना के उत्तर में तबूक को जाते हुए रास्ते में पड़ती है। यहाँ समूद की क्रौम आबाद थी और उस का केन्द्रीय स्थल मदायन स्वालेह था। इस के विनाश के चिन्ह अब भी मौजूद हैं। तबूक के युद्ध के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र इन चिन्हों अथवा पुरातत्वों पर से हुआ था। इस अवसर पर आप ने अपने अस्हाब (साथियों) को हिदायत फ़रमाई थी कि यहाँ से रोते हुए गुज़र जाएँ। (बुखारी किताबुत्तफ़सीर)

80. स्वालेह अलैहिस्सलाम की दअवत वही थी जो अन्य रसूलों की थी, इस लिए उन को झुठलाना तमाम रसूलों को झुठलाने जैसा था।

81. समूद की क्रौम का वृत्तांत सूरह आराफ़ और सूरह हूद में गुज़र चुका है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ११५ से १२६ और सूरह हूद नोट ८६ से ९५

82. अर्थात् अपने जीवन के अधिकांश एवं बेहतर क्षणों

को वे वैभावशाली इमारतें बनाने और चैन की बाँसुरी बजाने में व्यतीत कर रहे थे। उन्होंने दुनिया को लक्ष्य बना लिया था और ख़ुदा के समक्ष उत्तर देने का कोई ख़याल नहीं था।

83. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १२३

84. अर्थात् अपनी सुरक्षा के लिए जो मज़बूत मकान उन्होंने बनाए थे, वे उन की कुछ भी रक्षा न कर सके और उन की सारी दौलत, तमाम करनामे और उन का पूरा समाज, पूरी सभ्यता मलियामेट हो कर रह गई।

85. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट १२४ में गुज़र चुकी।

86. अर्थात् जब क्रियामत आने वाली है और सब को अपने कर्मों का हिसाब देना है तो ऐ नबी तुम्हारे विरोधी तुम्हारे विरुद्ध जो बेहूदा बातें कर रहे हैं उस से तुम्हें दुखी होने की आवश्यकता नहीं। वे अपना अन्जाम देख लेंगे। तुम इन से दरगुज़र करो और यह दरगुज़र ख़ूबसूरती के साथ हो अर्थात् नैतिक गुणों एवं शिष्टाचार के साथ।

87. अल्लाह के इन दो गुणों के वर्णन से अभिप्रेत क्रियामत से सम्बन्धित इन्कार करने वालों के एतिराज़ एवं आपत्ति भरे प्रश्नों का खण्डन करना और यह सिद्ध करना है कि क्रियामत का आना कदापि असंभव नहीं। यह कायनात अल्लाह की उस विशेषता तथा उस गुण का परिचायक है कि वह अथाह रचना शक्ति वाला है, इस लिए इन्सान को दोबारा पैदा करना और आखिरत (परलोक) को बरपा करना उस के लिए कदापि दुष्कर नहीं। फिर जो सृष्टा हो वह अपनी सृष्टि से किस तरह बे ख़बर हो सकता है। इस लिए यह बात कि ख़ुदा पैदा करने वाला भी है और ज्ञान वाला भी एक ऐसी सच्चाई है कि जिस का इन्कार संभव नहीं। और जब वह सब कुछ जानता है तो उस के लिए यह कुछ भी मुश्किल नहीं कि अरबों और ख़रबों लोगों का क्रियामत के दिन हिसाब ले।

88. سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِي के अर्थ हैं “सात दोहराई जाने वाली आयतों” अरबी की प्राचीन एवं प्रमाणित शब्दकोष सिहाहे जौहरी में मसानी का अर्थ “दोहराये जाने वाली” लिखा गया है।

وَتُسَمَّى فَاتِحَةُ الْكِتَابِ مَثَانِي لِأَنَّهَا تَتَنَبَّأُ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ. (الصالح २२१)

अर्थ:- “फ़ातिहतुल किताब (सूरह फ़ातिहा) को मसानी कहा जाता है क्योंकि उसे हर रकअत में दोहराया जाता है।” (अस्सिहाह पृष्ठ २२९६) और सही हदीस से साबित है कि इस से तात्पर्य सूरह फ़ातिहा है।

عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله ﷺ : أم القرآن

هي السبع المثاني والقرآن العظيم. (بخارى كتاب التفسير)

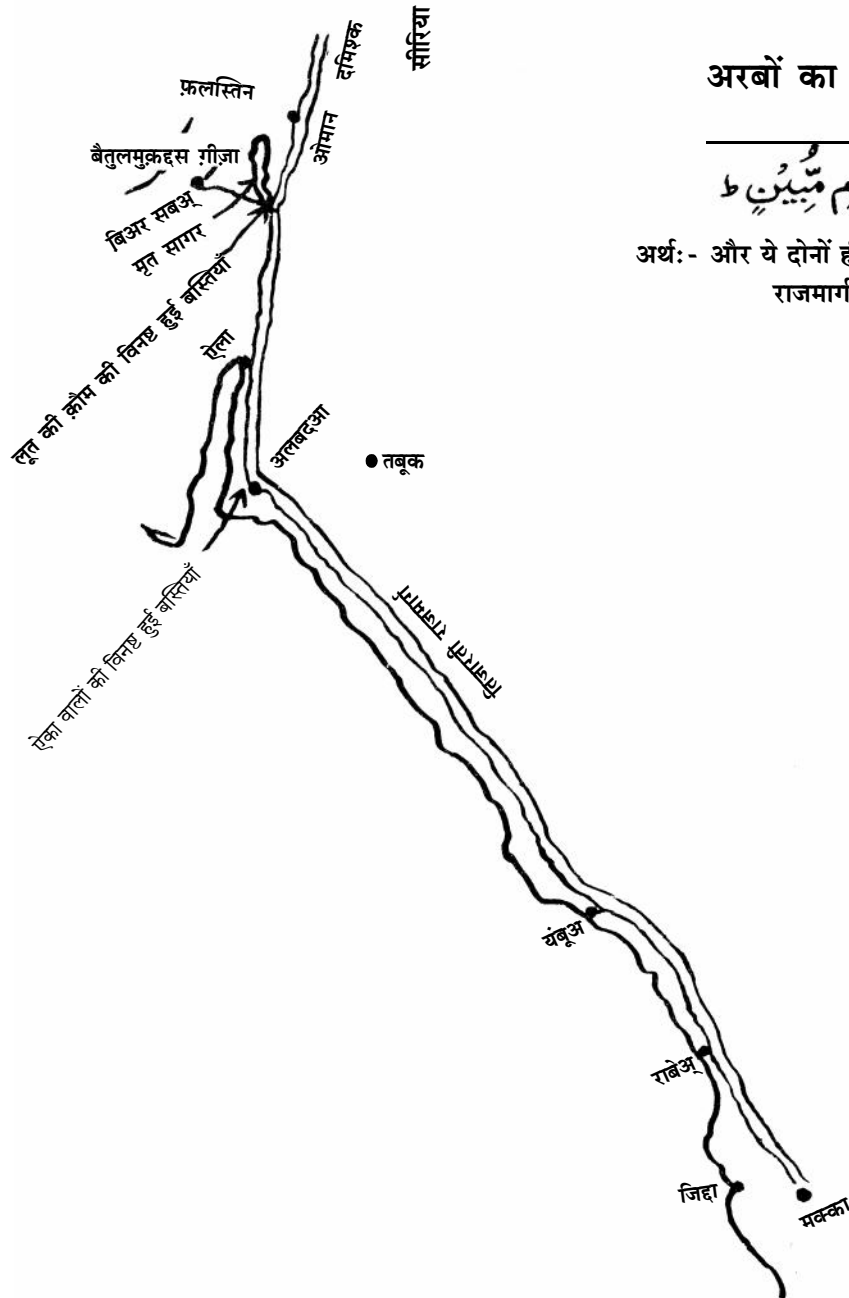
अर्थ:- “अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उम्मुल कुर्आन ही सबअ मसानी है और कुर्आन अज़ीम भी।” (बुख़ारी किताबुतत्तप्सीर)

सूरह फ़ातिहा सात आयतों की सूरह है और नमाज़ की एक अति महत्वपूर्ण अंश भी है अतः हर रकअत में सूरह फ़ातिहा ज़रूर पढ़ी जाती है।

سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِي

“सबअ मिनल मसानी”

छोटे से शब्दों में सूरह फ़ातिहा का वह व्यापक परिचय है जो उस के बार बार पढ़े जाने की बात को प्रस्तुत करने के अलावा इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि इस में अर्थ और अध्यात्म की दौलत का समुद्र निहित है। फिर मोती, और जवाहर वाली इस आरम्भिक सूरह के साथ कुर्आन का अमूल्य खज़ाना भी प्रदान किया गया है। इस रूहानी अर्थात् आध्यात्मिक दौलत के मुकाबले में उस भौतिक दौलत की क्या हक़ीक़त है जो खुदा से बेपरवाह लोगों के हिस्से में आई है और जिस के साथ हज़ारों आजमाइशें लगी हुई हैं?



अरबों का तिजारती राजमार्ग

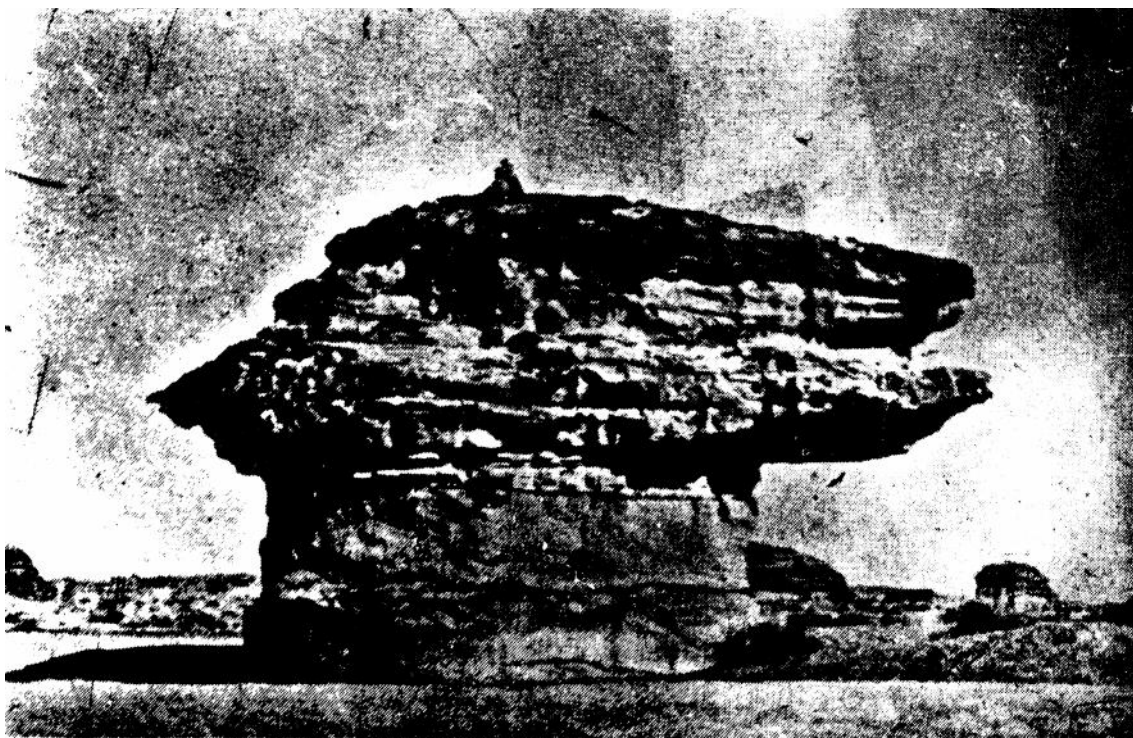
وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ط

अर्थ:- और ये दोनों ही (विनष्ट हुई) बस्तियाँ खुले राजमार्ग पर स्थित हैं।

समूद के पुरातत्व



समूद के पुरातत्व



88. तुम इस सांसारिक सामग्रियों की तरफ़ आँख उठा कर भी न देखो जो हम ने इन के विभिन्न गिरोहों को दे रखा है ⁸⁹। और न इन की हालत पर ग़म खाओ ⁹⁰ और मोमिनों के लिए अपने बाज़ू झुका दो ⁹¹।
89. और कहो मैं तो खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।
90. हम ने (यह किताब उसी प्रकार उतारी है) जिस प्रकार विच्छेद करने वालों पर उतारी थी ⁹²।
91. जिन्होंने ने (अपने) कुर्आन के टुकड़े टुकड़े कर दिए ⁹³।
92. तो तुम्हारे रब की क़सम ⁹⁴ हम ज़रूर इन सब से पूछेंगे।
93. उन कामों के बारे में जो वे करते रहे हैं ⁹⁵।
94. तो जो कुछ तुम्हें आदेश दिया जा रहा है उसे ऐलानिया सुना दो और मुश्रिकों की परवाह न करो ⁹⁶।
95. इन मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबले में हम तुम्हारे लिए काफ़ी हैं।
96. जिन्होंने ने अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा बना रखे हैं। बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा ⁹⁷।
97. हमें मालूम है कि जो बातें ये कहते हैं उन से तुम्हारा दिल तंग होता है ⁹⁸।
98. तो चाहिए कि अपने रब की पाकी बयान करो, उस की प्रशंसा के साथ और सज़्दागुज़ार बनो ⁹⁹।
99. और अपने रब की इबादत ¹⁰⁰ में लगे रहो यहाँ तक कि वह घड़ी आ जाए जिस का आना सुनिश्चित है ¹⁰¹।

لَا تَمُدَّنْ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَاهُ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ٨٨

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ٨٩

كَمَا أَنْزَلْنَاهُ عَلَىٰ الْمُفْتَسِينَ ٩٠

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ٩١

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ٩٢

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٩٣

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ٩٤

إِنَّا لَنَقِينَاكَ مِنَ السَّاهِينَ ٩٥

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ٩٦

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ٩٧

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ٩٨

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ٩٩

89. आयत में यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बन्धित कर के यह हिदायत दी गई है कि जब अल्लाह तआला ने तुम्हें कुर्आन की दौलत से माला माल कर दिया है तो उस सांसारिक धन सामाग्री पर उचटती नज़र भी न डालो जो दुनिया परस्तों को प्रदान हुई है लेकिन आप के माध्यम से यह हिदायत हर उस व्यक्ति के लिए है जिस ने कुर्आन की नेमत पाई है।

90. अर्थात् ये दौलत के पुजारी जब इसी में मग्न रहना चाहते हैं और इस नेमत की क्रूर करने के लिए तैयार नहीं हैं जो कुर्आन के रूप में अल्लाह तआला ने उतारी है तो इन के हाल पर अफ़सोस करने का क्या लाभ। ये इसी लायक हैं कि इस महान उपहार से वंचित रहें।

91. अर्थात् उन लोगों का आदर करो जो दुनिया की धन सामग्री से चाहे वंचित हों लेकिन जिन्होंने ईमान की दौलत पाई है। ऐसे ही लोग तुम्हारी दया प्रेम एवं स्नेह के योग्य अधिकारी हैं।

92. इशारा यहूदियों की तरफ़ है जिन्होंने ने अल्लाह की किताब में काट पीट की थी। आयत का मतलब यह है कि कुर्आन कोई पहली किताब नहीं है जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई हो बल्कि इस से पहले भी किताबें भेजी जाती रही हैं। अल्लाह तआला ने जिस तरह इब्राहीमी वंश की एक शाखा बनी इस्राईल पर किताब नाज़िल की थी उसी प्रकार उस ने उस की दूसरी शाख बनी इस्माईल पर किताब उतारी है। और चूँकि बनी इस्राईल ने दीन को अपनी असली सूरत में बाक़ी नहीं रखा इस लिए कुर्आन का अवतरण आवश्यक हो गया ताकि लोगों पर अल्लाह का असल दीन स्पष्ट हो और उस की शिक्षाएँ सही रूप में सामने आएँ।

93. अपने कुर्आन से मुराद यहूदियों की अपनी किताब तौरात है और उस के टुकड़े टुकड़े करने का मतलब यह है कि उन्होंने अल्लाह की इस किताब में काट छाँट की, उस की तरतीब (क्रम) को बदल दिया, उस के अर्थ बदल दिए। उस में मनचाही व्याख्याएँ शामिल कर दीं। उस के एक हिस्से को इस प्रकार छिपाते रहे कि वह धीरे धीरे लुप्त हो गया और जो हिस्सा दिखाते थे उस के भी कुछ आदेशों को माना और कुछ से मुँह मोड़ा।

94. रब की क्रसम उस की महानता तथा पावनता को उजागर करती है। इस से कलाम में ताकीद की सूरत पैदा हो गई है।

95. अर्थात् अल्लाह के दीन और उस की किताब के साथ जो व्यवहार इन्होंने ने किया है उस के बारे में क्रियामत के

दिन उन से निश्चित रूप से पूछ ताछ होगी। कोई यह ख़याल न करे कि वे चूँकि ख़ुदा और उस की किताब को मानने का दावा करते हैं इस लिए यूँ ही छोड़ दिए जाएँगे, बल्कि उन के दावे को कर्म की कसौटी पर परखा जाएगा।

96. मक्का के बहुदेववादी वातावरण में तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद की दाअवत पेश करना कोई आसान काम न था। इस सम्बन्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रचण्ड विरोध के तूफ़ान से गुज़रना पड़ रहा था। और इस विरोध ने मज़ाक का रूप धार लिया था किन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म हुआ कि उन की परवाह किए बग़ैर उन बातों को ऐलानिया प्रस्तुत करें जिन का आदेश अल्लाह तआला ने दिया है। इस से यह सीख मिलती है कि माहौल कितना ही काफ़िराना और मुश्रिकाना क्यों न हो ईमान वालों को दीन की दाअवत का प्रचार करने के बारे में संकोच नहीं करना चाहिए कि बुत परस्ती और शिर्क के विरुद्ध कुछ कहने से बहुदेववादी नाक भौं चढ़ाएँगे।

97. अर्थात् शीघ्र ही इन की इन करतूतों का अन्जाम इन के सामने आ जाएगा। तब ये जान लेंगे कि पैग़म्बर और उस की दाअवत का मज़ाक उड़ाकर उन्होंने किस प्रकार अपने आप को विनाश के मार्ग पर ढकेला।

98. अर्थात् ऐ पैग़म्बर ! ये लोग तुम्हारी जो खिल्ली उड़ाते हैं वह तुम्हारे लिए दिली तकलीफ़ का कारण ज़रूर है तुम्हें इस पर सब्र करना चाहिए।

99. यह तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद पर जमे रहने और अल्लाह की इबादत में सक्रिय रहने का निर्देश है।

100. यहाँ इबादत से अभिप्रेत जैसा कि ऊपर की आयत में बयान हुआ है विशेष रूप से उस की पाकी बयान करने प्रशंसा करने तथा सज्दे वाली इबादत है। मक्की दौर में इस का आयोजन करने की जिस तरह ताक़ीद की गई है उस से पूजा उपासना, तथा परस्तिश की प्राथमिकता और दीन में इस का महत्व भली भाँत स्पष्ट होता है।

101. अर्थात् मौत की घड़ी जिस के आने में कोई शक नहीं।

हदीस में भी मौत को यक़ीन बताया गया है अतः उस्मान बिन मज़ऊन की मौत पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ - (بخاری کتاب الجنائز)

अर्थ :- “उस्मान बिन मज़ऊन के पास यक़ीन आ पहुँचा” आयत का मतलब यह है कि मरते दम तक एक ख़ुदा की इबादत पर जमे और सक्रिय रहो।

सूरह अन्-नहल

१६.सूरह अन्-नहल

नाम: आयत ६८ में अल्लाह की रूबूबियत (पालनहार होने) की निशानी के तौर पर “नहल” अर्थात् शहद की मक्खी का जिक्र हुआ है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अन्-नहल करार पाया है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के मध्यकाल में हब्शा की हिजरत के बाद नाज़िल हुई होगी?

केन्द्रीय विषय: बहुदेववाद की असत्यता और एकेश्वरवाद की सत्यता को स्पष्ट करना है और उस सिलसिले में अल्लाह की नेमतों का एहसास दिलाना है ताकि वह अपने सच्चे रब एवं परोपकारी को पहचाने। सूरह का केन्द्रीय विषय यही है। अलबत्ता उस समय के हालात और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अन्य बातें भी बयान हुई हैं, जैसे यह कि अज़ाब के लिए जल्दी मचाने पर तंबीह की गई है और उन आशंकाओं एवं संदेहों का उत्तर दिया गया है जो इन्कार पर तुले लोग प्रस्तुत कर रहे थे।

कलाम की तरतीब: आयत १ से ३ आयतें प्रस्तावना हैं जिन में बहुदेववादियों को झंझोड़ते हुए वह्य के ध्येय और कायनात की रचना के उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है।

आयत ४ से १८ में अल्लाह की नेमतों का वर्णन हुआ है जो मनुष्य को सोचने तथा विचार करने पर उभारते हैं और अपने सच्चे तथा वास्तविक परोपकारी का एहसास दिल में पैदा करते हैं।

आयत १९ से ३२ में शिर्क अर्थात् बहुदेववाद का खण्डन करते हुए बहुदेववादियों को बुरे अन्जाम और परहेज़गारों के अच्छे अन्जाम का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

आयत ३३ से ४० में इन्कार करने वालों के कुछ प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

आयत ४१ और ४२ में अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को खुशखबरी दी गई है।

आयत ४३ से ४७ में नुबुव्वत से सम्बन्धी आवश्यक स्पष्टीकरण तथा मुन्किरीन अर्थात् इन्कार करने वालों को तंबीह।

आयत ४८ से ६० एकेश्वरवाद (तौहीद) के तर्क एवं प्रमाण और बहुदेववाद (शिर्क) का खण्डन।

आयत ६१ से ६५ में मुन्किरीन की कुछ आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

आयत ६६ से ८३ में अल्लाह की नेमतों का उल्लेख कर के बहुदेववादियों की आत्मा तथा उन के ज़मीर को जागृत करने का सामान किया गया है।

आयत ८४ से ८९ में आगाह किया गया है कि क्रियामत के दिन जब मुश्रिकों और काफ़िरों (न मानने वालों) की पेशी होगी तो उन का क्या हाल होगा।

आयत ९० से ९७ में बन्दों के अधिकारों की अदायगी, बुराईयों से परहेज़ और पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारने की प्रेरणा दी गई है।

आयत ९८ से १०५ में शैतान से पनाह माँगने की हिदायत है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि लोग कुर्आन को सही तरीक़े पर समझें इस लिए वह मन में आशंकाएँ एवं संदेह उत्पन्न करता रहता है। मुन्किरीन की आशंकाएँ तथा संदेह सच पूछिए तो शैतान ही के बहकावे का परिणाम है।

आयत १०६ से १११ में मज़लूम ईमान वालों को तसल्ली और उन पर ज़ुल्म तोड़ने वालों को चेतावनी है।

आयत ११२ से ११४ में मक्का वालों के लिए एक बस्ती की मिसाल जिस ने अकृतज्ञता तथा नाशुक्री दिखाई और अल्लाह का कृतज्ञ बनने के निर्देश।

आयत ११५ से ११९ में यह हिदायत कि बहुदेववाद तथा अंधविश्वास में लिप्त हो कर अल्लाह की हलाल ठहराई हुई चीज़ों को हराम न ठहराओ।

आयत १२० से १२३ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी के उस पक्ष को प्रस्तुत किया गया है कि वे पक्के एकेश्वरवादी तथा कृतज्ञ थे। बहुदेववादी कदापि न थे।

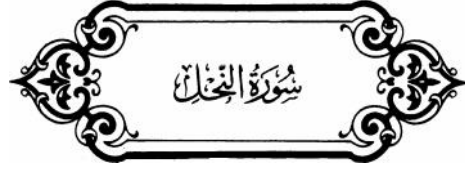
आयत १२४ में यह बताया गया है कि सब्त मनाने का आदेश केवल यहूदियों को उन के इख़्तिलाफ़ में पड़ने के कारण दिया गया था।

आयत १२५ से १२८ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और ईमान वालों को कुछ हिदायतें दी गई हैं।

१६. सूरह अल्-नहल

आयतें: 128

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. आ गया अल्लाह का हुक्म, इस के लिए जल्दी न मचाओ ¹। वह पाक और बुलन्द है उस से जिस को ये उस का साझीदार ठहराते हैं ²।
2. वह फ़रिश्तों को रूह के साथ अपने हुक्म से अपने जिन बन्दों पर चाहता है उतारता है ³ कि लोगों को ख़बरदार करो कि मेरे सिवा कोई इलाह (पुज्य) नहीं अतः मुझ से डरो ⁴।
3. उस ने आसमानों और ज़मीन को सत्य के आधार पर पैदा किया है ⁵। वह उच्चतर है उस से जिस को ये उस का साझीदार ठहराते हैं।
4. उस ने मनुष्य को पानी की एक बूँद से पैदा किया, फिर देखो वह स्पष्टतः झगड़ालू बन गया ⁶।
5. उस ने तुम्हारे लिए चौपाये पैदा किये जिन में तुम्हारे लिए गर्म पौशाक भी है ⁷ और दूसरे फ़ायदे भी ⁸ तथा इन से तुम ख़ुराक भी प्राप्त करते हो ⁹।
6. और इन में तुम्हारे लिए रौनक है जब शाम को इन्हें वापस लाते हो और जब सुबह को चरने के लिए छोड़ देते हो ¹⁰।
7. वे तुम्हारे बोझ ऐसी जगहों तक ले जाते हैं जहाँ तुम कठोर परिश्रम के बग़ैर नहीं पहुँच सकते थे।¹¹ निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा ही करुणामय और दयावान है।¹²
8. उस ने घोड़े, खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो ¹³ और वे तुम्हारे लिए रौनक बनें। और वह ऐसी चीज़ें भी पैदा करता है जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं है ¹⁴।

أَنِّي أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ①

يُنْزِلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ②

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ③

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ④

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ⑤

وَلَكُمْ فِيهَا جَبَالٌ حِينَ تُرْيَوْنَ وَحِينَ تُسْرَحُونَ ⑥

وَتَحِبُّوا أَنْتُمْ إِلَى بَكْبِكُمْ تَكُونُوا بِلِغِيٍّ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَوْفٌ رَحِيمٌ ⑦

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑧

1. बहुदेववादी जिस चीज़ के लिए जल्दी मचा रहे थे वह अज़ाब था। वे कहते थे कि पैग़म्बर हमें जिस अज़ाब की धमकी दे रहे हैं वह आ क्यों नहीं जाता?

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ - وَلَوْلَا أَجَلٌ
مُّسَمًّى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ. (العنक़बुत: ५३)

अर्थ:- “वे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं। यदि उस का समय निश्चित न किया गया होता तो अज़ाब उन पर टूट ही पड़ता।” (अल-अन्क़बूत ५३)

इस लिए आयत में “अमरुल्लाह” (अल्लाह के हुक्म) से तात्पर्य अल्लाह का अज़ाब ही है। और यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जो लोग अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं उन के लिए अज़ाब सुनिश्चित हो चुका है और वह समय भी निकट आ लगा है जब कि ये उस का मज़ा चखेंगे। अतः कुछ साल के अन्दर अन्दर उन लोगों का सफ़ाया कर दिया गया जो अन्तिम क्षणों तक अपने बहुदेववाद पर जमे रहे। यहाँ तक अन्तिम हज्ज सन ९ हिजरी के अवसर पर न केवल यह कि मक्का में कोई बहुदेववादी बाक़ी नहीं रहा था बल्कि पूरे अरब से बहुदेववादियों का सफ़ाया हो गया था। गोया मुसलमानों की तलवार बहुदेववादियों पर अल्लाह का अज़ाब बन कर चली। यह अज़ाब पिछली क्रौमों के अज़ाब से ज़रूर भिन्न था किन्तु रसूल के विरोधियों को हर हाल में तबाही का मुँह देखना पड़ा।

इस के अलावा यह भी एक वास्तविकता है कि मौत अत्यंत निकटतम वस्तु है और एक मुश्रिक और काफ़िर को मौत आती है तो अज़ाब के फ़रिश्ते प्रकट हो जाते हैं और उस की आत्मा यमलोक (आलमे बर्ज़ख़) में अज़ाब अर्थात् यातनाओं का मज़ा चखती रहती है। फिर क्रियामत के दिन-जो अति शिघ्र प्रकट होने वाला है - ऐसे लोगों को सदा सर्वदा के लिए जहन्नम में ढकेल दिया जाएगा। मतलब यह कि मुश्रिकों और काफ़िरों के लिए अल्लाह का अज़ाब हर दृष्टि से निकट ही है।

2. अर्थात् अल्लाह की शान इस से बुलन्द है कि उस के ईश्वरत्व अर्थात् ख़ुदा होने और कायनात का काम चलाने में कोई साझीदार हो। और जब ये लोग उस से ऐसी बातें जोड़ रहे हैं जो उस की महिमा और उस की शान से निम्न स्तर की है तो उस की ओर से वे दण्ड ही के भागीदार हो सकते हैं।

3. “रूह” से मुराद वह्य है जो अल्लाह तआला पैग़म्बरों पर नाज़िल फ़रमाता है। चूँकि यह रूह की तरह

पैग़म्बर के दिल पर नाज़िल होती है तथा इस से इन्सान को जीवन मिलता है इसे रूह (Spirit) कहा गया है।

आयात से यह भी स्पष्ट हुआ कि नुबुव्वत ख़ुदा की ओर से मिलने वाला एक विशेष उपहार है जिस से वह अपने उन बन्दों को अलंकृत करता है जिन को नुबुव्वत के कार्यभार के लिए चुन लेता है। दूसरे शब्दों में नुबुव्वत कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि मनुष्य अपने प्रयासों से उसे प्राप्त कर ले। बल्कि यह पूरी तरह वहबी अर्थात् ख़ुदा की तरफ़ से प्रदान की जाने वाली चीज़ है। जिस में मानव प्रयासों का कोई दखल नहीं।

4. अर्थात् जब भी अल्लाह तआला की तरफ़ से वह्य आई है, तौहीद ही के पैग़ाम को ले कर आई है। इस लिए तमाम नबियों की शिक्षा तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद ही की शिक्षा थी और तक्रवा (ईश-भय) ही की बुनियाद पर उन्होंने जीवन बिताने के निर्देश दिये थे।

स्पष्ट हुआ कि जिन धर्मों में भी बहुदेववाद की शिक्षा पाई जाती है उस को किसी नबी से सम्बन्ध बताना कदापि सही नहीं है। और न ऐसी चीज़ “वह्य” या ख़ुदा का कलाम हो सकती है।

5. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट १२४ में गुज़र चुकी।

6. अर्थात् मनुष्य अपनी इस हक़ीक़त को भूल गया कि वह कैसी तुच्छ चीज़ से पैदा किया गया है और बहस करने लगा कि दूसरा जीवन किस तरह संभव है। यदि वह अपनी पहली पैदाइश पर चिन्तन करता तो उस पर यह वास्तविकता उजागर होती कि जो ख़ुदा पानी की एक तुच्छ बूँद से उच्च क्षमताओं वाला मनुष्य पैदा कर सकता है वह निश्चय ही उस को दोबारा पैदा करने में सक्षम है। और इस वास्तविकता को यदि मनुष्य ने पा लिया तो वह ख़ुदा के मुक़ाबले में बहस करने और झगड़ने का दुस्साहस कभी न करता।

7. अर्थात् उन के बालों और उन से तुम गर्म वस्त्र बना लेते हो।

8. अर्थात् कुछ सवारी के काम आते हैं और कुछ हल चलाने के। फिर उन से दूध भी प्राप्त होता है और उन का चमड़ा भी काम आता है इस प्रकार उन से कई तरह के लाभ प्राप्त होते हैं।

9. अर्थात् उन का गोश्त तुम्हारे लिए ख़ुराक का काम देता है।

10. चूँकि इन चार पायों से तरह तरह के लाभ प्राप्त होते हैं और वह वंशों को बढ़ाने के लिए भी पाले जाते हैं जो धन उपार्जित करने का एक माध्यम है इस लिए वह दृश्य मनुष्य के

मन में भला और सुन्दर लगने लगता है जब वह उन को चरा कर वापस लाता है या चरने के लिए छोड़ देता है।

स्पष्ट रहे कि कुर्आन नाज़िल होने के समय अरबों में चौपाये पालने का प्रचलन था तथा यह उन का व्यवसाय भी था। इस लिए कुर्आन ने उस नेमत का एहसास दिलाने के लिए उस का चित्रण प्रस्तुत किया है।

11. उस ज़माने में ऊँट और बैल बोझ ढोने का बहुत बड़ा साधन थे।

12. अल्लाह करुणामय है इस लिए उस ने ऐसी चीज़ें इन्सान के लिए पैदा की जो उस को परिश्रम और कठिनाइयों से बचाने वाली हैं। और वह मेहरबान है इस लिए मनुष्य को तरह तरह की नेमतें प्रदान कीं।

13. ऊपर उन मवेशियों का वर्णन था जिन को अरबी में “अन्आम” कहा जाता है अर्थात् ऊँट, गाय, भेड़ और

बकरी। उन के बारे में फ़रमाया कि **مِنْهَا تَأْكُلُونَ** अर्थात् “इन से तुम खुराक प्राप्त करते हो” लेकिन यहाँ घोड़े, खच्चर और गधे के बारे में फ़रमाया कि वे इस लिए पैदा किये गए हैं ताकि तुम उन पर सवार हो। इस लिए यह इशारा निकलता है कि वे जानवर खाने के लिए हैं और ये सवारी के लिए। मानव मन भी घोड़े, खच्चर और गधे के खाने से परिचित नहीं है।

14. संभवतः उन शक्तियों की ओर संकेत है जो उस समय मनुष्य की जानकारी में थी मगर बाद की मालूमात तथा रहस्योद्घाटनों से इन ही की बदौलत मनुष्य को यातायात के आधुनिक साधन उपलब्ध हुए। जैसे भाप, पेट्रोल, बिजली आदि जिन से, मोटरें, रेल, हवाई जहाज़ आदि चलते हैं और अल्लाह ही जानता है कि और क्या चीज़ें हैं जो उस ने मनुष्य की सेवा के लिए पैदा की हैं।

उस ने रात और दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखा है और तारे भी उस के आदेश से वशीभूत हैं। इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। (अल-कुर्आन)

9. और अल्लाह तक सीधी राह पहुँचती है ¹⁵ और ऐसी भी राहें हैं जो टेढ़ी हैं ¹⁶। और वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता ¹⁷।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ⑩

10. वही है जिस ने आसमान (ऊपर) से पानी बरसाया जो तुम्हारे पीने के भी काम आता है और उस से वनस्पति भी उगती हैं जिन में तुम मवेशियों को चराते हो।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ⑪

11. वह इस से तुम्हारे लिए खेती, जैतून, खजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल पैदा करता है। निश्चय ही इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सोच विचार करने वाले हैं ¹⁸।

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑫

12. उस ने रात और दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखा है ¹⁹ और तारे भी उस के आदेश से वशीभूत हैं ²⁰। इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं ²¹।

وَسَخَّرَ لَكُمْ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالتَّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑬

13. और ज़मीन में भी जो रंग बिरंग की चीज़ें पैदा कीं उस में भी उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो नसीहत हासिल करने वाले हैं ²²।

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَذَكَّرُونَ ⑭

14. वही है जिस ने समुद्र को वशीभूत कर दिया ताकि तुम उस से ताज़ा गोश्त (निकाल कर) खाओ ²³। उस से ज़ेवर निकालो जिस को तुम पहनते हो ²⁴। तुम देखते हो कि नौकाएँ पानी का सीना चीरती हुई चलती हैं। यह इस लिए है ताकि तुम उस का फ़ज़ल (अर्थात् अनुग्रह) तलाश करो ²⁵ और उस के शुक्रगुजार (अर्थात् कृतज्ञ) बनो।

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَكُمْ تَكُونُوا مِنْهُ حِمًّا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلَ كَمَا مَوَاجِرُ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑮

15. और उस ने ज़मीन में पहाड़ स्थापित किये कि वह तुम को ले कर डगमगाने न लगे ²⁶। उस ने नदियाँ निकाल दीं और रास्ते निकाल दिये ²⁷ ताकि तुम राह पाओ ²⁸।

وَالْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑯

15. अर्थात् अक्रीदा और अमल की जो सीधी राह है वही अल्लाह तक पहुँचने वाली है। मनुष्य इसी पर चल कर अल्लाह को पा सकता है और उस की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। इस सीधी राह का परिभाषिक नाम इस्लाम है जिस की ओर कुर्आन बुला रहा है।

ऊपर की आयत में अल्लाह की उस नेमत का उल्लेख हुआ था कि उस ने सवारी के लिए जानवर पैदा कर दिए। इस से राह और मन्ज़िल का परिदृष्ट आप ही आप उभर रहा था। इस अवसर के लिहाज से पढ़ने वाले के ज़ेहन को आन्तरिक एवं वास्तविक मन्ज़िल की ओर मोड़ दिया गया कि तौहिद ही की राह सीधी राह है और वही खुदा तक पहुँचती है। इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि कुर्आन की आयतें किस प्रकार परस्पर संबद्ध हैं। चूँकि कुर्आन के समक्ष मन और मस्तिष्क का निर्माण है इस लिए वह अवसर के लिहाज से उच्चतर वास्तविकताओं की ओर ज़ेहन को मोड़ता है और इस पहलू से आयतों के बीच गहरी सम्बन्धता होती है।

16. अर्थात् तौहिद के अलावा जो इस्लाम की राह है। दूसरी राहें सीधी नहीं हैं बल्कि टेढ़ी हैं और वह हरगिज़ खुदा तक नहीं पहुँचती। कोई इस भ्रम में न रहे कि किसी भी राह को अपना कर के आदमी खुद को पा सकता है और आदमी एक खुदा को माने या उस का साझीदार ठहराए उस से न लक्ष्य बदलता है और न परिणाम में कोई अन्तर होता है।

वर्तमान युग में अवसरवादी लोग राजनीतिक लाभ के वास्ते शिर्क और बुत परस्ती की राह को भी तौहिद के बराबर और इस्लाम के साथ बहुदेववादी तथा असत्य धर्मों को भी समान ठहराने में अपने वक्तव्य बड़े लुभावने अन्दाज़ में व्यक्त कर रहे हैं। कुछ उदाहरण देखिए :-

“तमाम धर्मों की आत्मा एक है यद्यपि इस के रूप अनेक एवं भिन्न हैं। बिल्कुल उसी प्रकार से जैसे कि पानी की वास्तविकता एक है, जो कुएँ से भी प्राप्त हो सकता है, खेतों से भी प्राप्त हो सकता है और दरियों के घाटों से भी प्राप्त हो सकता है।”

(गगन का मज़ाहिबे-आलम विशेषांक पृष्ठ ६४)

“दुनिया की तमाम धारणाएँ व आस्थाएँ एक ही वृक्ष की शाखाओं की तरह हैं और हर शाख एक दूसरे से पृथक् है और अपनी प्रमुखता रखती है। मगर उन शाखाओं का स्रोत अथवा केन्द्र एक ही है।”

(गगन का मज़ाहिबे-आलम विशेषांक पृष्ठ ८१८)

ये दोनों उदाहरण गुमराह करने वाले हैं क्योंकि जिस पानी में शिर्क की गन्दगी मिल गई हो वह तौहिद के सवच्छ स्रोत की तरह कैसे हो सकता है। और जो वृक्ष कड़वे कसैले फल

देता हो वह उस वृक्ष की भाँति कैसे हो सकते हैं जो मीठे फल लाता है?

17. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २७१।

18. अर्थात् रोज़ाना की जिन्दगी में मनुष्य खाने पीने की जिन नेमतों से लाभ उठाता है उन पर यदि वह थोड़ी भी चिन्तन करे तो अपने ख को पहचान ले जिस ने उसे पैदा किया है। वही उस का वास्तविक परोपकारी है जिस ने तरह तरह की नेमतों से उसे सुशोभित किया है।

आज का मनुष्य अपनी चिन्तन शक्ति को यह जानने के लिए तो उपयोग में लाता है कि खाने की फ़लों चीज़ में किस प्रकार की विटामिन्स हैं और कैलोरीज़ (Calories) की कितनी मात्रा पाई जाती है किन्तु यह सोचने का कष्ट नहीं उठाता कि ये चीज़ें किस की प्रदान की हुई हैं और इस बख्शिष से लाभान्वित होते हुए उस हस्ती के बारे में उस की भावनाएँ क्या होनी चाहियें और उस के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए जिस ने ये चीज़ें उस को प्रदान की हैं। मनुष्य जब अपनी चिन्तन शक्ति को इस मक़सद के लिए इस्तेमाल नहीं करता तो वह मात्र पेट और धन का गुलाम बन कर रह जाता है।

19. वशीभूत कर रखा है, अर्थात् अपनी अथाह शक्ति एवं सामर्थ्य से उन को ऐसा बना दिया है कि वे तुम्हारी सेवा और तुम्हें लाभ पहुँचाने के काम में लगे हुए हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इब्राहीम नोट ४१।

20. तारों के कुछ लाभ तो बिल्कुल स्पष्ट हैं जैसे उन का आसमान की शोभा बनना जिस से मनुष्यों में निहित सौंदर्य अभिरुचि की संतुष्टि होती है। उन के उदय एवं अस्त से समय का निर्धारण करने में सहायता होती है। वे दिखाएँ ज्ञात करने का साधन हैं अतः बियाबान और समुद्री सफ़र में उन के ये लाभप्रद पक्ष बिल्कुल स्पष्ट हैं। इन लाभों के अलावा वे हमारी किस किस तरह सेवा कर रहे हैं वह अल्लाह ही बेहतर जानता है।

21. अर्थात् यदि इन्सान सामान्य अथवा सहज बुद्धि (Common Sense) ही का उपयोग करे तो वह यह महसूस किये बिना नहीं रहेगा कि सृष्टा ने न केवल ज़मीन पर उस के लिए अपनी नेमतों का भंडार खोल दिया है बल्कि आसमान में भी उस के लिए महफ़िल सजाई है और उस की सेवा का भरपूर सामान किया है। यह एहसास जब मनुष्य में पैदा हो जाता है तो उस पर हिदायत की राह खुल जाती है।

22. अर्थात् क्या ये रंग बिरंग की चीज़ें जो ज़मीन में फैली हुई हैं, आर्ट का बेहतरीन नमूना नहीं हैं और क्या इस से तुम्हें कोई सबक नहीं मिलता? शिक्षा लेने वाले तो पते पते

पर उस की कारीगरी के हाथों का लिखा हुआ पाठ पढ़ लेते हैं।

23. अर्थात् समुद्र को भी अल्लाह तआला ने अपनी अथाह शक्ति एवं सामर्थ्य से मनुष्यों के लिए लाभदायक बना दिया है अतः समुद्र मनष्य के लिए मछलियों के रूप में अच्छी खुराक उपलब्ध करते हैं।

24. अर्थात् मोती, मरजान और सीप जिन के आभूषण औरतें पहनती हैं जो मानव जाति ही का अंग है। अतः अल्लाह का यह उपकार पूरी मानव जाति पर है।

25. अर्थात् तिजारती सफ़र कर के अपनी आर्थिक ज़रूरतों

को पूरा करने के वैध और जायज़ तरीक़े अपनाओ।

26. ज़मीन का ३/४ भाग समुद्र से ढका हुआ है और पूरा पृथ्वीमण्डल हवा में लटका हुआ है इस लिए संभव है कि जिस प्रकार नौका पानी में हिचकोले खाती है और उस में बोझ डाल देने से ठहराव की सूरत पैदा हो जाती है। उसी प्रकार शुरु में पृथ्वी की दशा भी विचलन रही हो और उस में पहाड़ों के बोझ डाल देने से संतुलन स्थापित हो गया हो।

27. मुग़द कुदरती रास्ते हैं।

28. अर्थात् अपनी मन्जिल को पहुँच सको।



और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते हैं वे कोई चीज़ भी पैदा नहीं करते बल्कि स्वयं पैदा की हुई वस्तु हैं। वे मुर्दा हैं न कि ज़िन्दा और उन्हें यह भी नहीं मालूम कि वे कब उठाए जाएंगे। तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है, मगर जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल इन्कार पर अड़ गए हैं और वे घमंड में पड़ गए हैं। (अल-कुर्आन)

16. और उस ने दूसरे चिन्ह भी रखे ²⁹ और सितारों से भी लोग राह पाते हैं ³⁰।

وَعَلَّمَتْهُمُ الْبَلَدَ لَمْ يَهْتَدُوا ۝ (१५)

17. फिर क्या जो पैदा करता है वह उन की तरह है जो कुछ भी पैदा नहीं करते ? ³¹ क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।

أَفَنُ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ (१६)

18. अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते ³² निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है ³³।

وَأَنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْنَهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ (१७)

19. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ दिखाते हो ³⁴।

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تَعْلِنُونَ ۝ (१८)

20. और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते हैं वे कोई चीज़ भी पैदा नहीं करते बल्कि स्वयं पैदा की हुई वस्तु हैं। ³⁵

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝ (१९)

21. वे मुर्दा हैं न कि ज़िन्दा और उन्हें यह भी नहीं मालूम कि वे कब उठाए जाएंगे ³⁶।

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝ (२०)

22. तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है, मगर जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल इन्कार पर अड़ गए हैं और वे घमंड में पड़ गए हैं ³⁷।

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝ (२१)

23. निस्संदेह अल्लाह जानता है जो कुछ ये छिपाते हैं और जो कुछ ये ज़ाहिर करते हैं। वह अहंकार में डूबे लोगों को हरागिज़ पसंद नहीं करता।

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝ (२२)

24. और जब उन से पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो कहते हैं, गुजरे हुए लोगों के फ़साने ³⁸।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ (२३)

25. ताकि वे क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे पूरे उठाएँ और उन लोगों के भी बोझ का एक हिस्सा, जिन्हें ये ज्ञान के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं ³⁹। तो देखो क्या ही बुरा बोझ हैं जो ये उठाएंगे !

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوهُمْ بَغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا إِسَاءَ مَا يَزْمُرُونَ ۝ (२४)

29. अर्थात् ऐसे चिन्ह जिन को देख कर मुसाफिर अपना रास्ता पहचान सकें।

30. तारे दिशाएँ मालूम करने का साधन हैं इस लिए प्राचीन युग में मुसाफिर इन को देख कर रहनुमाई हासिल करते थे। और आज कल के ज़माने में भी जहाज़रानी (Navigation) के काम में उन से रहनुमाई प्राप्त की जाती है।

31. अर्थात् जब यह एक अखण्डनीय सत्य है कि सारी नेमतें अल्लाह ही की पैदा की हुई और उसी की प्रदान की हुई हैं तो वह पूज्य एवं उपास्य की श्रेणी में हुआ। किन्तु जिन का सृष्टि में कोई सहयोग एवं हस्तक्षेप नहीं बल्कि स्वयं एक सृष्टि हैं वह पूज्य एवं उपास्य की श्रेणी में कैसे आ सकते हैं ? यह सरासर तर्क, बुद्धि एवं न्याय के विरुद्ध बात है कि सृष्टा और सृष्टी को एक ही सतह पर रखा जाए। और दोनों के अधिकार एवं कार्यक्षेत्र समान स्वीकार कर लिए जाएँ। या सृष्टा की श्रेणी घटा कर उस को सृष्टि की श्रेणी में ला रखा जाए। बहुदेववादियों की असल गुमराही यही है कि वे सृष्टा और सृष्टि में अन्तर नहीं समझते और सृष्टा के गुणों और उस के स्वामित्व एवं अधिकार में उस को साझीदार (Partner) बताते हैं जो न केवल यह कि कुछ भी पैदा नहीं कर सकता बल्कि स्वयं पैदा किया हुआ (सृष्टि) है। बुत परस्ती हो या बुजुर्ग परस्ती सभी इसी ग़लत धारणा का परिणाम हैं।

32. इस की व्याख्या सूरह इब्राहीम नोट ४३ में गुजर चुकी।

33. अल्लाह क्षमा करने वाला है, इस लिए वह तुम्हें बुला रहा है कि उस की नेमतों के क्रदरदान बन कर उस की क्षमा की ओर लपको। और वह अत्यंत दयावान है इस लिए वह चाहता है कि तुम उस की दास्ता स्वीकार कर के उस की दयावान छाया में आ जाओ।

34. यह चेतावनी है कि यदि तुम अल्लाह की नेमतों का इन्कार करते हो तो याद रखो अल्लाह तुम्हारे खुले और छिपे सब को अच्छी तरह जानता है और एक दिन आने वाला है जब वह यह सब बातें तुम्हारे सामने खोल कर रख देगा।

35. यहाँ विशेष रूप से बहुदेववादियों के उन पूज्यों एवं उपास्यों का वर्णन हुआ है जो बीते दिनों के पूर्वज थे। जैसा कि बाद की आयत से स्पष्ट है।

36. मुराद वे गुजरे हुए पूर्वज हैं जिन को बहुदेववादी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पुकारते थे। उन से फ़रियाद करते दुआएँ माँगते और उन को अल्लाह के समक्ष अपना सिफ़ारिशी ठहराते थे यहाँ उन के इसी शिर्क एवं बुतों की पूजा अर्चना का खण्डन करते हुए फ़रमाया कि वे पहली बात तो ज़िन्दा ही नहीं हैं कि तुम्हारी फ़रियाद सुन सके क्यो

कि वे कभी के दुनिया से उठ गए। रह गई यमलोक में उन की आत्माएँ तो ये भी नहीं जानती कि क्रियामत कब आएगी और उन्हें कब क़ब्रों से उठाया जाएगा। और ये आत्माएँ जब अपना हाल नहीं जानती, तो तुम्हारे हाल को जानने, तुम्हारी पुकार को सुनने और तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करने पर किस तरह सक्षम हो सकती हैं? आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तो सब से पहले उस परोक्ष ज्ञान (इल्मे-ग़ैब) की आवश्यकता है जिस के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति का हाल मालूम हो और उस की पुकार सुनी जाए। यह ज्ञान अल्लाह का विशिष्ट गुण है जिस में उस के सिवा कोई साझीदार नहीं।

मृत्यु पाये हुए मनुष्यों को खुदा की तरह हर जगह उपस्थित तथा हर हाल से परिचित समझना एक अटकल पच्चू बात है जिस का कोई प्रमाण नहीं, साक्ष्य नहीं और तर्क नहीं। और यही शिर्क अर्थात् बहुदेववाद की जड़ है।

स्पष्ट रहे कि अरब के बहुदेववादी यद्यपि मृत्यु के बाद मिलने वाले जीवन के क़ायल न थे किन्तु जिन गुजरे हुए पूर्वजों से उन्हें आस्था थी उन के बारे में वे समझते थे कि उन की आत्माएँ खुदा की व्यवस्था में हाथ बटाती हैं, वे हमारी फ़रियाद को पहुँच सकती हैं, हमारी क्रिस्मतों पर प्रभाव डाल सकती हैं। वे अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करा लेंगी और इन का दामन पकड़ कर अथवा इन के सहारे तथा इन के माध्यम से अल्लाह के निकट हो सकते हैं। इस लिए आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन को पुकारने और इन से सहयोग माँगने में कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु कुर्आन ने इस पूरी धारणा ही को ग़लत और बहुदेववादी बताया।

आम तौर से कुर्आन के टीकाकारों (मुफ़स्सिरों) ने इस आयत को बुतों पर लागू किया है किन्तु आयत के शब्द इस भावार्थ का साथ नहीं देते। विशेष रूप से ये शब्द कि “ इन्हें यह भी नहीं मालूम कि वे कब उठाए जाएँगे।” इस बात में बिलकुल स्पष्ट है कि इस से मुराद इन्सान ही हो सकते हैं न कि बुत, इस लिए इस का भावार्थ सुनिश्चित करने में किसी संकोच की आवश्यकता नहीं है।

37. अर्थात् खुदा का एक होना तो एक खुली हुई वास्तविकता है, किन्तु चूँकि तौहीद को मानने से आखिरत को मानना अनिवार्य ठहरता है इस लिए इस को वे लोग किसी भी हाल में स्वीकार करने को तैयार नहीं होते जो दुनिया में स्वाधीन जीवन व्यतीत करना चाहते हैं और असत्य एवं ग़लत सिद्धान्त के पीछे चलने के फलस्वरूप इन की मानसिकताएँ ऐसी बन गई हैं कि वे सत्य के आगे झुकने को अपनी तौहीन समझते हैं।

38. कुर्आन में सत्य और असत्य की कशमकश का इतिहास और गुजरी हुई क़ौमों के वृतांत बयान हुए हैं। उस ने

जेहनों में एक बेचैनी तो पैदा कर ही दी थी, इस लिए लोग अपने सरदारों से पूछते कि के यह कुर्आन कैसा कलाम है। वे निस्संकोच कह देते कि यह गुजरी क़ौमों के वृत्तांत मात्र हैं, हक़ीक़त कुछ भी नहीं।

39. अर्थात् ये सरदार और लीडर जो जनता को गुमराह कर रहे हैं, क़ियामत के दिन न केवल अपने गुनाहों का बोझ उठाए हुए होंगे बल्कि साथ ही उन लोगों के गुनाहों के बोझ का एक हिस्सा भी उन्हें उठाना पड़ेगा जिन्हें उन्होंने ने गुमराह किया था। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:-

ومن دعا الى ضلالة كان عليه من الاثم مثل آثم

من تبعه لا ينقص ذلك من آثامهم شيئاً. (مسلم)

अर्थ : और जिस ने गुमराही की तरफ़ बुलाया, उस पर गुनाह का बोझ उसी प्रकार होगा जिस प्रकार कि गुमराही

स्वीकार करने वालों पर होगा, बग़ैर इस के कि उन के गुनाहों में कोई कमी हो।” (मुस्लिम)

और “ज्ञान के बग़ैर” का अर्थ यह है कि ख़ुदा और मज़हब के बारे में ये जो कुछ कहते हैं वे निरी जिहालत की बातें हैं। सच्चे ज्ञान की रौशनी उन्हें प्राप्त ही नहीं है। स्पष्ट है ख़ुदा के बारे में वही बात ज्ञान पर आधारित हो सकती है जो ख़ुदा ने बतलाई हो न कि वह जो आदमी अपनी तरफ़ से उस के बारे में कहे। और ख़ुदा के बतलाने का तरीक़ा यह है कि वह अपने नबियों पर प्रकाशना (वहय) भेजता है जो ज्ञान का विशिष्ट माध्यम है। इस लिए जो बात नबियों के माध्यम से हम को मिलती है वह ठोस ज्ञान पर आधारित होती है।

स्पष्ट हुआ के कि तमाम बहुदेववादी दर्शन और अनीश्वरवादी सिद्धान्त चाहे वे कितने ही वैज्ञानिक रंग में प्रस्तुत किये गए हो सरासर जिहालत हैं। वास्तविक ज्ञान से इन का दूर का भी वास्ता नहीं है।



फिर क्रियामत के दिन वह उन्हें रुस्वा करेगा और पूछेगा, कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन के बारे में तुम लड़ते थे ?(उस समय) वे लोग जिन को ज्ञान प्रदान हुआ था पुकार उठेंगे कि आज रुस्वाई और ख़राबी है काफ़िरों के लिए ।(अल-कुर्आन)

26. इन से पहले के लोगों ने भी चालें चली थीं, परन्तु अल्लाह ने उन के (मक्कारी के) भवन बुनियाद से उखाड़ दिए तो छत ऊपर से उन पर आ गिरी ⁴⁰ और अज़ाब उन पर उस राह से आया जिस का उन्हें गुमान भी न था।

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى
اللَّهُ بُدْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ
فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

27. फिर क्रियामत के दिन वह उन्हें रुस्वा करेगा और पूछेगा, कहाँ है मेरे वे साझीदार जिन के बारे में तुम लड़ते थे ?⁴¹ (उस समय) वे लोग जिन को ज्ञान प्रदान हुआ था पुकार उठेंगे कि आज रुस्वाई और खराबी है काफ़िरों के लिए ⁴²।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ
الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

28. उन के लिए जिन्हें फ़रिश्ते इस हाल में मौत देते हैं ⁴³ कि वे अपनी जानों पर स्वयं जुल्म कर रहे होते हैं ⁴⁴। उस समय वे विवशतापूर्ण विनम्रता दिखाने लग जाते हैं कि हम तो कोई बुराई नहीं कर रहे थे। कैसे नहीं, तुम जो कुछ कर रहे थे अल्लाह उस से भली भाँत परिचित है ⁴⁵।

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ طَالِبِينَ أَنْفُسِهِمْ قَالُوا السَّلَامُ
مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ بَلَى إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

29. दाखिल हो जाओ जहन्नम के दरवाजों में। इसी में तुम्हें सदैव रहना है ⁴⁶। तो देखो क्या ही बुरा ठिकान है अहं करने वालों का।

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فُلْجِسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

30. और जब अल्लाह से डरने वालों से पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है। जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छाई के काम किये उन के लिए अच्छाई ही है ⁴⁷। और आखिरत (परलोक) का घर तो निश्चय ही बेहतर है। और क्या ही ख़ूब है मुत्तकियों (परहेज़गारों) का घर।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ
قَالُوا خَيْرٌ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا
حَسَنَةٌ وَلَكِنَّ الْأَخْرَةَ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

31. सदैव रहने के बाग़ जिन में वे दाखिल होंगे। उन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन के लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे ⁴⁸। इस तरह अल्लाह बदला देगा मुत्तकियों (परहेज़गारों) को।

جَدَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا
مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

32. जिन को फ़रिश्ते पाकीज़गी की हालत में ⁴⁹ मौत देते हैं। वे कहते हैं सलाम हो तुम पर। दाखिल हो जाओ जन्नत में अपने कर्मों के बदले ⁵⁰।

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

40. अर्थात् ऐसी कितनी ही क्रौमें इस से पहले गुज़र चुकी हैं जिन्होंने अपने रसूलों के विरुद्ध षडयंत्र रचे परन्तु शिर्क और कुफ्र की आधार शिला पर जो व्यवस्था उन्होंने स्थापित की थी रसूल के सच्चे सिद्धान्त ने उस की चूलें हिला दीं और फिर जब अल्लाह का फैसला लागू हुआ तो बहुदेववादियों का यह सिद्धान्त अपनी बुनियाद से उखड़ गया और उसे स्थापित करने वालों पर ऐसी आफ़त पड़ी कि बिलकुल तबाह हो कर रह गए। शिर्क और कुफ्र का यह परिणाम जिस रूप में प्रकट हुआ वह एक ऐसा प्रकोप था जिस ने उन के बनाये हुए भवनों को उन की क़ब्र बना दिया। मिसाल के तौर पर भूकम्प के झटकों ने नीचे से उन के भवनों की जड़ें हिला दीं और फिर छत समेत पूरे भवन उन के रहने वालों पर आ गिरे।

41. अर्थात् जिन को तुम ने मेरे ईश्वरत्व में साझीदार ठहराया था और इस के लिए तुम ने बड़े विवाद खड़े कर दिए थे, बताओ अब वे कहाँ गायब हो गए।

42. अर्थात् दुनिया में जिन को ज्ञान और सूझ बूझ दी गई थी दूसरे शब्दों में जो उस ज्ञान से लाभान्वित हुए थे जिस का मूलस्रोत अल्लाह की वहय उस की प्रकाशना है, वह हश्र के मैदान में बहुदेववादियों का यह हाल देख कर महसूस करेंगे कि बहुदेववादियों के जिस अन्जाम की ख़बर अल्लाह की वहय ने दी थी वह बिलकुल सामने है। अतः वे पुकार उठेंगे कि आज काफ़िरों को अपने बुरे अन्जाम को पहुँचना है। आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला क्रियामत के दिन ज्ञान वालों को किस प्रकार सम्मानित करेगा।

43. यह काफ़िरों के बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से स्पष्टीकरण है कि क्रियामत के दिन तो उन का वह अन्जाम होगा जो ऊपर बयान हुआ किन्तु अज़ाब में तो वे उसी समय पकड़ लिये जाते हैं जब फ़रिश्ते उन की रुहें निकालते हैं।

44. अर्थात् शिर्क, कुफ्र और बगावत कर के वे अपने ऊपर स्वयं जुल्म ढाते हैं क्योंकि वे अपनी आत्मा अपने ज़मीर की आवाज़ को जो तौहीद अथवा एकेश्वरवाद से ही परिचित है, दबाते हैं जिस के नतीजे में आत्मा का बल्कि पूरे व्यक्तित्व का विकास रुक जाता है या घट के रह जाता है।

45. अर्थात् मौत के फ़रिश्तों को देखते ही उन के घमंड एवं अहं का नशा उतर जाता है और अपनी सारी

बहसों ख़त्म कर के मान लेते और अनुपालन करने की बातें करते हैं उस समय उन पर ऐसा भय छा जाता है कि वे अपने बुरे कर्मों से इनकार करने लग जाते हैं किन्तु फ़रिश्ते उन के इस झूठ का खण्डन करते हुए कहते हैं कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से बेख़बर नहीं है कि तुम झूठ बोलकर छूट जाओ।

46. अर्थात् मुश्रिकों और काफ़िरों को फ़रिश्ते मौत के समय ही यह ख़बर दे देते हैं कि उन्हें क्रियामत के दिन जहन्नम में प्रवेश पाना है और उस यातना में हमेशा के लिए रहना है!

यह मामला मौत की सीमा आरंभ होते ही अर्थात् आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में पेश आता है। जिसे हदीस में क़ब्र बताया गया है।

47. ईश-परायणता, परहेज़गारी, तक्रवा और नेकी का रवैया अपनाने वालों को जो नेक बदला दुनिया में मिलता है वह है पाकीज़ा रोज़ी, पाकीज़ा जीवन, मन की शान्ति, ईमान की मिठास और सच्चा सम्मान एवं प्रतिष्ठा।

48. मनुष्य को तकलीफ़ इसी लिए होती है कि वह जो कुछ चाहता है वह उसे नहीं मिलता और दुनिया में यह संभव ही नहीं है कि मनुष्य की हर इच्छा पूरी हो। और न दुनिया में कोई ऐसा मनुष्य यहाँ तक कि बड़े से बड़ा राजा महाराजा भी ऐसा नहीं गुज़रा जिस की सारी इच्छाएँ पूरी हुई हों। अगर ऐसा हो तो दुनिया जन्नत बन जाए। परन्तु अल्लाह तआला ने इस संसार को इस उद्देश्य के लिए बनाया ही नहीं है। इस लिए किसी का इस संसार से यह आशा रखना कि उस की सारी इच्छाएँ व अभिलाषाएँ यहाँ पूरी हो जाएगी, मात्र ख़ाम ख़याली एवं व्यर्थ की बात है। अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के लिए आख़िरत में जन्नत बनाई है जिस की विशेषता और जिस का मूल परिचय ही यह है कि उस में प्रवेश पाने वाले की सारी इच्छाएँ एवं सारी अभिलाषाएँ पूरी होंगी। उस की हर तमन्ना वास्तविकता का रूप धार लेगी। उस के तमाम अरमान निकलेंगे। और उस की हर आरजू पूरी हो कर रहेगी।

49. अर्थात् उस हाल में कि उन की आत्मा शिर्क, कुफ्र, अहं, और पाप की गन्दगियों से बिलकुल پاک होते हैं।

50. सच्चे मुत्तकियों एवं परहेज़गारों को फ़रिश्ते जन्नत की खुशख़बरी मौत के समय ही दे देते हैं।



33. ये लोग इस के सिवा किस बात की प्रतिक्षा में हैं कि फ़रिश्ते उन के पास आ जाएं ⁵¹। या तुम्हारे रब का आदेश (फ़ैसला) आ जाए ⁵²। ऐसा ही उन लोगों ने भी किया था जो इन से पहले गुजर चुके। अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ
كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ
وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

34. तो उन के करतूतों की सज़ा उन को मिल कर रही और जिस चीज़ का वे मज़ाक उड़ाते थे। उसी ने उन को लपेट में ले लिया ⁵³।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَخَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾

35. बहुदेववादी कहते हैं कि अगर अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी की पूजा अर्चना न करते, न हम और न हमारे बाप दादा। और न हम उस के (आदेश के) बग़ैर किसी चीज़ को हaram ठहराते। ऐसा ही रवैया उन लोगों ने भी अपनाया था जो उन से पहले गुजर चुके ⁵⁴। तो क्या रसूलों पर साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देने के अलावा कोई और ज़िम्मेदारी है?

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ
مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ
كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

36. हम ने हर उम्मत में एक रसूल भेजा (इस हिदायत के साथ) कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत से बचो ⁵⁵। फिर कुछ को उस ने हिदायत दी और कुछ पर गुमराही छा गई ⁵⁶। तो ज़मीन में चल फिर कर देख लो की झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ
وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ
مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فسيروا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

37. अगर तुम इन की हिदायत की बड़ी चाह रखते हो तो अल्लाह ऐसे लोगों को हिदायत नहीं देता जिन को वह गुमराह कर देता है ⁵⁷। और उन का कोई सहायक नहीं हो सकता।

إِنْ تَحَرَّصَ عَلَى هُدًى مِنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

38. और यह अल्लाह की कड़ी क्रसमें खा कर कहते हैं कि जो मर जाता है उसे अल्लाह नहीं उठाएगा, क्यों नहीं? यह तो एक अनिवार्य वादा है जो उस के ज़िम्मे है किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं हैं ⁵⁸।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ
بَلَى وَعَدُّ أَعْلَى حَقًّا وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

51. अर्थात् मौत के फ़रिश्ते ।

52. अर्थात् अज़ाब ।

53. अर्थात् जिस अज़ाब का वे मज़ाक़ उड़ाते थे उस ने बुरी तरह उन को अपनी चपेट में ले लिया।

54. अर्थात् यह मात्र बहाने हैं सत्य को स्वीकार करने के दायित्व से बचने के लिए, और ऐसे ही बहाने एवं ऐसी ही बहसों इस से पहले की गुमराह क़ौमों भी करती रही हैं। अपनी गुमराही की ज़िम्मेदारी अल्लाह पर डालना उन ही लोगों का काम है जो ख़ुदा और उस के दीन के बारे में गंभीर नहीं होते।

55. यहाँ तागूत से मुराद बुत है, और उन को तागूत इस लिए कहा गया है कि आदमी उन की पूजा अर्चना कर के अल्लाह का विद्रोही और उद्वंड बन जाता है। गोया बुत उद्वण्डता एवं विद्रोह का द्वार एवं लक्षण हैं। और तागूत से बचने का मतलब बुतों की पूजा उपासना से बाज़ रहना है। अतः कुर्आन में दूसरी जगह फ़रमाया गया है।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَا بُرٌّ

إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَى - (सूरे मर्यात नंबर: १८)

अर्थ : “जिन्होंने तागूत की परस्तिश से दामन बचाया और अल्लाह की तरफ़ रूजू कर लिया उन के लिए खुशख़बरी है।” (सूरह जुमर: १७)

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ - (सूरे حج: ३०)

अर्थ : “बुतों की गन्दगी से बचो” (सूरह हज्ज: ३०)

وَأَجْنِبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ - (अब्राहیم: ३५)

अर्थ : (इब्राहीम ने दुआ की) मुझे और मेरी औलाद को बुतों की परस्तिश से बचा।” (सूरह इब्राहीम : ३५)

आयत का मतलब यह है कि बुत परस्ती जो हर ज़माने में ख़ुदा से विद्रोह का बहुत बड़ा माध्यम रही है, हर रसूल अपनी क़ौम को उस से बचने की हिदायत करता रहा है और उस की दअवत यही रही है कि एक ख़ुदा की इबादत करो । स्पष्ट रहे कि तागूत का भावार्थ शैतान पर भी लागू होता है और अन्य पूज्यों पर भी । उद्वण्ड पेशवाओं और लीडरों पर भी होता है। और ख़ुदा के क़ानून के मुकाबले में क़ानून गढ़ने वालों और अपने बनाए क़ानूनों के अनुसार फैसला करने वाले शासकों पर भी । मगर हर जगह अलग अलग भावार्थ लागू होंगे। यहाँ संदर्भ से प्रतीत होता है कि विशेष रूप से बुत परस्ती से बचने की हिदायत की जा रही है।

तागूत की और अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट ४१८ सूरह निसा नोट ११६ और १४३ तथा सूरह माइदा नोट १८०

56. अर्थात् उन रसूलों की सच्ची दअवत के फ़लस्वरूप एक गिरोह ने अल्लाह की तौफ़ीक़ से हिदायत पाई और दूसरा गिरोह अपनी हठधर्मी की वजह से हिदायत से महरूम रहा और उस पर गुमराही बुरी तरह छा गई।

57. अर्थात् जिन लोगों पर अल्लाह का वह नियम लागू हो गया कि जिस में पड़ कर आदमी गुमराह हो जाता है, उन पर हिदायत की राह कभी खुलने वाली नहीं चाहे तुम कितनी ही शिद्दत के साथ उन की हिदायत की इच्छा करो।

58. अर्थात् अल्लाह का पक्का वादा है कि क्रियामत के दिन सारे इन्सानों को जो मर चुके होंगे दोबारा ज़िन्दा करेगा ताकि प्रतिफल (इनाम और दण्ड) का मामला सामने लाए। किन्तु अधिकांश लोग इस वादे से बेख़बर हैं इस लिए वे बड़े विश्वास के साथ इस का खण्डन करते हैं। मगर इन की बेख़बरी से हक़ीक़त बदलने वाली नहीं है। दोबारा उठाया जाना सुनिश्चित है चाहे कोई उस पर ईमान लाए या न लाए ।



39. इस लिए कि ये जिस चीज़ में मतभेद कर रहे हैं उस को वह खोल दे और काफ़िरो को मालूम हो जाए कि वे झूठे थे ⁵⁹।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلَفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

40. जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो हमें केवल यही कहना होता है कि हो जा और वह हो जाती है ⁶⁰।

إِنَّا قَوْلُنَا شَيْءٌ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

41. जिन लोगों ने बाद इस के कि उन पर ज़ुल्म हुआ, अल्लाह की राह में हिज़्रत की ⁶¹ हम उन को दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे ⁶² और आख़िरत का अज़्र (बदला) तो कहीं बढ़ कर है, अगर वे जान लेते ⁶³।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا النَّبِيِّينَ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَاجِرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

42. जिन्होंने ने सब्र किया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

43. हम ने तुम से पहले भी आदमियों ही को रसूल बना कर भेजा था, जिन की तरफ़ हम वह्य करते रहे ⁶⁴। अगर तुम नहीं जानते तो “अहले-ज़िक्र” (जिन पर इस से पहले ज़िक्र नाज़िल हुआ था) पूछ लो ⁶⁵।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُوحِيَ إِلَيْهِمْ فَسَاءَ أَهْلُ الدِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

44. उन (रसूलों) को ख़ुली निशानियों और किताबों के साथ भेजा था। और (ऐ पैग़म्बर) तुम पर भी हम ने यह ज़िक्र (याद देहानी) नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों पर वह चीज़ स्पष्ट कर दो जो इन की तरफ़ भेजी गई है ⁶⁶ और ताकि वे चिन्तन करें।

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لُبِّينَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

45. फिर क्या ये लोग जो बुरी चालें चल रहे हैं इस बात से निर्भय हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे या ऐसी राह से उन पर अज़ाब आए जिस का उन्हें गुमान भी न हो।

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

46. या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले कि वे चल फिर रहे हों। ये लोग उस की पकड़ से हरगिज़ बच नहीं सकते।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلِبِهِمْ فَهُمْ مَاءٌ مِعْجَزِينَ ﴿٤٦﴾

59. अर्थात् खुदा और मज़हब के मामले में जो मतभेद लोगों के बीच पैदा हो गए और फिर कर्म की जो अलग अलग राहें हो गईं उन को देखते हुए यह आवश्यक है कि सब को दोबारा ज़िन्दा कर के इकट्ठा किया जाए और वास्तविकता को खोल कर दिखा दिया जाए। और जो लोग वास्तविकताओं का इन्कार करते रहे हैं उन का झूठा होना सिद्ध हो जाए ताकि वे अपने किए का मज़ा चखें। यह न्याय और इन्साफ़ का खुला तकाज़ा है। इस लिए दोबारा उठाए जाने की ख़बर बुद्धि के विरुद्ध नहीं बल्कि बुद्धि के अनुकूल है।

60. यह इन्कार करने वालों की उस आपत्ति का उत्तर है कि असंख्या मनुष्यों को दोबारा जीवित करना क्यों और कैसे संभव है? फ़रमाया अल्लाह जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो उसे कुछ करना नहीं पड़ता। वह हुक्म देता है कि हो जा और वह उसी समय हो जाता है। ऐसे महाशक्तिमान एवं सामर्थ्यवान हस्ती के लिए मुर्दों को जीवित करना कुछ भी मुश्किल नहीं।

सच्चाई यह है कि मनुष्य बड़ा तंग नज़र सिद्ध हुआ है। वह अल्लाह की कुदरत को अपने बनाए हुए पैमाने से नापता है और जो कुछ मौजूद है उसी को संभव समझा है। वह एक ऐसी वस्तु का जो कि मौजूद नहीं है को स्वीकार करने के लिए आमामादा नहीं होता चाहे उस को अस्तित्व में लाने की सूचना कायनात का बनाने वाला दे रहा हो।

61. हब्शा की हिज़रत की ओर संकेत है जो नुबुव्वत के पाँचवे साल घटित हुई थी मक्का में जिन लोगों ने इस्लाम कुबूल किया था उन पर बहुदेववादी तरह तरह के अत्याचार तोड़ रहे थे। वे उन को ज़मीर और मज़हब की आज़ादी देने के लिए तैयार नहीं थे। उन के इसी अन्याय और अत्याचार से मजबूर हो कर अपने दीन को बचाने की खातिर कुछ मुसलमानों ने हब्शा (अबी सीना) को हिज़रत की। पहला काफ़िला लगभग पंद्रह लोगों का था जिस में चार औरतें थी। बाद में यह संख्या ८३ तर पहुँच गई।

हब्शा की हिज़रत का सौभाग्य प्राप्त करने वालों में हज़रत उस्मान, आप की पत्नी रुक्न्या जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी थीं, हज़रत जुबैर बिन अलअवाम, हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़, हातिब बिन अम्र, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसी हस्तियाँ शामिल थीं (यह घटना विस्तार पूर्वक सीरत इब्ने हिशाम जिल्द १ पृष्ठ ३४३ से ३६४ में बयान हुई हैं।)

62. अल्लाह तआला का यह वादा मुहाजिरीन के पक्ष में पूरा हुआ। अतः हब्शा के बादशाह ने जो ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान रखता था उन को अपने देश में शान्ति से रहने की

अनुमति दी। और बहुदेववादियों के जो लीडर मक्का से उस को भड़काने के लिए हब्शा पहुँच गए थे उन का कोई प्रभाव उस पर नहीं हुआ। इतना ही नहीं बल्कि वह स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आया।

बाद में जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिज़रत कर गए तो ये मुहाजिरीन भी मदीना हिज़रत कर गए। यह उन की दूसरी हिज़रत थी। और मदीना में अल्लाह तआला ने मुहाजिरीन को वह सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की जिस का इस से पहले कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता था।

63. अर्थात् अगर इन मुहाजिरीन को इस बात का ज्ञान हो कि अल्लाह तआला ने उन के लिए कैसा कुछ इनाम तैयार कर रखा है तो वह सारे कष्ट और दुख जो हिज़रत की राह में वे उठा रहे हैं, भूल जाएँ।

64. मूल अरबी में शब्द “रिजालन” इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ “मर्द” है। इस से स्पष्ट हुआ कि मनुष्यों में से मर्द ही रसूल बना कर भेजे गए।

65. अहले-किताब से अभिप्रेत यहूदी और ईसाई हैं। जिन पर ज़िक्र अर्थात् अल्लाह की नसीहत नाज़िल हुई थी। इस नसीहत का जो भाग उन की किताबों में मौजूद है वह इस बात को सिद्ध करने के लिए काफ़ी है कि अल्लाह की तरफ़ से जो रसूल भी भेजे गए वे सब आदमी ही थे। कभी किसी फ़रिश्ते को रसूल बना कर किसी क्रौम की तरफ़ नहीं भेजा गया। यह एक स्पष्ट ऐतिहासिक सत्य है और यदि इस सत्य से कोई व्यक्ति परिचित नहीं है तो अहले-किताब से पूछ कर अपने को संतुष्ट कर सकता है।

ध्यान रहे कि अहले-किताब अर्थात् यहूदी और ईसाई दोनों इस बात के क्रायल थे कि रसूल इन्सानों ही में से बनाए जाते रहे हैं। मिसाल के तौर पर मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम इन्सान ही थे। अतः बाइबिल में उन के बचपन के हालात भी बयान हुए हैं कि उन का पालन पोषण किस प्रकार हुआ अथवा वह किसी प्रकार पले बढ़े। इस लिए कुर्आन ने बहुदेववादियों को जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का इन्कार इस कारण पर कर रहे थे कि आप इन्सान हैं, एक ऐसी बात की ओर ध्यान दिलाया जो अहले-किताब के यहाँ मान्य एवं जानी मानी थी।

इस से यह बात भी मालूम हुई कि कुर्आन की जिन बातों का अनुमोदन पिछली किताबों से होता है उन का हवाला देने में हर्ज नहीं है।

कुछ लोगों ने कुर्आन के इस इर्शाद से कि अगर तुम नहीं जानते तो अहले-किताब (जिन पर इन से पहले ज़िक्र आ चुका है) पूछ लो, फ़िक्ही मस्लक की तक्लीद (अंधानुसरण) को

जायज़ सिद्ध करना चाहा है। हालांकि इस आयत का फ़िक्ही और शख़शी तक्लीद अर्थात् किसी मस्लक एवं व्यक्ति के अंधानुसरण से दूर का भी वास्ता नहीं। कुर्आन ने एक जानी मानी वास्तविकता के बारे में जिस का एक क्रम से पाया जाना बिल्कुल सिद्ध एवं सर्वमान्य था, अहले-ज़िन्न से पुष्टि करने के लिए कहा था। ताकि जो संदेह मुन्किरीन को हो रहा था वह दूर हो जाए। किन्तु अंधानुकरण करने वाले धर्म शास्त्रियों (फ़ुक़हा) के निष्कर्षण को व्यक्ति के अंधानुकरण के लिए दलील बनाते हैं। जब कि निष्कर्षण द्वारा बताए गए मसलों में ग़लती होने की भी संभावना है और इन की हैसियत बहरहाल स्थापित सत्य की नहीं है। इस के अलावा कुर्आन ने किसी शर्त के बग़ैर अहले-ज़िन्न से पूछने के लिए कहा है। अर्थात् टकसाली विद्वान की क़ैद नहीं हैं बल्कि जानने वाला होना काफ़ी है।

66. अर्थात् अल्लाह तआला ने जो कुछ नाज़िल फ़रमाया है उस को स्पष्ट रूप से लोगों के सामने बयान कर दे। आगे

आयत ६४ में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी तरह का निर्देश दिया गया है।

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ
الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ (نحل: १२)

अर्थ: “ हम ने यह किताब तुम पर इसी लिए उतारी है ताकि तुम लोगों को उन के मतभेदों की हक़ीक़त खोल कर बयान कर दो। ”

इस लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुर्आन की आयतें उस की शिक्षाएँ और उस के आदेशों की जिस तरह व्याख्या की है उस के मर्म एवं भेदों को जिस प्रकार खोला है वह अल्लाह की किताब की प्रमाणीत व्याख्या एवं स्पष्टीकरण है। और हमारे लिए उस के जानने का माध्यम सही हदीसों हैं।



क्या ये लोग देखते नहीं कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है उस की छाया किस प्रकार अल्लाह के आगे सज्दा करते हुए दाहिने और बाएँ गिरती है। सब इस के आगे पस्त (निम्न) हैं । आसमानों और ज़मीन में जितने जानदार हैं सब अल्लाह ही को सज्दा करते हैं और फ़रिश्ते भी। वे उद्दण्डता नहीं दिखाते।
(अल-कुर्आन)

47. या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले कि वे भय की हालत में हों ⁶⁷। वास्तव में तुम्हारा रब बड़ा सहानुभूति एवं दयावान है ⁶⁸।

أَوْ يَأْخُذْهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٦٨﴾

48. क्या ये लोग देखते नहीं कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है उस की छाया किस प्रकार अल्लाह के आगे सज्दा करते हुए दाहिने और बाएँ गिरती है ⁶⁹। सब इस के आगे पस्त (निम्न) हैं ⁷⁰।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَتَفَعِلُونَ أَظْلَلَهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ ذَاخِرُونَ ﴿٦٩﴾

49. आसमानों और ज़मीन में जितने जानदार हैं सब अल्लाह ही को सज्दा करते हैं ⁷¹ और फ़रिश्ते भी। वे उद्दण्डता नहीं दिखाते।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٧٠﴾

50. अपने रब से जो उन के ऊपर है डरते हैं और जो आदेश दिया जाता है उस का पालन करते हैं ⁷²।

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٧١﴾

51. और अल्लाह ने फ़रमाया दो ख़ुदा न बनाओ ख़ुदा तो बस एक ही है ⁷³। अतः मुझ ही से डरो।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ الْوَاحِدِ فَإَيُّهَا فَارْهُبُونِ ﴿٧٢﴾

52. उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और उसी के लिए है लाज़मी इताअत ⁷⁴। फिर क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर औरों से डरोगे?

وَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصْبَاْ أَفْغَيْرِ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٧٣﴾

53. तुम को जो नेमत भी मिली है, अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी के आगे गिड़गिड़ाने लगते हो ⁷⁵।

وَمَا لَكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ قَالَ لِيهِ تَجْعَرُونَ ﴿٧٤﴾

54. फिर जब वह तुम्हारी तकलीफ़ को दूर कर देता है तो तुम में से एक गिरोह ⁷⁶ अपने रब का साझीदार ठहराने लगता है ⁷⁷।

ثُمَّ إِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٧٥﴾

55. ताकि वे हमारी दी हुई नेमत की नाशुक्री करें, तो लाभ उठा लो। बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٧٦﴾

67. अर्थात् पहले से डरे हुए तथा भय की हालत में हों और फिर खुदा की तरफ से पकड़ हो जाए। और मुसीबत पर मुसीबत का मज़ा उन्हें चखना पड़े। इन आयतों के अवतरण के कुछ सालों बाद कुछ इसी प्रकार की परिस्थिति से काफ़िरों को दोचार होना पड़ा। बद्र की जंग एक भय की हालत थी जिसमें मुसलमानों की तलवार काफ़िरों पर अल्लाह का प्रकोप बन कर गिरी।

68. अल्लाह सहानुभूति एवं दयावान है इस लिए वह दण्ड देने में जल्दी नहीं करता बल्कि मोहलत देता है ताकि तुम संभल जाओ और उस की दया के पात्र बनो।

69. यह बात सामान्य रूप से देखने में आती है कि हर चीज़ की छाया ज़मीन पर गिरती है। छाया का ज़मीन पर गिरना इस बात का प्रमाण है कि हर चीज़ खुदा के क़ानून में जकड़ी हुई है और वह अपनी छाया को ज़मीन पर गिरने से नहीं रोक सकती और ज़मीन पर छाया का गिरना इस बात का परिचायक है कि वह अल्लाह को सज्दा कर रही है।

फिर यह कि छाया सूरज के विपरीत दिशा पर गिरती है। सूरज पूरब में है तो छाया पश्चिम की ओर गिरेगी वह इस बात का प्रमाण है कि साया सूरज को सज्दा नहीं करता बल्कि अपने रब का सज्दा करता है। काफ़िर का मामला भी अजीब है, वह अल्लाह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं किन्तु उस की छाया अल्लाह ही को सज्दा करती है। यदि वह इस बात पर ग़ौर करे तो तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्वीकार कर ले और अपने को अल्लाह के आगे झुका दे।

70. अर्थात् सृष्टि के आगे कोई बड़ा नहीं। सारी सृष्टि उस के आगे निम्न पस्त, विनम्र एवं असमर्थ है फिर किसी चीज़ के खुदा होने का क्या सवाल? और उस की पूजा का क्या अर्थ?

71. ऊपर की आयत में सामान्य रूप से देखने में आने वाली चीज़ छाया के सज्दा करने का वर्णन था। इस आयत में उस वास्तविकता से आगाह किया गया है कि आसमानों और ज़मीन की तमाम जीवधारी सृष्टि अल्लाह ही को सज्दा करती है अर्थात् अपने को उसी के आगे झुकाती है और जिस जीवधारी के लिए झुकने की जो दशा नियत कर दी है वह उसी के अनुसार झुकता है।

इस आयत ने यह भेद भी बताया कि जीवधारी सृष्टि केवल ज़मीन ही में नहीं आसमानों में भी मौजूद हैं।

72. यहाँ फ़रिश्तों की चार विशेषताओं का या यह कह लीजिए कि उन के चार गुणों का वर्णन हुआ है। एक यह कि वे अल्लाह ही को सज्दा करते हैं दूसरे यह कि वे बड़ाई और उद्गण्डता नहीं दिखाते, तीसरे यह कि वे अपने रब से डरते

हैं और इस एहसास के साथ कि वह उन के ऊपर मौजूद हैं और चौथे यह कि वे आज्ञाकारी हैं। तथा उस के हर आदेशों का अनुपालन करते हैं। और जब फ़रिश्तों का अपना हाल यह है तो उन को खुदा का साझीदार ठहराने का क्या औचित्य? यह निरी मूर्खता एवं जिहालत नहीं तो और क्या है?

यह सज्दे की आयत है इस लिए इस की तिलावत करते हुए सज्दा करना चाहिए।

73. अल्लाह का यह आदेश सदा से रहा है और क़र्आन में उस ने अपने इस आदेश को बिल्कुल सुरक्षित कर दिया है।

एक से अधिक खुदा की धारणा हर दृष्टि से ग़लत है और कोई व्यक्ति दो खुदाओं (Dualism) का क़ायल हो या तीश्वरवाद (Trinity) का, और किसी ने असंख्य पूज्य बना रखे हों या हजारों। जिहालत एवं मूर्खता के एक से बढ़ कर एक नमूने हैं।

दो खुदाओं की धारणा (Dualism) विशेष रूप से पारसियों के यहाँ पाया जाता है। उन के यहाँ भलाई और ख़ैर का खुदा यज़दान है और बुराई एवं शर का खुदा अहिरमन। दुनिया में ख़ैर व शर अथवा भलाई एवं बुराई की जो कशमकश है उस का यह पेचीदा अर्थ बताया कि ख़ैर एवं भलाई का खुदा अलग है तथा शर एवं बुराई का खुदा अलग। गोया दो खुदाओं में कशमकश बराबर जारी है और मनुष्य अकारण इस कशमकश की ज़द में आ रहा है। और जब ये दोनों खुदा जंग से अब तक फुर्सत नहीं पा सके तो मनुष्य दुनिया में क्यों और कैसे जंग से फुर्सत पा सकता है? यह धारणा दोनों खुदाओं की कमज़ोरी को उजागर करता है क्यों कि कोई एक खुदा भी इतना शक्तिशाली नहीं है कि दूसरे पर हावी हो सके और फिर मनुष्य के लिए सिवाय निराशा के और कुछ रह नहीं जाता। खुदा के बारे में यह कैसी घटिया धारणा है जो किसी धर्म में पाई जाए।

سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ३.

74. मूल अरबी में शब्द “अद्-दीन” इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ यहाँ उस आज्ञा पालन अथवा इताअत के हैं जो सच्चे मन से हो। और “वासिब” का अर्थ अनिवार्य, लाज़िम तथा अनंत के हैं। अर्थ यह है कि अल्लाह का अनिवार्य एवं स्थायी अनुपालन उस का हक़ और अधिकार है। यह अनुपालन न क्षणिक है और न किसी की अपनी पसंद पर निर्भर है। बल्कि बन्दा होने की हैसियत से मनुष्य

का सम्बन्ध अपने रब के साथ उसी तरह के अनुपालन का होना चाहिए और दिल की गहराईयों के साथ होना चाहिए न कि मात्र दिखावे और खाना पुरी की हद तक।

75. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ७१।

76. अर्थात् मानव जाति का एक गिरोह।

77. अर्थात् जब अल्लाह तुम्हारे कष्ट दूर कर देता है तो बजाए इस के कि उस का एहसान मानो, गैरुल्लाह (अल्लाह को छोड़ औरों का) का एहसान मानने लगते हो कि वह फ़लाँ और फ़लाँ कि मेहरबानी से हुआ ।

बहुदेववादी देवी देवताओं की दया समझते हैं और मुसलमानों में जो लोग शिर्क में लिप्त हैं वे उसे औलिया और पीरों की मेहरबानी समझते हैं और शुक्रिये के तौर पर उन के नाम की नज़र और नियाज़ करते हैं। इस प्रकार का शिर्क शुरु के दौर के मुसलमानों में नहीं था। बाद में इस का आविषकार हुआ। अब इस का ऐसा चलन हो गया है कि आज कल के मुसलमानों की एक बड़ी संख्या इस को सिरे से शिर्क ही नहीं समझती। काश वे इन आयतों के दर्पण में अपना चेहरा देख लेते।



और यदि अल्लाह लोगों को उन के जुल्म पर (तुरन्त) पकड़ता तो ज़मीन पर किसी जीवधारी को न छोड़ता। किन्तु वह उन्हें एक निश्चित समय तक मोहलत देता है। फिर जब उन का नियत समय आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न एक घड़ी आगे। (अल-कुर्आन)

56. और जो चीज़े हम ने उन्हें दी हैं उन में से एक हिस्सा वे उन (पूज्यों) के लिए निश्चित करते हैं जिन के बारे में उन्हें कोई ज्ञान नहीं है ⁷⁸। अल्लाह की क़सम ! तुम से इन मनगढ़न्त बातों के लिए ज़रूर पूछ ताछ होगी।

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ تَاللّٰهِ
لَسْتُمْ لَكُمْ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

57. ये अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं। पाक है वह। और उन के लिए वह जो चाहें ⁷⁹ !

وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ الْبَنَاتِ سُبْحٰنَهُ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

58. जब इन में से किसी को बेटी की खुशखबरी दी जाती है तो उस का चेहरा काला पड़ जाता है, और वह घुटा घुटा रहने लगता है।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَاطِمٌ ﴿٥٨﴾

59. वह इस खुशखबरी को बुरा समझ कर लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान के साथ रख ले या मिट्टी में उसे दबा दें ⁸⁰। देखो कैसा बुरा फैसला है जो ये करते हैं !

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ أَيُّسِّرَ عَلَىٰ هُؤُلَاءِ
يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

60. बुरी मिसाल उन लोगों के लिए है जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते ⁸¹। और अल्लाह के लिए तो उच्चतर गुण हैं ⁸²। वह प्रभुत्वशाली है तत्वदर्शी।

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ
الْأَعْلَىٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾

61. और यदि अल्लाह लोगों को उन के ज़ुल्म पर (तुरन्त) पकड़ता तो ज़मीन पर किसी जीवधारी ⁸³ को न छोड़ता। किन्तु वह उन्हें एक निश्चित समय तक मोहलत देता है। फिर जब उन का नियत समय आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न एक घड़ी आगे ⁸⁴।

وَلَوْ يَؤْخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلٰكِنْ
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَخِرُونَ
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ﴿٦١﴾

62. वे अल्लाह के लिए उन चीज़ों को ठहराते हैं जो अपने लिए नापसन्द करते हैं ⁸⁵। और उन की ज़बानें झूठा दावा करती हैं कि उन के लिए भलाई ही भलाई है ⁸⁶। उन के लिए निश्चित रूप से तो आग है। वे उसी में छोड़ दिए जाएंगे ⁸⁷।

وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنُهُمُ الْكُذْبَ أَنَّ لَهُمْ
الْحُسْنَىٰ لَآ جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ أَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

63. अल्लाह की क़सम ! ⁸⁸ तुम से पहले भी हम ने कितनी ही उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे थे। तो शैतान ने लोगों को उन के करतूत शोभायमान कर के दिखाए , और आज वही इन का रफ़ीक़ (अभिभावक) है ⁸⁹। इन लोगों के लिए तो दुखदायिनी यातना है।

تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَتَوَلَّوْا لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمٰٓأ لَهُمْ فَهُمْ وَاٰلَهُمْ
الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

78. अर्थात् वे ईश्वरत्व अथवा खुदा के कामों में जिन को साझीदार मानते हैं, उस का कोई प्रमाण उन के पास नहीं है फिर भी उन को अल्लाह का साझीदार मान कर उन की नज़्र और नियाज़ के लिए अपनी आमदनी में से एक भाग सुनिश्चित कर देते हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २४७।

79. अरब के बहुदेववादी फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे जो सरासर एक बेबुनियाद बात है। बेटियाँ होना उन के नज़दीक खुद ही लज्जाजनक बात थी अतः वे अपने लिए बेटे पसंद करते थे और अगर लकड़ी पैदा हो जाती तो उसे अपने लिए अपमान समझते। इस प्रकार उन्होंने अपने लिए जो मेयार क़ायम कर लिया था उस से गिरा हुआ मेयार अल्लाह के लिए क़ायम किया था। उन की इसी कपटी एवं विकृत मानसिकता पर चोट लगाई गई है।

80. अरब में क़बायली व्यवस्था प्रचलित थी जिस में रक्षा से सम्बन्धित मर्दों का खास महत्व था। यह पक्ष उन के मस्तिष्क में इतना हावी रहा कि लड़कियों की पैदाइश इन्हें अप्रिय होने लगी और सोसाइटी का ज़ेहन ऐसा बिगड़ गया कि वह इसे अपमान एवं दोष समझने लगी। परिणाम यह कि जब किसी व्यक्ति को यह सूचना मिल जाती कि उस के घर लड़की पैदा हुई है तो ग़म से उस का चेहरा बदल जाता और वह गुस्से का घूँट पी कर रह जाता। अगर उस को वह पालता पोसता तो उस को अपने लिए लज्जाजनक समझ कर करता या फिर इस अपमान से बचने के लिए उसे गढ़ा खोद कर जिन्दा दफ़न कर देता। उन की इसी अन्यायपूर्ण एवं अत्याचारी हरकत का चित्रण इन आयतों में प्रस्तुत किया गया है ताकि उन्हें अपनी ग़लत सोच और ग़लत मानसिकता का एहसास हो जाए।

81. मतलब यह कि जो लोग आख़िरत (परलोक) पर विश्वास नहीं रखते उन के अन्दर स्वभावतः बुरे आचरण तथा बुरे गुण पनपने लगते हैं जैसे कुमानसिकता, जीवन से सम्बन्धित बिगड़ी धारणाएँ, नीयतों का खोटा, दिखावा, ईर्ष्या, घृणा, हरामखोरी, बेहयाई, हक़ मारना, फ़ुज़ूल ख़र्ची, अन्याय अत्याचार और दूसरी बहुत सी बुराईयाँ। इसी लिए वे इसी लायक हैं कि उन की दशा को स्पष्ट करने के लिए बुरी मिसालें बना दी जाएँ। अतः कुर्आन में उन की इस बात को कि वे ग़ैरल्लाह अर्थात् अल्लाह के सिवा औरों को अपना अभिभावक बनाए हुए हैं, मकड़ी का कमज़ोर घर बताया गया है (सूरह अनकबूत : ४१) इन की मिसाल अन्धों और बहरों से दी गई है (सूरह हूद २४) उन को जानवरों की व्यंजना दी गई जो कुछ समझते नहीं। (सूरह आराफ़ १७९)

82. अर्थात् अल्लाह के लिए कोई ऐसी मिसाल हरगिज़

सही नहीं हो सकती जिस से कोई दोष, या कमज़ोरी उस से संबद्ध हो। उस के गुण बहुत ही ऊँचे हैं इस लिए उस के बारे में ऐसी बातें ही कही जा सकती हैं जिन से उस की शान और उस की प्रतिष्ठा की बुलन्दी प्रकट हो।

फ़रिशतों के बारे में यह कहना कि वे खुदा की बेटियाँ हैं या बेटों जैसे हैं, एक ऐसी बात खुदा से जोड़ना है जो उस की प्रतिष्ठा एवं उच्चता से बहुत ही निम्न स्तर की है। इसी प्रकार खुदा को बादशाहों जैसा समझ कर के यह कहना की हम अपनी आवश्यकताओं और अपनी माँगों को सीधे खुदा के सामने प्रस्तुत नहीं कर सकते अतः अपनी माँगों एवं निवेदनों को उस तक पहुँचाने के लिए माध्यम एवं वसीले आवश्यक हैं, खुदा के लिए ग़लत एवं अनुचित मिसालें गढ़ने के सिवा कुछ नहीं हैं।

83. यहाँ ज़िवधारी से मनुष्य अभिप्रेत हैं जैसा कि आयत के शब्द “यदि अल्लाह लोगों को उन के ज़ुल्म पर पकड़ता” से स्पष्ट है।

84. हर व्यक्ति के लिए मोहलत का समय उस की मौत तक है और क़ौमों के लिए उन के सामाजिक एवं सामूहिक विनाश तक।

85. इशारा है इस बात की तरफ़ कि ये लोग अपनी बेटियों को नापसंद करते हैं किन्तु अल्लाह के लिए बेटियाँ ही चुनते हैं।

86. अर्थात् इन बहुदेववादी धारणाओं एवं आचरणों के बावजूद वे इस बात के दावेदार हैं कि हमारे लिए ख़ैरियत ही ख़ैरियत है। दुनिया की भलाइयाँ इन साझीदारों के कारण ही हमें मिलती हैं, और यदि आख़िरत का मामला सामने आ ही गया तो यही साझीदार (फ़रिशते) हमारे सिफ़ारिशी होंगे और हमारे बचाव का सामान करेंगे।

87. अर्थात् वे भलाई के सपने देख रहे हैं हालाँकि नरक निश्चित एवं स्थायी रूप से इन का ठिकाना बनने वाली है और उस में उन को इस तरह छोड़ दिया जाएगा कि वे इस यातना से कभी छुटकारा न पा सकेंगे।

88. अल्लाह ने यहाँ स्वयं अपनी क़सम खाई है जिस से बढ़ कर दृढ़ता और विश्वास पैदा करने वाली चीज़ और क्या हो सकती है।

89. इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि तुम से पहले बहुत सी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे गए थे किन्तु उन्होंने रसूल की बात नहीं मानी बल्कि शैतान के बहकावे में आ गए और तुम्हारी क़ौम भी आज उसी शैतान को अपना साथी और अभिभावक बनाए हुए है।

64. हम ने यह किताब तुम पर इसी लिए उतारी है कि जिन बातों में यह मतभेद कर रहे हैं उन की वास्तविकता उन पर स्पष्ट कर दो ⁹⁰। और यह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

وَمَا أُنزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا تَبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي
اختلفوا فيه وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٠﴾

65. अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और उस से ज़मीन को जो मुर्दा हो गई थी, ज़िन्दा कर दिया ⁹¹। निस्संदेह इस में निशानी है ⁹² उन लोगों के लिए जो सुनते हैं ⁹³।

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٩١﴾

66. और तुम्हारे लिए चौपायों में भी सबक मौजूद है ⁹⁴। हम उन के पेट से गोबर और खून के बीच से ख़ालिस दूध तुम्हें पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होता है। ⁹⁵

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّقِيتُكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ قَرْنٍ
وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ﴿٩٢﴾

67. और खजूरों और अंगूरों के फलों से तुम नशे की चीज़ भी बना लेते हो और अच्छा रिज़क़ (आजीविका) भी हासिल करते हो ⁹⁶। निस्संदेह इस में निशानी है उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं ⁹⁷।

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا
حَسَنًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٩٣﴾

68. और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर इल्हाम (प्रकाशना) किया कि पहाड़ों में, वृक्षों में और छतों में जिन को लोग बुलंद करते हैं, छत्ते बना ⁹⁸।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا
وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٩٤﴾

69. फिर हर तरह के फलों का रस चूस ⁹⁹ और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल ¹⁰⁰। उस के पेट से विभिन्न रंगत का एक पेय निकलता है ¹⁰¹ जिस में लोगों के लिए शिफ़ा है ¹⁰²। निस्संदेह इस में निशानी है ¹⁰³ उन लोगों के लिए जो सोच विचार करते हैं।

ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلًّا يَخْرُجُ مِنْ
بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٩٥﴾

70. अल्लाह ही ने तुम को पैदा किया। फिर वही तुम को वफ़ात (मौत) देता है। और तुम में से किसी को बदतरिनी आयु को पहुँचा दिया जाता है, कि जानने के बाद कुछ न जाने। निस्संदेह अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला और बड़ी कुदरत वाला है ¹⁰⁴।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ
الْعُمْرِ لِكُلِّ لَآيَةٍ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٩٦﴾

90. खुदा और मज़हब के बारे में लोगों के बीच अत्याधिक मतभेद पाए जाते हैं। इन मतभेदों की सूच्चाई खोलने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुर्आन उतारा। इस के बाद लोगों के लिए इन मौलिक बातों में मतभेद करने का कोई बिन्दु शेष नहीं रहा। इस के बावजूद यदि लोग अपने मतभेदों पर अड़े रहे तो वे आप अपने कर्म के ज़िम्मेदार होंगे।

91. अर्थात् सूखी धरती पर बारिश के छींटे पड़ते ही वह लहलहा उठी।

92. निशानी इस बात की कि जो खुदा मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है वह मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १९७)

93. अर्थात् जो होश के साथ सुनते हैं।

94. सबक़ तौहीद अर्थात् अल्लाह के अकेला होने का, उस की पालनहारी का और उस की पूर्ण कुदरत का।

95. अर्थात् जानवर के पेट में जहाँ गोबर और खून पैदा होता है वहीं एक तीसरी चीज़ ख़ालिस दूध भी पैदा होता है। जिस में इन दो चीज़ों की हल्की भी मिलावट नहीं होती है और इन्सान इस के पीने में स्वाद महसूस करता है। गोया अल्लाह तआला ने इन्सानों के लाभ के लिए असंख्य चलते फिरते कारखाने बनाए हैं जिन में बड़े ही विचित्र ढंग से उच्चकोटि का पेय (मशरूब) तैयार होता है जो स्वादिष्ट भी है और स्वास्थ्य बनाने वाला भी।

96. खजूर के वृक्षों और अंगूर की बेलों से प्राप्त होने वाले फल भी अल्लाह की बेहतरीन नेमत हैं। मगर लोग इन फलों से शराब बना कर इस नेमत का दुरुपयोग एवं निरादर भी करते हैं। आयत के ये शब्द कि “तुम नशे की चीज़ें भी बना लेते हो और अच्छा रिज़क़ भी” इस बात की ओर संकेत करते हैं कि नशे की चीज़ें अच्छा रिज़क़ नहीं हैं।

यद्यपि शराब के हराम होने का स्पष्ट आदेश बाद में नाज़िल हुआ (सूरह बक्रर: आयत २१९ और सूरह माइदा ९१) किन्तु इस से बहुत पहले इस आयत के माध्यम से इस के अच्छा और पाक़ीज़ा रिज़क़ न होने की तरफ़ इशारा किया गया था।

यह समझना सही नहीं कि शराब पिछली शरीअतों में जायज़ रही है क्योंकि कुर्आन के अनुसार शराब एक नजिस (अपवित्र) पेय और शैतानी काम है और ऐसी चीज़ों को खुदा की शरीअत सही और जायज़ होना का प्रमाण नहीं दे सकती। बाइबिल की पुस्तक याशायाह और नीति वचन में शराब को अप्रिय बताया गया है।

“हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज़

बनाने में बहादुर हैं।” (याशायाह ५:२२)

“तू दाख मधु के पीने वालों में न होने, न मांस के अधिक खाने वालों की संगति करना।” (नीतिवचन २०:२३)

“दाख मधु ठट्टा करने वाला और मदिरा हल्ला मचाने वाली है, जो कोई उस से चूक करता है वह बुद्धिमान नहीं।” (नीतिवचन २०:१)

97. अर्थात् आदमी अपनी साधारण बुद्धि (Common Sense) से काम ले तो यह महसूस किए बग़ैर नहीं रहेगा कि उस का प्रभु बड़ा ही परोपकारी है कि उस ने बेहतरीन नेमतें उस के लिए पैदा की हैं और यह एहसास जब उस में पैदा होगा तो वह उस तौहीद (एकेश्वरवाद) को पा लेगा जिस की ओर कुर्आन बुला रहा है।

98. अर्थात् अल्लाह ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाल दी कि वह ऊँची जगहों में छत्ते बनाए और फलों और फूलों का रस चूस कर शहद तैयार करे। शहद की मक्खी इस काम को जिस तरह से अन्जाम देती है वह बुद्धि को चकित कर देने वाला है। छत्ते में वह छः छः खाने बनाती है जिस के हर कोण इतने सही होते हैं जैसे रेखागणित के किसी विशेषज्ञ ने उपकरणों की सहायता से बनाए हैं। फिर वे शहद जमा करने का काम सामूहिक रूप से पूरे अनुशासन एवं सुव्यवस्थित ढंग से बड़ी सक्रियता और सलीके से अन्जाम देती हैं। शहद की मक्खी की यह कारीगरी उस रब की शिक्षा का परिणाम है। इस शिक्षा और सीख को जो सीधे खुदा की तरफ़ से उसे मिलती है “वहय” (प्रकाशना) कहा गया है जिस का अनुवाद हम ने “इल्हाम” किया है।

99. मूल अरबी में शब्द “समरात” इस्तेमाल हुआ है जो फलों फूलों और पैदावार के लिए इस्तेमाल होता है। शहद की मक्खी फूलों, फलों और जड़ी बूटियों का रस चूसती है। यह रस उस की पेट की थैली में जमा हो कर शहद में परिवर्तित हो जाता है जिसे वह उगलकर अपने छत्ते में जमा करती है। एक पौंड शहद जमा करने के लिए उसे जो चक्कर काटना पड़ते हैं उन का कुल फासला पूरे भूमण्डल का तीन चक्कर लगाने के बराबर होता है। देखिए किताब (Honey by Eva Crane Director Bee Research Association London P. 4)

100. “रब की हमवार राहों” से मुराद वे तौर तरीके हैं जिन को अपना कर के शहद की मक्खी के लिए शहद बनाना आसान हो गया है। शहद की जो एक एक बूँद वह एकत्र करती है इस के लिए उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ता है और कई चरणों से उसे गुज़रना पड़ता है। मगर यह चरण उस के रब ने उस के लिए इतने आसान कर दिए हैं कि बराबर अपने काम

में लगी रहती है और दूर दूर तक फूलों की तलाश में जाती है और रास्ता भटक के बगैर अपने छत्ते में आ कर शहद एकत्र करती है। फलों से उस समय वह रस चूसती है जब कि उस का छिलका नर्म हो या फट गया हो।

101. शहद के कई रंग होते हैं, सुर्ख, सफेद, नारंगी या जिस तरह के फलों और फूलों का रस शहद की मक्खी चूसती है उसी के हिसाब से शहद का रंग, स्वाद, और चिकत्सीय गुण (Medical Properties) पैदा हो जाती हैं।

102. शहद एक स्वादिष्ट और लाभदायक वस्तु होने के अलावा विभिन्न रोगों के लिए अमृत है। प्राचीन काल के लोग इस को शिफा अर्थात् रोगों से सुरक्षित रहने के लिए इस्तेमाल करते रहे हैं। शहद एक अच्छा सुरक्षित रखने वाला (संरक्षक) पेय पदार्थ (Preservative) भी है क्योंकि इस में बैक्टीरिया (Bacteria) परवरिश नहीं पा सकता। इस लिए यूनानी दवाओं में बाहुल्यता के साथ इस का उपयोग होता है। आधुनिक चिकित्सीय अनुसंधान के अनुसार शहद में विभिन्न प्रकार के विटामिन और खनिज (Minerals) पाए जाते हैं। मतलब यह कि शहद एक अच्छा खासा टानिक भी है।

103. निशानी इस बात की कि इन विभिन्न प्रकार की विशेषताओं और लाभों से भरपूर पेय तैयार करने के काम में शहद की मक्खी को लगा कर इन्सान को उस ने एक उत्कृष्ट उपहार भेंट किया है। इस से उस की पालनहारी और रुबूबिय्यत की शान का पता चलता है।

104. बदतरीन आयु से मुराद अत्याधिक बुढ़ापे की आयु

है जब कि आदमी की शक्तियाँ जवाब देने लगती हैं और कुछ लोगों का हाल तो यह हो जाता है कि उन्हें अपना होश भी नहीं रहता। दूसरी शक्तियों के साथ साथ स्मरण शक्ति अर्थात् याददाश्त भी कमजोर हो जाती है। कुआन में दूसरी जगह फ़रमाया गया है:-

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً
ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً. (سورة روم: ५४)

अर्थ: “अल्लाह ने तुम्हें कमजोर हालत में पैदा किया, फिर कमजोरी के बाद तुम्हे ताक़तवर बनाया, फिर ताक़तवर बनाने के बाद तुम्हें कमजोर और बुढ़ा बना दिया” (सूरह रूम ५४)

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ (سورة يس - १८)

अर्थ: “जिस को हम लम्बी उमर देते हैं उस को ख़िलक़त (संरचना) में औंधा कर देते हैं” (सूरह यासीन ६८)

इस प्रकार मनुष्य में प्राकृतिक रूप से होने वाला यह पतन उस की आँखें खोल देने के लिए काफ़ी है। ताक़त पा लेने के बाद यह गिरावट इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मनुष्य का अपना बल बूढ़ा कुछ भी नहीं है जिस पर वह अहं कर सके। बल्कि सारी शक्ति उस के पैदा करने वाले स्वामी की प्रदान की हुई है और वह जब चाहता है उन को छीन लेता है। वास्तव में सवर्ज़ और सर्व शक्तिमान हस्ती केवल अल्लाह तआला की हस्ती है।



और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बढ़ोत्तरी दी है। तो जिन को बढ़ोत्तरी दी है वे अपनी रोज़ी अपने गुलामों की ओर फेरने वाले नहीं, कि वे इस में बराबर (के हिस्सेदार) हो जाएं। फिर क्या ये लोग अल्लाह की नेमतों का इन्कार करते हैं ? (अल-कुर्आन)

71. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोजी में बढ़ोत्तरी दी है। तो जिन को बढ़ोत्तरी दी है वे अपनी रोजी अपने गुलामों की ओर फेरने वाले नहीं, कि वे इस में बराबर (के हिस्सेदार) हो जाएं ¹⁰⁵। फिर क्या ये लोग अल्लाह की नेमतों का इन्कार करते हैं ¹⁰⁶?

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِينَ
فُضِّلُوا بِرَأْسِي رِزْقِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِنِعْمَةِ
اللَّهِ يَجْحَدُونَ ④

72. अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्ही में से पत्नियाँ बनायीं ¹⁰⁷ और तुम्हारी पत्नियों से बेटे और पोते पैदा किये और तुम्हें पाकीजा रिज़क़ (आजीविका) अता किया और क्या ये लोग बातिल (असत्य) पर विश्वास रखते हैं और अल्लाह के एहसान को नहीं मानते ¹⁰⁸?

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ
أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ
الطَّيِّبَاتِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ⑤

73. और अल्लाह को छोड़ कर उन की पूजा करते हैं जो इस बात का कोई इख्तियार नहीं रखते कि इन्हें आसमानों और ज़मीन से रोजी दे। यह बात कदापि इन के वश में नहीं है।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ⑥

74. तो (देखो) अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो। अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते ¹⁰⁹।

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ⑦

75. अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है ¹¹⁰। एक गुलाम है (दूसरे का) अधिकृत जो कोई अधिकार नहीं रखता। और दूसरा व्यक्ति वह है जिस को हम ने अपनी तरफ़ से अच्छी रोजी दी है और उस में से वह गुप्त रूप से तथा आलानिया खर्च करता है। क्या ये दोनों एक जैसे हैं ¹¹¹? हम्द (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते ¹¹²।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ
رَزَقْنَاهُ مِنْ أَرْغَافٍ حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا
هَلْ يَسْتَوُونَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑧

76. और अल्लाह (एक और) मिसाल बयान फ़रमाता है। दो आदमी हैं, जिन में से एक गुँगा है, किसी चीज़ की कुदरत नहीं रखता। अपने स्वामी पर वह एक बोझ है। जहाँ कहीं उसे भेजे, कोई भला काम उस से बन न आए। क्या ऐसा व्यक्ति उस आदमी के बराबर हो सकता है जो न्याय का हुक्म देता है और (स्वयं) सीधे मार्ग पर है ¹¹³।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا تَجَلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمٌ لَا يَقْدِرُ عَلَى
شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّههُ لَا يَأْتِ خَيْرٌ
هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ
وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑨

105. यह एक सच्ची बात है कि रोज़ी हासिल करने के मामले में सारे इन्सानों का हाल एक जैसा नहीं है। किसी को कमाने और अपनी आर्थिक स्थिति मज़बूत बनाने के अधिक साधन प्राप्त हैं और किसी को कम। और जहाँ तक गुलामों की बात है उन के अधिकार अपनी जगह किन्तु दुनिया का यह सर्व मान्य नियम रहा है कि गुलाम अपने स्वामी की संपत्ति में साझीदार नहीं हैं कि दोनों की हैसियत बराबर हो जाए। अगर ऐसा होता तो गुलाम, गुलाम ही न रहता। अतः जब मनुष्य अपनी संपत्ति में अपने गुलामों को साझीदार की हैसियत नहीं देता तो असली स्वामी के स्वामित्व एवं ईश्वरत्व में उस के बन्दों अथवा दासों को क्यों साझीदार ठहराता है? एक ऐसी बात जो अपने लिए पसंद नहीं करता उसे वह सर्वोच्च खुदा से सम्बन्धित करने का दुस्साहस कैसे करता है?

ध्यान रहे कि इस मिसाल से अभिप्रेत अल्लाह का साझीदार ठहराने वालों की कुमानसिकता को स्पष्ट करना है और यह ऐसी ही बात है जिस तरह कि कुर्आन ने बहुदेववादियों की इस धारणा पर कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं, पकड़ करते हुए कहा कि तुम अपने लिए तो बेटियों को नापसन्द करते हो मगर खुदा के लिए बेटियाँ ही चुनते हो। इस से उन के मन की खराबी तथा सोच एवं विचार के बिगाड़ को स्पष्ट करना अभिप्रेत है। न कि इस बात को प्रमाणित करना कि मनुष्य अपने लिए बेटियों को दुर्भाग्यपूर्ण समझे। इसी प्रकार यहाँ भी गुलामों की वास्तविक हैसियत को सामने रखते हुए मिसाल दी गई है। उन के साथ बर्ताव एवं व्यवहार का मसला यहाँ बहस में नहीं है। इस लिए बात को उस के क्षेत्र में रख कर ग़ौर करना चाहिए। कुछ लोगों ने अर्थशास्त्र के दर्शन की बहस छेड़ दी है जो बिल्कुल बेमौक़ा और संदर्भ से अलग हटकर है।

106. अर्थात् जब ये आक्रा और गुलाम के अन्तर को भली भाँत समझते हैं तो फिर खुदा की दी हुई नेमतों को उस के बन्दों से किस प्रकार संबद्ध बताते हैं? क्या खुदा के बन्दे और उस की सृष्टि उस के ईश्वरत्व और उस की संपत्ति में साझीदार हैं। यदि नहीं, और सत्य यह है कि हरगिज़ ऐसा नहीं है तो किसी भी नेमत के मिल जाने पर खुदा ही का कृतज्ञ होना चाहिए। मगर अल्लाह का साझीदार ठहराने वाले किसी नेमत के मिल जाने पर खुदा का नहीं बल्कि उस के बन्दों और उस की अन्य सृष्टि का शुक्र अदा करते हैं कि उन की कृपा से हमें ये नेमत मिली।

यह बहुदेववादियों का हाल बयान हुआ है। लेकिन आजकल तो दीन में नई नई चीज़ों का प्रचलन करने वाले मुसलमानों का हाल भी ऐसा ही है। इस में से जब किसी को औलाद या

कोई और नेमत मिलती है तो वे उसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और पीराने-पीर आदि की कृपा बताने और उन का आभार व्यक्त करने के लिए उन के समक्ष श्रद्धा की भेंट, नम्र और न्याज़ें प्रस्तुत करने लगता है। इस प्रकार की बहुदेववादी हरकतों के बावजूद ये लोग समझते हैं कि इस से उन की तौहीद की धारणा पर कोई आँच नहीं आती। काश यह कुर्आन की शिक्षाओं पर ग़ौर करते।

107. अर्थात् तुम्हारे लिए पत्नियाँ किसी और जाति से नहीं बल्कि तुम्हारी अपनी जाति अर्थात् मानव जाति से पैदा की ताकि तुम उन पर अपना प्रेम उडेल सको, उन में लगाव महसूस करो।

108. अर्थात् उन लोगों का मामला अजीब है। लाभ तो वे अल्लाह की नेमतों से उठाते हैं किन्तु एहसान औरों का मानते हैं।

ध्यान रहे कि मक्का के बहुदेववादियों को इस बात से इन्कार नहीं था कि ये और इस प्रकार की दूसरी नेमतें अल्लाह की पैदा की हुई हैं, उसी की प्रदान की हुई हैं। किन्तु इस के साथ वे यह विश्वास भी रखते और यही मानते थे कि फ़्लों और फ़लों खुदा के समक्ष हमारी सिफ़ारिश कराएँगे। इन की सिफ़ारिश तथा इन के माध्यम से हमें विभिन्न प्रकार की नेमतें मिलती हैं इस लिए उन का एहसान मानना और उन का शुक्र अदा करना आवश्यक है। इस धारणा के नतीजे में उन के सिफ़ारिशियों ने खुदा की जगह ले ली थी अतः वे उन के साथ वह मामला करते हैं जो केवल खुदा के साथ किया जाना चाहिए था।

109. खुदा के लिए मिसालें गढ़ने और उदाहरण देने से ही शिर्क अथवा बहुदेववाद की राहें खुली हैं। जैसे खुदा के लिए बेटे और बेटियों की कल्पना शुरू में कोरी कल्पना एवं उदाहरण स्वरूप थी किन्तु जैसे जैसे इस कल्पना ने सुदृढ़ धारणा तथा पक्के विश्वास का रूप धार लिया तो उदाहरण एवं कल्पना का अभ्यास मिट गया और उन के कल्पित गढ़े हुए बेटे और बेटियाँ पूज्य बन गए। इसी प्रकार खुदा को मनुष्य रूपी शासकों एवं बादशाहों जैसा समझकर कहा गया कि जिस प्रकार राजा तक अपनी प्रार्थनाओं एवं विनितियों को पहुँचाने के लिए माध्यमों एवं वसीलों की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार अपनी हाज़तें खुदा तक पहुँचाने के लिए फ़्लों और फ़लों के माध्यम और वसीले की आवश्यकता है। फिर जब इस ख़ाम ख़याली ने एक विश्वसनीय धारणा का रूप धार लिया तो इन माध्यमों एवं वसीलों ने खुदा होने का स्थान ग्रहण कर लिया। अब इन ही को पुकारा जाने लगा कि हमारी आवश्यकताओं एवं मुरादों को पूरा

करो। इन्ही से फ़रयाद की जाने लगी, इन ही की मन्नतें मानी जाने लगीं और इन ही के लिए भेंट नज़ और नियाज़ अर्पित की जाने लगीं। सारांश यह कि इन की पूजा अर्चना के विभिन्न दाँव निकाले गए और इस का परिणाम यह कि अपने सच्चे रब से सम्बन्ध कमज़ोर बल्कि टूट गया और स्वःरचित अथवा मन गढ़न्त खुदाओं से (तथाकथित) सम्बन्ध सुदृढ़ हो गया।

कुर्आन ने खुदा के लिए मिसालें गढ़ने की मनाही कर के शिर्क का दरवाज़ा बन्द कर दिया है। वह कहता है, खुदा के बारे में अनुमान प्रस्तुत करना कि वह इस इस रूप अथवा इस इस आकार का है, अज्ञानता एवं जिहालत है। ज्ञान की राह यह है कि अल्लाह ने अपनी जिन विशेषताओं एवं गुणों का वर्णन किया है उन पर ईमान लाओ क्योंकि अल्लाह से बढ़कर उस की विशेषताओं एवं गुणों को जानने वाला कौन हो सकता है ?

110. एक ऐसी मिसाल जिस से शिर्क एवं बहुदेववाद का खण्डन होता है।

111. अर्थात् एक व्यक्ति ऐसा आधीन गुलाम है जो कोई अधिकार नहीं रखता। और दूसरा स्वतंत्र एवं स्वाधीन होने के साथ साथ परोपकारी एवं दानी भी है क्या तुम दोनों को एक जैसा समझते हो। नहीं बल्कि जब तुम कोई चीज़ माँगना चाहते हो तो दूसरे व्यक्ति ही से माँगते हो, पहले व्यक्ति से नहीं क्योंकि तुम समझते हो वह आधीन है तथा कोई अधिकार भी नहीं रखता है, वह कुछ नहीं कर सकता। आधीन एवं स्वाधीन के इस अन्तर को तुम अपने पारस्परिक व्यवहार में अच्छी तरह समझते और बरतते हो। किन्तु जब

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का मामला होता है तो स्वाधीन सर्वशक्तिमान सृष्टा को छोड़ कर अधिकार रहित सृष्टि की ओर पलटते हो उस के आगे झुकते हो, असमर्थ बन्दों को अपना परोपकारी मान कर उन का गुण गान करते हो। क्या यह खुली जिहालत नहीं है ?

112. अर्थात् सच्चा एवं वास्तविक परोपकारी अल्लाह ही है। इस लिए कृतज्ञता, आज़ा पालन, एवं गुण गान के लायक वही है मगर बहुतेरे लोग इस खुली सच्चाई से भी परिचित नहीं हैं इस लिए वे अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना परोपकारी समझते हैं और उन का अनुपालन एवं गुणगान करने लगते हैं।

113. पहली मिसाल तौहीद के बारे में थी। यह दूसरी मिसाल रिसालत (ईशवर दूत) से सम्बन्धित है कि एक तरफ़ वे सरदार और लीडर हैं जिन की ज़बाने सत्य कहने के लिए बन्द हैं। भलाई और अच्छाई का जाप करने से वन्धित। अपने रब की दी हुई नेमतें खाते हैं मगर नाशुक्रे और बेवफ़ा हैं। भलाई के जो काम करने के लिए उन के रब ने उन को दुनिया में भेजा है वे उन को नहीं करते। दूसरी ओर अल्लाह का पैगम्बर है जो अपने रब की सीधी राह अर्थात् तौहीद पर क़ायम है और अपनी अभिव्यक्ति की शक्ति को सत्य, न्याय और समानता की शिक्षा के लिए इस्तेमाल कर रहा है। बताओ इन दोनों में से कौन है जो रहनुमा बनाए जाने का योग्य अधिकारी है? स्पष्ट है कि पैगम्बर। किन्तु विचित्र बात है कि लोग खुदा के पैगम्बर को छोड़ कर नाकारा लीडरों के पीछे चल रहे हैं तथा उन के अनुकरण में लगे हैं।

और आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का ज्ञान अल्लाह ही को है और क्रियामत का मामला तो उसी तरह पेश आएगा जिस तरह कि आँख का झपकना । बल्कि उस से भी अधिक शीघ्र। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है । (अल-कुर्आन)

77. और आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का ज्ञान अल्लाह ही को है और क्रियामत का मामला तो उसी तरह पेश आएगा जिस तरह कि आँख का झपकना । बल्कि उस से भी अधिक शीघ्र।¹¹⁴ निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है ।

وَاللَّهُ غِيبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمَحٍ الْبَصِيرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ④

78. अल्लाह ने तुम को तुम्हारी माताओं के पेट से इस हाल में निकाला कि तुम कुछ नहीं जानते थे और उस ने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए, ताकि तुम शुक्र गुजार (कृतज्ञ) बनो ¹¹⁵।

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑤

79. क्या वे परिन्दों को नहीं देखते कि किस प्रकार आसमान (नभमण्डल) में वशीभूत हैं। अल्लाह ही उन को थामे हुए है। निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं ¹¹⁶।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑥

80. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को ठहरने की जगह बनाया ¹¹⁷ और तुम्हारे लिए चौपायों की खालों से घर बना दिए जिन्हें तुम सफ़र और ठहरने के अवसर पर अत्याधिक हल्का पाते हो ¹¹⁸। और उन के ऊन रौवों और बालों से तुम्हारे लिए (तरह तरह का) सामान और लाभदायक चीज़ें बना दीं ¹¹⁹ कि एक खास समय तक काम आएँ।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَى حِينٍ ⑦

81. और अल्लाह ने अपनी पैदा की हुई चीज़ों से तुम्हारे लिए साये बनाए ¹²⁰ और पहाड़ों में पनाहगाहें बनाई ¹²¹। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं ¹²² तथा ऐसी पोशाकें जो तुम्हारी जंगों में तुम को सुरक्षित रखती हैं ¹²³। इस प्रकार वह तुम पर अपनी नेमत पूरी करता है ताकि तुम अज्ञाकारी बनो ¹²⁴।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُم سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ بَأْسَكُمْ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ⑧

82. इस के बाद भी अगर ये मुँह मोड़ते हैं तो तुम पर केवल साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देने ही ¹²⁵ की ज़िम्मेदारी है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ الْمُبِينُ ⑨

114. मतलब यह है कि जिस हस्ती ने कायनात की इस व्यवस्था को बनाया है उस के लिए व्यवस्था को तोड़ देना और उस के अन्दर से नई व्यवस्था के साथ एक नये जगत को जन्म देना कुछ भी मुश्किल नहीं। जिस दिन अल्लाह क्रियामत बरपा करना चाहेगा पलक झपकते, बल्कि इस से भी कम समय में हंगामा बरपा हो जाएगा।

प्राचीन काल का इन्सान क्रियामत को इस वजह से असंभव समझता था कि इस कायनात की व्यवस्था बहुत ही मजबूत है, वह टूट कैसे सकती है और ये बड़े बड़े पहाड़ छिन्न भिन्न किस प्रकार हो सकते हैं। मगर विज्ञान की उन्नति ने इस की संभावना बिलकुल स्पष्ट कर दी है। अतः एक अणु (कण) को फाड़ देने (Split) से इतनी जबरदस्त शक्ति प्रस्फुटित होती है कि आन में की आन वह पूरे शहर को तबाह कर के रख देती है। तो जिस हस्ती का कन्ट्रोल कण कण अथवा अणु अणु पर है उस का तो एक इशारा अणुओं को फाड़ देने के लिए काफी हो सकता है और उन के फट जाने से वह प्रचण्ड धमाका हो सकता है जिस का नाम क्रियामत है। इस कायनात का रचयिता इस का पूरा सामर्थ्य रखता है कि एक क्षण के अन्दर क्रियामत का धमाका करे।

115. मनुष्य जब पैदा होता है तो ज्ञान और जानकारी से बिलकुल खाली और बेखबर होता है। मगर धीरे धीरे उस में सुनने, देखने, समझने की शक्तियाँ उभरने लगती हैं जिन के कारण उसे अन्य सृष्टियों में प्रमुखता प्राप्त हो जाती है। ये शक्तियाँ अल्लाह ही की प्रदान की हुई हैं इस लिए इन नेमतों का हक़ यह है कि मनुष्य अपने परोपकारी को पहचाने और उस का शुक्र अदा करे परन्तु वह उस से बेपरवाह हो कर नाशुकी एवं कृतघ्नता करने लगता है।

116. अर्थात् अगर लोग आँखें खोल कर नभमण्डल में उड़ने वाले पक्षियों को देखें तो उन्हें अल्लाह की कुदरत और उस की रुबूबियत की निशानियाँ दिखाई दें और वे उस पर ईमान ले आएँ। पक्षी किसी बनावटी अथवा बाह्य शक्ति का सहारा लिए बगैर अपने पंरों के द्वारा किस प्रकार हवा में उड़ते हैं? कौन है जिस ने उन्हें उड़ने के लिए पर दिए फिर उन को

उड़ने का ऐसा प्रशिक्षण दिया कि वे आसमान में मीलों सफ़र करते हैं और गिर नहीं जाते? वह कौन है जिस के आदेश एवं नियम के ये वशीभूत हैं?

117. घर बनाने की कला अल्लाह ने ही सिखाई है और इस के लिए साधन भी जुटा दिए। घर में इन्सान को जो सुकून मिलता है वह उसी की देन है।

118. अर्थात् मवेशियों के चमड़े से खेमे बनाए जाते हैं जिन को तह कर के सफ़र में साथ ले जाना भी आसान है और पड़ाव के दौरान उन को खोल कर डेरा बना लेना भी आसान। गोया ये फ़ोल्डर होने वाले घर (Folding Houses) हैं जो अल्लाह का उपहार हैं।

119. ऊन भेड़ से, रौवे ऊँट से और बाल बकरी से प्राप्त किए जाते हैं। इस से कम्बल, वस्त्र और फ़र्श आदि बनते हैं।

120. वृक्षों तथा पहाड़ों के साये ।

121. गुफा और खोह ।

122. फ़लू की गर्मी से सुरक्षित रखने वाले वस्त्र।

ऊपर उन का ज़िक्र हुआ जिस से सर्दियों से बचाने के लिए वस्त्र बनाए जाते हैं इस लिए यहाँ खास तौर से गर्मी से बचाने वाली पोशाक का ज़िक्र फ़रमाया जो रूई आदि से बनाए जाते हैं और जिन की ज़रूरत अरब जैसे गर्म देश में अधिक होती है ।

123. अर्थात् कवच ।

124. अर्थात् अल्लाह ने तुम पर नेमतों की ऐसी बारिश कर दी है कि तुम्हारी कोई भौतिक, प्राकृतिक एवं स्वाभाविक आवश्यकताएँ ऐसी नहीं रहीं कि जिस की पूर्ति का सामान न किया गया हो । ये नेमतें उस ने तुम्हें इस लिए प्रदान की हैं कि तुम अपने रब को पहचानो और उस के आज्ञाकारी बन जाओ।

125. अर्थात् यदि इन तमाम बातों के बावजूद जो ऊपर बयान हुई उन के अन्दर अपने रब की बन्दगी का एहसास नहीं उभरता और अपनी ग़लत धारणाओं पर ही जमे रहना चाहते हैं तो वे अपने अमल के ज़िम्मेदार हैं। पैग़म्बर पर तो केवल पैग़ाम पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी थी।



83. यह अल्लाह की नेमतों को पहचानते हैं फिर उन से इन्कार करते हैं ¹²⁶ और उन में अधिकतर नाशुक्ने (कृतघ्न) हैं।

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ
ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ٨٣

84. और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गवाह खड़ा करेंगे, ¹²⁷ फिर काफ़िरी को न (तर्क प्रस्तुत करने की) अनुमति दी जाएगी और न उन से तौबा की फ़रमाइश की जाएगी ¹²⁸।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ٨٤

85. और जब ज़ालिम अज़ाब को देख लेंगे तो फिर न उन का अज़ाब हल्का कर दिया जाएगा और न उन्हें मोहलत ही दी जाएगी।

وَإِذَا رَأَوْا الْعَذَابَ فَلَا يَخَفُّ عَنْهُمْ
وَلَهُمْ يَنْظَرُونَ ٨٥

86. और वे लोग जिन्होंने (अल्लाह के) साझीदार गढ़ लिए थे, जब अपने ठहराए हुए साझीदारों को देखेंगे तो पुकार उठेंगे, ऐ हमारे रब ! यह हैं हमारे ठहराये हुए साझीदार जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे। इस पर वे उन की बात उन के मुँह पर दे मारेंगे कि तुम झूठे हो ¹²⁹।

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ أَشْرَكُوا شَرَّكَاءَ هُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ؕ قَالُوا
إِلَيْهِمُ الْقَوْلُ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ٨٦

87. उस दिन वे अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण कर देंगे ¹³⁰। और जो झूठ वे गढ़ते रहे हैं वह सब गायब हो जाएगा ¹³¹।

وَأَلْقُوا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامَ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ٨٧

88. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोकते रहे हम उन के अज़ाब (यातना) पर और अज़ाब (यातनाओं) की वृद्धि करेंगे उस फ़साद (बिगाड़) के अपराध में ¹³² जो वे पैदा करते रहे।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْطَادُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا
فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ٨٨

89. और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन ही में से उन के मुकाबले में उठा खड़ा करेंगे और तुम को इन लोगों पर गवाही देने के लिए लाएंगे ¹³³ और (उन पर हुज्जत क़ायम करने ही के लिए) यह किताब हम ने तुम पर नाज़िल की है जो हर चीज़ को साफ़ साफ़ बयान करने वाली है ¹³⁴। और हिदायत और रहमत और खुशख़बरी है उन लोगों के लिए जो मुस्लिम (अज्ञाकारी) बन जाएं।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا
عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا
عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ٨٩

126. बहुदेववादियों को इस बात से इन्कार नहीं था कि ये नेमतें अल्लाह ही की पैदा की हुई हैं। किन्तु जब उन में से किसी को विशेष रूप से कोई नेमत मिल जाती तो वे अल्लाह को छोड़ कर औरों का एहसान बताता कि यह तो फ़लों और फ़लों की दया का फल है। या उस के माध्यम तथा उस के वसीले से उस ने ये नेमत पाई है। इस धारणा के चलते ये “माध्यम और वसीले” ही उन की कृतज्ञता के पात्र ठहरते। फिर उन के साथ वह मामला करते जो केवल खुदा के साथ किया जाना चाहिए। इस प्रकार वे एक तरफ़ तो खुदा की नेमतों का इक्रार करते और दूसरी तरफ़ वे ऐसा रवैया अपनाते जिस से इस इक्रार का खण्डन होता। शिर्क करने वालों अथवा बहुदेववाद में लिप्त लोगों की इसी हरकत पर यहाँ पकड़ की गई है।

127. अर्थात् रसूल जो उस उम्मत की तरफ़ भेजा गया था। वह क्रियामत के दिन खुदा के समक्ष गवाही देगा कि मैं ने तेरा पैगाम इन लोगों तक पहुँचा दिया था।

128. अर्थात् रसूल की गवाही के बाद काफ़िरों को झूठे तर्क प्रस्तुत करने का अवसर ही नहीं रहेगा। क्यों कि रसूल की गवाही से उन का जुर्म साबित हो चुका होगा। और उन से यह भी नहीं कहा जाएगा कि अपने पापों एवं अपराधों की क्षमा माँगो। क्यों कि क्षमा माँगने का समय गुजर चुका होगा। इस का मौक़ा उन्हें दुनिया में हासिल था। आख़िरत तो बदला मिलने की जगह है।

129. इस खण्डन से साफ़ स्पष्ट है कि यहाँ ठहराए हुए साझीदारों से मुराद बुत नहीं हैं बल्कि वे हस्तिायें हैं जिन के साथ बहुदेववादी वह व्यवहार करते रहे जो केवल खुदा के साथ किया जाना चाहिए था। जैसे उन को हाज़िर नाज़िर जानकर मदद के लिए पुकारना। उन के बारे में यह विश्वास रखना कि उन को ऐसे अधिकार प्राप्त हैं कि खुदा से जो चाहें दिलवा सकते हैं, वे क्रिस्मतों को बनाते हैं। दुखों का निवरण करते हैं, और परोक्ष से दौलत और संतान प्रदान करते हैं आदि।

क्रियामत के दिन ये हस्तिायें अपने उन श्रद्धालुओं को झूठा कहेंगी कि न हमें इस बात की खबर थी कि तुम हमें आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पुकारा करते थे और न हम तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते थे। तुम हमारे बारे में जिस बात का दावा करते थे वह झूठ है।

130. अर्थात् उस रोज़ ये साझीदार ठहराने वाले अपना ग़लत होना स्वीकार कर लेंगे और खुदा के सामने अपनी बेबसी को व्यक्त करेंगे।

131. अर्थात् उन का यह झूठ कि खुदा ने अपने अधिकारों में से फ़लों और फ़लों को ये और ये अधिकार सौंप रखे हैं और वे इस इस काम की शक्ति एवं सामर्थ्य रखते हैं, बिलकुल ग़लत

सिद्ध हो जाएगा।

ध्यान रहे कि शिर्क बुतपरस्तों ही में नहीं पाया जाता बल्कि मौजूदा दौर के मुसलमानों की भी अच्छी खासी संख्या शिर्क में बुरी तरह लिप्त है अतः उन्होंने अपने बुजुर्गों में से किसी को मुश्किलकुशा का लक़ब दे रखा है तो किसी को दस्तगीर का, किसी को ग़रीब नवाज़ का, किसी को ग़ौस पाक का और ढेरों औचित्य बता कर वे यह मनवाने की कोशिश करते रहते हैं कि यह शिर्क नहीं है। हालांकि कुर्आन ने उसूलों तौर पर जिन बातों को शिर्क बताया है उस से उन का मामला कदापि भिन्न नहीं है। जाहिल मुसलमानों की इन बहुदेववादी हरकतों को तथाकथित उलमा का वर्ग सही होने का प्रमाण देता है अतः मौजूदा दौर की नई तफ़सीर में यहाँ तक लिख दिया गया है कि:-

“ऐसे ही ख़ब अपने कुछ मक़बूल बन्दों को अपने फ़ज़ल से खुदाई (ईश्वरत्व) का मालिक बना देता है लेकिन इस के बावजूद वह ख़ब के बराबर नहीं होते बल्कि उस के बन्दे ही रहते हैं।”

यह तो खुले तौर पर गुमराह करने वाली बात है और ग़लतफ़हमी में डालने वाली भी। गोया खुदा की श्रेणी में रख देने की धारणा भी शिर्क नहीं हुआ। अल्लाह बचाए इस पाखण्ड से।

132. कुर्आन के नजदीक सब से बड़ा फ़साद (बिगाड़) यह है कि आदमी अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराए और ऐसे बहुदेववादी विचारों को फैलाए और तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद की राह से लोगों को रोके।

133. व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट १६

134. कुर्आन का विषय है “अल्लाह की राह लोगों पर स्पष्ट करना और गुमराहियों से उन्हें बचाना” इसी कारण कुर्आन ने सारी ज़रूरी बातों को स्पष्ट रूप से खोल कर बयान कर दिया है। जो इन्सान की हिदायत के लिए बिलकुल पर्याप्त है। रही कुर्आन के आदेशों की तफ़सीलात और उन का व्यवहारिक स्वरूप तो पैग़म्बर की सुन्नत (तरीकों) ने इस को अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया है। और जब यह सत्य है कि कुर्आन में वे सारी बातें खोलकर बयान की गई हैं जिन का सम्बन्ध इन्सानों की हिदायत से है और जिन पर उस के आख़िरत में मुक्ति पाने का दारोमदार है तो कोई धारणा अथवा कोई अक़ीदा ऐसा नहीं हो सकता जो दीन में ज़रूरी हो और कुर्आन में बयान न हुआ हो। इस लिए जो मुसलमान कुर्आन की प्रस्तुत की हुई धारणा पर किसी और विचारों का संशोधन करते हैं वे दीन में बहुत बड़ी बिद्अत की वृद्धि करते हैं और इसी से मुसलमानों में बहुत से सम्प्रदाय पैदा हो गए हैं। अगर अक़ायद (धारणाओं) के बारे में वे कुर्आन को काफ़ी समझने लगे तो फिरका बन्दी (सम्प्रदायवाद) समाप्त हो जाए।

90. अल्लाह हुक्म देता है न्याय का,¹³⁵ भलाई का¹³⁶ और नातेदारों को देने का¹³⁷ और रोकता है बेहयाई, बुराई और ज़ुल्म से। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايِ
ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ①

91. और अल्लाह की प्रतिज्ञा को जब कि तुम ने बांधा हो,¹³⁸ पूरा करो और सौगंधों को सुदृढ़ करने के बाद तोड़ न डालो जब कि तुम अल्लाह को अपने ऊपर साक्ष्य बना चुके हो¹³⁹। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ
بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ②

92. और उस औरत की तरह न हो जाओ जिस ने बड़ी मेहनत से सूत काता फिर उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया¹⁴⁰। तुम अपनी सौगंधों को आपस में छल कपट का साधन बनाते हो इस लिए कि एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से बढ़ कर (शक्तिशाली) है¹⁴¹। अल्लाह इस के द्वारा तुम्हें आजमाता है¹⁴²। वह क्रियामत के दिन तुम्हारे मतभेदों की वास्तविकता तुम पर अवश्य खोल देगा¹⁴³।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ
أَنْكَاثًا تَتَخَذُونَ آيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ
تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيُبَيِّنَ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ③

93. अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत (एक समुदाय) बना देता। किन्तु वह जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है¹⁴⁴। और तुम जो कुछ कर रहे हो, उस के बारे में तुम से ज़रूर पूछ ताछ होगी।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلَتُسْأَلُنَّ
عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ④

94. और अपनी सौगन्ध को आपस में धोखा देने (खियानत) का साधन न बनाओ कि कोई क्रदम जमने के बाद उखड़ जाए¹⁴⁵। और अल्लाह की राह से रोकने के अपराध में तुम्हें कुपरिणाम का मज़ा चखना पड़े और तुम बड़े अज़ाब के भागीदार हो जाओ।¹⁴⁶

وَلَا تَتَّخِذُوا آيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ
ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑤

95. अल्लाह की प्रतिज्ञा को थोड़ी क़ीमत पर न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो।¹⁴⁷

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑥

135. कुर्आन जहाँ इस बात पर जोर देता है कि इन्सान अपने रब से सत्यता के आधार पर संबन्ध स्थापित करे, वहाँ वह ताकिद भी करता है कि मनुष्य अपने नैतिक दायित्वों को पहचाने और एक आदमी दूसरे आदमी के साथ अपने सम्बन्ध अच्छे रखे। बन्दों के अधिकारों की ओर से बेपरवाही या उन के अधिकार मारने को उस ने गुनाह बताया है।

इस आयत में जो आदेश दिया गया है वह बड़ा व्यापक और मौलिक नैतिक मूल्यों को अपने अन्दर समोए हुए है और सर्व साधारण को संबोधित कर के यह आदेश दिया गया है अर्थात् हर व्यक्ति इस का संबोधी है। शाने नुजूल (अवतरण संदर्भ) के लिहाज से यह आयत बल्कि पूरी सूरह उस समय नाज़िल हुई है जब कि ईमान वालों पर काफ़िरों का जुल्म बढ़ गया था। इस अवसर पर न्याय का आदेश दे कर मनुष्य की आत्मा को झंझोड़ा गया। न्याय वह गुण है जो मनुष्य के लिए गौरवशाली तथा उस की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला है बल्कि यूँ कहिए कि उस को सच्चा बना देता है। कहनी और करनी दोनों में न्याय और समानता आवश्यक है।

136. मनुष्य चाहे कोई हो, उस के साथ भलाई का बर्ताव करो।

137. नाते दारों का हक़ प्रमुख एवं सर्वोपरि है। उन के साथ अच्छा सुलूक और उन की धन से सहायता अनिवार्य है।

138. “जब कि तुम ने प्रतिज्ञा बाँधी हो” के शब्दों से यह पता चलता है कि यहाँ अल्लाह की प्रतिज्ञा से मुराद वह प्रतिज्ञा है जो मनुष्य पूरी सूझ बूझ के साथ उस से बाँधे। जैसे मुसीबत में घिरे इन्सान का अल्लाह तआला से ऐसी प्रतिज्ञा बाँधना कि यदि तूने मुझे इस मुसीबत से बचा लिया तो मैं तेरा कृतज्ञ एवं आज्ञाकारी बन जाऊँगा। किन्तु मुसीबत से मुक्ति पाने के बाद अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध शिर्क करना और खुदा का अवज्ञाकारी बनना (सूरह अन्आम आयत ६३, ६४) या मनुष्य का खुदा से यह प्रतिज्ञा करना कि अगर तूने मुझे भली चंगी संतान प्रदान की तो मैं तेरा कृतज्ञ एवं आज्ञाकारी बन जाऊँगा किन्तु भली चंगी औलाद मिल जाने के बाद अपने किए वादे से फिर जाना और खुदा की बख़्शिश में औरों को साझीदार ठहराना (आराफ़ १८९, १९०) स्पष्ट है कि इस प्रकार की प्रतिज्ञा से फिर जाना खुले तौर पर अपनी प्रतिज्ञा की अवहेलना करना है।

अल्लाह की प्रतिज्ञा में इस प्रकार के वादों और क़समों के अलावा नज़्रें (भेंट) भी शामिल हैं जो किसी ने अल्लाह के लिए मानी हो और व्यापक भावार्थ में अल्लाह के अनुपालन

एवं दासता की प्रतिज्ञा भी है।

139. यहाँ सौगंधो से मुराद वे समझौते हैं जो अल्लाह की सौगंध खा कर किए जाएँ। अतः अरब वासियों में यह तरीक़ा प्रचलित था कि वे जब किसी के साथ कोई समझौता करते तो उस को सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बनाने के लिए अल्लाह की क़सम खाते थे। और क़समों को तोड़ने का मतलब सौगंधो का उल्लंघन करना है जो बहुत बड़े गुनाह की बात है।

140. अर्थात् जिस प्रकार सूत को बड़ी मेहनत से काता गया हो, तार तार बिखेर देना खुली मूर्खता और अपने परिश्रम को नष्ट करना है उसी प्रकार अपने समझौते और वचन को खुदा की क़सम खाकर मज़बूत कर देने के बाद तोड़ देना बहुत बड़ी नादानी, मूर्खता और बड़े घाटे की बात है।

यह इशारा है यहूदियों की तरफ़, जिन्होंने अल्लाह से उस की शरीअत की पाबन्दी की प्रतिज्ञा बाँधी थी किन्तु उस को तोड़ डाला और उस के अनुपालन से निकल गए। इस मिसाल से अभिप्रेत उन लोगों को जो नए नए इस्लाम में प्रविष्ट हो गए थे जमे रहने की ताकीद करना है।

141. यह उन लोगों से संबोधन है जिन्होंने इस्लाम कुबूल तो किया था किन्तु हालात की ख़ाराबी से जिन के क़दम उखड़ रहे थे जैसा कि बाद की आयत से स्पष्ट है, मिसाल के तौर पर उबैदुल्लाह बिन जहश ने इस्लाम कुबूल कर के हब्शा की ओर हिजरत की थी किन्तु बाद में ईसाई हो गया।

(अलबिदाय: वन्निहाय: जिल्द ४ पृष्ठ १४३)

इस आयत में क़समों अथवा सौगंधों से मुराद कलिमा-ए-शहादत है जिस को अदा कर के कोई व्यक्ति इस्लाम में दाख़िल होता है अतः सूरह मुनाफ़िकून में, मुनाफ़िकों एवं पाखण्डियों की इस शहादत को हि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं “ईमान” सौगंध बताया गया है। (सूरह मुनाफ़िकून आयत १, २)

और क़समों अथवा सौगंधो को धोका का साधन बनाने का मतलब यह कि इस्लाम में दाख़िल हो जाने के बाद उस से फिर जाना जो खुदा के साथ प्रतिज्ञा का उल्लंघन भी है और मुसलमान समुदाय के साथ ग़द्दारी भी। उस समय मक्का में मुसलमानों का गिरोह बहुत छोटा था अपने बचाव की शक्ति भी नहीं रखता था और दूसरी ओर बहुदेववादियों का गिरोह जो अधिक संख्या में होने के साथ साथ भौतिक दृष्टि से भी बड़ा शक्तिशाली था। यह गिरोह अपनी शक्ति के बल पर मुसलमानों के विरुद्ध अन्याय और अत्याचार पर

उतर आया था। ऐसी विषम परिस्थितियों से कुछ कमजोर मुसलमानों के क्रदम डगमगा रहे थे। जिस पर उन्हें यहाँ सचेत किया गया है।

142. आजमाना इस तरह कि तुम एक ऐसे गिरोह में शामिल होते हो जो अल्प और कमजोर है परन्तु सत्य की शक्ति जिस के साथ है या उस गिरोह का साथ देते हो जो यूँ तो शक्ति शाली दिखता है किन्तु हैं असत्य पर।

143. अर्थात् क्रियामत के दिन मालूम हो जाएगा कि कौन सत्य पर था। तौहीद और इस्लाम की बुनियाद पर अस्तित्व में आने वाला गिरोह या बहुदेववादी विचारों की बुनियाद पर बनने वाला गिरोह।

144. अर्थात् अल्लाह सब इन्सानों को अपनी विवश कर देने वाली शक्ति से मुसलमान बना सकता था किन्तु चूँकि आजमाना अभिप्रेत था इस लिए मनुष्य को यह स्वतंत्रता प्रदान की कि सत्य और असत्य में से जिस का चाहे चुनाव कर ले। अब जो व्यक्ति जिस चीज का इच्छुक होता है अल्लाह का नियम तथा उस की मशिख्यत उसे उस राह पर डाल देती है इस लिए मुश्रिकों और काफ़िरों की अधिकता से किसी को प्रभावित नहीं होना चाहिए बल्कि यह देखना चाहिए कि उस की मुक्ति किस

राह को अपनाने में है।

145. यह मुसलमानों से संबोधन है और जैसा कि ऊपर नोट १४१ में स्पष्ट किया गया यहाँ क्रसमों से मुराद कलिमा-ए-शहादत अदा कर के अल्लाह से बन्दगी और अनुपालन की प्रतिज्ञा बाँधना है और क्रदम उखड़ जाने का मतलब उस प्रतिज्ञा से फिर जाना है।

146. अर्थात् यदि तुम ने इस्लाम स्वीकार करने के बाद उस से विमुखता की राह अपनायी तो तुम्हारी यह हरकत कितने ही लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का कारण बनेगी। इस प्रकार तुम खुद भी गुमराह होगे और अल्लाह के बन्दों के लिए गुमराही का सामान करोगे। और अगर तुम ने ऐसा किया तो इस के अत्यंत बुरे परिणाम तुम को भुगतना होंगे और कठोर दण्ड के भागीदार हो जाओगे।

147. अर्थात् यदि किसी सांसारिक लाभ की खातिर तुम ने प्रतिज्ञा तोड़ी या लालच में आ कर तुम इस्लाम से फिर गए तो याद रखो ये लाभ सांसारिक दृष्टि से कितना ही बड़ा हो आखिरत के मुकाबले में अत्याधिक तुच्छ होगा। इस लिए आखिरत को लक्ष्य बनाओ और दुनिया के छोटे एवं तुच्छ लाभों के लिए दीन की भेंट न चढ़ाओ।



जो कोई नेक अमल करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो हम उसे पाकिज़ा ज़िन्दगी बसर कराएंगे। और उन का फल उन के उत्तम कर्मों के अनुसार उन को प्रदान करेंगे। अतः जब तुम कुआन पढ़ा करो तो फिटकारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँग लिया करो । उस का ज़ोर उन लागों पर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं । उस का ज़ोर तो उन ही पर चलता है जो उस को अपना साथी (अभिभावक) बनाते हैं और जो अल्लाह का शरीक ठहराते हैं। (अल-कुआन)

96. जो कुछ तुम्हारे पास है समाप्त हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है 148। और जिन लोगों ने धैर्य (सब्र) से काम लिया उन को हम उत्तम कर्मों के अनुसार फल (इनाम) देंगे 149।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

97. जो कोई नेक अमल करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो हम उसे पाकिज़ा ज़िन्दगी बसर कराएंगे 150। और उन का फल उन के उत्तम कर्मों के अनुसार उन को प्रदान करेंगे।

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

98. अतः जब तुम कुर्आन पढ़ा करो तो फिटकारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँग लिया करो 151।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾

99. उस का ज़ोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं 152।

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

100. उस का ज़ोर तो उन ही पर चलता है जो उस को अपना साथी (अभिभावक) बनाते हैं और जो अल्लाह का शरीक ठहराते हैं 153।

إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَهُ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

101. और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत नाज़िल करते हैं 154 - - - और अल्लाह ही बेहतर जानता है उस चीज़ को जो वह नाज़िल करता है। - - - तो ये लोग कहते हैं कि तुम तो अपनी तरफ़ से गढ़ लिया करते हो। सच यह है कि इन में से अधिकतर लोग जानते नहीं (कि वास्तविकता क्या है)।

وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

102. कहो इस को रूहुल कुदुस 155 ने तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ नाज़िल किया है ताकि वह ईमान वालों को सुदृढ़ता प्रदान करे और हिदायत और खुशख़बरी हो इस्लाम लाने वालों के लिए।

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾

103. हमें मालूम है, ये कहते हैं कि इस व्यक्ति को एक आदमी सिखाता है, हालाँकि उस आदमी की ज़बान जिस की ओर ये संकेत कर रहे हैं अजमी (ग़ैर अरबी) है और यह स्पष्ट अरबी ज़बान है 156।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَبِي وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُبِينٌ ﴿١٠٣﴾

148. अर्थात् दुनिया की धन दौलत समाप्त हो जाने वाली है और आखिरत बाक़ी रहने वाली है। इस लिए आखिरत को अपना अन्तिम लक्ष्य बनाओ और वहाँ की नेमतों के इच्छुक बनो।

149. अर्थात् इन कड़ी परीक्षाओं में जो लोग सत्य पर जमे रहेंगे उनके लिए ये उत्तम कर्म आखिरत में उन की बुलंदी का निर्धारण करेंगे तथा उन को उत्तम कर्मानुसार ही इनाम से मालामाल किया जाएगा।

150. ईमान वालों को आखिरत में जो सफल जीवन प्राप्त होगा वह तो होगी ही, इस दुनिया में भी अल्लाह तआला का वादा है कि वह उन को बेहद पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर कराएगा। पाकीज़ा ज़िन्दगी में अक़ीदे की पाकीज़गी, ईमान का नूर, मन की स्वच्छता, बुद्धि की पराकाष्ठा, रूह का सुकून, आखों की ठंडक, शरीर की पवित्रता, पूजा एवं उपासना का सौंदर्य, हलाल रोज़ी, निथरे सुथरे आचरण, जिम्मेदारियों का एहसास, नेक कामों में अभिरूचि और बुराइयों से घृणा जैसी चीज़ें शामिल हैं। एक मोमिन ऐसी पाकीज़ा ज़िन्दगी को पा कर अपने दिल में जो मिठास महसूस करता है उस का कोई अन्दाज़ा दुनिया परस्तों को नहीं हो सकता। और इस पाकीज़ा ज़िन्दगी के मुकाबले में सांसारिक ऐश्वर्य एवं वैभवशाली जीवन कुछ भी नहीं।

151. अर्थात् सौभाग्य का यह मार्ग जिस का ऊपर की आयतों में वर्णन हुआ कुर्आन के द्वारा तुम पर स्पष्ट हो सकता है बशर्ते कि तुम कुर्आन को पढ़ते हुए शैतान से चौकन्ना रहो। क्यों कि शैतान अपने बहकावे की शक्ति के द्वारा इस बात के लिए तत्पर रहते हैं कि आदमी कुर्आन को सही तौर पर मसझने न पाए। वह जेहन में उलझनें पैदा कर के कुर्आन की शिक्षा को ग़लत समझने की कुचेष्टा करता है।

इस आदेश के अनुपालन में कुर्आन पढ़ते समय

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

(अर्थ:- मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ शैतान मरदूद से) की दुआ पढ़ना ज़रूरी है। मगर इस का पूरा लाभ तभी आदमी को पहुँच सकता है जब कि वह यह दुआ पूर्ण विवेक के साथ पढ़े और कुर्आन को समझना चाहे।

152. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट ३९

153. अर्थात् शैतान उन ही को बहकाने में सफल हो जाता है जो अपने रब के बजाए शैतान से दोस्ती कर लेते हैं और तौहीद को छोड़ कर शिर्क करने लगते हैं अर्थात् अल्लाह का साझीदार ठहराने लगते हैं।

154. कुर्आन इन्सानों द्वारा लिखी हुई किताबों की तरह

कोई किताब नहीं है कि उस को पूर्ण कर के एक साथ प्रस्तुत कर दिया जाता और इस के द्वारा लोगों की जानकारियों में वृद्धि कर दी जाती बल्कि यह किताब इन्सानों के सृष्टा ने उस की हिदायत और तालीम-व-तरबियत के लिए नाज़िल की है। इस लिए नीतिपूर्ण बात यह ठहरी कि कुर्आन पर ईमान लाने वालों का जो जल्था आरम्भिक रूप से बने उस को सामने आने वाली परिस्थितियों के हिसाब से समय समय पर हिदायत दी जाती रहे ताकि कुर्आन का सार भी खूब अच्छी तरह से स्पष्ट हो और समय से निर्देश मिल जाने से ईमान वालों में सुदृढ़ता और कर्मों में मज़बूती का सामान भी हो। इस महान नीति के चलते कुर्आन का अवतरण क्रमानुसार हुआ और उस में संक्षिप्त और विस्तार का अन्तर आया। मिसाल के तौर पर शुरू की सूरतों में तौहीद को संक्षिप्त परन्तु व्यापक रूप में प्रस्तुत किया गया किन्तु बाद की सूरतों में उस के तक्राज़े बताए गए। इसी प्रकार आरम्भ में एक मात्र खुदा की इबादत का संक्षिप्त आदेश दिया गया था किन्तु बाद में उस की तफ़सीलात नमाज़ आदि बयान हुई। काफ़िरों के अन्याय और अत्याचार के मुकाबले में मुसलमानों को सब्र करने का निर्देश दिया गया लेकिन बाद के चरणों में उन्हें हिज़रत की अनुमति दे दी गई, अतः इस सूरह में हब्शा की ओर हिज़रत का वर्णन भी हुआ है।

प्रारम्भ में काफ़िरों को समझाने बुझाने का हुक्म हुआ किन्तु बाद में हठधर्मी दिखाने वालों के साथ बचने का हुक्म भी दिया गया। यही बातें हैं जिन को कुर्आन ने एक आयत की जगह दूसरी आयत लाना कहा है वरना इन आयतों में न तो कोई विरोधभास एवं विपरीत भाव है और न कोई आयत परिभाषिक शब्दों में निरस्त। सूरह नहल एक मक्की सूरह है और वह भी मध्यकाल की इस लिए उस समय तक कोई ऐसा आदेश नाज़िल नहीं हुआ था जिस को किसी दूसरी आयत ने परिभाषिक अर्थों में निरस्त बताया हो अतः इस विषय की बहस का यहाँ कोई अवसर नहीं और आयत में इस के लिए कोई दलील नहीं है। बाद की आयत का यह वाक्य कि “ताकि वह ईमान वालों को सुदृढ़ता प्रदान करे” उस बात एवं सार को स्पष्ट करने के लिए काफ़ी है जो ऊपर बयान किया गया है।

155. रूहुल कुदुस का अर्थ है पाक रूह। यह जिब्रील अलैहिस्सलाम का लक़ब (उपनाम) है जो फ़रिश्तों के सरदार हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह की तरफ़ से “वह्य” (प्राकाशना) ले कर आया करते थे।

156. कुर्आन ने नाम की पुष्टि नहीं की है कि कौन व्यक्ति था जिस के बारे में बहुदेववीदी कहते थे कि ये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिखाता है। रिवायतों तथा उल्लेखों में विभिन्न नाम आए हैं जो प्रमाण की दृष्टि से संदिग्ध हैं। यह इस

बात की दलील है कि वह कोई प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति न था जिस के बारे में सिखाने पढ़ाने का संदेह किया जा सकता था। वरना वह प्रतिष्ठित व्यक्ति होता और उल्लेखकर्ता उस का नाम एक मत हो कर उद्धृत करते ।

कुर्आन स्पष्टीकरण करता है कि जिस व्यक्ति की तरफ बहुदेववादी संकेत कर रहे थे वह अरबी भाषी न था । फिर ऐसे व्यक्ति से क्यों और कैसे संभव है कि वह कुर्आन जैसे स्वच्छ

साहित्य की रचना करे जिस का भाषा के जगत में कोई उदाहरण नहीं। बहुदेववादियों के आरोपों के खण्डन के लिए यह एक दलील ही काफी थी वरना सोच विचार से काम लेने वालों के लिए तो दलीलों की कमी नहीं जो इस बात का खण्डन करते हैं कि कुर्आन मानव रचना है। और यह सुनिश्चित करते हैं कि यह शुरू से अन्त तक अल्लाह का कलाम है।



और वह दिन कि हर व्यक्ति अपने बचाव में
झगड़ता हुआ हाज़िर होगा । और हर व्यक्ति
को उस के कर्मों का पूरा पूरा बदला दिया
जाएगा और उन के साथ तनिक भी नाइन्साफ़ी
नहीं की जाएगी। (अल-कुआन)

104. दरअसल जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन को राह नहीं दिखाता और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

105. झूठ तो वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते ¹⁵⁷। वही हैं बिलकुल झूठे।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَذِبُونَ ②

106. जिस किसी ने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद उस से कुफ़्र किया सिवाय इस सूरत के कि उसे विवश कर दिया गया हो, और उस का दिल ईमान पर संतुष्ट हो, ¹⁵⁸ किन्तु जिसने कुफ़्र के लिए सीना खोल दिया तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप है और उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है ¹⁵⁹।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ③

107. यह इस लिए कि उन्होंने ने दुनिया के मुकाबले में आखिरत की ज़िन्दगी को पसंद कर लिया ¹⁶⁰। और अल्लाह काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَإِنَّ اللَّهَ لَابْهَدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ④

108. यही लोग हैं, जिन के दिलों, कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी ¹⁶¹। और यही लोग हैं जो गाफ़िल हैं।

أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَسَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ⑤

109. निश्चय ही ये लोग आखिरत में तबाह हाल होंगे।

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ⑥

110. अलबत्ता जिन लोगों ने आजमाइशों में पड़ने के बाद, हिजरत की, फिर जिहाद किया ¹⁶² और सब से काम लिया तो इन (कामों) के बाद निश्चय ही तुम्हारा रब उन के लिए क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فَعَلْتُمْ جَاهِدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ⑦

111. और वह दिन कि हर व्यक्ति अपने बचाव में झगड़ता हुआ हाज़िर होगा ¹⁶³। और हर व्यक्ति को उस के कर्मों का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन के साथ तनिक भी नाइन्साफ़ी नहीं की जाएगी।

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑧

कुअन 157. अर्थात् खुदा पर झूठ गढ़ने वाले वही लोग हो सकते हैं जो अल्लाह की ओर से अवतरीत होने वाली वह्य (प्रकाशना) पर ईमान न रखते हों। अल्लाह की वह्य पर ईमान और खुदा से मनगढ़ंत बातें सम्बन्धित करना तो बिल्कुल विपरीत बातें हैं, इस लिए पैगम्बर पर तो झूठ का आरोप किसी तरह लागू नहीं होता अलबत्ता ये आरोप बहुदेववादियों पर और पैगम्बर का विरोध करने वालों पर लागू होता है कि वे खुदा के नाम से झूठ बोलते हैं क्योंकि उन्होंने अपने अक्कीदे और अपने धर्म को या तो स्वयं गढ़ लिया है या गढ़ने वालों के पीछे चल रहे हैं, हर हाल में वे झूठे हैं।

158. इस आयत में उन लोगों को जिन्हें कुफ्र का कलिमा ज़बान से निकालने पर बिल्कुल विवश कर दिया गया हो, ऐसा करने की अनुमति इस शर्त के साथ दी गई है कि वे अपने दिल से ईमान पर संतुष्ट हों। यह अनुमति बस एक रियायत है वरना दृढ़ता की बात यही है कि एक मुसलमान जान की बाज़ी लगाए लेकिन कुफ्र का कलिमा अपनी ज़बान से न निकाले। इस का उत्तम उदाहरण हज़रत यासिर और हज़रत सुमैय्या (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) का है कि बहुदेववादियों ने उन पर बेहद

अत्याचार तोड़े और आखिरकार उन्हें क़त्ल कर दिया किन्तु वे कुफ्र का कलिमा कहने के लिए किसी भी तरह आमादा नहीं हुए।

हज़रत यासिर पहले मुसलमान हैं और हज़रत सुमैय्या पहली मुसलमान ख़ातून हैं जिन्होंने मक्का में शहादत को गले लगाया।

159. अर्थात् जो कुफ्र पर राज़ी होगा और जिस की धारणा, एवं आस्था काफ़िराना होंगी वे अल्लाह के प्रकोप और उस के अज़ाब से बच न सकेगा।

160. स्पष्ट हुआ कि दुनिया के लाभ को आखिरत के लाभ पर वरीयता देना काफ़िरो का काम है।

161. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १५

162. यहाँ जिहाद से मुराद वह निरंतर संघर्ष जो अत्यंत कठिन एवं विषम परिस्थितियों में जान पर खेल कर अल्लाह के दीन को फैलाने के लिए किया जाए।

163. अर्थात् क्रियामत के दिन हर व्यक्ति को अपने अपने बचाव की चिन्ता लगी होगी और वह अपने बचाव में तरह तरह के तर्क प्रस्तुत करेगा।



112. अल्लाह एक बस्ती की मिसाल देता है जो अमन और इत्मीनान की हालत में थी। हर तरफ़ से उस को बहुतायत के साथ रोज़ी पहुँच रही थी, किन्तु उस ने अल्लाह की नेमतों की नाशुकी (अकृतज्ञता) की तो अल्लाह ने उन के (अर्थात् उस बस्ती वालों के) करतूतों के कारण उन को भूख और भय के छा जाने का मज़ा चखाया ¹⁶⁴।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

113. और उन के पास उन ही में से एक रसूल आया। मगर उन्होंने उसे झुठलाया। आखिरकार अज़ाब ने उन्हें आ लिया। इस हाल में कि वे ज़ालिम थे ¹⁶⁵।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

114. अतः अल्लाह ने जो हलाल और पाकीज़ा रोज़ी तुम को दिया है उस में से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र अदा करो, अगर तुम केवल उसी की इबादत करते हो ¹⁶⁶।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾

115. उस ने तुम पर केवल मुर्दार, खून, सुअर का गोश्त और वह (ज़बीहा जानवर) हराम ठहराया है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो ¹⁶⁷। फिर जो कोई मजबूर हो जाए और न तो उस की इच्छा रखता हो और न हद (ज़रूरत) से आगे बढ़ने वाला हो, तो निश्चय ही अल्लाह क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है ¹⁶⁸।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخُزْزِيرِ وَمَا أُهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٥﴾

116. और तुम्हारी ज़बानें जो झूठे हुक्म लगाती हैं उन के आधार पर यह न कहो कि ये हलाल है और ये हराम कि अल्लाह की ओर झूठ बात जोड़ने लगे ¹⁶⁹। जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं वे हरगिज़ मुक्ति नहीं पायेंगे।

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾

117. यह थोड़ा सा ऐश है, फिर उन के लिए दुखदायिनी यातना है ¹⁷⁰।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

118. और यहूदियों पर हम ने वे चीज़ें हराम कर दी थीं जो हम इस से पहले तुम से बयान कर चुके हैं, ¹⁷¹ हम ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे ¹⁷²।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

164. यह उदाहरण द्वारा मक्का वालों ही का हाल बयान हुआ है। वे शान्ति, सुकून और चैन का जीवन बिता रहे थे और ग़ल्ला आदि भी हर तरफ़ से वहाँ पहुँच रहे थे। किन्तु उन्होंने ने अल्लाह की इन नेमतों की क़दर करने के बजाय नाशुक्री की जिस के कारण अल्लाह ने उन पर सूखे का प्रकोप डाल दिया। यह सूखा ऐसा प्रचण्ड था कि भूखों मरने की नौबत आ गई और जानों के विनाश का भय लागू हो गया।

165. ऊपर मक्का वालों का जो हाल बयान हुआ है यह उसी का परिणाम है कि अल्लाह ने उन की हिदायत के लिए उन ही में से एक रसूल उठाया। किन्तु बजाय उस के कि वे अल्लाह के इस एहसान की क़दर करते उन्होंने ने रसूल को रसूल मानने ही से इन्कार कर दिया और शिर्क (बहुदेववाद) पर जो सब से बड़ा ज़ुल्म एवं अत्याचार है, जमे रहे।

आखिरकार अल्लाह ने उन को कड़ी सज़ा दी। यह सज़ा उन्हें निकट भविष्य में निश्चित रूप से मिलने वाली थी इस लिए उसे इस तरह बयान फ़रमाया गया कि जैसे यह सज़ा उन्हें मिल ही गई।

मक्का के बहुदेवादियों पर सज़ा (अज़ाब) की सूरत यह हुई कि इन आयतों के उतरने के कुछ ही साल बाद बद्र का संग्राम हुआ जिस में उन के बड़े बड़े सरदार मारे गए और इस के बाद दूसरे युद्ध भी हुए। इस प्रकार अल्लाह का अज़ाब मुसलमानों की तलवार के रूप में उन पर ऐसा टूट पड़ा कि उस क्षेत्र में न कहीं शिर्क (बहुदेववाद) का अस्तित्व रहा और न बहुदेवादियों का।

166. बहुदेववादी बुत परस्ती के बावजूद खुदा परस्ती का दावा करते थे इस लिए उन से कहा गया कि यदि वास्तव में तुम एक खुदा के भक्त हो तो ज़रूरी है कि उस के बख़शे हुए रिज़क को जो पाकीज़ा भी है और जिसे उस ने हलाल भी ठहराया है, निस्संकोच खाओ और बहुदेववादि भ्रमों एवं अंधविश्वासों में लिप्त हो कर ऐसी किसी चीज़ को अपने ऊपर हaram न ठहराओ। इसी प्रकार खुदा परस्ती का तक्राज़ा यह भी है कि उसी की प्रदान की हुई नेमतों पर उसी का आभार व्यक्त करो, उसी का शुक्र अदा करो। अर्थात् अल्लाह के सिवा अन्य किसी के नाम पर जानवर को ज़बह करना, उन का सान्निध्य पाने के लिए भेंट आदि प्रस्तुत करना उन की पूजा एवं उपासना के समानार्थ और एक खुदा की परस्तिश के विरुद्ध है।

यह इशारा है बहुदेवादियों के भ्रमों एवं अंधविश्वासों की तरफ़ जिस में लिप्त हो कर वे कुछ चौपायों को बुतों के नाम पर छोड़ देते, फिर न उन का दूध पीते, न उन पर सवारी करते और न उन का गोशत खाते। इस प्रकार वे खुदा

के हलाल को हaram ठहराने के भी अपराधी होते और उस की प्रदान की हुई नेमतों को दूसरों से सम्बन्ध बताकर उस की नाशुक्री भी करते तथा अल्लाह तक पहुँचाने का माध्यम भी बताते। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट २४९ और सूरह अनआम २५१, २५३)

यहाँ इन जानवरों को खाने का जो आदेश दिया गया है तो इस का मतलब यह है कि बुतों के लिए उन को नामज़द कर के तुम ने उन के अन्दर जो “धार्मिक श्रद्धा” पैदा कर दी है उस को समाप्त करो और अल्लाह के प्रदान किए हुए चौपायों को अल्लाह का एहसान मान कर केवल उस के नाम पर ज़बह करो और खाओ।

167. इन चीज़ों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट २०९ से २१३

स्पष्ट रहे कि ज़बीहा वही जायज़ है जो केवल अल्लाह के नाम से ज़बह किया गया हो। क्यों कि ज़बह करने की क्रिया अपने आप में स्वयं उस का समीप्य प्राप्त करने जैसा तथा इबादत है इस लिए इस अवसर पर अल्लाह के नाम के साथ किसी और का नाम शामिल करना इस समीप्य एवं इबादत में अल्लाह के सिवा अन्य को साझीदार (partner) ठहराना है। अगर कोई मुसलमान ज़बह करते समय अल्लाह का नाम लेता है और साथ ही किसी वली यह पीर का नाम भी ले तो यह ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा दूसरों के नाम) ही के ज़बीहे के हुक्म में होगा।

168. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट २१४ में गुज़र चुकी।

169. किसी चीज़ को हलाल या हaram कहने का मतलब यह होता है कि अल्लाह ने उस के बारे में यह हुक्म दिया है। इस दावे के पीछे अनिवार्य रूप से कोई दलील होनी चाहिए। और यह दलील अल्लाह की शरीअत ही हो सकती है जो नबियों के माध्यम से इन्सान को मिलती है। इस लिए किसी शरीअी दलील के बग़ैर मात्र अपनी इच्छा से किसी चीज़ को हलाल या हaram ठहराना अल्लाह से झूठ बाँधना है।

यह तो था बहुदेवादियों का झूठ लेकिन इस से बड़ा झूठ वह है जिसे आज के युग के अधर्मों लोगों ने आविष्कार किया है और वह यह कि खुदा का कोई अस्तित्व नहीं बल्कि वह मानव बुद्धि की काल्पनिक रचना है। अतः हलाल और हaram का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। (अल्लाह की पनाह)

170. अर्थात् अल्लाह पर झूठ बाँधने वाले संसार में थोड़े दिन मज़े कर सकते हैं। किन्तु न उन का यह सांसारिक

जीवन वास्तव में सफल है और न आखिरत की सफलता उन्हें कभी नसीब हो सकेगी। वहाँ तो उन्हें दुखदायी अज़ाब (यातना) ही भुगतना होगा।

171. संकेत है सूरह अन्आम आयत १४६ की ओर। ध्यान रहे कि सूरह अनआम जैसा कि मज़मून से अन्दाज़ा होता है, सूरह नह्ल के बाद नाज़िल हुई है लेकिन सूरह नह्ल

की ये चन्द आयतें जिन में यहूदियों से सम्बन्धित आपत्तियों के उत्तर दिए गए हैं, सूरह अन्आम के बाद नाज़िल हुई और मज़मून की मुनासिबत से उन की जगह सूरह नह्ल में क्रार पायी ।

172. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २६६

अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ, हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ । और उन के साथ बहस करो बेहतरीन तरीके पर । तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन उस की राह से भटक गया है और वही बेहतर जानता है हिदायत पाने वालों को। (अल-कुर्आन)

119. अलबत्ता तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने जिहालत के कारण बुरा कर्म किया फिर तौबा कर के सुधार कर लिया तो निश्चय ही तुम्हारा रब इस के बाद (उन के लिए) क्षमा करने वाला रहम फ़रमाने वाला है ¹⁷³।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْعَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝١١٩

120. निस्संदेह इब्राहीम एक मिसाली व्यक्ति थे ¹⁷⁴। अल्लाह के आज्ञाकारी ¹⁷⁵ और उसी के हो कर रहने वाले ¹⁷⁶। वे कभी मुश्रिक न रहे ¹⁷⁷।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝١٢٠

121. उस की नेमतों के वे शुक्रगुजार (कृतज्ञ) थे ¹⁷⁸। उस ने उन को चुन लिया ¹⁷⁹ और सीधी राह की तरफ़ उन की रहनुमाई की ¹⁸⁰।

شَاكِرًا لِلنِّعْمَةِ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝١٢١

122. हम ने उन को दुनिया में भी भलाई प्रदान की ¹⁸¹ और आखिरत में भी वे स्वालिहीन (नेक लोगों) में से होंगे ¹⁸²।

وَاتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَوَلَّاهُ فِي الْآخِرَةِ لِبَنٍ الصَّالِحِينَ ۝١٢٢

123. फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वहय (प्रकाशना) भेजी कि इब्राहीम के तरीके पर चलो जो सच्चे मार्ग पर चलने वाले थे और हरगिज़ मुश्रिकों में से न थे ¹⁸³।

ثُمَّ وَحِينَا إِلَيْكَ إِن تَتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝١٢٣

124. सब्त की पाबन्दी उन ही लोगों पर लागू की गई थी जिन्होंने ने उस के बारे में विभेद (इख़िलाफ़) किया था ¹⁸⁴। और निश्चय ही तुम्हारा रब क्रियामत के दिन इन के बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा जिन में यह विभेद करते रहे हैं ¹⁸⁵।

إِنَّمَا جَعَلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝١٢٤

125. अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ, हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ। और उन के साथ बहस करो बेहतरीन तरीके पर ¹⁸⁶। तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन उस की राह से भटक गया है और वही बेहतर जानता है हिदायत पाने वालों को।

ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادْ لَهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝١٢٥

173. यह आयत उन लोगों को जो जिहालत के चलते ऊट पटाँग के धर्मों का शिकार रहे हैं उन्हें प्रायश्चित एवं सुधार का न्योता देती है।

174. मूल अरबी में शब्द “उम्मह” इस्तेमाल हुआ है जिस के कई अर्थ हैं। एक अर्थ उस व्यक्तित्व के हैं जो बेमिसाल हो और दूसरा अर्थ इमाम और खैर एवं भलाई की शिक्षा देने वाला है। (लिसानुल अरब जिल्द १२ पृष्ठ २७) इब्ने तीमिया ने इस को “अल-कुदवत” मिसाली व्यक्तित्व के अर्थ में लिया है (मज्मूआ फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द १७ पृष्ठ ४८३) और हम ने इसी अर्थ को वरीयता दी है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस विशेषता को बयान करने से अभिप्रेत बहुदेववादियों पर जो आप को अपना पेशवा स्वीकार करते थे और आप का अनुसरण एवं अनुपालन करने का दावा करते थे, यह स्पष्ट करना है कि इब्राहीम जिस माहौल में पैदा हुए वह पूर्ण रूप से मुश्रिकाना एवं बहुदेववादी वातावरण था किन्तु उन का व्यक्तित्व सब से अलग एवं बिल्कुल स्पष्ट व्यक्तित्व था जो एक मात्र खुदा के अनुयायी के रूप में उभरा और जिस ने दुनिया को तौहीद का सबक दिया इस लिए वे एकेश्वरवादियों के इमाम और पेशवा हैं न कि बहुदेववादियों के। और यदि तुम्हें वास्तव में उन का अनुसरण एवं अनुपालन करना है तो तौहीद अथवा एकेश्वरवाद का मार्ग अपनाओ।

आगे उन के दूसरे गुण अथवा दूसरी विशेषताएँ बयान की गई हैं जो उन के व्यापक एवं अद्वितीय व्यक्तित्व को उजागर करते हैं।

175. मूल अरबी में “क्रानत” शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का मतलब है वह व्यक्ति जो सदा सर्वदा का फ़रमाँबरदार एवं अज्ञाकारी हो। इब्ने तीमिया फ़रमाते हैं:-

कुनूत का अर्थ सर्वदा अनुपालन के हैं और क्रानत वह है जो सदा सर्वदा अल्लाह की आज्ञा का पालन करने में लगा रहे। (मज्मूआ फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द ५ पृष्ठ २३)

176. मूल अरबी (Text) में “हनीफ़” शब्द इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ है सीधे सच्चे मार्ग पर चलने वाला और अल्लाह ही का हो कर रहने वाला।

इब्ने तीमिया फ़रमाते हैं:-

فَهُوَ مُسْتَقِيمُ الْقَلْبِ إِلَى اللَّهِ دُونَ مَاسَواهِ .

अर्थ:- “हनीफ़ अर्थात् अपने दिल से अल्लाह ही की ओर मुँह करने वाला, किसी और की तरफ़ नहीं।” (मज्मूआ फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द २८ पृष्ठ ३२)

177. इब्राहीम कभी मुश्रिक अर्थात् बहुदेववादी नहीं रहे अतः तुम्हारा अपने बहुदेववादी तौर तरीकों एवं धर्मों को उन से जोड़ना सरासर ग़लत है।

मालूम हुआ कि इब्राहीम अपने जीवन भर में कभी अल्लाह का साझीदार ठहराने के अपराधी नहीं हुए। इस लिए तारे को देख कर उन्होंने जो कुछ कहा था उस को शिर्क नहीं कहा जा सकता बल्कि वह तो बातों को समझने समझाने के लिए तर्क का एक तरीका था। (देखिए सूरह अन्आम नोट १३१)

178. अर्थात् वे खुदा की नेमतों पर खुदा ही का शुक्र अदा करते थे और उस के एहसानों को पहचानते और समझते थे।

179. अर्थात् इब्राहीम को अल्लाह ने नुबुव्वत के लिए चुन लिया था।

180. अर्थात् नबी नियुक्त करने के बाद दीन (इस्लाम) की राह पूरी तरह उन पर खोल दी जो सीधे अल्लाह तक पहुँचती है।

181. इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने दुनिया में जो भलाई प्रदान की है उस में सम्मान, प्रतिष्ठा, बुलन्दी, इस्माईल और इस्हाक जैसे बेटे, सीरिया का बरकत वाला इलाका, मक्का की आत्मविभोर कर देने वाली पावन धरती और भलाई के कामों के लिए साधनों की बहुतायत जैसी चीज़ें शामिल हैं। एवं यह बात भी कि सच्चाई की ज़बानें रहती दुनिया तक बुलन्द रहने वाली हैं। सलाम हो इब्राहीम पर।

182. आख़िरत (परलोक) की कामयाबी के लिए पहली शर्त नेक होना है। बुलन्द दर्जा उस के बाद है। इब्राहीम ने दुनिया में अच्छी, सुथरी और नेक ज़िन्दगी गुज़ारी थी इस लिए आख़िरत में भी वे स्वालेह अर्थात् अच्छे और नेक होंगे।

183. इब्राहीम के तरीके (मिल्लत) से मुराद इब्राहीम का दीन और उन की शरीअत है। उन का दीन तौहीद अर्थात् इस्लाम था और उन की शरीअत सादा शरीअत थी जिस में वे पाबन्दियाँ नहीं थी जो यहूदियों को उन की निरंतर अवज्ञा एवं आदेशाल्लंघन के कारण उन पर लागू कर दी गई थीं। और हज्ज के पवित्र स्थल एवं अरकान इब्राहीम की शरीअत ही का अंश हैं।

कुर्आन का अवतरण इब्राहीम के दीन और उन की शरीअत को ज़िन्दा करने ही के लिए हुआ है और उन के तरीके पर चलने की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो हिदायत की गई है तो इस का मतलब यह है कि कुर्आन

की राह वही है जो इब्राहीम की थी। अतः कुर्आन की राह पर चलना इब्राहीम की राह पर चलना है। इस के विपरीत अरब के बहुदेववादियों की राह इब्राहीम की राह नहीं है।

184. सब्त (सनीचर का दिन मनाने) की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट में २५० में गुज़र चुकी।

यहाँ जो फ़रमाया कि सब्त की पाबन्दी केवल उन लोगों पर लगाई गई थी जिन्होंने उस के बारे में विभेद किया तो इस की सही और उत्तम व्याख्या वह है जो हदीस में बयान हुई है।

قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَحْنُ الْآخِرُونَ السَّابِقُونَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ بَيَدِ أَنَّهُمْ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلَنَا وَ أَوْتَيْنَاهُ
مِنْ بَعْدِهِمْ فَهَذَا يَوْمُهُمُ الَّذِي فُرِضَ عَلَيْهِمْ
فَاخْتَلَفُوا فِيهِ فَهَدَانَا اللَّهُ لَهُ فَهُمْ لَنَا فِيهِ تَبِعٌ
فَالْيَهُودُ غَدًا وَالنَّصَارَى بَعْدَ غَدٍ. (مسلم کتاب الحجّة)۔

अर्थ :- “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हम बाद में आने वाली उम्मत है किन्तु क्रियामत के दिन सब से आगे होंगे। यद्यपि कि उन लोगों को किताब हम से पहले मिली और हम को उन के बाद। यह जुमा का दिन ही है जो उन पर फ़र्ज़ किया गया था किन्तु उन्होंने उस में विभेद किया तो अल्लाह ने इस मामले में हम को हिदायत दी। अब वे हमारे पीछे रह गए। यहूदी कल के लिए और ईसाई परसों के लिए।” (मुस्लिम, किताबुल जुमुअः)

मतलब यह कि यहूदियों को शुरू में यही आदेश दिया गया था कि वे जुमा (जुमुअः) के दिन को अल्लाह के ख़ास आदेशों के अनुपालन हेतु विशिष्ट कर लें किन्तु उन्होंने ने अपने नबी से इस मामले में विभेद किया और इस बात पर हठी हुए कि सनीचर के दिन को निर्धारित किया जाए। उन के इस विभेद के कारण अल्लाह तआला ने उन के लिए सनीचर का दिन निर्धारित किया और साथ ही इस दिन को मनाने संबन्धी कड़े आदेश दिये। यदि वे जुमा के दिन पर राज़ी हो जाते तो इतने कड़े आदेश नहीं दिये जाते। इस के बाद जब ईसाई आए तो उन्होंने सब्त के मामले में विभेद कर के इतवार का दिन अपने लिए सुनिश्चित कर लिया। लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसलम की उम्मत ने अल्लाह की कृपा से जुमे के दिन को पा लिया। उन को जब जुमा के दिन ख़ास इबादत का आदेश दिया गया तो उन्होंने कोई विभेद नहीं किया। इस प्रकार जुमे का दिन जिस से

वास्तव में सप्ताह का आरम्भ होता है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिस्से में आया। यहूदी सनीचर के कारण एक दिन पिछे रह गए और ईसाई इतवार के कारण दो दिन पीछे।

यहूदियों को गाय ज़बह करने का जो हुक्म दिया गया था उस के बारे में भी उन्होंने ने जैसा कि सूरह बक्रः आयत ६७ से ७१ में गुज़र चुका तरह तरह के प्रश्न उठाए। इसी तरह उन्होंने उस कलिमे को भी बदल दिया जो उन्हें एक शहर के अन्दर विजय अर्जित करते हुए पढ़ने के लिए कहा गया था। (सूरह बक्रः आयत ५८) इस लिए उन से यह बात असंभव नहीं कि जब उन से जुमा का दिन सुनिश्चित करने के लिए कहा गया हो तो उन्होंने ने उस से विभेद किया हो और उन के इस विभेद और उन की शरारतों के कारण अल्लाह तआला ने जुमुआ (जुमा) के बजाए सनीचर का दिन मनाने का आदेश दिया हो और फिर पाबन्दियाँ भी कड़ी कर दी हों। रहे ईसाई तो उन्होंने यहूदियों से विभेद करते हुए सनीचर के बजाए इतवार का दिन अपने लिए सुनिश्चित कर लिया। हालांकि वे तौरात को मानते थे। अतः बाइबिल का टीकाकार लिखता है :-

“The change over from Sabbath (Saturday in the Gentile Calender) to Sunday as the day of worship was accomplished by the early 2nd Cent.”—(The Interpreter's Commentary on the Bible, page 650).

इस आयत में वास्तव में बहुदेववादियों की इस आपत्ति का उत्तर दिया गया है कि यह नबी सब्त का आदेश क्यों नहीं देता। उन्हें जवाब दिया गया है कि सब्त का हुक्म इब्राहीम की शरीअत में नहीं था बल्कि यहूदियों को विशेष कारणों के चलते दिया गया था और चूँकि इस नबी को बुनियादी तौर पर वही शरीअत दी गई है जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दी गई थी। इस लिए इस शरीअत में सब्त जैसी कड़ी पाबन्दियाँ नहीं हैं।

185. अर्थात् इन सारे विभेदों और मतभेदों का जो ख़ुदा के दीन और उस की शरीअत के बारे में पैदा कर दिये गए हैं, आखिरी फैसला क्रियामत के दिन ही हो सकेगा।

186. अल्लाह के रास्ते अर्थात् सत्य धर्म की ओर बुलाने के तीन तरीके यहाँ बयान किये गये हैं।

पहला तरीका हिकमत अर्थात् नीतिपूर्ण तरीका है। मतलब यह कि ऐसी बातें जो बुद्धि और मन को अपील करने वाली हो। जिन में वे तर्क शामिल हैं जो मानव स्वभाव में अन्दर तक जड़ पकड़े हुए हैं, एवं कायनात के चिन्हों से तर्क भी। यह

तरीक़ा बुद्धि जीवियों तथा चिन्तन करने वालों के लिए अधिक उचित है।

दूसरा तरीक़ा मीठी बातों तथा सुन्दर वार्तालाप का है। अर्थात् दिल को अपील करने वाली बातें पेश करना ताकि आत्मा और दिल नसीहत की बातें स्वीकार करने के लिए आमादा हो जाएँ। यह भाषण या ख़ाली खूली उपदेश नहीं बल्कि शिक्षण एवं प्रशिक्षण और मनका शुद्धिकरण है। इस में नबियों की पवित्र जीवनी से इबरत देने वाली बातें प्रस्तुत करना मौत की याद दिलाना, आख़िरत के इनाम और दण्ड को बताना जैसी चीज़ें शामिल हैं। और यह तरीक़ा सामान्य जनों के लिए अधिक लाभदायक है।

रहा तीसरा तरीक़ा तो वह भले तरीक़े से बहस का है। जिस का मतलब यह है कि अगर बहस एवं मुबाहसे की ज़रूरत हों तो उस को अपनाया जा सकता है बशर्ते कि बात

को पेश करने की अच्छी शैली अपनायी जाए। अर्थात् किसी बात को रद्द किया जाए तो उचित तर्कों के साथ और किसी आपत्ति का जवाब दिया जाए तो ख़ूबी और दलील के साथ। और नैतिकता की सीमा में रहते हुए कि सामने वाले में चिड़, हट, घृणा एवं उत्तेजना पैदा न हो वरना वह असल दअवत समझने पर आमादा न होगा।

दअवत के असली तरीक़े दो ही हैं जो ऊपर बयान हुए और बहस एवं मुबाहसे का तरीक़ा बहुत ज़रूरत पड़ने पर ही अपनाने का है। और इस की ज़रूरत वहाँ होती है जहाँ सामने वाले की तरफ़ से आपत्ति, संदेह या कोई ग़लत सिद्धान्त एवं प्रदर्शन प्रस्तुत किया जा रहा हो। कुर्आन में इस के असंख्य उदाहरण मौजूद हैं। मिसाल के तौर पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपनी क़ौम से और नमरूद से मुबाहसा। मनुष्य को दोबारा उठाए जाने के बारे में बहुदेववादियों के प्रश्नों का उत्तर आदि।



126. और अगर तुम बदला लो तो उतना ही लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है और अगर सब्र करो तो निश्चय ही यह बात सब्र करने वालों के लिए बेहतर है।¹⁸⁷

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

127. और (ऐ पैगम्बर !)सब्र करो, और तुम्हारा सब्र करना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है । और उन लोगों के हाल पर ग़म न करो न उन की चालों से दिल तंग हो।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

128. निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जिन्होंने तक्रवा (ईश-परायणता) अपनाया और जो नेक किरदार (सुचरित्र) हैं।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

187. इस आयत की पृष्ठ भूमि यह है कि मक्का में बहुदेववादी ईमान वालों पर अथाह जुल्म तोड़ रहे थे और उन का कुसूर इस के सिवा कुछ न था कि वे अपनी अन्तरात्मा की पुकार पर आगे बढ़ते हुए एक मात्र खुदा पर ईमान ले आए थे। वे मुट्ठी भर लोग थे। और अभी इस पोजीशन में नहीं थे कि सामूहिक तथा सामाजिक रूप से अपनी शक्ति का उपयोग करें। इन हालत में उन को सब्र और धैर्य की तल्कीन की गई कि यदि वे ज़ालिम से बदला लेना चाहें तो बराबरी का बदला ले सकते

हैं। अर्थात् जितनी ज़्यादाती तुम्हारे साथ की गई हो उतनी ही ज़्यादाती तुम उस के साथ कर सकते हो, इस से आगे बढ़ने की हरगिज़ अनुमति नहीं है।

इस से यह उसूली रहनुमाई मिलती है कि एक ग़ैर मुस्लिम सोसायटी में एक मुसलमान के लिए चाहे वे इस्लाम की दअवत देने वाले (दाओ) ही क्यों न हों इस बात की अनुमति है कि वह ईंट का जवाब ईंट से दे।



सूरह बनी इस्राईल

१७.सूरह बनी इस्राईल

नाम: शुरू की आयतों में बनी इस्राईल के इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय की ओर संकेत किया गया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम बनी इस्राईल सुनिश्चित हुआ है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मदीना की हिज़रत से लगभग एक साल पहले अर्थात् सन १२ नबवी में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: बनी इस्राईल और बनी इस्माईल (अरब के बहुदेववाद) दोनों को सचेत करना है कि पवित्र एवं प्रतिष्ठित मस्जिदे-हराम और मस्जिदे-अक्रसा दोनों को इस नबी के हवाले करने का फैसला किया गया है। अगर तुम अपनी उदंडता से बाज़ नहीं आए और हमारे रसूल से टक्कर ली तो याद रखो अल्लाह की मार तुम पर पड़ कर रहेगी। अगर संभलना चाहते हो तो नबी की राह में रुकावटें पैदा करने के बजाय उन बातों और शिक्षाओं को अपना लो जो उस पर नाज़िल की गई हैं।

कलाम की तरतीब: शुरूआत मेराज की घटना से की गई है। जिस में यह संकेत निहित है कि मस्जिदे-हराम और मस्जिदे-अक्रसा दोनों पर नबी और उस के अनुयायियों का बोलबाला होने वाला है।

आयत २ से ८ में मस्जिदे-अक्रसा से सम्बन्धित बनी इस्राईल को उन की इतिहास के इबरत देने वाली घटनाएँ सुना कर सावधान कर दिया गया है।

आयत ९ से २२ में कुर्आन की दअवत को पेश किया गया है।

आयत २३ से ३९ में रब्बानी तालीमात बयान हुई हैं जो इन्सान के चरित्र को संवारती हैं और उस के रब से उस के सम्बन्ध को बनाती है।

आयत ४० से ६० में इन्कार करने वाले मुन्किरीन के संदेहों एवं आपत्तियों का जवाब दिया गया है।

आयत ६१ से ६५ में इब्लीस की उस घटना को प्रस्तुत किया गया है कि उस ने आदम को सज्दा करने से इन्कार कर के मानव जाति के साथ दुश्मनी कर ली है और उसे गुमराह करने की ठान ली है और वही आज लोगों को कुर्आन से विमुख कर रहा है। ज़रूरी है कि लोग अपने दुश्मन से चौकन्ना रहें।

आयत ६६ से ७२ में तौहीद और आखिरत का विश्वास पैदा करने वाली बातें प्रस्तुत की गई हैं।

आयत ७३ से ७७ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ताकीद की गई है कि आप विरोध के तूफान से गुजरते हुए हक़ की राह पर मज़बूती के साथ जमे रहें।

आयत ७८ से ८२ में नमाज़ की ताकीद, हिज़रत की ओर संकेत कि शीघ्र ही यह घटना घटित होने वाली है, सत्य की विजय और उस के हावी होने की खुशख़बरी और ज़ालिमों को चेतावनी।

आयत ८३ से १०० में मनुष्य के ग़लत कामों पर पकड़ और न मानने वाले मुन्किरीन के संदेहों के उत्तर।

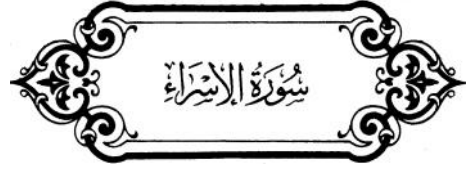
आयत १०१ से १०४ में मूसा अलैहिस्सलाम के मोज़ाओं (चमत्कारों) का वर्णन और यह स्पष्टीकरण कि चमत्कारों को देख लेने के बाद भी फ़िरऔन ईमान नहीं लाया और आखिरकार उस पर अज़ाब टूट पड़ा।

आयत १०५ से १११ उपसंहार है जिस में खुदा को पुकारने के आदाब को ध्यान में रखने और उस की महानता एवं बड़ाई बयान करने की हिदायत की गई है।

सूरह की शुरूआत इस बात से हुई थी कि अल्लाह के लिए पाकी है और खात्मा इस बात पर हुआ है कि वह अत्यंत महान हस्ती है अतः उस की बड़ाई बयान करो।

१७. सूरह बनी इस्राईल

आयतें : 111



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. पाक है वह जो ले गया अपने बन्दे को एक रात मस्जिदे-हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिस के चारों तरफ़ हम ने बरकतें रखी हैं ताकि उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वही है सब कुछ सुनने वाला देखने वाला ।¹

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ
مِنَ الْبَيْتِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ①

2. और हम ने मूसा को किताब प्रदान की थी² और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत का साधन बनाया था कि मेरे सिवा किसी को अपना विश्वासपात्र न बनाओ³।

وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ
أَلَّا تَتَّخِذُوا مِن دُونِي وَكِيلاً ②

3. तुम उन लोगों की औलाद हो जिन को हम ने नूह के साथ (नाव में) सवार कराया था⁴। वह वास्तव में एक शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दा था।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ③

4. और हम ने किताब में बनी इस्राईल को अपने उस फैसले से आगाह कर दिया था कि तुम दो बार ज़मीन में फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी (अवज्ञा) करोगे⁵।

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ
مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ④

5. फिर जब पहले वादे का समय आ गया तो हम ने तुम पर ऐसे बन्दे मुसल्लत कर दिए जो बड़े बलवान थे। वे तुम्हारे घरों में घुस पड़े, और वादा पूरा होकर रहा⁶।

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لِّأُولَىٰ بَائِسٍ
شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ⑤

6. फिर हम ने उन के मुकाबले में तुम्हें प्रभुत्व दिया और माल और औलाद से तुम्हारी सहायता की और तुम्हारी संख्या बढ़ा दी⁷।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ
وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ⑥

1. इस आयत में जिस घटना का वर्णन है वह इसरा और मेराज के नाम से मशहूर है। यहाँ मक्का से बैतुलमुकद्दस तक का सफ़र एक रात में करा देने की पुष्टि की गई है जो मेराज का पहला मरहला था। रहा दूसरा मरहला जिस में आप को सातवें आसमान तक स्थित सिदरतुलमुन्तहा (जहाँ तक कोई नहीं जा सकता) तक को दिखाया गया तो इस का वर्णन सूरह “नज्म” में हुआ है इस लिए हम यहाँ उन ही बातों की व्याख्या पर संतोष करेंगे जो पहले चरण अर्थात् इसरा (बैतुलमुकद्दस तक के सफ़र) से सम्बन्ध रखती हैं।

आयत में अब्द (बन्दा) से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह का यह इरशाद कि वह अपने बन्दे को ले गया उस की खास कृपा का द्योतक है जो उस बन्दे पर हुई।

मस्जिदे हराम से मुराद मक्का की वह पवित्र एवं प्रतिष्ठित मस्जिद है जिस के बीच खाना-ए-काबा है और जिसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बनाया था (लगभग दो हजार वर्ष ई.पू.)

दूर की मस्जिद से तात्पर्य मस्जिदे अक्सा है जो बैतुलमुकद्दस में स्थित है। अक्सा का अर्थ दूर वाली के हैं। इस से कुर्आन का इशारा इस बात की ओर है कि बैतुलमुकद्दस की मस्जिद मक्का की मस्जिद-हराम से काफ़ी दूरी पर हैं किन्तु यह लम्बा फ़ासला अल्लाह तआला ने अपने पैगम्बर के लिए एक रात के कुछ हिस्से में तय करा दिया। कुर्आन के इन शब्दों की मुनासिबत से बैतुल मुकद्दस की इस ऐतिहासिक मस्जिद का नाम मस्जिदे-अक्सा मशहूर हुआ। वरना कुर्आन के नाज़िल होने के समय इस का यह नाम न था। बैतुल मुकद्दस की यह मस्जिद सुलेमान अलैहिस्सलाम ने लगभग एक हजार साल ई.पू. (अनुमानतः सन ९५९ ई.पू.) में निर्माण किया था जो बनी इस्राईल के लिए इस्लाम की दअवत फैलाने तथा दीनी सरगर्मियों का केन्द्र होने के अलावा क़िबला निर्धारित हुई थी।

इस के चारों ओर बरकतें रखने का मतलब यह है कि यह पूरा क्षेत्र दीनी और दुनियावी बरकतों से माला माल है। जहाँ तक दीनी अथवा धार्मिक बरकतों की बात है यह पावन स्थल हज़रत इब्राहीम की हिज़रतगाह और हज़रत इस्हाक़ का ठिकाना करार पाई तथा बनी इस्राईल के कई नबी (अलैहिमुस्सलाम) यहीं नियुक्त हुए और उन्होंने इस पावन धरती पर ऐसी यादगार पथ रेखाएँ छोड़ीं जो दुनिया वालों को सत्य धर्म की ओर मार्गदर्शन करती रहती हैं। यहाँ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को एक अनुपम राज्य प्रदान हुआ और बनी इस्राईल को वह कुछ बख़्शा गया जो दुनिया की किसी क़ौम को बख़्शा नहीं गया था। गोया इस धरती का चप्पा चप्पा नबियों की यादगार

होने के कारण दीनी दौलत के ख़जाने उगलता रहा है। रहा सांसारिक बरकतों से इस का मालामाल होना हो तो यह इलाक़ा बड़ा उपजाऊ और हराभरा है। बाइबिल में तो इस को यही कह कर परिभाषित किया है कि यहाँ दूध और शहद की नहरें बहती हैं। मक्का से बैतुल मुकद्दस का फ़ासला लगभग एक हजार मील है। उस ज़माने में यह सफ़र चालीस दिन में तय होता था। लेकिन अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए यह सफ़र चमत्कारिक रूप से एक रात के अन्दर ही तय करा दिया। हदीस में आता है कि आप बुराक़ पर सवार हो गए थे और हज़रत जिब्रील आप के साथ थे अर्थात् यह सफ़र एक बिजली की सी तेज सवारी पर हुआ था। यह बात उस ज़माने में तो बड़ी विचित्र मालूम होती थी किन्तु इस ज़माने में जब कि मनुष्य तेज़ रफ़्तार हवाई जहाज़ और राकेट आविष्कार कर चुका है, विचित्र नहीं रही। क्यों कि जब मनुष्य महीनों का फ़ासला घंटों में तय कर सकता है तो कायनात का प्रभु क्या इस की क्षमता एवं सामर्थ्य नहीं रखता होगा कि मक्का से बैतुलमुकद्दस का सफ़र मिनटों में पूरा करा दे?

इसी लिए इस सूरह की शुरुआत इस बात से हुई है कि अल्लाह پاک और दोष रहित है। अर्थात् यह चमत्कारिक सफ़र तय कराना अल्लाह की कुदरत से कदापि असंभव नहीं। जो लोग इस को असंभव समझते हैं वे अल्लाह की कुदरत का बिलकुल ग़लत अन्दाज़ा लगाते हैं।

इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह सफ़र शारीरिक था और जागने की हालत में था सपना नहीं था। अगर मात्र आत्मा का सफ़र होता या सपने में होता तो न इस को बताया जाता कि हम अपने बन्दे को एक रात ले गए और न ही लोगों के लिए यह बात अचम्भे में डाल देने वाली आजमाइश बन जाती।

जो व्यक्ति भी साफ़ और ख़ुले मन से आयत का अध्ययन करेगा वह यह महसूस किये बग़ैर नहीं रहेगा कि इस के द्वारा एक असाधारण घटना की सूचना दी जा रही है। और बुख़ारी की इस हदीस से इस का और भी अनुमोदन होता है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि “जब कुरैश ने मुझ को झुठलाया तो मैं हिज़ (खान-ए-काबा के बाह्य हिस्से) में खड़ा हो गया। उस समय अल्लाह ने मुझ पर बैतुलमुकद्दस को खोल दिया। मैं उस को देख कर उस के चिन्ह एवं पहचान उन को बताता जाता था।” (बुख़ारी हदीसुल-इस्सा) इस पर भी अगर लोग बहस में उलझते हैं तो उन्हें सावधान किया गया है कि अल्लाह उन की सब बातें सुन रहा है और वे जो कुछ करते हैं उसे देख रहा है।

रहा इस सफ़र का मक़सद तो आयत में बताया गया है कि अल्लाह तआला अपने नबी को अपनी कुछ निशानियाँ दिखाना चाहता था। निशानियों से तात्पर्य वे निशानियाँ हैं जो मस्जिद-अक्रसा में पायी जाती हैं और जो तौहीद, एक खुदा की इबादत नबियों का एक मत ऐलान एवं अहवान तथा दीने-हक़ (सत्य धर्म) के लिए उन की जद्दोजेहद, बनी इस्राईल के उत्थान एवं पतन का इतिहास और अल्लाह के प्रतिफल और कर्मफल देने के नियम पर तर्क प्रस्तुत करती हैं। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी क़िबलतैन अर्थात् दोनों क़िबलों का नबी बनाया जा रहा था इस लिए मस्जिद-अक्रसा का यह सफ़र (सर्वेक्षण) काफ़ी महत्व रखता था। इन निशानियों के अलावा आश्चर्यचकित कर देने वाली कुदरत की निशानियाँ भी दिखाना अभिप्रेत था।

स्पष्ट रहे कि यह घटना किस महीने में और किस तारिख़ को घटी इस का स्पष्टीकरण न तो कुर्आन ने किया है और न हदीस ने। रह गई रिवायतें अथवा उल्लेख तो वे इस बारे में भिन्न हैं। और यह इस बात का प्रमाण है कि इस रात को हर साल मनाना अभिप्रेत न था वरना इस की पुष्टि कुर्आन या हदीस में की जाती। रहा मुसलमानों का २७ वीं रजब को शबे मेराज मनाना तो यह मुसलमानों की अपनी ईजाद है। दीन में इस की कोई असल नहीं। न इस रात को इबादत के लिए ख़ास किया गया है और न मेराज का जश्न मनाने का हुक्म दिया गया है।

2. अर्थात् तौरात।

3. तौरात में आज भी तौहीद का सबक़ मौजूद है। उदाहरण स्वरूप “निर्गमन” पुस्तक में है।

“मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर कर के न मानना।” (निर्गमन २०:२,३)

4. अर्थात् ऐ इन्सानों बनी इस्राईल समेत तुम सब उन लोगों की नस्ल से हो जिन को नूह की नाव में सवार करा के भीषण तूफ़ान और सैलाब से बचा लिया गया था। अल्लाह तआला का यह एहसान पूरी इन्सानियत पर है। इस लिए हर व्यक्ति को उस का शुक्रगुजार (कृतज्ञ एवं आज्ञाकारी) बनना चाहिए। और शुक्रगुजार वास्तव में तभी हो सकता है जब कि वह अल्लाह को अपना सच्चा मोहसिन (परोपकारी) मान ले।

5. किताब से मुराद जैसा कि ऊपर गुज़रा मूसा की किताब अर्थात् तौरात है। कुर्आन के अनुसार तौरात में यह पूर्व सूचना दी गई थी कि बनी इस्राईल मुल्क में दो बार बड़ा उपद्रव करेंगे और उद्दंडता दिखाएँगे जिस के फ़लस्वरूप उन को दोनों ही बार विनाश से दो चार होना होगा। यह मज़मून वर्तमान तौरात

में अपने मूल मंत्र में तो बाक़ी नहीं रह सका है अलबत्ता इस सूचना की ओर संकेत पाये जाते हैं।

अहबार में है :-

“यदि तुम मेरी न सुनोगे और इन सब आज्ञाओं को न मानोगे.....वरन् मेरी वाचा को तोड़ोगे तो मैं तुम से यह करूँगा..... और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे, और तुम्हारे बैरी तुम पर अधिकार करेंगे.....और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना दूँगा.....और मैं तुम्हारे पूजा के ऊँचे स्थानों को ढा दूँगा..... और मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूँगा और तुम्हारे पवित्र स्थानों को उजाड़ दूँगा.....और मैं तुम को जाति-जाति के बीच तितर बितर करूँगा और तुम्हारे पीछे तलवार खींचे रहूँगा और तुम्हारा देश सूना हो जाएगा और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएँगे।” (लैव्यव्यवस्था २६:१४ से ३३)

और व्यवस्थाविवरण के २८ वे अध्याय में है:-

“यदि तू इन व्यवस्था के सारे वचनों के पालन में जो इस पुस्तक में लिखे हैं चौकसी कर के उस आदरणीय और भययोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है, भय न माने तो यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे अनोखे दण्ड देगा और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे। और यहोवा तुझ को पृथ्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तितर बितर करेगा।” (व्यवस्था विवरण २८:५८ से ६४)

फिर जब बनी इस्राईल में बड़े पैमाने पर नैतिक एवं व्यवहारिक बिगाड़ पैदा हुआ और सामान्यरूप से लोग अवज्ञा एवं उद्दंडता में लिप्त हो गए तो यिर्मयाह नबी ने उन्हें समय रहते सावधान किया और बाबुल के राजा के हाथों उन के विनष्ट किए जाने की सूचना दी:-

“इस लिए सेनाओं का यहोवा युँ कहता है कि तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने इस लिए सुनो, मैं उत्तर में रहने वाले सब कुलों को बुलाऊँगा, और अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूँगा, और उन संभो को इस देश और इस के निवासियों के विरुद्ध और इस के आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊँगा, और इन सब देशों का मैं सत्यानाश कर के उन्हें ऐसा उजाड़ दूँगा कि लोग उन्हें देख कर ताली बजाएँगे.....और ये सब जातियाँ सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा के आधीन रहेंगी।” (यिर्मयाह २५:८ से ११)

6. बाबुल के राजा बख़्त नसर (नबूकदनेस्सर,

Nebuchadrezzar) के हमले की ओर संकेत है जो उस ने सन ५८६-५८८ ई.पू. में यहूदी राज्य पर किया था। उस ने यहूदियों के केन्द्र येरुशलेम को पूरी तरह विनष्ट कर दिया यहाँ तक कि मुक़द्दस मस्जिद को भी ढा दिया। हजारों यहूदियों को जान से मारा और असंख्या लोगों को लौन्डी गुलाम बना कर बाबुल ले गया ।

बाइबिल का टीकाकार लिखता है:-

“ आखिरकार जब बाबुल के लोग नगर में घुस पड़े तो उन्होंने ने दीवारों और महल तोड़ डाले और पूजा स्थल को ज़मीन के बराबर कर दिया ज़ेडेकिया के लड़के को उस के सामने क्रल्ल कर दिया और उस को अन्धा बनाकर और ज़न्जीर में जकड़ बाबुल ले जाया गया । येरुशलेम की आबादी के बड़े हिस्से को अपने देश घसीट ले गए।

इस प्रकार सल्लतने-दाऊद का दुखदायी अन्त हो गया।

(The Interpreter's Commentary on the Bible P. 1025)

यह था वह भयावह दण्ड जो बनी इस्राईल को उस के पहले समाजिक बिगाड़ पर दिया गया। इस से यह भी मालूम हुआ कि जब किसी क्रौम में बिगाड़ का प्रचलन आम हो जाता है और वह अवज्ञाकारी एवं उदंड बन जाती है तो अल्लाह तआला उस को सबक्र सिखाने के लिए उस के शत्रुओं और ज़ालिम शासकों को उस पर मुसल्लत कर देता है। अल्लाह के प्रकोप का यह अत्यंत भयावह स्वरूप होता है।

7. बनी इस्राईल को बाबुल में बन्दी बनाये जाने के दौरान सुधार के आन्दोलन छिड़े और धीरे धीरे वे खुदा की तरफ़ पलटने लगे। आखिरकार अल्लाह की रहमत उन पर लौट आई और उन को बाबुल की कैद से मुक्ति मिल गई। हुआ यूँ कि फ़ारस के राजा सायरस ने सन ५३९ ई.पू. में बाबुल पर विजय पताका फहराया और इस के बाद यहूदियों को येरुशलेम जाने और वहाँ खुदा का घर बनाने की अनुमति दे दी। इस प्रकार यहूदियों को फिर अपने केन्द्र पर लौट आने और बैतुलमुक़द्दस निर्माण करने का अवसर मिला। फिर उज़ैर अलैहिस्सलाम ने उन के सामने तौरात की इस तरह व्याख्या की कि उन में नवजीवन का प्रस्फुटन हुआ और अव्यवस्था की बातों को छोड़ कर खुदा की शरीअत का अनुपालन करने पर वे आमादा हो गए। (विस्तार के लिए देखिए सूरह तौबा नोट ५८)

यह बनी इस्राईल का पुनर्जागरण था। और जब अल्लाह तआला की रहमत उन पर लौट आई तो उन के लिए हर तरह के हालात बनते चले गए। धन दौलत भी खूब आई और नस्लें भी खूब बढ़ी।

इस से यह बात भी पता चली कि नस्लों का बढ़ना अल्लाह की नेमत और उस का फ़ज़ल (अनुग्रह) है इस लिए ईमान वाले इस के मूल्य को समझते हैं। रहे वंश को सीमित रखने के फ़ार्मूले तो यह उन ही लोगों पर शोभा देते हैं जो खुदा और उस की नेमतों का मूल्य नहीं समझते तथा उन का निरादर करते हैं।



7. अगर तुम ने भलाई की तो अपने ही लिए की और अगर बुराई की तो वह भी अपने ही लिए की ⁸। फिर जब दूसरे वादे का समय आया तो हम ने फिर प्रबल बन्दे तुम्हारे विरुद्ध उठाए ताकि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और उसी तरह मस्जिद में घुस पड़े जिस तरह पहली बार घुस पड़े थे। और जिस चीज़ पर उन का बस चले, विनष्ट कर के रख दें ⁹।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَبِيرًا ④

8. असंभव नहीं कि तुम्हारा रब तुम पर रहम फ़रमाए। लेकिन अगर तुम ने फिर वही रवैया अपनाया तो हम फिर उसी तरह दण्ड देंगे ¹⁰। और हम ने काफ़िरों के लिए जहन्नम को कैदखाना बना रखा है ¹¹।

عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُذْتُمْ عَدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ⑤

9. निश्चय ही यह कुर्आन उस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है जो बिल्कुल सीधा है ¹²। और ईमान वालों को जो नेक अमल करते हैं, इस बात की खुशखबरी देता है कि उन के लिए बहुत बड़ा इनाम है।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ⑥

10. और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उन के लिए हम ने दुखदायिनी यातना तैयार कर रखी है।

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑦

11. और इन्सान बुराई (शर) के लिए इस तरह दुआ करने लगता है जिस तरह उसे भलाई (खैर) के लिए दुआ करनी चाहिए। इन्सान बड़ा ही जल्दबाज़ सिद्ध हुआ है ¹³।

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ⑧

12. और हम ने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया। रात की निशानी हम ने मद्धिम कर दी और दिन की निशानी को प्रकाशमान कर दिया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़ल (रोज़ी) तलाश करो, और सालों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको ¹⁴। और हम ने हर चीज़ खोल खोल कर बयान कर दी है ¹⁵।

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ
النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ
وَالْحِسَابَ وَكُلُّ شَيْءٍ فَضْلُنَا نَقْصِيلًا ⑨

8. यह वास्तव में अल्लाह के उस नियम (सुन्नत) का ऐलान है कि जो क़ौम भी अल्लाह की किताब की भारवाहक हो उस का सामाजिक चरित्र अगर अच्छा होता है तो अल्लाह तआला उस को अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) से अलंकृत करता है और दुनिया में उस को मान सम्मान एवं बुलन्दी प्राप्त होती है लेकिन अगर उस का सामाजिक चरित्र बिगाड़ जाता है तो अल्लाह उस के दुश्मनों को उस पर मुसल्लत कर देता है और उसे अपमान का मज़ा चखाता है।

9. यह बनी इस्राईल के दूसरे बड़े बिगाड़ और इस के फ़लस्वरूप आने वाली दूसरे बड़े विनाश की ओर इशारा है। यह बिगाड़ पहले से भी अधिक तेज़ और भयावह था। तथा दीन दिखावे भर को रह गया था। उन को सुधार की ओर आमंत्रित करने और उन में दीन की वास्तविक रूह फूँकने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नियुक्त किया। मगर उस समय के यहूदी राजाओं ने एक नर्तकी की फ़रमाइश पर हज़रत यहया का सर क़लम कर के उस को अर्पित किया (मत्ती की इन्जील अध्याय १४) और ईसा अलैहिस्सलाम के विरोध में यहूदियों ने कोई कसर उठा न रखी। यहाँ तक कि उन को जान से मार देने पर तैयार हो गए। यह यहूदियों का दूसरा बड़ा फ़साद था जिस के बुरे परिणाम से ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें इस तरह आगाह किया।

“मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।” (मत्ती २४:२)

“हे यरूश्लेम की पुत्रियों, मेरे लिए मत रोओ, परन्तु अपने और अपने बालकों के लिए रोओ। क्यों कि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, धन्य है वे जो बाँझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया। उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम पर गिरो और टीलों से कि हमें ढाँप लो।” (लूका २३:२८, २९, ३०)

और दूसरे बड़े बिगाड़ की सज़ा यहूदियों को इस प्रकार मिली कि सन ७० ई. में टीटस रोमी (Titus) ने बैतुलमुक़द्दस पर भयंकर हमला कर के उस की ईंट से ईंट बजा दी। मस्जिद (हैकल सुलैमानी) को तबाह कर दिया और बहुत सारे लोगों को मौत के घाट उतार दिया। इस घटना ने उन तो इस तरह तितर बितर कर दिया कि वे विभिन्न देशों में बिखर कर रह गए।

10. बनी इस्राईल को उन के इतिहास की ये इबरतनाक घटनाएँ सुनाने के बाद उन से कहा जा रहा है कि इस नबी की नियुक्ति ने तुम्हारे लिए अल्लाह की रहमत का अधिकारी

बनने का एक और अवसर उपलब्ध करा दिया है अगर अब भी संभल जाओ और उस हिदायत का अनुसरण एवं अनुपालन करो जो इस नबी पर उतारी गई है तो ख़ुदा की रहमत के दरवाज़े तुम पर खुल सकते हैं। परन्तु अगर तुम ने इस नबी का विरोध किया और अवज्ञा एवं उद्वेगता दिखाई तो याद रखो अल्लाह अपने अज़ाब का कोड़ा फिर तुम पर बरसाएगा।

कुर्आन की इस चेतावनी के बावजूद जब मदीना के ईर्द गिर्द बसे यहूदी क़बीलों ने अपनी बगावत और उद्वेगता का ताज़ा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया कि वे कुर्आन के विरोधी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मन बन कर खड़े हो गए और आप के विरुद्ध साज़िशें रचने लगे तो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा उन पर फिर बरसा। अतः इस्लाम के पैग़म्बर की मौजूदगी ही में ईमान वालों के हाथों उन को सज़ा भुगतनी पड़ी।

बनी क़ैनुकाअ् और बनी नज़ीर (दोनों क़बीले) देश से बाहर निकाल दिए गए और क़बीला बनी कुरैज़ा का ख़ात्मा तलवार के द्वारा हुआ। रहे ख़ैबर के यहूदी तो उन्हें अधीन हो कर रहना पड़ा। और हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के ज़माने में वह भी देश से निकाल दिए गए।

लम्बे समय तक तितर बितर रहने के बाद यहूदी अब फिर फ़िलस्तीन में एकत्र हो रहे हैं। और उन के इस जमावड़े ने दुनिया की शान्ति को ख़तरे में डाल दिया है। मालूम होता है, अल्लाह तआला फिर उन्हें कड़ी सज़ा देना चाहता है। असंभव नहीं कि उस की बिजली उन के आशियाने पर गिरे और उसे जला कर राख कर दे। लक्षण ऐसे ही हैं, और ग़ैब (परोक्ष) की जानकारी अल्लाह ही को है।

11. अर्थात् जो लोग भी वास्तविक रूप से काफ़िर होंगे चाहे वह अल्लाह की किताब को मानने का एलान ही करते हों, आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम का कैदख़ाना होगा।

12. यह संसार में पाई जाने वाली सभी क़ौमों को न्योता है कि उस राह को अपनाओ जिस की तरफ़ कुर्आन बुलाता है। और इस लिए अपनाओ कि यह राह बिलकुल सीधी है और अभीष्ट लक्ष्य – आख़िरत की सफ़लता – तक पहुँचा देने वाली है।

कुर्आन जिस राह पर चलने के लिए बुलाता है वह हर लिहाज़ से बिलकुल सीधी राह है। बुद्धि को यह अपील करती है। प्रकृति एवं स्वभाव इस के सही होने की गवाही देती है। अन्तरात्मा की पुकार यह है कि वह सत्य है। यही मार्ग सारे नबियों का मार्ग रहा है। वह न्याय जिस पर आसमान और ज़मीन स्थापित हैं, इसी मार्ग में पाया जाता

है। यह सारे जगत के प्रभु (रब्बुलआलमीन) तक सीधा पहुँचता है। इस मार्ग का परिभाषिक नाम “इस्लाम” है। रह गए दूसरे मार्ग चाहे धार्मिक हों या अधार्मिक या धर्म मुक्त हो, किसी भी दृष्टि से सीधे नहीं हैं और न खुदा तक पहुँचाने वाले हैं।

13. अर्थात् मानव का हाल अजीब है, उसे ख़ैर और भलाई के लिए अपने रब से दुआ करते रहना चाहिए। परन्तु विषम परिस्थितियों से वह जल्द बाज़ी से काम ले कर अपने लिए बुरी दुआएँ भी करने लगता है। यह मनुष्य की वह कमजोरी है जो सामान्य रूप से पाई जाती है। जिस में मर्द औरतें सब शामिल हैं। आयत के इस सामान्य भावार्थ के अलावा इस का इशारा विशेष रूप से मक्का के काफ़िरों की तरफ़ है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बात की माँग कर रहे थे कि जिस अज़ाब (प्रकोप) की धमकी आप हमें दे रहे हैं वह आ क्यों नहीं जाता, उन से कहा जा रहा है कि कुर्आन के रूप में तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम्हारी ओर ख़ैर (भलाई) नाज़िल हुआ है इस लिए होना यह चाहिए था कि तुम अपने रब से दुआ करते कि यह ख़ैर और भलाई तुम्हारे हिस्से में आए। परन्तु तुम इस सौभाग्य के बदले उस दुर्भाग्यपूर्ण अज़ाब की माँग करते हो जो अगर आ गया तो बिल्कुल स्पष्ट है कि तुम्हारे लिए शर (बुरा) ही होगा।

14. अर्थात् यह रात और दिन की निशानियाँ जिन को तुम रात दिन अपनी आँखों से देखते तथा इन्द्रियों से अनुभव करते हो, अगर ध्यान दो तो तुम्हारे विचारों एवं दृष्टिकोणों को बदलने के लिए काफ़ी है। अगर दिन को प्रकाशमान न बनाया जाता तो अल्लाह के फ़ज़ल (रोज़ी) को तलाश करने अर्थात् आर्थिक दौड़ धूप का काम नहीं हो सकता था। परन्तु रात और दिन के आने जाने से ये दोनों लाभ तुम को पहुँचाए और इस का अतिरिक्त लाभ यह कि दोनों की गिनती से मनुष्य वर्ष को गिनता तथा दूसरे हिसाब मालूम कर लेता है। जैसा गुज़री हुई घटनाएँ, कि वे कब घटी थीं, या यह कि दिन के कितने घंटे गुज़र चुके हैं और रात के कितने। इस प्रकार मनुष्य के लिए समय आदि का निर्धारण करना सरल हो गया।

अल्लाह की रबूबियत एवं उस के पालनहारी की ये स्पष्ट निशानियाँ इन्सान को इस बात का निमंत्रण देती हैं कि वे अपने को अपने रब की राह पर डाल दे –और कुर्आन इसी की दअवत दे रहा है।

15. अर्थात् मनुष्य की हिदायत के लिए जो बातें ज़रूरी थीं वे सब कुर्आन में खोल कर बयान कर दी गई हैं। अब इन्सान के लिए यह कहने का अवसर नहीं कि सत्य मार्ग के चिन्ह मुझ पर स्पष्ट नहीं हुए थे।



और हम ने हर मनुष्य का शगुन उस के गले में चिपका दिया है और क्रियामत के दिन हम उस के लिए एक नविशता (लेख) निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा । पढ़ अपना कर्म पत्र !आज तू खुद अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है ।(अल-कुर्आन)

13. और हम ने हर मनुष्य का शगुन उस के गले में चिपका दिया है और क्रियामत के दिन हम उस के लिए एक नविशता (लेख) निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा ¹⁶।

وَكُلِّإِنْسَانٍالزَّمَنَهُطَائِرَةًفِيْعُنُقِهِوَنُحِرْجُلهُ
يَوْمَالْقِيَمَةِكِتَابًايَلْقَاهُمَنْشُورًا ⑬

14. पढ़ अपना कर्म पत्र ! आज तू खुद अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है ¹⁷।

اقْرَأْكِتَابَكَكَفَىبِنَفْسِكَالْيَوْمَعَلَيْكَحَسِيبًا ⑭

15. जो हिदायत की राह अपनाता है वह अपने ही लिए करता है और जो गुमराही अपनाता है तो उस का वबाल भी उसी पर है। कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा ¹⁸। और हम (किसी क़ौम को) अज़ाब नहीं देते जब तक कि उस में एक रसूल न भेज दें ¹⁹।

مِنْهُتَدَىفَاتَّمَايَهْتَدَىلِنَفْسِهِوَمَنْضَلَّفَاتَّمَايَضِلَّعَلَيْهَا
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىوَمَا لَكُم مَّعَذِبِينَحَتَّىتَبْعَثَ
رَسُولًا ⑮

16. और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करना चाहते हैं तो उस के ख़ुशहाल लोगों को आदेश देते हैं, मगर वे उस में अवज्ञा करने लगते हैं। इस प्रकार अज़ाब की बात उस पर लागू हो जाती है और हम उसे बर्बाद कर के रख देते हैं ²⁰।

وَإِذَاأَرَدْنَا أَنْنُهْلِكَ قَرْيَةًأَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا
فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُفَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ⑯

17. और नूह के बाद हम कितनी ही क़ौमों को विनष्ट कर चुके हैं। और तुम्हारा रब इस बात के लिए काफ़ी है कि अपने बन्दों के गुनाहों से भिन्न हो और उन को देखे।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍوَكَفَىبِرَبِّكَ
بِذُنُوبٍعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ⑰

18. जो शीघ्र प्राप्त होने वाली (सांसारिक वस्तुओं) का इच्छुक होता है, हम उसे यहीं दे देते हैं, जिस क़दर देना चाहें, और जिस को देना चाहें फिर उस के लिए हम ने जहन्नम मुहैया कर दी है जिस में वह दाखिल होगा, इस हाल में कि तिरस्कृत होगा, ठुकराया हुआ ²¹।

مَنْكَان يُرِيدُ الْعَاجِلَةَعَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ يُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا
لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا ⑱

19. और जो आखिरत का इच्छुक होगा और उस के लिए कोशिश करेगा, जैसी कोशिश करना चाहिए, और वह मोमिन हो, तो ऐसे ही लोगों की कोशिश स्वीकृत होगी ²²।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَئِكَ كَانَ
سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ⑲

16. अर्थात् मनुष्य का दुर्भाग्य या सौभाग्य उस के अपने कर्मों में निहित है और हर व्यक्ति के कर्मों का रिकार्ड उस के गले का हार बना हुआ है। क्रियामत के दिन ये रिकार्ड एक खुली किताब या खुले रजिस्टर के रूप में उस के सामने आने वाला है। इस लिए कुपरिणाम किसी बाह्य शगुन से नहीं जुड़ा है बल्कि उस के अपने कर्मों से ही सम्बन्धित है।

इन्सान जो अमल करता है उस का अच्छा या बुरा प्रभाव वह अपने हृदय में महसूस करता है और उस की याद उस के मन अथवा विवेक में मौजूद रहती है। यह इस बात का द्योतक है कि उस का कोई कर्म प्रभाव एवं परिणाम रहित नहीं है और उस का रिकार्ड सुरक्षित हो रहा है।

रहा यह प्रश्न कि जब हमारा कर्म पत्र हमारी गर्दन में लटक रहा है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता तो इस का जवाब यह है कि अगर यह हमें शरीर की आँख से दिखाई देता तो परीक्षा और आजमाइश कहाँ बाकी रहती जब कि अल्लाह ने यह दुनिया आजमाइश एवं परीक्षा के लिए बनाई है और हमारा इम्तिहान इस में है कि हम अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) के प्रकाश में सूझ बूझ से काम ले कर उन परोक्ष (गैबी) वास्तविकताओं को स्वीकार करते और उस के अनुसार अपनी कार्य पद्धति सुनिश्चित करते हैं या नहीं।

17. अर्थात् क्रियामत के दिन हर व्यक्ति सरलतापूर्वक अपना कर्मपत्र पढ़ लेगा चाहे वह पढ़ा लिखा हो या न हो और चाहे वह कोई भाषा जानता हो। उस समय वह यह माने बगैर नहीं रहेगा कि उस में जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह उस के कर्मों का बिलकुल सही हिसाब है। इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए एक बुद्धिमान आदमी अपना जायजा दुनिया ही में लेता है ताकि क्रियामत के दिन उसे पछताना न पड़े।

18. अर्थात् खूब समझ लो कि क्रियामत के दिन हर व्यक्ति अपने गुनाहों का बोझ उठाएगा, कोई किसी दूसरे का बोझ उठाने वाला नहीं। उस रोज़ तुम यह कह कर अपने गुनाहों का बोझ हल्का नहीं कर सकते कि हम को फ़्लाँ लीडर, या फ़्लाँ पेशवा या फ़्लाँ सरदार ने गुमराह किया था या हमारी गुमराही का असली जिम्मेदार तो शैतान है अतः ये गुमराह करने वाले इन गुनाहों का बोझ उठाएँ, नहीं बल्कि वे अपने बोझ उठाएँगे और तुम्हें अपना बोझ उठाना होगा।

19. तात्पर्य वह प्रकोप (अज़ाब) है जो क़ौमों के पूर्ण अस्तित्व को मिटा देता है और जो सत्य और असत्य के लिए कसौटी होता है। पिछली क़ौमों आद, समूद, लूत, फ़िरऔन की क़ौम आदि पर जो अल्लाह का प्रकोप टूटा वह अल्लाह के रसूलों के द्वारा उन पर पूर्ण रूप से तर्क स्पष्ट होने तथा

हुज्जत क़ायम हो जाने के बाद ही आए। अल्लाह के इसी नियम (सुन्नत) को यहाँ बयान किया गया है।

इस से यह प्रमाण निकालना कि जिन लोगों तक रसूल का पैग़ाम नहीं पहुँचा वे अपने बुरे कर्मों के लिए न तो खुदा के समक्ष जवाबदेह हैं और न उन्हें उस की सज़ा भुगतनी होगी, न केवल कुर्आन और सुन्नत के स्पष्टीकरण के विरुद्ध है बल्कि एक नामाकूल बात भी है। कुर्आन कहता है कि कितनी ही बुराइयाँ हैं जिन के बुरे होने की सीख और समझ मानव की प्रकृति एवं स्वभाव में डाल दी गई हैं। अब यदि वह अपने स्वभाव में निहित सीख और समझ के विरुद्ध कोई अपराध करता है तो वह गुनाहगार है और खुदा के समक्ष जवाबदेह है। हदीस से भी मालूम होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी नियुक्त किए जाने से पहले जिन लोगों ने बुत परस्ती या बे हयाई आदि फैलायी थी वे नर्क के भागीदार बने, जैसे अम्र बि अल हर्ई, अमरुलक़ैस आदि।

और जहाँ तक बुद्धि अथवा अक्ल का सम्बन्ध है वह खुली बुराई के किसी अपराधी को, जैसे जुल्म करने वाले या अकारण एवं नाहक किसी को जान से मारने वाले को गुनहगार और अपराधी ही ठहराती है चाहे उस तक रसूल का संदेश पहुँचा हो या न पहुँचा हो। अलबत्ता यह बात कि रसूल का पैग़ाम न पहुँचने की सूत्र में उन की जिम्मेदारियों का क्षेत्र वा उस की सीमाएँ क्या थी और वे किस हद तक क्षमा किए जाने के योग्य हैं इस का ज्ञान अल्लाह ही को है। और इन बातों के फैसले के लिए क्रियामत का दिन सुनिश्चित है। अतः हमारे लिए उसूली बात समझ लेना काफ़ी है और अधिक बहस में पड़े बगैर इस बात की फ़िक्र करना चाहिए कि जब अल्लाह का संदेश उस के रसूल के द्वारा हम तक पहुँचा है तो हम अपने बचाव, मुक्ति और सफलता का क्या सामान कर रहे हैं और इस संदेश को अन्य खुदा के बन्दों तक पहुँचाने के लिए क्या कर रहे हैं।

20. ऊपर की आयत में क़ौमों के अज़ाब के सिलसिले में अल्लाह के नियम (सुन्नत) को स्पष्ट किया गया था। इस आयत में इस का यह पक्ष स्पष्ट किया जा रहा है कि किसी बस्ती या आबादी का विनाश तभी होता है, अथवा तभी किया जाता है जब कि उस में अवज्ञा, दुष्कर्म, आदि का सामान्य चलन हो जाता है और उस की सूत्र यह होती है कि आबादी के खुशहाल अर्थात् धनी एवं सम्पन्न वर्ग को जिस में शासक, सरदार, और धनवान लोग शामिल हैं अल्लाह अपने अनुपालन का आदेश दे देता है। अतः अल्लाह के रसूल ख़ास तौर से इसी वर्ग को सम्बोधित करते हैं ताकि उन लोगों पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो और उन के माध्यम से जनसामान्य पर,

लेकिन ये लोग सांसारिक सामग्रियों को बटोरने में ऐसे लिप्त और अपने ऐश्वर्य में ऐसे मस्त होते हैं कि अल्लाह के आदेशों की परवाह नहीं करते। वे खुद भी अवज्ञा तथा पाप के कर्म करते हैं और उलझाव उत्पन्न करने वाली बातें फैला कर पूरी बस्ती को अवज्ञा और दुष्कर्म में लिप्त कर देते हैं। इस प्रकार पूरी आबादी अज्ञाब (प्रकोप) की भागीदार बन जाती है। और अल्लाह कोई न कोई आफत नाज़िल कर के उस आबादी को तहस नहस कर देता है। बाद की आयत में उन कौमों की तरफ इशारा भी कर दिया है जिन के साथ यह मामला हुआ।

कुर्आन के कुछ टीकाकारों ने “अमरना” (अर्थ:- हम उन्हें आदेश देते हैं) के अर्थ में बड़ा तकल्लुफ़ (संकोच) किया है। किसी ने नैसर्गिक अथवा प्राकृतिक आदेश समझा है अर्थात् हम प्राकृतिक रूप से अवज्ञा एवं दुष्कर्म का आदेश दे देते हैं। और किसी ने कुछ और। परन्तु शाब्दिक रूप से भी और संदर्भ की दृष्टि से भी इस का वही भावार्थ उचित ठहरता है जो ऊपर बयान किया गया। अरबी में जब केवल “अमरना” कहेंगे तो इस का अर्थ “अनुपालन के आदेश” के ही होंगे। अतः इब्ने जरीर तबरी ने इसी भावार्थ को वरीयता दी है और अल्लामा शोकानी लिखते हैं:

“जो व्यक्ति भी अरबी भाषा से भिन्न होगा, इस का यही मतलब समझेगा कि जिस चीज़ का आदेश दिया गया था वह बुराई एवं पाप से भिन्न चीज़ थी, क्योंकि गुनाह, आदेश के विरुद्ध एवं विपरीत है। अतः “अमर्तूहू फ़फ़सक़” (मैं ने उसे आदेश दिया तो उस ने अवज्ञा एवं दुष्कर्म किया) के शब्द इस पर तर्क करते हैं कि उसे जिस चीज़ का आदेश दिया गया था वह फ़िस्क़ अर्थात् अवज्ञा एवं दुष्कर्म से भिन्न चीज़ थी क्योंकि अवज्ञा एवं दुष्कर्म का अर्थ तो ऐसी चीज़ का करना है जो दिए गए आदेश के बिल्कुल विपरीत हो।” (फ़तहूल क़दीर जिल्द ३ पृष्ठ २१४)

21. मूल अरबी में शब्द “आजिलः” इस्तमाल हुआ है जिस का अर्थ है “जल्दी करने वाला” इस से दुनिया तात्पर्य है जो अपने लाभ शीघ्र पहुँचाती है। और इस के इच्छुक होने का मतलब दुनिया के क्षणिक एवं शीघ्र मिलने वाले लाभों का

इच्छुक होना है। जो व्यक्ति भी आख़िरत के मुकाबले में दुनिया को लक्ष्मय बनाता है, ज़रूरी नहीं कि वह दुनिया के बहुत से लाभ प्राप्त करने में सफल हो जाए। बल्कि यह अल्लाह ही की मर्ज़ी और मंशा पर निर्भर है कि किस को कितना दे। यह तो हुआ दुनिया को प्राप्त करने का मामला। इस के बाद ऐसे व्यक्ति के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। बल्कि बहुत बुरी हालत में और अल्लाह की रहमत से वन्चित हो कर जहन्नम में दाख़िल होना होगा। यह कड़ी सज़ा इस लिए दी जाएगी कि उसे दुनिया में भेजा ही इस लिए गया था कि वह आख़िरत को सामने रख कर दुनिया में वह काम करे जिस के परिणाम आख़िरत में लाभदायक निकलने वाले हैं। किन्तु उस ने आख़िरत की परवाह न करते हुए दुनिया के लाभों को बटोरने में अपनी आयु खपा दी। इस प्रकार वह अपने रब का बागी एवं उदंड बना रहा और उस का पूरा जीवन ग़लत हो कर रह गया।

22. मनुष्य को सच पूछिए तो उस के रब ने दुनिया के लिए नहीं बल्कि आख़िरत के लिए पैदा किया है। दुनिया तो ज़िन्दगी का आजमाइशी चरण है जिस से गुज़रने के बाद जहाँ उसे सदा सर्वदा के लिए रहना है वह आख़िरत ही है इस लिए आख़िरत को अपना जीवन लक्ष्य समझना और अपने सारे प्रयासों के लिए उस पर केन्द्रित रहना ठीक उस वास्तविकता के अनुकूल है जो मनुष्य की तथा पूरी कायनात की पैदाइश में निहित है।

यह आयत इस बात की पुष्टि करती है कि अल्लाह के नज़दीक उन ही लोगों के परिश्रम एवं प्रयास सफल एवं स्वीकृत होंगे जिन्होंने ने आख़िरत को ध्येय अर्थात् सफलता के लिए लक्ष्य मान कर इस प्रकार प्रयास किए जिस प्रकार कि प्रयास किए जाने चाहिए। मतलब यह कि ठीक वैसी कोशिश जो आख़िरत पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति उस की प्राप्ति के लिए कर सकता है और जिस का तरीक़ा कुर्आन ने बतला दिया है। साथ ही यह शर्त भी है कि वह ईमान वाला हो। अर्थात् उन बातों पर ईमान रखता हो जिस पर ईमान लाना कुर्आन ने अनिवार्य ठहराया है।



और तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो और माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करो। अगर तुम्हारे सामने इन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें “उफ़” न कहो और न उन्हें झिड़को बल्कि उन से आदर के साथ बात करो । और उन के लिए दयालुता के साथ विनम्रता के बाजू झुकाए रखो । और दुआ करो कि परवरदिगार ! इन पर रहम फ़रमा, जिस प्रकार उन्होंने बचपन में मेरा पालन पोषण किया । (अल-कुर्आन)

20. हम इन को भी और उन को भी हर एक को (जीवन सामग्री) दिए जा रहे हैं जो तुम्हारे रब की देन है। और तुम्हारे रब की देन किसी पर बन्द नहीं है ²³।

كُلًّا نُمِدُّ هَؤُلَاءَ وَهَؤُلَاءَ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ
مَحْظُورًا ۝۲۰

21. देखो हम ने किस तरह एक (गिरोह) को दूसरे (गिरोह) पर फ़ज़ीलत (प्रतिष्ठा) प्रदान की है ²⁴ और आखिरत तो दर्जों की दृष्टि से भी बढ़ कर है और प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी ²⁵।

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَلِلْآخِرَةِ الْكِبَرُ دَرَجَاتٍ
وَالْأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۝۲۱

22. अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न बनाओ वरना बैठे रहोगे फिटकारे हुए और असहाय हो कर ²⁶।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا الْآخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَكْنُوعًا وَلَا ۝۲۲

23. और तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो ²⁷ और माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करो। अगर तुम्हारे सामने इन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें “उफ़” न कहो और न उन्हें झिड़को बल्कि उन से आदर के साथ बात करो ²⁸।

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا يَاءُ وَالْآيَاتُ وَيَالِ الْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِنَّمَا يُبَلِّغُنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٌ وَلَا تُتَهَرَّهُمَا
وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝۲۳

24. और उन के लिए दयालुता के साथ विनम्रता के बाज़ू झुकाए रखो ²⁹। और दुआ करो कि परवरदिगार ! इन पर रहम फ़रमा, जिस प्रकार उन्होंने बचपन में मेरा पालन पोषण किया ³⁰।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذِّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا
كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۝۲۴

25. तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है ³¹। अगर तुम नेक बन जाओ तो वह पलटने वालों के लिए बड़ा क्षमाशील है ³²।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ إِن تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ
لِالْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۝۲۵

26. और रिश्तेदार को उस का हक़ दो, और मिसकीन और मुसाफ़िर को उस का हक़ ³³ और फुज़ूलखर्ची न करो ³⁴।

وَإِنَّ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ
وَلَا تُبْذِرْ بِنْدِيبًا ۝۲۶

27. फुज़ूलखर्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है ³⁵।

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ
لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝۲۷

28. और यदि तुम्हें अपने रब की मेहरबानी की तलाश में जिस के तुम उम्मीदवार हो, उन से कतराना पड़े तो उन से नमी की बात कहो ³⁶।

وَلَا تَعْرَضْ عَنْهُمْ إِن يَنْعَاءَ رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوهُمْ فَأَقُلْ لَهُمْ
قَوْلًا مَّيْسُورًا ۝۲۸

23. अर्थात् दुनिया के चाहने वाले हों या आखिरत के, काफ़िर हों या मोमिन, सब को इस जगत में तुम्हारा प्रभु सांसारिक जीवन की सामग्री दे रहा है, और उस की यह देन किसी पर भी बन्द नहीं है। उस की यह सामान्य देन उस की नीति और हिकमत के अनुसार है जो दुनिया में इन्सानों को बसाने का कारण हुई।

24. अर्थात् जिन लोगों ने आखिरत को अपना लक्ष्य बनाया उस को सांसारिक सामग्रियों के पुजारियों पर जो वरीयता प्राप्त है उस की अनुभूति इस दुनिया में भी की जा सकती है। उन को अपने रब से लगाव और भय, बन्दों के अधिकारों की अदायगी, कर्तव्यबोध, अमानत और दयानत, जायज़ कमाई, हराम चीज़ों से परहेज़ भलाई की राह में खर्च, सत्य के लिए बलिदान, सन्न धैर्य, न्याय प्रियता और अन्य नैतिक एवं व्यवहारिक गुण स्पष्ट रूप से उन की वरीयता एवं प्रतिष्ठा पर तर्क एवं साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं चाहे वे धन दौलत की दृष्टि से शून्य ही क्यों न हों।

25. अर्थात् आखिरत में तो ईमान वालों को काफ़िरों पर स्पष्ट वरीयता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः काफ़िर जहन्नम के निचले भाग में होंगे। जब कि ईमान वाले ऊँची जन्नत में। फिर ईमान वाले अपने ईमान और अमल के दर्जों के लिहाज़ से जन्नत में भी दर्जा पायेंगे और उसी मुनासिबत से उन को प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी।

26. अर्थात् अल्लाह के साथ किसी अन्य ख़ुदा के क़ायल हुए तो तुम्हारा हाल यह हो जाएगा कि हर तरफ़ से तुम पर लानत मलामत होगी और तुम बिलकुल असहाय हो कर रह जाओगे।

27. अर्थात् अल्लाह का यह अन्तिम निर्णय और आदेश है कि केवल उसी की उपासना अथवा इबादत करो, किसी और की नहीं। ऊपर की आयत में अल्लाह के साथ किसी और को ख़ुदा बना लेने की मनाही की गई थी। और इस आयत में अल्लाह के सिवा किसी की इबादत करने की मनाही की गई है। इस से यह बात भली भाँति स्पष्ट हो जाती है कि ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा अन्य) की उपासना उस को ख़ुदा बना लेने के समानार्थ है चाहे वह ज़बान से उसे ख़ुदा कहता हो या न कहता हो। उदाहरण स्वरूप यदि कोई व्यक्ति भूमि पूजा करता है तो यह ख़ुला शिर्क है और भूमि को ख़ुदा और उपास्य ठहराना है।

स्पष्ट रहे कि इबादत अथवा पूजा से अभिप्रेत परस्तिश है जिस को अल्लाह के लिए ख़ास करने का आदेश दिया गया है। रह गई बात अनुपालन की तो वह उस का अनिवार्य तकाज़ा है। इसी लिए इस के बाद अनुपालन के आदेश अलग

से बयान हुए हैं। वरना इबादत अथवा उपासना का वह महत्व बाक़ी नहीं रहता जो दीन में उस को दिया गया है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ५)

इस अवसर पर हम यह स्पष्ट करना भी आवश्यक समझते हैं कि इस आयत में और इस के बाद की आयतों में जो आदेश दिये गए हैं उन के बारे में कुछ लोगों का यह ख़याल कि उन की हैसियत मदीना के इस्लामी राज्य के घोषणा पत्र की थी, सही नहीं। घोषणा पत्र एक राजनैतिक परिभाषा है और यहाँ न तो राजनीति पर बहस हो रही है और न राज्य पर। बल्कि वे अच्छे गुण बयान किये गए हैं जो मनुष्य में मानवता जागृत करने वाले और उस को आखिरत की सफलता तक पहुँचाने वाले हैं। और जब ऐसे सद्गुणों से सुशोभित हो कर कोई ग़िरोह अस्तित्व में आता है तो उस की राजनीति भी उसी रंग में रंग जाती है और राज्य की व्यवस्था एवं प्रबंध भी उसी के अनुसार विकसित होने लगता है। इस लिए इन आदेशों को राजनीति के रंग में रंग कर बयान करने की आवश्यकता नहीं है वरना इस का नुक़सान यह होगा कि एक पाठक बजाय इस के कि अपने आप को इस का संबोधी समझे, इस्लामी राज्य को इस का संबोधी समझेगा और उन आदेशों की रूह भी धूमिल होगी। इस तरह की बातों से सही दीनी ज़ेहन नहीं बनता।

28. ख़ुदा के बन्दों में सब से बड़ा हक़ माँ बाप का है जो बिलकुल स्वाभाविक हक़ है। और इस बिना पर है कि उन्होंने ने पालन पोषण किया है। उन का हक़ यह है कि औलाद उन के साथ जीवन भर अच्छा बर्ताव करे अर्थात् उन से अच्छे ढंग से पेश आए, उन की सेवा करे, उन पर खर्च करने की आवश्यकता हो तो खर्च भी करे। नाफ़रमान और उन को दुख देनेवाला न बने।

बुढ़ापे में माँ बाप सेवा एवं देख रेख के सब से अधिक अधिकारी होते हैं और इस आयु में मिजाज़ भी चिड़चिड़ा बन जाता है इस लिए ख़ास तौर से ताकीद की कि कोई ऐसी बात न कहो जो उन के लिए कष्टदायक हो। और न कभी झिड़कने की कोई बात करो। बल्कि उन से आदर एवं सम्मान के साथ बात करो।

29. अर्थात् उन के साथ दया और प्रेम से पेश आओ। नमी और सेवाभाव का तरीक़ा अपनाओ।

30. अर्थात् तुम्हें यह भूलना नहीं चाहिए कि तुम्हारे माँ बाप ने तुम्हारे पालन पोषण का कष्ट उठाया था। उन के इस एहसान को याद कर के तुम उन के लिए दया की प्रार्थना और रहम की दुआ करो।

रहम की यह दुआ उन के बुढ़ापे की हालत और तकलीफ़

को ध्यान में रखकर करने को कही गई है। इस लिए यदि वे मुसलमान न हों तब भी यह दुआ करने में कोई हर्ज नहीं। रह गई बात मग़ि़रत की दुआ की तो वे मुश्रिक माता पिता के लिए नहीं कर सकते। जैसा कि सूरह तौबा आयत ११३ में गुज़र चुका (देखिए सूरह तौबा नोट २२९)

31. अर्थात् तुम्हारी नीयतों, तुम्हारी भावनाओं और तुम्हारे दिलों की परिस्थितियों से वह भली भाँति परिचित है।

32. अर्थात् माँ बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने में अगर तुम से कुछ ग़लतियाँ हुई हों तो अल्लाह से तौबा करो और आगे के लिए अपना सुधार कर लो कि अल्लाह नेक बन जाने वालों की तौबा कुबूल फ़रमाता है और उन के कुसूरों को माफ़ कर देता है।

33. हक़ से मुराद धन का हक़ है जो उन की ज़रूरतों और आदमी के अपने हालात के लिहाज़ से निर्धारण होता है, तथा यह हक़ ज़कात तक सीमित नहीं है बल्कि इस के अतिरिक्त भी हो सकता है।

34. “तब्ज़ीर” अर्थात् फ़ुज़ूलखर्ची का मतलब धन का बेजा इस्तेमाल अथवा दुरुपयोग है। और धन का दुरुपयोग आदमी को अधिकारों की आदयगी की ओर से बेपरवाह कर देता है।

जिन लोगों को धन बहुतायत के साथ मिलता है वे उस को

अपनी (संपत्ति) समझने लगते हैं और फिर नाजायज़ कामों में या अपना शौक पूरा करने में बेदरदी के साथ खर्च करते हैं। हालाँ कि माल अल्लाह तआला की तरफ़ से अमानत है जिस को जायज़ राहों में खर्च करने का वह ज़िम्मेदार है, तथा उस में दूसरों के अधिकार भी हैं जिन को अदा करने का दायित्व उस पर आयद होता है।

धन दौलत के बारे में सही इस्लामी सोच न होने और इस सिलसिले में ज़िम्मेदारी के एहसास की कमी की वजह से आदमी माल को अलल्ले तलल्ले खर्च करने लगता है।

35. धन दौलत अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है और फ़ुज़ूलखर्ची उस नेमत का सब से बड़ा निरादर। इस लिए जो व्यक्ति फ़ुज़ूलखर्ची करता है वह शैतान से अपना रिश्ता जोड़ता है जो अल्लाह का सब से बड़ा अवज्ञाकारी एवं नाशुक्रा है।

36. अर्थात् यदि तुम्हारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि उन की सहायता कर सको तो विनम्रता पूर्वक कोई ऐसी बात कहो जिस में उन के साथ हमदर्दी झलके।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि अधिकारों की अदायगी के लिए अल्लाह के फ़ज़ल (अनुग्रह) का उम्मीदवार होना और उस के लिए अधिक और अधिक संघर्ष एवं प्रयास करना एक पसंदीदा बात है।

तुम्हारा रब जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है। वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और उन को देखने वाला है। अपनी औलाद को मुफ़लिसी (ग़रीब हो जाने) के डर से क़त्ल न करो। हम उन को भी रोज़ी देते हैं और तुम को भी। निस्संदेह उन का क़त्ल बहुत बड़े गुनाह की बात है। और ज़िना (व्यभिचार) के करीब भी न जाओ। यह खुली बेहयाई और बहुत बुरी राह है। (अल-कुर्आन)

29. और न तो अपना हाथ अपनी गर्दन से बाँध रखो और न उसे बिलकुल ही खुला छोड़ दो कि फिटकारे हुए और आजिज (असहाय) हो कर बैठे रहो ³⁷।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعَدَ مَوْتًا مَّحْسُورًا ①

30. तुम्हारा रब जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है ³⁸। वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और उन को देखने वाला है।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا ②

31. अपनी औलाद को मुफ़लिसी (गरीब हो जाने) के डर से क़त्ल न करो। हम उन को भी रोज़ी देते हैं और तुम को भी ³⁹। निस्संदेह उन का क़त्ल बहुत बड़े गुनाह की बात है ⁴⁰।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةً إِمَّا يَكُونُ لَكُمْ رِزْقٌ
وَأَيُّكُمْ إِن قَتَلْتَهُمْ كَانَ خَطَاً كَبِيراً ③

32. और ज़िना (व्यभिचार) के करीब भी न जाओ। यह खुली बेहयाई और बहुत बुरी राह है ⁴¹।

وَلَا تَقْرَبُوا الزَّانِيَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ④

33. और किसी नफ़्स (जान) को जिसे अल्लाह ने मुहतरम ठहराया है, क़त्ल न करो, मगर हक़ के आधार पर ⁴²। और जो कोई मज़लूमी की हालत में मारा जाए तो उस के वली (उत्तराधिकारी) को हम ने अधिकार दे दिया है, अतः वह क़त्ल करने में हद से आगे न बढ़े, ⁴³ उस की मदद की गई है ⁴⁴।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَن قُتِلَ
مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيٍّ سُلْطَانًا فَلْيُكَفِّرْ بِي الْقَتْلِ
إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ⑤

34. और यतीम के माल के करीब भी न जाओ, मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए ⁴⁵। और प्रतिज्ञा को पूरा करो। निश्चय ही प्रतिज्ञा के विषय में पूछ ताछ होगी।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ
أَشَدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ⑥

35. और जब नापो तो पैमाना भर कर दो, और सीधी तराजू से तौलो ⁴⁶। यह तरीक़ा अच्छा है, और परिणाम के लिहाज़ से भी बेहतर है ⁴⁷।

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزَنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ
ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ⑦

36. और जिस बात का तुम्हें ज्ञान नहीं उस के पीछे न पड़ो ⁴⁸। कान, आँख, और दिल इन में से हर एक के बारे में पूछ ताछ होगी ⁴⁹।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ
أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ⑧

37. हाथ गर्दन से बाँधना कंजूसी के लिए मुहावरा है और बिलकुल खुला छोड़ देना फुजूलखर्ची के लिए। मतलब यह है कि आदमी अपने ऊपर और अपने बीवी बच्चों पर खर्च करने में कंजूसी से काम न ले और न फुजूलखर्ची करे। बल्कि संतुलित रहे। जो लोग खर्च करने में कंजूसी या फुजूलखर्ची से काम लेते हैं उन के हिस्से में बदनामी भी आती है और बेबसी भी। इस के विपरीत खर्च करने में संतुलन, आदमी को सम्मान भी दिलाता है तथा प्रतिष्ठावान भी बनाता है और उस के लिए संतुलित खर्च लाभ दायक भी सिद्ध होता है।

38. इस की व्याख्या सूरह रअद नोट ५८ में गुजर चुकी।

39. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट २७६ में गुजर चुकी।

40. अर्थात् अपनी औलाद को मार डालना कोई मामूली बात नहीं है बल्कि बहुत बड़े गुनाह की बात है।

अरब जाहिलिय्यत में चूँकि बच्चों को गरीबी के डर से जिन्दा दफ़न कर दिया जाता था या दूसरे तरीकों से मार डाला जाता था। इस लिए इस का वर्णन विशेष रूप से हुआ। वरना उन का क़त्ल करने पर आमादा करने वाली अथवा उत्प्रेरक करने वाली जो भी सोच है वह बड़ी निर्दयी सोच है और यह काम अत्यंत जघन्य अपराध का काम है।

आधुनिक सोच एवं सभ्यता ने व्यभिचार (ज़िना) को इतना सामान्य एवं सरल कर दिया है कि अवैध संतान बहुतायत के साथ पैदा होने लगी है और लोग इस पर पर्दा डालने के लिए बच्चों को पैदा होते ही मार डालने जैसे दुस्साहस करने से भी नहीं चूकते। इस प्रकार वह अपने सर एक तो हरामकारी का गुनाह लेते हैं और दूसरा नाहक क़त्ल का।

41. इस्लाम में व्यभिचार अथवा ज़िना हर हाल में हराम और दण्डनीय है। चाहे मर्द और औरत आपसी रजामन्दी से यह अपराध करें, और चाहे इस का अपराधी विवाहित हो या अविवाहित।

ज़िना का खुली बेहयाई होना मानव मास्तिष्क एवं स्वभाव के अनुसार बिलकुल स्पष्ट, मान्य एवं उचित है। रहा उस का बुरी राह होना तो इस रास्ते में क्रदम रखने के बाद आदमी अपनी नैतिकता खो देता है और बुराई की राह पर चल पड़ता है।

आयत में ज़िना से बचने की ताकीद इस शिद्दत से की गई है कि आदमी उस के पास भी न फटके अर्थात् जो चीज़ें ज़िना अथवा व्याभिचार की ओर अग्रसर करने वाली हैं उन से बिल्कुल परहेज करे। (देखिए सूरह अन्आम नोट २७७)

हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िना के मुक़दमों को (अर्थात् वे बातें जिन से ज़िना की शुरुआत होती

है।) इस तरह बयान फ़रमाया है:-

كُتِبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ نَصِيئُهُ مِنَ الزَّنى . مدرک ذلك لا محالة
فالعينان زناهما النظر، والأذنان زناهما الاستماع، واللسان زنا
الكلام، واليد زناها البطش، والرجل زناها الخطا، والقلب يهوى
و يتمنى، ويصدق ذلك الفرج أو يكذبُهُ. (مسلم کتاب القدر)

अर्थ :- “आदमी का ज़िना में जो हिस्सा होता है वह लिख दिया जाता है जिसे (अर्थात् उस के गुनाह को) वह निश्चित रूप से पायेगा। अतः आँखों का ज़िना (काम वासना भरी) नज़र है कानों का ज़िना (कामवासना की बातें) सुनना है जबान का ज़िना (काम वासना की) बातें करना हैं, हाथ का ज़िना (काम-इच्छा से) पकड़ना एवं स्पर्श करना है, और पाँव का ज़िना वे क्रदम हैं जो (इस ग़लत राह में) उठें, दिल में इच्छा जागती है और गुप्तांग उस को सच या झूठ कर दिखाते हैं।” (मुस्लिम किताबुलक़द्र)

42. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २७८

43. वली से मुराद वारिस (उत्तराधिकारी) है जो एक या कई हो सकते हैं। वारिस को इस बात का अधिकार दिया गया है कि वह क़ातिल से या तो दियत (खूँ बहा अथवा हत्या दण्ड) कुबूल कर ले या फिर बदले में उस का क़त्ल कर दे। इस में हद से आगे न बढ़ने का मतलब यह है कि क़ातिल के अलावा किसी और को क़त्ल न किया जाए। अज्ञानता काल में एक हत्या की जगह कई हत्याएँ कर दी जाती थीं या फिर क़ातिल को छोड़ कर क़बीले के प्रमुख लोगों को मार दिया जाता था। ये तरीक़े न्याय के विरुद्ध हैं इस लिए इन की मनाही कर दी गई है।

यह तो थी अरब वासियों की जाहिलिय्य किन्तु आधुनिक एवं वैज्ञानिक काल की अज्ञानता भी इस से कुछ कम नहीं है जिन की झलकियाँ हम अपने देश में आए दिन देखते रहते हैं। जब साम्प्रदायिक तनाव हो जाता है और यदि एक सम्प्रदाय का कोई एक आदमी मारा जाता है तो उस सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्रदाय के किसी भी आदमी को चाहे वह रास्ता चलने वाला ही क्यों न हो, पकड़ कर मार देते हैं और इस को अन्याय एवं अत्याचार नहीं समझते, हालाँकि हत्यारे के अलावा किसी और की हत्या करना खुला अत्याचार है।

यह सूरह मक्की है जिस में मज़लूम मक़तूल के वारिस को यह अधिकार दिया गया कि वह क़ातिल को क़त्ल करे, जब कि इस्लामी राज्य अस्तित्व में नहीं आया था। इस से स्पष्ट हुआ, कि क़ातिल को क़त्ल करने का अधिकार शरअी तौर पर एक ग़ैर इस्लामी राज्य में भी मुसलमानों को प्राप्त है। अलबत्ता

यदि ग़ैर इस्लामी राज्य के क़ानून उस में रुकावट बन रहे हों तो बात दूसरी है।

यह भी ध्यान रहे कि इस आयत में हत्यारे की हत्या करने का अधिकार मक्तूल के वारिस को दिया गया है किन्तु बाद में जब मदीना में इस्लामी राज्य अस्तित्व में आया तो वह इस अधिकार को लागू कराने की ज़िम्मादार ठहरायी गई। गोया कि यह क़ानून कर्मानुसार इस प्रकार पूर्ण हुआ कि इस को इस्लामी अदालत के द्वारा लागू कराया जाएगा। अतः इस्लाम के प्रसिद्ध प्रचारक और क़ानूनदाँ (विधिवेत्ता) अब्दुल क़ादिर औदह शहीद इस क़ानून की व्याख्या करते हुए लिखते हैं :-

“ उसूली बात यह है कि क्रिसास (हत्या दण्ड) के अपराधों की सज़ाओं के लागू कराने को दूसरी सज़ाओं की तरह हुक्मत (अदालती विभाग) पर छोड़ दिया गया है परन्तु एक रास्ता ऐसी भी है कि जिस के द्वारा मक्तूल के वारिस के द्वारा क्रिसास (हत्या दण्ड) की पूर्ति हो और इस की बुनियाद यह आयत है।

وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلَا يَسْرِفُ فِي الْقَتْلِ.

और यह बात सर्व मान्य है कि मक्तूल के वारिस को हत्या का बदला (क्रिसास अथवा प्रतिहत्या) लेने का अधिकार है बशर्ते कि यह कार्रवाई हुक्मत की देख रेख में अन्जाम पाये। क्यों कि यह एक ऐसा मामला है जिस में इज्तिहाद (बहुत सोच विचार और चिन्तन के बाद एक उचित राह निकालने) की ज़रूरत होती है और इस मामले में किसी भी तरह की ज़्यादती करना हराम है।” (अत्तशरी-उल-जनाइ-उल-इस्लामी जिल्द १ पृष्ठ ७५७)

44. अर्थात् शरीअत और इस्लामी समाज का समर्थन एवं सहयोग उस को (अर्थात् मक्तूल के वारिस को) प्राप्त है अतः वह सीमाओं का पाबन्द रहे, सीमोल्लंघन न करे।

45. इस की व्याख्या सूरह निसा नोट १७ में गुज़र चुकी।

46. अर्थात् नाप तौल के पैमाने भी दुरुस्त होने चाहिए

और उन का इस्तेमाल भी ईमानदारी के साथ होना चाहिए। चोर नाप और डन्डी मारने का तरीक़ा वे लोग अपनाते हैं जिन को आख़िरत में होने वाली पूछ ताछ का ख़याल नहीं होता। यह बात उस उसूली बात की ओर मार्ग दर्शन करती है कि आदमी तमाम कारोबारी मामलों में ईमानदारी और दयानतदारी का रवैया अपनाए।

अधिक व्याख्या के लिए सूरह ततफ़ीफ़ अथवा अलमुततफ़िफ़ीन नोट १)

47. यह तरीक़ा अच्छा है, अर्थात् इस से विश्वास भी बनता है, नैतिक प्रभाव भी अच्छा पड़ता है और कारोबार में भी बढ़ोतरी व बरकत होती है।

रहा परिणाम के लिहाज़ से बेहतर होना तो इस से मुराद अन्तिम परिणाम अर्थात् आख़िरत के परिणाम की बेहतरी है। यह उन ही लोगों के लिए है जो व्यवहार में अपना दयानतदार होना सिद्ध कर दिखाएँ, उन लोगों के लिए नहीं जो हर प्रकार की बददयानती को मात्र अपना व्यापार चमकाने के लिए प्रचलित किये हुए हैं।

48. यह एक व्यापक निर्देश है जिस में खुदा से बिना किसी तर्क और दलील की बातों को सम्बन्धित करना, अंधविश्वास, भ्रम एवं बेसर पैर की कहावतों को महत्व देना, धार्मिक मसलों में अटकल पचचू बातें करना परोक्ष की वास्तविकताओं के बारे में उलझी उलझी बातें और बहसें छेड़ना, जिन्नों के बारे में सुनी सुनाई बातों पर विश्वास कर लेना, किसी प्रासंगिक अनुमान के बग़ैर बदगुमानी करना, बिना जाने बूझे इल्जाम लगाना जैसी बातें शामिल हैं।

49. अर्थात् सुनने, देखने और सूझ बूझ की शक्ति अल्लाह की तरफ़ से अमानत हैं जो सही इस्तेमाल के लिए दी गई हैं। क्रियामत के दिन हर व्यक्ति को इस बात की जवाबदेही करना होगी कि उस ने इन शक्तियों का सदुपयोग किया था या दुरुपयोग ।

सातो आसमान और ज़मीन और जो कोई उन में है, सब उस की पाकी बयान करते हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उस की हम्द (प्रशंसा) के साथ उस की तस्बीह (गुणगान) न करती हो। लेकिन तुम उन की तस्बीह समझते नहीं हो। निस्संदेह वह बड़ा ही सहनशील और बड़ा क्षमा करने वाला है । (अल-कुर्आन)

37. और ज़मीन पर अकड़ कर न चलो, तुम न ज़मीन को फ़ाड़ सकते हो और न पहाड़ों की बुलन्दी को पहुँच सकते हो ⁵⁰।

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْوُقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

38. इन तमाम चीज़ों की बुराई तुम्हारे रब के नज़दीक अतयंत अप्रिय है ⁵¹।

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

39. यह हिकमत की उन बातों में से हैं जो तुम्हारे रब ने तुम पर वह्य की हैं ⁵² और अल्लाह के साथ दूसरा माबूद (उपास्य) न ठहराओ ⁵³ कि जहन्नम में डाल दिए जाओ, तिरस्कृत एवं ठुकराए हुए।

ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ
اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ﴿٣٩﴾

40. क्या तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तो बेटे ख़ास कर दिए और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लिया ⁵⁴? बड़ी सख़्त बात है जो तुम कहते हो।

أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُمُ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا إِنَّكُمْ
لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

41. हम ने इस कुर्आन में तरह तरह से बात स्पष्ट कर दी ताकि वे याददेहानी (नसीहत) हासिल करें, ⁵⁵ मगर इस से उन की दूरी बढ़ती ही जा रही है ⁵⁶।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾

42. कहो, अगर उस के साथ दूसरे ख़ुदा भी होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श (सिंहासन) वाले की तरफ़ (चढ़ाई करने के लिए) राह ज़रूर निकाल लेते ⁵⁷।

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ الْأُبُتُغُوا
إِلَى ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

43. पाक है वह और बहुत बुलन्द है उन बातों से जो ये कहते हैं।

سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾

44. सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उन में है, सब उस की पाकी बयान करते हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उस की हम्द (प्रशंसा) के साथ उस की तस्बीह (गुणगान) न करती हो। लेकिन तुम उन की तस्बीह समझते नहीं हो। ⁵⁸ निस्संदेह वह बड़ा ही सहनशील और बड़ा क्षमा करने वाला है ⁵⁹।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ
إِلَّا أَسْبَحَ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ
حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾

50. अर्थात् घमण्डी बन कर अकड़ की चाल न चलो। तुम इतना बल बूता भी नहीं रखते कि ज़मीन पर पाँव पटक कर उस को फाड़ सको और न अपनी गर्दन ऊँची कर के पहाड़ों की बुलन्दी को पहुँच सकते हो। फिर अहं की यह चाल किस बल पर है? आदमी को चाहिए कि वह अल्लाह की कुदरत और उस की बुलन्दी को देखते हुए और अपनी बेबसी को महसूस करते हुए विनम्रता के साथ झुक कर चले।

51. अर्थात् ऊपर मना की गई जिन बातों का वर्णन हुआ उन में हर चीज़ बुरी होने के कारण अल्लाह तआला के नज़दीक अत्यन्त अप्रिय है।

52. अर्थात् ये सारे आदेश हिकमत (तत्त्वदर्शिता) पर आधारित हैं। और तुम ग़ौर करो तो तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारा स्वभाव गवाही देगा कि ये सब समझदारी की एवं भली बातें हैं और इन्सानों को भलाई और सफलता के रास्ते पर डाल देने वाली हैं।

53. आदेशों की शुरूआत तौहीद से हुई थी और ख़ात्मा भी तौहीद ही पर हो रहा है। गोया तौहीद ही शरीअत का उद्गम है और ये आदेश उस के अमली तक्राज़े (Practical Demands) हैं। तौहीद के साथ इबादत (उपासना) और इताअत (अनुपालन) दोनों ज़रूरी हैं।

54. इस की व्याख्या सूरह नहल नोट ७९ में गुज़र चुकी।

55. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट १०९ में गुज़र चुकी।

56. अल्लाह तआला ने लोगों को समझाने के लिए कुर्आन में विभिन्न शैली और तरीक़े अपनाए हैं, तर्क भी प्रस्तुत किये हैं और इबरत देने वाली ऐतिहासिक घटनाएँ भी, नसीहतें भी और डरावा भी, वास्तविकताएँ भी और मिसालें भी। मगर जो लोग हठधर्मी में लिप्त होते हैं उन पर कोई नसीहत काम नहीं करती। वे कुर्आन की बातों को ग़लत अर्थ पहनाने लगते हैं और नतीजा यह कि हक़ (सत्य) से उन की दूरी में वृद्धि ही हो जाती है।

57. अर्थात् बहुदेववादियों का यह दावा कि इस कायनात में बहुत से ख़ुदा हैं, यदि सही होता तो तमाम छोटे छोटे ख़ुदा उस बड़े ख़ुदा को परास्त करने के लिए आगे बढ़ते जो सिंहासन (अर्श) का स्वामी है और जिस के हाथों में पूरी कायनात की सत्ता है। और सब ख़ुदाओं के बीच सत्ता हथियाने की रस्साकशी होती तो कायनात की यह व्यवस्था सुरुचि पूर्ण ढंग से किस प्रकार चलती। ऐसी सूरत में यह कायनात निश्चित रूप से तितर बितर हो कर रह जाती। मगर तुम देखते हो कि यह सत्य नहीं है ऐसा नहीं हो रहा है। कायनात के इस प्रबन्ध

एवं व्यवस्था में कहीं कोई ख़लल और ख़राबी नज़र नहीं आती जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि पूरी कायनात पर एक ख़ुदा का शासन है। न दूसरा कोई ख़ुदा है और न एक मात्र ख़ुदा के शासन में किसी का कोई हिस्सा है।

58. यह एक परोक्ष (ग़ैब) से सम्बन्धित वास्तविकता है जिस पर से कुर्आन ने परदा उठाया है। वह बताता है कि कायनात की कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह की प्रशंसा तथा उस का गुणगान न करती हो।

इस का मतलब केवल यह नहीं है कि हर चीज़ अपनी दशा और अपने स्वभाव एवं प्रकृति से उस का गुणगान एवं प्रशंसा कर रही है तथा एकेश्वरवाद पर तर्क प्रस्तुत करती है बल्कि मतलब यह है कि वह अपनी ज़बान से भी उस की प्रशंसा एवं गुणगान कर रही है। यह और बात है कि उन का ख़ुदा की पाकी बयान करना तथा उस के गुणगान करना हमारी समझ में नहीं आता।

आज विज्ञान ने मनुष्य की जानकारीयों में बेपनाह वृद्धि कर दी है। कण अथवा अणु (Atom) के बारे में आधुनिक मत यह है कि उस के केन्द्र (Nucleus) के इर्द गिर्द एलेक्ट्रॉन (Electron) गर्दिश करता है। मतलब यह कि कण कण गतिशील में है। किन्तु हमें यह गति और यह गर्दिश दिखाई नहीं देती। और दिखाई न देने के कारण ही विज्ञान की इस खोज अथवा इस बात का कोई इन्कार नहीं करता। फिर हमें अल्लाह की प्रकाशना अर्थात् अल्लाह की वह्य जो ज्ञान का विश्वसनीय माध्यम है इस बात की ख़बर देती हैं कि हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह करने, उस की पाकी बयान करने तथा उस की प्रशंसा एवं गुणगान करने में लीन हैं तो उस पर विश्वास क्यों न करें? क्या मात्र इस आधार पर इस का इन्कार करना उचित होगा कि इस गुप्त आवाज़ को हमारे कान सुन नहीं पाते? कुर्आन ने वास्तव में कायनात के इस रहस्य पर से परदा उठाकर मानवज्ञान में बहुत बड़ी वृद्धि की है। ताकि वह इस से रौशनी प्राप्त करे। अतः इस से इन्कार मानव के लिए महरूमी ही होगी।

59. मतलब यह कि जो सृष्टि है अर्थात् जो पैदा की गई मख़लूक है उस का कर्तव्य यह है कि अपने सृष्टा का गुणगान करे। अब अगर इन्सानों में ऐसे लोग मौजूद हैं जो अपने पैदा करने वाले सृष्टा की ओर ऐब और दोष की बातें जोड़ते हैं और उस का साझीदार ठहराते हैं तो उन की ये हरकतें ऐसी हैं कि उन पर अल्लाह का प्रकोप तुरन्त टूट पड़े। मगर अल्लाह सहनशील है, इस लिए उन की हरकतों को सहन करता है और वह बड़ा क्षमाशील है, इस लिए मोहलत देता है ताकि लोग तौबा करके उस की क्षमा के पात्र बन जाएँ।

45. और जब तुम कुर्आन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के बीच जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते एक ढका परदा आड़ कर देते हैं ⁶⁰।

وَلَا أَفْرَأْتُ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ۝

46. और उन के दिलों पर गिलाफ़ (खोल) चढ़ा देते हैं कि कुछ न समझें, और उन के कानों में गरानी (भारीपन) पैदा कर देते हैं ⁶¹। और जब तुम कुर्आन में अपने एक ही रब का जिक्र करते हो तो वे पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं ⁶²।

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِذَا ذُكِّرْتُ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَعْلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ۝

47. हम जानते हैं जब ये तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो क्या सुनते हैं, तथा जब ये कानाफूसी करते हैं। जब ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जो जादू का मारा है ⁶³।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ۝

48. देखो। ये कैसी बातें हैं जो तुम्हारे बारे में कहते हैं जिस की वजह से वे भटक गए हैं, अब राह नहीं पा सकते।

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

49. वे कहते हैं जब हम हड्डियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो कर रह जाएंगे तो क्या हमें फिर से पैदा कर के उठाया जाएगा?

وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا ۖ إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ۝

50. कहो तुम पत्थर हो जाओ या लोहा।

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝

51. या कोई और चीज़ जो तुम्हारे नज़दीक इस से भी अधिक कठोर हो ⁶⁴। वे कहेंगे, कौन हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा? कहो वही जिस ने पहली बार तुम्हें पैदा किया। फिर वे सर हिला कर पूछेंगे कि यह कब होगा? कहो असंभव नहीं कि उस का समय निकट आ लगा हो।

أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝

52. जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की हम्द (प्रशंसा) करते हुए उस की पुकार का जवाब दोगे और यह खयाल करोगे कि बस थोड़ी ही देर (ठहरे) रहे ⁶⁵।

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِنْ لَسْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝

53. और मेरे बन्दों से कह दो कि वे ऐसी बात कहें जो बेहतर हो। शैतान लोगों के बीच फ़साद डालता है ⁶⁶। निस्संदेह शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है।

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمُ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

60. जिन लोगों पर दुनिया ऐसी सवार होती है कि आखिरत की धारणा उन के लिए किसी तरह स्वीकार्य नहीं, ऐसे लोग कुर्आन सुन लें या खुद पढ़ लें तो इस का कोई असर उन पर नहीं होता। और इस का कारण अल्लाह का यह विधान अथवा नियम है कि जो सत्य को स्वीकारने पर आमादा नहीं वह उस की तौफ़ीक़ से महरूम रहेगा। यह नियम अपना कार्य करता है मगर इस तरह कि शरीर की आँख से दिखाई नहीं देता। इस लिए इसे “हिजाब मस्तूर” ढका हुआ परदा कहा गया है।

61. इस की व्याख्या सूरह अनआम नोट ४४ में गुजर चुकी ।

62. अर्थात् वे यह देख कर कि जो कुर्आन तुम पेश करते हो उस में एक ही रब का वर्णन है और उन के ठहराए हुए पूज्यों का कोई वर्णन, कोई उल्लेख नहीं कि पालनहारी के मामले में उन का कोई हाथ है, वे इस कुर्आन को सुनना भी पसंद नहीं करते बल्कि पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं।

63. इशारा है मक्का के काफ़िरों के सरदारों की तरफ़ जो कभी कुर्आन सुनने की कोशिश करते तो विरोध प्रकट करने के उद्देश्य से। अतः वे आपस में उस के विरुद्ध कानाफूसी करते और जब देखते कि उन के साथियों में से, कोई व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दअवत से प्रभावित हो रहा है तो कहते कि तुम एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है और इस के असर से वह दीवानगी की बातें कर रहा है।

यह आयत इस बात को साफ़ तौर पर बताती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू का मारा होने का आरोप काफ़िरों ने लगाया था जो सरासर ग़लत था। इस से यह भी स्पष्ट हुआ कि आप पर जादू का असर नहीं हो सकता था। क्यों कि यह नुबुव्वत की प्रतिष्ठा को प्रभावित करने वाली चीज़ है। इस लिए जिन उल्लेखों अथवा रिवायतों में यह बयान हुआ है कि मदीना में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यहूदियों ने जादू कर दिया था और आप पर इस का कुछ असर हुआ था वे रिवायतें अथवा उल्लेख कुरआन से टकराती हैं इस लिए क़ाबिले रद्द हैं। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़लक़

नोट ६)

64. अर्थात् मरने के बाद आदमी का शरीर चुर्ण विचूर्ण हो कर मिट्टी बन जाए, लोहा बन जाय या उस से भी अधिक कोई कठोर वस्तु। अल्लाह के लिए उस को दोबारा उस के शरीर के साथ उठाना कुछ भी मुश्किल नहीं। जिस हस्ती ने मनुष्य को पहली बार जीवन प्रदान किया उस के लिए उस की पुनरावृत्ति अर्थात् उसे दोबारा वैसा ही पैदा करना आखिर क्यों मुश्किल होगा?

65. क्रियामत के दिन अल्लाह इन्सानों को पुकारेगा कि उठो और मेरे समक्ष उपस्थित हो जाओ तो तमाम इन्सान दोबारा ज़िन्दा हो कर उस की पुकार पर लम्बैक कहेंगे। उस समय उन की ज़बान पर उस की प्रशंसा एवं गुणगान के सिवा कुछ और न होगा । यह प्रकृति अथवा स्वाभाव की आवाज़ होगी जो अपने रब की प्रशंसा एवं गुणगान से परिचित है। खुदा के समक्ष होने वाली इस उपस्थिति को हज्ज के तरीकों एवं कर्मकाण्डों में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। अतः अल्लाह के घर कि ज़ियारत के लिए बन्दा लम्बैक अर्थात् “ मैं तेरे समक्ष उपस्थित हूँ” कहता हुआ जाता है और उस की ज़बान पर हम्द प्रशंसा तथा गुणगान के वाक्य होते हैं।

إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ

अर्थ: “ प्रशंसा और नेमत तेरे ही लिए है”

लोग क्रियामत को दूर समझते हैं लेकिन जब वे जी उठेंगे तो ऐसा महसूस करेंगे कि जो समय दुनिया और क्रियामत के बीच गुजरा वह बहुत ही थोड़ा था। आलमे बर्ज़ख़ (यमलोक) में वे कुछ ही देर रहे थे कि क्रियामत खड़ी हो गई।

66. अर्थात् ईमान वालों से कह दो कि वे इन्कार करने वाले (मुन्किरीन) से उलझें नहीं और कोई बात ऐसी न कहें जो उत्तेजित करने वाली हो। बल्कि समझाने का तरीका अपनाएँ और लोगों को इस्लाम की दअवत अच्छे ढंग से पेश करें। याद रखो शैतान उत्तेजित करना चाहता है और नहीं चाहता कि लोग सत्य को स्वीकार करें।



54. तुम्हारा रब तुम को खूब जानता है। वह चाहे तो तुम पर दया करे और चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे ⁶⁷। और (ऐ पैगम्बर !) हम ने तुम को उन पर उन के कर्मों का ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा है ⁶⁸।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ إِنَّ يَشَاءُ رَحْمَتُكُمْ أَوْ أَنْ يَشَاءُ يُعَذِّبَكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكَيْلًا ۝۶۸

55. और तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है उन को जो आसमानों और ज़मीन में हैं, हम ने कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (बड़ाई) प्रदान की और हम ने दाऊद को ज़बूर प्रदान की ⁶⁹।

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝۶۹

56. कहो पुकार देखो उन को जिन को तुम ने उस के सिवा ख़ुदा समझ रखा है। वे न तुम्हारी कोई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं और न तुम्हारी हालत बदल सकते हैं ⁷⁰।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضَّرَرِ عَنْكُمْ وَلَا لَحْوَيًا ۝۷۰

57. जिन को ये लोग पुकारते हैं वे स्वयं अपने रब का कुर्ब (पहुँच) ढूँढते हैं कि कौन सब से अधिक निकटस्थ (पहुँच रखने वाला) बनता है। वे उस की रहमत के उम्मीदवार हैं और उस के अज़ाब से डरते हैं ⁷¹। निस्संदेह तुम्हारे रब का अज़ाब है ही डरने के लायक।

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مُحْذَرًا ۝۷۱

58. और कोई आबादी ऐसी नहीं जिस को हम क्रियामत से पहले विनष्ट न कर दें या सख़्त अज़ाब न दें। यह बात किताब में लिखी जा चुकी है ⁷²।

وَإِنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا أَخْنَاهُ لَهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝۷۲

59. और हमारे लिए निशानियाँ भेजने में कोई चीज़ बाधक नहीं हुई मगर यह बात कि अगले लोगों ने इन को झुठलाया था ⁷³। समूद को हम ने ऊँटनी दी कि एक खुली निशानी थी किन्तु उन्होंने ने उस पर ज़ुल्म किया ⁷⁴। और निशानियाँ तो हम इसी लिए भेजते हैं कि लोगों को उन के द्वारा डराएँ ⁷⁵।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصَرَةً فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۝۷۵

60. और जब हम ने तुम से कहा था कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेर रखा है ⁷⁶ और उस प्रत्यक्षदर्शन को जो हम ने तुम्हें कराया, लोगों के लिए अज़माइश बना दिया है, ⁷⁷ तथा उस वृक्ष को भी जिस को कुर्आन में लानत वाला कहा गया है, ⁷⁸ हम इन्हें डराते हैं लेकिन इस से उन की सरकशी में वृद्धि ही हो रही है।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي آتَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝۷۹

67. यह जन सामान्य से सम्बोधन है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दिलों का हाल खूब जानता है और दया एवं अज़ाब उस की मर्जी और मंशा ही पर निर्भर है मगर उस की मर्जी और मंशा के फ़ैसले लोगों के अन्दरुनी हालात को सामने रख कर होते हैं। जो व्यक्ति सत्य को स्वीकारने के लिए दिल से आमादा होता है अल्लाह तआला उस पर दया करता है और वह सत्य को पा कर उस की दया का पात्र बन जाता है। इस के विपरीत जो सत्य को स्वीकारने के लिए दिल से आमादा नहीं होता अल्लाह तआला उसे अपनी दया से वंचित रखता है और वह कुफ़्र (असत्य) स्वीकार करने के कारण उस के प्रकोप का भागीदार बन जाता है।

68. अर्थात् पैगम्बर का काम अल्लाह के पैगाम को पहुँचा देना है। वह किसी के कर्मों का ज़िम्मेदार नहीं है।

69. अभिप्रेत यह है कि लोग इस बहस में पड़ने से रुक जाएँ कि किस नबी की क्या फ़ज़ीलत है। यहूदी मूसा अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत (बड़ाई) के क़ायल थे तो ईसाई ईसा अलैहिस्सलाम को सब से ऊँचा नबी क़रार दे रहे थे। और मक्का के बहुदेववादी तो मात्र बहस की ख़ातिर उन से सुन कर बहुत सी बातें छेड़ दिया करते थे। इसी के तहत यहाँ बात बयान हुई है कि नबी हो या फ़रिश्ता किसी के दर्जे और प्रतिष्ठा को सुनिश्चित करना तुम्हारा काम नहीं बल्कि अल्लाह का काम है कि वह आसमानों और ज़मीन की सारी सृष्टि को अच्छी तरह जानता है। और जहाँ तक नबियों की बात है उस ने अगर एक नबी को एक लिहाज से फ़ज़ीलत बख़्शी है तो दूसरे को दूसरे लिहाज से। उदाहरण के तौर पर दाऊद को ये फ़ज़ीलत प्रदान कि उन्हें ज़बूर जैसी किताब प्रदान की जो अपनी मधुरता एवं गुण में कुर्आन से मेल खाती थी। अतः जिस नबी को जो फ़ज़ीलत और जो दर्जा अल्लाह तआला ने प्रदान किया था उस को मान लो और न तो किसी का दर्जा बढ़ाओ और न किसी के दर्जे को घटाओ।

इसी प्रकार की एक अनावश्यक व्यर्थ की बहस मुसलमानों में चल पड़ी कि इस उम्मत में सब से ऊँचे हज़रत अबू बक्र हैं या हज़रत अली। फिर बहस को हर समूह ने अपने अपने अक़ीदे का मसला बना लिया हालाँकि उन के दर्जे का निर्धारण करने की ज़िम्मेदारी हम पर नहीं डाली गई है। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि कौन किस दर्जे का मालिक है और उस के नज़दीक किस की क्या श्रेणी होगी। फिर हम ऐसी बातों को बहस का मुद्दा क्यों बना लें ?

70. अर्थात् तुम इस ख़ाम ख़याली में लिप्त हो कि अल्लाह के अलावा और भी हाज़तों और ज़रूरतों को पूरी करने वाले हैं अगर तुम बुद्धि और विवेक से काम लेना नहीं चाहते और ख़ाम ख़याली ही में डूबे रहना चाहते हो तो उन को पुकारने

का शौक भी पूरा कर लो। मगर वास्तविकता यह है कि न वे तुम्हारे किसी कष्ट का निवारण करने की शक्ति रखते हैं और न तुम्हारी बुरी हालत को अच्छी हालत से परिवर्तित करने की।

71. फ़रिश्ते तात्पर्य हैं न कि बुत क्यों कि अल्लाह की पहुँच को ढूँढना, उस की रहमत का उम्मीदवार होना और उस के अज़ाब से डरना बुतों की नहीं बल्कि फ़रिश्तों की ही विशेषताएँ हो सकती हैं। ऊपर आयत ४० में भी यह मज़मून गुज़र चुका है कि बहुदेववादी फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ कहते हैं। फ़रिश्तों के बारे में उन की ग़लत धारणाओं का खण्डन करते हुए फ़रमाया जा रहा है कि तुम फ़रिश्तों को ख़ुदा के कामों में साझीदार समझ कर ज़रूरतों को पूरा करने और मुश्किलों को दूर करने के लिए पुकारते हो लेकिन उन का अपना हाल यह है कि वे स्वयं अपने रब का सान्निध्य (कुर्ब) ढूँढते हैं कि कौन सब से अधिक निकटस्थ बनता है। वे जहाँ उस की दया और रहमत के उमीदवार हैं वहाँ उस के अज़ाब से भयभीत भी रहते हैं, फिर ख़ुदा की जगह उन के पुकारने का क्या अर्थ ?

यह तो था बहुदेववादियों का फ़रिश्तों के साथ मामला किन्तु शिर्क अर्थात् ख़ुदा के साझीदार मानने की धारणा केवल उन ही तक सीमित नहीं। आज कल के मुसलमानों का भी एक बड़ा समूह अपने नबियों, वलियों और पीरों के साथ वह मामला करता है जो ख़ुदा के साथ किया जाना चाहिए। उन्होंने वास्तों और वसीलों का एक फ़लसफ़ा (दर्शन) गढ़ लिया है और उस के आधार पर सहायता के लिए कभी रसूल को पुकारते हैं तो कभी अपने मन गढ़त “ग़ौस” को, कभी स्वरचित मुश्किलकुशा की दुहाई देते हैं तो कभी अपने ही दिए हुए उपनाम “ग़रीब नवाज़” से मुरादे माँगने लगते हैं। उन के उल्मा इस आयत की और इस जैसी दूसरी आयतों की इस प्रकार व्याख्या करते हैं कि इन सब बहुदेववादी तौर तरीकों के बावजूद उन की तौहीद की धारणा पर कोई आँच नहीं आती। वे यदि खुले मन से कुर्आन पढ़ें तो उन्हें हिदायत नसीब हो।

72. तात्पर्य बहुदेववादियों (मुश्रिकों) काफ़िरों और सरकश लोगों की आबादियाँ हैं। अतः ऊपर आयत १६ में भी इस से मिलती जुलती बात बयान हुई है। यहाँ अल्लाह के इस नियम को बयान किया गया है कि ऐसी हर आबादी के लिए जो ग़लत धारणाओं और उस के अनुसार ग़लत कर्म में लिप्त हो तथा उस से बाज़ आने के लिए तैयार न हो, अल्लाह का फ़ैसला यह है कि उसे दुनिया में या तो पूर्ण विनाश से दोचार होना है कि उस का अस्तित्व ही सिर से मिटा दिया जाए या फिर किसी न किसी रूप में सख़्त अज़ाब का मज़ा चखना है। मोहलत कितनी ही लंबी क्यों न हो बहरहाल क्रियामत से पहले दो में से एक बात निश्चय ही सामने आएगी।

इतिहास इस की पुष्टि करता है और मौजूदा दौर में ऐसी घटनाएँ बहुतायत के साथ हो रही हैं और खुदा का अज़ाब (प्रकोप) इन्सान की बम्बारी के रूप में बड़े बड़े शहरों पर नाज़िल हो कर उन्हें अपने करतूतों का मज़ा चखाता है।

स्पष्ट रहे कि आबादियों पर अल्लाह का यह अज़ाब उस के यहाँ बिगाड़ सामान्य रूप से फैल जाने के कारण नाज़िल होता है। ऐसे मौक़े पर जो अच्छे लोग उस बस्ती में रहते हों, अगर अज़ाब की ज़द में आते हैं तो वास्तव में वह अज़ाब उन के लिए अज़ाब नहीं होता और क्रियामत के दिन उन के अमल को देख कर उन के साथ मामला किया जाएगा।

यह भी स्पष्ट रहे कि वह अज़ाब उस अज़ाब से कुछ अलग होते हैं जो किसी रसूल को झुठलाने के कारण उस की क्रौम पर रसूल की सत्यता का तर्क एवं प्रयास बन कर उतरता है। उस में कुफ़्र और ईमान का दो टूक फैसला होता है। इस लिए रसूल और उस को मान लेने वालों को उस बस्ती से जिस पर अज़ाब नाज़िल होता है, पहले ही निकाल लिया जाता है।

73. यहाँ निशानियों से मुराद प्रत्यक्ष चमत्कार हैं जो देखने में आएँ।

74. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ११९ में गुज़र चुकी।

75. अर्थात् चमत्कार के तौर पर जो चीज़ें भेजी जाती हैं वे मात्र चमत्कार दिखाने के लिए नहीं भेजी जातीं। बल्कि उन के भेजे जाने से अभिप्रेत अल्लाह के अज़ाब से डराना होता है कि इस खूली निशानी को देख कर भी अगर तुम ईमान नहीं लाए तो समझो कि अल्लाह का अज़ाब तुम्हारे सर पर मंडला ही रहा है।

76. इशारा है सूरह बुरुज की इस आयत की तरफ़ :-

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ.

अर्थ: “लेकिन ये काफ़िर झुठलाने ही में लगे हुए हैं। और अल्लाह उन को आगे पीछे से घेरे हुए है।”

मतलब यह है कि अल्लाह तआला यह बात पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि लोग पैग़म्बर और कुर्आन को झुठलाने के लिए एक न एक आपत्ति उठाते ही रहेंगे लेकिन अल्लाह तआला पूरी तरह इन को अपने घेरे में लिए हुए है इस लिए वे अपने इरादों में सफल नहीं हो सकेंगे और कुर्आन और पैग़म्बर

से सम्बन्धित उस की जो योजना है वह पूरी हो कर रहेगी।

77. मूल अरबी (Text) में शब्द “रूया” इस्तेमाल हुआ है जिस का शाब्दिक अर्थ नींद की हालत में देखने के भी हैं और जागते हुए प्रत्यक्षदर्शन करने के भी।

(देखिए लिसानुलअरब जिल्द १४ पृष्ठ २९७)

और बुखारी में हज़रत इब्ने अब्बास से इस की ये तफ़्सीर नक़ल हुई है कि :-

هِيَ رُؤْيَا عَيْنٍ أَرَاهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ. (كتاب التفسير)

“यह सर की आँख का दर्शन था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसरा की रात कराया गया। (बुखारी किताबुतफ़्सीर)

इस लिए इस से मुराद वह प्रत्यक्ष दर्शन हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसरा (मस्जिदे-अक्सा के सफ़र) के अवसर पर कराया और उसे रूया इस लिए कहा कि बैतुलमुक़द्दस का यह सफ़र बहुत तेज़ी के साथ और असाधारण मनोभाव के साथ हुआ जिस की कल्पना यदि आदमी कर सकता है तो स्वप्न ही की सूरत में कर सकता है। परन्तु यह स्वप्न हरगिज़ नहीं था। अगर ऐसा होता तो न इस तैयारी के साथ इस का वर्णन करने की आवश्यकता थी और न कुरैश आप को झुठलाते और न ही यह लोगों के लिए आजमाइश का कारण (फितना) बनता। आजमाइश तो लोगों की उसी सूरत में हो सकती है जब कि इस सफ़र को शारीरिक सफ़र और इस प्रत्यक्षदर्शन को जागने की हालत में देखना बताया जाए और जैसा कि कुर्आन में बयान हुआ है।

78. मुराद ज़क्रूम का वृक्ष है जिस का ज़िक्र कुर्आन में सूरह साफ़ात आयत ६२ से ६६ में हुआ है। यह ख़बीस वृक्ष जहन्नम में होगा और जहन्नमी उस से पेट भरेंगे। गोया यह वृक्ष लानत का प्रतीक होगा इस लिए मलऊन (लानत वाला) कहा गया है। कुर्आन की इस ख़बर को मुन्किरीन अर्थात् इन्कार करने वालों ने मज़ाक बना लिया और कहने लगे कि आग में भी वृक्ष उगेंगे। हालाँकि यह आख़िरत (परलोक) की बात बयान हुई जिस के समय व स्थान दुनिया के समय व स्थान से बिल्कुल भिन्न होंगे। अगर अल्लाह तआला ने ज़क्रूम के वृक्ष को फ़ायरपूफ़ (Fire Proof) बनाया हो तो इस में आश्चर्य की क्या बात है।



और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने नहीं किया उस ने कहा क्या मैं उस को सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है । तथा उस ने कहा, क्या तेरा यही फैसला हुआ कि तूने इस को मुझ पर श्रेष्ठता प्रदान की । अगर तूने मुझे क्रियामत के दिन तक मोहलत दी तो मैं इस की पूरी नस्ल को जड़ से उखाड़ डालूँगा, केवल थोड़े लोग इस से बच सकेंगे। कहा जा ! इन में से जो भी तेरे पीछे चलेंगे तो जहन्नम ही तुम सब के लिए पूरी पूरी सज़ा है । (अल-कुर्आन)

61. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने ने सज्दा किया ⁷⁹ मगर इब्लीस ने नहीं किया ⁸⁰ उस ने कहा क्या मैं उस को सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है ⁸¹।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ
ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتُ طِينًا ۝

62. तथा उस ने कहा, क्या तेरा यही फैसला हुआ कि तूने इस को मुझ पर श्रेष्ठता प्रदान की ⁸²। अगर तूने मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दी तो मैं इस की पूरी नस्ल को जड़ से उखाड़ डालूँगा, केवल थोड़े लोग इस से बच सकेंगे। ⁸³

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَنْ يَأْخُزَنِي إِلَى يَوْمِ
الْقِيَمَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۝

63. कहा जा ! इन में से जो भी तेरे पीछे चलेंगे तो जहन्नम ही तुम सब के लिए पूरी पूरी सज़ा है ⁸⁴।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاءُكُمْ
جَزَاءً مَوْفُورًا ۝

64. तू इन में से जिस जिस को अपनी आवाज़ से बहका सकता है बहका ले ⁸⁵। फिर अपने सवारों और प्यादों से हमला कर ⁸⁶। माल और औलाद में उन का साझीदार बन जा, ⁸⁷ उन से वादा कर। और शैतान जो वादा भी करता है वह इस के सिवा कुछ नहीं है कि सरासर धोखा है। ⁸⁸

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ
وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمُ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ
وَالْأَوْلَادِ وَعَدْهُمْ وَمَا يَعِدُ هُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝

65. निश्चय ही मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा ⁸⁹। और तेरा रब कारसाज़ी (काम बनाने) के लिए काफ़ी है ⁹⁰।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝

66. तुम्हारा रब तो वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौका चलाता है ताकि तुम उस का अनुग्रह (फ़ज़ल) तलाश करो। ⁹¹ निस्संदेह वह तुम पर बहुत मेहरबान है।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرِيكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
إِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

67. जब समुद्र में तुम्हें मुसीबत आ लेती है तो उस एक के सिवा जिन जिन को तुम पुकारते हो सब ग़ायब हो जाते हैं ⁹²। फिर वह जब तुम को बचा कर शुष्क (ख़ुश्की) भूमि पर पहुँचा देता है तो तुम उस से मुँह मोड़ते हो। इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।

وَإِذْ أَمْسَكُمُ الصُّرُفُ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ
فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ
الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝

79. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट ४७ में गुजर चुकी ।

80. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट ४८ में गुजर चुकी ।

81. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १६।

82. इब्लीस का यह एतिराज़ अल्लाह तआला के उस फैसले पर था जिस के अनुसार आदम को ज़मीन का खलीफ़ा बनाया गया और उसे यह सम्मान प्रदान किया गया कि उस के आगे फ़रिश्ते और इब्लीस सज़्दा करें। इस एतिराज़ का इब्लीस को अधिकार न था और न यह सही हो सकता था। अल्लाह तआला को अधिकार है कि वह अपनी जिस सृष्टि को जो दर्जा देना चाहे, प्रदान करे। इस पर किसी को एतिराज़ का कोई हक़ नहीं। फिर अल्लाह जो सब कुछ जानता और सब की ख़बर रखता है इस लिए उस के फैसले ज्ञान और नीति पर आधारित होते हैं। अब यदि इब्लीस पर यह हिकमत और नीति स्पष्ट नहीं हुई थी या उस की समझ में उस की नीति नहीं आ सकती थी तो यह बात किस तरह सही हो सकती थी कि अल्लाह के फैसले को ही ग़लत बताया जाए?

83. इब्लीस को अन्दाज़ा हुआ कि भावनाएं और इच्छाएं रखने वाले मनुष्य को जब फ़ायदों और लज़्ज़तों वाली दुनिया के आकर्षक माहौल में परिक्षा के लिए खड़ा कर दिया जाएगा तो उसे सरलता पूर्वक बहकाया जा सकेगा। इस लिए उस ने दावे के साथ कहा कि अगर मुझे क्रियामत तक के लिए मोहलत दी गई तो मैं आदम की पूरी नस्ल को उस के असली जीवन लक्ष्य से विमुख कर के ग़लत राह पर डाल दूंगा। बस थोड़े ही लोग होंगे जो मेरे बहकावे में नहीं आएंगे।

84. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २२।

85. इब्लीस की आवाज़ उस की पुकार और निमंत्रण है गुमराही और पाप की तरफ़ जिस के लिए वह वस्वसा पैदा

करता है। मौजूदा दौर में संचार माध्यमों की उन्नति ने शैतान को शक्ति पहुँचा दी है कि रेडियो, टेलिवीज़न और पत्रिकाओं के द्वारा उस की आवाज़ दुनिया के कोने कोने में पहुँच रही है और रोज़ की रोज़ उस का शोर बढ़ता ही जा रहा है।

86. मुराद इब्लीस की औलाद और उस के चले चापड़ हैं। वे इन्सान को बहकाने के लिए इस तरह हमलावर होते हैं जैसे लश्कर । अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २१

87. माल में शैतान की साझेदारी का मतलब यह है कि हराम तरीक़े से माल कमाए और हराम तरीक़े से खर्च करे। अल्लाह के सिवा औरों के लिए नज़्र और नियाज़, ग़लत उद्देश्यों अथवा असत्य की राह में माल लुटाना, बुराइयों को बढ़ावा देने के लिए पूँजी लगाना अथवा उसे फ़ाइनेन्स करना शैतानी लक्ष्यों को पूरा करने और उस को माल में साझीदार बनाने की मिसालें हैं।

औलाद में शैतान की साझेदारी का मतलब यह है कि आदमी अपनी संतान को शैतान के इशारे पर किसी देवी देवता या किसी बुज़ुर्ग यह वली की देन बताए या उस को मुश्रिक और काफ़िर बनाए या उस की ग़लत तरबियत कर के उस को दुष्कर्म की राह पर डाल दे।

88. इस की व्याख्या सूरह इब्राहीम नोट २९ में गुजर चुकी ।

89. इस की व्याख्या सूरह हिज्र नोट ३९ में गुजर चुकी।

90. अर्थात् वे अल्लाह पर भरोसा करेंगे और अल्लाह उन के काम को बनाने के लिए काफ़ी होगा।

91. तात्पर्य पवित्र रोज़ी है।

92. यह इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य का स्वभाव एक अकेले ख़ुदा से ही परिचित है, वरना क्या कारण है कि भयानक तूफ़ान में घिर जाने पर एक ख़ुदा ही याद आने लगता है।

68. फिर क्या तुम इस बात से निर्भय हो गए कि वह शुष्क (खुश्की) भूमि के किसी हिस्से में तुम को धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे। फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज (सहायक) न पाओ ⁹³।

أَفَأَمْنْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ۙ (१८)

69. या इस बात से तुम निर्भय हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस में (समुद्र में) ले जाए और तुम पर हवा का प्रचण्ड तूफान भेज दे और तुम्हारी नाशुकी (कृतघ्नता) की वजह से तुम को डूबो दे। फिर तुम किसी को न पाओ जो हम से पूछ गछ कर सके ⁹⁴।

أَمْ أَمْنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيَغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۙ (१९)

70. हम ने आदम की औलाद को इज्जत दी ⁹⁵ और उस को थल और जल में सवारी प्रदान की ⁹⁶ और पाकीजा चीजों से रिज्क (रोज़ी) दिया ⁹⁷ और अपनी बहुत सी सृष्टियों पर उस को श्रेष्ठता दी। पूरी पूरी श्रेष्ठता ⁹⁸।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۙ (२०)

71. जिस दिन हम हर इन्सानी गिरोह को उस के पेशवा के साथ बुलाएंगे ⁹⁹ तो जिन को उन का कर्म पत्र (आमाल नामा) दाहिने हाथ में दिया जाएगा ¹⁰⁰ वे अपना कर्मपत्र पढ़ेंगे ¹⁰¹ और उन के साथ ज़रा भी नाइन्साफ़ी नहीं होगी।

يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ فَمَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ يَمِينًا وَفَأُولَٰئِكَ يَتْلَوْنَ عَلَيْهِمْ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۙ (२१)

72. और जो इस दुनिया में अन्धा बन कर रहा वह आखिरत में भी अन्धा ही रहेगा ¹⁰² और राह से बिलकुल भटका हुआ।

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۙ (२२)

73. यह लोग इस बात पर तुले थे कि तुम्हें फ़िले में डाल कर उस (प्रकाशना) से फेर दें जो हम ने तुम पर उतारा है, ताकि तुम कोई और बात हमारे नाम से गढ़ कर पेश करो। और इस सूरत में वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते ¹⁰³।

وَلَنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَتَّخِذَ عَلَيْهِمْ غَيْرَ ذُرِّئٍ لِّاتِّخَذُوكَ خَلِيلًا ۙ (२३)

74. और अगर हम ने तुम्हारे क़दम न जमा दिये होते तो असंभव न था कि तुम उन की तरफ़ कुछ न कुछ झुक पड़ते ¹⁰⁴।

وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنُ إِلَيْهِمْ ذُرِّيَّتًا قَلِيلًا ۙ (२४)

93. अर्थात् समुद्री तुफान के खतरे से निकलने के बाद जब तुम सही सलामत शुष्क भूमि पर पहुँचते हो तो फिर अपने बहुदेववादी तौर तरीकों की तरफ लौट आते हो और थल पर कोई भय नहीं महसूस करते हाँलाकि भय वहाँ भी मौजूद होता है। किसी समय भूकंप आ सकता है और ज़मीन के धंस जाने से तुम उस के अन्दर दफ़न हो सकते हो। या पत्थर बरसाने वाली आँधी चल सकती है और तुम उस की ज़द में आ सकते हो। इस तरह की कोई विपदा भी अल्लाह तआला यदि भेज दे तो कौन है जो उस से तुम्हें बचाएगा?

94. अर्थात् यह भी तो संभव है कि वह कुछ ऐसे साधन कर दे कि तुम फिर समुद्री सफ़र के लिए मजबूर हो जाओ और वहाँ वह फिर तेज़ हवाएँ चला कर तुम को उस में डूबो दे और तुम्हें अपनी नाशुक्री (कृतघ्नता) का मज़ा चखाए। ऐसी सूरत में कौन है जो खुदा के मुक़ाबले में तुम्हारा हिमायती बन कर खड़ा हो और उस से पूछ गछ कर सके कि उस ने तुम को क्यों डुबोया?

95. अर्थात् इन्सान को अल्लाह ने सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान की है। वह पैदाइशी गुनहगार या कोई तिरस्कृत प्राणी नहीं है और न उसे जानवरों के स्तर पर रखना उचित है, और न ही उस की कोई जाति या कोई वंश या कोई वर्ग अपने मूल तत्वों के लिहाज़ से निम्न श्रेणी का है बल्कि हर व्यक्ति चाहे वह मर्द हो या औरत, और किसी रंग, वंश या वर्ग से सम्बन्धित हो मानव जाति का एक अंग होने की हैसियत से प्रतिष्ठित एवं आदरणीय है।

जात पात, छूत छात रंग और जाति के भेद भाव और औरतों के तिरस्कृत एवं पापी होने की धारणा, सब ऐसी चीज़ें हैं जो मनुष्य के पैदाइशी शान के खिलाफ़ हैं और इस्लाम उन को मिटा देना चाहता है।

96. यह अल्लाह का प्रदान किया हुआ कैसा सम्मान है कि उस की सेवा के लिए थल में भी सवारी उपलब्ध है और समुद्र में भी सवारी मौजूद। और अब एक और नेमत की वृद्धि हो गई है कि हवा में उड़ने के लिए सवारी उपलब्ध है। अगर अल्लाह इन्सान को जानवरों पर सवार होने और दूसरे प्रकार की सवारियों को ईजाद करने की क्षमता एवं योग्यता न प्रदान करता तो क्या वह यह ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता था?

97. जानवर घास फूस और कीड़े मकोड़े खाते हैं लेकिन इन्सान को अल्लाह तआला ने खाने पीने की अत्यंत उच्च अभिरुचि प्रदान की। और इस अभिरुचि के लिए ज़मीन पर तरह तरह की पाकीज़ा खाने की चीज़ें बिछा दीं।

98. “तफ़ज़ीलन” (मफ़्ज़ूल मुतलक़ है) जिस का मतलब पूरी पूरी श्रेष्ठता है। यह आयत स्पष्टीकरण करती है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को अपनी बहुत सी सृष्टि पर पूरी पूरी श्रेष्ठता प्रदान की है। जहाँ तक पृथ्वी पर पाई जाने वाली सृष्टियों (प्राणियों) की बात है यह एक खुली वास्तविकता है कि मनुष्य सृष्टियों में सर्व श्रेष्ठ (अशरफ़ुल मख़्लूक़ात) है अलबत्ता आसमान की सृष्टियों में से कोई सृष्टि अथवा कोई रचना ऐसी भी हो सकती है जो कुछ दृष्टियों से मनुष्य पर श्रेष्ठता रखती हो। अतः कुछ लिहाज़ से फ़रिश्ते इन्सान पर श्रेष्ठता रखते हैं मगर कुछ दूसरे पहलूओं से मनुष्य को यह श्रेष्ठता दी गई कि उसे फ़रिश्तों ने भी सज़्दा किया।

गोया इन्सान और फ़रिश्तों के बीच श्रेष्ठता का मामला पूरी पूरी श्रेष्ठता का नहीं बल्कि कुछ पहलूओं से है। फिर यह श्रेष्ठता तो इन्सान की संरचना, उस की शक्तियों और क्षमताओं और उस के खिलाफ़त के दायित्वपूर्ण पद पर आसीन किए जाने से है, इस का वास्तविक स्थान और दर्जा तो क्रियामत के दिन ही ज़ाहिर होगा। जब कि मनुष्य के कर्मों एवं प्रयासों के परिणाम सामने आएंगे। अतः इस बहस में नहीं पड़ना चाहिए कि मनुष्य श्रेष्ठ है या फ़रिश्ते बल्कि चिन्ता इस बात की करनी चाहिए कि जो श्रेष्ठता अल्लाह तआला ने हमें प्रदान की है उस के योग्य हम अपने को किस प्रकार सिद्ध कर दिखाएँ। वरना आयोग्यता एवं कृतघ्नता के फल स्वरूप मनुष्य “पहले दर्जे की पस्ती (गिरावट)” को पहुँच सकता है।

99. अर्थात् अक़ीदा और अमल के मामले में जिस व्यक्ति ने जिस को अपना पेशवा नेता, या लीडर बनाया था उस को उस के साथ उपस्थित होना पड़ेगा। सच्चे ईमान वाले रसूल के नेतृत्व में जमा होंगे कि उन्होंने रसूल को अपना इमाम मान कर उस का अनुपालन सच्चे मन और लगन से किया था इस के विपरीत बहुदेववादी और काफ़िर अपने गुमराह लीडरों के साथ ग़लत धर्मों के अनुयायी उन धर्मों के गुमराह अविष्कारकों के साथ उपस्थित होंगे।

100. व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्शिकाक़ नोट ७

101. अर्थात् वे खुशी खुशी अपने कर्म पत्र (आमाल नामे) पढ़ेंगे क्यों कि दाएँ हाथ में दिया जाना सफलता का प्रतीक होगा।

102. दुनिया में वह अल्लाह की निशानियाँ देखता रहा मगर दिल का अंधा बना रहा इस लिए उस का बदला यह होगा कि वह आखिरत में अंधा ही रहेगा। आगे आयत ९७ में इस सज़ा की और व्याख्या हुई है।

स्पष्ट रहे कि क्रियामत के दिन विभिन्न चरणों से गुज़रना होगा। एक चरण वह होगा जिस में काफ़िरों की निगाहें बहुत

तेज़ होंगी, जैसा कि कुर्आन में बयान हुआ है।

فَبَصْرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ (ق: २२)

अर्थ: “ तो आज तेरी निगाहें ख़ूब तेज़ हैं ” (सूरह क़ाफ़ - २२) निगाहों की यह तेज़ी अज़ाब देखने और पहचानने के लिए होगी। दूसरा चरण वह होगा जिस में वे अपने झूठे माबूदों को देख कर बोल उठेंगे कि ऐ ख़ब! ये हैं हमारे ठहराए हुए साज़ीदार। और एक चरण वह होगा जब कि उन्हें अन्धा बहरा गुँगा बना कर उल्टे मुँह जहन्नम की तरफ़ हँकाया जाएगा (अल्लाह की पनाह इस अज़ाब से)

103. इस से पता चलता है कि बहुदेववादी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुर्आन में परिवर्तन के लिए कितना दबाव डाल रहे थे। वे चाहते थे कि यदि आप कुर्आन को पूरी तरह से छोड़ने के लिए तैयार नहीं तो कम

से कम इस में कुछ ऐसे परिवर्तन कर लें कि वे बुतपरस्ती के बिलकुल उल्टा न लगे। इस शर्त पर वे इन के साथ समझौता और दोस्ती करने के लिए आमादा हो गए थे।

आज कल के दौर में पाये जाने वाले बहुत से बहुदेववादियों और काफ़िरों में इसी मानसिकता की झलक देखी जा सकती है। वे मुसलमानों से कहते हैं कि आप लोग तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रस्तुतीकरण कुछ इस प्रकार करें कि अन्य धर्मों के आधार पर आघात न पहुँचे।

104. अर्थात् बहुदेववादियों का दबाव इतना अधिक था कि एक नबी के लिए भी अपनी बात पर जमे रहना आसान न था। मगर अल्लाह तआला की तरफ़ से नबी की पवित्रता (मासूमियत) की सुरक्षा का जो सामान होता है और उस की जो तौफ़ीक़ उस के साथ होती है उस के रहते आप अपनी बात पर पूरी तरह जमे रहे।



और दुआ करो कि ऐ मेरे रब !मुझे (जहाँ कहीं) दाखिल कर तो सच्चाई के साथ दाखिल कर और मुझे निकाल तो सच्चाई के साथ निकाल । और अपनी ओर से ऐसा ग़लबा (प्रभुत्व) प्रदान कर जो मेरा सहायक हो। और ऐलान कर दो सत्य आ गया और असत्य मिट गया और असत्य है ही मिटने वाला ।और हम कुर्आन के रूप में वह चीज़ नाज़िल कर रहे हैं जो ईमान लाने वालों के लिए शिफ़ा भी है और रहमत भी । मगर जालिमों के घाटे में वृद्धि ही हो रही है ।(अल-कुर्आन)

75. इस सूरत में हम तुम्हें ज़िन्दगी का भी दोहरा अज़ाब चखाते और मौत का भी दोहरा अज़ाब। फिर तुम हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार न पाते ¹⁰⁵।

إِذَا لَدَقْنَاكَ صُفْعَ الْحَيَاةِ وَصُفْعَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْكَ نَصِيرًا ①

76. और ये इस बात के लिए प्रयासरत हैं कि तुम्हारे क़दम इस सरज़मीन से उखाड़ दें ताकि फिर तुम्हें यहाँ से निकाल दें। लेकिन अगर वे ऐसा कर बैठे तो तुम्हारे बाद बहुत कम ठहर सकेंगे ¹⁰⁶।

وَأِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْقَكَ إِلَّا قَلِيلًا ②

77. तुम से पहले हम ने जो पैग़म्बर भेजे थे उन के मामले में हमारा यही नियम रहा है। और हमारे नियम में तुम कोई परिवर्तन न पाओगे ¹⁰⁷।

سُئِلَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ③

78. नमाज़ क़ायम करो सूरज के ढलने से ले कर रात के अंधेरे तक। और फ़ज़्र में कुर्आन पढ़ने का आयोजन करो कि फ़ज़्र में कुर्आन पढ़ने में बड़ी हुज़ूरी (साक्षात) होती है ¹⁰⁸।

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ④

79. और रात में तहज्जुद पढ़ो यह तुम्हारे लिए तद अधिक (अतिरिक्त) है ¹⁰⁹। असंभव नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हें ऐसे स्थान पर उठाए जो अत्यधिक प्रशंसा योग्य (महमूद) है ¹¹⁰।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ لَهُ نَافِلَةً لَكَ عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَغْمُودًا ⑤

80. और दुआ करो कि ऐ मेरे रब ! मुझे (जहाँ कहीं) दाखिल कर तो सच्चाई के साथ दाखिल कर और मुझे निकाल तो सच्चाई के साथ निकाल ¹¹¹। और अपनी ओर से ऐसा ग़लबा (प्रभुत्व) प्रदान कर जो मेरा सहायक हो ¹¹²।

وَقُلْ رَبِّ ادْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا ⑥

81. और ऐलान कर दो सत्य आ गया और असत्य मिट गया और असत्य है ही मिटने वाला ¹¹³।

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ⑦

82. और हम कुर्आन के रूप में वह चीज़ नाज़िल कर रहे हैं जो ईमान लाने वालों के लिए शिफ़ा भी है ¹¹⁴ और रहमत भी ¹¹⁵। मगर जालिमों के घाटे में वृद्धि ही हो रही है ¹¹⁶।

وَنَزَّلُ مِنَ الْقُرْآنِ نَافِلَةً وَأَوْشَقَ الْوَسْطَى وَرَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ⑧

105. यह रौंगटे खड़े कर देने वाली चेतावनी है और बहुदेववादियों पर यह स्पष्ट करना है कि तुम हमारे रसूल से यह आशा रखते हो कि वह तुम्हारी बातों में आ कर शिर्क अर्थात् बहुदेववाद के मामले में कुछ नमी दिखाएगा अगर “खुदा न ख्वास्ता” ऐसा हुआ तो यह रिसालत की प्रतिष्ठा तथा उस के दायित्व की सीमा को सरासर तोड़ना होगा। और इस कारण रसूल दुनिया और आखिरत दोनों में दोहरी सजा का भागीदार ठहराया जाएगा। इस जवाब से यह बात आप से आप स्पष्ट हो गई कि शिर्क (बहुदेववाद) के मामले में रसूल से किसी समझौते की आशा रखना बिल्कुल व्यर्थ है।

106. अर्थात् मक्का के बहुदेववादियों ने ऐसे हालात पैदा कर दिए हैं कि ऐ पैगम्बर तुम इस सरजमीन में रह न सको और हिजरत (Migrate) करने के लिए मजबूर हो जाओ। अगर ऐसा हुआ तो ये लोग याद रखें कि वे पैगम्बर के हिजरत कर जाने के बाद यहाँ टिक न सकेंगे उन का अज़ाब की चपेट में आ जाना बिल्कुल सुनिश्चित है।

107. अर्थात् अल्लाह तआला का यह नियम अथवा यह कार्य प्रणाली अपरिवर्तनीय है कि जब कोई क्रौम अपने रसूल को अपनी बस्ती से निकाल देती है तो रसूल के हिजरत कर जाने के बाद उस की मोहलत समाप्त हो जाती है और वह अज़ाब (प्रकोप) की चपेट में आ जाती है।

यह नियम मक्का के बहुदेववादियों पर भी लागू हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मक्का से हिजरत कर जाने के बाद दो ही साल के अन्दर बद्र की जंग हुई जिस में बहुदेववादियों के बड़े बड़े लीडर मारे गए और इस के बाद कुछ ही साल के अन्दर अन्दर मक्का से बहुदेववादियों का बिल्कुल सफाया हो गया। यह भी सजा जो अल्लाह के अपरिवर्तनीय नियमानुसार उन लोगों को मिल कर रही जिन्होंने रसूल को उस सरजमीन से निकाला और अन्तिम समय तक शिर्क और कुफ्र पर जमे रहे।

108. सूरज के ढलने के तीन समय हैं। एक जब कि सूरज अपरान्ह के समय आसमान से ढलने लगता है। अपरान्ह के बाद जुहर की नमाज़ का वक्त शुरू हो जाता है। दूसरा समय सूरज ढलने का वह होता है जब कि किसी भी चीज़ का साया उस के समान हो जाता है। यह अस्त्र की नमाज़ का वक्त है और तीसरा समय सूरज के ढलने का उस का डूब जाना है यह मग़िब की नमाज़ का वक्त है।

रात के अन्धेरे से तात्पर्य वह समय है जो सान्ध्य लालिमा के समाप्त होते ही शुरू हो जाता है। यह “इशा” की नमाज़ का वक्त है। और फ़ज़्र से अभिप्रेत अरुणोदय अर्थात् पौ फटने का समय है। इस वक्त फ़ज़्र की नमाज़ अदा की जाती है। इस

प्रकार दिन और रात में पाँच नमाज़ें हुईं जो हर मुसलमान पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) कर दी गई हैं। इन समयों की तफ़सील हदीस में बयान हुई है।

फ़ज़्र में कुआन पढ़ने से मुराद फ़ज़्र की नमाज़ है और इसे “कुआन पढ़ने” से इस लिए व्यक्त किया गया है कि फ़ज़्र की नमाज़ की यह शान स्पष्ट हो जाए कि वह कुछ लम्बी क़िर्अत वाली नमाज़ है अर्थात् उस में कुछ बड़ी सूरह या ज़्यादा आयतें पढ़ी जाती हैं। फिर फ़ज़्र की नमाज़ को मशहूद (साक्षात्) इस लिए कहा गया है कि वह वक्त दिल की हुजूरी का भी होता है और फ़रिशतों की हाज़िरी का भी। अतः हदीस में आता है:-

تَشْهَدُ مَلَائِكَةُ اللَّيْلِ وَمَلَائِكَةُ النَّهَارِ-

अर्थ: इस समय रात के फ़रिशते और दिन के फ़रिशते हाज़िर होते हैं। (तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफ़सीर)

109. तहज्जुद से मुराद रात को सो कर उठने के बाद की नमाज़ है। इस का कोई समय निश्चित नहीं है अलबत्ता रात के आखिरी हिस्से का बड़ा महत्व है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत हुई कि यह नमाज़ तुम्हारे हक़ में अतिरिक्त अथवा तदधिक है अर्थात् उन फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा है जिन का वर्णन ऊपर हुआ।

110. प्रशंसा योग्य स्थान (मक़ामे-महमूद) से मुराद वह बुलन्द दर्जा है जो ज़बानों से प्रशंसा के शब्द निकालने पर बाध्य कर दे।

जिस समय यह सूरह नाज़िल हुई है इन्कार करने वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कष्ट पहुँचाने पर तुले हुए थे। उन्होंने इस बात में कोई कसर उठा न रखी थी कि आप को लोगों की नज़रों से गिरा दिया जाए। मगर अल्लाह तआला ने अपने नबी को उस समय यह मन को प्रसन्न कर देने वाली ख़ुशख़बरी सुनायी कि आप का रब आप को मक़ामे-महमूद (प्रशंसा योग्य स्थान) पर आसीन करना चाहता है। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ में साहस बढ़ाने के अलावा ऐसी थी कि उस की सत्यता दुनिया पर स्पष्ट हो कर रही। आप का व्यक्तित्व हर न्याय प्रिय व्यक्ति की नज़र में प्रशंसनीय ही ठहरा। और आप की उम्मत को जो अक़ीदत आप से है वह किसी इन्सान से नहीं। हर मुसलमान अपनी नमाज़ों में रोज़ना दरूद और सलाम का उपहार आप को भेजता है। फिर दुनिया में जो स्थान आप को प्राप्त हुआ उस से कहीं बढ़ कर स्थान आप को आखिरत में प्राप्त होगा। क्रियामत के दिन आप की प्रशंसनीय शान पूर्ण रूप से उजागर होगी। कौसर के हौज़ पर भी और अन्य अवसरों पर भी।

111. इशारा है इस बात की तरफ़ कि हिजरत का समय

निकट आ लगा है। अतः इस के कुछ ही दिनों बाद मदीना की ओर हिजरत की घटना घटी ।

इस दुआ में हिजरत की असल रूह झलकती है और यह कि निकलना भी सच्चाई और सम्मान के साथ हो और दाखिल होना भी सच्चाई और सम्मान के साथ। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत मक्का से फ़रार नहीं था और मदीना में आप का दाखिल होना एक शरणार्थी की हैसियत से नहीं था। बल्कि एक महान व्यक्ति का एक महान उद्देश्य के लिए दाखिल होना था। इसी लिए आप के साथियों ने आप का स्वागत इस प्रकार किया कि अपनी आँखें और अपने दिल बिछा दिए।

112. प्रभुत्व अथवा ग़लबा से तात्पर्य सत्ता एवं शक्ति है और सहायक की विशेषता इस बात को उजागर करती है कि ऐसा प्रभुत्व अमीष्ट है जो इस्लाम के शत्रुओं को परास्त करने में सहायक बने और सत्य को विजयी एवं स्थापित कर दे।

यह दुआ मक्का में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और आप के माध्यम से ईमान वालों को सिखाई गई थी जो इस बात की स्पष्ट दलील है कि सत्य धर्म के लिए शक्ति, प्रभुत्व एवं सत्ता की चाह एक पसंदीदा और अभीष्ट चीज़ है। मौजूदा ज़माने में जो मुसलमान इस सत्ता की चाह पर आपत्ति व्यक्त करते हैं और चाहते हैं कि इस्लाम के साथ सत्ता एवं प्रभुत्व की बात सिरे से की ही न जाए वे अपने धर्म की कल्पना कुर्आन से लेने के बजाए कहीं और से उद्धृत करते हैं।

113. यह कुर्आन की पेशिनगोई थी कि यद्यपि इस समय मक्का में सत्य मज़लूम और शक्तिहीन है लेकिन बस समझो कि सत्य विजयी हो ही गया और असत्य नष्ट हो गया। इस ऐलान को दस वर्ष भी नहीं गुज़रने पाये थे कि सन ८ हिजरी में इस्लाम मक्का में विजयी की हैसियत से दाखिल हुआ। इस अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खान-ए-काबा में रखे हुए बुतों को अपने भाले से गिराते जाते थे और यह आयत तिलावत फ़रमाते थे :

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا۔

(अर्थ: सत्य आ गया और असत्य मिट गया और असत्य तो मिटने ही के लिए था।) इस प्रकार सत्य के विजयी होने और असत्य के धराशायी होने का दृश्य लोगों ने देख लिया और कुर्आन के बयान की सच्चाई सिद्ध हो कर रही।

114. इस की व्याख्या सूरह यूनस नोट ८८ में गुज़र चुकी।

115. इस की व्याख्या सूरह यूनस नोट ९० में गुज़र चुकी ।

116. ज़ालिम से मुराद वे लोग हैं जो सत्य और न्याय की बात सुनना नहीं चाहते। ऐसे लोग कुर्आन द्वारा प्रस्तुत हक़ की दअवत पर क्यों और कैसे कान धरने लगे। ऐसे लोगों पर कुर्आन की हुज़्जत (तर्क) क़ायम हो जाती है और उन का बढ़ता हुआ विरोध उन के विनाश को और बढ़ा देता है।



ये लोग तुम से रुह के बारे में पूछते हैं। कहो रुह मेरे रब का फ़रमान है और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत थोड़ा है। और अगर हम चाहें तो जो वह्य हम ने तुम पर की है उस को छीन लें, फिर तुम हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न पाओ। मगर यह तुम्हारे रब की दया है (जो तुम्हें प्रदान हुई है) निश्चय ही उस का फ़ज़ल (अनुग्रह) तुम पर बहुत बड़ा है। (अल-कुर्आन)

83. और इन्सान को जब हम नेमत प्रदान करते हैं तो मुँह फेर लेता, और पहलू बचा कर चलता है और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो निराश होने लगता है ¹¹⁷।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَاهٍ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ۝

84. कहो हर व्यक्ति अपने तरीके पर काम करता है, और तुम्हारा प्रभु ही बेहतर जानता है कि कौन बिलकुल सही राह पर है ¹¹⁸।

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ
هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا ۝

85. ये लोग तुम से रुह के बारे में पूछते हैं। कहो रुह मेरे रब का फ़रमान है और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत थोड़ा है ¹¹⁹।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي
وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

86. और अगर हम चाहें तो जो वहय हम ने तुम पर की है उस को छीन लें, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न पाओ ¹²⁰।

وَلَكِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ
لَآتِيَنَّكَ بِهِ عَيْنًا وَكَيْلًا ۝

87. मगर यह तुम्हारे रब की दया है (जो तुम्हें प्रदान हुई है) निश्चय ही उस का फ़ज़ल (अनुग्रह) तुम पर बहुत बड़ा है।

إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۝

88. कहो यदि सारे इन्सान और जिननात मिल कर इस कुर्आन जैसी चीज़ लाना चाहें तो इस जैसी चीज़ नहीं ला सकेंगे, यद्यपि वे एक दूसरे के मददगार बन जाएँ ¹²¹।

قُلْ لَّيْنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا
الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ۝

89. हम ने इस कुर्आन में लोगों को समझाने के लिए बयान के विभिन्न तरीके अपनाए मगर अधिकतर लोगों ने इस का कोई असर कुबूल नहीं किया अगर किया तो कुफ़्र ¹²²।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۝

90. वे कहते हैं हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं जब तक कि तुम ज़मीन से हमारे लिए स्रोत प्रवाहित न कर दो।

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِكَ حَتَّى تُفْجِرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا ۝

91. या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग हो और उस में नहरें जारी कर दो।

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ تَحْتِهَا نَاجِيَةٌ
تَفْجُرُ الْإِنْهَارَ خِلَافَ جَبِّهَا ۝

92. या आसमान को हम पर टुकड़े टुकड़े कर के गिरा दो जैसा कि तुम्हारा दावा है। या अल्लाह और फ़रिश्तों को सामने ले आओ !

أَوْ سُقَطِ السَّمَاءُ كَمَا زَعَمْتُمْ عَلَيْنَا كِسْفًا وَتَأْتِي بِالدِّهَانِ
وَالْمَلَكَةِ قَبِيلًا ۝

117. अर्थात् इन्सान का हाल यह है कि वह अल्लाह की किसी नेमत को पा कर अपने परोपकारी की ओर से बेपरवाह हो जाता है और किसी कष्ट के पहुँचने पर निराशा की बातें करने लगता है। अर्थात् न वह कृतज्ञ होने का परिचय देता है और न धीरज का। कुर्आन जैसी नेमत को पा कर भी वह इसी मानसिकता का प्रदर्शन कर रहा है। हालाँकि उसे उस नेमत के प्राप्त हो जाने पर अल्लाह का कृतज्ञ एवं अनुपालक होना चाहिए था।

118. अर्थात् खुदा और आखिरत से सम्बन्धित हर व्यक्ति ने अपने लिए एक राह सुनिश्चित कर ली है और हर एक का एक धर्म है जिस से वह जुड़ा है और जिस के सही और सत्य होने का वह दावेदार है। किन्तु पूर्ण ज्ञान तो अल्लाह ही को हो सकता है कि कौन सत्य के आधार पर है। अतः उस ने रसूल का सत्य पर आधारित होना और हिदायत की राह पर होना वह्य के द्वारा तुम पर स्पष्ट कर दिया है। अब अगर तुम न मानो तो अपने कर्मों के स्वयं जिम्मेदार हो।

119. यहाँ रूह से अभिप्रेत “वह्य” है और कुर्आन में यह शब्द “वह्य” के लिए परिभाषिक शब्द के रूप में इस्तेमाल हुआ है (देखिए सूरह नहल नोट ३) और यहाँ संदर्भ दलील है। प्रश्न कुर्आन की “वह्य” से सम्बन्धित था। अर्थात् प्रश्न करने वाले उस गुप्त संदेश के आने की वास्तविकता को जानना चाहते थे उन्हें उत्तर दिया गया कि तुम्हारे लिए यह जान लेना काफ़ी है कि यह अल्लाह का फ़रमान (आदेश) है। रही इस की वास्तविकता कि यह कार्य किस प्रकार अन्जाम पाता है तो यह ग़ैब (परोक्ष) के उन रहस्यों में से है जिस का इन्सान को ज्ञान नहीं और इन्सान को उतना ही ज्ञान प्रदान किया गया है जितना कि इस परीक्षा के जीवन से गुजरने के लिए आवश्यक था। अतः जब एक महान नीति के चलते “वह्य” की स्थिति के रहस्य को मनुष्य पर पूरी तरह नहीं खोला गया तो उस की स्थिति को तफ़सील से समझने के लिए हट् आवश्यक नहीं और न इस कारण के चलते उस का इन्कार करना सही है, कि यह चीज़ हमारी जानकारी में नहीं आ सकी है। अगर रेडियाई लहरों (Cosmic Rays) से मनुष्य परिचित नहीं था तो क्या इस का मतलब यह था कि उस का कोई अस्तित्व नहीं है। फिर अगर वह्य का अनुभव हमें नहीं होता और केवल नबियों को होता है जिन की सत्यता पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता, और उन का लाया हुआ संदेश स्वयं इस बात का तर्क एवं साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि यह अल्लाह की वह्य है, तो फिर इस पर विश्वास क्यों न कर लिया जाए? क्या इस से इन्कार सच्चाई का इन्कार नहीं होगा? और सच्चाई का इन्कार कर के हम अपनी ज़िन्दगियों को ग़लत राहों पर नहीं डालेंगे?

120. अर्थात् जिस प्रकार अल्लाह ने अपने रसूल पर यह वह्य (कुर्आन) उतारी है वह चाहे तो इसे छीन भी सकता है

अर्थात् वापस भी ले सकता है। और अगर ऐसा करे तो कोई शक्ति ऐसी नहीं है जो उसे वापस दिला सके। अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि कुर्आन का अवतरण अल्लाह की ओर से हो रहा है। इस में पैगम्बर का अपना कोई हाथ नहीं है “ इस लिए इस को पैगम्बर की रचना समझना बिलकुल ग़लत बात है।

121. यह चैलेन्ज है कुर्आन का कि कोई एक व्यक्ति ही नहीं। पूरा मानव समूह, और पूरा मानव समूह ही नहीं उस के साथ सारे ज़िन्नत भी मिल कर कुर्आन जैसे ग्रंथ की रचना नहीं कर सकते। इस चैलेन्ज को चौदह सदियाँ गुजर गईं मगर कोई इस का जवाब न दे सका।

वास्तविकता यह है कि कुर्आन अल्लाह तआला का ज़िन्दा चमत्कार है रहती दुनिया तक के लिए। इस में रत्ती भर भी अतिशयोक्ति नहीं है बल्कि यह बिलकुल सच्ची बात है। इस के चमत्कारिक पक्षों के स्पष्टीकरण के लिए देखिए सूरह बक्रः नोट ३०

122. अर्थात् हम ने कुर्आन में दअवत को विभिन्न शैलियों में प्रस्तुत किया और समझने तथा नसीहत के विभिन्न तरीक़े अपनाए ताकि जो स्वाभाव जिस शैली एवं तरीक़ों से परिचित हों बात समझ लें मगर अधिकतर लोगों का हाल यह है कि वे इन्कार पर जमे हुए हैं और कोई बात समझने के लिए तैयार नहीं हैं।

मौजूदा दौर में इन्कार करने वालों का कुर्आन पर एक बड़ा एतिराज़ यह है कि उस में एक ही बात को बार बार दोहराया गया है। अर्थात् (Repetition) बहुत है। हालाँकि कुर्आन इस को समझाने और सुझाने के सिलसिले की एक बड़ी ज़रूरत बता रहा है। असल में लोग कुर्आन को साधारण पुस्तकों जैसा समझते हैं। जो किसी ज्ञान के उद्देश्य के तहत अथवा जानकारी में वृद्धि के लिए लिखी जाती हैं जब कि कुर्आन का विषय अल्लाह की हिदायत है और इस के नाज़िल होने का मक़सद लोगों की ज़िन्दगियों को बदलना और उनका सही वैचारिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण करना है। मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण के लिए आवश्यक है कि हर मोड़ पर पथ रेखाएँ स्पष्ट की जाएँ और उचित अवसर को देख कर सबक दोहराए जाएँ ताकि वह ज़ेहन में अच्छी तरह बैठ जाए। तथा अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न शैली एवं तरीक़े अपनाए जाएँ। मतलब यह कि जो कुर्आन की विशेषता थी वह इन मूर्खों की निगाह में दोष ठहरी।

ध्यान रहे कि अन्य आसमानी किताबों का भी यही तरीक़ा रहा है। अतः तौरात और ज़बूर में एक बात को कई बार दोहराया गया है। गोया आसमानी ग्रन्थों की यह संयुक्त (Common) विशेषता है।

93. या तुम्हारे लिए सोने का एक घर हो, या तुम आसमान पर चढ़ जाओ। और हम तुम्हारे चढ़ने का भी विश्वास करने वाले नहीं जब तक कि तुम हम पर एक (लिखी हुई) किताब न उतार लाओ, जिसे हम पढ़ सकें। कहो पाक है मेरा रब ! मैं इस के सिवा क्या हूँ कि एक रसूल (पैगाम पहुँचाने वाला) मनुष्य ¹²³।

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرٍ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَن نُّؤْمِنَ
لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنْزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرُؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ
كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٣﴾

94. और लोगों को ईमान लाने से, जब कि हिदायत उन के पास आ गई, इसी चीज़ ने रोका, कि कहने लगे क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है ? ¹²⁴

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ
إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٤﴾

95. कहो अगर ज़मीन में फ़रिश्ते इत्मीनान से चल फिर रहे होते तो हम उन के पास किसी फ़रिश्ता ही को रसूल बना कर भेजते ¹²⁵।

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَّبَشُرُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا
عَلَيْهِم مِّن السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾

96. कहो अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है। वह अपने बन्दों से बाख़बर है और उन्हें देख रहा है।

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

97. जिस को अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिस को वह गुमराह कर दे तो ऐसे लोगों के लिए तुम उस के सिवा कोई मददगार न पाओगे। और हम क़ियामत के दिन इन को इन के मुँह के बल उठाएंगे, अन्धे, गूँगे और बहरे ¹²⁶। इन का ठिकाना जहन्नम होगा। जब कभी उस की आग धीमी होने को होगी हम उस को और भड़का देंगे ¹²⁷।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ
أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ وَيَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمِّيًّا
وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّا وَلَهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾

98. यह बदला होगा इस बात का कि उन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया और कहा क्या जब हम हड्डियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो कर रह जाएंगे तो हम को नए सिरे से पैदा कर के उठाया जाएगा ? ¹²⁸

ذَٰلِكَ جَزَاءُ هُم بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا ءَأِذَا كُنَّا عِظَامًا
وَرُقَاقًا ءَإِنَّا الْمُبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

123. यह उन की लंबी चौड़ी माँगों का संक्षिप्त उत्तर है। मतलब यह है कि मैं ने खुदा होने का दावा कब किया है जो तुम मुझ से यह माँग करते हो। अल्लाह हर शिर्क से पाक है। मैं ने अपने को केवल रसूल की हैसियत से पेश किया है, अतः तुम मेरे पैगाम को जाँचो और परखो। मोज़्जे और चमत्कार दिखाना रसूल के बस में नहीं है बल्कि अल्लाह के अधिकार एवं वश में है।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इब्राहीम नोट २०)

124. अर्थात् लोगों की अपनी धारणा एवं कल्पना यह है कि ज़मीन पर चलने फिरने वाला आदमी पैगम्बर कैसे हो सकता है। अगर सचमुच अल्लाह को अपना पैगम्बर भेजना होता तो वह फ़रिश्ते को पैगम्बर बना का भेजता। इस ग़लत धारणा के चलते वे एक मनुष्य के पैगम्बर होने का इन्कार करते हैं और नतीजा यह कि पैगम्बर पर नाज़िल होने वाली हिदायत (मार्ग दर्शन) से वन्चित रहेत हैं।

125. यद्यपि ज़मीन पर फ़रिश्ते का आना जाना लगा रहता है। किन्तु ज़मीन पर इत्मीनान से चलने फिरने वाली रचना जिसे परीक्षा के मैदान में खड़ा किया गया है, मनुष्य ही है, इस लिए मनुष्यों के वास्ते किसी मनुष्य ही को रसूल बना कर भेजना अत्यंत नीतिपूर्ण एवं उचित बात है क्यों कि रसूल

कि ज़िन्दगी एक नमूना होती है और वह अनुसरण एवं अनुपालन योग्य होता है। यदि फ़रिश्तों को रसूल बना कर भेजा जाए तो उस की ज़िन्दगी किस तरह से नमूना होगी और उस का किस प्रकार अनुपालन होगा?

126. इस की व्याख्या नोट १०२ में गुजर चुकी है।

127. अर्थात् जहन्नम की आग कभी बुझने वाली नहीं, ज़रा भी धीमी होने को हुई तो उसे और भड़का दिया जाएगा। वैज्ञानिक कहते रहते हैं सूरज में ऐसे धमाके होते रहते हैं जिस के कारणवश उस का तापमान बाक़ी रहता है। यह तो है इस भौतिक जगत का हाल। और हम आख़िरत को इस पर परख नहीं सकते और न उसे समझने के लिए इसे आदर्श बना सकते हैं। अतः अगर जहन्नम की आग के हमेशा भड़कते रहने की ख़बर हमें कुर्आन देता है तो इस में आश्चर्य की क्या बात है।

128. मनुष्य इस बात का ज़िम्मेदार है कि अल्लाह की निशानियों को माने और आख़िरत अर्थात् (परलोक) पर ईमान लाए। इस से इन्कार कर देने का अर्थ अल्लाह से इन्कार अथवा कुफ़्र एवं बगावत वा उद्दंडता के हैं। और जहन्नम का यह कठोरतम दण्ड इसी कुफ़्र और बगावत का ठीक ठीक बदला है।



99. उन्होंने यह न सोचा कि अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए, इन जैसों को दोबारा पैदा करने पर ज़रूर सामर्थ्यवान है ¹²⁹। उस ने इन के लिए एक समय सुनिश्चित कर रखा है जिस में कोई संदेह नहीं, मगर ज़ालिमों के लिए इन्कार के सिवा कोई बात भी स्वीकार्य नहीं ¹³⁰।

وَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ④٩

100. कहो अगर मेरे रब की रहमत के खज़ाने तुम्हारे क़ब्जे में होते तो तुम अवश्य ही ख़र्च हो जाने के भय से उन्हें रोक रखते। इन्सान बड़ा ही तंग दिल सिद्ध हुआ है ¹³¹।

قُلْ لَّوِ انْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَّامْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ⑤٠

101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी थीं ¹³²। तुम बनी इस्राईल से पूछ लो, जब वह उन के पास आए तो फिरऔन ने कहा, ऐ मूसा मैं समझता हूँ कि तुम पर जादू किया गया है। ¹³³

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَمَسَّاهُ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِفْجَاءً ثُمَّ قَالُوا لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَىٰ مَسْحُورًا ⑤١

102. उन्होंने ने (मूसा ने) जवाब दिया तुम अच्छी तरह जानते हो कि ये बसीरत की (सूझ बूझ बढ़ाने वाली) निशानियाँ उसी ने उतारी हैं जो आसमानों और ज़मीन का रब है ¹³⁴। और मैं समझता हूँ कि ऐ फिरऔन ! तुम ने अपने को हलाकत (विनाश) में डाल दिया।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُمْ أَنزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَهُ الْآرَبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَافِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكُمْ يُفِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ⑤٢

103. फिर उस ने चाहा कि उन के क़दम ज़मीन से उखाड़ दे तो हम ने उस को और उस के साथियों को एक साथ डुबो दिया ¹³⁵।

فَإِذَا دَانَ يَسْتَفِرُّهُمْ ⑤٣
فَاغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ ⑤٤

104. और इस के बाद बनी इस्राईल से कहा कि तुम ज़मीन में बसो ¹³⁶। फिर जब आखिरत का वादा (सामने) आएगा तो हम तुम सब को जमा कर के ला उपस्थित करेंगे ¹³⁷।

وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَ بَنِي إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ⑤٥

105. हम ने इस को हक़ (सत्य) के साथ नाज़िल किया है और यह हक़ ही के साथ नाज़िल हुआ है ¹³⁸। और हम ने तुम को इसी लिए भेजा है कि ख़ुशख़बरी सुनाओ और सावधान करो। ¹³⁹

وَالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ⑤٦

129. अर्थात् इतनी मोटी बात इन मुन्किरीन की समझ में नहीं आती कि जो हस्ती आसमानों और ज़मीन की रचयता हो उस के लिए मनुष्य को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है।

130. अर्थात् क्रियामत का प्रकट होना अथवा उस का आना संदेह से परे, बिल्कुल सुनिश्चित है और अत्यंत ठोस तर्कों एवं दलीलों से इसे स्पष्ट किया जा चुका। मगर जो लोग ग़लत हैं वे इन्कार पर इस तरह अड़े हैं कि कोई बात और कोई हुज्जत (तर्क) भी उन के लिए स्वीकार्य नहीं है।

131. यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि आखिरत रहमत का तक्राज़ा है। उस की रहमत और उस की दया अथाह है। और खर्च करने से उस के खज़ानों में कोई कमी नहीं होती। वह चाहता है कि अपने सच्चे बन्दों को अपनी दया और रहमत से सदा सर्वदा इस तरह नवाज़े कि वे निहाल हो जाएँ। ज़न्नत उस ने इसी लिए बनाई है कि उस की दया और रहमत का सबूत हो और मनुष्य उस से लाभान्वित हो। अतः मनुष्य का आखिरत से इन्कार और ज़न्नत को असंभव या कोई दूर की बात समझना अल्लाह की दया एवं रहमत के गुणों की सरासर अवहेलना है। सच मानिए तो इन्सान बड़ा ही तंगदिल और कंजूस सिद्ध हुआ है। इस लिए अल्लाह की रहमत और उस की दया का यह फैलाव उस के लिए अस्वीकार्य हो गया है। और इस इन्कारियों का हाल यह है कि अगर अल्लाह अपनी रहमत एवं दया के भण्डारों का इन्हें स्वामी बना देता तो ये इस भय से कि कहीं यह समाप्त न हो जाए, खर्च करने और लोगों को इस से लाभ पहुँचाने से हाथ रोक लेते। तो क्या ये खुदा को भी अपने ही जैसा समझ रहे हैं? क्या उस की रहमत एवं दया के भण्डारों में कोई कमी होगी अगर वह अपने सच्चे बन्दों के लिए आखिरत में उस के दरवाज़े खोल देता है? अगर ऐसी धारणा बनाना अथवा ऐसा समझना सही नहीं है तो फिर समझ लो कि ज़न्नत उस की रहमत का उचित्तम एवं तर्क संगत तक्राज़ा है और इस के लिए दूसरा जीवन आवश्यक है।

132. ये नौ चमत्कार जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथों प्रकट हुए थे उन का बयान सूरह आराफ़ में गुज़र चुका। (१) लाठी का साँप बन जाना, (२) यदे-बैज़ा अर्थात् हाथ का चमकना, (३) सूखा, (४) पैदावार में कमी, (५) तूफ़ान, (६) टिट्टियाँ, (७) मेंढक, (८) खून, (९) जूँएँ। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १६३, १६४, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१,

133. अर्थात् इस्त्राईल की संतान (बनी इस्त्राईल) को अच्छी तरह मालूम है कि मूसा के नौ नौ चमत्कारों को देख लेने के बाद भी फ़िरऔन ईमान नहीं लाया था। बल्कि मूसा को यह कह कर झुठलाया था कि उन पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिए वह नुबुव्वत की बातें कर रहे हैं। फ़िरऔन की इस हठधर्मी

को मक्का के बहुदेववादियों के सामने जो कि मोज़ज़ो एवं चमत्कारों की माँग कर रहे थे मिसाल के तौर पर पेश किया जा रहा है ताकि वे इस अनावश्यक माँग से बाज़ आ जाएँ।

134. अर्थात् ये निशानियाँ मनुष्य की आँखें खोल देने के लिए काफ़ी हैं और इस बात का स्पष्ट सबूत है कि वे कायनात (संचालक प्रभु) की ओर से प्रकट हुई हैं। दूसरे शब्दों में इन के चमत्कार (मोज़ज़ा) होने में किसी संदेह की गुन्जाइश नहीं।

135. बनी इस्त्राईल अर्थात् इस्त्राईल की संतान देश छोड़ कर जाना चाहते थे किन्तु फ़िरऔन उन्हें इस की अनुमति नहीं दे रहा था। अलबत्ता बाद में यह देख कर कि मूसा और बनी इस्त्राईल के चलते एक न एक विपदा से उसे दोचार होना ही पड़ता है, देश से बे दखल करना चाहा। परन्तु परिणाम यह निकलता कि फ़िरऔन को खुद ही अपने देश से बेदखल होना पड़ा। वह और उस के साथी समुद्र में डूब गए।

कुरैश भी इस बात पर तुले थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम मक्का से उखड़ जाएँ। मगर उन्होंने इस से कोई सबक नहीं लिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात के लिए विवश किया कि आप मक्का छोड़ दें। नतीजा यह कि उन को खुद ही मक्का से निकल जाना पड़ा। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में विजय पताका फ़हराते हुए दाखिल हुए।

136. मुराद सीरिया और फ़िलस्तीन की सरज़मीन है क्यों कि मिस्र छोड़ने के बाद बनी इस्त्राईल त्या की घाटी हो कर अपने पैतृक देश पहुँच गए थे।

137. अर्थात् यह न समझो कि दुनिया में इन्हें हमेशा के लिए रहना है, बल्कि याद रखो कि असल घर आखिरत का घर है और जब क्रियामत बरपा होगी तो हम तुम सब को अपने समक्ष जमा करेंगे।

मगर इस सबक को बनी इस्त्राईल भूल गए। अतः मौजूदा तौरात में इस का कोई वर्णन नहीं। उन्होंने ने याद रखा तो केवल इस बात को कि उन्हें एक ऐसा देश मिला है जिस में दूध और शहद की नहरें बहती हैं।

138. बयान का सिलसिला कुर्आन से सम्बन्धित था। बीच में मोज़ज़े से सम्बन्धित मूसा और फ़िरऔन का क्रिस्सा आया, अब फिर बयान का रुख कुर्आन की तरफ़ मुड़ गया है।

139. अर्थात् कुर्आन सरासर हक़ है और हर प्रकार की मिलावट से पाक। इस में न शैतान हस्तक्षेप कर सका है और न किसी और की तरफ़ से इस में कमी बेशी हो सकी है। बल्कि जिस तरह अल्लाह तआला ने नाज़िल करना चाहा उसी तरह वह पैगम्बर पर नाज़िल हुआ था। उस ने तुम्हारे सामने पूरी अमानतदारी के साथ प्रस्तुत कर दिया।

106. और हम ने कुर्आन को अलग अलग हिस्सों के रूप में नाज़िल किया है ताकि लोगों को तुम ठहर ठहर कर सुनाओ। और हम ने इस को थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है ¹⁴⁰।

وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ
وَنُزْلًا مُنْزِلًا ۝۱۰

107. कहो तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ। जिन लोगों को इस से पूर्व ज्ञान दिया गया है ¹⁴¹। उन्हें जब यह सुनाया जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर जाते हैं ¹⁴²।

قُلِ الْإِنشَاءِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۝۱۱

108. और पुकार उठते हैं कि पाक है हमारा रब । हमारे रब का वादा तो इसी लिए था कि पूरा हो कर रहे ¹⁴³।

وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا مَفْعُولًا ۝۱۲

109. और वे ठोड़ियों के बल रोते हुए सज्दे में गिर जाते हैं और इस से उन का ख़ुशू (विनम्रता) और बढ़ जाता है ¹⁴⁴।

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۝۱۳

110. कहो तुम अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर ¹⁴⁵, जिस नाम से भी पुकारो। उस के लिए सब अच्छे ही नाम हैं ¹⁴⁶। और तुम अपनी नमाज़ को न बहुत बुलन्द अवाज़ से पढ़ो और न बिलकुल धीमी आवाज़ से। बल्कि इन के बीच की सूरत अपनाओ ¹⁴⁷।

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَدْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُوا بِصَلَاتِكُمْ وَلَا تَخَافُتْ بِهَا
وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝۱۴

111. और कहो सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है ¹⁴⁸। जिस ने अपने लिए न कोई औलाद बनाई और न बादशाही में कोई उस का साझीदार है और न वह बेबस है कि कोई उस का सहायक हो ¹⁴⁹। और उस की बड़ाई बयान करो जैसी बड़ाई बयान करना चाहिए ¹⁵⁰।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِيلِ وَكَبِيرًا ۝۱۵

140. यह उस एतिराज का जवाब है कि कुआन को एक साथ पूरी किताब की सूरत में क्यों नहीं उतारा गया। फ़रमाया कुआन को आयतों और सूरों के रूप में थोड़ा थोड़ा उतारा गया है ताकि पैगम्बर लोगों को ठहर ठहर कर सुनाए।

जो लोग कुआन के पहले संबोधी थे उन के लिए यह रियायत ज़रूरी थी कि पैगम्बर की दअवत के नतीजे में जिस तरह के हालात पैदा हों उन की मुनासिबत से हिदायत की राह भी स्पष्ट होती चली जाए। इस तरह लोगों के लिए दअवत को समझना भी आसान हो जाए और हिदायत की राह पर चलना भी।

141. मुराद वे अहले-किताब (अर्थात् यहूदी एवं ईसाई) हैं जो अल्लाह की किताब का ज्ञान भी रखते थे और नेक भी थे। वे कुआन को सुनते ही समझ गए कि यह अल्लाह का कलाम है। और फिर उन की वह मनोदशा हुई जो आगे बयान हुई है।

142. ठोड़ियों का शब्द मुँह के लिए इस्तेमाल हुआ है। मतलब यह है कि वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं। इस में यह इशारा भी है कि अहं करने वाले तो अपनी ठोड़ियाँ ऊपर उठाते हैं किन्तु नेक और मान लेने वालों का हाल यह है कि वे अपनी ठोड़ियाँ अल्लाह के समक्ष झुकाते हुए नतमस्तक होते हैं।

143. अर्थात् तौरात और इन्जील में जिन गुणों एवं विशेषताओं वाले रसूल के भेजने का वादा किया गया था वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पूरा हो गया।

144. अर्थात् कुआन सुन कर उन पर भय और रुदन छा जाती है। और बरसती आखों के साथ वे सज्दे में गिर जाते हैं। इस प्रकार कुआन का सुनना उन के भय (खुशू) में वृद्धि कर देता है।

उन का पहला सज्दा जिस का वर्णन ऊपर आयत १०७ में हुआ, कुआन के नाज़िल होने की खुशी में था और यह दूसरा सज्दा उस भय और रुदन के फलस्वरूप है जो कुआन सुन कर दिलों में पैदा हो जाता है।

यह सज्दे की आयत है इस लिए इस की तिलावत पर सज्दा कर लेना चाहिए।

145. रहमान शब्द की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट ५

कुआन में रहमान शब्द अल्लाह के लिए इस्मे सिफ़त (Substances Noun) के रूप में भी इस्तेमाल हुआ है और इस्मे-इल्म (Proper Noun) के रूप में भी। इस लिए यह अल्लाह के साथ ख़ास है किसी और के लिए

इस्तेमाल नहीं किया जाता।

कुआन का इन्कार करने वाले मुन्किरीन ने एक व्यर्थ की आपत्ति यह की थी कि तुम ख़ुदा के लिए अल्लाह और रहमान दो शब्द इस्तेमाल करते हो जिस से प्रतीत होता है कि दो ख़ुदा हैं जब कि हम अल्लाह से ही भिन्न हैं रहमान से नहीं। उन की इस आपत्ति का जवाब दिया गया है कि ख़ुदा एक ही है उसे अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर इस से उस की तौहीद अर्थात् उस के अकेले होने में कोई अन्तर नहीं पड़ता। मतलब यह है कि तुम शब्दों के दौंव पेंच में उलझ और उलझा रहे हो जब कि मतलब और वास्तविकता एक ही है।

146. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २७८ और २७९

147. चूँकि अल्लाह को पुकारने की बेहतरीन सूरत नमाज़ है। इस लिए यहाँ हिदायत की गई कि इस को गंभीरता के साथ और पूरे मान के साथ अदा किया जाए। न तो नमाज़ में इतनी ऊँची आवाज़ हो कि निरादर सा लगे और न इतनी धीमी हो कि पीछे खड़े मुक्तदियों को जो क़िरअत सुनना हो वे सुन न सकें। सही तरीक़ा यह है कि अपनी आवाज़ को सन्तुलित रखा जाए।

ध्यान रहे कि यहाँ सिरीं और जहरी (अर्थात् आवाज़ से तथा ख़ामोशी से पढ़ने वाली) नमाज़ की बहस नहीं है बल्कि यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जो नमाज़ें आवाज़ से पढ़नी हैं उन में दोनों ही बातों का ध्यान रखा जाए। न तो आवाज़ इतनी ऊँची की जाए कि नमाज़ की प्रतिष्ठा एवं उस की मर्यादा को चोट पहुँचे और न ही इतनी धीमी की पीछे खड़े मुक्तदी सुन न सकें। इन दोनों इन्तिहाओं से बचते हुए बीच का और संतुलित लहजा अपनाएँ। ताकि नमाज़ का सुकून भी बाक़ी रहे और पीछे नमाज़ पढ़ने वाले भी सुन सकें।

148. यह ख़ात्मा-ए-कलाम अथवा उपसंहार है। सूरह की शुरुआत अल्लाह के लिए पाकी (सुब्हान) से हुई थी और ख़ात्मा उस की प्रशंसा (हम्द) पर हो रही है।

149. इस आयत में शिर्क (बहुदेववाद) की तीनों सूरतों का खण्डन किया गया है जिस में आमतौर पर विभिन्न धर्मों के मानने वाले लिप्त हैं। प्रथम, उस के बेटा या सन्तान होने की धारणा, द्वितीय उस के राज्य एवं सत्ता में किसी के साझीदार होने की धारणा और तृतीय उस के सहायक होने की धारणा।

सहायक की आवश्यकता उस को होती है जो बेबस है। अल्लाह तआला इस दोष से मुक्त है और वह अथाह प्रभुत्व एवं सामर्थ्यवान है फिर उस को सहायकों की क्या आवश्यकता ?

150. अर्थात् उस की ऐसी बड़ाई बयान करो कि उस की बड़ाई और महानता पूरी तरह स्पष्ट हो जाए। और बहुदेववादी उस से जो दोष और कमजोरीयों को सम्बद्ध बताते हैं उस के मुकाबले में उस की किबरियाई (बड़ाई) की शान झलके बल्कि स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

अल्लाहु अकबर (अल्लाह सब से बड़ा है) का कलिमा जो अज्ञान और नमाज़ में दोहराया जाता है अल्लाह की इसी बड़ाई और महानता तथा उस की शाने-किबरियाई की स्वीकृति एवं अभिव्यक्ति है।



१८. सूरह अल कहफ़

नाम: आयत ९ में अस्हाबे कहफ़ का किस्सा बयान हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-कहफ़” है।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आखिरी दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: वृत्तांत एवं वास्तविकताओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मरने के बाद मिलने वाले दूसरे जीवन का विश्वास पैदा करना है। पिछली सूरह में ख़ास तौर से यहूदियों को सचेत किया गया था। इस सूरह में ईसाईयों को ख़ास तौर से सावधान किया गया है। वह इस परिप्रेक्ष्य में है कि उन्होंने अल्लाह का बेटा होने का अक़ीदा गढ़ लिया जिस के कारण वे अल्लाह का साज़ीदार ठहराने के अपराधी हुए और आखिरत की धारणा भी लुप्त हो कर रह गई।

कलाम की तरतीब: आयतें १ से ८ भूमिका के तौर पर हैं जिन में कुआन उतारे जाने का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है।

आयत ९ से २६ में अस्हाबे कहफ़ का वृत्तांत बयान हुआ है जो दूसरा जीवन मिलने का जीता जागता उदाहरण भी है और जिस में ख़ुदा की राह में हिज़रत से सम्बन्धी मार्ग निर्देश भी।

आयत २७ से ३१ में ईमान वालों की क़द्र की गई है तथा उन का उत्साह बढ़ाया गया है और उन लोगों को जो दुनिया परस्ती तथा मोह माया में लीन हैं, उन के हाल पर छोड़ देने की हिदायत की गई है।

आयत ३२ से ४४ में दो व्यक्तियों का किस्सा बयान किया गया है जिन में से एक दुनिया ही की सफलता को वास्तविक सफलता समझता था और दूसरा व्यक्ति विश्वास रखता था कि आखिरत (परलोक) की सफलता ही असली सफलता है। फिर दुनिया की सफलता को वास्तविक सफलता

समझने वाले को किस प्रकार मलाल का मुँह देखना पड़ा।

आयत ४५ से ४९ में दुनिया की थोड़ी सी ज़िन्दगी की बहार को एक उदाहरण के माध्यम से क्रियामत के दिन की पेशी का नक़्शा खींचा गया है और अच्छे कर्मों को फलदायक और इनाम योग्य बताया गया है।

आयत ५० से ५९ में आदम और इब्लीस का किस्सा संक्षिप्त रूप से बयान करते हुए बहुदेववादियों की कुबुद्धि और कुआन से सम्बन्धित उन के रवैये पर पकड़ की गई है।

आयत ६० से ८२ में हज़रत मूसा के सफ़र की घटनाएँ प्रस्तुत की गई हैं जिस में अल्लाह की हिकमत के कुछ रहस्य बेनिक्काब हो गये हैं जिस से यह सीख मिलती है कि दुनिया में जो असंख्य घटनाएँ घटित होती हैं उन के केवल बाह्य पक्ष को देख कर कोई निर्णय करना अथवा निर्णायक मत बनना सही नहीं। इन घटनाओं के पीछे अल्लाह की हिकमतें (नीती) और मसलहतें निहित होती हैं जिन का पता इन्सान को नहीं होता। और वह अपने अपूर्ण एवं त्रुटिपूर्ण ज्ञान और जल्दबाज़ी के कारण उन का गलत मतलब लेता है। घटनाओं का यह पक्ष कि उस में कैसे कैसे भेद निहित होते हैं, आखिरत से सम्बन्धित अति महत्वपूर्ण है।

आयत ८३ से १०१ में एक प्रश्न के उत्तर में जुलक़रनैन का वृत्तांत बयान हुआ है। इस वृत्तांत में उस के चरित्र का यह पक्ष विशेष रूप से किया गया है कि किस प्रकार उस ने अपने राज्य को ख़ुदा से डरते हुए और आखिरत की जवाबदेही के एहसास के तहत चलाया।

आयत १०२ से ११० ख़ात्मे (उपसंहार) की आयतें हैं जिन में अल्लाह का साज़ीदार ठहराने तथा परलोक का इन्कार करने पर चेतावनी है।



१८. सूरह अल कहफ़

आयतें : 110

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उस में कोई टेढ़ नहीं रखी ¹।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۝١

2. ठीक और सीधी किताब ² ताकि वह (लोगों को) कठोर यातना से आगाह कर दे जो उस की ओर से पहुँचेगा। और ईमान लाने वालों को जो अच्छे कर्म करते हैं खुशखबरी दे कि उन के लिए अच्छा बदला है ³।

قَيِّمًا لِّلَّذِينَ رَبَّاسًا شَدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُنَبِّئُ الْمُؤْمِنِينَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝٢

3. जिस में वे हमेशा रहेंगे।

مَا كُتِبَ فِيهِ أَبَدًا ۝٣

4. तथा उन लोगों को सावधान कर दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपने लिए औलाद बनाई है ⁴।

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝٤

5. इस बारे में न उन को कोई ज्ञान है और न उन के बाप दादा को था ⁵। बड़ी सख्त बात है जो इन के मुँह से निकलती है ⁶। मात्र झूठ है जो वे बक रहे हैं।

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً
تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۝٥

6. (ऐ पैगम्बर !) शायद तुम इन के पीछे अपनी जान, मारे अफ़सोस के विनष्ट कर दो यदि वे इस कलाम पर ईमान नहीं लाए ⁷।

فَلَعَلَّكَ بَاحِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوا
بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ۝٦

7. वास्तव में ज़मीन पर जो कुछ है उस को हम ने उस की शोभा बनाया ताकि लोगों को आजमाएँ कि इन में बेहतर अमल करने वाला कौन है ⁸।

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ
أَحْسَنُ عَمَلًا ۝٧

8. और जो कुछ उस पर है उस को हम चटियल मैदान बना देने वाले हैं ⁹।

وَأَنَّا لَجَعَلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝٨

1. टेढ़ न होने का मतलब यह है कि कुर्आन में कोई बात भी ऐसी नहीं जो बुद्धि और स्वभाव तथा न्याय एवं सत्यता से हटी हुई हो। यह उलझाव पैदा करने वाले फ़लसफ़ियाना ऐंच पेंच, विपरीत भाव और व्यर्थ की बातों से बिल्कुल पवित्र है। यही कारण है कि अच्छे, भले एवं न्याय प्रिय लोगों के दिलों में कुर्आन आसानी से उतर जाता है। इस पाये की किताब उतारे जाने पर इस का रचयिता (खुदा) प्रशंसा एवं गुणगान का अधिकारी है। इस किताब का सौंदर्य इस के रचयिता के सौंदर्य पर और इस का कमाल इस के रचयिता के कमाल पर तर्क प्रस्तुत करता है। अपने एक ऐसे बन्दे पर इस का अवतरण जो प्रचलित शिक्षा से बिल्कुल कोरा था उस के हिकमत के कमाल की खुली निशानी है।

कुर्आन की इस प्रमुख विशेषता का अन्दाज़ा आदमी को उस समय होता है जब वह दूसरे धर्मों के ग्रंथों को देखता है और यह देख कर परेशान हो जाता है कि उन में खुदा और मज़हब के बारे में कैसी उलझी हुई परस्पर विरोधी और फ़लसफ़ियाना ऐंच पेंच वाली बातें प्रस्तुत की गई हैं जब कि कुर्आन की शिक्षाएँ अत्यंत सादा और दिलों में उतरने वाली हैं।

2. अर्थात् सीधी राह दिखाने वाली और सही और ठीक ठीक शिक्षाओं पर आधारित।

3. यहाँ कुर्आन को उतारने के दो महत्वपूर्ण उद्देश्य बयान किए गए हैं। एक यह कि ग़फ़लत में डूबी हुई इन्सानियत को अल्लाह के अज़ाब से आगाह करना और दूसरे ईमान और सुकर्मों का जीवन अपनाने वालों को अच्छे बदले की खुशख़बरी सुनाना। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये दो गुना दायित्व निभाया। अब आप के प्रतिनिधित्व में इस उम्मत पर भी इन दोनों कामों की ज़िम्मेदारी आयद होती है। कुर्आन जहाँ मुसलमानों को समझाता है वहीं पूरी इन्सानियत को भी सचेत करता है।

4. अर्थात् उन लोगों को ख़ास तौर से सावधान कर दे जो अल्लाह के लिए औलाद होने के क़ायल हैं। संकेत विशेष रूप से ईसाइयों की ओर है जो हज़रत मसीह को खुदा का बेटा बताते हैं। वैसे यह चेतावनी सामान्यतः उन सब के लिए है जो किसी न किसी रूप में यह धारणा रखते हैं कि खुदा संतान रखता है। मिसाल के तौर पर बहुदेववादियों का फ़रिशतों को खुदा की बेटियाँ कहना।

5. जो लोग खुदा के लिए बेटा या संतान होने का दावा करते हैं उन के पास इस दावे के पीछे कोई ज्ञान पर आधारित तर्क नहीं है। खुदा के बारे में मनुष्य को ज्ञान या तो उस विवेक के आधार पर होता है जो मनुष्य के स्वभाव में समर्पित है या उन निशानियों के द्वारा होता है जो अल्लाह तआला ने कायनात के अन्दर, आदमी के अपने अन्दर रखा है या फिर वह्य के द्वारा जो नबियों पर वह भेजता है और जिस का खुला एवं स्पष्ट रूप

अल्लाह की किताब है। इस के अलावा अल्लाह के बारे में जानने का मनुष्य के पास कोई साधन नहीं। इन तीनों साधनों में से कोई साधन भी ऐसा नहीं है जिस से इस बात का अनुमोदन होता है कि खुदा संतान रखता है। बल्कि हर साधन इस का खण्डन करता है। फिर किस बुनियाद पर लोग खुदा के लिए औलाद या खुदा का बेटा होने का दावा करते हैं? रही उन की यह बात कि यह धारणा तो बाप दादा से चली आ रही है तो यह इस बात का सबूत नहीं है कि खुदा के औलाद है। बल्कि यह इस बात का सबूत है कि इन के बाप दादा भी वैसे ही जिहालत एवं मूर्खता की बातें करते थे जैसे ये कर रहे हैं।

6. अर्थात् खुदा के बारे में औलाद की बात करना लोग आसान समझते हैं और किसी खोज बीन की आवश्यकता नहीं महसूस करते हालाँकि किसी भी ऐब और कमज़ोरी को अल्लाह से जोड़ना संगीन पाप है।

7. इस से अन्दाज़ा होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि रसल्लम अपनी क़ौम के बड़े शुभचिन्तक थे और उन के ईमान न लाने का आप को कितना सदमा था। आप एक सहानुभूति रखने वाले इन्सान थे इस लिए यह किस प्रकार ग़वारा कर सकते थे कि आप की क़ौम अज़ाब से दो चार हो जाए वह अल्लाह की यातना में घिर जाए। मगर समझाने और सावधान करने के बाद भी लोग अपने को आग के हवाले करना चाहते हों तो उन पर अफ़सोस करने से क्या हासिल? इसी लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि उन लोगों के सिलसिले में तुम अपना दायित्व पूरा कर चुके हो अब अगर ये नहीं मानते तो इन के ईमान न लाने के ग़म में न घुलो। इस में जहाँ रसूल की अपनी क़ौम से सहानुभूति की अभिव्यक्ति है वही ईमान न लाने वालों पर टूट पड़ने वाला प्रकोप भी है कि ये इस योग्य नहीं हैं कि इन्हें समझाया जाए।

8. अर्थात् दुनिया है तो शोभायमान परन्तु वह हमेशा के लिए नहीं है। और इस को शोभायमान एवं आकर्षक इस लिए बना दिया गया है कि मानव जाति की परीक्षा हो कि कौन इस की चकाचौंध में फँस कर दुनिया का पुजारी बनता है और कौन बुद्धि एवं चिन्तन तथा धैर्य से काम ले कर और खुदा के मार्ग निर्देशानुसार अपने को अच्छा इन्सान सिद्ध कर दिखाता है। और इस दूसरी जाति अथवा दूसरे प्रकार के लोगों को ही हमेशा रहने वाली जन्नत में बसाया जाएगा।

9. अर्थात् क्रियामत के दिन इस ज़मीन की सारी बहार समाप्त होकर रह जाएगी। मनुष्य इस पर जो कुछ निर्माण कार्य करता रहा वह सब मिट्टी में मिल जाने वाला है। क्रियामत का धमाका मनुष्य की सारी भौतिक और सांस्कृतिक तरक्कियों को मलियामेट करके रख देगा। फिर ऐसी चीज़ को लक्ष्य बनाने से क्या लाभ?

9. क्या तुम समझते हो कि कहफ़ और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से कोई अजीब चीज़ थे ?¹⁰

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ
الْيَتِيمَانِ ۝٩

10. जब कुछ नवजवानों ने गुफ़ा में पनाह ली¹¹ और दुआ की ऐ हमारे रब ! अपने पास से हम पर दया उतार और इस मामले में हमारी रहनुमाई का सामान कर दे¹²।

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا نَمُوتُ
لَكَ دُنُكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝١٠

11. तो हम ने गुफ़ा में उन के कान कई साल तक के लिए थपक दिए¹³।

فَضْرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝١١

12. फिर हम ने उन को उठाया ताकि देखें दोनों गिरोहों में से कौन उन के ठहरने की अवधि की गिनती सही बताता है¹⁴।

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَى لِمَالِهِمَا أَامَدًا ۝١٢

13. हम इन का वृत्तांत तुम को ठीक ठीक सुनाते हैं¹⁵। वे कुछ नौजवान थे। जो अपने रब पर ईमान लाए थे। और हम ने उन की हिदायत में वृद्धि कर दी थी¹⁶।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُمْ بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ
وَزِدْنَا لَهُمُ هُدًى ۝١٣

14. और उन के दिलों को हम ने मज़बूत किया जब कि वे उठे और कहा कि हमारा रब तो वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। हम उस के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य एवं उपास्य) को हरगिज़ नहीं पुकारेंगे। अगर हम ऐसा करें तो अत्यंत ग़लत बात कहेंगे।¹⁷

وَرَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ مَا لَقَدْ كُنَّا إِذْ أَشْطَطَا ۝١٤

15. यह हमारी क़ौम है जो उस को छोड़ कर दूसरे माबूद (पूज्य) बना बैठी है¹⁸। ये लोग उस की हिमायत में कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं लाते।¹⁹ फिर उस से बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे²⁰।

هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَوْ لَآ يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ
بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝١٥

16. अब जब कि तुम उन से और उन के माबूदों से जिन की वे अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हैं अलग हो गए हो तो गुफ़ा में पनाह लो।²¹ तुम्हारा रब अपनी दयालुता को तुम पर विस्तीर्ण करेगा और तुम्हारे इस काम के लिए साधन और सामाग्री मुहैया करेगा²²।

وَإِذَا عَزَلْتَهُمْ هُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوَى إِلَى الْكَهْفِ
يَنْسُرُكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ
وَيَهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۝١٦

10. अस्हाबे-कहफ़ (गुफ़ा वालों) का वृत्तांत ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों से सम्बन्ध रखता था लेकिन यह इतना मशहूर हो गया था कि मक्का वाले भी जानने लगे थे। और इस को एक अद्भुत घटना समझते थे। चूँकि यह घटना मनुष्य के दोबारा उठाये जाने का एक स्पष्ट उदाहरण है इस लिए कुआन ने इस के ज़रूरी पक्षों को उजागर किया है। उन ही अरब वासियों को संबोधित कर के प्रश्न उठाया कि क्या तुम अस्हाबे-कहफ़ के वृत्तांत को अद्भुत समझते हो हालांकि यह घटना अल्लाह की कुदरत की बहुत सी निशानियों में से एक निशानी थी जो मनुष्य के दोबारा उठाए जाने पर तर्क एवं साक्ष्य प्रस्तुत करती है। तुम घटना के बाह्य पक्षों को देख कर हैरत में पड़ गए मगर उस के अन्दर दूसरे जीवन (पुनरुज्जीवन) पर तर्क एवं साक्ष्य प्रस्तुत करने वाली जो रहनुमाई थी उस से तुम ने आँखे बन्द कर लीं।

कहफ़ का अर्थ अरबी में बड़ी गुफ़ा (विशाल गुफ़ा) और रक़ीम का अर्थ तहरीर (लेख) के हैं। इस मुनासिबत से “अरक़ीम” से मुराद कुआन के टीकाकारों के एक गिरोह के निकट कतबा (शिलालेख) है जो उन के कथनानुसार अस्हाबे-कहफ़ की यादगार के तौर पर गुफ़ा पर लगाया गया था। और जिस शहर में यह घटना घटी उस का नाम इफ़िसस (Ephesus) बताया जाता है जो रोम वासियों का एक बड़ा शहर था और मौजूदा टर्की में स्थित था। जिस क्रूर एवं अत्याचारी शासक के अत्याचार से पीड़ित हो कर अस्हाबे-कहफ़ ने पनाह ली थी उस का नाम “दिक्रयानूस” बतलाया जाता है। जिस का कार्यकाल तीसरी सदी ईसवी था। वर्तमान दौर के एक टीकीकारों (मुफ़स्सिर) ने अरक़ीम से नब्तियों का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर “पटेरा” (बतरा) मुराद लिया किन्तु ये सारी तफ़सीलात ईसाईयों के उल्लेखों से उद्धृत है जिन में कथानक और मनगढ़न्त बातों का अत्याधिक समावेश है। इसी लिए कुआन ने आयत ४२ में यह स्पष्ट आदेश दिया था कि अस्हाबे-कहफ़ (गुफ़ा वालों) के बारे में इन लोगों से (चाहे बहुदेववादी हों या ईसाई) कुछ न पूछा जाए। अलबत्ता एक नई खोज जो विद्वान मुहम्मद तैसीर ज़बयान ने जार्डन के “दायरतुलआसरूल आम्मह” (पुरातत्व विभाग) के सहयोग से प्रस्तुत की है वह बड़ी हद तक उस गुफ़ा पर लागू होती है जिस का वर्णन कुआन में हुआ है। शोध करने वाले विद्वान ने अपनी किताब “अहलुल कहफ़ ” में इस पर बड़ी तर्क पूर्ण एवं बारीक बहस की है। और यह किताब जो अरबी में है “दारूल एतिसाम मिस्त्र” से प्रकाशित हुई है। इस शोध के अनुसार यह गुफ़ा “ओमान” (जार्डन की राजधानी) से आठ किलो मिटर की दूरी पर अरज़ीब में स्थित है और यह अरज़ीब

ही अरक़ीम का बदला हुआ रूप है। जार्डन हुकूमत के पुरातत्व विभाग “दायरा आसार आम्मा” ने खुदाई आदि का जो काम किया उस के बाद सत्य एवं वास्तविकताएँ बिलकुल उभर कर सामने आ गई हैं। जो संक्षेप में निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत है।

1.) यह गुफ़ा दक्षिण उत्तर की दिशा में स्थित है और सूरज पूरब और पश्चिम की दिशा में गुफ़ा से कतरा कर निकल जाता है।

2.) गुफ़ा अन्दर से फैली हुई विस्तृत है जैसा कि कुआन करीम में बयान हुआ है। “वहुम फी फजवतुन मिन्हु”

3.) गुफ़ा के अन्दर आठ कबरे हैं।

4.) गुफ़ा के ऊपर मस्जिद के खण्डर हैं। मस्जिद का वर्णन आयत २१ में हुआ है। इस मस्जिद के सात स्तंभ हैं जो संभवतः अस्हाबे-कहफ़ की संख्या की मुनासिबत से क़ायम किये गये थे।

5.) उत्तरी दीवार पर एक जानवर का चित्र बना हुआ है जिस के बारे में पुरातत्व विशेषज्ञों का कहना है कि यह कुत्ते का चित्र है। इस के अलावा दीवार पर फैनकी एवं प्रचीन यूनानी लिपि में कुछ बातें लिखी हैं।

6.) अस्हाबे-कहफ़ के गुफ़ा में पनाह लेने की घटना दिक्रयानूस के ज़माने की नहीं बल्कि “तिराजान” के ज़माने की है जिस ने सन ९८ई. से सन ११७ ई. तक शासन किया और १०९ ई. में उस ने जार्डन का पूर्वी भाग जीत लिया था। यह शासक बड़ा क्रूर एवं अत्याचारी था और जो व्यक्ति भी मूर्तिपूजा से और मूर्तियों के आगे बलिदान प्रस्तुत करने से इन्कार करता था उसे मौत के घाट उतार देता था। उस के काल में ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों पर कड़े अत्याचार तोड़े गए। उस के युग के बेज़ नतीनी सिक्के भी उस गुफ़ा में मिले हैं।

7.) मुस्लिम इतिहासकारों के मतों से भी इस बात की पुष्टि एवं अनुमोदन होता है कि यह गुफ़ा ओमान के निकट स्थित है। अतः मुक़द्सी की किताब “अहसनुत्तक्रासीम” में है।

“अरक़ीम पूर्वी जार्डन में ओमान से निकट एक शहर है।” और “याक़ूत हमवी” “मुअज्जमुल बलदान” में लिखते हैं:-

“ओमान सीरिया के किनारे एक शहर है और यह बलक़ा की सरज़मीन का बड़ा शहर रहा है। उस के निकट ही कहफ़ और रक़ीम स्थित हैं।”

(इन तमाम तफ़सीलात के लिए देखिए मुहम्मद तैसीर ज़बयान की किताब अहलुलकहफ़)

हमारी राय में यह रिसर्च अति महत्वपूर्ण तथा मसीही रिवायतों, आलेखों और कमज़ोर कथनों की तुलना में स्वीकारणीय है। इस लिए हमें इस की व्याख्या में कुछ विस्तार से काम लेना पड़ा।

11. अर्थात् गिनतियों अथवा संख्याओं की तफ़सीलात में गए बिना यह जान लेना काफ़ी है कि वे कुछ नवजवान थे जिन्होंने अपने ईमान की सुरक्षा के लिए गुफ़ा में पनाह ली थी। एक ज़ालिम बस्ती में से कुछ नवयुवकों का पूरी ईमानी शक्ति के साथ उठ खड़े होना उन की सत्य के प्रति निष्ठा और उच्च साहस का प्रातिक है और यह चीज़ नवयुवकों में अधिक पाई जाती है।

12. अपने दीन की सुरक्षा और अपने दअवती काम के लिए अल्लाह से मदद और रहनुमाई चाही। और अल्लाह तआला ने उन की जिस तरह मदद और रहनुमाई की वह बाद की घटनाओं से स्पष्ट है।

13. अर्थात् उन को कई वर्ष तक गुफ़ा में सुलाए रखा। कानों को थपकना सुलाने के लिए मुहावरा है। अतः बाद की आयत में उन के उठाए जाने का वर्णन है जो इस बात की दलील है कि उन पर नींद तारी कर दी गई थी। अतः आयत १८ में भी यह स्पष्टीकरण है कि वे सो रहे थे।

14. दो गिरोह से मुराद एक तो अस्हाबे-कहफ़ का गिरोह है और दूसरा उन लोगों का जिन से उन को उठने के बाद वास्ता पड़ा। यहाँ तक अस्हाबे-कहफ़ का सम्बन्ध है वे अपनी सोते रहने की अवधि अथवा वहाँ पड़े रहने की अवधि का सही अंदाज़ा नहीं लगा सके। बल्कि जैसा कि आयत १९ से स्पष्ट है कि उन्होंने ने यह महसूस किया कि हम ने कुछ ही घन्टे सो कर गुज़ारे हैं। रहे शहर के लोग जिन से उन को उठने के बाद वास्ता पड़ा तो वे सिक्का आदि देख कर इस नतीजे पर पहुँचे कि ये गुफ़ा में लम्बे समय तक सोते रहे हैं। इस से स्पष्ट हुआ। लम्बी मुद्दत तक उन का पड़े रहना एक सच्ची घटना थी मगर इस का एहसास स्वयं पड़े रहने वालों को न हो सका। गोया यह बर्ज़ख़ (यमलोक) की ज़िन्दगी की मिसाल थी जहाँ मनुष्य लम्बी अवधि तक पड़ा रहेगा किन्तु क्रियामत के दिन जब उसे उठाया जायेगा तो ऐसा महसूस होगा कि उस ने कुछ घन्टे ही आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में गुज़ारे हैं। समय की लम्बी अवधि का एहसास न होना इस बात का प्रमाण है कि जिस व्यक्ति की मौत हो गई उस की मानो क्रियामत क़ायम हो गई। अल्लाह तआला ने अस्हाबे-कहफ़ की घटना से इसी वास्तविकता को स्पष्ट कर दिया है।

15. ऊपर की आयतों में इस वृत्तांत का सार प्रस्तुत

किया गया था अब उस की तफ़सील प्रस्तुत की जा रही है।

इस वृत्तांत को ठीक ठीक सुनाने का मतलब यह है कि इस घटना के सम्बन्ध में जो अटकल पचू बातें कही जा रही हैं। उन के मुक़ाबले में कुआन का बयान ख़ालिस सच्ची घटना का बयान है और इस का एक एक शब्द सत्यता का दर्पण अतः अपने अन्दर एक मक़सद लिए हुए है।

16. पता चला कि हिदायत में वृद्धि एवं उन्नति भी होती है और यह वृद्धि एवं उन्नति अल्लाह की तौफ़ीक़ पर निर्भर है।

17. अस्हाबे-कहफ़ (गुफ़ा वालों) का यह एलान तौहीद अर्थात् सत्य पर आधारित एकेश्वरवाद को स्वीकार कर लेने की घोषणा थी। और चूँकि उन्होंने अत्यंत विषम परिस्थितियों में इस की घोषणा की थी इस लिए अल्लाह तआला ने उन के दिलों को मज़बूत कर दिया और उन के हौसले बुलन्द कर दिए अतः उन्होंने ने बुत परस्ती से डर कर बुत परस्ती के साथ कोई समझौता नहीं किया और ग़ैरुल्लाह अर्थात् अल्लाह के सिवा अन्य को माबूद (पूज्य एवं उपास्य) मानने से साफ़ साफ़ इन्कार कर दिया।

18. मालूम हुआ कि अस्हाबे कहफ़ की क्रौम मुशरिक (बहुदेववादी) थी।

19. अर्थात् शिर्क और बुत परस्ती बिलकुल बेबुनियाद एवं निराधार है। यदि इस के पक्ष में कोई दलील है तो फिर बुतों को पूजने वाले उसे प्रस्तुत क्यों नहीं करते। और एक तर्कहीन बात वे दूसरों से क्यों मनवाना चाहते हैं।

20. यह धारणा कि ख़ुदा ने अपने कामों में अन्य हस्तियों को साझीदार बना रखा है या ख़ुदा होने के अधिकार उन में विभाजित कर दिए हैं या उन को पूज्य ठहरा दिया गया है, सरासर झूठ और अल्लाह पर आरोप है क्यों कि अल्लाह ने कभी ऐसी कोई बात नहीं कही। फिर जो झूठ अल्लाह पर बाँधा जाए वह कितना संगीन होगा। और अल्लाह पर झूठ बाँधने वाला कितना बड़ा अपराधी होगा।

21. गुफ़ा में पनाह लेने का फैसला उन्होंने हालात की संगीनी को देखते हुए किया था जब कि आयत २० में स्पष्ट है। उन की क्रौम बुत परस्त थी और मत एवं धर्म की स्वतंत्रता को स्वीकार नहीं करती थी। और हुकुमत ऐसी ज़ालिम थी कि एक ख़ुदा को मानने और बुत परस्ती से इन्कार करने वाले को मौत के घाट उतारती थी। इन हालात में अस्हाबे-कहफ़ (गुफ़ा वालों) ने अपने ईमान को बचाने के लिए गुफ़ा में पनाह लेने का फैसला लिया। इस से यह रहनुमाई मिलती है कि असल चीज़ अपने ईमान और दीन की सुरक्षा है। और अगर हालात इतने संगीन हों कि वह अमूल्य वस्तु ही ख़तरे में पड़ जाए तो

एक मोमिन उस की सुरक्षा के लिए हिजरत की राह अपना सकता है। या किसी गुफा आदि में भी पनाह ले सकता है। ऐसे ही मौक़े के लिए हदीस में आया है:-

“करीब है कि मुसलमान का बेहतरीन माल उस की भेड़ों हों जिन को ले कर वह पहाड़ की चोटी पर या किसी ऐसे गोशे में जहाँ ख़ूब बारिश होती हो चला जाए ताकि अपने दीन को फ़ितनों से बचा सके।” (बुख़ारी किताबुल ईमान)

ध्यान रहे कि इस का कोई सम्बन्ध न सन्यास से है और न सूफ़ियों के एकान्त में रहने से। बल्कि यह ऐसे संगीन हालात के लिए है जब कि अपने ईमान और दीन को बचाने के लिए इस के सिवा कोई चारा न हो।

22. अरबी की शैली यह है कि जब किसी ग़िरोह के

लोग आपस में एक दूसरे से परस्पर सम्बोधित होते हैं तो तुम और तुम्हारा का शब्द इस्तेमाल करते हैं जब कि उर्दू में ऐसे मौक़े पर हम और हमारा इस्तेमाल होता है। अरबी की इस शैली को यदि सामने न रखा जाए तो यह ग़लत फ़हमी हो सकती है कि संबोधन करने वाला आपस का आदमी नहीं बल्कि कोई और है।

अस्हाबे-कहफ़ ने अल्लाह की मदद पर भरोसा करते हुए पूरे विश्वास के साथ यह बात कही कि जब हम ने एक ख़ुदा ही को माबूद (पूज्य एवं उपास्य) माना है और शिर्क एवं मुश्रिकीन अर्थात् बहुदेववाद एवं बहुदेवादियों से विमुखता अपना ली है तो अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत एवं दयालुता से अवश्य नवाज़ेगा और जिस काम को ले कर हम उठे हैं उस में वह हमारी निश्चय ही सहायता करेगा।



17. और तुम सूरज को देखते कि जब उस का उदय होता है तो उन की गुफा से दायीं ओर हटा हुआ रहता है और जब अस्त होता (डूबता) है तो उन के बायीं ओर कतरा कर निकल जाता है। और वे उस के अन्दर एक कुशादा जगह में पड़े हैं²³। यह अल्लाह की निशानियों में से हैं²⁴। जिस को अल्लाह हिदायत दे वही मार्ग पाया हुआ है और जिस को वह गुमराह कर दे तो तुम किसी को उस का सहायक, रहनुमाई करने वाला न पाओगे।

وَتَرَى الشَّمْسُ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرُّبُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا^①

18. तुम उन को देख लेते तो समझते कि वे जाग रहे हैं हालांकि वे सो रहे थे। हम उन को दाएँ बाएँ करवटें दिलवाते रहते थे। और उन का कुत्ता (गुफा की) डयोढ़ी पर हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झाँक कर देखते तो उलटे पाँव भाग खड़े होते, और तुम पर उन (के दृश्य) से भय छा जाता²⁵।

وَتَحْسَبُهُمْ يَقَاطِلُوا وَهُمْ رُقُودٌ وَنَقَلَبْنَاهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَيْدِ لَوَاطِلَعٌ عَلَيْهِمْ لَوْ كَيْتٍ مِنْهُمْ فَرَارًا وَلَكِنْ لَمْ نَكُنْ مِنْهُمْ رُعْبًا^②

19. और इसी तरह हम ने उन्हें उठाया²⁶। ताकि वे आपस में पूछ गछ करें²⁷। उन में से एक कहने वाले ने कहा कितनी देर रहे? उन्होंने ने जवाब दिया एक दिन या उस से कम रहे होंगे। फिर वे बोले तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर रहे?²⁸ अब एक आदमी को चाँदी का यह सिक्का दे कर शहर भेजो। वह देखे कि किस के यहाँ पाकीजा खाना मिलता है²⁹। वहाँ से वह तुम्हारे लिए कुछ खाना लाए। और चुपके से यह काम करे। किसी को हमारी खबर न होने दे।

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا^③

20. अगर उन को खबर हुई तो वे तुम्हें संगसार कर देंगे (पत्थरों से मार डालेंगे) या अपने पन्थ में वापस ले जाएंगे³⁰। यदि ऐसा हुआ तो तुम कभी सफल न हो सकोगे।

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلْكِتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا^④

21. इस प्रकार हम ने लोगों को उन के (हाल से) परिचित कर दिया³¹ ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क्रियामत के आने में कोई संदेह नहीं³²। जब लोग उन के मामले में झगड़ रहे थे,³³ उन्होंने ने कहा, इन पर एक दीवार खड़ी कर दो, इन का रब ही इन को बेहतर जानता है³⁴। जो लोग उन के मामले में ग़ालिब (भारी) थे उन्होंने कहा हम ज़रूर इन पर एक मस्जिद बनाएंगे।

وَكَذَلِكَ أَتَيْنَاهُمْ لِيُعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا^⑤

23. अर्थात् जिस गुफा में उन्होंने ने शरण ली वह इस प्रकार स्थित है कि सूरज की रौशनी अन्दर की कुशादा जगह में जिस में वे पड़े सो रहे थे, नहीं पहुँचती। मतलब यह कि गुफा दक्षिण उत्तर मुख को है।

24. निशानी इस बात की कि जो अल्लाह पर पूर्ण भरोसा करते हैं अल्लाह तआला उन की किस प्रकार मदद करता है। अस्थाबे-कहफ़ की एक ऐसी गुफा की ओर रहनुमाई जो इन नाज़ुक हालात में उन की सुरक्षा के लिए हर प्रकार उचित था और जिस में उन को सुकून मयस्सर आया, इस बात का प्रतीक है कि अल्लाह तआला अपने सच्चे बन्दों की नाज़ुक स्थितियों पर मदद करता और रहनुमाई फ़रमाता है।

25. मतलब यह कि वे इस तरह से सो रहे थे और साथ ही करवटे बदलते जाते थे कि इत्तिफ़ाक़ से कोई व्यक्ति उन्हें देख लेता तो यही समझता कि ये सब लेटे हुए हैं और जाग रहे हैं। और उन का कुत्ता भी गुफ़ा की डयोढ़ी पर हाथ फैलाए बैठा था। अगर उस अन्धेरी गुफ़ा में कोई व्यक्ति झाँक कर देख लेता तो यह दृश्य ऐसा डरावना था कि देखने वाला उलटे पाँव भाग जाता। वह यह सोच कर भयभीत होता कि कौन लोग हैं जो इस अन्धेरी गुफ़ा में छिप गए हैं और उन के इरादे क्या हैं।

अल्लाह तआला ने यह डरावनी स्थिति इस लिए पैदा कर दी कि कोई व्यक्ति उन के पास फटकने का साहस न करे और वे बिलकुल सुरक्षित रहें। उन की सुरक्षा का यह असाधारण प्रबन्ध था जो किया गया।

कुत्ता उन्होंने उस वीराने में अपनी सुरक्षा के लिए साथ रखा था जो एक उचित बात थी। इस लिए शरअी तौर से इस पर कोई आपत्ति उचित नहीं बैठती।

26. अर्थात् इस असाधारण स्थिति में सुलाने के बाद उन्हें उठाया।

27. मतलब यह कि वे एक दूसरे से यह मालूम करें कि वे कितनी देर सोते रहे।

28. उन की आपसी बात चीत से स्पष्ट हुआ कि वे अपनी नींद की हालत में पड़े रहने का सही अन्दाज़ा न कर सके। एक ने अन्दाज़ा लगाया तो एक दिन या उस से कम का और जब वे किसी नतीजे पर न पहुँच सके तो उन्होंने ने इस मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वही बेहतर जानता है कि वे कितनी मुद्दत तक इस हाल में पड़े रहे।

वास्तव में वे एक लम्बी अवधि तक पड़े रहे परन्तु जब जाग उठे हैं तो उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जैसा एक दिन या उस से भी कम समय उन्होंने सोने में गुज़ारा है। उन की यह घटना आलमें-बर्ज़ख़ (यमलोक) की सत्यता को समझने के लिए एक निशानी है। मनुष्य मरने के बाद एक लम्बी मुद्दत

तक आलमें-बर्ज़ख़ में पड़ा रहेगा और जब क्रियामत के दिन उठाया जाएगा तो उसे ऐसा महसूस होगा कि एक दिन या कुछ घंटे ही वह इस हालत में पड़ा रहा।

29. जागने के बाद उन्हें खाने की इच्छा हुई। इस लिए उन्होंने अपने एक आदमी को सिक्का दे कर जो चाँदी का था शहर में भेजना चाहा और उसे यह निर्देश दिया कि देख परख के पाकीज़ा खाना ले आए। वे समझ रहे थे कि शहर का माहौल वही मुश्क़िकाना अर्थात् बहुदेववादी माहौल है जिस को छोड़ कर वे आए थे और एक ऐसी सोसाइटी जहाँ बहुदेवादियों का प्रभुत्व हो वहाँ हलाल और हराम का ध्यान नहीं रखा जाता, बुतों के नाम का ज़बीहा भी हो सकता है इस लिए उन्होंने पाकीज़ा अर्थात् हलाल खाने की ताकीद की। इस से उन की आत्मा की शुद्धता का अन्दाज़ा होता है।

30. इस से स्पष्ट हुआ कि जिस क़ौम को वे छोड़ आए थे वह कैसी ज़ालिम थी। उन के नज़दीक उन के बहुदेववादी धर्म से मुक्त होने का दण्ड प्राण दण्ड था। तथा यह कि वे अपने पंथ में वापस लाने के लिए ज़बरदस्ती करते थे।

31. वह व्यक्ति जब पुराने ज़माने का सिक्का लेकर खाना ख़रीदने के लिए गया तो राज़ खुल गया कि ये लोग लम्बी अवधि तक गुफ़ा में पड़े सोते रहे हैं और अब जाग उठे हैं। ये वे साधन थे जो अल्लाह ने लोगों को उन के हाल से भिन्न कराने के लिए किए।

32. अल्लाह तआला ने इस वास्तविकता को उजागर करने का सामान इस लिए किया ताकि क्रियामत के बारे में लोगों के संदेह दूर हों और उन्हें विश्वास हो जाए कि अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहेगा। अगर अल्लाह की कुदरत के करिश्मे से मनुष्य लम्बी अवधि तक सोते रहने के बाद उठ सकता है तो उसी कुदरती करिश्मे से वह मरने के बाद क्यों नहीं उठ सकता। अगर इस जगत में नियम के प्रतिकूल एवं असंभावित घटना घट सकती है तो इस दुनिया की समाप्ति पर दोबारा उठाए जाने की आसाधारण एवं असंभावित घटना क्यों नहीं घट सकती ?

33. संदर्भ एवं बयान के अन्दाज़ से स्पष्ट है कि इस के बाद अस्थाबे-कहफ़ (गुफ़ा वालों) की मृत्यु हो गई और उन की मृत्यु पर यह अनावश्यक बहस छिड़ गई कि इन को किस प्रकार दफ़न किया जाए। और उन का स्मारक किस प्रकार बनाया जाए।

34. उस समय हुकूमत भी बदल चुकी थी और जनमानस का दीन (धर्म) भी। जनता और हुकूमत दोनों ने ईसाईत स्वीकार कर लिया था, इस लिए अस्थाबे-कहफ़ (गुफ़ा वालों) से दोनों को आस्था हो गई। कहाँ तो वह माहौल कि जनता

और हुकूमत दोनों उन को पथराव कर के मार डालने पर तुले थे और कहाँ यह माहौल कि दोनों उन में अपनी श्रद्धा एवं आस्था व्यक्त करने लगे। और जब श्रद्धालु हो गए तो संतुलन बाकी न रहा। और उपास्य समझ कर उन में आस्था व्यक्त करने के लिए उन की क़ब्रों के ऊपर मस्जिद (उपासना स्थल) का निर्माण ज़रूरी समझा गया।

यद्यपि उन लोगों में एक गिरोह ऐसा मौजूद था जिस के सोचने का ढंग सही था और उस ने यह उचित सुझाव दिया था कि उन की लाशों को गुफा ही में रहने दिया जाए और गुफा की डेयोढ़ी पर दीवार खड़ी कर दी जाए ताकि वे उस में दफ़न हो जाएँ और उन के मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया जाए जो उन के हाल से भली भाँति भिन्न है। हम मारे श्रद्धा के कहीं कोई अनुचित काम न कर बैठें मगर एक खुदा को मानने वालों का यह सुझाव उन लोगों के लिए मान्य न हुआ जिन के हाथ में कलीसाई सत्ता और शासन की बागडोर थी। उन्होंने अपनी बिगड़ी हुई मानसिकता और बिदअत परस्त तबीयत के चलते इस बात का फैसला किया कि उन की क़ब्रों पर अर्थात् गुफा के ऊपर उपासना गृह का निर्माण किया जाए ताकि श्रद्धा एवं आस्था की अभिव्यक्ति हो।

क़ब्रों से यही वह लगाव है जो क़ब्र परस्ती और गुमराही की तरफ़ ले जाती है। इसी लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ब्रों पर इमारतें बनाने और मस्जिदें बनाने की सख़्त मनाही फ़रमा दी है।

لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسْجِدًا

अर्थ:- अल्लाह यहूदियों और ईसाईयों पर लानत करे, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को इबादत गाह (उपासना गृह) बना दिया।”

أُولَئِكَ إِذَا مَاتَ مِنْهُمْ الرَّجُلُ الصَّالِحُ بَنَوْا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا وَصَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّوَرِ أُولَئِكَ شَرَّاءُ الْخَلْقِ عِنْدَ اللَّهِ.

अर्थ:- उन लोगों में जब कोई नेक आदमी मर जाता तो उस की क़ब्र पर वह इबादत गाह (पूजा स्थल) बनाते और उस में उस की तस्वीरें बनाते। ये लोग अल्लाह के नज़दीक बदतरीन मख़लूक होंगे।”(बुखारी किताबुल जनाइज़)

نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ
وَأَنْ يُقَعَّدَ عَلَيْهِ وَأَنْ يُنَى عَلَيْهِ

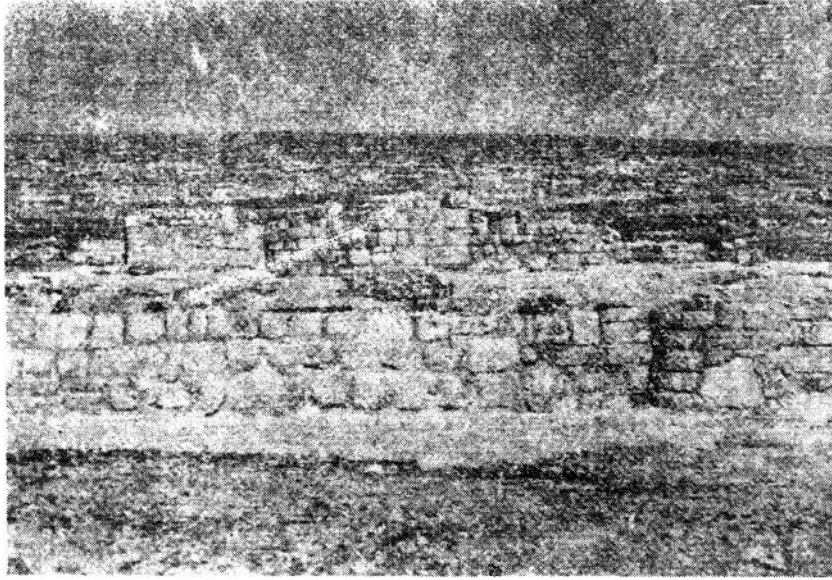
अर्थ:- “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ब्र को चूने से पक्की करने, उस पर बैठने और उस पर इमारत बनाने से मना फ़रमाया है।” (मुस्लिम किताबुल जनाइज़)

इन हदीसों को देखते हुए बुजुर्गों की क़ब्रों पर शानदार मक़बराओं और दरगाहों के निर्माण इस्लामी शिक्षाओं के बिलकुल विरुद्ध और क़ब्र परस्ती एवं गुमराही का कारण है।

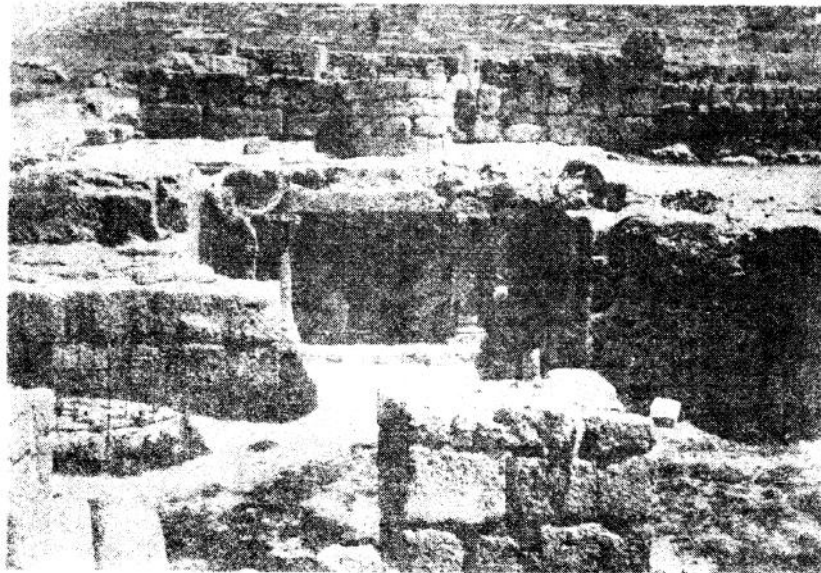
कुछ लोगों ने इस आयत का ग़लत भावार्थ लिया है और वे इस आयत को बुजुर्गों की क़ब्रों पर मस्जिद बनाने के पक्ष में प्रस्तुत करते हैं किन्तु हदीसे नबवी के स्पष्टीकरण के बाद उन का यह तर्क बिलकुल ग़लत है अतः अल्लामा आलूसी ने अपनी तफ़्सीर “रुहुल मआनी” में इन पर सख़्ती के साथ पकड़ की है और उन की उलटी मन्तिक की ख़ूब समीक्षा की है और स्पष्ट रूप से नेक बुजुर्गों की क़ब्रों पर इमारत बनाने के औचित्य को ग़लत एवं गुमराह करने वाला बताया है। (देखिए रुहुल मआनी जिल्द ५ पृष्ठ २३७)

आयत को अगर पूरी तरह ध्यान में रखा जाए तो उस का यह मंशा स्पष्ट होगा कि अस्हाबे-कहफ़ को लम्बी अवधि के बाद उठाकर अल्लाह तआला ने क्रियामत के आने पर एक निशानी लोगों के लिए मुहैया कर दी थी। इस लिए चाहिए था कि वे अपनी निगाहों को उस पर केन्द्रित करते और अस्हाबे-कहफ़ के बारे में जब भी बात करते तो इसी शीर्षक को केन्द्रीय विषय बना लेते मगर उन के तथाकथित श्रद्धालुओं ने असल विषय को छोड़ कर उन का स्मारक बनाने को केन्द्रीय विषय बना लिया।

कहफ़ और अर्रक़ीम
अर्रक़ीम पर्वत का दृश्य और गुफ़ा के ऊपर बनी हुई
प्राचीन मस्जिद



गुफ़ा के सामने का दृश्य और उस के ऊपर बनी हुई प्राचीन मस्जिद के खण्डर



22. ये लोग कहेंगे कि वे तीन थे चौथा उन का कुत्ता था। और यह भी कहेंगे कि पाँच थे छटा उन का कुत्ता था। ये सब अन्धेरे में तीर चलाते हैं³⁵। कुछ और लोग कहेंगे सात थे और आठवाँ उन का कुत्ता था। कहो मेरा रब ही उन की तादाद को बेहतर जानता है। कम ही लोग उन की तादाद से भिन्न हैं। अतः तुम उन के मामले में लोगों से बहस न करो, सिवाय सरसरी बहस के, और न उन के बारे में किसी से कुछ पूछो³⁶।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْبًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝۲۲

23. और किसी चीज़ के बारे में यह न कहो कि मैं कल इसे करूँगा।

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۝۲۳

24. मगर यह कि अल्लाह चाहे³⁷। अगर तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो³⁸। और कहो उम्मीद है मेरा रब इस से भी अधिक सुपथ (रुद्ध) की ओर मेरा मार्गदर्शन करेगा³⁹।

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَلَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ۝۲۴

25. और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल रहे और अतिरिक्त नौ साल।

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ۝۲۵

26. कहो अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे कितनी अवधि तक रहे⁴⁰। आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का ज्ञान उसी को है। किस शान का है वह देखने वाला और सुनने वाला ! उस के सिवा उन का कोई सहायक (काम बनाने वाला) नहीं है और वह अपने “हुक्म” में किसी को शरीक नहीं करता⁴¹।

قُلْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۚ لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۝۲۶

27. और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर वहय की (उतारी) गई है उसे सुनाओ⁴²। उस के आदेशों को कोई बदल नहीं सकता⁴³ और उस के सिवा तुम को कहीं पनाह नहीं मिल सकती।

وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ يَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝۲۷

28. और उन लोगों के साहचर्य (मित्रता) पर संतोष कर लो जो अपने रब को उस की प्रसन्नता प्राप्ति में सुबह और शाम पुकारते हैं। तुम्हारी निगाहें सांसारिक जीवन की शोभा की खातिर उन की तरफ़ से फिरने न पाएँ⁴⁴। और ऐसे व्यक्ति की बात न मानो जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और जो अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ गया है और जिस का मामला हद से निकल चुका है⁴⁵।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ۝۲۸

35. अर्थात् यह सब अटकल पच्चू बातें हैं।

36. जिन लोगों को वास्तविक उद्देश्य से लगाव नहीं था और जो इस घटना से कोई सबक हासिल करना नहीं चाहते थे उन्होंने ने अस्हाबे-कहफ़ की तादाद आदि के बारे में अनावश्यक बहसें छेड़ दी थीं। कुआन ने उन की इन बहसों का जवाब दिये बग़ैर जँचे तुले अन्दाज़ में वृत्तांत सुनाया और नसीहत के पक्षों को उभारा साथ ही ईमान वालों को निर्देश दिया कि इन बहसों से सरसरी तौर पर गुज़रें और इन में उलझें नहीं।

तादाद के बारे में कुआन ने तीसरे मत को (कि उन की तादाद सात थी) पहले दो मतों की तरह रद्द नहीं किया और न उस के सही होने की पुष्टि की। बल्कि फ़रमाया कहो मेरा ख़ब ही उन की तादाद को बेहतर जानता। अतः हमें किसी प्रयत्न के बग़ैर इसी हिदायत पर अमल करना चाहिए।

मालूम होता है कि अस्हाबे कहफ़ के क्रिस्से ने उस ज़माने में ही अफ़साने का रूप धार लिया था। कुआन ने उस की असल वास्तविकता को जो अफ़सानों में दब कर रह गई थी सामने लाने के बाद ईमान वालों को हिदायत की कि अब इस क्रिस्से के बारे में किसी से कुछ पूछने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही। अतः किसी से कोई सवाल न किया जाए। मगर अफ़सोस है कि कुआन के इस स्पष्ट निर्देश के बावजूद तफ़्सीरों में ईसाईयों की अफ़सानवी मन गढ़ंत बातों को जगह मिल गई। यहाँ तक कि अस्हाबे-कहफ़ के नाम तथा उन के कुत्ते का नाम भी बयान कर दिया गया।

37. अर्थात् अपने को सामर्थ्यवान समझकर दृढ़ता के साथ यह बात न कहो कि मैं फ़लाँ काम कल कर दूँगा। तुम्हें क्या मालूम कल क्या परिस्थिति होगी और तुम्हारे लिए इस काम को अन्जाम देना संभव होगा या नहीं। इस लिए तुम्हें ऐसे अवसर पर इन्शा-अल्लाह कह देना चाहिए जिस का अर्थ है “अगर अल्लाह ने चाहा तो।” इन्शाअल्लाह कहना इस बात की अभिव्यक्ति है कि असल चीज़ अल्लाह की मर्जी है न कि मेरा अपना फैसला। अगर उस की मर्जी हुई तो मैं फ़लाँ काम कर सकूँगा वरना नहीं। इसी लिए एक मोमिन का स्वभाव यह है कि जब वह कोई वादा करता है या आगे चल कर किसी काम को करने का इरादा करता है तो इन्शाअल्लाह ज़रूर कहता है।

यह तो हुआ आयत का सामान्य पक्ष। रहा संदर्भ के अनुसार विशेष पक्ष तो यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत है कि यदि लोग कोई सवाल करें जिस का जवाब अल्लाह की वही पर आश्रित हो तो यह न कहो कि कल मैं इस का जवाब दूँगा बल्कि साथ साथ यह भी कहो “अल्लाह ने चाहा तो।”

38. अर्थात् अगर तुम इन्शाअल्लाह कहना भूल जाओ तो जब तुम्हें यह बात याद आ जाए उस समय अपने ख़ब को याद करो ताकि जो भूल हो गई थी उस की पूर्ति हो जाए।

39. अर्थात् अस्हाबे-कहफ़ पर जिस प्रकार उस ने सन्मार्ग एवं सुपथ (रूशद) की राहें खोलीं उम्मीद है कि उस से भी अधिक सुपथ की राहें वह मुझ पर खोलेगा। यह जवाब है मक्का के बहुदेववादियों को कि तुम ने अन्याय और ज़ोर ज़बरदस्ती का ख़वैया अपना कर के वही हालात पैदा कर दिए हैं जो अस्हाबे-कहफ़ के लिए उन की क़ौम ने पैदा कर दिए थे। लेकिन मेरा ख़ब इस मरहले में मेरे लिए उन से भी अधिक सफलता की राहें खोलेगा। यह इशारा था इस बात की ओर कि बहुत जल्द हिजरत का मामला सामने आने वाला है। अतः कुछ ही दिनों बाद यह मरहला सामने आ गया और आप सौर नामी गुफा में पनाह लेने के लिए बाध्य हो गए। परन्तु गुफा में आप को केवल तीन दिन गुज़ारना पड़े। इस के बाद जब आप मदीना पहुँचे हैं तो सफलता की राहें आप पर खुलती चली गईं।

40. यह वाक्य इस बात पर तर्क प्रस्तुत करता है कि ऊपर तीन सौ नौ (३०९) साल की अवधि का ज़िक्र हुआ वह लोगों का मत है जिसे अल्लाह तआला ने बताया है। ऊपर आयत २२ में तादाद के बारे में लोगों के विभिन्न मतों का वर्णन हुआ था बीच में व्यवहित वाक्य (जुम्ला-ए-मोतररिज़ा) आया, अब फिर उसी बातों के क्रम में अस्हाबे-कहफ़ (गुफा वालों) के गुफा में पड़े रहने की अवधि के बारे में लोगों के मतों से अवगत कराया गया है कि वे तीन सौ नौ साल बताते हैं मगर इस बहस में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जितनी मुद्दत भी रहे, अल्लाह बेहतर जानता है।

इस वृत्तांत के आरंभ में अल्लाह तआला यह स्पष्ट कर चुका है कि वे गुफा में वर्षों रहे। (आयत ११) अर्थात् वे एक लम्बी अवधि तक गुफा में सोते पड़े रहे। और इतनी बात नसीहत हासिल करने के लिए काफ़ी है।

गुफा वालों (अस्हाबे-कहफ़) से सम्बन्धित कुछ (टीकाकारों) ने करामत (चमत्कार) की बहस छेड़ दी है। जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है कि कभी अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों के द्वारा असाधरण (नियम के प्रतिकूल) घटनाओं को सामने लाता है, एक वास्तविकता है जिस का उदाहरण अस्हाबे-कहफ़ की घटना भी है और हज़रत मरयम की घटना भी। ये घटनाएँ अल्लाह तआला की कुदरत और उस के पूर्ण सामर्थ्य की दलील हैं और इस बात का प्रमाण हैं कि कायनात पर उसी की सत्ता और उसी का शासन चल रहा है। और वह जब चाहे अपने नियम में इधर उधर कर सकता है। रहीं वे हस्तियाँ जिन

के माध्यम से अल्लाह तआला किसी असाधारण घटना को सामने लाता है तो ये घटनाएँ उन के नेक होने का प्रतीक अवश्य हैं जिन के चलते उन को यह करामत अर्थात् यह सम्मान प्रदान किया गया। किन्तु इन घटनाओं को सामने लाने में उन का अपना कोई योगदान नहीं है। अर्थात् वे इस मामले में बिल्कुल असमर्थ हैं। कोई करामत (चमत्कार) वे दावे के साथ दिखा नहीं सकते जब कि एक रसूल अल्लाह की मर्जी से दावे के साथ मोज़ा (चमत्कार) दिखाता है। इस लिए मोज़ा अल्लाह का स्पष्ट तर्क एवं साक्ष्य (हुज्जत) है। मतलब यह कि करामत के बारे में लोगों की यह धारणा कि वली और बुजुर्गाने-दीन करामतें दिखाते हैं सरासर ग़लत है। सही यह है कि अल्लाह तआला कभी कभी किसी खास मसलहत से किसी नेक आदमी के माध्यम से किसी असाधारण घटना को सामने लाता है। और ऐसी घटनाएँ कभी कभी (विरल) ही होती हैं। और कभी तो उस व्यक्ति को इस बात की ख़बर भी नहीं होती कि उस के द्वारा कोई करामत (चमत्कार) घटित हो रही है। अतः देखिए कि गुफ़ा वाले एक लम्बी अवधि तक सोते रहे। मगर उन को इस बात का एहसास नहीं हुआ कि उन के द्वारा करामत घटित हो रही है और जब वे जागे हैं तो अपने सोते पड़े रहने की अवधि का सही अनुमान भी नहीं कर सके। फिर उन्होंने करामत क्या दिखाई? यह तो अल्लाह तआला की निशानी थी जो उन के माध्यम से प्रकट हुई। यही उन के लिए सौभाग्य एवं करामत है।

ध्यान रहे कि मुसलमानों में वलियों और पीरों की जो करामतें प्रसिद्ध हैं वे अधिकांश तो उन हस्तियों से असाधारण श्रद्धा दिखाने के लिए हद से बढ़े हुए लोगों ने गढ़ लिए हैं। सत्यता एवं वास्तविकता से इन का दूर का भी नाता नहीं। इन के बे सिर पैर के क्रिस्सों ने मुसलमानों में औलिया परस्ती एवं बुजुर्ग परस्ती की मानसिकता को उत्पन्न कर दिया है।

41. मूल अरबी में “हुक्म” शब्द इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ निर्णय के भी हैं और उन अधिकारों एवं संप्रभुता के भी हैं जिन के अन्तर्गत निर्णय और आदेश पारित किये जाते हैं। अल्लाह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता, का मतलब यह है कि अपने अधिकारों एवं संप्रभुता में उस ने किसी को शरीक (साझी) नहीं ठहराया है। तौहीद अर्थात् उस के अकेले होने की वास्तविकता यह है कि खुदा होने तथा उस के शासन चलाने के अधिकार एक अल्लाह ही के लिए हैं जब कि शिर्क (बहुदेववादी) का दर्शन यह है कि खुदा की संप्रभुता में अन्य भी साझीदार हैं। और जो शिर्क मुसलमानों में औलिया परस्ती की राह से आया है वह यह है कि अल्लाह ने खुद ही अपने कुछ अधिकार इन को सौंप दिये हैं। इस शिर्क पर चूँकि औलिया कि श्रद्धा एवं आस्था का लेबल लगा हुआ है इस

लिए मुसलमान आसानी से गुमराह हो जाते हैं।

इस धारणा अथवा इस अक़ीदा के ग़लत होने के लिए यह एक आयत ही काफ़ी है जिस में स्पष्ट रूप से यह बयान किया गया है कि अल्लाह अपनी संप्रभुता में किसी को शरीक नहीं करता।

42. कुर्आन सुनाने का यह आदेश सामान्य रूप से सब के लिए दिया गया है, अर्थात् केवल मुसलमानों को सुनाना अभिप्रेत नहीं है बल्कि जन-सामान्य को सुनाना है, जो भी कुर्आन सुनने के लिए आमादा हो।

अरब वासियों की भाषा अरबी भाषा थी और कुर्आन अरबी भाषा में है। इस लिए उन को कुर्आन सुनाना अल्लाह के पैग़ाम को उन की भाषा में उन तक पहुँचाने के समानार्थ था। अब जब कि उम्मत-मुस्लिम: (मुस्लिम समुदाय) को ग़ैर अरबी भाषी लोगों से वास्ता है, कुर्आन को उस के मतलब एवं भावार्थ के साथ उस की भाषा में पहुँचाना होगा। इसी रूप में उन पर कुर्आन का तर्क एवं उस की हुज्जत क़ायम हो सकेगी और अल्लाह ने चाहा तो कितनों ही को हिदायत नसीब होगी।

43. अर्थात् कोई ऐसी शक्ति नहीं जो अल्लाह के आदेशों को बदल सकती हो, उस का हर आदेश अटल, हर फैसला लागू होने वाला और हर वादा पूरा हो कर रहने वाला है। अतः तुम लोगों की भलाई इसी में है कि उस के कलाम में किसी परिवर्तन की इच्छा जताए बिना अपने आप को बदल दो और उस साँचे में ढाल लो जिस साँचे में कि वह तुम्हें ढालना चाहता है।

44. जिन लोगों ने ईमान ला कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत अपना ली थी उन में अधिकतर ऐसे थे जो न धन साधन रखते थे ना सामाजिक प्रभाव, मगर अल्लाह तआला ने उन्हें ईमान की हिदायत से सुशोभित कर दिया था इस लिए उन के जीवन अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति में व्यतीत हो रहे थे। दुनिया परस्त लोग उन को तुच्छ समझते थे मगर वे थे क़ीमती हीरे। अल्लाह तआला ने अपने नबी को आदेश दिया कि इन को पहचाना जाए तथा इन का पूरा आदर सम्मान किया जाए और उन की मित्रता एवं उन के साथ को अपने लिए काफ़ी समझा जाए। ऐसा बिल्कुल न हो कि उन की ओर से ध्यान हटाकर उन लोगों को महत्व देने लगे जिन्हें धन दौलत और संसारिक वैभव एवं ऐश्वर्य प्राप्त है परन्तु वे अपने रब से गाफ़िल एवं बेपरवाह हैं।

यद्यपि इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संबोधन है मगर अभिप्रेत इन्कार करने वाले मुन्किरीन पर यह स्पष्ट करना है कि तुम्हें अपने वैभव एवं ऐश्वर्य पर गर्व है और तुम सच्चे ईमान वालों को तुच्छ समझते हो मगर अल्लाह की

नज़र में आदर एवं सम्मान के योग्य अधिकारी तुम नहीं बल्कि इस के अधिकारी ये सच्चे बन्दे हैं।

इस्लाम ने जमाअत के साथ नमाज़ का जो तरीका स्थापित किया है उस की बड़ी मसलहत यह भी है कि मुसलमानों को एक दूसरे का सहचर्य, साथ एवं मित्रता का अवसर मिले और उन का एकत्र होना अल्लाह की इबादत के लिए हो और उन की यह मजलिस अल्लाह के ज़िक्र एवं उस की चर्चा की मजलिस हो।

45. जब आदमी खुदा के मामले में संजीदा नहीं होता तो अल्लाह तआला उस के दिल को उस की याद से ग़ाफ़िल कर देता है। और जब खुदा की याद से आदमी ग़ाफ़िल हो जाता है तो उस का अनिवार्य एवं स्वाभाविक परिणाम यह

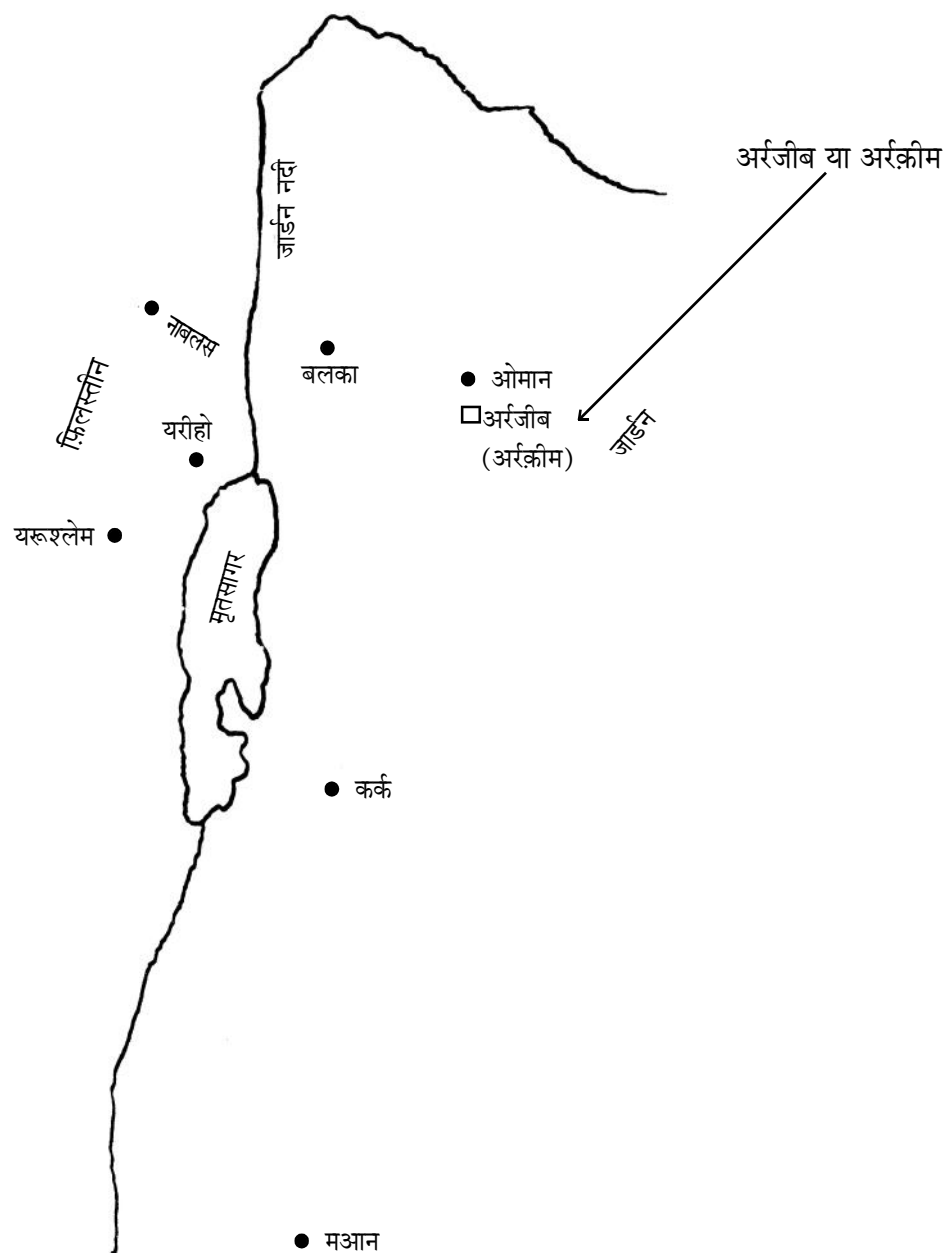
निकलता है कि वह अपनी इच्छाओं का गुलाम बन कर रह जाता है। और जब इच्छाएँ उस पर हावी हो जाती हैं तो व्यवहार में असन्तुलन पैदा हो जाता है। इस प्रकार वह बुद्धि एवं स्वभाव की रहनुमाई से वंचित हो जाता है। और शरीअत की रहनुमाई से भी।

ऐसे लोगों का अनुपालन न स्वीकार करे (अर्थात् उन के कहने पर न चलें) का मतलब यह है कि अल्लाह की रहनुमाई की तुलना में उन की रहनुमाई और अल्लाह के आदेशों की तुलना में उन के किसी आदेश को स्वीकार न किया जाए।

इस आयत से यह बात भी स्पष्ट हुई कि अल्लाह के ज़िक्र एवं उस की चर्चा का सम्बन्ध सीधे दिल से है और दिल किसी हाल में अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए।



अर्क्रीम का स्थान (अस्हाबे-कहफ़)



अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए तो हम नेक अमल करने वालों का सिला कभी अकारथ नहीं करते। उन के लिए हमेशा हमेशा के बाग़ हैं जिन के तले नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे बारीक और दबीज़ रेशम के हरे कपड़े पहनेंगे। और तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। क्या ही अच्छा सिला है और क्या ही अच्छी आराम गाह ! (अल-कुर्आन)

29. और कहो यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से तो जिस का जी चाहे ईमान लाए और जिस का जी चाहे कुफ़्र करे ⁴⁶। हम ने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिस की कनातों ने उन्हें घेर लिया है ⁴⁷। यदि वह पानी के लिए फ़रियाद करेंगे तो उन्हें ऐसा पानी दिया जाएगा जो पिघली हुई धातु की तरह होगा और उन का मुँह भून डालेगा। क्या ही बुरी है पीने की चीज़ और क्या ही बुरी है आराम गाह !

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ⁽⁴⁹⁾

30. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए तो हम नेक अमल करने वालों का सिला कभी अकारथ नहीं करते।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ⁽⁵⁰⁾

31. उन के लिए हमेशा हमेशा के बाग़ हैं जिन के तले नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे बारीक और दबीज़ रेशम के हरे कपड़े पहनेंगे ⁴⁸। और तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। क्या ही अच्छा सिला है और क्या ही अच्छी आराम गाह !

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ⁽⁵¹⁾

32. इन लोगों को दो व्यक्तियों का हाल ⁴⁹ सुनाओ। उन में से एक को हम ने अंगूर के दो बाग़ दिए और उन के चारों ओर खजूर के वृक्ष लगाए और उन के बीच में खेती लगाई ⁵⁰।

وَأُخْرِجْ لَهُمْ مَثَلًا جَلِيلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ⁽⁵²⁾

33. दोनों बाग़ ख़ूब फले और उस में कोई कसर न छोड़ी हम ने उन के अन्दर नहर भी जारी कर दी थी।

كُلَّتَا الْجَنَّتَيْنِ اِتْتَا أَكْثَاهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ⁽⁵³⁾

34. और (उन बाग़ों में) उस के लिए ख़ूब फल लगे। तो उस ने अपने साथी से बात करते हुए कहा मैं तुझ से अधिक मालदार हूँ और मेरा जत्था भी अधिक शक्तिशाली है ⁵¹।

وَكَانَ لَهُ شَمْرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ⁽⁵⁴⁾

35. फिर वह अपने बाग़ में इस हाल में दाखिल हुआ कि अपने नफ़्स (जान) पर ज़ुल्म कर रहा था। उस ने कहा मैं नहीं समझता कि यह कभी तबाह हो जाएगा ⁵²।

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ⁽⁵⁵⁾

46. यह और इस प्रकार की दूसरी आयतें इस बात में बिल्कुल साफ़ एवं स्पष्ट हैं कि अल्लाह तआला ने ईमान और कुफ़्र के मामले में मनुष्य पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं की है। बल्कि उसे स्वतंत्र रूप से स्वीकार करने का अधिकार दे कर ऐसे साधन उपलब्ध कर दिए हैं कि वह सरलता पूर्वक समझ सके। अब वह जिस राह को चाहे अपनाए। अपने भले बुरे का वह स्वयं जिम्मेदार है।

47. यहाँ ज़ालिम से तात्पर्य वही ख़ुदा से ग़ाफ़िल लोग हैं जिन का वर्णन ऊपर हुआ है। और आग की क़नातों से तात्पर्य जहन्नम की लपटें हैं। मतलब यह है कि वे जहन्नम की ज़द में आ चुके हैं और उस से किसी भी तरह बच नहीं सकते।

सूरज पृथ्वी से करोड़ों मील के फासले पर है परन्तु उस की गर्मी ज़मीन पर बराबर पहुँचती है। और अगर उस का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी को अपनी ओर खींच ले तो ज़मीन आग का गोला बन जाए। जब भौतिक जगत का यह हाल है तो जो जगत हमारी नज़रों से ओझल है उस की आग का यह हाल क़तई आश्चर्यजनक नहीं है कि उस की तपिश इस दुनिया में मुन्किरीन तक पहुँच रही है। और यही वह तपिश है जो उन के चरित्र एवं आचरण को खाक कर रही है।

48. जन्नत के माहौल को दुनिया के आधार पर नहीं समझा जा सकता। वहाँ का जीवन शाही टाट बाट का जीवन होगा। इस लिए मर्दों को सोने के कंगन भी पहनाए जाएंगे और रेशम के कपड़े भी।

हरा रंग आँखों को भला भी लगता है और आँखों को उस से टंडक भी महसूस होती है इस लिए इस रंग का चुनाव अत्यंत उचित है। और इन बातों के भेद तो जन्नत ही में खुलेंगे।

49. यह उदाहरण मात्र कहानी नहीं बल्कि सच्ची घटना है जो इब्रत के लिए बयान कर दी गई है। आगे आयत ३४ और ३७ में स्पष्टीकरण है कि दो व्यक्तियों के बीच बात हुई थी जो इस उदाहरण के सच्ची घटना होने का स्पष्ट प्रमाण है।

50. अर्थात् उस व्यक्ति को अल्लाह तआला ने इस प्रकार दिया था कि उस ने एक छोड़ दो बाग़ प्रदान किए थे और ये बाग़ उच्च कोटी के थे। अरब वासियों के यहाँ उच्च कोटी का बाग़ अंगूरों का होता था जिस के चारों ओर खजूर के वृक्ष होते ताकि तेज़ और थपेड़ेदार हवा से अंगूर की बेलें सुरक्षित रह सकें। और बीच के हिस्से में खेती होती जिस से ग़ल्ला प्राप्त होता।

51. यह उस की अंश से भरी बातें थीं। और जो घमंड उस के हृदय में था वह बात चीत के दौरान सामने आ गया।

52. जब अभूतपूर्व एवं अथाह साधन किसी को प्राप्त होते हैं तो वह दौलत के नशे में यह समझने लगता है कि कम से कम मेरे जीवन में इस पर विनाश एवं पतन के बादल नहीं छाने वाले। धनवानों की यही मानसिकता होती है और यह संतोष उन्हें ख़ुदा से ग़ाफ़िल एवं बेपरवाह कर देता है।



36. और न मैं यह समझता हूँ कि कभी क्रियामत क़ायम होगी। और अगर मुझे अपने रब की ओर लौटाया ही गया तो मैं इस से बेहतर जगह पाऊँगा ⁵³।

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُدتُّ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٥٣﴾

37. उस के साथी ने बात करते हुए कहा, क्या तू कुफ़्र करता है, उस से जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे ठीक ठीक आदमी बना दिया ⁵⁴।

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ﴿٥٤﴾

38. लेकिन मैं कहता हूँ अल्लाह ही मेरा रब है, और मैं अपने रब का किसी को साझीदार नहीं ठहराता ⁵⁵।

لَكَتُ أَهْوَاهُ رَبِّي وَلَا أَشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٥٥﴾

39. और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो क्यों न कहा “माशाअल्लाहु ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह” (होता वही है जो अल्लाह चाहता है, अल्लाह की मर्जी के बग़ैर किसी का कोई ज़ोर नहीं) ⁵⁶ अगर तू देख रहा है कि मैं माल और औलाद में तुझ से कमतर हूँ।

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنَّ تَرَبِّيًا أَنَا أَقَلُّ مِنْكَ مَالًا وَلَوْلَا ﴿٥٦﴾

40. तो संभव है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर प्रदान करे ⁵⁷। और तेरे बाग़ पर आसमान से कोई ऐसी आफ़त नाज़िल करे कि वह चटियल मैदान बन कर रह जाए ⁵⁸।

فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿٥٧﴾

41. या उस का पानी नीचे उतर जाए और तू उस को प्राप्त न कर सके ⁵⁹।

أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ﴿٥٨﴾

42. फिर उस के फल घेरे में आ गए और वह अपने उस माल पर जो उस ने ख़र्च किया था हाथ मलता रह गया, जब कि बाग़ टट्टियों पर गिरा पड़ा था। कहने लगा काश ! मैं अपने रब के साथ किसी को साझी न ठहराता ⁶⁰।

وَإِحِيطَ بِشَعْرِهِ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفْيَهُ عَلَىٰ مَا انْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٥٩﴾

43. (तो देखो) कोई जत्था ऐसा न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उस की सहायता करता और न वह स्वयं (उस आफ़त का) मुक़ाबला कर सका ⁶¹।

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٦٠﴾

53. अर्थात् पहली बात तो यह कि क्रियामत क़ायम होगी ही नहीं। और अगर हुई भी तो जिस प्रकार इस लोक (दुनिया) में मैं संसाधनों से लादा गया हूँ उसी प्रकार प्रलोक (आखिरत) में भी सुशोभित किया जाऊँगा। यह धनवानों की मानसिकता है। वे समझते हैं कि दुनिया में उन को जो दौलत मिली है वह आजमाइश के तौर पर नहीं है बल्कि इस लिए मिली है कि वे इसी के लायक थे और जब वे दुनिया में इस के योग्य अधिकारी ठहरे तो आखिरत में क्यों नहीं ठहरेंगे?

54. उस के साथी ने जो कि मोमिन (सत्य को मानने वाला) था, उस को समझाया उस की अहं एवं घमण्ड से भरी बातों को खुला कुफ़्र बताया और उसे सोचने एवं विचार करने पर उभारा कि जिस हस्ती ने अपनी कुदरत के करिश्मे से मिट्टी से इन्सान पैदा किया, फिर पानी की तुच्छ बूँद से उस की नस्ल का सिलसिला चलाया और फिर तुझे पूरा आदमी बना कर खड़ा किया उस का तू अवज्ञकारी एवं नाशुक्रा बनता है?

इस से यह संकेत भी मिलता है कि एक मोमिन समझाने एवं इस्लाम के प्रसार में मौक़े से फ़ायदा उठाता है। उस की बात चीत इस से ख़ाली नहीं होती। उसे अपने साथी के सुधार की चिन्ता सताती है और वह बात बात में बड़े पते की बात कह जाता है।

55. यह तौहीद का ऐलान और शिर्क (बहुदेववाद) का खण्डन था।

56. अर्थात् बाग़ को देख कर तुझे अपनी बड़ाई नहीं हाँकना चाहिए था बल्कि अल्लाह की देन स्वीकार करना चाहिए तथा इस बात की स्वीकृति एवं उस की अभिव्यक्ति कि उस की किसी नेमत से लाभ उठाना उसी की मदद एवं सहायता पर आश्रित है। न मेरा अपना बलबूता है कि उस से लाभ उठा सकूँ और न कोई और शक्ति है जो मुझे लाभ पहुँचा सकती है।

इस आयत में यह शिक्षा निहित है कि आदमी जब अपने बाग़, खेत, कारखाना आदि में दाखिल हो तो पैदावार एवं उत्पादन के लुभावने दृश्य को देख कर अपने प्रभु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करे और उस में अपना विश्वास एवं अपनी आस्था जताए इस उद्देश्य के लिए “ माशाअल्लाहु ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह” का कलिमा अत्यंत उचित है।

57. अर्थात् आशा है कि अल्लाह तआला मुझे इस से बेहतर नेमत प्रदान करेगा इस में इशारा है आखिरत की जन्नत की तरफ़ जिस के मुक़ाबले में दुनिया के बाग़ों का कोई मूल्य नहीं।

58. अर्थात् अपने बाग़ पर इतना न इतरा। खुदा से डर कि वह कोई आसमानी आफ़ात नाज़िल कर के तेरे बाग़ को तहस नहस कर सकता है।

59. अर्थात् इस बात की भी संभावना है कि नहर का पानी ज़मीन में अन्दर चला जाए। मतलब यह है कि कोई न कोई दुर्घटना ऐसी घट सकती है जो बाग़ के विनाश का कारण बन जाए।

60. मोमिन बन्दे का अनुमान सही हुआ। अतः बाग़ पर ऐसी आफ़ात आई कि वह ढेर हो कर रह गया। जब उस काफ़िर ने विनाश के उस दृश्य को देखा तो अफ़सोस से हाथ मलता रह गया। उस समय उस को अपनी कुमानसिकता एवं ग़लत सोच का आभास हुआ और यह बात उस पर खुल गई कि एक खुदा को मानने की बात ही सही है इस लिए वह उस शिर्क पर पछताया जिस में वह लिप्त था।

61. जब अल्लाह ने उस के बाग़ को तबाह करना चाहा तो न वह जत्था उस काफ़िर के काम आया जिस पर वह इतराता था और न उस के गढ़े हुए शरीक (साझीदार) उस की सहायता को पहुँच सके और न ही उस के अन्दर यह बलबूता था कि वह स्वयं उस आफ़ात का मुक़ाबला करता।



44. उस समय यह बात खुल गई कि सारा इस्त्रियार अल्लाह बरहक़ ही के लिए है। वह जज़ा (बदला) देने के लिहाज़ से भी बेहतर है और आक्रिबत (परिणाम) के लिहाज़ से भी बेहतर है ⁶²।

هَٰذَاكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ هُوَ
خَيْرُ ثَوَابٍ وَخَيْرُ عُقْبَاءٍ ﴿٣٧﴾

45. और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल सुनाओ। उस की मिसाल ऐसी है कि पानी जो हम ने आसमान से बरसाया जिस से ज़मीन की वनस्पति ख़ूब घनी हो गई, फिर वह चूरा चूरा हो कर रह गई जिस को हवाएं उड़ाए लिए फिरती हैं ⁶³। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है ⁶⁴।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ
مِّنَ السَّمَاءِ فَأَخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ
هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيْحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٣٨﴾

46. माल और औलाद सांसारिक जीवन की शोभा हैं। और बाक़ी रहने वाले अच्छे कर्म तुम्हारे रब के नज़दीक फल (बदले) की दृष्टि से बेहतर हैं और उम्मीद की दृष्टि से भी ⁶⁵।

الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَةُ
الصَّالِحَةُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٣٩﴾

47. वह दिन कि हम पहाड़ों को चलाएंगे। और तुम देखोगे कि ज़मीन बिलकुल बेनिकाब हो गई है ⁶⁶। और लोगों को हम इकट्ठा करेंगे, किसी एक को भी छोड़ेंगे नहीं ⁶⁷।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ
فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٠﴾

48. और सब तुम्हारे रब के सामने पंक्ति दर पंक्ति प्रस्तुत किए जाएंगे ⁶⁸। आ गए तुम हमारे पास, उसी तरह जिस तरह हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। तुम ने तो यह समझ लिया था कि हम ने तुम्हारी पेशी के लिए कोई समय सुनिश्चित नहीं किया है ⁶⁹।

وَعَرَضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿٤١﴾

49. और आमाल नामा (सामने) रख दिया जाएगा तो तुम देखोगे कि जो कुछ उस में लिखा होगा उस से मुजरिम डर रहे होंगे और कह रहे होंगे, हमारी शामत ! यह कैसा नविशता (किताब) है कि कोई छोटी बड़ी बात ऐसी नहीं जो इस ने दर्ज न कर ली हो ⁷⁰। और जो कुछ उन्होंने ने किया था वो सब हाज़िर पाएंगे। और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा। ⁷¹

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ
مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُوَيْلَتَنَا مَا لَ هَٰذَا الْكِتَابِ
لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا
مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يُظْلَمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿٤٢﴾

62. अर्थात् इस घटना से यह बात स्पष्ट हुई कि सारे अधिकार एवं इस्तिथार अल्लाह ही के पास है जो वास्तविक प्रभु है और उस के इस्तिथारात में कोई साझीदार नहीं है। लाभ और हानि का पहुँचना सब उसी की चाह पर निर्भर है अतः इनाम और बदला उसी से माँगा जाए और उम्मीदें भी उसी से लगाई जाएँ।

इस रहनुमाई के अलावा घटना अथवा इस वृत्तांत से यह सबक भी मिलता है कि जो लोग खुदा और आखिरत पर ईमान रखते हैं और उस की बात दूसरों के सामने रखते हैं, हो सकता है कि वे धन साधन की दृष्टि से कोई महत्व न रखते हों किन्तु अन्जाम उन्हीं का भला होना है और कुफ्र करने तथा अपनी दौलत पर घमण्ड करने वालों को आखिरकार पछताना ही पड़ेगा।

63. इस मिसाल में सांसारिक जीवन की रंगीनियों को ज़मीन की बहार से दर्शाया गया है। बारिश होने पर ज़मीन की प्रस्फुटन शक्ति उभर आती है और वह हरी भरी हो जाती है, मगर उस की यह रौनक क्षणिक अथवा अस्थायी होती है। कुछ दिनों के बाद उस का रंग भी बदल जाता है, और वह चूरा चूरा हो कर रह जाती है। फिर हवा के झोंके उस को उड़ा देते हैं। इस प्रकार ज़मीन की यह रौनक खाक में मिल जाती है। सांसारिक जीवन का भी यही हाल है उस की बहार कुछ ही दिनों की है, उस के बाद उस पर झंका (खिजाँ) आने वाली है जो उस की सारी रंगीनियों एवं लुभावनेपन को समाप्त कर के रख देगी। अतः जो लोग सांसारिक जीवन को लक्ष्य बनाते हैं उन के भाग में झंका ही आने वाली है।

स्पष्ट रहे कि दुनिया को लक्ष्य बना कर जीवन बसर करने और आखिरत को लक्ष्य बना कर जीवन व्यतीत करने में ज़मीन आसमान का अन्तर है। यहाँ जिस को तिरस्कृत बताया गया है वह पहली चीज़ है।

64. अर्थात् अल्लाह जिस प्रकार बहार लाने में समर्थ है उसी प्रकार पतझड़ अथवा खिजाँ लाने में भी पूर्ण रूप से समर्थ है। और वह ज़मीन पर ऐसी खिजाँ (झंका) ला सकता है कि उस की मौजूदा रौनक सदा के लिए समाप्त हो जाए।

65. माल और औलाद अल्लाह की नेमतों में से हैं। लेकिन आदमी जब उन के बाह्य आकर्षण से इतना प्रभावित हो जाए कि उन ही का हो कर रह जाए और आखिरत को बिलकुल पीछे कर दे तो यह जीवन के मूल लक्ष्य ही से विमुखता है। इस लिए कुर्आन इस कुमानसिकता पर वार करता है और जो बात मन में बिठाना चाहता है वह यह कि जो चीज़ मरने के बाद और दुनिया के बिखर जाने के बाद भी बाक़ी रहने वाली है वह अच्छे कर्म ही हैं। इन की बुनियाद पर, अल्लाह के

यहाँ बन्दा ईनाम का हक़दार ठहराया जाएगा और इसी की बुनियाद पर वह अपने ख़ब से उस के अनुग्रह एवं कृपा की आशाएं बाँध सकता है। अतः आदमी के प्रयासों की दिशा यह होनी चाहिए कि उस का जीवन अच्छे कर्मों से भरा जीवन हो और वह अधिक से अधिक नेकियाँ कमाए। माल और औलाद के मामले में मनुष्य को वही रवैया अपनाना चाहिए जो उस की नेकियों में वृद्धि करे।

66. अर्थात् क्रियामत की घड़ी जब आयेगी तो ज़मीन की संरचना और उस की वर्तमान व्यवस्था में बड़ा परिवर्तन हो जाएगा। कोई पहाड़ चाहे वह हिमालय ही क्यों न हो, अपने स्थान पर नहीं रह सकेगा। बल्कि सब पहाड़ हवा में उड़ने लगेंगे। और फिर जैसा कि कुर्आन में दूसरी जगहों पर यह स्पष्टीकरण किया गया है कि चूर्ण विचूर्ण हो कर रह जाएँगे। और जब पहाड़ों का यह हाल होगा तो इन्सानों के बनाए हुए मकान, ऊँची इमारतों और महल आदि कहाँ बाक़ी रह सकेगें। सब ख़त्म हो जाएँगे। और ज़मीन एक खुले मैदान के रूप में दिखाई देगी।

67. अर्थात् मानव जाति के तमाम लोग जो आदम से ले कर क्रियामत तक पैदा होते और मरते रहेंगे उन सब को क्रियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा कर के हशर के मैदान में इकट्ठा किया जाएगा। राजा हो या रंक, अमीर हो या ग़रीब और ईमान वाला हो या काफ़िर, किसी की विशेषता एवं किसी की प्रमुखता का लिहाज़ किए بغैर सब को ला उपस्थित किया जाएगा।

68. उस समय खुदा के सामने उन की पेशी होगी ताकि वे दुनिया में जो कुछ करते रहे हैं उस की जवाबदेही करें। यह पेशी नियम और अनुशासन के साथ होगी। अतः उन्हें पंक्ति दर पंक्ति खड़ा कर दिया जाएगा कि वे कायनात पर शासन करने वाले कि अदालत में उपस्थित हो रहे हैं। और नमाज़ की पंक्ति उसी पंक्ति की मिसाल हैं।

69. जब लोग खुदा के समक्ष पंक्ति दर पंक्ति प्रस्तुत होंगे तो अल्लाह तआला इशार्द फ़रमाएगा कि दूसरी बार पैदा करने की जो ख़बर हम ने तुम्हें दी थी वह आज शब्द शब्द पूरी हो गई। मगर तुम लोगों ने आखिरत का इन्कार करने वालों ने यह समझ रखा था कि हमारे समक्ष पेशी होना ही नहीं है। हम ने इस का वादा किया है और न इस का कोई समय सुनिश्चित किया है। आज तुम्हें मालूम हो गया कि ऐसा समझना तुम्हारी ख़ाम ख़याली थी और सत्य वही था जिस की सूचना हम ने अपने रसूलों और किताबों के द्वारा दी थी।

70. अर्थात् हर व्यक्ति के अमल का ऐसा रिकार्ड प्रस्तुत किया जाएगा कि कोई छोटे से छोटा कर्मकाण्ड भी दर्ज होने

से नहीं रह गया होगा। अपने व्यवहारिक जीवन का इतना सही और संपूर्ण रिकार्ड देख कर मनुष्य अचरज में पड़ जाएगा क्यों कि वह आखिरत का इन्कार करता रहा है अतः यह रिकार्ड उस के लिए असंभवित होगा।

71. अर्थात् न किसी का हक मारा जाएगा और न किसी के साथ कोई ज़्यादती। न्याय और इन्साफ़ के सारे तकाज़े हर व्यक्ति के हक में पूरे किये जाएंगे।

इन आयत में अल्लाह की अदालत की जो नक़्शा प्रस्तुत किया गया है उस की मिसाल न बाइबिल में मिलती है और न कहीं और। यह कुआन ही की विशेषता है कि वह क्रियामत

और आखिरत के हालात इतने विस्तारपूर्वक बयान करता है कि जिस से विश्वास एवं संतुष्टि हो जाती है। इन आयतों में खुदा के समक्ष पेशी का जो मज़मून बयान हुआ है वह अनुपम साहित्य का अद्वितीय उदाहरण है जो दिल और दिमाग़ के बदलने के लिए बिल्कुल काफ़ी है।

यह भी स्पष्ट रहे कि आखिरत का यह अक़ीदा भारत के बहुदेववादियों के आवागमन (Transmigration) की धारणा से बिल्कुल अलग है। इस धारणा के अनुसार न क्रियामत आनी है न खुदा के समक्ष हाजिरी का कोई सवाल है। और न जवाबदेही की कोई कल्पना।



और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस ने नहीं किया। वह जिन्नों में से था। तो उस ने अपने रब के आदेशों का उल्लंघन किया। फिर क्या तुम मुझे छोड़ कर उस को और उस की नस्ल को। अपना कारसाज़ (संरक्षक-मित्र) बनाते हो हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं, क्या ही बुरा बदला है ज़ालिमों के लिए ! (अल-कुर्आन)

50. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस ने नहीं किया।⁷² वह जिन्नों में से था।⁷³ तो उस ने अपने रब के आदेशों का उल्लंघन किया। फिर क्या तुम मुझे छोड़ कर उस को और उस की नस्ल को⁷⁴ अपना कारसाज़ (संरक्षक-मित्र) बनाते हो हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं, क्या ही बुरा बदला है ज़ालिमों के लिए!⁷⁵

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝

51. मैं ने उन को आसमान और ज़मीन के पैदा करते समय नहीं बुलाया था। और न स्वयं उन के पैदा करते समय बुलाया था। और मेरा यह काम नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना बाज़ू (सहायक) बनाऊँ⁷⁶।

مَا أَشْهَدُ تَهُمْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلَقَ أَنْفُسَهُمْ وَمَا كُنْتُ مَتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ عَضُدًا ۝

52. जिस दिन वह फ़रमाएगा कि बुलाओ उन को जिन को तुम मेरा साझी समझ बैठे थे, तो वे उन को पुकारेंगे मगर वे उन को कोई जवाब न देंगे और हम उन के बीच एक विनाशकारी गढ़ा रख देंगे⁷⁷।

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝

53. और मुजरिम आग को देख लेंगे और समझ जाएंगे कि उन्हें उस में गिरना है, वे उस से बचने की कोई राह न पायेंगे।

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَافِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝

54. और हम ने इस कुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान कर दीं⁷⁸। मगर इन्सान बड़ा झगड़ालू सिद्ध हुआ है⁷⁹।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ۝

55. और जब लोगों के पास हिदायत आ गई तो उस पर ईमान लाने और अपने रब से माफ़ी चाहने में कोई चीज़ बाधक नहीं हुई, मगर यह बात कि गुज़री हुई क़ौमों के साथ जो मामला पेश आया था वह उन के साथ भी पेश आ जाए या अज़ाब उन के सामने प्रकट हो⁸⁰।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

56. और हम रसूलों को केवल इस लिए भेजते हैं कि वे खुशख़बरी दें और चेतावनी दें⁸¹। मगर काफ़िर असत्य के सहारे झगड़ने लगते हैं ताकि सत्य को परास्त करें⁸²। उन्होंने ने मेरी आयतों को और उस बात को जिस से उन को सावधान किया गया है⁸³ मज़ाक़ बना लिया है।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آلِيَّتِي وَمَا أَنْذَرُوا هُزُوا ۝

72. इस की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट ४७, ४८ में गुजर चुकी। यहाँ आदम और इब्लीस के क्रिस्से की तरफ़ इशारा करने से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि इब्लीस मानव जाति का आदिकालिक शत्रु है इस लिए वह नहीं चाहता कि मनुष्य दुनिया के इस्तिहान में सफल हो कर जन्नत का भागीदार बन जाए। यही कारण है कि वह मनुष्य को शिर्क (बहुदेववाद) में लिप्त करता है ताकि यह आखिरत को अपना जीवन लक्ष्य किसी भी हाल में न बनाए।

73. यह आयत बताती है कि इब्लीस जिन्नों में से था। इस लिए वे रिवायतें एवं आलेख खण्डनीय हैं जिन में यह कहा गया है कि वह फ़रिश्तों में से था। इब्ने कसीर ने बिलकुल सही फ़रमाया है कि इस बारे में अधिकांश रिवायतें इस्त्राईलियात में से हैं और कुछ रिवायतें तो बिलकुल झूठी हैं। (देखिए तप्सीर इब्ने कसीर (जिल्द ३ पृष्ठ ८९))

कुआन ने फ़रिश्तों का गुण यह बयान किया है कि वे अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन कभी नहीं करते। इब्लीस चूँकि जिन्नों में से था जो इन्सान की तरह जवाबदेह मख्लूक है इस लिए वह अल्लाह के आदेश का उल्लंघन कर बैठा।

74. मालूम हुआ कि इब्लीस की नस्ल भी है और उस का पूरा क़बीला है।

75. बहुदेववादी वास्तविक ख़ुदा को ख़ुदा की हैसियत से मानने के बजाय शैतान को ख़ुदा का दर्जा देने लगते हैं। इस प्रकार ख़ुदा को छोड़ कर वे शैतान को ख़ुदा बना लेते हैं। ख़ुदा का यह कितना बुरा विकल्प है जो ज़ालिमों ने अपने लिए सुनिश्चित किया है।

जहाँ तक शैतान के अस्तित्व का सम्बन्ध है कुआन उस को अपना एक अस्तित्व रखने वाले और जान बूझ कर गुमराह करने वाले और बुराई फैलाने वाले की हैसियत से प्रस्तुत करता है इस लिए इस की यह व्याख्या करना कि यह बुराई का एक सांकेतिक नाम है, उस का अपना कोई अस्तित्व नहीं कुआन के बयान के सरासर विरुद्ध है। शैतान से आदम और हव्वा दोनों को वास्ता पड़ा इस लिए नस्ल दर नस्ल इस की कल्पना इन्सानों में स्थानांतरित होती रही और नबी भी शैतान से बचने की शिक्षा देते रहे हैं इस लिए उस का अस्तित्व लोगों के नज़दीक निर्विवाद रहा है। और अरब के बहुदेववादियों को भी उस के अस्तित्व से इन्कार नहीं था। और उस के अस्तित्व का खुला सबूत यह है कि इन्सानों की बहुत बड़ी संख्या बुराई में हमेशा लिप्त रही है जैसा कि इतिहास से स्पष्ट है और जिस को हम आज भी अपनी आँखों से देख रहे हैं। इतनी बड़ी संख्या का हर दौर में बिगाड़ में लिप्त होना और बुराई पर तुल जाना साफ़ साफ़

जाहिर करता है कि बाहर से मनुष्य को वरगलाने और सत्य से विद्रोह कराने का काम हो रहा है। और यह बहकाने वाली शक्ति मनुष्य की दुश्मन है। और यह शक्ति कोई अंधी शक्ति नहीं बल्कि मक्कारी, धोखा, और षड्यंत्रों द्वारा इन्सान को फाँसने वाली उदंड शक्ति है।

76. अरब के बहुदेववादी शैतानों को अपना संरक्षक-मित्र (कारसाज़) एक तो इस अर्थ में बनाते हैं कि अपनी आत्मा की बागडोर उन के हाथ में दे देते हैं और उन के इशारों पर चलते हैं। और दूसरे इस अर्थ में कि उन को ख़ुदा की व्यवस्था तथा उस के संचालक में सहयोगी समझ कर उन के कोप से बचने के लिए उन की परस्तिश करते हैं ताकि वे उन से प्रसन्न रहें और बलाएँ टलती रहें। इस प्रकार उन्होंने ने शैतानों को भी ख़ुदा का सज़ीदार ठहराया था, इसी की पकड़ करते हुए यहाँ फ़रमाया गया है कि ख़ुदा जो परस्तिश एवं अनुपालन का योग्य अधिकारी है उस के इस अधिकार में किसी को साज़ीदार ठहराने का क्या सवाल जब कि उन का ख़ुदा के काम काज में कोई हाथ नहीं है। उन का न आसमान और ज़मीन को पैदा करने में कोई हिस्सा है और न उन की अपनी पैदाइश में। अल्लाह ने उन को अपनी मदद के लिए कभी नहीं बुलाया। पहली बात तो यह कि यह सोचना ही मूर्खता है कि अल्लाह ने किसी को अपना सहायक बनाया है और उस पर भी मूर्खता दिखाते हुए यह समझना कि शैतानों को उस ने अपना सहयोगी बनाया है। गोया ख़ुदा ने अपनी व्यवस्था के संचालन के लिए सहायक चुने भी तो गुमराह करने वाले शैतान। अल्लाह की पनाह ऐसी मूर्खतापूर्ण बातों से।

77. अर्थात् क्रियामत के दिन उन बहुदेववादियों से कहा जाएगा कि जिन को तुम ने ख़ुदा का साज़ीदार समझ कर अपना संरक्षक एवं मित्र बना लिया था उन को अब अपनी मदद के लिए बुला लो। वे उन को बुलाएँगे मगर वे उस का कोई उत्तर नहीं देंगे और दोनों के बीच विनाशकारी गद्दा तैयार कर दिया जाएगा कि न ये भक्त अपने पूज्यों के पास पहुँच सकेंगे और न उनके पूज्य अपने भक्तों के पास पहुँच सकेंगे।

78. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्त्राईल नोट १२२

79. अर्थात् बजाय इस के कि वह नसीहत पर कान धरता बहस और झगड़े पर उतर आता है और यह मनुष्य की सामान्य कमजोरी है।

80. अर्थात् स्पष्ट हिदायत आ जाने के बाद कोई कारण नहीं कि वे उस पर ईमान न लाएँ और जिस शिर्क में

वे लिप्त रहे उस से वे अल्लाह से क्षमा न माँगे। यदि वे इस के बावजूद ईमान नहीं लाते तो इस का मतलब यही है कि उन्हें भी उसी विनाश से दो चार होना पड़े जिन से पिछली क्रौमें दो चार हुई या फिर वे इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि अज़ाब को हम अपनी आँखों से देख लेंगे तो ईमान लाएंगे परन्तु उस समय ईमान लाना लाभदायक नहीं होगा। मतलब यह है कि अल्लाह की हुज्जत उन पर क़ायम हो गई, इस के बाद भी यदि वे ईमान नहीं लाते तो अज़ाब ही उन की आँखें खोल सकता है।

81. अर्थात् रसूलों का काम अज़ाब लाना नहीं बल्कि ईमान लाने वालों को सदा सर्वदा की सफलता की खुशखबरी और कुफ़्र करने वालों को सदा सर्वदा के विनाश से सावधान करना है।

82. अर्थात् जिन लोगों को रसूल की बात मानने से इन्कार है वे ग़लत और अनुचित बातों का सहारा ले कर बहस करने लगते हैं और मन्सूबा यह होता है कि किसी तरह सत्य की हार हो और वह नीचे हो कर दब जाए।

83. अर्थात् अज़ाब को जिस से उन्हें सावधान किया गया है।



और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिस को उस के रब की आयतों द्वारा याददेहानी (नसीहत) की जाए और वह उन से मुँह फेर ले और अपने करतूतों को भूल जाए? ऐसे लोगों के दिलों पर हम ने परदे डाल दिए हैं कि वे कुछ न समझें और उन के कानों में गरानी पैदा कर दी (डाट लगा दी) है । तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ कितना ही बुलाओ वे कभी हिदायत पाने वाले नहीं हैं। (अल-कुर्आन)

57. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिस को उस के रब की आयतों द्वारा याददेहानी (नसीहत) की जाए और वह उन से मुँह फेर ले और अपने करतूतों को भूल जाए? ऐसे लोगों के दिलों पर हम ने परदे डाल दिए हैं कि वे कुछ न समझें और उन के कानों में गरानी पैदा कर दी (डाट लगा दी) है ⁸⁴। तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ कितना ही बुलाओ वे कभी हिदायत पाने वाले नहीं हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا
وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً
أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ
إِلَى الْهُدَى فَلَنْ يُهْتَدُوا إِذَا أَبَدًا ٥٧

58. और तुम्हारा रब बड़ा क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। अगर वह उन के करतूतों पर उन्हें पकड़ता तो तुरन्त अज़ाब नाज़िल करता लेकिन उन के लिए एक समय निर्धारित है जिस से बच कर पनाह लेने की कोई जगह वे न पायेंगे ⁸⁵।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا
كَسَبُوا الْعَجَلُ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا
مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ٥٨

59. और ये बस्तियाँ हैं ⁸⁶। जिन्हें हम ने विनष्ट कर दिया जब कि उन्होंने ने जुल्म किया। और हम ने उन के विनाश के लिए समय सुनिश्चित कर रखा था।

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا
لَهُمُ الْيَوْمَ مَوْعِدًا ٥٩

60. और जब मूसा ने अपने सेवक से कहा था कि मैं चलता रहूँगा यहाँ तक कि दो समुद्रों के मिलने की जगह पर पहुँच जाऊँ चाहे मुझे कितना ही समय गुज़ारना पड़े ⁸⁷।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّى
أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ٦٠

61. फिर जब वे दोनों के मिलने की जगह पर पहुँच गए तो उन्हें अपनी मछली का ख़याल न रहा और उस ने समुद्र में जाने के लिए सुरंग की भाँति राह बना ली ⁸⁸।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ٦١

62. जब आगे बढ़े तो मूसा ने अपने सेवक से कहा, लाओ हमारा खाना। इस सफ़र से तो हमें बड़ी थकान हो गई ⁸⁹।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي جَائِعٌ فَلَقَدْ لَقِينَا
مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ٦٢

63. उस ने कहा आप ने देखा नहीं जब हम चट्टान के पास ठहरे थे तो मुझे मछली का ख़याल न रहा और यह शैतान ही है जिस ने मुझे ऐसे भुलावे में डाल दिया कि मैं उस का ज़िक्र न कर सका। उस ने समुद्र में जाने की राह विचित्र तरीक़े से निकाल ली ⁹⁰।

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ وَمَا أَكُنْسِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ
وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ٦٣

84. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट ४४

85. अर्थात् इन मुन्किरीन (न मानने वालों) के करतूत तो ऐसे हैं कि अल्लाह का अज़ाब इन पर तुरन्त नाज़िल हो जाए मगर अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है इस लिए वह इन्हें संभलने का अवसर दे रहा है ताकि वे तौबा (प्रायश्चित्त) कर के उस की दया के पात्र बन जाएं मगर ये मोहलत एक निर्धारित समय तक के लिए ही है। जब अज़ाब आ जाएगा तो फिर इन्हें कहीं पनाह नहीं मिल सकेगी।

86. इशारा है उन बस्तियों की तरफ़ जिन के विनाश का वर्णन कुर्आन में जगह जगह हुआ है।

87. आयत के मज़मून से स्पष्ट है कि मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से इशारा पा कर एक विशेष अभियान पर रवाना हो रहे थे और वह अभियान यह था कि एक सुनिश्चित स्थान पर अल्लाह के एक खास बन्दे से मुलाकात कर के उस के ज्ञान से लाभ उठाएँ जो दुनिया में घटित होने वाली घटनाओं के भेदों से सम्बन्धित अल्लाह ने उसे प्रदान किया है। इस सफ़र में उन्होंने अपने सेवक को साथ लिया था और चलते समय उन पर अपने दृढ़ इरादे को व्यक्त किया था कि इस सफ़र में कितना ही समय क्यों न लग जाए बहर हाल मुझे सफ़र जारी रखना है। यहाँ तक कि मैं नियत मन्ज़िल तक पहुँच जाऊँ। और वह मन्ज़िल दो समुद्रों के मिलने की जगह है।

ये कौन से दो समुद्र हैं और वे कहाँ आ कर मिलते हैं इस की पुष्टि कुर्आन ने नहीं की है। क्यों कि इस वृत्तांत को बयान करने का जो मक़सद कुर्आन के सामने है उस के लिहाज़ से ये तफ़्सीलात अनावश्यक थीं। जहाँ तक प्रासंगिक अनुमानों की बात है मूसा अलैहिस्सलाम ने यह सफ़र उस समय किया होगा जब कि वे सीना के बियाबान में ठहरे हुए थे और बनी इस्राईल को जिहाद से जी चुराने के फ़लस्वरूप यह सज़ा मिली थी कि वे चालीस साल तक सीना के बियाबान में मारे मारे फिरते रहें। इस से पहले उन को छोड़ एक लम्बे सफ़र पर जाना प्रासंगिक नहीं और न यह बात प्रासंगिक है कि मिस्र में निवास के दौरान उन्होंने ने यह सफ़र किया होगा। क्यों कि उस समय वे फ़िरऔन को सत्य की ओर बुलाने, उस पर हुज्जत क़ायम करने और बनी इस्राईल को फ़िरऔन के पन्जे से मुक्त

कराने जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों को निभाने में व्यस्त थे। अतः यही बात प्रासंगिक है कि सफ़र की यह घटना सीना में निवास के दौरान घटी होगी। और इस से यह निष्कर्ष भी निकाला जा सकता है कि दो समुद्रों के मिलने की जगह से तात्पर्य वह जगह है जहाँ लाल सागर और अक्रबा की खाड़ी मिलते हैं। यह स्थान सीना द्वीप के दक्षिण में शरमुशशैख के पास है जहाँ छोटे छोटे द्वीप बने हुए हैं और उन के सामने अर्थात् अक्रबा की खाड़ी के दूसरे किनारे पर मद्यन का इलाक़ा पड़ता है।

88. इस सफ़र के लिए मूसा अलैहिस्सलाम को यह निर्देश हुआ था कि वे मछली साथ ले लें। और जहाँ मछली ग़ायब हो जाए वही जगह उन की अभीष्ट मन्ज़िल होगी। यह मछली उन के सेवक ने सामन के साथ रख ली थी और चूँकि उस के द्वारा मन्ज़िल की निशानदेही होने वाली थी इस लिए इस मामले में चौकन्ना रहने की आवश्यकता थी। मगर दोनों को इस का ख़याल नहीं रहा। मूसा अलैहिस्सलाम तो आराम कर रहे थे और उन के सेवक ने मछली को नीचे से राह निकाल कर समुद्र में जाते हुए देख लिया किन्तु बाद में मूसा अलैहिस्सलाम को बताना भूल गया और स्वयं मूसा अलैहिस्सलाम को भी जाग जाने पर मछली के बारे में कुछ पूछने का ख़याल नहीं रहा। मछली ज़िन्दा हो कर तोशादान से समुद्र में चली गई। यह अल्लाह तआला की कुदरत का करिश्मा था और इस लिए प्रकट हुआ था कि अपने रसूल को मन्ज़िल का पता बता दिया जाए। इस से यह भी स्पष्ट हुआ कि अल्लाह के लिए किसी मुर्दा चीज़ को ज़िन्दा करना कुछ भी मुश्किल नहीं।

89. फिर जब इस जगह को छोड़ कर वे आगे बढ़े तो कुछ दूर जाने के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को थकान का एहसास हुआ। चूँकि वह मन्ज़िल से आगे बढ़ चुके थे इस लिए अल्लाह तआला ने उन पर थकान तारी कर दी उस समय उन्होंने ने अपने सेवक से खाना माँगा।

90. सेवक ने अपनी भूल को स्वीकार करते हुए मछली के विचित्र ढंग से समुद्र में चले जाने की बात मूसा अलैहिस्सलाम को बताई और इस भुलावे का उत्प्रेरक शैतान को बताया जो मनुष्य को भुलावे में डाल कर उस का ध्यान महत्वपूर्ण कामों की ओर से हटाता रहता है।



64. उस ने (मूसा ने) कहा यही तो हम चाहते थे⁹¹।
फिर वे दोनों अपने पद-चिन्हों पर वापस हुए⁹²।

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغُهُ فَأَرْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝٩٢

65. वहाँ उन्होंने ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हम ने अपनी रहमत से नवाज़ा था और अपने पास से विशेष ज्ञान प्रदान किया था⁹³।

وَجَدْنَا عَبْدًا مِنَّا عَبْدًا لَّنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَّنَا عِلْمًا ۝٩٣

66. मूसा ने उस से कहा, क्या मैं आप के पास रह सकता हूँ ताकि रुश्द (सूझ बूझ) की जो शिक्षा आप को दी गई है उस में से आप कुछ मुझे भी सिखाएँ⁹⁴।

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عَلَّمْتَنِي رُشْدًا ۝٩٤

67. उस ने कहा आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे।

قَالَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝٩٥

68. और आप उन बातों पर किस तरह सब्र कर सकेंगे जो आप की ज्ञान-परिधि से बाहर हैं⁹⁵।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۝٩٥

69. उस ने (मूसा ने) कहा इन्शाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पायेंगे और मैं किसी मामले में भी आप की अवज्ञा नहीं करूँगा।

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۝٩٦

70. उस ने कहा यदि आप को मेरे साथ रहना है तो किसी चीज़ के बारे में मुझ से न पूछें, जब तक कि मैं खुद आप से उस का ज़िक्र न करूँ⁹⁶।

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝٩٦

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक नाव में सवार हो गए तो उस ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा आप ने इस में छेद कर दिया ताकि नाव वालों को डूबो दें। यह तो आप ने अजीब हरकत की⁹⁷।

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۝٩٧
قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۝٩٧

72. उस ने कहा, मैं ने आप से कहा न था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे ?

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝٩٨

73. मूसा ने कहा भूल चूक पर पकड़ मत कीजिए, और मेरे मामले में सख्ती से काम न लीजिए।

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۝٩٩

74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि उन्हें एक लड़का मिला उस ने उसे क्रल कर दिया। मूसा ने कहा आप ने एक बेगुनाह को क्रल कर दिया, हालाँकि उस ने किसी की जान नहीं ली थी। आप ने यह बड़ी ही नारवा (बेजा) हरकत की⁹⁸।

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقْتَلْتَنِي نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا ثُكْرًا ۝١٠٠

91. अर्थात् यही वह स्थान है जिस की हमें तलाश थी। मछली का जिन्दा हो कर विचित्र तरीके से समुद्र में चला जाना मन्जिल की निशानदेही करता है।

92. अर्थात् दोनों अपने पैरों के निशानों को देखते हुए वापस हुए और उस चट्टान के पास पहुँच गए जहाँ वे अपनी मछली भूल गए थे। पैरों के निशान रेगिस्तान अथवा वीराने में झलकते हैं। इस से अन्दाज़ा होता है कि वह चट्टान वीराने में समुद्र तट से करीब थी।

93. चट्टान के पास उन की भेंट अल्लाह के एक ख़ास बन्दे से हुई जिन का नाम हदीस में ख़िज़्र आया है। “जिसे हम ने अपनी रहमत से नवाज़ा था” का इशारा नुबुव्वत की तरफ़ है कि हम ने उस ख़ास बन्दे को नुबुव्वत से अलंकृत किया था और “अपने पास से ख़ास ज्ञान प्रदान किया था ” से तात्पर्य प्राकृतिक (मनुष्य के वश एवं अधिकार के परे) मामलों में अल्लाह के फैसलों के रहस्य एवं भेदों का ज्ञान है। आगे आयत ८२ में उस अल्लाह के बन्दे, का यह मत बयान हुआ है कि “मैं ने यह काम अपनी राय से नहीं किया” जो इस बात का प्रमाण है कि ख़ुदा का आदेश वह्य के द्वारा उस को पहुँचता था और वह उस का पालन करता था। वह्य का इस प्रकार नाज़िल होना एक नबी ही पर होता है और इसी कारण उस की बात लोगों के लिए हुज्जत (तर्क) होती है।

जहाँ तक जमहूर मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों की अकसरियत) का सम्बन्ध है वे उस ख़ुदा के बन्दे के नबी ही होने के क़ायल हैं। अलबत्ता कुछ लोगों का ख़याल है कि वह फ़रिश्ता था। उन के इस ख़याल का अनुमोदन आयत के इन शब्दों से नहीं होता कि “जिसे हम ने अपनी रहमत से नवाज़ा था” क्योंकि कुर्आन में किसी जगह पर भी किसी फ़रिश्ते के बारे में इस प्रकार की बात नहीं कही गई है कि उसे रहमत से नवाज़ा गया था । और फ़रिश्ते तो प्राकृतिक आदेशों को लागू करने पर नियुक्त होते हैं इस लिए रहमत से नवाज़े जाने की बात फ़रिश्तों के बारे में उचित नहीं हो सकती । बल्कि यह बात नबी ही के लिए उचित क़रार पाई है।

94. अल्लाह तआला ने नबियों को अलग अलग विशेषताएँ प्रदान की थी । मूसा अलैहिस्सलाम को अपने से कलाम करने का सम्मान दिया तो ईसा अलैहिस्सलाम को मुर्दों को जिन्दा करने का चमत्कार प्रदान किया था। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को स्वप्न फल बताने का ज्ञान प्रदान किया था तो सुलेमान

अलैहिस्सलाम को परिन्दों की बोली समझने की क्षमता प्रदान की थी। इस प्रकार ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को प्रकट होने वाले हालात और घटित होने वाली घटनाओं के पीछे जो औचित्य एवं रहस्य निहित हैं उन का ज्ञान प्रदान किया गया था जिस ने उन के अन्दर मामलों को समझ लेने की असाधारण क्षमता पैदा कर दी थी। मूसा अलैहिस्सलाम एक महान एवं प्रतिष्ठित नबी और रसूल थे जो ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के इसी ज्ञान से लाभान्वित होना चाहते थे और इसी उद्देश्य से उन्होंने ने सफ़र किया ।

95. हज़रत ख़िज़्र पर अल्लाह तआला जिन प्राकृतिक एवं नैसर्गिक मामलों के रहस्य खोल देता था उन के सिलसिले में वे मुनासिब कार्य पद्धति अपनाते थे। मगर चूँकि हज़रत मूसा की ज्ञान-परिधि में ये बातें नहीं थी इस लिए वे उन तदबीरों को ग़लत और अनुचित समझने में सही थे। इन्सान ज़ाहिरी हालात को देख कर ही हुक्म लगाता है इस लिए हज़रत ख़िज़्र का अन्दाज़ा सही था कि जो असाधारण काम वह अन्जाम देंगे उन को वे सहन न कर सकेंगे ।

96. यह ज्ञान के मार्ग में मूसा अलैहिस्सलाम के धैर्य एवं सन्न की परिक्षा थी । सवाल न करने की कड़ी शर्त हज़रत ख़िज़्र ने इस लिए लगा दी थी ताकि हज़रत मूसा को अच्छी तरह अन्दाज़ा हो जाए कि उन के ज्ञान और उन के काम किस प्रकार के हैं।

97. हज़रत मूसा का यह एत़िराज़ जो कुछ दिखाता था उस के लिहाज़ से था और अपनी जगह सही था। जब कि हज़रत ख़िज़्र ने यह काम एक मसलहत से किया था जो अपनी जगह सही थी मगर बात छिपी हुई थी जैसा कि आगे बयान हुआ है।

हज़रत ख़िज़्र के नेतृत्व में जिस सफ़र की शुरुआत हुई उस में हज़रत मूसा के सेवक के साथ चलने का ज़िक्र नहीं है। मालूम होता है कि उन को चट्टान के पास ही छोड़ दिया गया था कि वापसी में हज़रत मूसा उन को अपने साथ ले लेंगे (वैसे सही बात अल्लाह ही जानता है)

98. यूँ देखने से लड़का किसी ऐसे अपराध का या किसी की हत्या का अपराधी नहीं हुआ था कि उसे मार दिया जाता। इस लिए हज़रत मूसा से रहा न गया और उन्होंने इस हत्या को ग़लत और बुरा ठहराया जब कि हज़रत ख़िज़्र ने छिपी मसलहत के कारण यह सेवा अन्जाम दी थी। जैसा कि आगे बयान हुआ है।

75. उस ने कहा, क्या मैं ने कहा न था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे?

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

76. मूसा ने कहा अगर इस के बाद मैं आप से कुछ पूछूँ तो आप मुझे साथ न रखिए। मेरी तरफ़ से आप को उज़्र मिल गया।

قَالَ إِنْ سَأَلْتِكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَذَا فَلَا تُصَحِّبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۝

77. फिर दोनों चले यहाँ तक कि एक बस्ती वालों के पास पहुँचे और उन से खाना माँगा। मगर उन्होंने मेहमान नवाज़ी (अतिथि सत्कार) से इन्कार कर दिया⁹⁹। वहाँ उन्होंने ने एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी। उस ने उस दीवार को खड़ा कर दिया। मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो इस की उजरत (मज़दूरी) ले लेते।¹⁰⁰

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا آتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّقُوا لَهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتُ لَخَذْتُ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝

78. उस ने कहा यह मेरे और आप के बीच जुदाई की बात हुई¹⁰¹। अब मैं आप को उन बातों की वास्तविकता बताता हूँ जिन पर आप सब्र न कर सके।

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

79. नाव का मामला यह है कि वह कुछ मिसकीनों (मुहताजों) की थी जो समुद्र में मेहनत मज़दूरी करते थे। मैं ने चाहा कि उस को ऐबदार कर दूँ क्योंकि आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) नाव को ज़बरदस्ती छीन लेता था।¹⁰²

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝

80. लड़के का मामला यह है कि उस के माता पिता ईमान वाले थे। हमें डर हुआ कि वह अपनी उद्दंडता और कुफ़्र से उन्हें कहीं तकलीफ़ में न डाले

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبُوهُ مُؤْمِنًا فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝

81. इस लिए हम ने चाहा कि उन का रब उस की जगह उन को ऐसी औलाद दे जो उस के मुक़ाबले में पाकीज़गी के लिहाज़ से भी बेहतर हो। और हमदर्दी में भी बेहतर हो¹⁰³।

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِمَّا زَكَاةً وَأَقْرَبَ رَحْمًا ۝

99. मुसाफिर को खाना खिलाना नैतिकता एवं शिष्टाचार का तकाजा है। और उस ज़माने में मुसाफिरों के लिए खाने पीने की वह सहूलतें नहीं थीं जो आज कल के दौर में पाई जाती हैं। इस लिए भला तरीका यही था कि कोई मुसाफिर किसी बस्ती में आ जाए तो उस की मेहमान नवाज़ी (अतिथि सत्कार) की जाए। मगर उस बस्ती वालों ने उन प्रतिष्ठित मेहमानों का ऐसा निरादर किया कि एक समय का खाना देने से भी इन्कार कर दिया।

100. हज़रत मूसा ने यह बात इस लिए कही कि बस्ती के लोग इस बात का हक़ नहीं रखते थे कि उन की सेवा में लगा जाए जब कि उन्होंने भूखे मुसाफिरों को एक वक़्त का खाना खिलाने से भी इन्कार कर दिया था। मगर हज़रत ख़िज़्र के सामने दूसरी मसलहत थी जिस पर अभी परदा पड़ा हुआ था।

101. हज़रत मूसा का यह एतिराज़ तीसरी बार था इस लिए और उज़्र के लिए कोई गुन्जाइश नहीं रही और जुदाई की नौबत आ गई। इस से यह पता चला कि मनुष्य चाहे वह एक पैगम्बर ही क्यों न हो, जो कुछ दिखाई देता है उसी पर हुक्म लगाता है। और जब तक अन्तर्निहित (अन्दर छिपी हुई) मसलहतें व्हय के द्वारा उस पर खोली न जाएं वह उसी पर हुक्म लगाने के लिए मजबूर है जो कुछ देखता है। शरीअत भी उस से उस की जानकारी और इल्म के अनुसार माँग करती है।

102. अर्थात् नाव को ऐबदार बनाना मसलहत से खाली न था। वास्तविकता यह थी कि इस से अभिप्रेत गरीबों की नाव को ज़ालिम बादशाह के अवैध क़ब्ज़े से बचाना था। यह बादशाह अपने इलाक़े से गुज़रने वाली हर उस नाव पर ज़बरस्ती क़ब्ज़ा कर लेता था जो अच्छी हालत में पाता। हज़रत ख़िज़्र ने यह तदबीर की कि नाव का एक तख़ता निकाल दिया ताकि बादशाह के कारिन्दे इसे टूटी हुई नाव समझ कर नज़रअन्दाज़ करें। उन्होंने यह तदबीर इस विशेष ज्ञान के चलते की थी जो उन्हें दिया गया था और चूँकि वे नबी थे इस लिए ज़ाहिर है उन्हें बादशाह की ज़ालिमाना कार्रवाई से व्हय द्वारा सूचित कर दिया गया होगा।

हज़रत मूसा का एतिराज़ जो कुछ देखा था उस के आधार पर था और सही था। और हज़रत ख़िज़्र की तदबीर उस विशेष ज्ञान के आधार पर थी जो उन्हें मिला हुआ था। इस दृष्टि से यह तदबीर बिल्कुल सही और लाभदायक थी, यद्यपि इस की मसलहत मूसा पर स्पष्ट नहीं थी।

रहा यह सवाल कि दूसरे की नाव में उस की अनुमति के बग़ैर हाथ कैसे डाला होगा तो इस का जवाब यह है कि पहली बात तो यह कि यह हाथ अल्लाह के आदेश पर लगाया गया

था, दूसरे यह कि कुछ हालात में किसी को नुक़सान से बचाने के लिए उस की संपत्ति में हाथ डालना ही पड़ता है। जैसे यदि एक घर को आग लग गई है और उस का दरवाज़ा बन्द है और उस को तोड़े बग़ैर आग को बुझाया नहीं जा सकता तो मालिक की आज्ञा के बग़ैर दरवाज़े को तोड़ दिया जाएगा। किसी व्यक्ति या समाज को क्षति से बचाने के लिए इस प्रकार किसी की संपत्ति में हाथ डालने के बहुत से उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

103. मूल अरबी (Text) में “ग़ुलाम” शब्द का इस्तेमाल हुआ है जो नाबालिग लड़के के लिए भी बोला जाता है और बालिग लड़के के लिए भी। सुरह यूसुफ़ में गुज़र चुका की जब काफ़िला वालों में से एक व्यक्ति ने कुँए में डोल डालने पर यूसुफ़ को पाया था तो वह पुकार उठा था। (ख़ुशख़बरी हो यह लड़का है) हालांकि उस समय यूसुफ़ की आयु १७ वर्ष थी। इस लिए यह लड़का जिस को हज़रत ख़िज़्र ने क़त्ल किया बालिग़ रहा होगा और काफ़िर भी। उस के माता पिता ईमान वाले थे, इस लिए लड़के का काफ़िर होना उस के मुरतद होने के समान था और मुरतद की सज़ा इस्लाम में क़त्ल है। फिर यह लड़का उदंड भी था। हज़रत ख़िज़्र को जब इन हालात का व्हय द्वारा पता चला तो उन्हें डर महसूस हुआ कि यह लड़का अपने माता पिता को यातनाएं पहुँचाएगा। इस बात को देखते हुए उन्होंने ने दुआ की कि अल्लाह उन को इस के बदले में दूसरी अच्छी औलाद प्रदान करे जो अपनी सोच और आचरण की दृष्टि से भी ख़ूब पाकीज़ा हो और अत्याधिक रहमदिल भी हो ताकि अपने माता पिता के साथ रहम का बर्ताव करे। इस के बाद उन्होंने ने अल्लाह के हुक्म से उस लड़के को क़त्ल कर दिया। यह क़त्ल या तो एक मुरतद का क़त्ल था जो शरअी लिहाज़ से जायज़ है या अगर लड़का नाबालिग़ था तो यह एक तरह से अल्लाह के प्राकृतिक एवं नैसर्गिक आदेश का पालन था जो असाधारण रूप से एक नबी के हाथों अन्जाम पाया। ऐसी सूरीत में इस को क़त्ल के साधारण आदेश जैसा नहीं समझा जा सकता। बल्कि यह एक अपवाद (Exception) था जो हज़रत ख़िज़्र के साथ खास था और जिस को साहबे शरीअत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर भी स्पष्ट कर दिया गया। यह ऐसा ही अपवादिक आदेश था जैसा कि आदेश हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उन के बेटे हज़रत इस्माईल को ज़बह (वध) करने का दिया गया था। ज़ाहिर है यह हज़रत इब्राहीम के नबी होने की हैसियत में एक खास आदेश था। इसी तरह हज़रत ख़िज़्र ने अपने लिए जो बहुवचन का सर्वनाम (Plural Pronoun) प्रयोग किया अर्थात्

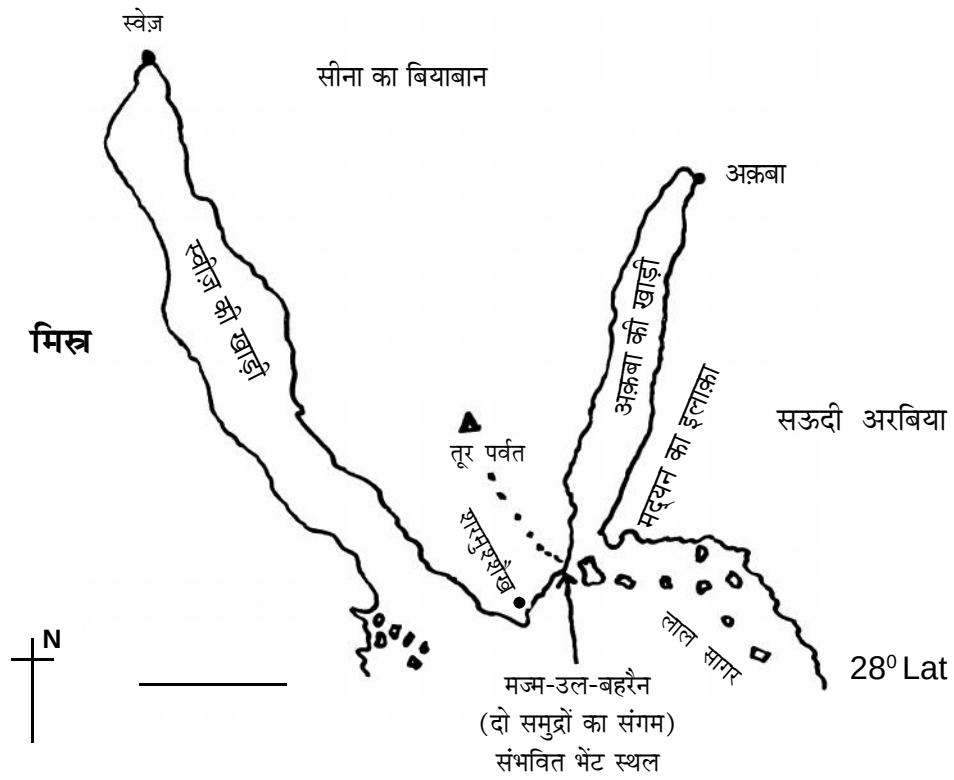
यह जो फ़रमाया कि “हम ने यह डर महसूस किया” और “हम ने चाहा” तो यह इस लिए है कि क़त्ल का यह कार्य वास्तव में प्राकृतिक (कुदरती) कार्यों में से था जिसे फ़रिश्ते ही अन्जाम दे सकते थे। इस लिए असंभव नहीं कि इस काम में फ़रिश्ते हज़रत ख़िज़्र के सहायक रहे हों और उन की

सहायता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ने (Plural Pronoun) ‘हम’ इस्तेमाल की हो। क़त्ल का यह काम समुद्र तट पर जिस ख़ामोशी के साथ अन्जाम पाया उस से भी अन्दाज़ा होता है कि अल्लाह के आदेश को लागू कराने में फ़रिश्ते हज़रत ख़िज़्र के सहयोगी रहे होंगे।



मज्म-उल-बहरैन
(दो समुद्रों के मिलने (संगम) की जगह)

हज़रत मूसा और हज़रत ख़िन्न के मिलने का संभावित स्थल



82. रही दीवार, तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, जिस के नीचे उन का खज़ाना था और उन का बाप एक नेक आदमी था। आप के रब ने चाहा कि वे अपनी जवानी को पहुँचें और अपना खज़ाना निकाल लें ¹⁰⁴। यह आप के रब की रहमत से हुआ। मैं ने जो कुछ किया अपने इख्तियार से नहीं किया ¹⁰⁵। यह है उन बातों की हक़ीक़त जिस पर आप सब्र न कर सके ¹⁰⁶।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝۱۰۶

83. और वे तुम से जुलकरनैन के बारे में पूछते हैं ¹⁰⁷। कहो उस का कुछ हाल तुम्हें सुनाता हूँ।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ ذِي الْقُرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۝۱۰۷

84. हम ने उस को ज़मीन में प्रभुत्व प्रदान किया था और हर प्रकार के साधन एवं सामाग्री प्रदान की थी ¹⁰⁸।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝۱۰۸

85. तो उस ने एक मुहिम के लिए साज़ो-सामान किया।

فَاتَّبَعَ سَبَبًا ۝۱۰۹

86. यहाँ तक कि वह सूर्यास्त की जगह तक पहुँच गया। वहाँ उस ने सूरज को एक स्याह चश्मे (काले सागर) में डूबते हुए देखा ¹⁰⁹ और उस के पास उस को एक क़ौम मिली ¹¹⁰। हम ने कहा ऐ जुलकरनैन ! चाहो इन्हें दण्ड दो, चाहो इन के साथ अच्छा बर्ताव करो ¹¹¹।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَرْجُبُ فِي عَيْنٍ حِِٔةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَا الْقَارِئِينَ إِنَّمَا أَنْتُمْ تُعَذِّبُونَ وَإِنَّمَا أَنْتُمْ تُخَذِّلُوهُمْ فَهَمُّ حُسْنًا ۝۱۱۰

87. उस ने कहा, जो इन में से जुल्म करेगा उस को हम सज़ा देंगे ¹¹²। फिर वह अपने रब की ओर लौटाया जाएगा और वह उसे सख्त अज़ाब देगा।

قَالَ إِنَّمَا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ۝۱۱१

88. और जो ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा तो उस के लिए अच्छा बदला है, और उस को हम ऐसी बातों का हुक्म देंगे जो आसान हो ¹¹³।

وَأَنَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ الْحُسْنَىٰ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝۱۱२

89. फिर उस ने (एक और मुहिम के लिए) साज़ो-सामान किया ¹¹⁴।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۝۱۱३

90. यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय की जगह तक पहुँच गया तो उसने देखा कि वह एक ऐसी क़ौम पर उदय होता है जिस के सामने हम ने कोई आड़ नहीं रखी है ¹¹⁵।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُم مِّنْ دُونِهَا سِتْرًا ۝۱۱४

104. बस्ती वालों के अप्रिय व्यवहार के बावजूद दीवार बिना किसी उजरत एवं मजदूरी के खड़ी करने की सेवा हजरत ख़िज़्र ने इस लिए अन्जाम दी कि अल्लाह तआला ने उन्हें यह ख़बर दे दी थी कि इस दीवार के नीचे यतीमों का माल गड़ा हुआ है। अगर दीवार गिर जाती तो कोई भी व्यक्ति माल निकाल कर हड़प कर सकता था जब कि बस्ती के लोग अनैतिकता एवं बुरे आचरण वाले थे। हजरत ख़िज़्र ने बस्ती वालों के व्यवहार को जो उन के साथ किया गया था खातिर में न लाते हुए अपने हाथ से दीवार की मरम्मत कर दी। यह बड़ी भलाई का काम था जो उन के हाथों अन्जाम पाया।

105. यह स्पष्ट सबूत है इस बात का कि वह नबी थे क्यों कि यह काम उन्होंने अपनी मर्जी और इख़्तियार से नहीं किया था बल्कि अल्लाह के हुक्म से किया था। मालूम होता है हजरत ख़िज़्र को जो ख़ास ज्ञान प्रदान किया गया था उस के आधार पर ख़ास तरह का काम उन के सुपुर्द हुआ था। अर्थात् ऐसी तदबीरें अपनाना जिस की मसलहत स्पष्ट न हो लेकिन अन्जाम के लिहाज़ से वह काम अच्छा और लोगों के लिए कल्याणकारी एवं हितकर हो।

106. हजरत मूसा के इस सफ़र का वृत्तांत जो एक ख़ास ज्ञान की प्राप्ति के लिए था यहाँ समाप्त हो गया। इस वृत्तांत को बयान करने से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि प्राकृतिक रूप से ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं और ऐसे हालात सामने आते हैं कि जिन की वास्तविक नीति एवं मसलहतों पर परदा पड़ा रहता है। सामान्य दृष्टि उन को देख नहीं पाती किन्तु उस में अल्लाह तआला की दया, और उस की देख रेख उस में निहित होती है। उस की एक झलक इन घटनाओं में देखी जा सकती है जो हजरत मूसा को हजरत ख़िज़्र के साथ पेश आए। अतः कुफ़्र और इस्लाम की कशमकश में ईमान वालों को जिन विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है वे उस से हिम्मत न हारें। संभव है कि इन विषम परिस्थितियों में से बहुत बड़ा ख़ैर अथवा भलाई का कोई पहलू निकल आए और उस की दया का जो कि अदृश्य है उन पर अवतरण हो। इस लिए उन्हें चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करते हुए सब्र और धैर्य से काम लें।

दूसरा सबक जो इस वृत्तांत से देना अभिप्रेत है वह यह है कि यह जगत घटना जगत है और इस के पीछे जो महान नीति निहित है उन पर परदा पड़ा हुआ है। ज़रूरी है कि एक दिन ऐसा आए जब सच्चाई को बेनिकाब किया जाए ताकि लोगों पर ज़ाहिर हो जाए कि दुनिया अन्धेर नगरी नहीं थी बल्कि एक ऐसी हस्ती की सुनियोजित योजना है जो कि सर्वज्ञ एवं तत्त्वदर्शी है। और इस योजना के पीछे महान नीति निहित थी। अल्लाह तआला ने क्रियामत का दिन इसी लिए निर्धारित किया

है ताकि दुनिया के रहस्यों पर से परदा उठ जाए और दुनिया के बारे में सही और ग़लत दृष्टिकोण रखने वालों को अपने कर्मों का पूरा पूरा बदला मिले।

107. यह सवाल मक्का के बहुदेववादियों ने यहूदियों के इशारे पर किया था और इस से अभिप्रेत यह था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इम्तिहान लिया जाए कि यदि वास्तव में आप पर वहय आती है तो जुलक्रनैन का हाल बयान करें। वे अच्छी तरह जानते थे कि आप ने न तो इतिहास का ज्ञान कहीं से प्राप्त किया है और न धार्मिक ग्रंथ पढ़े हैं इस लिए आप इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकेंगे। किन्तु अल्लाह ने अपनी वहय के द्वारा जुलक्रनैन के मसले पर इस प्रकार रौशनी डाली कि आप के नबी होने का एक और प्रमाण सामने आ गया।

यहूदियों के इस सवाल से यह बात आप ही स्पष्ट है कि उन के नज़दीक जुलक्रनैन का व्यक्ति प्रसिद्ध था और उस का यह उपनाम (लक़ब) पहले से चला आ रहा था। इस लिए कुर्आन ने इस विश्व विजेता के महान विजय अभियानों का वर्णन करते हुए उस की जीवनी के उन पहलुओं को उजागर किया जिन से उन के ईश-भय, न्यायप्रियता और खुदा के समक्ष जवाबदेही के असीम एहसास की अभिव्यक्ति होती है। इस लक़ब से उस के प्रसिद्ध होने का कारण संभवतः यह था कि उस की सत्ता एवं शासन पूरब और पश्चिम में दूर दूर तक फैल गया था और शायद यह पहला शासक है जिस का शासन मानव आबादी के बहुत बड़े हिस्से पर स्थापित हो गया था ।

क्रन का अर्थ सींग होता है और जुलक्रनैन का अर्थ दो सींगो वाला । दो सींगो से तात्पर्य पूरब और पश्चिम के वे दो छोर हैं जहाँ इन्सानी आबादी समाप्त होती थी। उस के बाद जो इन्सानी आबादी थी वह या तो दूसरी दिशाओं में थी या समुद्र एवं पहाड़ के उस पार थी।

जुलक्रनैन का व्यक्तित्व कुर्आन के नाज़िल होने के समय प्रसिद्ध था किन्तु बाद में उस की प्रसिद्धि मिटती चली गई और लोग उसे भूलाने लगे। और जब मुफ़स्सरीन (कुर्आन के टीकाकारों) ने उस के काल का निर्धारण करने की चेष्टा की तो सिकन्दर मक्कदूनी को जिस का दौर ३४५ ई. पू. से ३२३ ई.पू. रहा है और जो अरस्तू का शागिर्द था प्रसिद्ध विश्वविजेता होने के कारण वैकल्पिक रूप से उसे स्वीकार किया। हालांकि सिकन्दर मक्कदूनी के बारे में विश्वास एवं दृढ़ता के साथ न यह कहा जा सकता है कि वह मुसलमान था और न यह कि वह न्याय प्रिय शासक था और न ही पश्चिम की दिशा में उस के किसी अभियान का ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है जिस का वर्णन कुर्आन ने किया है। बल्कि इस के विपरीत इतिहास उस को एक

बुत परस्त और महत्वकांक्षी शासक की हैसियत से प्रस्तुत करता है। अतः उस को कुर्आन का जुलकरनैन नहीं ठहराया जा सकता।

चूँकि जुलकरनैन का व्यक्तित्व यहूदियों में प्रसिद्ध था इस लिए उस की खोज एवं अन्वेषण के लिए प्राचीन ग्रन्थों ही को पलटना होगा। मौजूदा दौर में मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने इन प्राचीन ग्रंथों और अन्य ऐतिहासिक साक्ष्यों के हवालों से अपनी रिसर्च तफ़्सीर तर्जुमानुलकुर्आन में प्रस्तुत की है वे अपनी रिसर्च के आधार पर ख़ोरस अर्थात् साइरस (Cyrus) को जिस का शासन काल ५२९ ई.पू. से ५५९ ईसा पूर्व था जुलकरनैन बताते हैं।

ख़ोरस फ़ारस (ईरान) का शासक था और उस ने फ़ारस और मीडिया (उत्तरी ईरान) का संयुक्त राज्य स्थापित करने के बाद पश्चिम का रुख किया था और उस के विजयाभियान टर्की तक पहुँच गए थे और पूरब में भी उस का शासन क्षेत्र फैलता गया था। उस ने बाबुल को जीतने के बाद बनी इस्राईल को जो बख़्त नस्ल के ज़माने से गुलामी का जीवन बिता रहे थे आज़ाद कर के यरूशलेम जाने की अनुमति दे दी। गोया बनी इस्राईल के लिए ख़ोरस एक मुक्तिदाता अथवा उद्धारकर्ता की हैसियत से सामने आया था और उस को यहोवा का चरवाहा कहा गया है (यशायाह ४४:२८) और एज़्रा नामी पुस्तक से उस के खुदा परस्त होने का प्रमाण मिलता है (देखिए एज़्रा अध्याय १ और अध्याय ६) इस लिए प्रबल संभावना है कि ख़ोरस का व्यक्तित्व की कुर्आन का जुलकरनैन हो।

प्राचीन इतिहासकार हीरोडोटस (Herodotus) ने साइरस को फ़ारस का प्रसिद्धतम व्यक्तित्व बतलाया है और उस के अभियानों का वर्णन किया है। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का निबंध लेखक उस का परिचय इस प्रकार करता है :-

“ साइरस अख़्मनीन शासन का संस्थापक था। यह शासन प्रथम विश्व राज्य (World State) है जिस में ईजीन सागर से ले कर सिंधु नदी तक का क्षेत्र शामिल था ----- वह एक अद्वितीय विनम्र एवं उदार शासक या प्राचीन फ़ारस वालों ने बाबा-ए-क्रौम के नाम से पुकारा और बाइबिल में जिसे बाबुल के यहूदी बन्धकों के बारे में मुक्तिदाता एवं उद्धार कर्ता कहा गया।” (Ency. Birtanica Vol. V. P. 409)

108. अर्थात् एक बहुत बड़े राज्य के लिए जिन विशाल एवं विस्तृत साधनों एवं सामग्रियों की आवश्यकता थी अल्लाह की कृपा से उसे प्राप्त हो गई थी।

109. अर्थात् पश्चिमी दिशा को ज़मीन के आख़िरी छोर तक पहुँच गया। उस के बाद समुद्र था जिस ने काले झील का रूप धार लिया था और वहाँ उसे ऐसा दिखाई दिया कि सूरज उस गदले पानी में डूब रहा है। सूरज का डूबना साधारण

मुहावरा है उस का शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाता। मतलब यह है कि जुलकरनैन पश्चिम की दिशा में अपनी मुहिम पर जब निकला तो कई देशों को जीतता हुआ एक ऐसे देश में पहुँच गया जो ज़मीन की अन्तिम सीमा थी। उस के आगे झील नुमा सागर था इस लिए उस से आगे बढ़ने का सवाल ही नहीं था। साइरस की राजधानी हमदान (ईरान) था और जब वह पश्चिम की ओर अपनी मुहिम पर निकला तो लीडिया (वर्तमान टर्की) तक का क्षेत्र जीत लिया। उस के पश्चिम में अजीन सागर पड़ता है और तट के पास अज़मीर की खाड़ी ने एक चश्मा या झील का रूप धार लिया था जिस में गदीस की नहर का लाल मिट्टी से मिला हुआ गदला पानी गिरता है। संभवतः साइरस ने इसी किनारे खड़े हो कर देखा होगा तो उसे गदले पानी में सूरज डूबता हुआ दिखाई दिया होगा। (यह तफ़्सील डा. अब्दुल अलीम अब्दुर्हमान ख़िज़्र की किताब “मफ़ाहीम जुग़राफ़िया फिल क्रिससिल कुर्आन, क्रिस्सा जुलकरनैन” से उद्धृत है जो अरबी में है और दारुशरूक जेद्दा से प्रकाशित हुई है।

110. यह तुर्क क्रौम होगी जैसा कि साइरस की घटना से स्पष्ट है।

111. अर्थात् जुलकरनैन के दिल में यह बात डाल दी कि वह एक ऐसी पोज़ीशन में है कि अगर वह उस क्रौम को दण्ड देना चाहे तो पूरी तरह उस पर सक्षम है और अगर उदार व्यवहार करना चाहे तो यह भी उस के अधिकार में है। इस का यह मतलब नहीं कि वह परास्त क्रौम पर चाहे अत्याचार करे चाहे दया करे बल्कि मतलब इस की उस पोज़ीशन को स्पष्ट करना है जो उसे प्राप्त हो गई थी।

112. अर्थात् हम सज़ा मात्र उन ही को देंगे जो अत्याचार करेंगे वरना ज़्यादाती किसी पर भी नहीं की जाएगी। जुलकरनैन के इस एलान का मतलब यह था कि वह एक आधीन एवं परास्त क्रौम के साथ उस का रवैया और उस की हुकूमत की पालीसी न्याय और समानता की होगी।

स्पष्ट रहे कि साइरसने जिस समय सत्ता संभाली थी उस समय उस के चारों ओर ज़ालिमाना हुकूमतें पाई जाती थीं और लोग अत्याचारी शासकों से तंग आ चुके थे। अतः बाबुल की हुकूमत, जोर ज़बरदस्ती एवं अत्याचार की बदतरीन मिसाल थी जिस ने बनी इस्राईल को बन्धक का सा जीवन व्यतीत करने पर विवश किया था। उन अत्याचारी शासकों के जुल्म और बर्बरता से मुक्ति दिलाने का काम अल्लाह तआला ने जिस के हाथ से लिया वह साइरस था।

कुर्आन ने जुलकरनैन के जिन विजयाभियानों का वर्णन किया है उस का मतलब यही है कि उस ने इन्सानियत को जुल्म और फ़साद से मुक्ति दिलाने के लिए यह अभियान चलाए थे।

और यह मानव जाति की बहुत बड़ी सेवा थी। इस का मतलब विभिन्न देशों पर अपनी विजयपताका पहराना तथा अपने वैभव एवं शान बढ़ाना हरगिज़ न था दुनिया में जहाँ जुल्म की घटाएँ छा जाती हैं वहाँ अल्लाह की रहमत एवं दयालुता का करिश्मा भी प्रकट होता है और इन्साफ़ की हवाएँ चलने लगती हैं।

113. इस से स्पष्ट हुआ कि जुलक्ररनैन के सामने केवल यही उद्देश्य नहीं था कि मज़लूम क़ौमों को ज़ालिम शासकों के पंजे से छुड़ाएँ बल्कि यह ऊँचा मक़सद भी सामने था कि लोगों को तौहीद की राह दिखा दी जाए। और आखिरत की जवाबदेही का एहसास पैदा कर के एक सुथरा जीवन बिताने के लिए आमादा किया जाए।

जुलक्ररनैन के इन अभियानों से जिन का ज़िक्र कुर्आन ने किया है एक बहुत बड़ी उसूली बात यह भी स्पष्ट होती है कि इस पाकिज़ा मक़सद को ले कर युद्ध करना जायज़ है।

114. यह दूसरा अभियान पूरब की ओर था ।

115. अर्थात् वह पूरब की दिशा में आबादियों को जीतता हुआ एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ लोगों के लिए धूप से बचने का कोई सामान नहीं था। अर्थात् मकान आदि नहीं थे बल्कि बियाबान में नटों एवं ख़ाना बदोशों का सा जीवन गुज़ार रहे थे।

साइरस पूरब की दिशा में अपने अभियान के तहत बलूच तक पहुँचा जो अफ़ग़ानिस्तान में है और दूसरी ओर मकरान तक जो बलूचिस्तान में है। उस के आगे पहाड़ी सिलसिला था यहाँ ख़ाना बदोश क़बीले रहते थे जो सभ्यता एवं संस्कृति से बिल्कुल अपरिचित थे।

(देखिए मफ़ाहीम जुगराफ़िया फ़ी क्रिससिल कुर्आन पृष्ठ २६२, २६३)

ये वहशी क़बीले ईरान की सीमा पर लूट मार करते और फ़साद मचाते रहे होंगे। इस लिए साइरस ने उन के क्षेत्र की आख़िरी हद तक पहुँच कर उन को परास्त एवं आधीन किया।



91. इस प्रकार हम ने (उस को उस क्रौम पर भी प्रभुत्व प्रदान) किया और उस के पास जो कुछ था उस से हम पूरी तरह बाख़बर (भिज्ञ) थे ¹¹⁶।

كَذَلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ④

92. फिर उस ने (तीसरी मुहिम का) साज़ो-सामान किया।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ⑤

93. यहाँ तक कि जब वह दो (पहाड़ों की) दीवारों के बीच पहुँचा तो उसे उन के इस तरफ़ एक ऐसी क्रौम मिली जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। ¹¹⁷

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ⑥

94. उन लोगों ने कहा ऐ ज़ुलकरनैन! याजूज और माजूज इस मुल्क में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आप के लिए कोई टैक्स सुनिश्चित कर दें ताकि आप हमारे और उन के बीच एक दीवार बना दें ¹¹⁸।

قَالُوا إِذَا الْفَرَّانَيْنِ إِنَّا يَا جُوجَ وَمَا جُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ⑦

95. उस ने कहा मेरे रब ने जो कुछ मेरे क़ब्जे में दे रखा है वह बेहतर है। तुम ताक़त से मेरी सहायता करो मैं तुम्हारे और उन के बीच दीवार बना देता हूँ ¹¹⁹।

قَالَ مَا مَلَكَ فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ⑧

96. मेरे पास लोहे के टुकड़े लाओ यहाँ तक कि जब दोनों पहाड़ों के बीच ख़ाली जगह को भर दिया तो आदेश दिया कि इस को धौंको। यहाँ तक कि जब उस को बिलकुल आग (की तरह लाल) कर दिया तो उस ने कहा लाओ अब इस पर पिघला हुआ तांबा उंडेल दूँ। ¹²⁰

أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ أَتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قَطْرًا ⑨

97. (और जब दीवार बन गई) तो याजूज और माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उस में नज़ब लगा सकते थे ¹²¹।

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ⑩

98. उस ने कहा यह मेरे रब की मेहरबानी है। फिर जब मेरे रब का वादा सामने आयेगा तो इसे ख़ाक में मिला देगा, और मेरे रब का वादा बिलकुल सच्चा है ¹²²।

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ⑪

116. इस प्रकार अल्लाह ने उन वहशी क़बीलों पर भी जुलक्रनैन को प्रभुत्व प्रदान किया और उस की उन नितियों एवं साधनों से अल्लाह तआला पूरी तरह सूचित एवं भिन्न था जो उस ने उस मुहिम को जीतने के लिए अपनाए।

117. यह जुलक्रनैन की तीसरी मुहिम का वर्णन है। प्रसंग से स्पष्ट है कि यह मुहिम उत्तर की ओर थी। वह आगे बढ़ा तो एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ दो पहाड़ों के बीच एक दर्रा था और उस के पास नागरिकता एवं सभ्यता से अपरिचित एक क़ौम रहती थी जो मुश्किल से कोई बात समझ पाती थी। संभव है कि असभ्य होने के अलावा उन की भाषा भी अलग तरह की रही हो।

साइरस ने पश्चिमी और पूर्वी देशों को जीतने के अलावा उस समय की प्रसिद्धतम, प्रतिष्ठित और सर्वाधिक मज़बूत राज्य बाबुल पर भी विजय पताका फ़हरा दी थी और उस के राज्य का क्षेत्र कैस्पियन सागर तक फैल गया था। इस लिए उस की तीसरी मुहिम उत्तर की ओर रही होगी। इतिहास में यद्यपि इस का स्पष्ट रूप से विवरण नहीं मिलता है किन्तु हीरोडोटस (Herodotas) और जेनोफ़न दोनों यूनानी इतिहासकार पुष्टि करते हैं कि गोरश ने लीडिया विजय के बाद सिथीन क़ौम के सरहद्दी हमलों की रोक थाम के लिए विशेष प्रबन्ध किये थे। (क्रिस्ससुल कुर्आन मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान जिल्द ३ पृष्ठ १५३) आज़रबाइजान और आर्मीनिया के बीच एक नहर भी “नहर कोरा” के नाम से प्रसिद्ध है जो मालूम होता है कि गोरश अर्थात् साइरस से सम्बन्ध है। उत्तर में कैस्पियन सागर और काला सागर के बीच क़ौक़ाज़ (Caucasus) का पहाड़ी सिलसिला है जिसे “कोहे-काफ़” कहते हैं। इस पहाड़ी सिलसिले के बीच एक दर्रा था। वहाँ साइरस को एक क़ौम मिली जिस की बोली अलग थी।

118. उस क़ौम ने जुलक्रनैन पर किसी तरह यह स्पष्ट कर दिया कि इस दर्रे से याज़ूज और माज़ूज निकल आते हैं और फ़साद बरपा करते हैं। इस लिए आप इस दर्रे को पाट दें ताकि उन का रास्ता बन्द हो जाए। इस काम के लिए हम आप को टैक्स देने के लिए तैयार हैं।

याज़ूज और माज़ूज (Gog & Magog) से मुराद वे क़ौम हैं जो कोहे-काफ़ (Caucasus) के उत्तर में आबाद थीं और रुस से मंगोलिया तक फैली हुई थीं उन के बारे में उन रिवायतों एवं आलेखों की कोई आधारशिला नहीं जिन में उन को एक विचित्र एवं अद्भुत मख़्लूक की हैसियत से प्रस्तुत किया गया है। बल्कि वे ऐसी ही क़ौम थीं जैसी अन्य इन्सान की क़ौमों। अलबत्ता वे वहशी थीं और निकटस्थ देशों पर हमला कर के लूट मार करती थीं। कुर्आन ने उन का

वर्णन इस तरह से किया है कि वे ज़मीन में फ़साद मचाते थे। बाईबिल में माज़ूज को नूह की नस्ल से बताया गया है अर्थात् येपेत पुत्र नूह की सन्तान। (देखिए उत्पत्ति १०:१) और पुस्तक येहेजकेल में है:

“ फिर हे मनुष्य की सन्तान गोग के विरुद्ध भविष्यवाणी कर के यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशोक और तबूल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यूँ कहता है, मैं तेरे विरुद्ध हूँ।..... मैं मागोग में और द्वीपों के निडर रहने वालों के बीच आग लगाऊँगा, और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।” (येहेजकेल अध्याय ३९)

संभवता रोश से तात्पर्य रुस (रशिया) मेशोक से तात्पर्य मास्को और तबूल से तात्पर्य बालस्क है। इस से स्पष्ट हुआ कि उस ज़माने में रुस में वहशी क़ौम रहती थीं और उपद्रव एवं तोड़ फोड़ किया करती थीं।

“और मशिरक (पूरब) की जानिब माज़ूज की आबादियाँ हैं और उन के दरम्यान कोह क़ाफ़ हदे-फ़ासिल है।” (मुक़दमा इब्ने ख़ल्दून पृष्ठ ७९)

119. अर्थात् अल्लाह ने मुझे इतनी बाहुल्यता के साथ धन प्रदान किए हैं कि इस दीवार के निर्माण के लिए जिस का उद्देश्य उपद्रवियों की राह रोकना है, तुम से टैक्स वसूल करने की आवश्यकता नहीं है। यह सेवा में निष्फल एवं निःस्वार्थ हो कर अन्जाम दूँगा बस तुम इस काम में मेहनत और बल से सहयोगी हो जाओ।

120. मालूम हुआ कि यह दीवार मिट्टी और पत्थर से नहीं बल्कि लोहे और ताँबे से बनाई गई थी। लोहे के पत्थरों को खड़ा कर के खूब धौंका गया और जब यह आग की तरह लाल हो गया तो उन पर पिघलाया हुआ ताँबा उंडेल दिया गया। इस प्रकार यह फ़ौलादी दीवार तैयार हो गई।

जहाँ तक लोहे और ताँबे के उपलब्ध होने का प्रश्न है कि वह कहाँ से मिला तो कोह-काफ़ (Caucasus) के करीबी इलाक़े आज़रबाइजान में लोहे की बहुतेरी खानें पाई जाती हैं और आर्मीनिया में लोहे के अलावा ताँबे आदि की भी।

(देखिए मफ़ाहीम जुगराफ़िया की क्रिससिल कुर्आनी पृष्ठ ३०७)

दीवार दो पहाड़ों के बीच बनाई गई थी। यह दारियाल का दर्रा था जो बन्द हो गया।

121. इस दीवार के निर्माण से याज़ूज और माज़ूज का तोड़ फोड़, मार काट एवं उपद्रव फैलाने का क्रम थम गया। दीवार ऊँची थी। इस लिए वे उस के ऊपर से चढ़ कर नहीं आ सकते थे। इस प्रकार यह महान कार्य जुलक्रनैन के द्वारा पूर्ण हुआ।

122. इस ऐतिहासिक दीवार के निर्माण को जुलकरनैन ने अपना कारनामा नहीं बताया बल्कि एक मोमिन बन्दे की तरह कहा कि यह अल्लाह की मेहरबानी का नतीजा है। और क्रियामत पर विश्वास जताते हुए कहा कि यह दीवार कितनी ही मज़बूत हो परन्तु अनश्वर नहीं है। क्रियामत के दिन तो हर हाल में इसे चूर्ण विचूर्ण होना है।

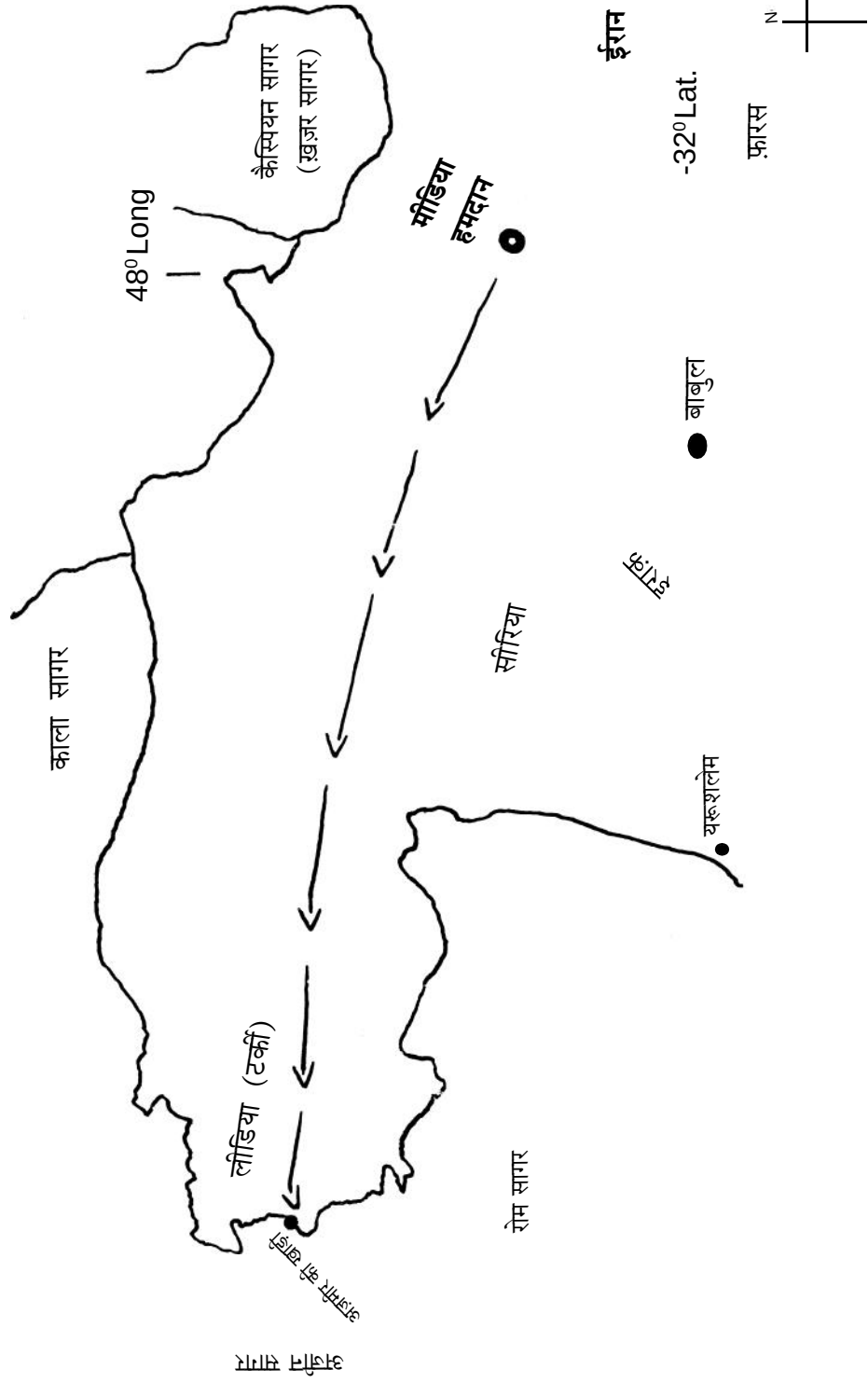
इस का यह मतलब नहीं था कि दीवार क्रियामत तक बनी रहेगी बल्कि मतलब यह था कि अगर यह लम्बी अवधि तक

टिकी भी रही तो क्रियामत के दिन इसे मिटना ही है।

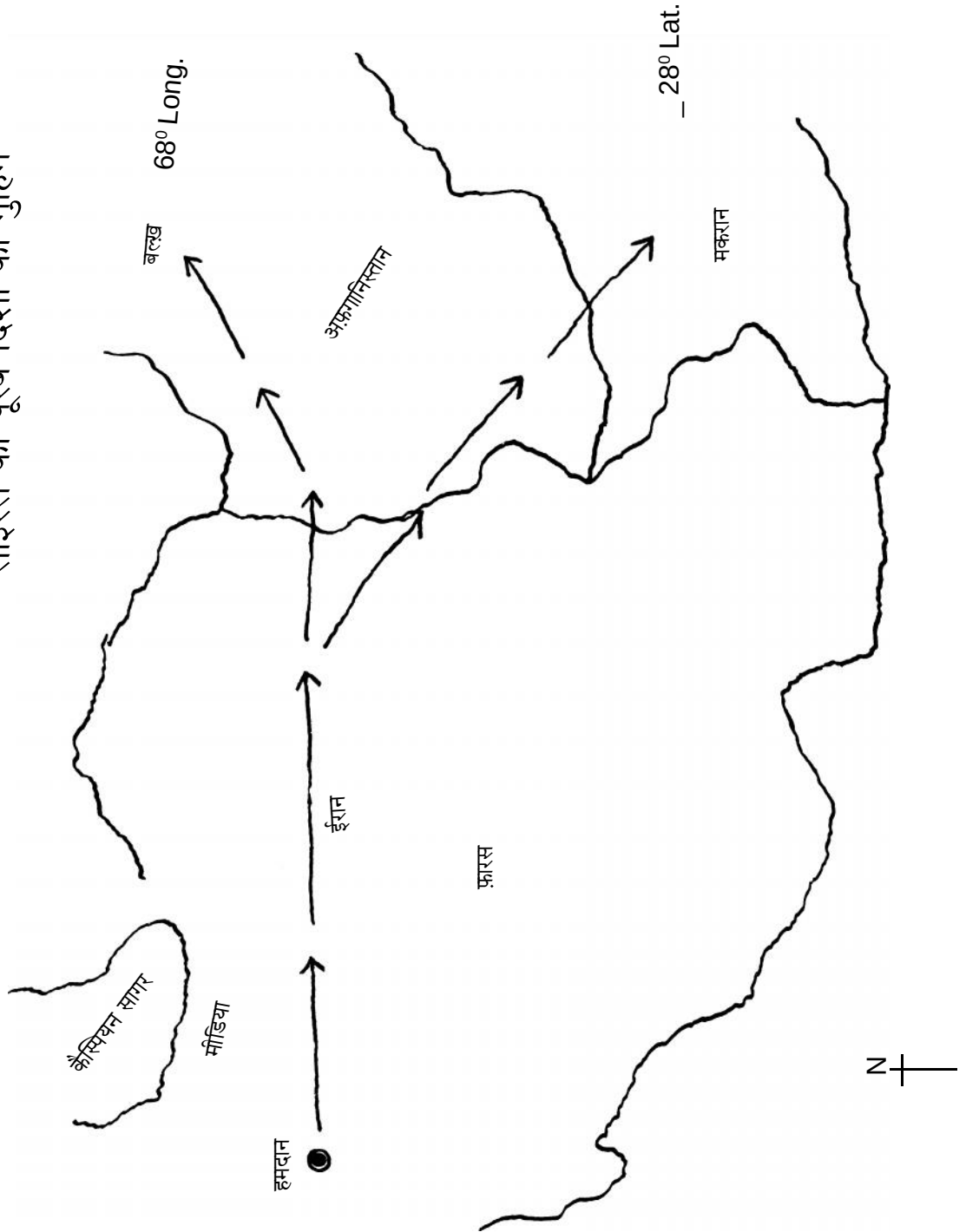
यह फ़ौलादी दीवार एक हजार वर्ष से अधिक मुद्त तक क़ायम रही। अतः अब्बासी खलीफ़ा वासिक बिल्लाह ने अपने कुछ आदमियों को इस की खोज के लिए भेजा था। और उन्होंने यह रिपोर्ट पेश की थी कि यह दीवार लोहे की ईंटों से बनाई गई है जिस में पिघला हुआ तांबा शामिल किया गया है और इस का लोहे का दरवाज़ा ताले से बन्द है। (तफ़सीर कबीर जिल्द २१ पृष्ठ १७०)



साइरस की पश्चिम दिशा की मुहिम



साइरस की पूरब दिशा की मुहिम



(अलबत्ता) जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किये उन के सत्कार के लिए फिरदौस के बाग होंगे । जिन में वे सदा रहेंगे और वहाँ से कभी जाना न चाहेंगे । (अल-कुर्आन)

99. और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे कि वे मौजों की भाँति एक दूसरे से टकराएँ¹²³ और सूर फूँका जाएगा और हम सब को जमा करेंगे¹²⁴।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمِيدُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ
فَجَعَلْنَاهُمْ جُجُجًا ۝٩٩

100. उस दिन हम काफ़िरोँ के सामने जहन्नम पेश करेंगे¹²⁵।

وَعَرَّضْنَاهُمْ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرَضًا ۝١٠٠

101. वे जिन की आँखों पर मेरे ज़िक्र से (ग़फ़लत के चलते) परदा पड़ा रहा और वे कोई बात सुन नहीं सकते थे¹²⁶।

لَا الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غَطَاٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝١٠١

102. क्या¹²⁷ इन काफ़िरोँ ने यह समझ रखा है कि वे मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को अपना कारसाज़ (कार्य साधक) बना लेंगे। हम ने काफ़िरोँ के सत्कार के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है¹²⁸।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي
أَوْلِيَاءَ إِنَّا أَعْتَدْنَا لَهُمْ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝١٠٢

103. कहो क्या हम तुम्हें बताएँ कि अपने कर्मों के लिहाज़ से सब से ज़्यादा तबाह हाल कौन लोग हैं ?

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝١٠٣

104. वे जिन की कोशिशें इस दुनिया की ज़िन्दगी में खोई गई और वे यह समझते रहे कि बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं¹²⁹।

الَّذِينَ ضَلَّ سَعِيَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ
أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝١٠٤

105. यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों और उस की मुलाकात का इन्कार किया। अतः इन के सारे कर्म अकारथ गए और क्रियामत के दिन हम इन का कोई वज़न क़ायम न करेंगे¹³⁰।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزَنًا ۝١٠٥

106. यह उन का बदला होगा जहन्नम। इस लिए कि उन्होंने ने कुफ़्र किया था और मेरी आयतों और रसूलों को मज़ाक बना लिया था।

ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا
وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝١٠٦

107. (अलबत्ता) जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने ने अच्छे कर्म किये उन के सत्कार के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे¹³¹।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝١٠٧

108. जिन में वे सदा रहेंगे और वहाँ से कभी जाना न चाहेंगे¹³²।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ۝١٠٨

123. उस दिन से अभिप्रेत क्रियामत का दिन है। जुलकरनैन का बयान इस बात पर समाप्त हुआ था कि “मेरे रब का वादा बरहक़ है” उस बरहक़ वादे की मुनासिबत से अल्लाह तआला ने ये बातें इर्शाद फ़रमाई हैं।

क्रियामत की जब शुरुआत होगी तो लोग घबराहट के कारण निकल पड़ेंगे। इन्सानों का एक सैलाब होगा जो उमड़ पड़ेगा। लोग बेतहाशा भाग रहे होंगे और इस भाग दौड़ में एक दूसरे से बुरी तरह टकराएँगे।

124. इन्सानों के परस्पर टकरा जाने का मामला पहले सूर (पहली तुरही) के मौक़े पर पेश आया। इस घटना के फ़लस्वरूप सब इन्सान मर जाएँगे। इस के बाद जब दूसरा सूर फूँका जाएगा तो सारे इन्सान चाहे वे किसी युग में और किसी जगह मरे हों दोबारा ज़िन्दा होंगे और अल्लाह तआला उन सब को अपने समक्ष पेशी के लिए जमा करेगा। इस प्रकार पूरी मानव जाति हश्र में जमा होगी।

125. जो लोग जहन्नम को इन्कार करते रहे हैं क्रियामत के दिन उन के सामने जहन्नम पेश कर दी जाएगी कि लो अब अपने सर की आँखों से जहन्नम को देख लो।

126. अर्थात् उन को होश में लाने के लिए जो नसीहत उतारी गई थी उस से उन्होंने विमुखता अपना ली थी और उस को सुनने के लिए भी वे आमादा न थे।

अल्लाह तआला ने मनुष्य को सुनने और देखने की शक्ति इस लिए प्रदान की है कि वह उस की निशानियों को देखे और उस की नसीहत को सुने मगर जब वह (मनुष्य) इस मक़सद के लिए इन शक्तियों का उपयोग नहीं करता तो ये शक्तियाँ ठिठुर कर रह जाती हैं फिर न उसे ख़ुदा परस्ती की कोई शान दिखाई देती है और न वह नसीहत सुनने को तैयार होता है।

काफ़िरों की मानसिकता का यदि विश्लेषण किया जाए तो यह समझना आसान होगा कि वे किस प्रकार गुमराही पर अपने आप को संतुष्ट कर लेते हैं। मनुष्य को जहाँ अल्लाह तआला ने निर्णय-शक्ति प्रदान की है वहीं इस के अन्दर इच्छाएँ भी रख दी हैं ताकि उस की परीक्षा हो। जब मनुष्य इच्छाओं को क़ाबू में रखने के बजाएँ उन को हावी कर लेता है तो वह ग़लत निर्णय कर बैठता है और इन्कार एवं कुफ़्र की राह इच्छाओं की दासता स्वीकार करने ही के फ़लस्वरूप अपनाता है और जब वह इच्छाओं के बिलकुल आधीन हो जाता है तो उन के परदे उनकी बुद्धि पर पड़ जाते हैं। इसी लिए सुनने और देखने की शक्तियाँ जो बुद्धि को सही ज्ञान प्रदान करने का माध्यम हैं, ताकि बुद्धि ज्ञान की रौशनी में मनुष्य का मार्गदर्शन करे, समाप्त हो कर रह जाती हैं और

इच्छाओं के ये परदे जो बुद्धि पर पड़ जाते हैं वास्तव में अज्ञानता एवं जिहालत के परदे हैं।

127. ये इस सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिस में शिर्क (बहुदेववाद) एवं आख़िरत का इन्कार करने से सम्बन्धित चेतावनी एवं नसीहत की गई है।

128. ये चेतावनी है उन लोगों को जो अल्लाह को अपना एक मात्र कार्यसाधक (कारसाज़) मानने के बजाएँ उस के बन्दों को कार्यसाधक मानते हैं। उन के बारे में वे ख़याल करते हैं कि अगर क्रियामत बरपा हो ही गई तो ये फ़रिश्ते जिन को हम “माध्यम और वसीला” बनाए हुए हैं अल्लाह के समक्ष हमारे बचाव के लिए सिफ़ारिश कर देंगे। उन पर स्पष्ट किया जा रहा है कि यह तो बस तुम्हारी ख़ाम ख़याली भर है। फ़रिश्ते या हमारे दूसरे नेक बन्दे तुम्हें क्या बचा सकेंगे जब कि हम ने काफ़िरों के सत्कार के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है।

ध्यान रहे कि आदमी अगर आख़िरत को मानता भी हो तो अल्लाह के नेक बन्दों को कारसाज़ (कार्यसाधक) मानने की धारणा ऐसी गुमराही है जो ख़ुदा के समक्ष ज़वाब देही के एहसास को मिटा देती है। नतीजा यह कि आदमी अपने कर्मों का ध्यान रखने के बजाय फ़लाँ और फ़लाँ की कारसाज़ी पर आश्रित होने लगता है। इस प्रकार आख़िरत की धारणा बिलकुल ठिठुर कर रह जाती है। ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अपना कारसाज़ बनाया है। अतः “कफ़्रारे” का अक़्रीदा इस का स्पष्ट प्रमाण है जिस के तहत वे यह समझते हैं कि हर एक के पापों का प्रायश्चित्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कर दिया है। और इस धारणा के फ़लस्वरूप आख़िरत को मानना न मानने के बराबर हो कर रह गया है।

मुसलमानों में भी बिगड़े हुए अक़्रीदे के लोग मौजूद हैं। कोई हज़रत अली और कोई हज़रत हुसैन को कारसाज़ (कार्यसाधक) बनाए हुए हैं तो कोई “पीराने-पीर” को। और यह इसी का परिणाम है कि आख़िरत की चिन्ता से वे बिलकुल निश्चिन्त हो गए हैं।

129. अर्थात् जिन्होंने आख़िरत के बजाय दुनिया को अपना लक्ष्य बना लिया है, जिन की सारी दौड़ धूप अपनी सांसारिक ज़िन्दगी को “भव्य” बनाने के लिए है। लक्ष्य का सही निर्धारण न कर के उन्होंने अपनी ज़िन्दगीयों को बिलकुल ग़लत रुख़ पर डाल दिया है और इस ख़ाम ख़याली में लिप्त हैं कि वे बड़े अच्छे काम कर रहे हैं।

आज भी मानव समाज का बहुत बड़ा भाग दुनिया ही को जीवन लक्ष्य बनाए हुए है। वह अपने व्यक्तिगत जीवन में सांसारिक एवं भौतिक लाभों ही को सामने रखते हैं और

अपने सामाजिक जीवन में भी इसी को लक्ष्य बनाते हैं। यदि वे क्रौम की सेवा करते हैं तो इस लिए कि उन की दुनिया बने। वे शिक्षा के क्षेत्र में यदि सक्रियता दिखाते हैं तो इस लिए कि क्रौम को सांसारिक एवं भौतिक ज्ञानों से मालामाल कर दें। वे आर्थिक क्षेत्र में कोई प्रोग्राम बनाते हैं तो इस लिए कि लोग सम्पन्नता का जीवन बिताएँ मतलब यह कि उन के सारे काम सांसारिक एवं भौतिक लाभों एवं प्रगति के लिए होते हैं। इस से ऊँचा कोई मक़सद उन के सामने नहीं होता कि वे मानवता के निर्माण का कार्य करें। वे अपनी इन सेवाओं एवं योगदान को अपना कारनामा समझते हैं और इन पर गर्व करते हैं।

130. दुनिया को अपना लक्ष्य बनाने वाले न खुदा की आयतों को मानते हैं और न उस के समक्ष उपस्थित होने का विश्वास रखते हैं। इस लिए उन के सारे कर्म और उन के सारे कारनामों अकारथ जाने वाले हैं। आखिरत के तराजू में वे बिलकुल बेवज़न होंगे। जब कि उन्होंने ने दुनिया के लिए सब कुछ किया था और उस का फल भी उन्हें दुनिया ही में मिल

गया था तो आखिरत में इस का बदला उन्हें क्यों मिले।

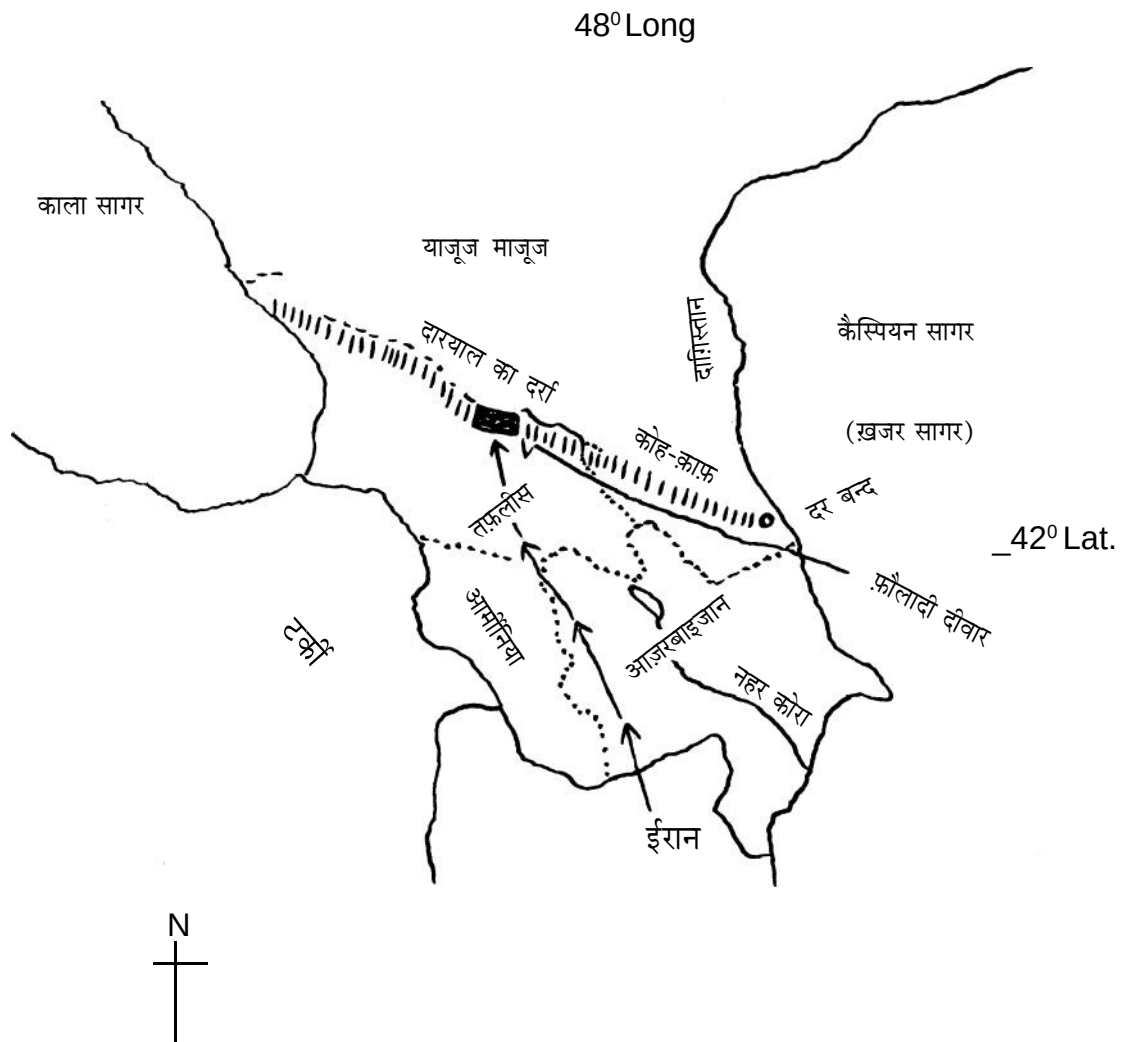
131. फ़िरदौस जन्नत ही का दूसरा नाम है। और बागों को उस से जोड़ देने से स्पष्ट होता है कि फ़िरदौस का शब्द यहाँ उस विशाल जन्नत के लिए इस्तेमाल हुआ है जिस में बहुत से बाग होंगे।

132. अर्थात् जन्नत में रह कर वे उकताएँगे नहीं कि किसी और जगह पर जाना चाहें बल्कि वे पूरे सुकून और संतोष के साथ तथा प्रफुल्ल एवं प्रसन्नचित के साथ जन्नत में रहेंगे और हमेशा वहीं रहना चाहेंगे।

कुर्आन और सुन्नत के स्पष्टीकरण से जन्नत की जो कल्पना बनती है वह यह है कि उस का फैलाव एवं उस की विशालता आसमानों और ज़मीन के फैलाव जैसा है और उन में दर्जों की बुलन्दी ऐसी है जैसे तारे जो बेहद बुलन्दी पर नज़र आते हैं। गोया जन्नत अपने आप में एक विशाल जगत है और ईमान वालों की कोई आरजू और अभिलाषा ऐसी न होगी जो वहाँ पूरी न हो। इस लिए वहाँ से कहीं और जाने या स्थान बदलने की वे कभी इच्छा ही न करेंगे।



साइरस की तीसरी मुहिम और फ़ौलादी दीवार का निर्माण



109. कहो अगर मेरे रब की बातें लिखने के लिए समुद्र रौशनाई बन जाए तो वह समाप्त हो जाएगा इस से पहले कि मेरे रब की बातें समाप्त हों, चाहे हम इस जैसे और समुद्र की वृद्धि करें¹³³।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفَذَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَذَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جُنُتَ بِثَلَاثِ مَدَادٍ ۝۹

110. कहो मैं तो तुम ही जैसा एक मनुष्य हूँ, मुझ पर वह्य आती है¹³⁴। कि तुम्हारा खुदा एक ही खुदा है, तो जो कोई अपने रब से मुलाकात की उम्मीद रखता हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को साझी न बनाए।¹³⁵

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُ الْوَاحِدُ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝۱۰

133. इशारा है इस बात की तरफ कि इस सूरह में अल्लाह की कुदरत के जिन अद्भुत कारनामों, चमत्कारों तथा उस की हिकमत के जिन करिश्मों का वर्णन हुआ है वे अल्लाह के कलिमों में से कुछ एक बातें हैं, जो सोच विचार करने तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत कर दी गई हैं वरना उस की बातें इतनी हैं कि उसे लिखने के लिए समुद्रों के बराबर रौशनाई भी कम पड़े। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं बल्कि सच्चाई है। यदि एक अणु परमाणु के गुणों एवं विशेषताओं पर एक लेख लिखा जा सकता है तो इस कायनात पर लिखने के लिए कितने दफ्तरों की आवश्यकता है? इस बात से जो बात मन में बिठाना अभिप्रेत है वह है अल्लाह की महानता, उस के ज्ञान की विशालता एवं पूर्णता और उस की कुदरत एवं हिकमत के करिश्मों का असीम होना ! अल्लाह की महानता एवं विराटता की इस धारणा से तौहीद (एकेश्वरवाद की राह भी रौशन होती है और आखिरत का विश्वास भी जड़ पकड़ता है।

134. मतलब यह है कि मैं तुम्हारी भाँति मनुष्य ही हूँ अलबत्ता जो प्रमुखता मुझे प्राप्त है वह वहय की है। अल्लाह की वहय (प्रकाशना) मुझ पर आती है तुम पर नहीं आती। और इसी प्रकाशना (वहय) के चलते मुझे रिसालत के दायित्व पर नियुक्त किया गया है।

कुर्आन के इस स्पष्टीकरण के बावजूद मुसलमानों में एक वर्ग ऐसा है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मनुष्य मानने को तैयार नहीं है। वे गोल मोल और बे असल रिवायतों का सहारा लेकर आप को फौकुल बशर (मनुष्य से बढ़ कर) सिद्ध कर दिखाना चाहता है। वह इस बात में आपत्ति व्यक्त करता है कि आप को मनुष्य (बशर) कहा जाए हालांकि इसी से आप की उस शान का पता चलता है कि एक मनुष्य को नुबुव्वत एवं रिसालत का वह सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो गया जो अन्य मनुष्यों से उसे बिल्कुल अलग कर देता है।

ईसाईयों ने जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के व्यक्तित्व के बारे में हद से आगे बढ़ कर कहना सोचना शुरू किया तो उन्हें (अल्लाह की पनाह) खुदा का बेटा बना दिया। इस से यह मालूम हुआ कि रसूलों के व्यक्तित्व से छेड़ छाड़ करने तथा उस में अतिशयोक्ति करने से गुमराही के रास्ते खुलते हैं।

135. अल्लाह के एक मात्र पुज्य, उपास्य, स्वामी, प्रभु एवं पालनहार होने का मतलब यह है कि वास्तविक प्रभुत्ववान एवं सत्ताधारी शक्ति खुदा ही है और इबादत के लायक भी वही

है। इस लिए इबादत उसी का हक़ है। और जिस तरह अल्लाह के साथ अन्य खुदाओं का कायल होना शिर्क अर्थात् उस का साझीदार ठहराना है उसी प्रकार उस की इबादत में किसी अन्य को शरीक करना भी शिर्क है। पहला शिर्क अक्रीदे अर्थात् विचारधारा अथवा धारणा का शिर्क है और दूसरा शिर्क अमल अर्थात् कर्म एवं व्यवहार का और इस्लाम की शिक्षा यह है कि मनुष्य अपनी धारणा (अक्रीदे) को भी शिर्क से पाक रखे और अमल को भी ।

इबादत में क्या क्या चीज़ें शामिल हैं उन की पुष्टि कुर्आन ने मौक़ा से कर दी है। जैसे आवश्यकताओं की पूर्ति ही के लिए पुकारना, फ़रीयाद करना, नाम की माला जपना, डरते हुए सच्चे मन से झुकना, डरना रोना, गिड़गिड़ाना, विनीत होना, पनाह ढूँढना, दुआएँ करना, नम्र मानना, सामीप्य एवं सान्निध्य चाहना, जानवर को ज़बह करते समय नाम लेना, कुर्बानी पेश करना, नेमतों के मिल जाने पर शुक्र गुज़ार होना, आशाएँ बाँधना, बेपनाह मुहब्बत करना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, सदाक़ा और ख़ैरात करना तवाफ़ (परिक्रमा) और मनासिक अदा करना, मतलब यह कि पूजा एवं परस्तिश की सारी शक़लें इबादत में दाख़िल हैं और इबादत अल्लाह के लिए ख़ास है।

स्पष्ट रहे कि अल्लाह की इबादत के साथ उस की इताअत अर्थात् उस का अनुपालन अनिवार्य है किन्तु इबादत को मात्र इताअत (अनुपालन) बताना इबादत की वास्तविकता से अनभिज्ञता का सबूत है।

इबादत या परस्तिश का सम्बन्ध उस ख़ास जज़्बे से है जो स्वभाव में निहित है और अपनी अभिव्यक्ति के लिए उस का रुख वास्तविक प्रभु की ओर ही है जब कि इताअत (अनुपालन) एक बौद्धिक निर्णय एवं शारिरीक कर्म है।

ऊपर जो उदाहरण प्रस्तुत किए गए वे सामान्य रूप से भी और दीनी परिभाषा में भी परस्तिश अथवा इबादत की श्रेणी में आते हैं न कि इताअत (अनुपालन) के !

दूसरा बड़ा अन्तर इबादत और इताअत में यह है कि इबादत अल्लाह के सिवा किसी की जायज़ नहीं। जब कि इताअत (अनुपालन) शरीअत के दायरे में रह कर इन्सानों की भी की जा सकती है। और रसूल की इताअत व उस के अनुपालन का तो अल्लाह ने स्पष्ट आदेश दिया है जब कि रसूल की इबादत न केवल यह कि जायज़ नहीं बल्कि शिर्क है।



सूरह मरयम

१९.सूरह मरयम

नाम: इस सूरह में हज़रत मरयम और मसीह अलैहिस्सलाम की पैदाइश का क्रिस्सा बयान हुआ है। इस मुनासिबत से सूरह का नाम मरयम सुनिश्चित हुआ।

नाज़िल होने का समय: मक्की है और हब्शा की हिज़रत से पहले नाज़िल हुई थी।

केन्द्रीय विषय: वास्तविकताओं एवं सच्ची घटनाओं की रौशनी में ईसाईयों की ग़लत धारणाओं का खण्डन करना है और साथ ही बहुदेववादियों को उन की गुमराहियों पर सचेत करना है। इस में दअवत के तीनों अंश तौहीद रिसालत और आखिरत उभर कर सामने आ गए हैं।

कलाम की तरतीब: आयतें १ हुरूफ़े-मुक़तआत (विभक्त अक्षरों) पर आधारित है। आयत २ से १५ में हज़रत यहया की पैदाइश का क्रिस्सा बयान हुआ है जो मसीह अलैहिस्सलाम की पैदाइश की भूमिका है।

आयत १६ से ३६ में हज़रत मरयम और हज़रत मसीह की पैदाइश का क्रिस्सा बयान हुआ है।

आयत ३७ से ४० में ईसाईयों को उन के मतभेदों पर सचेत किया गया है।

आयत ४१ से ५० में हज़रत इब्राहीम की तौहीद की दअवत और उस के फल स्वरूप सामने आने वाली हिज़रत की घटना बयान की गई है।

आयत ५१ से ६३ में हज़रत मूसा और अन्य नबियों का वर्णन हुआ है जिस से एक तरफ़ रसूलों के क्रम को बताना अभिप्रेत है और दूसरी ओर उन की शिक्षाओं से विमुखता बरतने वालों को विनाश से आगाह करना तथा उन की शिक्षाओं को ग्रहण करने वालों को सफलता की खुशख़बरी देना है।

आयत ६४ से ६६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दृढ़ता एवं धैर्य की अर्थात् सब्र के साथ जमे रहने की हिदायत है।

आयत ६७ से ९८ में आखिरत का इन्कार करने वालों के संदेहों को दूर करते हुए ईमान और यक़ीन पैदा करने वाले हालात बयान किए गए हैं।

हब्शा के शासक के दरबार में सूरह मरयम का सुनाया जाना : मक्का में जब मुसलमानों पर बहुदेववादियों के अत्याचार

बढ़ गए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों से फ़रमाया कि अगर तुम हब्शा की ओर निकल जाओ तो अच्छा है क्योंकि वहाँ एक ऐसा शासक है जिस के शासन में कोई अत्याचार नहीं कर सकता। अतः मुसलमानों का एक क़ाफ़िला हब्शा पहुँच गया। यह नुबुव्वत के पाँचवे साल की घटना है। कुरैश ने भी अपना एक प्रतिनिधि मण्डल हब्शा के राज्य के पास भेजा ताकि इन मुहाज़िरीन को वह वापस कर दे। प्रतिनिधिमण्डल ने राजा को उपहार एवं भेंट प्रस्तुत की और उस से कहा कि कुछ नवजवान हमारे मुल्क से भाग आए हैं, उन्होंने ने अपना दीन बदल दिया है अतः उन्हें हमारे हवाले कर दिया जाए।

बादशाह ने जो नज़ाशी के नाम से प्रसिद्ध था और ईसा अलैहिस्सलाम का अनुयायी था, मुहाज़िर मुसलमानों को बुला भेजा और उन से पूछा कि यह तुम ने कौन सा दीन अपना लिया है? उस समय हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने बड़ा प्रभावपूर्ण भाषण किया जिस में उन्होंने ने अज्ञानताकाल के हालात बतलाते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी नियुक्त होने तथा इस्लाम की उन खूबियों की चर्चा की जिस ने उन के जीवन की बिलकुल काया पलट दी और उन के अन्दर बेहतरीन गुणों को पैदा कर दिया। नज़ाशी ने कहा मुझे उस कलाम का कुछ हिस्सा तो सुनाओ जो तुम्हारे नबी पर नाज़िल हुआ है। हज़रत जाफ़र ने सूरह मरयम का शुरू का हिस्सा सुनाया। नज़ाशी उस कलाम को सुन कर रो पड़ा और दरबार के पादरी भी भाव विभोर हो उठे। नज़ाशी ने कहा निस्संदेह यह कलाम और जो कुछ हज़रत ईसा लाए थे, एक ही नूर की किरणें हैं। फिर उस ने कुरैश के प्रतिनिधिमण्डल से कहा मैं इन लोगों को हरगिज़ तुम्हारे हवाले न करूँगा। उस ने उन के उपहार एवं भेंट भी यह कह कर वापस कर दिए कि मुझे रिश्तत की ज़रूरत नहीं है। और मुसलमान मुहाज़िरीन से कहा तुम अमन और चैन से रह सकते हो।

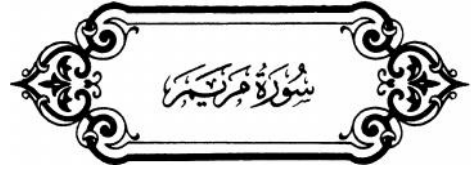
अल्लाह के कलाम की यह वह तासीर थी जिस के आगे राजा और रंक सब बेबस थे। (हब्शा के हिज़रत की घटना सविस्तार सीरत इब्ने हिशाम जिल्द १ पृष्ठ ३४३ से ३६४ में बयान हुई है।)

१९.सूरह मरयम

आयतें : 98

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



1. काफ़, हा, या, ऐन, सौद ¹।

كَهَيْصَ ①

2. यह तुम्हारे रब की उस रहमत (दयालुता) का ज़िक्र है जो उस ने अपने बन्दे ज़करिया पर की थी ²।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ②

3. जब उस ने अपने रब को चुपके चुपके पुकारा ³।

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ③

4. उस ने दुआ की ऐ मेरे रब !मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं और सर बुढ़ापे से सफ़ेद हो गया है, और ऐ मेरे रब ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैं ने तुझे पुकारा हो और महरूम रहा हूँ ⁴।

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ④

5. मुझे अपने बाद अपने भाई बन्धुओं से डर है ⁵ और मेरी बीवी बाँझ है ⁶। तो तू ख़ास अपनी तरफ़ से मुझे वारिस प्रदान कर ⁷।

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَأْيِكَ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ⑤

6. जो मेरा वारिस भी हो और याक़ूब की संतान का भी ⁸ और ऐ मेरे रब उसे पसंदीदा बना ⁹।

يَرْثُنِي وَيَرْثِ مَنْ أَلِ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥

7. ऐ ज़करिया हम तुम्हें एक लड़के की खुशखबरी देते हैं जिस का नाम यहया होगा ¹⁰। हम ने इस से पहले इस नाम का कोई व्यक्ति पैदा नहीं किया ¹¹।

يَزَكَرِيَّا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦

8. उस ने निवेदन किया ऐ मेरे रब !मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जब कि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की हद को पहुँच चुका हूँ ¹²।

قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ⑧

9. फ़रमाया ऐसा ही होगा ¹³। तुम्हारा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। मैं इस से पहले तुम्हें पैदा कर चुका हूँ जब कि तुम कुछ भी न थे ¹⁴।

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْنٍ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ⑨

1. ये हुरूफ़े मुक़तआत (विभक्त अक्षर) हैं जिन के बारे में ज़रूरी स्पष्टीकरण सूरह बकर: नोट १ में और सूरह यूनुस नोट १ में किए जा चुके हैं। इन अक्षरों का इशारा इस सूरह के कुछ महत्वपूर्ण विषयों की तरफ़ है जिस की तफ़सील यह है।

“क्राफ़” का इशारा “كُنْ فَيَكُونُ” (“वह आदेश देता है “हो जा” तो वह हो जाती है” आयत ३५) की तरफ़ है, और यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि खुदा अपने एक आदेश से किसी भी चीज़ को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाता है उस ने अगर ईसा को बिना बाप के पैदा किया तो इस में आश्चर्य की क्या बात है कि उस को खुदा का बेटा ठहराया जाए, या खुदा के कामों में साज़ीदार ठहराया जाए। इस विषय से सम्बन्धित “क्राफ़” (का) कुन अर्थात् हो जा के लिए एक प्रतीक (Significant Letter) है जो ज़ेहन को उक्त वास्तविकता की ओर मोड़ता है।

हा (ह) का इशारा “हैय्यिनुन” هَيِّنْ (आसान) की तरफ़ है। आयत ९ में हज़रत यहया की आसाधरण पैदाइश के सिलसिले में फ़रमाया गया

قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْنٍ

(“तुम्हारा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है” आयत ९) और फिर हज़रत यहया की पैदाइश हो या हज़रत ईसा की, असाधारण तरीक़े से उन को पैदा करना अल्लाह के लिए कोई कठिन काम न था उस की कुदरत के ये मामूली क़रिश्मे हैं।

“या” (य) का इशारा यहया की तरफ़ है जिन का ज़िक्र आयत ७ से १५ में हुआ है।

“ऐन” का इशारा ईसा की तरफ़ है जिन का नाम आयत ३४ में आया है और जिन की पैदाइश का ज़िक्र इस से पहले की आयतों में तफ़सील से हुआ है।

“सॉद” (स) का इशारा सबिय्या की तरफ़ है जिस का अर्थ है बच्चा। आयत १२ में हज़रत यहया के बारे में यह महत्वपूर्ण बात बयान हुई है कि

وَأَتَيْنَاهُ الْحَكَمَ صَبِيًّا

(हम ने उसे हुक्म अर्थात् हिकमत प्रदान की जब कि वे अभी बच्चे थे) इसी प्रकार आयत १९ में हज़रत ईसा के बारे में सबिय्या (बच्चे) का शब्द प्रयोग हुआ है और वहाँ उन के पालने से बात करने का वर्णन हुआ है। अर्थात् अल्लाह के उस चमत्कार का वर्णन है कि ईसा को उस ने जब कि वह पालने में (अर्थात् बच्चा) थे बोलने बात चीत करने की शक्ति दी।

(और अल्लाह ही अपने कलाम के भेदों को बेहतर जानता है।)

2. हज़रत ज़करिया बनी इस्राईल में नियुक्त होने वाले नबियों में से हैं और उन का ज़माना हज़रत मसीह के जन्म से पहले का है और मसीह के जन्म के बाद भी वे एक मुदत तक ज़िन्दा रहे।

3. दुआ के आदाब (Etiquette) में से यह है कि बन्दा जब अपने लिए दुआ करे तो चुपके चुपके करे ताकि वह दिखावे और नुमाइश से पाक हो और अपने रब के सामने अपने दिल की बातों को पेश कर सके।

4. हज़रत ज़करिया ने जिस समय औलाद के लिए दुआ की उस समय वे काफ़ी बूढ़े हो चुके थे उन की हड्डियाँ तक काफ़ी कमज़ोर हो गई थीं और सर के बाल सफ़ेद हो गए थे। बुढ़ापे की इस आयु में संतान की आशा नहीं की जा सकती थी। मगर उन्होंने अल्लाह से आशान्वित हो कर दुआ की कि वह अपनी विशेष कृपा से उन्हें अलंकृत करे। यह दुआ उन के दिल की गहराइयों से निकली थी और शुक्र एवं कृतज्ञता की इन भावनाओं के साथ थी कि प्रभुवर जब कभी मैं ने तुझे पुकारा तेरे दर से नामुराद नहीं लौटा हूँ। दुआ के ये शब्द अल्लाह की दया के जोश में आने के लिए अत्यंत अनुकूल थे।

5. डर इस बात का कि कोई व्यक्ति दीनी रहनुमाई और नेतृत्व को संभालने वाला नहीं है।

स्पष्ट रहे कि बनी इस्राईल में दीनी रहनुमाई और नुबुव्वत का पद उन के एक क़बीलें बनी लावी में चला आ रहा था। और हज़रत ज़करिया के ज़माने में बनी इस्राईल जिस पतन का शिकार थे उस को देखते हुए इस दायित्व का भार ग्रहण करने वाला कोई नज़र नहीं आता था। इस लिए हज़रत ज़करिया को चिन्ता हुई कि उन के बाद बनी इस्राईल की रहनुमाई और नेतृत्व का क्या प्रबन्ध होगा।

6. लूका की इन्जील में है:-

“यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल में ज़करियाह नाम का एक याजक था और उस की पत्नी हारून के वंश की थी जिस का नाम इलीशिबा था। और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे। और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने वाले थे। उन के कोई भी सन्तान न थी, क्यों कि इलीशिबा बाँझ थी और वे दोनों बूढ़े थे।” (लूका १:५, ६, ७)

7. तात्पर्य सन्तान है। अतः सूरह आले इमरान में आयत ३८ में “ज़ुररिय्यातन तैय्यिबतन” (पाकीज़ा औलाद) के शब्द इस्तेमाल हुए हैं।

8. वारिस से तात्पर्य दीन की पूँजी नुबुव्वत के ज्ञान एवं दायित्व का वारिस है। अतः “याक़ूब की सन्तान का वारिस” के शब्द इस भाव की पुष्टि करते हैं।

जहाँ तक दौलत के उत्तराधिकार का सम्बन्ध है नबी हज़रत

न इस उद्देश्य से धन एकत्र करते हैं और न उन्हें इस की चिन्ता होती है बल्कि जैसा कि हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाया है कि नबियों के माल का कोई वारिस नहीं होता

لَا نُورِثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ (بخاری کتاب الجہاد)

अर्थ :- “हमारा कोई वारिस नहीं होता। जो कुछ हम छोड़ते हैं वह सदका होता है।”

अलबत्ता उन्हें इस बात की चिन्ता होती है कि उन के बाद दीन के ज्ञान की अमानत का कौन दायित्व उठाएगा और कौम की दीनी रहनुमाई एवं नेतृत्व के लिए कोई उचिततम व्यक्ति है या नहीं।

9. अर्थात् दीन, नैतिकता, शिष्टाचार एवं चरित्र की दृष्टि से उसे अपना प्रिय बना।

10. यह खुशखबरी हज़रत ज़करिया को अल्लाह तआला ने दी और जैसा कि सूरह आले-इमरान आयत ३९ में बयान हुआ, यह खुशखबरी अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्तों ने सुनाई थी जब कि वे नमाज़ पढ़ रहे थे।

यहया के शाब्दिक अर्थ हैं “वह ज़िन्दा रहेगा” यह नाम अल्लाह ने रखा था जो ज़ाहिर है हिकमत से खाली नहीं हो सकता। सच यह है कि हज़रत यहया को सत्य कहने के कारण यहूदियों के राजा हीरोदोस ने एक नर्तकी के कहने पर क़त्ल कर दिया था। इस प्रकार वे सत्य के लिए शहीद हो गए, और शहीद होने वाले जैसा कि अल्लाह का इर्शाद है, मरते नहीं बल्कि ज़िन्दा रहते हैं। (सूरह बक्रर: आयत १५४) इस लिए हज़रत यहया मर कर अमर हो गए। गोया उन के नाम ही में यह बात निहित थी कि यह व्यक्तित्व अमर रहने वाला है। इस प्रकार घटनाक्रम ने नाम के भाव को स्पष्ट कर दिया।

11. मूल अरबी (Text) में शब्द “समिय्या” इस्तेमाल हुआ है जिस का एक अर्थ तो “हम नाम” के हैं और दूसरा अर्थ उपमा एवं उदाहरण के हैं। पहले अर्थ के अनुसार मतलब यह है कि यह एक अनोखा नाम है, इस से पहले किसी का भी यह नाम नहीं रखा गया था और दूसरे अर्थ के अनुसार मतलब यह है कि यहया का व्यक्तित्व कुछ प्रमुख गुणों एवं विशेषताओं के कारण एक अद्वितीय व्यक्तित्व हो गया जिस का कोई उदाहरण प्रस्तुत न किया जा सके। अतः उन के प्रमुख गुणों में

से एक यह है कि उन का जन्म असाधारण विधि पर हुआ। उन के माता पिता न केवल बूढ़े हो गए थे बल्कि उन की माता बाँझ भी थी। इस के बावजूद उन का जन्म हुआ। दूसरा यह कि उन को बचपन ही में हिकमत प्रदान हुई। तीसरा यह कि उन में बला का आत्म संयम और अपने आप पर क़ाबू रखने की शक्ति थी। अतः वे दुनिया की लज़्ज़तों से जीवन भर अपरिचित रहे। बाइबिल में उन का यह हाल बयान हुआ है कि:-

“यह यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहिने था और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बाँधे हुए था और उस का भोजन टिट्टियाँ और बन मधु था। (मती ३:४)

और यह सादा जीवन उन्होंने सत्य के उद्देश्य की लगन में बसर किया। उन पर एक ही धुन सवार थी और वह यह कि लोग अल्लाह की तरफ़ पलटें। इस उद्देश्य के लिए वे गली गली जाते और बियाबान की खाक छानते।

12. यह प्रश्न शंका के तौर पर नहीं था बल्कि और अधिक संतोष की प्राप्ति के लिए था कि जिस लड़के की उन को खुशखबरी दी जा रही है उस के जन्म की क्या सूत होगी।

13. अर्थात् तुम्हारे बुढ़ापे के बावजूद और तुम्हारी पत्नी के बाँझ होने के बावजूद तुम्हारे यहाँ लड़का पैदा होगा।

14. अर्थात् जो खुदा तुम को अनस्तित्व से अस्तित्व में ले आया उस के लिए यह क्या मुश्किल है कि तुम्हें बुढ़ापे में और तुम्हारी पत्नी के बाँझ होने के बावजूद औलाद बरख़ो।

हज़रत यहया के असाधारण विधि पर जन्म लेने की यह घटना वास्तव में भूमिका है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जन्म लेने की घटना की जो बिना बाप के पैदा हुए थे। इस से वास्तव में यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि यदि असाधारण विधि पर जन्म लेने के कारण हज़रत यहया खुदा या खुदा का बेटा नहीं हुए तो हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) अपनी असाधारण पैदाइश के चलते खुदा या खुदा का बेटा कैसे हो सकते हैं? अल्लाह की कुदरत के करिश्मे तो विभिन्न रूपों में प्रकट होते ही रहे हैं? फिर जो कुदरती करिश्मा हज़रत ईसा से संबन्धित प्रकट हुआ उस को उन के अल्लाह की सन्तान होने पर समझना, क्या औचित्य?

ध्यान रहे कि लूका की इन्जील में भी भूमिका के तौर पर हज़रत यहया के जन्म की घटना बयान हुई है।



सलामती है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाएगा । और (ऐ पैगम्बर !) किताब में मरयम का ज़िक्र करो, जब कि वह अपने लोगों से अलग हो कर पूर्व की ओर एकान्तवासी हो गई । फिर उन से परदा कर लिया । तो हम ने उस के पास अपनी रूह (फ़रिश्ते) को भेजा और वह उस के सामने ठीक आदमी के रूप में प्रकट हो गया। (अल-कुर्आन)

10. उस ने निवेदन किया ऐ मेरे रब ! मेरे लिए कोई चिन्ह निर्धारित कर दे ¹⁵। फ़रमाया तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन रात और दिन लोगों से बात न कर सकोगे ¹⁶।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً قَالَ
إِنَّكَ أَنتَ الْكَلِمَةُ النَّاسُ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ⑩

11. फिर वह इबादत के हुजरे से निकल कर अपनी क्रौम के सामने आया और उन से इशारे से कहा कि सुबह और शाम तस्बीह (अल्लाह का गुण गान) करो ¹⁷।

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ مِنَ الْحَرَابِ فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ أَنْ
سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ⑪

12. ऐ यहया किताब को मज़बूती से पकड़ लो, ¹⁸ और हम ने उस को बचपन में ही हिकमत प्रदान की ¹⁹।

لِيُعْجِزَ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ⑫

13. और ख़ास अपने पास से नर्म दिली ²⁰ और पाकीज़गी ²¹। और वह बड़ा परहेज़गार था ²²।

وَحَنَانًا مِّنْ دُنَا وَزَكَاةً وَكَانَ تَقِيًّا ⑬

14. अपने माता पिता के साथ नेक सुलूक करने वाला था। वह ख़ुदसर (उदंड) एवं अवज्ञाकारी न था ²³।

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ⑭

15. सलामती है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाएगा ²⁴।

وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ⑮

16. और (ऐ पैग़म्बर !) किताब में मरयम का ज़िक्र करो, ²⁵ जब कि वह अपने लोगों से अलग हो कर पूर्व की ओर एकान्तवासी हो गई ²⁶।

وَإِذْ كَرَّمْنَا مَرْيَمَ إِذْ أَنْتَبَدَتْ مِنْ أَهْلِهَا
مَكَانًا شَرْقِيًّا ⑯

17. फिर उन से परदा कर लिया ²⁷। तो हम ने उस के पास अपनी रूह (फ़रिश्ता) को भेजा और वह उस के सामने ठीक आदमी के रूप में प्रकट हो गया।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا
إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ⑰

18. वह बोल उठी अगर तू ख़ुदा से डरने वाला है तो मैं तुझ से रहमान की पनाह माँगती हूँ ²⁸।

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ⑱

19. उस ने कहा मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुम्हें एक पाकिज़ा लड़का दूँ ²⁹।

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكَ غُلَامًا زَكِيًّا ⑲

15. निशानी उन्होंने इस लिए माँगी ताकि जिस बात की खुशखबरी उन्हें दी गई है उस के सामने आने का ठीक ठीक समय उन्हें मालूम हो जाए और वह अल्लाह के जिक्र में व्यस्त हो जाएँ।

16. इस की व्याख्या सूरह आले इमरान नोट ६१ में गुजर चुकी “सविद्या” अर्थात् स्वस्थ होना इस बात की दलील है कि तीन दिन तक हज़रत ज़करिया का बात न कर सकना गूँगे पन यह किसी रोग के कारणवश न था बल्कि यह एक असाधारण दशा थी जिस में वह अल्लाह की पाकी अथवा उस का गुणगान तो कर सकते थे किन्तु बात नहीं कर सकते थे।

17. यह इस बात की तरफ़ इशारा था कि अल्लाह की ओर से एक असाधारण घटना सामने आने वाली है अतः उस के गुणगान में लग जाओ।

पता चला कि (तस्बीह करना) उस का गुणगान करना बहुत बड़ी इबादत है और सुबह शाम इस का आयोजन करना अल्लाह के नज़दीक बेहद प्रिय व्यस्तता है। इस इबादत की क्रूर वही लोग घटाते हैं जो दीन के मूल्यों (Values) के मामले में सूझ बूझ नहीं रखते हैं।

18. प्रसंग से स्पष्ट है कि जिस प्रकार खुशखबरी दी गई थी, यह्या की पैदाइश हुई और बाद में उन्हें नबी भी नियुक्त किया गया। किताब से तात्पर्य तौरात है और उस को मज़बूती से पकड़ने का मतलब उस पर पक्का ईमान रखना और सही तौर पर चल पड़ना है।

इस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो रही है कि हज़रत यह्या के ज़माने में तौरात का एक भाग अपने मूल रूप में सुरक्षित था इसी लिए, उस को मज़बूती के साथ थामने का आदेश दिया गया।

19. यह हज़रत यह्या पर अल्लाह तआला की ख़ास अनुकम्पा हुई कि उन को बचपन ही में उस ने हिकमत से अलंकृत किया अर्थात् उन्हें सूझबूझ प्रदान की।

20. नर्म दिली (कोमल हृदयता) वह उच्च गुण है जो इन्सान को नसीहत कुबूल करने अथवा शिक्षा ग्रहण करने पर आमादा करती है तथा इस से मन में भावुकता पैदा हो जाती है जिस से मनुष्य दूसरों की चोट अपने मन में महसूस करने लगता है। यह चीज़ उसे मानवता के प्रति हमदर्द बनाती है और वह बिगड़े हुए लोगों के सुधार के लिए उठ खड़ा होता है। हज़रत यह्या में यह गुण अल्लाह के उदार अनुग्रह से बेपनाह था।

21. अर्थात् आत्मा की पूरी स्वच्छता एवं सुद्धता। हर प्रकार के आन्तरिक रोगों से پاک। बिल्कुल पवित्र मन।

22. अर्थात् जिस प्रकार मन और अन्तर्मन पाक साफ़ था उसी प्रकार बाहर से भी वह परहेज़गार था। अल्लाह से डरते हुए उस की शरीअत के अनुसार जीवन गुज़ारने वाला।

23. अल्लाह के बन्दों में पहला और सब से बड़ा हक़ माता पिता का है। जो व्यक्ति उन के साथ भलाई नहीं करता उस से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह दुनिया के साथ भलाई करेगा। बनी इस्राईल में उस समय जो बिगाड़ पैदा हुआ था उस के चलते उन के अन्दर यह मौलिक गुण लुप्त हो गए थे। वे लोगों पर अत्याचार तोड़ने वाले और अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करने वाले बन गए थे। ऐसे हालात में अल्लाह तआला ने हज़रत यह्या को उक्त वर्णित गुणों के साथ नियुक्त कर के उन के सामने चरित्र एवं शिष्टाचार का एक नमूना रख दिया ताकि उन में एहसास उभरे और वे अपने सुधार की ओर ध्यान दें।

24. अर्थात् दुनिया ने उस के साथ जो भी सुलूक किया हो मगर अल्लाह की तरफ़ से उस पर सलामती ही सलामती है। वह सलामती के साथ दुनिया में आया और सलामती के साथ दुनिया से विदा हुआ और क्रियामत के दिन भी सलामती के साथ उठाया जाएगा। ऐसे महान व्यक्ति का जिन्होंने निरादर किया उन्होंने उस का कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि अपने ही विनाश का सामान किया।

25. इस ज़िक्र (चर्चा) की अहमियत उस समय समझ में आती है जब कि आदमी मौजूदा इन्जीलों का अर्थात् नये नियम (New Testament) का तुलनात्मक अध्ययन करता है और उन में इस घटना की महत्वपूर्ण कड़ियों को ग़ायब पाता है। कुर्आन ने हज़रत मरयम की पवित्रता और हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) के जन्म सम्बन्धी तमाम महत्व पूर्ण पक्षों को इस प्रकार सुरक्षित कर दिया है कि पूरा घटनाक्रम सामने आ जाता है। और बयान की सत्यता विश्वास का भाव उत्पन्न करती है। लूका की इन्जील में कुछ विस्तार से हज़रत मरयम का वर्णन हुआ है किन्तु दूसरी इन्जीलों में बस सरसरी तौर से ही हुआ है।

26. जैसा कि सूरह आले-इमरान आयत ३५ में बयान हुआ है, हज़रत मरयम को उन की माँ ने इबादत के लिए लगा दिया था इस लिए वह बैतुलमुक़द्स में हैकल के एक पूर्वी भाग में एक हुज़े के अन्दर एकान्तवासी हो कर इबादत में लीन हो गई।

चूँकि उन की इबादत की जगह हैकल के पूर्वी भाग में थी इस लिए ईसाईयों ने पूर्वी दिशा को अपना क्रिबला बनाया। और यह उन की अपनी ईज़ाद (बिद्अत) है।

27. अर्थात् हैकल के जिस हिस्से में वह एकान्तवासी हो

गई थीं वहाँ उन्होंने परदा डाल दिया था। ताकि लोग उसे देखने न पाएँ और वह एकाग्रचित हो कर इबादत कर सके।

मालूम होता है कि हैकल में हुज़ा (मेहराब) इस तरह बना हुआ था कि उस में दरवाज़ा नहीं था इस लिए परदा डाल कर लोगों की निगाहों से अपने को सुरक्षित कर लिया था। दरवाज़ा न होने या केवल परदा डाले रहने का लाभ यह हुआ कि उन की ज़िन्दगी एक खुली किताब बन गई। उन की पवित्रता पर उंगली उठाने के वास्ते किसी के लिए कोई गुनज़ाईश न रही।

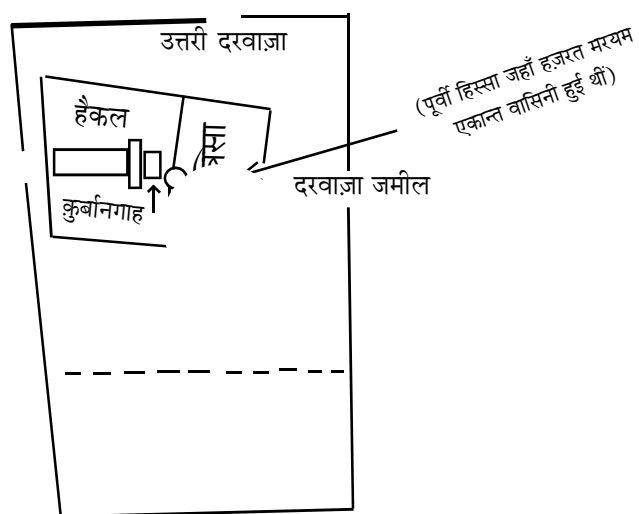
28. हज़रत मरयम का एक अजनबी व्यक्ति को अपने हुज़े में देख कर घबरा जाना एक स्वाभाविक बात थी और उन्होंने ने उस को अल्लाह से डराते हुए रहमान की पनाह जो

मांगी तो वह उन के पवित्र होने का स्पष्ट प्रमाण है।

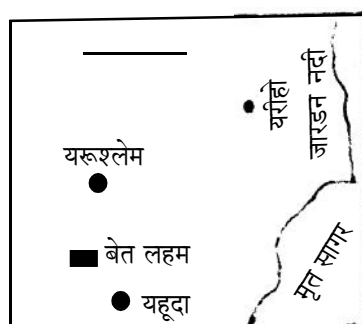
29. लूका रचित सुसमाचार में है: “उस कुँवारी का नाम मरियम था। और स्वर्गदूत ने उस के पास भीतर आ कर कहा, आनन्द और जय तेरी हो (अर्थात् सलाम तुझ को) जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। वह उस वचन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम, भयभीत न हो क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, तू उस का नाम यीशु रखना।”

(लूका १:२७ से ३१)

यरूशलेम के हैकल का नक्शा



बेत लहम जहाँ हज़रत ईसा का जन्म हुआ



20. वह बोली मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जब कि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं और न मैं बदकार हूँ ³⁰।

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ
يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ①

21. उस ने कहा ऐसा ही होगा ³¹। तुम्हारे रब ने फ़रमाया है कि ऐसा करना मेरे लिए आसान है और हम यह इस लिए करेंगे कि उस को लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ ³² और अपनी तरफ़ से रहमत, ³³ और यह बात तय पा चुकी है ³⁴।

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْئٍ وَلَنَجْعَلَ آيَةً
لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ②

22. फिर उस को हमल ठहर गया और वह उस को लिए हुए दूर के स्थान को चली गई ³⁵।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَدَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ③

23. फिर उसे प्रसव पीड़ा खजूर के तने के पास ले गई वह कहने लगी काश ! मैं इस से पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी बन गई होती ³⁶।

فَاجَاءَهَا الْبَخَاسُ إِلَىٰ جَذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِتُّ
قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مَّنْسِيًّا ④

24. उस समय फ़रिश्ते ने उसे नीचे से पुकारा, दुखी न हो। तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे एक ख़ोत (चश्मा) जारी कर दिया है ³⁷।

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي
قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ⑤

25. और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला लो, ताज़ा ताज़ा खजूरें तुम पर झड़ पड़ेंगी ³⁸।

وَهَزَيْتِي إِلَيْكَ بِجَذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ
رُطْبًا جَدِيًّا ⑥

26. सो खाओ और पियो और (अपनी) आँखें ठंडी करो ³⁹। फिर अगर कोई आदमी नज़र आए तो कह दो मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है इस लिए आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी ⁴⁰।

فَكُلْ وَاشْرَبْ وَقَرِّ عَيْنًا فَامَّا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا
فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ⑦

27. फिर वह उस को लिए हुए अपनी क़ौम के पास आई। लोग कहने लगे ऐ मरयम ! तूने यह अजीब हरकत की ⁴¹।

فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ قَالُوا يُمَرِّمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ⑧

28. ऐ हारून की बहन ! ⁴² न तेरा बाप बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदकार औरत थी। ⁴³

يَا خُتُّ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ⑨

30. इन्जील (नये नियम) में है “मरियम ने स्वर्ग दूत से कहा, यह क्यों कर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। (लूका १:३४)

31. अर्थात् कुँवारी होने के बावजूद तुम्हारे यहाँ लड़का पैदा होगा। कुर्आन का यह स्पष्टीकरण इस बारे में मामूली सी शंका के लिए भी गुन्जाईश नहीं छोड़ता कि हज़रत ईसा की पैदाइश बिना बाप के कुँवारी माँ से हुई थी। और यह निश्चय ही अल्लाह तआला का मोज़्जा (चमत्कार) था।

रहा बाइबिल का यह बयान कि हज़रत मरियम की मंगनी यूसुफ़ नाम के एक व्यक्ति से हुई थी तो यह एक खुला झूठ है। जो इन्जील में दाख़िल कर दिया गया है। हज़रत मरियम को तो उन की माँ ने इबादत के लिए ख़ास कर दिया था इसी लिए वह हैकल (इबादतग़ाह) में एकान्तवासी हो गई थी। अतः उन के निकाह का सवाल ही पैदा नहीं होता। फिर बाइबिल में एक जगह कुछ कहा गया है और एक जगह कुछ और। मत्ती की इन्जील में यूसुफ़ को मरियम का पति कहा गया है। (मत्ती अध्याय १६) जब कि लूका की इन्जील यूसुफ़ को मरियम का मंगेतर बतलाती है। (लूका २:५) और दूसरी जगह हज़रत ईसा को यूसुफ़ का बेटा भी कहा गया है (लूका ३:२३) अब अगर यूसुफ़ मरियम का मंगेतर था तो मात्र मंगनी के चलते हज़रत ईसा उस के बेटे कैसे हो गए। और अगर निकाह हो चुका था तो यूसुफ़ को मंगेतर कहने का क्या अर्थ? और क्या यह बात एक कुँवारी के गर्भवती होने को संदिग्ध नहीं बनाती? बाइबिल के इस विपरीत बयान को उस के टीकाकारों ने भी महसूस किया है अतः वह लिखता है:-

“Furthermore, the genealogy here is not in agreement with that in Luke 3: 23- 38. Actually the genealogy in Matt is that of Joseph, who is represented as Mary's husband rather than as the actual father of Jesus (V.5.16) (The Interpreter's Commentary on the Bible P. 610)

यह है बाइबिल का परस्पर विपरीत बयान जो हज़रत मरियम के कुँवारी होने की दशा में गर्भवती होने को संदिग्ध बना देता है। इस के विपरीत कुर्आन का बयान साफ़ है कि हज़रत मरियम इबादत के लिए एकान्त वासी हो गई थीं कुँवारी थीं कि किसी पुरुष ने उन्हें छुआ तक नहीं था। और अल्लाह का यह चमत्कार था कि इस हालत में वह गर्भवती हो गई।

32. अर्थात् ईसा की पैदाइश चमत्कारिक रूप से हो और इस आधार पर वह उस की कुदरत की निशानी बनें।

33. अर्थात् हज़रत ईसा का अस्तित्व अल्लाह की रहमत एवं उस की दयालुता की देन होगी। कितने ही लोग उन से हिदायत पा कर अल्लाह की रहमत एवं उस की दया के पात्र

बनेंगे।

34. अर्थात् अल्लाह तआला की तरफ़ से यह फ़ैसला हो चुका है। अतः यह बात हो कर रहेगी।

35. तात्पर्य बेत लहम है जो यरूशलेम से आठ नौ मील की दूरी पर है। बाइबिल में इस स्थान को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जन्म स्थल बतलाया गया है।

36. हज़रत मरियम ने किसी से कोई शिकवा शिकायत नहीं की और न बेसब्री दिखाई। यह इस ख़याल से परेशान थी कि लोग चूँकि वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं इस लिए उस पर लांछन लगाएंगे। एक पवित्र नारी के लिए इस की कल्पना ही ऐसी थी कि उस के होश और हवास को प्रभावित कर के रख दे। इसी भय के चलते उन के मुँह से यह शब्द निकल गए कि काश मैं इस से पहले ही मर गई होती और मेरी याद भी लोगों के स्मरण में न रह गई होती। उन की ये मासूम भावनाएँ थीं जिन की अभिव्यक्ति उन्होंने अपने रब ही के समक्ष की थी।

37. अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से एक स्रोत नीचे की ओर जारी कर दिया था इस लिए फ़रिश्तों ने वहाँ से आवाज़ दी कि देखो जब तुम पर अल्लाह की अनुकम्पा का यह हाल है कि तुम्हारे लिए पानी का स्रोत जारी कर दिया तो तुम्हें चिन्ता किस बात की है? जब ख़ुदा ही तुम्हारे साथ है तो दुनिया तुम्हारा क्या बिगाड़ सकती है। तसल्ली का यह सामान था जो हज़रत मरियम के ग़म को ग़लत करने के लिए किया गया।

38. अर्थात् खज़ूर के तने को जरा सा हिलाना इस बात के लिए काफ़ी है कि वह तुम्हारे सत्कार के लिए ताज़ा और पकी खज़ूरें टपकाए।

इस प्रकार हज़रत मरियम के लिए एक ऐसी जगह जहाँ उस की सहायता एवं सहयोग के लिए कोई नहीं था, खाने पीने का असाधारण प्रबन्ध किया गया। एक तरफ़ मरियम का विश्वास था और दूसरी तरफ़ अल्लाह की रहमत की शान।

39. अर्थात् बच्चे को देख कर अपनी आँखें ठंडी करो कि एक बेहद पाकीज़ा और महानुभव व्यक्तित्व ने जन्म लिया है।

40. मालूम होता है कि बनी इस्राईल में चुप का रोज़ा (मौन ब्रत) रखा जाता था और नज़्र (मन्नत) के तौर पर इस प्रकार का रोज़ा रखना उन के यहाँ प्रचलित था। हज़रत मरियम को जिस परिस्थिति का सामना था उस को देखते हुए उन्हें यह हिदायत की कि वह नज़्र के तौर पर चुप का रोज़ा (मौन ब्रत) रख लें बड़ी हकीमाना बात थी। क्यों कि एतिराज़ करने वालों को संतुष्ट करना आसान न था। उन पर वास्तविकता को साफ़ खोल देने के लिए, अल्लाह तआला ने बच्चे को बोलने की शक्ति प्रदान की, जैसा कि आगे आ रहा है।

ध्यान रहे कि नज़्र का अर्थ किसी चीज़ को अपने ऊपर वाजिब कर लेने के हैं। (लिसानुल अरब जिल्द ५ पृष्ठ २००)

रहा यह सवाल कि उस समय हज़रत मरयम निफ़ास (Puerperal Haemorrhag प्रासविक रक्त स्राव) की दशा में होगी और रोज़ा एक इबादत है तो इस हालत में उन्होंने रोज़ा किस तरह से रखा होगा, तो इस का जवाब यह है कि निफ़ास (प्रासविक रक्तस्राव) के लिए आवश्यक नहीं है कि वह एक महीना या चालीस दिन तक जारी रहे। किसी के निफ़ास की मुद्दत बहुत थोड़ी होती है। अतः फ़ुक़हा (धर्म शास्त्रियों) ने इस को स्पष्ट किया है। मुगनी में है:-

وليس لافله حد ای وقت رأت الطهر اغتسلت
(معنی جلد ۱ صفحہ ۳۴)

“निफ़ास के ख़ून (प्रासविक रक्त स्राव) की कम से कम मुद्दत के लिए कोई हद नहीं। औरत जिस समय भी पाकी की हालत देख ले गुस्ल कर ले।” (मुगनी जिल्द १ पृष्ठ ३४७)

मतलब यह है कि निफ़ास का ख़ून एक दो दिन में भी बन्द हो सकता है और यह भी संभव है कि जन्म में निफ़ास का ख़ून सिर से जारी ही न हो अर्थात् रक्त स्राव ही न हो।

41. हज़रत मरयम जब बच्चे को गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास पहुँची हैं तो लोगों ने एत़िराज़ों की बौछाड़ कर दी। वे लांछन लगा रहे थे कि मरयम ने पाप किया है।

42. हज़रत मरयम हज़रत हारून के खानदान से थी जो पैग़म्बर थे। इस लिए लोगों ने हारून की बहन कह कर पुकारा वरना हज़रत मरयम का कोई भाई नहीं था अरबी भाषा में इस के उदाहरण मिलते हैं जैसे हमदान क़बीले के व्यक्ति को वे

“या अख़ा हमदान” (ऐ हमदान के भाई) कह कर पुकारते हैं। हज़रत मरयम को हज़रत हारून की बहन कह कर लोगों ने उन्हें यह एहसास दिलाना चाहा कि तुम एक शरीफ़ घराने से सम्बन्ध रखती हो जो एक मशहूर पैग़म्बर का घराना है इस लिए तुम से यह आशा नहीं की जा सकती कि ऐसी हरकत करोगी आम तौर से मुफ़स्सिरीन (कुर्आन के टीकाकारों) ने हारून से पैग़म्बर हारून नहीं बल्कि हज़रत मरयम का भाई मुराद लिया है। उन का तर्क मुगीरा बिन शेबा की एक रिवायत (आलेख) से है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नज़्रान के ईसाईयों के इस एत़िराज़ का जवाब देते हुए कि हज़रत हारून तो हज़रत मरयम से सैकड़ों बरस पहले गुजर चुके थे। फिर हज़रत मरयम को हारून की बहन किस तरह कहा गया, इशार्द फ़रमाया कि बनी इस्राईल अपने नाम नबियों और नेक लोगों के नाम पर रखते थे। यह हदीस मुस्लिम और तिर्मिज़ी आदि में बयान हुई है। लेकिन यह हदीस इस बारे में स्पष्ट नहीं है कि हज़रत मरयम का कोई भाई हारून के नाम का था। दूसरे यह कि इस हदीस का एक रावी (उल्लेख कर्ता) समाक बिन हर्ब है जिस के बारे में मुहद्दीसीन (हदीस के विद्वानों) की रायें अर्थात् मत अलग अलग हैं। कोई इन को विश्वस्नीय (सिक़ा) मानता है और कोई कमज़ोर। सुफ़ियान और शेबिया इन्हें कमज़ोर बताते हैं और इमाम अहमद कहते हैं वह मुज्तरिबुल हदीस हैं अर्थात् इनकी हदीसों में इज्तिराब (उलझाव) पाया जाता है। (मीज़ानुलएतिदाल जिल्द २ पृष्ठ २३२ और २३३) और इब्ने हबान कहते हैं वह सिक़ा (विश्वस्नीय) हैं किन्तु बहुतेरी ग़लतियाँ करते हैं। (तहज़ीबुततहज़ीब जिल्द ४ पृष्ठ २३४)

43. यह इस बात की स्वीकृति थी कि हज़रत मरयम बेहद शरीफ़ घराने की ख़ातून हैं।



उस ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया ।
लोगों ने कहा हम इस से क्या बात करें जो
अभी पालने में बच्चा है। बच्चा बोल उठा,
मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब
दी और नबी बनाया। और मुझे बरकत वाला
किया, जहाँ कहीं भी मैं रहूँ । और उस ने
मुझे नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया है
जब तक मैं जीवित रहूँ । (अल-कुर्आन)

29. उस ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया ⁴⁴। लोगोंने ने कहा हम इस से क्या बात करें जो अभी पालने में बच्चा है। ⁴⁵ فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفُ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝٢٩
30. बच्चा बोल उठा, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी और नबी बनाया ⁴⁶। قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ إِنِّي كُتِبَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ۖ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝٣٠
31. और मुझे बरकत वाला किया, जहाँ कहीं भी मैं रहूँ ⁴⁷। और उस ने मुझे नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया है जब तक मैं जीवित रहूँ ⁴⁸। وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ ۖ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝٣١
32. और उस ने मुझे अपनी माँ के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया ⁴⁹। सरकश (उहड़) और बदनसीब नहीं बनाया। وَبَرًّا بِوَالِدَتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝٣٢
33. सलामती है मुझ पर जिस दिन पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन ज़िन्दा कर के उठाया जाऊँगा ⁵⁰। وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝٣٣
34. यह है ईसा पुत्र मरयम। (और यह है) हक़ (सत्य) ^{५१}। बात जिस के बारे में लोग झगड़ रहे हैं ⁵¹। ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝٣٤
35. अल्लाह की शान के खिलाफ़ है कि वह किसी को बेटा बनाए ⁵²। वह पाक है, जब वह किसी बात का फैसला कर लेता है तो बस कहता है हो जा और वह हो जाती है ⁵³। مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَنَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝٣٥
36. और (ईसा ने साफ़ साफ़ कहा था) अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी, तो उसी की इबादत करो। यही सीधी राह है ⁵⁴। وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝٣٦
37. मगर विभिन्न गिरोहों ने परस्पर विभेद किया ⁵⁵। तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए एक सख्त दिन की हाज़िरी तबाही का कारण होगी ⁵⁶। فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ قَوِيلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٣٧
38. जिस दिन ये हमारे समक्ष उपस्थित होंगे उस दिन वे ख़ूब सुनेंगे और ख़ूब देखेंगे, ⁵⁷ मगर आज ये ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं। أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصُرْ ۚ يَوْمَ يَأْتُونا لَكِنَ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٣٨

44. हज़रत मरयम ने अल्लाह की हिदायत पर अमल करते हुए चुप का रोज़ा (मौन व्रत) रखा था इस लिए लोगों को कोई जवाब नहीं दिया बल्कि बच्चे की तरफ़ इशारा किया कि इस से बात करो।

45. अर्थात् जो बच्चा अभी पालने में हो उस से हम किस प्रकार बात कर सकते हैं?

46. नवजात शिशु का बोल उठना अल्लाह की तरफ़ से मोज़ज़ा (चमत्कार) था और यह मोज़ज़ा अल्लाह तआला ने इस लिए दिखाया ताकि हज़रत मरयम की पवित्रता का प्रमाण हो और उन्हें अपनी सफ़ाई में कुछ कहना न पड़े तथा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निशानी बने।

पालने में से उन का यह एलान कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति था कि वे अब्द (दास) हैं इस से आगे कुछ नहीं, अब्दियत (दास्ता और बन्दगी) ही उन का स्थान है। यह उन को अल्लाह का बेटा ठहराए जाने का पूर्व खण्डन था।

किताब से मुराद इंजील है। “किताब दी और नबी बनाया” का मतलब यह नहीं है कि पालने में हज़रत ईसा को किताब दी गई थी और नबी का दायित्व सौंप दिया गया था। ये चीज़ें तो उन को उस समय प्रदान हुईं जब कि वे इन दायित्वों का भार उठा सकने के योग्य हुए। लेकिन चूँकि यह अल्लाह का फ़ैसला था इस लिए इस को लामुहाला प्रकट होना था। इसी कारण बच्चे की ज़बान से इस प्रकार एलान करा दिया गया कि गोया आगे चल कर प्रकट होने वाली किसी चीज़ की निश्चिन्तता को ज़ाहिर करती है।

इस मोज़ज़े (चमत्कार) का वर्णन मौजूदा इंजीलों में नहीं है। इस का कारण वे परिस्थितियाँ हैं जिन में ये इंजीलों संकालित हुई हैं। यहूदी जो इस घटना के असल गवाह थे हज़रत मसीह के नबी नियुक्त होने के बाद उन के दुश्मन बन गए और जो लोग हज़रत मसीह के अनुयायी बन गए उन को बड़ी आजमाइशों से गुज़रना पड़ा। इस लिए ऐसे बिगड़े हुए हालात में हज़रत मसीह की जीवनी और उन की शिक्षाओं का बड़ा हिस्सा सुरक्षित न रह सका। लेकिन कुर्आन के बयान की सच्चाई और माकूलियत (तार्किकता) बिल्कुल स्पष्ट है। क्यों कि यहूदियों का हज़रत मरयम पर लांछन लगाना और फिर उन्हें सज़ा दिए बग़ैर छोड़ देना जब कि बनी इस्राईल की शरीअत (संविधान) में व्यभिचार (ज़िना) का दण्ड बड़ा कठोर था, यह स्पष्ट करता है कि कोई असाधारण घटना घटित हुई थी जिस से हज़रत मरयम का पवित्र होना सिद्ध हो गया था। कुर्आन कहता है यह बच्चे की गवाही थी जिस ने सिद्ध कर दिया कि यह एक असाधारण घटना (चमत्कार) है। इस के बाद किसी को कुछ

कहने की गुन्जाइश बाक़ी न रही।

47. अर्थात् अल्लाह तआला ने मेरे स्वरूप को मेरे अस्तित्व को भलाई और बरकत वाला बनाया है। जहाँ भी मेरा रहना होगा भलाई और बरकत फूटेगी। यह खण्डन था इस बात का कि न मेरी पैदाइश का आधार बुराई है और न भविष्य में मुझ से किसी बुराई फूटने की संभावना है। यह उन आरोपों का पेशगी खण्डन है जो यहूदी आगे चल कर उन पर लगाने वाले थे।

48. नमाज़ और ज़कात की चर्चा ख़ास तौर से की, क्यों कि ये दीन के बुनियादि खम्बे हैं जिन को नष्ट करना दीन को नष्ट करना है। यहूदियों ने इन मौलिक स्तंभों को नष्ट कर दिया था इस लिए हज़रत ईसा ने ज़बान खोलते ही इस की चर्चा की।

49. नेक सुलूक करने के बारे में केवल माँ का नाम लिया जो इस बात का सबूत है कि ईसा बिना बाप के पैदा हुए थे वरना कहते मुझे अपने माँ बाप के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया। कुर्आन के इस बयान से बाइबिल के उन आलेखों का खण्डन होता है जिन से यह भाव उत्पन्न होता है कि वे अपनी माँ से बेपरवाह हो गए थे। (यूहन्ना २:४)

50. अर्थात् खुदा की तरफ़ से मेरे लिए जीवन भर सलामती है और दूसरे जीवन में भी सलामती ही सलामती। “जिस दिन मैं मरूँगा” के शब्द पुष्टि करते हैं कि हज़रत ईसा को भी एक न एक दिन मरना ज़रूर है।

51. हज़रत ईसा को यहूदी सिरे से नबी ही नहीं मानते। और ईसाईयों ने उन के व्यक्तित्व में घटा बढ़ा कर के उन्हें अल्लाह का बेटा बना दिया। फिर इस बहस में इस तरह उलझ गए कि असली वास्तविकता दब कर रह गई, मगर कुर्आन ने सारे परदे उठा दिए और असली वास्तविकता को स्पष्ट किया।

52. अर्थात् खुदा के लिए यह अति अशोभनीय बात है कि वह किसी को बेटा बनाए। यह दोष है न कि गुण। और ऐसी बात अल्लाह से सम्बद्ध बताने अथवा उस से जोड़ने का मतलब यह हुआ कि वह दोष और त्रुटि से پاک नहीं है।

53. अर्थात् जिस हस्ती की कुदरत की यह शान हो कि कोई भी चीज़ मात्र उस के “कुन” कह देने अर्थात् हो जाने का आदेश दे देने से अस्तित्व में आती हो वह इस बात का कहाँ मोहताज हो सकता है कि किसी को बेटा बना ले।

54. हज़रत ईसा का वह बयान ऊपर गुज़र चुका जो उन्होंने ने पालने में दिया था, यहाँ उन की उस दअवत को पेश किया गया है जो उन्होंने ने नबी नियुक्त होने के बाद बनी इस्राईल के सामने प्रस्तुत की थी।

व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट ७६

55. जब अल्लाह के दीन में अपनी ओर से कोई नई बात,

नया विचार शामिल कर लिया जाता है तो निश्चित रूप से विभेद शुरू हो जाते हैं जिन के फलस्वरूप वर्ग एवं सम्प्रदाय अथवा गिरोह अस्तित्व में आते हैं। ईसाईयों ने जब हज़रत ईसा की शिक्षाओं से मतभेद किया और उन के व्यक्तित्व के बारे में अतिशयोक्तिपूर्ण धारणा गढ़ ली तो सम्प्रदायवाद फूट पड़ा। याक़ूबिया और नस्तूरिया जैसे सम्प्रदाय उन में पैदा हो गए और

बाद के दौर में कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट । इस प्रकार वे अपने केन्द्रीय बिन्दु तौहीद से भी हट गए और उन का समुदाय भी छिन्न भिन्न हो कर रह गया ।

56. मुराद क्रियामत के दिन की तबाही है।

57. अर्थात् क्रियामत के दिन यह अच्छी तरह जान लेंगे कि सच्चाई क्या थी। हज़रत ईसा खुदा के बेटे थे या बन्दा?

बाप ने कहा इब्राहीम ! क्या तू मेरे माबूदों (उपस्थितों) से फिर गया है अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा (अर्थात् पथराव कर के मार डालूँगा) तू मुझ से हमेशा के लिए अलग हो जा । इब्राहीम ने कहा सलाम हो आप पर। मैं आप के लिए अपने प्रभु से क्षमा की प्रार्थना करूँगा । वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है। (अल-कुर्आन)

39. और उन्हें हसरत (पछतावे) के दिन से खबरदार करो जब कि फ़ैसला चुका दिया जाएगा,⁵⁸ और उन का हाल यह है कि ग़फ़लत (अचेतावस्था) में पड़े हुए हैं और ईमान नहीं लाते।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾

40. निस्संदेह हम ही ज़मीन के और उस पर बसने वालों के वारिस होंगे⁵⁹। और सब हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾

41. और (ऐ नबी) किताब में इब्राहीम का ज़िक्र करो⁶⁰। निस्संदेह वह बड़ा ही सच्चा था⁶¹ और नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ﴿٤١﴾

42. जब उस ने अपने बाप से कहा, पिताजी ! आप क्यों ऐसी चीज़ों को पूजते हैं जो न सुनती हैं, न देखती हैं और न आप के कुछ काम आ सकती हैं⁶²?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾

43. पिताजी ! मेरे पास वह ज्ञान आया है जो आप के पास नहीं आया,⁶³ तो आप मेरे पीछे चलें। मैं आप को सीधी राह दिखाऊँगा।

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

44. पिताजी ! आप शैतान की परस्तिश न कीजिए⁶⁴। शैतान तो रहमान का नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) है।

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

45. पिता जी ! मैं डरता हूँ कि रहमान का अज़ाब आप को आ न पकड़े और आप शैतान के साथी बन कर रह जाएँ।

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ عَذَابِي مِنَ الرِّحْمِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾

46. बाप ने कहा इब्राहीम ! क्या तू मेरे माबूदों (उपास्यों) से फिर गया है अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा⁶⁵ (अर्थात् पथराव कर के मार डालूँगा) तू मुझ से हमेशा के लिए अलग हो जा⁶⁶।

قَالَ لَأَرْغَبُ أَنْتَ عَنِ الْهَقَىٰ يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِنْ لَمْ تُتَنَّبَهُ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي بَلِيًّا ﴿٤٦﴾

47. इब्राहीम ने कहा सलाम हो आप पर। मैं आप के लिए अपने प्रभु से क्षमा की प्रार्थना करूँगा।⁶⁷ वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

58. अर्थात् क्रियामत के दिन से खबरदार करो जो काफ़िरों के लिए पछतावे का दिन होगा। कुछ मुफ़स्सरीन (कुर्आन के टीकाकारों) ने वह दिन मुराद लिया है जब कि मुसलमानों ने बैतुलमुक़द्दस पर विजय अर्जित की और ईसाइयों के लिए हसरत का कारण बन गया (तर्जुमानुल कुर्आन जिल्द २ पृष्ठ ४३६) मगर आयत के शब्द इस व्याख्या का साथ नहीं देते। फैसला चुकाने की बात तो कुर्आन में क्रियामत ही के बारे में कही गई है। और बाद की आयत में यह जो कहा कि “सब हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे” तो स्पष्ट है कि यह क्रियामत के दिन ही के बारे में है।

59. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट २१

60. किताब में ज़िज़्र करो का मतलब यह है कि ऐ पैग़म्बर। अल्लाह की जो किताब तुम लोगों को सुना रहे हो उस में उन को इब्राहीम का क्रिस्सा भी सुनाओ कि यह क्रिस्सा अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है और इस किताब (कुर्आन) में शामिल है।

61. इब्राहीम अलैहिस्सलाम का गुण सिद्दीक बयान हुआ है जिस का अर्थ है बिलकुल सच्चा और ठीक बात कहने वाला अल्लाह तआला ने उन को कई बातों में आजमाया और वे हर इम्तिहान में पूरे उतरे। बुत परस्ती के विरुद्ध उन्होंने ने बेपनाह संघर्ष किया और इस सिलसिले में समय की हुकूमत के चैलेन्ज को स्वीकार करने में हिचकिचाए नहीं और अपने पिता को भी बुत परस्ती के बारे में खरी खरी सुना दी। शिर्क (बहुदेववाद) के विरुद्ध उन की निर्भीकता एवं बेबाकी, अल्लाह की खातिर घर बार छोड़ना, तौहीद के प्रचार के लिए कठिनतम सफ़र करना और अपने बेटे को अल्लाह के लिए कुर्बान (बलिदान) करने के लिए तैयार हो जाना उन की सत्यता के उच्चतम उदाहरण हैं। कुर्आन के इस बयान से कि इब्राहीम “सिद्दीक” (सच्चे) थे बाइबिल के इस बयान का आप से आप खण्डन हो जाता है जिस में इब्राहीम से इस झूठ को जोड़ दिया गया है कि वे मिस्र गए तो इस भय से कि वहाँ का शासक उन की पत्नी (सारा) को उन की सुन्दरता के कारण रख न ले और इब्राहीम को मार न डाले, इब्राहीम ने अपनी पत्नी से कहा कि तुम यह कह देना कि मैं इस व्यक्ति की बहन हूँ (उत्पत्ति १२:११ से २०) बाइबिल का यह क्रिस्सा बिलकुल ग़लत और बेबुनियाद है। अगर बादशाह की नियत ख़राब थी तो केवल बहन कह देने से वह अपने नीच संकल्प से बाज़ क्यों रहता? बाइबिल में कई जगहों पर हज़रत इब्राहीम और हज़रत सारा की जो आयु बयान हुई है उन को देखते हुए मिस्र के सफ़र के अवसर पर हज़रत सारा कोई कमसिन महिला न थीं

कि उन्हें बादशाह से ख़तरा होता। फिर बाइबिल में इसी प्रकार का झूठ हज़रत इस्हाक़ से भी जोड़ा गया है। अर्थात् उन्होंने ने भी इस प्रकार के भय के चलते अपनी पत्नी के बारे में कहा कि वह मेरी बहन है। (उत्पत्ति अध्याय २६)

बाइबिल की ये बातें इतनी उलझी हुई एवं अतार्किक हैं कि इन पर कदापि विश्वास नहीं किया जा सकता। सच यह है कि बाइबिल के संकलनकर्ताओं ने अपने नबियों के चरित्र अथवा उन की जीवनी को दाग़दार बनाया है किन्तु कुर्आन उन की जीवनी एवं उन के चरित्र को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि वह बिलकुल बेदाग़ नज़र आता है। और यह कुर्आन की सत्यता का प्रमाण है।

62. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम १२७, १२८ और १२९

63. ज्ञान से तात्पर्य वहय और नुबुव्वत का ज्ञान है।

64. अर्थात् इन बुतों की परस्तिश करने का अर्थ है शैतान की परस्तिश, क्यों कि यह शैतान के इशारे पर की जा रही है। और शैतान का ऐसा अनुपालन कि वह खुदा के अनुपालन की जगह ले ले उस को पूज्य बनाना और साज़ीदार ठहराना है।

65. उस ज़माने में औलाद पर बाप का ज़बरदस्त दबाव रहता था और धार्मिक वैमनस्यता के कारण वे अपनी औलाद पर भी ज़ुल्म करने से नहीं चूकते थे। और यह धार्मिक वैमनस्य एवं ईर्ष्या (आज कल की भाषा में साम्प्रदायिकता) ही थी जिस के कारण हज़रत इब्राहीम के पिता ने उन्हें पथराव द्वारा मार डालने की धमकी दी।

66. अर्थात् तुम्हारी ख़ैरियत (भलाई) इसी में है कि तुम घर छोड़ कर चले जाओ और मुझे सूरत न दिखाओ।

67. यह थी इब्राहीम के किरदार (चरित्र एवं शिष्टाचार) की बुलन्दी कि बाप उन्हें पथराव द्वारा मार डालने की धमकी देता है और घर से निकल जाने का आदेश देता है लेकिन उन के माथे पर बल नहीं पड़ता, बल्कि वे सलामती की दुआ देते हुए और अपने रब से उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करने का वादा करते हुए विदा होते हैं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने वादे को निभाया किन्तु जब उन पर यह बात स्पष्ट हुई कि उन का बाप शिर्क (बहुदेववाद एवं मूर्ति पूजा) से बाज़ आने वाला नहीं और खुदा का दुश्मन है तो वे दुआ से रुक गए जैसा कि सूरह तौबा आयत ११४ में बयान हुआ है।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट २०९ और २१०

48. मैं आप लोगों से तथा उन से जिन को आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं अलग हो जाता हूँ और अपने रब ही को पुकारता हूँ। आशा है कि मैं अपने रब को पुकार के वंचित नहीं रहूँगा।

وَأَعْتَزُّكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ
أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ۝

49. फिर जब वह उन से तथा उन (के माबूदों) से जिन को वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे अलग हो गया तो हम ने उसे इस्हाक और याकूब प्रदान किए ⁶⁸। और उन में से हर एक को नबी बनाया।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝

50. और उन को अपनी दयालुता से सुशोभित किया और उन के लिए सच्चाई की ज़बानें बुलन्द कर दीं ⁶⁹।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝

51. और किताब में मूसा का ज़िक्र करो। वह चुना हुआ (बन्दा) था ⁷⁰ और रसूल और नबी था ⁷¹।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۝

52. हम ने उस को तूर (पर्वत) के दाईं ओर से पुकारा ⁷² और बात करने के लिए करीब किया ⁷³।

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ۝

53. और अपनी रहमत से उस के भाई हारून को नबी बनाकर उस को प्रदान किया ⁷⁴।

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۝

54. और किताब में इस्माईल का ज़िक्र करो, वह वादे का सच्चा ⁷⁵ और रसूल और नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ
وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۝

55. वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था ⁷⁶ और अपने रब के नज़दीक पसंदीदा था।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ
وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ رَضِيًّا ۝

56. और किताब में इदरीस का ज़िक्र करो ⁷⁷ वह बड़ा सच्चा था और नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۝

57. और हम ने उसे उच्च स्थान पर उठाया था ⁷⁸।

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

68. अर्थात् जब इब्राहीम अपने देश को छोड़ कर सीरिया और फ़िलस्तीन पहुँचे तो अल्लाह तआला ने उन को ऐसी संतान प्रदान की कि उन के वंश में बड़ी बरकत हुई और लाभों के स्रोत फूट बहे।

याकूब इब्राहीम के पोते हैं जिन का दूसरा नाम इस्राईल है। इन ही से बनी इस्राईल का सिलसिला चला है।

69. अर्थात् सच्चे लोगों की ज़बान पर उन की तारीफ़ एवं गुणगान के बोल जारी कर दिए। ईमान वालों के दिलों में उन का सच्चा आदर पनप रहा है। वे आदर से उन का नाम लेते हैं और उन पर सलाम और दरूद भेजते हैं।

इस से यह वास्तविकता भी स्पष्ट हुई कि दुनिया में सच्ची इज़्जत और खुदा के नेक बन्दों में प्रसिद्धि, उन की ज़बानों से सुन्दर भावभिव्यक्ति, अल्लाह का बहुत बड़ा इनाम है जो किसी बन्दे को प्राप्त हो। लोग झूठी शोहरत और दिखावे की प्रसिद्धि के पीछे दौड़ते हैं मगर अल्लाह के नेक बन्दे इस से बिलकुल बेपरवाह होते हैं।

70. अर्थात् अल्लाह ने अपने सामीप्य (तक्र्बुब) के लिए मूसा को चुन लिया था।

71. रसूल का अर्थ है भेजा हुआ, संदेशवाहक, पैगम्बर (Massenger) और नबी का अर्थ है खबर देने वाला, जो अल्लाह की तरफ़ से लोगों को खबरें सुनाए। कुआन में ये दोनों शब्द अल्लाह के उन खास चुनिन्दा बन्दों के लिए, जिन पर उस की तरफ़ से वही नाज़िल की जाती है, परिभाषिक शब्द के रूप में इस्तेमाल हुए हैं, अलबत्ता रसूल का शब्द प्रेषक (भेजे हुए) के अर्थ में, कहीं कहीं चुनिन्दा फ़रिश्तों के लिए भी इस्तेमाल हुआ है।

रसूल और नबी का भावार्थ एक ही है किन्तु दोनों परिभाषिक शब्द (Terms) इस्तेमाल करने से, उन की उम्मत पर उन की पैगम्बराना हैसियत को स्पष्ट करना अभिप्रेत है। अतः आयत ५१ से ५७ में कई नबियों का वर्णन हुआ है, किन्तु हज़रत मूसा और हज़रत इस्माईल का वर्णन इस अन्दाज़ से हुआ है कि वे रसूल और नबी थे। चूँकि हज़रत इब्राहीम के वंश की दो शाखें हुई, एक बनी इस्राईल और दूसरी बनी इस्माईल, और बनी इस्राईल हज़रत मूसा की उम्मत ठहराए गए और बनी इस्माईल हज़रत इस्माईल की। इस लिए इन की रिसालत के महत्व को उजागर किया गया है। मतलब यह है कि हज़रत इस्माईल और हज़रत मूसा इस पाये के नबी थे कि आज जो दो बड़ी उम्मतें तुम देख रहे हो वे उन ही से सम्बद्ध हैं।

72. ऐमन (दायी) का शब्द अरबी में मुबारक के भावार्थ में इस्तेमाल होता है। जहाँ हज़रत मूसा को अल्लाह तआला ने पुकारा था। और उन्हें नुबुव्वत प्रदान की थी। कुआन में दूसरी

जगह इस प्रतिष्ठित धरती को “पवित्र घाटी” कहा गया है

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى

अर्थ :- “जब कि उस के रब ने उसे तुवा की पवित्र घाटी में पुकारा।” दायीं ओर के यदि शाब्दिक अर्थ लिए जाएं तो मतलब होगा कि हज़रत मूसा जब मदन से मिस्र की ओर चले हैं तो तूर के उस हिस्से से जो उन के दायीं ओर था, अल्लाह तआला ने उन्हें आवाज़ दी।

73. अर्थात् मूसा से एकान्त में अल्लाह तआला ने बातें कीं और आमने सामने बातें करने का सम्मान प्रदान करने के लिए उन्हें अपने से करीब किया।

74. अर्थात् हारून को नबी बनाकर मूसा का सहयोगी एवं सहायक बनाया।

75. इशारा है कुर्बानी की घटना की तरफ़ कि उन्होंने अपने पिता से यह जो कहा था

سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ - (صافات- १०२)

अर्थ:- “आप मुझे इन्शाअल्लाह सन्न करने वाला पायेंगे।” (साफ़ात १०२) तो यह वादा उन्होंने पूरा किया और खुदा की खातिर कुर्बान होने के लिए माथे के बल लेट गए। वचन पूरा करने की इस से ऊँची मिसाल और क्या हो सकती है।

76. हज़रत इस्माईल का यह गुण कि वे अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात की ताक़ीद करते थे, खास तौर से बयान किया गया है ताकि अरबवासी जो उन के कुल से हैं, विचार करें कि उन के करने का काम क्या था और वे क्या कर रहे हैं तथा ईमान वालों के लिए भी यह नमूना हो। वे अपने घर वालों के सुधार की चिन्ता करें और खास तौर से नमाज़ का आयोजन और ज़कात अदा करने की ताक़ीद करें।

77. हज़रत इदरीस का ज़िक्र कुआन में संक्षिप्त रूप से हुआ है। एक यहाँ और दूसरे सूरह अम्बिया आयत ८५ में। इन के हालात किसी सही हदीस में बयान नहीं हुए हैं सिवाय मेराज वाली हदीस के जिस में उन के चौथे आसमान पर होने का वर्णन है। बाइबिल में भी इस नाम के किसी आदमी का वर्णन नहीं है। कुआन के टीकाकारों ने इन के बारे में जो रिवायतें बयान की हैं वह इस्त्राइलियात में से हैं इस लिए हमें कुआन के बयान ही पर संतोष करना चाहिए।

हज़रत इदरीस का व्यक्तित्व जैसा कि कुआन में बयान हुआ है सच्चाई और वफ़ादारी की दृष्टि से महान व्यक्तित्व था। इतिहास ने उन्हें भुला दिया था किन्तु कुआन ने उन की चर्चा को स्थायित्व प्रदान किया।

78. अर्थात् उन का दर्जा बुलन्द कर दिया था।

58. ये हैं नबियों में से वे लोग जिन पर अल्लाह ने ईनाम फ़रमाया ⁷⁹। आदम की औलाद में से ⁸⁰ और उन लोगों की नस्ल से जिन्हें हम ने नूह के साथ (नाव में) सवार कराया, और इब्राहीम की नस्ल से और इस्राईल की नस्ल से, ⁸¹ और उन लोगों में से जिन को हम ने हिदायत बख़्शी और चुन लिया। उन को जब रहमान की आयतें सुनाई जाती हैं तो वे रोते हुए सज्दे में गिर जाते ⁸²।
59. फिर उन के बाद ऐसे अयोग्य (कुपूत) उन के उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने ने नमाज़ नष्ट कर दी और इच्छाओं के पीछे पड़ गए ⁸³। तो करीब है कि ये गुमराही के अन्जाम से दो चार हों ⁸⁴।
60. अलबत्ता जो लोग तौबा कर लें, ईमान ले आएँ और अच्छे कर्म करें, वे जन्नत में प्रवेश पाएँगे और उन के साथ तनिक भी अन्याय न होगा ⁸⁵।
61. हमेशगी के (सदैव रहने वाले) बाग़ जिन का रहमान ने अपने बन्दों से परोक्षतः (गायबाना) वादा कर रखा है, निस्संदेह उस का वादा पूरा हो कर रहना है ⁸⁶।
62. वहाँ वे कोई व्यर्थ की बात (बकवास) नहीं सुनेंगे, ⁸⁷ जो कुछ सुनेंगे सलामती ही की बात होगी। और उन्हें सुबह और शाम अपनी रोज़ी मिलती रहेगी ⁸⁸।
63. यह है वह जन्नत जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उन को बनाएँगे जो अल्लाह से डरते रहे ⁸⁹।
64. (ऐ पैग़म्बर !) हम आप के रब के आदेश के बग़ैर नहीं उतरते ⁹⁰। जो कुछ हमारे आगे है और जो पीछे है, और जो इस के बीच है सब उसी का है, और आप का रब भूलने वाला नहीं ⁹¹।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَّةِ
آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَءِيلَ
وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذِ اتَّخَذُوا الرِّسَالَاتِ الرَّحْمَنِ خُرُوجًا
سُجَّدًا أَوْ بُكَيَّا ۝٨٥

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا
الشَّهَوَاتِ فَسُوفَ يَكُونُونَ عِثًّا ۝٨٦

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَيْكَ يُدْخِلُونَهُ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۝٨٧

جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ
إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝٨٨

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ فِيهَا
بُكْرَةٌ وَعَاشِيًّا ۝٨٩

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝٩٠

وَمَا نَنْزِلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا
وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝٩١

79. ऊपर की आयत से स्पष्ट हुआ है कि इन नबियों को अल्लाह तआला ने किस प्रकार के इनामों से नवाजा था। यही वह इनाम है जिस का जिक्र सूरह फ़ातिहा में इस प्रकार हुआ है।

الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

अर्थ:- “जिन पर तेरा इनाम हुआ”

80. अर्थात् ये सारे नबी आदम की औलाद में से थे। इन में से कोई भी न ख़ुदा था, न ख़ुदा का बेटा और न ख़ुदा का अवतार।

81. हज़रत मूसा, हारून, ज़करीया, यहया और ईसा अलैहिस्सलाम, इस्माईल अर्थात् याक़ूब अलैहिस्सलाम की नस्ल (संतान) में से हैं।

82. यहाँ नबियों का स्वाभाविक तरीका बयान हुआ है कि जब अल्लाह की आयतें उन्हें सुनाई जातीं तो वे भाव विभोर हो उठते और बे इस्तियार सज्दे में गिर जाते।

अल्लाह के कलाम की यह तासीर है कि वह मन में विनीत भाव, नम्रता एवं ईश-भय पैदा करता है, मगर आजकल के क़ारी (कुर्आन पढ़ने वाले) सामान्यतः अच्छी आवाज़ पर ही ध्यान देते हैं, उन की क़िर्अत विनीत भाव और ईश-भय से ख़ाली होती है। परिणाम यह कि सुनने वाले अल्लाह के कलाम से प्रभावित होने के बजाय क़ारी की अच्छी आवाज़ की दाद देने लगते हैं।

यह आयत सज्दा है इस लिए इस की तिलावत करने या सुनने पर सज्दा करना चाहिए।

83. ईशारा है यहूदियों और ईसाईयों की तरफ़ जिन्होंने नबियों के तरीके को छोड़ा और उन में केवल श्रद्धा एवं आस्था व्यक्त कर के रह गए। नमाज़ के आयोजन की जो ताकीद उन नबियों ने की थी उस को उन्होंने भुला दिया। परिणाम यह कि वे इच्छाओं के गुलाम बन कर रह गए।

बनी इस्माईल (अरब वासियों) का भी हाल यही था। हज़रत इस्माईल ने अपनी औलाद को नमाज़ क़ायम करने का ताकीदी हुक्म दिया था मगर उन की संतान ने नमाज़ की जगह बुत परस्ती को अपना लिया।

नमाज़ को नष्ट करने और इच्छाओं के पीछे चलने का एक साथ वर्णन हुआ है उस से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि नमाज़ को छोड़ देने के बाद शरीअत की पाबन्दी करना और सुक़र्मी जीवन गुज़ारना संभव ही नहीं रहता ऐसा व्यक्ति ज़रूर अपनी इच्छाओं का गुलाम हो कर रह जाता है और उस की जीवन दिशा ग़लत हो कर रह जाती है।

इस आयत में मुसलमानों के लिए बहुत बड़ा पाठ है। पिछली उम्मतों द्वारा नमाज़ नष्ट किए जाने के इबरतनाक

अन्जाम सामने आ जाने के बाद उन को कड़ाई के साथ नमाज़ के हुक्म पर कारबन्द होना चाहिए था मगर दुख की बात है कि आज मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या नमाज़ को त्यागे हुए है यह इसी का परिणाम है कि उन का नैतिक एवं व्यवहारिक पतन हो गया है और उन का पूर्ण जीवन इच्छाओं का गुलाम हो कर रह गया है।

84. मालूम हुआ कि नमाज़ छोड़ देना गुमराही है।

85. अर्थात् जो लोग नमाज़ों को नष्ट कर के इच्छाओं के पीछे चले उन के लिए सुधार कर लेने का अवसर है। यदि वे अपने ग़लत रवैये से बाज़ आ जाएँ अपने पापों की अल्लाह से क्षमा चाहे, कुर्आन और उस के पैग़म्बर पर ईमान ले आएँ और अच्छे अच्छे काम करें तो वे जन्नत के भागीदार होंगे और उन के अधिकारों के साथ पूरा पूरा न्याय किया जायेगा।

86. यद्यपि जन्नत के बाग़ उन बन्दों की नज़रों से छिपे हुए हैं, मगर उन का उन में प्रवेश पाना सुनिश्चित है क्योंकि यह अल्लाह का वादा है जिसे निश्चित रूप से पूरा होना है।

87. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ग़ाशियः नोट १३

88. अर्थात् जन्नत में आजीविका प्राप्ति के लिए कोई परिश्रम एवं संघर्ष नहीं करना पड़ेगा बल्कि स्थायी रूप से उन्हें रोज़ी मिलती रहेगी।

89. अर्थात् जन्नत के उत्तरधिकारी वे लोग बनेंगे जिन्होंने ने अल्लाह से डरते हुए जीवन बिताया। ऊपर के प्रसंग से तक्रवा अर्थात् ईश-परायणता का भावार्थ बिलकुल स्पष्ट है। जो व्यक्ति इन अच्छे गुणों को अपने अन्दर पैदा करता है वही वास्तव में मुत्तक़ी, परहेज़गार और ख़ुदा का भय रखने वाला है।

90. यह जुमला-ए-मोतरिज़ा अर्थात् व्यवहित वाक्य है जो वहय लाने वाले फ़रिश्तों की ज़बान से अदा हुआ है और अल्लाह तआला ने इस को अपनी किताब में बयान फ़रमाया है।

वहय का सिलसिला जब कुछ दिनों के लिए रुक जाता तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेचैनी महसूस करने लगते क्योंकि जिन कठिन परिस्थितियों से आप गुज़र रहे थे उन में वहय का अवतरण आप के लिए ढारस का सामान होता तथा आगे की रहनुमाई के लिए भी आप वहय की तीव्र प्रतिक्षा में रहते। आप की इसी प्रतीक्षा को देखते हुए ज़िब्रील और उन के साथी फ़रिश्तों ने अपनी यह हैसियत स्पष्ट कर दी कि हमारे बस में और हमारे अधिकार में यह बात नहीं है कि जब चाहें उतर पड़ें। बल्कि जब अल्लाह हमें आदेश देता है हम उस की आज्ञा के पालन में उतर आते हैं।

यद्यपि यह व्यवहित वाक्य (जुमला-ए-मोतरिज़ा) है। किन्तु ऊपर के प्रसंग से भी इस का सम्बन्ध है। ऊपर नबियों की

हैसियत स्पष्ट की गई है। यहाँ फ़रिश्तों की हैसियत स्पष्ट की गई है कि सब उस के आदेशों के अनुपालक हैं।

91. अर्थात् अल्लाह संपूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वामी है। भविष्य, भूत, और वर्तमान सब से वह अच्छी तरह बाख़बर है। उस से किसी भी भूल की संभावना नहीं। अतः ऐ पैग़म्बर जो हालात

हमें पेश आ रहे हैं वह उस से छिपे हुए नहीं। और उस की नीति का जब तक्राज़ा होता है वह वह्य नाज़िल करता है, जिसे ले कर हम (अर्थात् फ़रिश्ते) उतरते हैं। यहाँ फ़रिश्तों का बयान समाप्त हुआ।



वह रब है आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की चीज़ों का। तो उसी की इबादत करो और उसी की इबादत पर जमे रहो। क्या तुम्हारे ज्ञान में उस का हमनाम (उस जैसा) कोई है? और इन्सान कहता है क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा । (अल-कुर्आन)

65. वह रब है आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की चीज़ों का, तो उसी की इबादत करो, और उसी की इबादत पर जमे रहो। क्या तुम्हारे ज्ञान में उस का हमनाम (उस जैसा) कोई है? 92

رَبُّ السَّمُوتِ وَالأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ
وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ٩٢

66. और इन्सान कहता है क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा ।

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَاتَ لَسَوْفَ أَخْرَجُ حَيًّا ٩٣

67. क्या इन्सान को याद नहीं कि हम इस से पहले उसे पैदा कर चुके हैं जब कि वह कुछ भी न था।

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ٩٤

68. तुम्हारे रब की क़सम, हम इन सब को तथा शैतानों को ज़रूर इकट्ठा करेंगे, फिर इन सब को जहन्नम के इर्द गिर्द इस तरह हाज़िर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे हुए होंगे 93।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْضُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ٩٣

69. फिर हर गिरोह में से उन लोगों को अलग करेंगे जो रहमान के विरुद्ध अत्याधिक उदंड बने हुए थे 94।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ٩٤

70. फिर हम उन लोगों को अच्छी तरह जानते हैं जो जहन्नम में जाने के अधिक सज़ावार हैं।

ثُمَّ لَنَعْنِ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أُولَىٰ بِهَا صِلِيًّا ٩٥

71. और तुम में से कोई नहीं जो उस पर वारिद न हो (जा न पड़े)। यह तय शुदा बात है जो तुम्हारे रब पर लाज़िम है 95।

وَلَنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ٩٥

72. फिर 96 हम उन लोगों को बचा लेंगे जिन्होंने तक्रवा (ईश-भय) अपनाया था 97 और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे 98।

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ٩٦

73. और जब हमारी रौशन आयतें इन लोगों को सुनाई जाती हैं तो कुफ़्र करने वाले, ईमान वालों से कहते हैं कि हम दोनों फ़रीक़ों में से कौन है जो उत्तम स्थान रखता है और बेहतर मजलिस।

وَإِذْ تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ٩٧

92. अर्थात् अल्लाह का कोई सहकक्ष नहीं। वह अपने अस्तित्व में बिलकुल यकता है और गुणों में भी बिलकुल यकता। तथा उस का नाम अल्लाह इसी लिए खास है। कोई उस का हम नाम नहीं। फिर इबादत (पूजा) के लायक उस के सिवा और कौन हो सकता है?

93. अर्थात् अत्यन्त घृणित एवं तिरस्कृत दशा में।

94. ये उन के पेशवा सरदार और लीडर होंगे जो दुनिया में बहुत उदंड बने हुए थे और अपनी क्रौम को गुमराह करते रहे।

95. ऊपर की आयतों में उन लोगों का जिक्र हुआ है जो इन्सान को दोबारा पैदा किये जाने को नकारते थे। उन के बारे में आयत ६८ में फ़रमाया गया है कि इन सब को हम जहन्नम के इर्द गिर्द इस हाल में जमा करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे हुए होंगे। यहाँ इन इनकार करने वालों से सीधे संबोधन कर के कहा जा रहा है कि याद रखो तुम में से कोई भी छूटने वाला नहीं। हर काफ़िर को जहन्नम में निश्चित रूप से पहुँचना होगा।

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि यह तुम्हारे रब का दृढ़ एवं अन्तिम फ़ैसला है कि काफ़िर जहन्नम की सजा भुगतें। अतः यह फ़ैसला क्रियामत के दिन लागू हो कर रहेगा यहाँ कुछ बातों की व्याख्या करना ज़रूरी जान पड़ता है ताकि इस आयत का सही भावार्थ स्पष्ट हो।

1. आयत के पहले हिस्से “तुम में से कोई नहीं जो उस पर जा न पड़े” में सम्बोधन काफ़िरों से है और दूसरे हिस्से “यह एक तयशुदा बात है जो तुम्हारे रब पर लाज़िम है” में सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है। एक ही आयत में अलग सम्बोधन बलागत के तक्राज़ो के तहत है। कुर्आन में यही शैली दूसरी जगह भी अपनायी गई है। अतः सूरह अन्आम आयत १२८ में है:

قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ -
إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ -

अर्थ:- “इर्शाद होगा तुम्हारा ठिकाना आग है जिस में तुम हमेशा रहोगे, मगर जो अल्लाह चाहे। (ऐ पैगम्बर) निस्संदेह तुम्हारा रब हिकमत वाला और इल्म वाला है।”

इस आयत में भी पहले हिस्से में संबोधन इन्कार करने वालों से है और दूसरा हिस्सा “तुम्हारा रब”..... में संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

2. मूल अरबी (Text) में शब्द “वारिद” इस्तेमाल हुआ है जो “वरूद” से है। अरबी में यह शब्द पहुँचने के अर्थ में भी

आता है और दाखिल होने के अर्थ में भी। सीहाह जौहरी में है।

ورود فلان ورودا حضر

अर्थ:- फ़लाँ वारिद हुआ अर्थात् हाज़िर हुआ (अस्सिहाह लिलजौहरी जिल्द २ पृष्ठ ५४९)

लिसानुलअरब में है

ورود عليه: اشرف عليه، دخله اولم يدخله

अर्थ:- “उस पर वारिद हुआ अर्थात् उस पर पहुँच गया, चाहे वह उस में दाखिल हुआ हो या न हुआ हो।”

और कुर्आन में भी यह शब्द इन दोनों अर्थों में इस्तेमाल हुआ है।

पहले अर्थ का उदाहरण सूरह “कसस” की आयत २३ है।

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ

अर्थ:- “जब वह मदन के पानी पर पहुँचा (वारिद हुआ)।” स्पष्ट है यहाँ वरद का अर्थ पानी पर पहुँचने के है न कि पानी में दाखिल होने के। और दूसरे अर्थ का उदाहरण सूरह अंबिया की आयत ९९ है।

لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ آلَ اللَّهِ مَا وَرَدُوا هَا -

अर्थ:- यदि ये (बुत) खुदा होते तो जहन्नम में वारिद (दाखिल) न होते ”

इस आयत में वरद का शब्द जहन्नम में दाखिल होने के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है। इसी लिए मुफ़स्सिरीन के एक गिरोह ने आयत की व्याख्या यह की इस में संबोधन आम इन्सानों से है और फ़रमाया यह गया है कि हर व्यक्ति, चाहे वह काफ़िर हो या मोमिन परहेजगार, जहन्नम पर हाज़िर ज़रूर होना होगा। काफ़िरों की हाज़िरी तो उस में दाखिल होने के लिए होगी लेकिन मुत्तक्रियों एवं परहेजगारों की हाज़िरी मात्र गुजरने के तौर पर होगी और अल्लाह तआला उन्हें उन से मुक्ति देगा। मगर यह व्याख्या कुर्आन की अन्य आयतों से मेल नहीं खाती। मिसाल के तौर पर एक जगह फ़रमाया गया है।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ

عَنْهَا يُعَذَّبُونَ. لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي

مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ. (سورة انبياء : १०१)

अर्थ:- जिन के लिए हमारी तरफ से पहले ही भलाई का फैसला हो चुका है वे उस से दूर रखे जाएँगे। वे उस की भनक भी नहीं सुनेंगे और अपनी दिलपसंद चीज़ों में हमेशा रहेंगे।”

(सूरह अम्बिया १०१)

उन्हें क्रियामत के दिन किसी परेशानी का डर न होगा।

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرْعُ إِلَّا كَبُرُوا تَتَلَقَّىٰ هُمُ الْمَلَائِكَةُ
هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ. (انبیاء: ۱۰۳)

अर्थ:- “(उस रोज़ की) बड़ी घबराहट उन्हें परेशान नहीं करेगी। और फ़रिश्ते उन का स्वागत करेंगे कि यही है कि वह दिन जिस का तुम से वादा किया जा रहा था।” (सूरह अम्बिया : १०३)

और इसी सूरह की आयत ८५ में फ़रमाया गया है

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا. (مریم: ۸۵)

अर्थ:- “जिस दिन हम मुत्तकियों को रहमान के समक्ष मेहमानों की तरह जमा करेंगे।” (मरयम ८५)

3. कुर्आन करीम में कई जगहों पर यह बात इर्शाद हुई है कि शैतान के पीछे चलने वाले इन्सानों और जिन्नों को जहन्नम से भर दूँगा। इस लिए यहाँ जो फ़रमाया गया कि “यह एक तयशुदा बात है जिस को पूरा करना तुम्हारे रब पर लाज़िम है” तो इस से अभिप्रेत वही फ़ैसला है जो अल्लाह तआला ने काफ़िरों से जहन्नम को भर देने के सिलसिले में किया है।

96. (सुम्मा) अर्थात् फिर, अरबी में “बाद” के अर्थ ही में नहीं आता बल्कि “और” के अर्थ में भी आता है। (देखिए अन्नहवुल वाफ़ी जिल्द ३ पृष्ठ ५७८) मिसाल के तौर पर ऊपर आयत ७० में फ़रमाया गया है।

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أُولَىٰ بِهَا صِلِيًّا

अर्थ:- “फ़िर हम उन लोगों को अच्छी तरह जानते हैं जो जहन्नम में जाने के अधिक सज़ावार हैं।”

ज़ाहिर है इस आयत में “सुम्मा”(फिर) का अर्थ है “और” या “यह भी” इसी प्रकार इस आयत में जिसकी व्याख्या चल रही है का मतलब यह है कि जहाँ हम काफ़िरों को जहन्नम पर वारिद करेंगे वहाँ मुत्तकियों को बचा लेंगे।

97. “नुनज्जी” (निजात देंगे अथवा मुक्ति देंगे) का अर्थ यह नहीं है कि परहेज़गारों को पहले तो जहन्नम पर वारिद करेंगे और फिर इस मुसीबत से उन्हें निजात (छुटकारा) देंगे बल्कि मतलब यह है कि उन्हें इस तरह बचा लेंगे कि जहन्नम के अज़ाब और उस के कष्ट से वे बिल्कुल सुरक्षित रहेंगे। मुक्ति अथवा निजात का यह भावार्थ सूरह हूद की आयत ५८ से भी स्पष्ट है जिस में फ़रमाया गया है।

وَنَجِّنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ.

अर्थ:- “हम ने उन को कड़े अज़ाब से छुटकारा दिया।”

स्पष्ट है कि यहाँ निजात अर्थात् छुटकारा देने का अर्थ यह नहीं है कि जो अज़ाब हूद की क़ौम पर आया था उस में ईमान वाले भी घिर गए थे और फिर इस से उन्हें निजात दी बल्कि मतलब यह है कि इस अज़ाब के आने से पहले ही ईमान वालों को वहाँ से सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया गया और अज़ाब से बचा लिया गया।

98. अर्थात् ज़ालिमों (मुश्रिकों और काफ़िरों) के लिए बच निकलने अथवा मुक्ति पाने की कोई सूरत न होगी। उन्हें जिस तरह घुटनों के बल तिरस्कृत कर के जहन्नम में झोंक दिया गया था उसी दशा में उन्हें सदा सर्वदा की यातना झेलने के लिए छोड़ दिया जाएगा।

हालांकि हम इस से पहले कितनी ही क्रौमों को विनष्ट कर चुके हैं जो कहीं अधिक साधन और सामाग्री रखती थीं। और शानो-शौकत में कहीं बढ़ कर थीं। जो लोग गुमराही में पड़ते हैं रहमान उन्हें ढील दिया करता है, यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ को देख लेंगे जिस का उन से वादा किया जा रहा है चाहे वह अज़ाब हो या क्रियामत की घड़ी, उस समय उन्हें पता चलेगा कि किस की जगह बदतर और किस का जत्था बिलकुल कमज़ोर है। (अल-कुर्आन)

74. हालांकि हम इस से पहले कितनी ही क्रौमों को विनष्ट कर चुके हैं जो कहीं अधिक साधन और सामाग्री रखती थीं। और शानो-शौकत में कहीं बढ़ कर थीं⁹⁹।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِثِيًّا ٩٩

75. जो लोग गुमराही में पड़ते हैं रहमान उन्हें ढील दिया करता है,¹⁰⁰ यहाँ तक कि जब वे उस चीज को देख लेंगे जिस का उन से वादा किया जा रहा है चाहे वह अज़ाब हो¹⁰¹ या क्रियामत की घड़ी, उस समय उन्हें पता चलेगा कि किस की जगह बदतर और किस का जत्था बिलकुल कमज़ोर है।

ثُلٌّ مِّنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدًّا حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَآيُوعِدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِنَّا السَّاعَةَ فَيُعْلَمُونَ مَن هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ١٠٠

76. और जो लोग हिदायत की राह अपनाते हैं अल्लाह उन की हिदायत में वृद्धि करता है,¹⁰² और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे रब के नज़दीक अज़्र (कर्म-फल) के लिहाज़ से भी बेहतर हैं और अन्जाम के लिहाज़ से भी¹⁰³।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَقِيَّةُ الصَّلَاحُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ١٠١

77. तुम ने देखा उस व्यक्ति को जिस ने हमारी आयतों का इन्कार किया और कहता है कि मैं ज़रूर माल और औलाद से नवाज़ा जाऊँगा¹⁰⁴।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ١٠٢

78. क्या उस ने ग़ैब (परोक्ष) में झाँक कर देखा है या रहमान से कोई वादा ले रखा है¹⁰⁵।

أَطْلَعَ الْغَيْبَ أَمْ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ١٠٣

79. हरगिज़ नहीं। वह जो कुछ कहता है हम उस को लिख लेंगे और उस के अज़ाब को और बढ़ा देंगे।

كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ١٠٤

80. जिस चीज़ का वह दावा करता है उस के वारिस हम होंगे। और वह हमारे सामने अकेला उपस्थित होगा¹⁰⁶।

وَنَرِيئُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ١٠٥

81. इन लोगों ने अल्लाह के सिवा अन्य माबूद (पूज्य) बना रखे हैं ताकि वे इन के मददगार हों।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ١٠٦

82. हरगिज़ नहीं। वे क्रियामत के दिन उन की इबादत का इन्कार करेंगे और उन के विरोधी बन जाएँगे।¹⁰⁷

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ١٠٧

99. गरीब मुसलमानों के मुकाबले में हक़ का इन्कार करने वालों को जो सांसारिक वैभव एवं ऐश्वर्य प्राप्त था और उन की सभाओं में जो जमघट होता था उस पर उन को न केवल गर्व था बल्कि वे इस अहं में लिप्त थे कि वे अल्लाह की नज़र में प्रिय (पसंदीदा) हैं वरना उन्हें यह वैभव एवं ऐश्वर्य न प्राप्त होता ।

उन के इस खयाल को ग़लत बताते हुए यहाँ फ़रमाया कि इस से पहले हम कितनी ही क़ौमों को विनष्ट कर चुके हैं जो इन से कहीं अधिक धन साधन वैभव एवं शक्ति रखती थी। उन का सर्वनाश इस बात का प्रमाण है कि किसी क़ौम को सांसारिक वैभव एवं शक्ति साधन का प्राप्त हो जाना, खुदा की नज़र में उस के पसंदीदा होने का प्रमाण नहीं है। यदि वह क़ौम कुफ़्र की राह अपनाती है तो वह अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकती ।

100. अर्थात् अल्लाह की रहमत का तक्राज़ा है कि बिगड़े हुए लोगों को संभालने का अवसर दे, इसी लिए वह गुमराही में लिप्त होने वालों को तुरन्त नहीं पकड़ता, बल्कि ढील दे देता है।

101. अभिप्रेत दुनिया का अज़ाब है।

102. अर्थात् हिदायत की राह अपनाने वालों पर और अधिक हिदायत के मार्ग प्रशस्त होते हैं। उन्हें नेक कामों की तौफ़ीक़ भी अतिरिक्त मिलती है और वे हिदायत के मार्ग पर आगे बढ़ते चले जाते हैं।

103. व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ६५।

104. अभिप्रेत इस से कोई ख़ास एवं निश्चित व्यक्ति नहीं बल्कि हर वह व्यक्ति है जो आख़िरत को नकारता हो और साथ ही इस बात का दावा करता हो कि यदि आख़िरत बरपा हुई तो

वहाँ भी उस को इसी प्रकार धन एवं ऐश्वर्य का सामान मिलेगा जिस प्रकार दुनिया में मिला है। दुनिया के पुजारी हमेशा शानदार भविष्य के सपने ही देखा करते हैं।

105. अर्थात् उस का यह खयाल और यह दावा किस बुनियाद पर है? क्या उस ने परोक्ष में झाँक कर देख लिया है कि आख़िरत में उस के लिए सब चंगा ही चंगा और ख़ैरियत ही ख़ैरियत है। या खुदा ने इस बात का वादा कर रखा है कि वह उसे हमेशा माल और औलाद से नवाज़ता रहेगा? अगर दोनों बातों में कोई बात भी सही नहीं है तो फिर उज्ज्वल भविष्य की क्या ज़मानत?

106. अर्थात् माल और औलाद की जो नेमतें उसे इस अस्थायी जगत में प्रदान की गई हैं और जिन के बारे में वह दावे के साथ कहता है कि आगे भी हमें ये चीज़ें मिलेंगी वे आख़िरकार अल्लाह ही की संपत्ति सिद्ध होने वाली हैं और क़ियामत के दिन उसे अकेले अल्लाह के समक्ष उपस्थित होना होगा।

107. अर्थात् इन लोगों ने अल्लाह के सिवा अन्य माबूद (पूज्य) इस लिए बना रखे हैं ताकि वे इन की इबादत से खुश हो कर उन की मदद करें, बलाओं को टाल दें और हर प्रकार की आफ़तों से उन्हें मुक्ति दिलाएं। मगर ये सब उन के ग़लत विचार और व्यर्थ की धारणाएँ हैं। वे आज अपनी इन धारणाओं के विरुद्ध कुछ सुनने को तैयार नहीं हैं। किन्तु क़ियामत के दिन वे देख लेंगे कि इन के माबूद इन के विरोधी बन गए हैं। वे कहेंगे हमें नहीं मालूम कि तुम हमारी इबादत करते थे और हम ने तुम से कब कहा था कि हमारी इबादत (पूजा एवं अर्चना) करो। इस प्रकार हथ्र के मैदान में वे इन की मदद करने से रहे, उलटे इन के विरोधी बन जाएंगे ।

83. क्या तुम देखते नहीं कि हम ने काफ़िरों पर शैतानों को छोड़ रखा है जो इन्हें उकसाते रहते हैं ¹⁰⁸।

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤْزُهُمْ أَزًّا ۝

84. तो इन के विरुद्ध (फ़ैसले के लिए) तुम जल्दी न करो। हम इन के दिन गिन रहे हैं ¹⁰⁹।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعِدُكُمْ عَدًّا ۝

85. जिस दिन हम मुत्तकियों (डर रखने वालों) को रहमान के समक्ष मेहमानों की तरह जमा करेंगे ¹¹⁰।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۝

86. और अपराधियों को जहन्नम की तरफ़ प्यासे जानवरों की तरह हाँक ले जाएंगे।

وَسَوْقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وِدْدًا ۝

87. (उस दिन) किसी को शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का अधिकार न होगा। वही शफ़ाअत (सिफ़ारिश) कर सकेगा जिस ने रहमान के समक्ष फ़रमान (आज्ञा पत्र) प्राप्त कर लिया हो ¹¹¹।

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝

88. ये कहते हैं रहमान ने बेटा बना रखा है ¹¹²।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۝

89. बड़ी सख्त बात है जो तुम ने गढ़ ली।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۝

90. करीब है कि आसमान फट पड़े, ज़मीन ध्वस्त हो जाए और पहाड़ गिर पड़े।

كَذَٰلِكَ السَّمَوَاتُ يَافُقْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَكًّا ۝

91. इस बात पर कि ये रहमान के लिए बेटा होने का दावा कर रहे हैं ¹¹³।

أَنْ دَعَا الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۝

92. रहमान की यह शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए।

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۝

93. आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं, सब उस के समक्ष बन्दे की हैसियत से उपस्थित होने वाले हैं ¹¹⁴।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۝

94. सब को उस ने घेर रखा है और एक एक को गिन रखा है ¹¹⁵।

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝

95. और सब क्रियामत के दिन अकेले अकेले उपस्थित होंगे।

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ۝

108. जो लोग कुफ़र करते हैं उन पर शैतान को मुसल्लत कर दिया जाता है। जो उन्हें ईमान वालों के विरुद्ध खूब उकसाते हैं। इस प्रकार ये काफ़िर सत्य के विरोधी ईमान वालों के दुश्मन बन कर खड़े हो जाते हैं और फिर यह धरती सत्य और असत्य का रण क्षेत्र बन जाती है।

109. अर्थात् तुम सब्र और धैर्य के साथ हमारे फ़ैसले का इन्तिज़ार करो। इन के लिए जो मोहलत हम ने सुनिश्चित की है वह बहर हाल पूरी होना है। हम इस का एक एक क्षण गिन रहे हैं। इन पर अज़ाब न एक क्षण पहले आ सकता है और न एक क्षण बाद।

110. “रहमान के समक्ष” कहने में अल्लाह की दयालुता एवं उस की रहमत की शान का व्यक्तिकरण है। मतलब यह है कि हम क्रियामत के दिन मुत्तक़ियों अर्थात् परहेज़गारों एवं अल्लाह का डर रखने वालों को अपने समक्ष इस मान सम्मान के साथ जमा करेंगे कि यह अत्यंत प्रतिष्ठित दल है जो कायनात के शासक से मिलने के लिए आया है। और फिर हम उन्हें अपनी रहमत और उपहारों से माला माल कर देंगे।

111. अर्थात् जिन को इन्होंने ने माबूद (पूज्य) बना रखा है वे क्रियामत के दिन अल्लाह के सामने इन की कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकेंगे। सूरह जुखरूफ़ आयत ८६ में यह बात अधिक स्पष्ट रूप से बयान हुई है।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا

مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ. (सू. १९: ८६)

अर्थ:- अल्लाह को छोड़ कर जिन को यह पुकारते हैं वे शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का कोई अधिकार नहीं रखते, मगर वे जो हक़ की गवाही देंगे और वे जानते होंगे।

शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करना केवल उन ही के लिए संभव होगा जिन्होंने रहमान से फ़रमान अर्थात् आज्ञा पत्र प्राप्त कर लिया हो। और यह सम्मान उन ही को प्रदान किया जाएगा जो हक़ की गवाही देने वाले होंगे और जानते होंगे कि कौन इस बात के लायक हैं कि उन के लिए शफ़ाअत (सिफ़ारिश) की जाए। उन में नबी सब से आगे होंगे।

शफ़ाअत की इन कड़ी शर्तों के चलते मुश्रिकों और काफ़िरों के लिए कोई भी शफ़ाअत नहीं करेगा। रहे वे पापी जो ईमान वालों में से होंगे तो उन में से जिन के पक्ष में अल्लाह तआला अनुमति देगा उन ही के लिए शफ़ाअत की जा सकेगी।

कुर्आन के बयान से साफ़ स्पष्ट है कि शफ़ाअत एक विशिष्ट तरीक़ा होगा जो अल्लाह तआला की क्षमा का ही एक रूप है वरना उस के कोप से बचाव के लिए असल उसूल वह

सुलझा हुआ सदाचारी जीवन है जो ईमान की बुनियाद पर बसर किया गया हो।

आज मुसलमानों की बड़ी संख्या शफ़ाअत पर आश्रय किए हुए हैं। उन का जीवन बिल्कुल पापों से भरा हुआ है मगर वे समझते हैं कि चूँकि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत, उन के समुदाय से हैं इस लिए हमारा बेड़ा पार है। वे इस भुलावे में इस लिए पड़े हैं कि उन्होंने कुर्आन की उन आयतों की तरफ़ से आँखें मूँद ली हैं जिन में जज़ा और सज़ा अर्थात् कर्मानुसार फल का बेलग क़ानून बयान हुआ है। जैसे :

بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ

أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ. (सू. १९: ८१)

अर्थ:- “क्यों नहीं? जिस ने भी बुराई कमाई और उस के गुनाहों ने उस को घेरे में ले लिया तो ऐसे ही लोग दोज़ख वाले हैं। वे उस में हमेशा रहेंगे।” (सूरह बकर: ८१)

और यहूदियों के बारे में कहा गया है कि वे आखिरत के बजाय दुनिया के लाभ बटोरने लगे थे और कहते थे “सयुगफ़रूलना” (हमें क्षमा किया जाएगा)

112. ये सूरह की अन्तिम आयतें हैं इस लिए बयान का रुख फिर उसी गुमराही के खण्डन की ओर है जिस में ईसाई लिप्त थे। उन का यह दावा कि हज़रत मसीह खुदा के बेटे हैं, एक ऐसी गुमराही थी जिस ने उन को तौहीद की राह से हटा कर शिर्क के गढ़ में ढकेल दिया था। और इन्जील में संशोधन के कारण उस ने एक सुदृढ़ धारणा का रूप धार लिया था। मिसाल के तौर पर मरकुस की इन्जील का प्रारंभ ही इस प्रकार होता है।

“परमेश्वर के पुत्र यीशु समीह के सु-समाचार का आरम्भ” (मरकुस १:१)

इस में बड़े दुस्साहस के साथ हज़रत मसीह को परमेश्वर (खुदा) का पुत्र कहा गया है। हालाँकि यह बात उस इन्जील में मौजूद नहीं थी जो ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई थी। “परमेश्वर के पुत्र” की वृद्धि बाद में की गई है और इस बात को तो बाईबल का टीकाकार भी स्वीकार करता है कि इन्जील की कुछ प्राचीन प्रतियों में “परमेश्वर के पुत्र” के शब्द नहीं थे।

“Some ancient manuscripts have the descriptive phrase the son of God at the end and others do not have it.”- (Interpreter’s One Volume Commentary on the Bible, -U.S.A., page 645).

सवाल यह है कि अगर वर्तमान इंजीलें ख़ुदा का कलाम हैं तो उस की कुछ प्राचीन प्रतियों से “परमेश्वर के पुत्र” के शब्द गायब कैसे हुए? क्या यह इस बात का सबूत नहीं है कि असल इन्जील में हज़रत मसीह को “परमेश्वर का पुत्र” कहा ही नहीं गया था।

फिर मरकूस की इन्जील में आरम्भिक आयत में हज़रत मसीह का वंश ख़ुदा से जोड़ दिया गया। गोया ख़ुदा ने उन को जन्म दिया था (अल्लाह की पनाह ऐसी बातों से) किन्तु लूका की इन्जील में है कि जब हज़रत मसीह ने बपतिस्मा (एक विशेष प्रकार का स्नान) लिया उस समय उन्हें बेटा होने का सम्मान प्रदान किया गया।

“जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी बपतिस्मा ले कर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया। और पवित्र आत्मा शरीरिक रूप में कबूतर की समान उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।”

(लूका ३:२१, २२)

लूका के इस बयान से स्पष्ट है कि हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा होने की उपाधि प्रदान की गई थी। दूसरे शब्दों में वह मुतबन्ना अर्थात् दत्तक पुत्र थे जब कि मरकूस की इन्जील उन को सगे बेटे की हैसियत से प्रस्तुत करती है। इन्जीलों का यह परस्पर विपरीत बयान इस बात का स्पष्ट सबूत है कि दत्तक पुत्रता की बात एक गढ़ी हुई बात है जो इन्जील में शामिल कर

के ख़ुदा पर बहुत बड़ा झूठ मढ़ा गया है और सच्ची बात वही है जो कुर्आन कहता है कि हज़रत मसीह न तो वास्तविक पुत्र थे और न दत्तक पुत्र अर्थात् न ख़ुदा ने उन को जन्म दिया था और न ख़ुदा ने उन को गोद लिया था बल्कि वे ख़ुदा के बन्दे थे।

113. अर्थात् अल्लाह का बेटा ठहराने को तुम मामूली समझते हो हालांकि यह ऐसी संगीन बात है कि इस पर अल्लाह का प्रकोप टूट पड़े तो ऐसा संभव है। यह अल्लाह से दोष को जोड़ने के अलावा उस की तौहीन भी है और उस की ग़ौरत को चैलेन्ज भी। इस चैलेन्ज के परिणाम स्वरूप अल्लाह का कोप भड़क सकता है और इस कोप से आसमान और ज़मीन सब ध्वस्त हो सकते हैं, किन्तु वह रहमान है इस लिए वह अपने बन्दों को अज़ाब देने में जल्दी नहीं करता। बल्कि उन्हें अपने रवैये को सुधार लेने का अवसर देता है।

114. जब अपने अपने जन्म से सब के सब बन्दे हैं और बन्दे (दास) ही की हैसियत से ख़ुदा के समक्ष उपस्थित होने वाले हैं तो हज़रत ईसा इस से अलग कैसे हुए? वे भी दूसरे बन्दों की तरह बन्दे ही हैं और बन्दे ही की हैसियत से ख़ुदा के समक्ष प्रस्तुत होंगे।

115. अर्थात् सब उस के वश और उस की कुदरत के क़ब्ज़े में हैं और हर हर प्राणी की उस ने गिनती कर रखी है। कोई नहीं जो उस की गिनती से बच निकला हो इस लिए उस के समक्ष सब को उपस्थित होना होगा।

हम ने इस किताब को तुम्हारी ज़बान में इस लिए आसान बनाया है ताकि तुम मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) को खुशख़बरी दे दो और झगड़ालू लोगों को सावधान करो। इन से पहले हम कितनी ही क़ौमों को विनष्ट कर चुके हैं। क्या तुम उन में से किसी को मौजूद पाते हो। या तुम्हें इन की भनक भी सुनाई देती है ? (अल-कुर्आन)

96. जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए रहमान उन के लिए मुहब्बत पैदा कर देगा ¹¹⁶।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ④

97. हम ने इस (किताब) को तुम्हारी ज़बान में इस लिए आसान बनाया है ताकि तुम मुत्तकियों (परहेजगारों) को खुशखबरी दे दो और झगड़ालू लोगों को सावधान करो ¹¹⁷।

فَأَنبَأَيَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ
بِهِ قَوْمًا لَّدَا ⑤

98. इन से पहले हम कितनी ही क़ौमों को विनष्ट कर चुके हैं। क्या तुम उन में से किसी को मौजूद पाते हो। या तुम्हें इन की भनक भी सुनाई देती है ? ¹¹⁸

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ يُحْسِنُ
مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ⑥

116. यह खुशखबरी है जो ईमान वालों को उस समय दी गई जब उन के विरोध में पूरी सोसाइटी एक जुट को कर सक्रिय हो गई थी। फ़रमाया अल्लाह तआला अपने बन्दों के दिलों में उन के लिए मुहब्बत और चाहत पैदा कर देगा। अतः दुनिया ने देख लिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये साथी सब के प्रिय बन गए और आज भी मुसलमानों के दिलों में सहाबा किराम के लिए जो चाहत और मुहब्बत है वह बयान की मोहताज नहीं। सच्चे ईमान वालों को अल्लाह तआला दुनिया में यह सिला देता है कि उस के सच्चे बन्दों के दिलों में उन के लिए चाहत और मुहब्बत पैदा हो जाती है।

इस सूरह की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस में रहमान का नाम बार बार आया है जो रहमान की सही पहचान कराता है। इस से उस की रहमत के तक्राजे सामने आते हैं और उन भ्रमों एवं ग़लतफ़हमियों की समाप्ति हो जाती है जिन में लिप्त होने के कारण धर्म जगत अपने मेहरबान खुदा को पहचान नहीं सका है।

117. झगड़ालू लोगों से तात्पर्य अरबवासी हैं जिन्होंने तौहीद, रिसालत और आखिरत आदि के बारे में बड़े विवाद

और बहसें खड़ी कर दी थीं और सत्य को आसानी एवं सहजता से मानने को तैयार नहीं हुए।

कुर्आन के अवतरण का सर्वप्रथम उद्देश्य यह है कि खुदा से ग़ाफ़िल लोगों को बुरे अन्जाम से होशियार और ख़बरदार कर दिया जाए और उस से डरने वालों को अच्छे अन्जाम की खुशख़बरी दी जाए। कुर्आन में ये बातें सरल और सहज तरीक़े से बयान हुई हैं अतः जिन की भाषा अरबी है या जिन्होंने अरबी भाषा सीख ली है उन के लिए कुर्आन की दअवत को सीधे कुर्आन से समझना कुछ भी मुश्किल नहीं। रहे वे लोग जो अरबी नहीं जानते तो वे भी अनुवाद की सहायता से कुर्आन की दअवत को आसानी से समझ सकते हैं। अलबत्ता ताबीर और इस्तिबात का मसला इस से अलग है और इस के लिए अरबी भाषा का गहरा ज्ञान आवश्यक है।

118. अर्थात् विनष्ट हुई क्रौमों का कोई अस्तित्व नहीं रहा और उन की जय जयकार और चलत फिरत इस तरह समाप्त हो गई कि अब उन की आहट भी सुनाई नहीं देती। फिर क्या तुम भी अपने भौतिक लाभों एवं ऐश्वर्य में मगन इन ही क्रौमों के पद चिन्हों पर चलना चाहते हो?

